

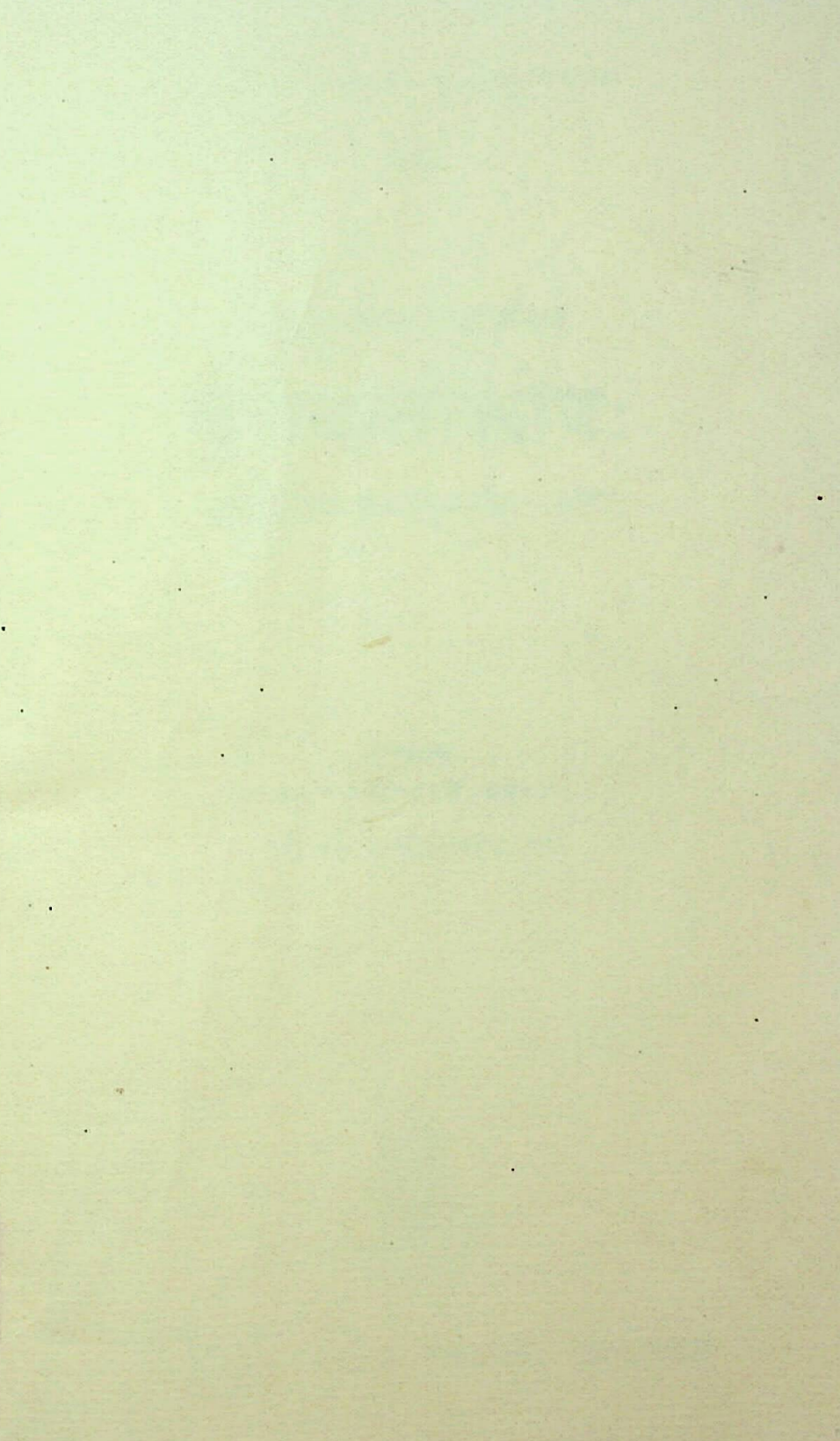
श्रीयादवप्रकाशाचार्यविरचितः

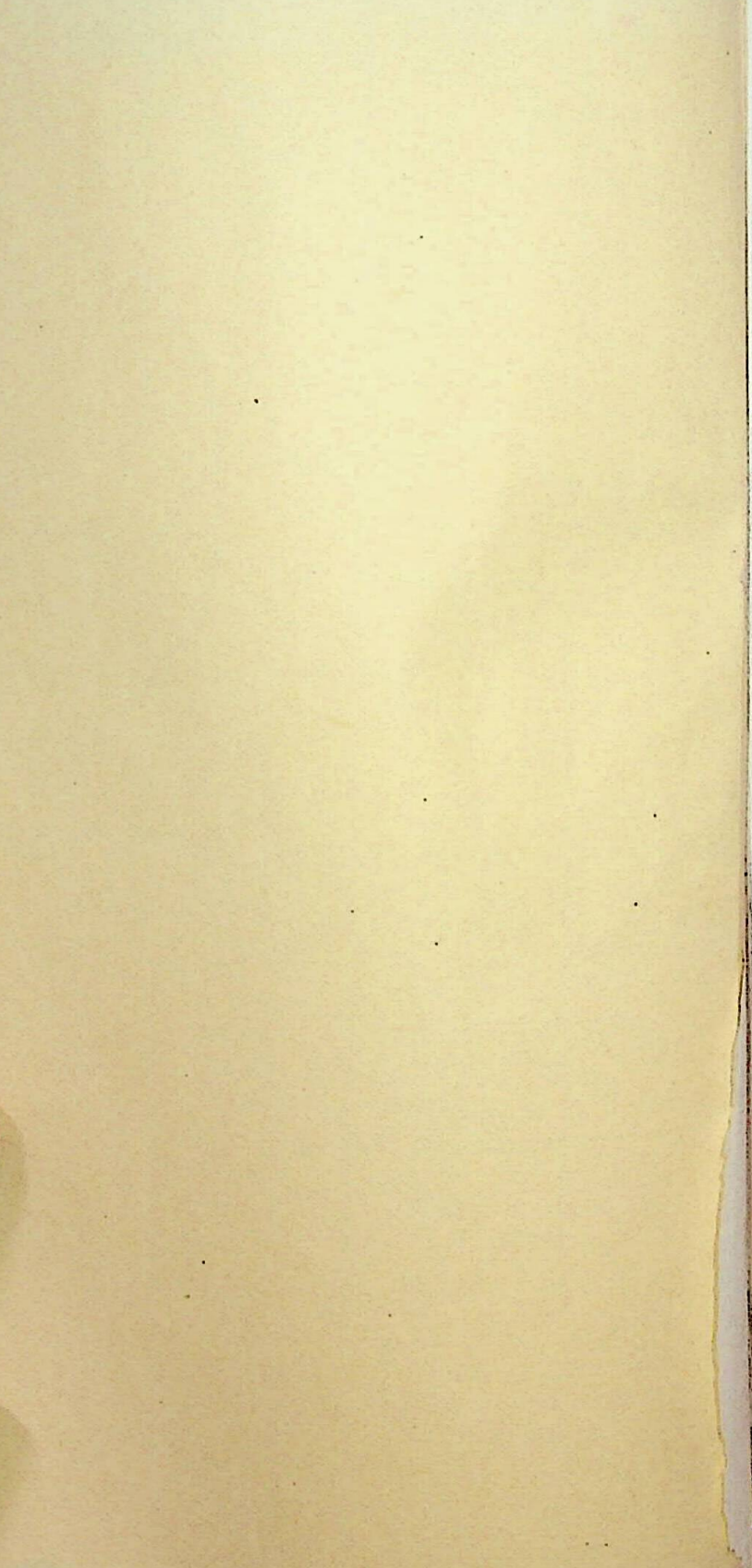
वैजयन्तीकोषः

सम्पादकः

पं० हरगोविन्दशास्त्री







जयकृष्णदास-कृष्णदास प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला

२



श्रीयादवप्रकाशाचार्यविरचितः

वैजयन्तीकोषः

सलिङ्गनिर्देशं शब्दानुक्रमणिकासहितः

सम्पादकः

व्याकरण-साहित्याचार्य-साहित्यरत्न

श्री पं० हरगोविन्दशास्त्री



चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी

प्रकाशक

चौखम्भा भारती अकादमी

आकर ग्रन्थों के प्रकाशक एवं वितरक

‘गोकुल भवन’, के. ३७/१०९, गोपाल मन्दिर लेन

वाराणसी-२२१००१ (भारत)

फोन : +९१ ५४२ २३३०३४५, २३३०३४९ (ऑ.)

+९१ ५४२ २३३२६३७, २३३२७०२ (नि.)

© चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी

पुनर्मुद्रित : सन् २००८

मूल्य : रु. ४००.००

शाखा

चौखम्भा बुक्स

५ यू. ए. जवाहर नगर

(जवाहर नगर पोस्ट ऑफिस के पीछे)

मलकागंज, दिल्ली-११०००७

फोन : +९१ ११ २३८५३१६६

अन्य प्राप्ति स्थान

चौखम्भा विश्वभारती

भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक व वितरक

के. ३७/१०९, गोपाल मन्दिर लेन

वाराणसी-२२१००१ (भारत)

मुद्रक : सुरभि प्रिंटर्स, वाराणसी

Jaikrishnadas-Krishnadas Prachyavidya Granthamala

2



VAIJAYANTĪKOṢA

OF

ŚRĪ YĀDAVAPRAKĀŚĀCĀRYA

Edited with Introduction and Index

by

Śrī Pt. Haragovind Śāstrī

Vyākaraṇa-Sāhityāchārya, Sāhityaratna

Ph.-0542-2420414

CHAUKHAMBHA SANSKRIT BHAWAN

POST BOX No. 1160

OPP. CHITRA CINEMA, CHOWK

VARANASI - 221001

CHAUKHAMBHA BHARATI ACADEMY

VARANASI

Publisher

CHAUKHAMBHA BHARATI ACADEMY

Publishers & Distributors of Monumental Treatises of the East

'Gokul Bhawan' K. 37/109, Gopal Mandir Lane

Varanasi-221001 (India)

Phone : +91-542-2330345, 2330349 (O)

+91-542-2332637, 2332702 (R)

© Chaukhambha Bharati Academy, Varanasi

Reprint Year : 2008

Also can be had from

CHAUKHAMBHA BOOKS

5. U. A. Jawahar Nagar

(Behind Jawahar Nagar Post-office)

Malkaganj, Delhi-110007

Phone : +91-11-23853166

Branch

CHAUKHAMBHA VISVABHARATI

Oriental Publishers & Distributors

K. 37/109, Gopal Mandir Lane

Varanasi-221001 (India)

Printed at : Surbhi Printers, Varanasi

प्रस्तावना

लोकव्यवहृतिहेतु शारदराकेशत्रिमलतमम् ।

सारस्वतं महोऽहं शब्दब्रह्माभिधं वन्दे ॥ १ ॥

चन्द्रांशुसितमस्माङ्ग चन्द्राकार्गिनिबिलोचन ।

चन्द्रास्थोमाचितार्द्धाङ्ग चन्द्रचूड नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥

अपने-अपने पूर्वजन्माजित शुभाशुभ कर्मोंके अनुसार चौरासी लक्ष योनियों-में-से नानाविध योनियोंमें जन्म लेकर इस कष्टमय संसारमें विविध दुःखोंको भोगनेके लिए जीव बाध्य हुआ करता है । देव-यक्षादि कुछ योनियां उनमें सुखद भी हैं, किन्तु उनमें भी उत्पन्न जीव अपने शुभ कर्मोंसे उपलब्ध सुखोंका भोगमात्र ही करता है, पुनः पुण्यकर्मजन्-द्वारा अपने सुखद भोगोंमें लेशमात्र भी वृद्धि नहीं कर सकता, क्योंकि वे सभी भोग-योनियां हैं, कर्मयोनियां नहीं । कर्म-योनि तो केवल मनुष्य-योनि ही है, इसीमें उत्पन्न प्राणी अपने-अपने कर्मजन्य सुखप्रद भोगोंको भोगता हुआ भी शुभकर्मजन-द्वारा धर्मार्थकामरूप पुरुषार्थत्रय प्राप्तकर मोक्षरूप परम पुरुषार्थ भी प्राप्त कर सकता है । इसी कारण इस मनुष्य-योनि-को सर्वश्रेष्ठ योनि माना गया है । इसे प्राप्त करनेके लिए देवराज इन्द्र भी तरसते हैं और चाहते हैं कि सीमाभ्यवश यदि मुझे दुर्लभ मनुष्य-योनि प्राप्त हो जाय तो मैं मोक्ष-लाभकर परमानन्दकन्द परब्रह्म परमात्मामें लीन होकर कष्टमय संसारके आवागमनसे सदा सर्वदाके लिए मुक्त हो जाऊँ ।

मनुष्य-योनि-प्राप्तिके साधन—

परमदुर्लभ मनुष्य-योनि-प्राप्तिके मुख्यसाधन दो प्रकारके हैं—प्रथम कठोरतम तपश्चरणादि तथा द्वितीय सुखमय जीवन व्यतीत करते हुए सत्काव्य-सेवन । इनमें-से प्रथम साधन नानाविध विघ्न-बाधाओंसे भरा हुआ अतिशयकष्ट-साध्य है तथा सत्काव्य-सेवनरूप द्वितीय साधन पूर्वापेक्षया अधिक सरल एवं सुख-साध्य है । अत एव जीवमात्रको सत्काव्य-सेवन-द्वारा यश, धन तथा व्यवहार-ज्ञानकी प्राप्ति करते हुए दुःख-निवृत्ति एवं कान्तोपदेशसम्मित सद्यः परमसुख-प्राप्ति करनी चाहिए । शास्त्रकारोंने भी डिण्डिमघोषपूर्वक इसी बातका समर्थन किया है । यथा—

‘काम्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये ।

सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततथोपदेशयुजे ॥’

तथा—

‘धर्मार्थकाममोक्षेषु धैर्यचक्षणं कलासु च ।

करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधुकाव्यनिषेवणम् ॥’

इसी सत्काव्य-सेवनद्वारा व्यास, वाल्मीकि, कालिदास, भास, भवभूति, माघ, मयूर, बाण, श्रीहर्ष, धावक, दण्डी आदि महामनीषियोंने स्व-स्व-लक्ष्यानुसार अर्थ, धर्म, काम और मोक्षतक प्राप्त किया, यह सर्वविदित है। मनुष्य-योनि लाभ करनेपर भी विद्या, कवित्व और कवित्व-शक्तिका लाभ करना उत्तरोत्तर दुर्लभ है। यथा—

‘नरत्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा ।

कवित्वं दुर्लभं तत्र शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा ॥’

(अग्निपुराण २३७।३-४)

भगवान् पतञ्जलिने तो सम्यक् प्रकारसे ज्ञात एवं सुप्रयुक्त एक शब्दको भी इहलोक एवं परलोकमें कामदुघा ही बतलाया है। यथा—

‘एकः शब्दः सम्यग्ज्ञातः सुप्रयुक्तः स्वर्गे लोके च कामधुग्भवति ।’

(महाभाष्य पस्पशाह्निक)

इसी कारणसे शास्त्रकारोंने व्याकरणशास्त्रके अध्ययनपर विशेष जोर दिया है। यथा—

‘यद्यपि बहु नाधीषे पठ पुत्र व्याकरणम् ।

स्वजनः स्वजनो मा भूत् सकलं शकलं सङ्गच्छकृत ॥’

उपर्युक्त वचनसे यह सुस्पष्ट हो जाता है कि अर्धमात्रात्मक एक व्यञ्जनका व्यतिक्रम होनेसे अर्थका कितना अनर्थ हो जाता है।

कोषकी आवश्यकता—

शब्द-शास्त्रके ज्ञानके बाद भी कवित्व-शक्ति-प्राप्त्यर्थ बहुशब्द-संरचय करना परमावश्यक होता है, वह संरचय उत्तमोत्तम कोषद्वारा ही हो सकता है, क्योंकि कोष-हीन पुरुष तथा भूपाल जिस प्रकार प्रजोत्पादन एवं प्रजा-रक्षणमें सर्वथैव असमर्थ रहते हैं, उसी प्रकार कोष-हीन विद्वान् भी उत्तम काव्यकी रचना करने या उसका यथावत् रसास्वादन करनेमें सर्वथा असमर्थ ही रहता है। यथा—

‘नरभूपौ विना कोषं प्रजोत्पादनरक्षयोः ।

नैव क्षमौ यथा, तद्वत् कविः काव्यकृतावपि ॥’

शब्द-दारिद्र्याक्रान्त कवि उपयुक्त शब्द-चयन करनेमें ही सदा व्यस्त रहनेसे उन्नतोन्नत-कल्पना-पूर्ण कविता करनेमें कदापि समर्थ नहीं होता है। अतः कोष-संरचय करना सत्कविके लिए परमावश्यक है।

वैदिक कोषकी सर्वप्रथम रचना—

सृष्टिकर्ता ब्रह्माने सर्वप्रथम अपने मानसपुत्रोंको वेदोंका अध्ययन कराया, उन्होंने उन वेदोंको सुनकर कण्ठस्थ कर लिया और पुनः उनका स्मरणकर अपने शिष्योंको अध्ययन कराया। श्रुति-गोचर (श्रवण) कर स्मरणद्वारा अध्ययन करानेकी यह परम्परा अनेक शताब्दियों तक चलती रही और हस्तामलकवत् त्रिकालदर्शी महर्षि लोकोपकारार्थ वेद-सम्मत अन्यान्य शास्त्रों (ब्राह्मण, उपनिषद्, धर्मशास्त्रादि) की रचनाकर अपने-अपने योग्यतम शिष्योंको अध्ययन कराते रहे।

आगे चलकर समय बदला और उन महर्षियोंके यम-नियम-संयमादिमें शैथिल्य होनेसे उनकी बुद्धिका भी ह्रास हो गया, श्रवणमात्रसे वेदको स्मरण रखने एवं समझनेकी क्षमताका अभाव देखकर कश्यप मुनिने वेदज्ञानार्थ निघण्टुकी रचना की, किन्तु कालचक्रके आगे बढ़ते रहनेसे अन्न-पान-संसर्गादिक बुद्धिवैश-द्यावरोधक दोषोंके कारण तपोबलका ह्रास उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया। तत्फलस्वरूप वेदार्थप्रतिपादक निघण्टुका आशय समझना भी अशक्य हो गया, यह देख यास्क (ई० पू० ७०० वर्ष) ने निघण्टुके भाष्यरूप 'निरुक्त' ग्रन्थकी रचना की। वेदोंमें आनेवाले शब्दोंका निर्वचन करनेसे इसके द्वारा वेदार्थ-ज्ञान करना सरल हो गया। इसके विषय ये हैं—

‘वर्णागमो वर्णविपर्ययश्च द्वौ चापरौ वर्णविकारनाशौ।

धातोस्तद्वर्थातिशयेन योगस्तदुच्यते पञ्चविधं निरुक्तम् ॥’

निघण्टुके भाष्यस्वरूप इस निरुक्तमें यास्कने ‘एके, परे, अपरे, अन्ये, आचार्याः’ आदि शब्दों-द्वारा अज्ञात-नामा आचार्योंका सङ्केतकर इन बारह आचार्योंका स्पष्ट रूपसे नाम-निर्देश किया है। उनके नाम ये हैं—१ औदुम्बरायण, २ औप-मन्यव, ३ वार्षाणि, ४ गार्ग्य, ५ आप्रहायण, ६ शाकपूणि, ७ और्णनाभ, ८ तैट्टिकी, ९ गालव, १० स्थीलाष्ठीवी, ११ क्रौष्ठ और १२ काथक्य। जिस प्रकार वेदाङ्ग व्याकरण, छन्द, ज्योतिष, शिक्षा और कल्प कोई एक-एक ग्रन्थ-विशेष न होकर सभी अनेकानेक ग्रन्थात्मक हैं, उसी प्रकार निघण्टु या निरुक्त भी कोई स्वतन्त्र एक-एक ग्रन्थ-विशेष नहीं; अपितु वे दोनों (निघण्टु और निरुक्त) भी अनेकानेक ग्रन्थरूपात्मक ही हैं। ५० श्रीभगवद्गीतेने एक लेखमें वेदोंके भाष्यकार यास्कादिके भाष्य-ग्रन्थोंमें उद्धृत लगभग १७ निघण्टुओंके अस्तित्वका उल्लेख किया है, किन्तु इस समय वे सभी अप्राप्य हैं। (श्रीवाचस्पति गैरोलाकृत सं० साहित्यका इतिहास, पृ० १८७-१८९)

लौकिक कोषोंकी रचना—

संयम-नियम, आचार-विचार, अन्न-पान, रहन-सहन आदिके शास्त्र-बहिर्भूत होनेसे बल, वीर्य, मेधा, विद्या, तपश्चरणादिके और अधिक ह्रास होनेपर लौकिक

शब्दोंके अर्थ-ज्ञानको भी दुर्बोध्य होता हुआ देखकर आचार्योंने शास्त्र-ज्ञानार्थ 'लौकिक शब्दकोषों'की रचना की। प्राचीनाचार्योंमें अपने ग्रन्थोंमें समय, निवास तथा देशादिका परिचय देनेकी परम्परा नहीं रहनेसे किस आचार्यने कौन-सा लौकिक शब्दकोष सर्वप्रथम रचा, यह निर्णय आज तक इतिहासकार नहीं कर सके हैं। इसके कारण निम्न-लिखित हैं—

(क) 'शब्दकल्पद्रुम'के रचयिता 'स्यारं राजा राधाकान्त देव बहादुर'ने उक्त ग्रन्थके मुखबन्ध (पृ० ४) में अग्निपुराणमें वर्णित अभिधानको सर्वप्रथम कोष माना है। इसका प्रकरण-क्रम इस प्रकार है—पहले स्वर्गपातालादिवर्ग, नानार्थवर्गके बाद भू-पुर-अद्रि-वनीषधि-सिंहादि-तृ (मनुष्य)-ब्रह्मा-क्षत्र-वैश्य-शूद्र-वर्गका वर्णनकर अन्तमें सामान्यलिङ्गका वर्णन है। किन्तु अमरसिंहने स्व-रचित अमरकोषमें उक्त क्रमका व्यत्यासकर अग्निपुराणोक्त 'सामान्य-नामलिङ्गों'के स्थानमें विशेष्यनिघ्नवर्ग तथा सङ्कीर्णवर्गको समाविष्टकर 'लिङ्गादिसंग्रहवर्ग'को पृथक् कर दिया है। उक्त अमरसिंहका ही अनुकरण 'जटाधर' ने अपने.....ग्रन्थ में और 'पुरुषोत्तमदेव'ने 'त्रिकाण्डशेष' में किया है।

इसके बाद उक्त राजा सा० ने निम्नलिखित कोषों एवं उनके रचयिताओंका नाम-निर्देश किया है। यथा—

ग्रन्थकार	कोष
१. अमरसिंह	: नामलिङ्गानुशासन
२. अजयपाल	: नानार्थसंग्रह
३. गदसिंह	: नानार्थध्वनिमञ्जरी
४. चक्रपाणि	: शब्दचन्द्रिका
५. जटाधराचार्य	: पर्यायनानार्थकोष
६. दण्डाधिनाथ	: नानार्थरत्नमाला
७. दुर्गादासविद्यावागीश	: धातुदीपिका
८. धनञ्जयकवि	: नाममाला
९. धनिकदासब्राह्मण	: सारसंग्रहनामक अनेकार्थसमुच्चय
१०. नरसिंह कालीपण्डित	: निघण्टुराज (राजनिघण्टु)
११. नारायणदत्तकविराज	: राजवल्लभ
१२. पद्मनाभदत्तद्विज	: भूरिप्रयोग
१३. पुरुषोत्तमदेव	: एकाक्षरकोष
१४. "	: द्विरूपकोष
१५. "	: त्रिकाण्डशेष

ग्रन्थकार	कोष
१६. पुरुषोत्तमदेव	: हारावली
१७. भावमिश्र	: भावप्रकाश
१८. मथुरेशपण्डित	: शब्दरत्नावली
१९. महेश्वरवैद्य	: विश्वप्रकाश
२०. मेदिनीकरवैद्य	: नानार्थशब्दकोष
२१. रामेश्वरशर्मा	: शब्दमाला
२२. रत्नमालाकरवैद्य	: आयुर्वेदार्णवोत्थित पर्यायरत्नमाला
२३. वोपदेवमिश्र	: कविकल्पद्रुम
२४. श्रीनन्दनभट्टाचार्य	: वर्णाभिधान
२५. श्रीरामशर्मा	: उणादिकोष
२६. सि. कौ. संक्षिप्तसारकार :	उणादिवृत्ति
२७. " "	" "
२८. हलायुधभट्ट	: अभिधानरत्नमाला
२९. हेमचन्द्रजैन	: अभिधानचिन्तामणि

इनके अतिरिक्त (१) विश्वकोषमें—

१. भोगीन्द्र, २. कात्यायन, ३. साहसाङ्क, ४. वाचस्पति, ५. व्याडि, ६. विश्वरूप, ७. मङ्गल, ८. शुभाङ्क, ९. वोपालित और १०. भागुरिके द्वारा रचे गये—

तथा (२) मेदिनीकोषमें—

१. उत्पलिनी, २. शब्दार्णव, ३. संसारावर्त, ४. नाममालाख्य, ५. वररुचि, ६. शाश्वत, ७. रन्तिदेव, ८. रत्नापरनामहर, ९. गोवर्धन, १०. रभसपाल, ११. रुद्र, १२. अमरदत्त, १३. गङ्गाधर, १४. वाभट, १५. माधव, १६. धर्म, १७. तारपाल, १८. वामन, १९. चन्द्र, २०. विक्रमादित्य और २१. गोमि'के रचित कोष तथा २२. पाणिनि-पदानुशासन कोष; इनके कोषग्रन्थोंका नामोल्लेख है ।'

(ख) पुरुषोत्तमदेव-रचित 'त्रिकाण्डशेष'नामक कोषकी 'साराथचन्द्रिका' नामकी संस्कृत व्याख्याके कर्ता 'श्रीशीलस्कन्ध यतिवरने' प्राप्ताप्राप्त एवं ज्ञाता-ज्ञात नामवाले कोषों तथा कोष-रचयिताओंके निम्नलिखित १९२ नामोंका उल्लेख-कर 'दैवज्ञ'मुखमण्डन, सरस्वतीनिघण्टु, और सिद्धीषधनिघण्टु,—इन तीन ग्रन्थों-के लङ्काद्वीपमें सिंहलाक्षर लिपिमें मुद्रित होनेकी चर्चा की है । उनकी तत्रत्य

१. उपरिलिखित २९, १० तथा २२ नामोंके अतिरिक्त भी कतिपय नाम और ग्रन्थ अर्वाचीन हैं तथा कुछ नाम कोषभिन्न हैं ।

पुस्तकालयीय ग्रन्थ-संख्या क्रमशः १४६, १८७ और १९२ है, यह भी उनका कथन है । उल्लिखित १९२ कोष एवं कोषकारोंके ये नाम हैं—

प्राप्तकोष :

ग्रन्थ-नाम	ग्रन्थकार-नाम
१. नामलिङ्गानुशासन	: अमरसिंह
२. कल्पद्रु	: केशव
३. शब्दार्णव	: दुर्गादास
४. प्रमाणनाममाला	: धनञ्जय
५. त्रिकाण्डशेष	: पुरुषोत्तमदेव
६. हारावली	: "
७. एकाक्षरकोष	: "
८. द्विरूपकोष	: "
९. "	: भरतसेनमल्ल
१०. मातृकानिघण्टु	: महीदास
११. अनेकार्थध्वनिमञ्जरी	: महाक्षपणक
१२. अव्ययकोष	: महादेव
१३. विश्वप्रकाश	: महेश्वर
१४. शब्दभेदप्रकाश	: "
१५. नानार्थमञ्जरी	: मेदिनीकर
१६. वैजयन्ती	: यादव
१७. लिङ्गविशेषविधि	: वररुचि
१८. पञ्चतत्त्वप्रकाश	: वेणीदत्त
१९. नानार्थसमुच्चय	: शास्त (?)
२०. लक्ष्मीनिवास	: शिवराम
२१. गणितनाममाला	: हरिदत्त
२२. अभिधानरत्नमाला	: हलायुध
२३. शारदीनाममाला	: हर्षकीर्ति
२४. अनेकार्थसंग्रह	: हेमचन्द्र
२५. अभिधानचिन्तामणि	: "
२६. अभिधानचिन्तामणि— नाममालापरिशिष्ट	: "
२७. लिङ्गानुशासन	: "

ग्रन्थ-नाम	ग्रन्थकार-नाम
२८. अभिधानरत्नमालाशिलोच्छ्रः	जिनेन्द्रमुनीश्वर
२९. मदनपालनिघण्टु :	मदनपाल
३०. मुक्तावली :	श्रीधर
३१. रत्नमाला :	दण्डाधिनाथोपनाम इरुगप्प
३२. शब्दसंग्रहनिघण्टु :	अगस्त्य
३३. नानार्थसंग्रह :	अजयपाल
३४. नामसंग्रहमाला :	अप्पथदीक्षित
३५. एकाक्षरनाममाला :	अमरसिंह
३६. प्रयुक्तपदमञ्जरी :	कालिदास
३७. शब्दार्णव :	काशीनाथ
३८. लघुनिघण्टुसार :	केशव
३९. लोकप्रकाश :	क्षेमेन्द्र
४०. अनेकार्थध्वनिमञ्जरी :	गदसिंह
४१. शब्दमाला :	गोपीनाथ
४२. नामावली :	गोवर्धन
४३. शब्दसागर :	गोविन्दशर्मा
४४. शब्दचन्द्रिका :	चक्रपाणिदत्त
४५. अभिधानतन्त्र :	जटाधराचार्य
४६. निघण्टु :	जैमिनि
४७. कोमलकोषसंग्रह :	तीर्थस्वामी
४८. गीर्वाणभाषाभूषण :	त्रिविक्रमाचार्य
४९. नानार्थरत्नमाला :	दण्डनाथ या भास्कर
५०. नाममाला :	दुर्ग
५१. वैष्णवाभिधान :	देवकीनन्दन
५२. नानार्थसमुच्चय :	धरणीश
५३. कविजीवन :	धर्मराज
५४. बालप्रबोधिका :	नत्तिकरकवि
५५. वर्णाभिधान :	नन्दनभट्टाचार्य
५६. राजनिघण्टु :	नरसिंहपण्डित
५७. राजवल्लभ :	नारायणदास
५८. रत्नकोष :	नरसिंहमुनि
५९. भूरिप्रयोग :	पद्मनाभ

ग्रन्थ-नाम	ग्रन्थकार-नाम
६०. शीघ्रबोधिनीनाममाला	: पुण्डरीकविट्ठल
६१. वर्णदेशन	: पुरुषोत्तमदेव
६२. रत्नकोष	: पृथ्वीधराचार्य
६३. शब्दचन्द्रिका	: बाणभट्ट
६४. निघण्टुकैकाध्याय	: बाल्लिकेयमिश्र
६५. त्रिरूपकोष	: विल्लण
६६. नामसंग्रहनिघण्टु	: भागवाचार्य
६७. नाममाला	: भोजराज
६८. मल्लकोष	: मल्ल
६९. शब्दरत्नावली	: मथुरेश
७०. पदचन्द्रिका	: मयूरभट्ट
७१. अनेकार्थतिलक	: प्रदीप
७२. शब्दरत्नाकर	: ”
७३. एकाक्षरनिघण्टु	: माधव
७४. सुप्रसिद्धपदमञ्जरी	: मुरारि
७५. आयुर्वेदपर्यायरत्नमाला	: रत्नमालाकर
७६. शब्दार्थनिर्णय	: राक्षस
७७. कविदर्पणनिघण्टु	: राम
७८. उणादिकोष	: रामशर्मा
७९. शब्दमाला	: रामेश्वर
८०. रूपमञ्जरीनाममाला	: रूपचन्द्र
८१. नाममालानिघण्टु	: वरदराज
८२. ऐन्द्रनिघण्टु	: वररुचि
८३. कविमञ्जरी	: वल्लभ
८४. शब्दरत्नाकर	: वामनभट्ट
८५. कविदीपिकानिघण्टु	: विक्रमादित्य
८६. शब्दार्थचिन्तामणि	: विट्ठलाचार्य
८७. कोषकल्पतरु	: विश्वनाथ
८८. शब्दार्थकल्पतरु	: वेङ्कट
८९. शाब्दिकविद्वत्कवि- प्रमोदक	: ”
९०. दशदीपनिघण्टु	: वेदान्ताचार्य

ग्रन्थ-नाम	ग्रन्थकार-नाम
९१. संयमिनाममाला	: शङ्कर
९२. शिवकोष	: शिवदत्त
९३. द्विरूपकोष	: श्रीहर्ष
९४. श्लेषार्थपदसंग्रह	: "
९५. एकाक्षरनिघण्टु	: सदाचार्य
९६. लिङ्गप्रकाश	: सारेश्वर
९७. भुवनप्रदीपिका	: सार्वभौममिश्र
९८. शब्दरत्नाकर	: सुन्दरगणि
९९. अनेकार्थतिलक	: सोमभव
१००. एकार्थनाममाला	: सीभरी
१०१. द्व्यक्षरनाममाला	: "

अविदित-ग्रन्थ-नामवाले कोषकार

१०२. अमरदत्त	११७. राजमुकुट
१०३. कृत्य	११८. रुद्र
१०४. गङ्गाधर	११९. धरणीधर
१०५. चन्द्रगोमि	१२०. वाग्भट
१०६. तारपाल	१२१. सर्वधर
१०७. दामोदर	१२२. वाचस्पति
१०८. धर्मदास	१२३. राजदेव
१०९. वोपालित	१२४. वामन
११०. भागुरि ^१	१२५. मुकुट
१११. भोगीन्द्र	१२६. विक्रमादित्य
११२. मङ्गल ^२	१२७. विश्वरूप
११३. मार्तण्ड	१२८. भट्टमल्ल
११४. रन्तिदेव	१२९. व्याडि
११५. रभसपाल	१३०. विश्वलोचन ^३
११६. राजशेखर	१३१. शुभाङ्क

१. इनका रचित 'त्रिकाण्डकोष' है। (द्रष्टव्य : वाचस्पति गैरोला-रचित सं० साहित्यका इतिहास, पृ० ६२०)

२. इनकी रचना 'मङ्गलकोष' है।

३. इनका रचित 'विश्वलोचनकोष' है, जो सूरतसे प्रकाशित है।

१३२. सोमनन्दी
१३३. सज्जन
१३४. साहसाङ्क

१३५. हट्टचन्द्र
१३६. हर
१३७. कात्यायन

अविदित कर्तृनामक, विदित-ग्रन्थनामक कोष

१३८. अमरमाला^१
१३९. असालतिप्रकाश
१४०. आनन्दकोष
१४१. एकवर्णसंग्रह
१४२. एकाक्षरकोष
१४३. उत्पलिनी
१४४. ऊष्मविवेक
१४५. अजय
१४६. अरुण
१४७. इन्दुकोष
१४८. कल्पतरुकोष
१४९. ग्रहाभिधान
(देवज्ञमुखमण्डन)
१५०. जकारभेद^२
१५१. दण्डिकोष
१५२. सुभ्रुतिकोष
१५३. धन्वन्तरिनिघण्टु
१५४. नक्षत्राभिधान
१५५. देशीकोष
१५६. नानार्थमञ्जरी
१५७. नामनिधान
१५८. पद्मकोष
१५९. भुम्रकोष
१६०. चकारभेद
१६१. बीजकोष

१६२. बृहदमरकोष^३
१६३. महाखण्डनकोष
१६४. पदरत्नावली
१६५. राजकोषनिघण्टु
१६६. पुद्गलकोष
१६७. लिङ्गप्रकाश
१६८. मुनिकोष
१६९. वर्णप्रकाशकोष
१७०. पालकोष
१७१. वात्स्यायनकोष
१७२. कोषसार
१७३. शब्दतरङ्गिणी
१७४. गङ्गाधर
१७५. शब्ददीपिका
१७६. गोवर्द्धनकोष
१७७. शब्दरत्नसमुच्चय
१७८. शब्दसारनिघण्टु
१७९. चन्द्रकोष
१८०. संसारावर्त
१८१. चरककोष
१८२. सकलग्रन्थदीपिका
१८३. सकारभेद^४
१८४. सञ्जीवनी
१८५. सन्मुखविवृतिनिघण्टु
१८६. सरसशब्दसरणि

१. कतिपय विद्वान् इसे 'अमरसिंह' रचित कोष मानते हैं ।

२., ४. कतिपय विद्वान् इसे 'बाणभट्ट' की रचना मानते हैं ।

३. कुछ विद्वान् इसे 'अमरसिंह' की कृति मानते हैं ।

१८७. सरस्वतीनिघण्टु

१९०. सारस्वताभिधान

१८८. साध्यकोष

१९१. हनुमन्निघण्टु

१८९. रत्नकोष

१९२. सिद्धौषधनिघण्टु

(ग) श्री वाचस्पति गैरोला जीने अपने संस्कृत साहित्यके इतिहासमें पाणिनि-द्वारा एक 'द्विरूपकोष' लिखे जानेका उल्लेख किया है (पृ० ६३४) । इस आधारपर यह कहा जा सकता है कि उन्हीं गैरोला जीके उक्त इतिहासमें (पृ० ६३३) उद्धृत 'सत्यव्रत सामश्रमी'के मतानुसार पाणिनिका सत्ता-काल ई० पू० २४०० वर्ष मान लिया जाय तो पाणिनि-रचित उक्त 'द्विरूपकोष'-का रचना-काल आजसे लगभग साढ़े चार सहस्र वर्ष पूर्व ही होना सिद्ध होता है । इतना ही नहीं, अपि तु श्री गैरोला जीने उसी इतिहासमें 'भागुरि'की कृतियोंमें 'त्रिकाण्डकोष' होनेका उल्लेख किया है । उक्त 'भागुरि' का समय ई० पू० ३१०० वर्ष (उक्त इति० पृ० ६२०) होनेसे यह स्पष्ट हो जाता है कि कम-से-कम आजसे लगभग ६००० वर्ष पहले ही लौकिक-कोष-रचनाका श्रीगणेश हो चुका था ।

इसके अतिरिक्त महावैयाकरण आपिशलि, शाकटायन, व्याडि, पतञ्जलिने भी कोषोंकी रचना की थी (वही इतिहास पृ० ७७७-७७९) ।

लौकिक-कोष-रचनामें जैनाचार्योंका भी प्रमुख हाथ रहा है । इनके रचित उपलब्ध कोषोंमें 'हरिषेण'रचित 'बृहत्कथाकोष' सबसे विशाल एवं प्राचीन कोष है । इनका समय शक ८५३ (ई० ९६९) है । इनका रचित उक्त कोष १२५०० श्लोकोंमें पूर्ण हुआ है । (गैरोला, सं० सा० का इति० पृ० ७८१) ।

आचार्य यादवप्रकाश—

इसी लौकिक-कोष-रचनाके सन्दर्भमें आचार्य 'यादवप्रकाश'ने प्रकृत 'वैजयन्तीकोष'की रचना की । आप विशिष्टाद्वैतवादी ब्राह्मण थे । ये 'तामिलनाडु' राज्यान्तर्गत 'काञ्चीपुरम्' या 'काञ्जीवरम्'के निकटवर्ती 'तिरुप्पुटकुलि' या 'गृध्रसरस' ग्रामके निवासी थे । पहले आप कट्टर अद्वैतवादी श्रीशङ्कराचार्यके मतानुयायी थे । इन्होंने 'ब्रह्मसूत्र'पर एक 'यादवभाष्य' लिखा था और उसे ये 'शाङ्करभाष्य'के साथ-साथ अपने शिष्योंको पढ़ाया करते थे । कहा जाता है कि 'तिरुप्पुटकुलि'में स्थित 'विजयराघव स्वामी-मन्दिर'में दो साधुओंकी मूर्तियाँ हैं, उनमें-से एक मूर्ति एक दण्ड धारण किये हुए अद्वैतवादी आचार्य 'यादवप्रकाश'की है और दूसरी त्रिदण्ड धारण किये हुए विशिष्टाद्वैतवादी 'रामानुजाचार्य'की है । एक बार अपने शिष्य रामानुजाचार्यके साथ शास्त्रार्थ होनेपर आचार्य यादवप्रकाश विशिष्टाद्वैतवादी होकर त्रिदण्ड धारण कर लिये ।

इसका प्रमाण यह दिया जाता है कि 'काञ्चीपुरम्' में स्थित 'वरदाचार्य स्वामी'-के मन्दिरकी भित्तिपर एक चित्रमें त्रिदण्ड धारण किये हुए आचार्य 'यादव-प्रकाश' अपनी शिष्य-मण्डलीके साथ चित्रित हैं। शिष्य-मण्डलीमें रामानुजाचार्यका भी चित्र है।

आचार्य यादवप्रकाशने 'पिङ्गल छन्दःसूत्र'पर भी भाष्य लिखा था। इनके रचे हुए 'यतिधर्मसमुच्चय' नामक ग्रन्थका वैष्णव-सम्प्रदाय में बहुत आदर है। आप जीवनके अन्तिम दिन तक वैष्णव संन्यासीके रूपमें 'काञ्चीवरम्' में ही रहे।

उपयुक्त द्विशताधिक कोषोंके अतिरिक्त भी अन्यान्य-कोषोंके प्रमापक वचनों-का उद्धरण यत्र-तत्र संस्कृत ग्रन्थोंकी व्याख्याओंमें उपलब्ध होनेसे उक्त कोषा-तिरिक्त अन्य कोषग्रन्थोंका अस्तित्व भी सिद्ध होता है। एतदतिरिक्त अर्वाचीन कतिपय विद्वानोंने और भी संस्कृत कोषोंकी रचना की है, जिनमें कुछ निम्नलिखित हैं—

१. उपनिषद्वाक्यकोष	:	कर्नल जी० ए० जाकोव
२. उपनिषद्वाक्यमहाकोष	:	गजाननके पुत्र शम्भु साघसे
३. कविकर्पटिका	:	दादीन्द्रकवि
४. कोषकल्पतरु	:	विश्वनाथ
५. कोशकौमुदी	:	रामदत्तत्रिपाठीशास्त्री
६. कोषसंग्रह	:	
७. कोषावतंस	:	राघवकवि
८. तिङन्ताणवतरणि	:	
९. धर्मकोष	:	श्रीलक्ष्मणशास्त्री
१०. भोटसंस्कृताभिधान	:	लोकेशचन्द्र
११. मीमांसाकोष	:	केवलानन्दसरस्वती
१२. शिवकोष	:	शिवदत्त
१३. आख्यानकमणिकोष	:	
१४. बाङ्मयाणव	:	पं० रामावतारशर्मा
१५. वाचस्पत्यम्	:	तर्कवाचस्पति तारानाथभट्टाचार्य
१६. शब्दकल्पद्रुम	:	राधाकान्तदेवबहादुर
१७. वास्तुरत्नकोष	:	
१८. देशीनाममाला	:	हेमचन्द्राचार्य

वैजयन्ती कोषका वैशिष्ट्य—

यह कोष कुल आठ काण्डोंमें पूरा हुआ है। इसे दो भागोंमें विभक्त किया जा सकता है—एक पर्याय-भाग तथा दूसरा नानार्थ-भाग। प्रथम पर्याय-भागमें

पाँच काण्ड हैं—१ स्वर्गकाण्ड, २ अन्तरिक्षकाण्ड, ३ भूमिकाण्ड, ४ पातालकाण्ड और ५ सामान्यकाण्ड । उनमें क्रमशः ३, ४, ९, ४ और ४ अध्याय तथा कुल २३७० श्लोक हैं । द्वितीय पर्याय-भागमें तीन काण्ड हैं—१ द्व्यक्षरकाण्ड, २ त्र्यक्षरकाण्ड और ३ सामान्यकाण्ड; इनमें क्रमशः ४, ४ और ९ अध्याय तथा कुल ८४२ श्लोक हैं । ग्रन्थकारने अन्तमें ग्रन्थप्रशस्तिके ४ श्लोक दिये हैं, इस प्रकार सम्पूर्ण ग्रन्थकी श्लोक-संख्या ३२१६ अर्थात् अमरकोषसे द्विगुणाधिक है ।

महाकाव्यों एवं कोषादिकोंके संस्कृतव्याख्याकार मल्लिनाथ, नारायण, क्षीरस्वामी, भानुजिदीक्षित, सर्वदेव, महेश्वर, मुकुट आदिने 'इति यादवः, इति वैजयन्ती' लिखकर अपनी-अपनी व्याख्याओंकी पुष्टिके लिए स्थान-स्थानपर इस कोषके बहुशः उद्धरण दिये हैं । इन उद्धरणोंमें अधिकांश नानार्थ-भागोक्त अंशोंका ही प्रयोग किया गया है ।

यादवप्रकाश जिसका पर्याय कहना आरम्भ करते हैं, उससे सम्बद्ध समस्त विषयोंका साङ्गोपाङ्ग वर्णन कर देते हैं । उदाहरणार्थ इसका कुछ दिग्दर्शन नीचे कराया जाता है—

(क) 'अग्निर्वैश्वानरः.....' (१।२।१४) से आरम्भकर 'अग्नि'-के पर्यायवाचक शब्द कहनेके उपरान्त तत्सम्बद्ध 'अग्निप्रिया, स्कन्धामि, काष्ठामि, तुषाग्नि, करीषाग्नि, मेघाग्नि, प्रेतदाहा(चिता)ग्नि, दैत्याग्नि, पित्र्यग्नि, यज्ञाग्नि, ऋत्वग्नि, विवाहाग्नि आदि समस्त अग्नियोंका पृथक्-पृथक् नाम-निर्देश किया गया है ।

(ख) ब्राह्मणादि वर्णचतुष्टयका पर्याय वर्णन करनेके बाद 'उपवर्णास्तु सङ्कीर्णाः.....' (३।५।२) से आरम्भकर वर्णसङ्कर जातियोंकी उत्पत्ति एवं उनके नामोंका निर्देश विशद रूपसे किया गया है । तदनन्तर 'एषां लक्षणसिद्धयर्थं केषाञ्चिद् वृत्तिरुच्यते.....'(३।४।६४) से 'गरानलप्रयोगाच्च प्रोच्यन्ते दस्युजातयः' (३।५।१०८) तक प्रकरणागत इन वर्णसङ्कर जातियोंकी जीवि-कादिका विस्तारके साथ वर्णन किया गया है ।

(ग) इसी तृतीय काण्डके षष्ठाध्यायमें कापोत, औदुम्बर, भिक्षु, व्युष्टि, सौमिक, बलिक, नीस, पुष्पाढ्य, द्विकालिक, शीर्णिक, मूलिक, पातालमूलिक, अम्नाव-काशिक, शिवन्नती, स्रग्नती, अहिन्नती आदि-आदि व्रतियों एवं तप्तकृच्छ्र, अतिकृच्छ्र, चान्द्रायणादि बहुविध व्रत साङ्गोपाङ्ग वर्णित हैं । (३।६।१२५—१४९)

(घ) 'शुक्ले शुभ्रशुचिस्थेताः.....क्रिमिरः सितलोहितः' (५।१।१०—५।३।२५) द्वारा श्वेतादि वर्णोंका पृथक्-पृथक् पर्याय एवं दो-दो, तीन-तीन वर्णों (रङ्गों) के मिश्रणसे बने हुए वर्णोंके नामोंका अत्यन्त विस्तारके साथ

वर्णनकर 'मधुरस्तु रसज्येष्ठो.....'(५।३।२५)से षड्रसोंका सामान्यतः पर्याय-निर्देश करनेके पश्चात् एकाधिक (दो, तीन, चार और पांच) रसोंके सम्मिश्रणसे निष्पन्न रसों (स्वादों) के नाम अलग-अलग '—त्रिषष्टिस्तु ततो रसाः' (५।३।४५) कहे गये हैं, इस प्रकार छः रसोंके मिश्रणसे बने ६३ रसोंका नाम-निर्देश करना ग्रन्थकारकी प्रतिभाका अनुपम उदाहरण है ।

उपर्युक्त दिग्दर्शनमात्रसे 'स्थालीपुलाक' न्याय-द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है कि विषयान्तरोके समाविष्ट होनेसे अन्यान्य कोष आकृति एवं श्लोक-सङ्ख्याकी दृष्टिसे विशाल भले ही हों, किन्तु ऐसा विशद वर्णन किसी भी कोषमें उपलब्ध नहीं है ।

आधुनिक संस्कृत-साहित्यके इतिहास-ग्रन्थोंमें कोषकी उपेक्षा ?

संस्कृत साहित्यके इतिहासोंके लेखक महानुभावोंने अपने-अपने ग्रन्थोंमें इतिहास, वेद, ब्राह्मण, उपनिषद्, पुराण, काव्य, नाटक, छन्द, चम्पू, आख्यायिका नीतिशास्त्र आदिके विषयमें तो स्वतन्त्र शीर्षक देकर सैकड़ों पृष्ठ लिखनेका कष्ट किया है, किन्तु इतनी बड़ी संख्यावाले (लगभग २२५ से भी अधिक) लौकिक संस्कृत कोषोंके विषयमें उन इतिहास-लेखक महानुभावोंकी वाच्यमिता तथा बद्धमुष्टिता देखकर महान् आश्चर्य एवं खेद होता है । कोषके विषयमें और विशद विवेचन करनेके लिए मैंने बड़े-बड़े धुरन्धर विद्वानोंके लिखे दर्जनों संस्कृत साहित्य-के इतिहास-ग्रन्थोंके पन्ने उलटे, किन्तु किसीमें भी उपर्युक्त लौकिक संस्कृत कोषोंके विषयमें प्रायः कुछ नहीं पा सका । संभवतः इसका प्रधान कारण यह है कि वैदिक एवं अन्य संस्कृत साहित्यके अनुसन्धानमें अधिकतम द्रव्य-राशि एवं समय लगाकर उक्त सं० साहित्यका उद्धार करनेका प्रशस्त श्रेय प्राप्तकर भी अमर-भाषा संस्कृतको मृत भाषा कहनेवाले संस्कृत साहित्यके कुछ अंग्रेज इतिहास-लेखकोंका अनुकरण करनेवाले हमारे भारतीय, संस्कृत साहित्यके इतिहास-लेखकोंने भी लौकिक संस्कृत कोषोंपर कुछ लिखनेकी कृपादृष्टि करना उचित या आवश्यक नहीं समझा । मैं श्रीवाचस्पति गैरोलाजीको धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने अपने 'संस्कृत साहित्यका इतिहास' ग्रन्थमें 'कोश'को स्वतन्त्र शीर्षक देकर इसके विषयमें विशदरूपसे तो नहीं, किन्तु कुछ लिखनेकी उदारता प्रदर्शित की है ।

आत्म-निवेदन—

अध्ययन-कालसे ही कोष-ग्रन्थोंकी ओर अपना प्रबल झुकाव होनेसे मैंने सर्व-प्रथम 'अमरकोष'की, राष्ट्रभाषा हिन्दीमें 'मणिप्रभा' व्याख्या, 'अमरचन्द्रिका' नामक टिप्पणीके साथ लिखी, प्रकाशन होनेपर विद्वत्समाजने उसे अपनाकर

अन्यान्य ग्रन्थ लिखनेके लिए मुझे प्रोत्साहित किया। फलस्वरूप 'हेमचन्द्राचार्य'कृत 'अभिधानचिन्तामणि'की भी राष्ट्रभाषा हिन्दीमें ही 'मणिप्रभा' व्याख्या लिखनेके बाद मैंने श्रीभानुजिदीक्षित-विरचित 'व्याख्यासुधा' (रामाश्रमी) सहित 'अमरकोष'-के सम्पादनका कार्य हाथमें लिया। उक्त व्याख्यामें उद्धृत सूत्रों एवं ग्रन्थान्तरीय प्रमापक वचनोंको उपलब्ध तत्तद्ग्रन्थोंसे मिलानकर उन सबोंका स्थल-निर्देश तथा त्रुटिपूर्ति करते हुए राष्ट्रभाषा हिन्दीमें 'प्रकाश' व्याख्याके साथ उसका सम्पादन किया। इन दोनों ग्रन्थोंको भी अपनाकर गुणग्राही विद्वद्गणने मेरा द्विगुणित उत्साह बढ़ाया। ये दोनों ग्रन्थ बहुत समयसे अप्राप्य थे।

इनके अतिरिक्त, अपने गुरुजनोके आदेश, सुहृद्वर्गकी सद्भावना एवं सहानुभूति पूर्ण प्रेरणासे उत्साहित होकर मैंने महाकवि कालिदास रचित 'रघुवंश' महाकाव्य, माघ-रचित 'शिशुपालवध' महाकाव्य, श्रीहर्षरचित 'नैषधचरित' महाकाव्य, मनु-प्रणीत 'मनुस्मृति' ग्रन्थोंकी गुत्थियोंको 'विमर्श'में स्पष्ट करते हुए राष्ट्रभाषा हिन्दी में ही 'मणिप्रभा' व्याख्या लिखी। उपर्युक्त सभी ग्रन्थ 'चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी'के द्वारा यथासमय प्रकाशित होकर सर्वजन-सुलभ हो गये हैं और नीर-क्षीर-विवेकी हंसके समान गुणैकपक्षपातपरायण विद्वत्समाजने इन्हें अपनाकर मुझे तथा प्रकाशकको अपने-अपने कार्यमें उत्तरोत्तर आगे बढ़ते हुए संलग्न रहनेके लिए समय-समयपर प्रोत्साहित किया है।

प्रकृत ग्रन्थका सम्पादन—

महाकाव्य आदिके संस्कृत व्याख्याकारोंके द्वारा प्रकृत 'वैजयन्तीकोष'के उद्धरण देख-देखकर इसे भी सर्व-जन-सुलभ करानेकी मेरी प्रबल आकाङ्क्षा बहुत दिनोंसे हो रही थी। इसे उपलब्ध करनेके लिये स्वयं तथा मित्रों-द्वारा बम्बई, झालरापाटन, व्यावर आदि स्वपरिचित बड़े-बड़े पुस्तकालयोंके साथ पत्राचार करनेपर भी मैं सफल नहीं हो सका। किन्तु सुलतानगंज (भागलपुर)में स्थित राजकीय संस्कृतोच्च विद्यालयसे स्थानान्तरित होकर जब मैं 'आरा'में आया, तब कुछ वर्षोंके उपरान्त वार्ता-प्रसङ्गमें इस कोषकी चर्चा आनेपर मेरे अन्यतम मित्र डॉ॰ नेमिचन्द्रजी शास्त्री एम॰ ए॰ (संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी), ज्योतिषाचार्य, अध्यक्ष संस्कृत विभाग, "जैन महाविद्यालय, आरा"ने इस 'वैजयन्तीकोष'की अत्यन्त प्राचीन प्रति मुझे देनेकी कृपा की। जो अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण होनेके कारण प्रेसमें मुद्रणार्थ देने योग्य नहीं थी। अतः मैंने बड़ी सावधानीसे इसकी पाण्डुलिपि तैयार की है। लिङ्गनिर्देशपूर्वक इसकी शब्दसूची तैयार करनेमें मुझे अनेक कोषोंका अध्ययन करना पड़ा है। पाठकोंको इससे अधिक सीविध्य प्राप्त होगा। सर्वांगपूर्ण पाण्डुलिपि तैयार हो जानेके बाद

मैंने सहजों अलभ्य संस्कृत ग्रन्थ-रत्नोंके प्रकाशक 'चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी'के संचालक महोदयको प्रकाशनार्थ इसे दी और उन्होंने इसको प्रकाशित करनेकी सहर्ष स्वीकृति दे दी, जिसके फल-स्वरूप अत्यन्त दुर्लभ एवं महत्त्वपूर्ण इस ग्रन्थ-रत्नको सर्व-सुलभ होनेका सत्सीभाग्य प्राप्त होने जा रहा है ।

मैं 'अमरकोष' तथा 'अभिधानचिन्तामणि' कोषद्वयके समान ही इसकी भी राष्ट्रभाषा हिन्दीमें विशद व्याख्या लिखना प्रारंभ कर दिया था, किन्तु सांसारिक विविध कारणोंसे मेरी इच्छा त्वरित पूरी नहीं हो सकी—प्रस्तुत संस्करणमें हिन्दी व्याख्याका समावेश नहीं हो सका । अगले संस्करणको हिन्दी व्याख्यासे समन्वित कर अपनी चिराकांक्षा पूर्ण करनेका प्रयास करूँगा ।

आभार-प्रदर्शन—

सर्वप्रथम 'डा० श्री गुस्ताव आपर्ट, पी० एच्० डी०, अध्यापक संस्कृत तथा तुलनात्मक भाषाविज्ञान, प्रेसीडेंसी महाविद्यालय, मद्रास'का बहुत आभारी हूँ, जिनके द्वारा सम्पादित ग्रन्थको आधार मानकर मैं इस ग्रन्थका सम्पादन-कार्य करनेमें समर्थ हो सका हूँ । तदनन्तर अपने स्नेही डॉ० नेमिचन्द्रजी शास्त्री, डी० लिट०, का तथा उन्हींके सनामा, 'जैन सिद्धान्त भवन, आरा'के वर्तमान पुस्तकालयाध्यक्ष श्री नेमिचन्द्र शास्त्री, एम० ए०, साहित्याचार्य'का अतिशय आभार मानता हूँ, जिनकी कृपासे इस पुस्तककी मूल प्रति उपलब्ध हुई, और ग्रन्थके प्रकाशनान्ततक मेरे पास रहकर प्रमादादि दोषवश उपस्थित सन्देहोंका निराकरण करनेमें सहायिका होती रही । 'संस्कृत साहित्य-का इतिहास' ग्रन्थके लेखक श्री वाचस्पति गैरोलाका भी मैं आभारी हूँ, जिनका ग्रन्थ इस भूमिकाके लिखनेमें सहायक हुआ है । चौखम्बा संस्कृत सीरीजके प्रमुख कार्यकर्ता एवं मेरे परम मित्र व्या० आ० प० श्रीरामचन्द्र झाजीको भूरिशः धन्यवाद देता हूँ, जिनकी देख-भाल एवं सहयोगमें यह ग्रन्थ अपेक्षाकृत शीघ्र और शुद्ध प्रकाशित हो रहा है । इस ग्रन्थके सम्पादन-कालमें अपना निरन्तर सहयोग देनेवाले स्नेहभाजन अपने आत्मज चि० श्री रामकिशोर मिश्रको बहुशः आशीर्वाद-प्रदान करता हूँ ।

अन्तमें अत्यन्त दुर्लभ या अमुद्रित परमोपयोगी सहस्रशः संस्कृत ग्रन्थोंके प्रकाशक 'चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस' तथा 'चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी', के वर्तमान प्रमुख व्यवस्थापक बन्धुयुगल (चि० श्री मोहनदास गुप्त एवं श्री विठ्ठलदास गुप्त)को भी साशीर्वाद भूरिशः धन्यवाद देता हुआ मैं भगवान्से प्रार्थना करता हूँ कि उक्त दोनों बन्धु अपने परिवारके सहित

स्वस्थ, सुखी एवं उत्तरोत्तर ऐश्वर्य-सम्पन्न होकर चिरायु हों तथा अपने पूर्वजों-के समान संस्कृत साहित्यके उद्धारमें सदा संलग्न रहें। इस ग्रन्थके सम्पादन एवं प्रकाशनमें अन्यान्य जिन महानुभावोंकी कृतियों या प्रकारान्तरसे सहायता मिली है उन सबोंके प्रति आभार-प्रदर्शन करता हूँ।

इस सृष्टिमात्रमें जगन्त्रियन्ता परात्पर परब्रह्म परमात्माके अतिरिक्त कोई भी प्राकृत प्राणी सर्वथा निर्भ्रान्त नहीं हो सकता, अतः इस ग्रन्थके सर्वतो-भावेन शुद्ध होनेका दावा करना मुझ-जैसे अल्पज्ञके लिए सर्वथा अशक्य है। इस कारण मैं गुणग्राही विद्वज्जनोंसे करबद्ध प्रार्थना करता हूँ कि मेरे लिखने, अत्यन्त सूक्ष्माक्षरोंके संयोजन एवं संशोधन करनेमें प्रमाद या मानव-सुलभ भ्रान्ति-वश कोई अशुद्धि रह गई हो तो वे मुझे क्षमा करते हुए सूचित करें, जिससे उसका निराकरण अग्रिम-संस्करणमें किया जा सके। क्योंकि—

‘नैवानवद्यं जगतीह किञ्चिन्न

वाऽप्यवद्यं किल वस्तुजातम् ।

ततो बुधा आददते गुणान् हि

हंसा यथा क्षीरपयोविवेकात् ॥

तथा—

‘गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः ।

हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः ॥’

इति शम् ॥

‘गोविन्द-कुटीर’
केसठ (शाहाबाद)
हरिप्रबोधिनी ११
सं० २०२८ वि०

विद्वज्जनविधेयः—
मिश्रोपाह्व हरगोविन्द शास्त्री



विषय-सूची

विषय	पृष्ठाङ्क
प्रस्तावना	७-२३
१. परिभाषा	१
(पर्याय-भाग : काण्ड १-५)	२-१५८
(१) स्वर्गकाण्ड—	२-१०
१. आदिदेवाध्याय	१
२. लोकपालाध्याय	२
३. यक्षाध्याय	१०
(२) अन्तरिक्षकाण्ड—	११-२४
१. ज्योतिरध्याय	११
२. मेघाध्याय	१७
३. खगाध्याय	१८
४. शब्दाध्याय	२२
(३) भूमिकाण्ड—	२५-१०७
१. देशाध्याय	२५
२. शैलाध्याय	२९
३. वनाध्याय	३२
४. पशुसंग्रहाध्याय	४७
५. मनुष्याध्याय	५२
६. ब्राह्मणाध्याय	६०
७. क्षत्रियाध्याय	७५
८. वैश्याध्याय	८९
९. शूद्राध्याय	९९
(४) पातालकाण्ड—	१०८-१३६
१. सरीसृपाध्याय	१०८
२. जलाध्याय	११२
३. पुराध्याय	११६
४. भूताध्याय	१२७

(५) सामान्यकाण्ड	...	१३७-१५८
१. गणाध्याय	...	१३७
२. धर्मकर्मध्याय	...	१४२
३. गुणाध्याय	...	१४५
४. अर्थवल्लिङ्गाध्याय	...	१४९
(नानार्थभाग : काण्ड ६-८)	...	१५९-२२४
(६) द्व्यक्षरकाण्ड—	...	१५९-१७९
१. पुलिङ्गाध्याय	...	१५९
२. स्त्रीलिङ्गाध्याय	...	१६४
३. नपुंसकलिङ्गाध्याय	...	१६८
४. अर्थवल्लिङ्गाध्याय	...	१७१
५. नानालिङ्गाध्याय	...	१७३
(७) त्र्यक्षरकाण्ड—	...	१८०-१९८
१. पुलिङ्गाध्याय	...	१८०
२. स्त्रीलिङ्गाध्याय	...	१८६
३. नपुंसकलिङ्गाध्याय	...	१८८
४. अर्थवल्लिङ्गाध्याय	...	१९१
५. नानालिङ्गाध्याय	...	१९३
(८) शेषकाण्ड—	...	१९९-२२४
१. पुलिङ्गाध्याय	...	१९९
२. स्त्रीलिङ्गाध्याय	...	२०४
३. नपुंसकलिङ्गाध्याय	...	२०६
४. अभिधेयवृत्तिङ्गाध्याय	...	२०८
(अर्थवल्लिङ्गाध्याय)	...	२०८
५. नानालिङ्गाध्याय	...	२१०
६. पर्यायसंयोगन्यायप्रदर्शनाध्याय	...	२१३
७. अनेकार्थाव्ययाध्याय	...	२१५
८. अव्ययपर्यायाध्याय	...	२१८
९. लिङ्गसंग्रहाध्याय	...	२२०
ग्रन्थोपसंहार	...	२२५
परिशिष्ट	...	२२७
शब्दानुक्रमिका	...	१-१७०

॥ श्रीः ॥

वैजयन्तीकोषः

—ॐ—

अथ परिभाषाध्यायः

ओंकारार्थाय तत्त्वाय वाच्यवाचकशक्तये ।
ब्रह्मसंज्ञाय पूर्वेषां गुरुणां गुरवे नमः ॥ १ ॥
प्रकाश्याष्टविधं लिङ्गं निर्लिङ्गं वचनानि च ।
वैजयन्तीति विख्यातं क्रियते नामशासनम् ॥ २ ॥
स्त्रीपुत्रपुंसकं लिङ्गं संकीर्णं तच्च पञ्चधा ।
नृस्त्री नृषण्डषण्डस्त्री त्रिलिङ्गं वाच्यलिङ्गकम् ॥ ३ ॥
समासलिङ्गाद्विधितः साहचर्यात् पृथक्कृतेः ।
लिङ्गं विद्यात् प्रयोगाच्च क्तिन् सर्वत्रापि च स्त्रियाम् ॥ ४ ॥
यत्प्रवृत्तं समासस्य लिङ्गं तत्स्यात् समासिनाम् ।
विशेषविधितः कापि लिङ्गं तत्राप्ययं क्रमः ॥ ५ ॥
स्त्रीलिङ्गे स्त्रीत्ययं शब्दः पुंलिङ्गे ना पुमानिति ।
षण् क्लीनपुमिति क्लीबे ये च षण्डार्थवाचिनः ॥ ६ ॥
त्रिष्वित्युक्तिर्वाच्यलिङ्गे त्रयीशब्दस्त्रिलिङ्गके ।
अस्त्रीत्यादि निषेधेषु नृषण्डादीतरद्वयम् ॥ ७ ॥
ज्ञातैर्लिङ्गैः साहचर्यात् क्वचित् स्याल्लिङ्गनिश्चयः ।
एकत्र सव पुंलिङ्गाः स्त्रियोऽन्यत्रान्यतो नपुम् ॥ ८ ॥
इत्येकस्यापि पर्याया लिङ्गायात्र पृथक्कृताः ।
प्रयोगात् प्रायशो लिङ्गमुदन्तः संशये पुमान् ॥ ९ ॥
सन्दिग्धद्विवचोऽन्तं स्त्री ना स्याद्बहुवचोऽन्तकम् ।
समासे स्युः पृथक् सर्वे शब्दा बहुवचोऽन्तके ॥ १० ॥
न पूर्वशब्दभागत्र पुनस्त्वन्तमथादितः ॥ १०३ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां

वैजयन्त्यां परिभाषाध्यायः ।

१. अथ स्वर्गकाण्डः

आदिदेवाध्यायः ॥ १ ॥

स्वर्गो नाकः सुरावास ऊर्ध्वलोकः फलोदयः ।
सौरिको भोगभूमिः स्त्री दिवि द्यौश्च त्रिविष्टपम् ॥ १ ॥
अमर्त्यभवनं गौश्च त्रिदिवः स्यात्स्वरव्ययम् ।
देवा निलिम्पा मरुतो गीर्वाणा वायुनाः सुराः ॥ २ ॥
आदित्या ऋभवोऽस्वप्ना विवस्वन्तो दिवौकसः ।
आदिदेवा दिविषदो लेखा अदितिनन्दनाः ॥ ३ ॥
सुपर्वाणः क्रतुभुजो निर्जरा अमृताशनाः ।
बर्हिर्मुखा विट्पतयस्त्रिदशा हव्यथोनयः ॥ ४ ॥
अमर्त्याश्चाथ न स्त्री स्यादैवतं देवता स्त्रियाम् ।
त्रय एवादिदेवाः स्युर्ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ ५ ॥
आजानजाः स्वतोदेवाः कर्मदेवास्तु कर्मभिः ।
ब्रह्मा विधाता विश्वात्मा धाता स्रष्टा प्रजापतिः ॥ ६ ॥
हिरण्यगर्भो द्रुहिणो विरिञ्चः कश्चतुर्मुखः ।
पद्मनाभः सुरज्येष्ठश्चिरजीवी सनातनः ॥ ७ ॥
शतानन्दः शतधृतिः स्वयंभूः सर्वतोमुखः ।
परमेष्ठी विश्वरेताः पुरुषो हंसबाहनः ॥ ८ ॥
पद्मभूः प्राणदो वेधा द्रुघणो नाभिजो विधिः ।
बाग्वाणी भारती भाषा गौर्गीर्वाह्वी सरस्वती ॥ ९ ॥
विष्णुर्नारायणो बभ्रुश्चक्रपाणिर्जनार्दनः ।
दैत्यारिः पुण्डरीकाक्षस्त्रिककुट्टिष्ठिरश्रवाः ॥ १० ॥
पीताम्बरो हृषीकेशो विश्वक्सेनश्चतुर्भुजः ।
श्रीवत्सः श्रीपतिः शार्ङ्गो श्रीवत्साङ्कोऽच्युतो हुणः ॥ ११ ॥
वासुदेवः स्वभूश्चक्री वैकुण्ठः पुरुषोत्तमः ।
अरिष्टनेमिरजितः श्रीधरो यज्ञपूरुषः ॥ १२ ॥
सुह्रुकेशी मुररिपुर्गदापाणिरघोऽक्षजः ।
अनन्तशायी वृन्दाको मुकुन्दो धरणीधरः ॥ १३ ॥
शतानन्दः शतावर्तो युगावर्तः सुरोत्तमः ।
कालकुन्थो रन्तिदेवः केशवो गरुडध्वजः ॥ १४ ॥
पद्मनाभो विश्वरूपः कृष्णो हरिरसंपुषः ।
कैटभारिर्ब्रह्मनाभो गोविन्दो मधुसूदनः ॥ १५ ॥
आचारा वैष्णवी सूक्ष्मा लक्ष्मीः पुष्टिर्निरञ्जना ।

जीवनी मोहनी माया नवैता विष्णुशक्तयः ॥ १६ ॥
 कौस्तुभोऽस्य मणिर्लक्ष्म श्रीवत्सो नन्दकस्त्वसिः ।
 चापः शार्ङ्ग पाञ्चजन्यः शङ्खश्चक्रं मुदर्शनम् ॥ १७ ॥
 कौमोदकी गदाऽथास्य मत्स्याद्यैः समनामकाः ।
 अवतारा नृसिंहस्तु हिरण्यकशिपुद्विषन् ॥ १८ ॥
 उपेन्द्र इन्द्रावरजो वामनो बलिकण्टकः ।
 आदित्यो द्विपदस्तादर्यस्त्रिविक्रम उरुक्रमः ॥ १९ ॥
 विष्णुश्च जामदग्न्यस्तु रामो दाशरथिः पुनः ।
 राघवो जानकीकान्तो रामो रावणसूदनः ॥ २० ॥
 दूषणारिः खरारिश्च कुम्भकर्णारिरेव च ।
 राक्षसघ्नः सुखकरः कौसल्यानन्दवर्धनः ॥ २१ ॥
 पार्थिवेन्द्रो धनुष्पाणिर्बलिर्दशरथात्मजः ।
 रामः संकर्षणः पौरो बलदेवो हलद्युधः ॥ २२ ॥
 बलभद्रः प्रलम्बारिः कालिन्दीकर्षणो हली ।
 तालाङ्को रेवतीकान्तः सात्त्वतो मुसली बली ॥ २३ ॥
 भद्राङ्को भद्रवदनः कामपालः सितासितः ।
 बलो नीलाम्बरश्चाथ तस्य संवर्तकं हलम् ॥ २४ ॥
 सौनन्दमस्य मुसलं कृष्णो दामोदरोऽद्रिधृत् ।
 दाशार्हो नरकारातिर्वनमाली गदाप्रजः ॥ २५ ॥
 शैनिः कंसरिपुः शौरिः सारथिस्तस्य दारुकः ।
 वसुदेवोऽस्य जनको दुन्दुरानकदुन्दुभिः ॥ २६ ॥
 प्रद्युम्नो मन्मथः कामो मारो मनसिजः स्मरः ।
 कन्दर्पो दर्पकोऽनङ्गो मीनाङ्को मकरध्वजः ॥ २७ ॥
 पुष्पधन्वा रतिपतिः शंबरारिरनन्यजः ।
 शूर्पकारिर्मधुसखः पञ्चबुर्विषमायुधः ॥ २८ ॥
 बन्धुर्वामो जराभीरुर्हृच्छयो मधुसारथिः ।
 ब्रह्मसूरनिरुद्धः स्यादृश्यकेतुरुषापतिः ॥ २९ ॥
 अथान्ये ह्यवताराः स्युर्नरनारायणावृषी ।
 अश्वो ह्यशिराः शेषः कपिलो व्यास इत्यपि ॥ ३० ॥
 दत्तात्रेयश्च कल्की च बुद्धश्चेत्येवमादयः ।
 कपिलस्तु महाविष्णुर्व्यासः सत्यवतीसुतः ॥ ३१ ॥
 पाराशर्यो द्वैपायनः कृष्णद्वैपायनोऽपि च ।
 बुद्धस्तु श्रीघनः शास्ता बोधिसत्त्वो विनायकः ॥ ३२ ॥

समन्तभद्रः सर्वज्ञो मारजिह्नोकजिज्जिनः ।
 षडभिज्ञो दशबलो धर्मराजस्तथागतः ॥ ३३ ॥
 मुनीन्द्रः सुगतः शाक्यो मुनिरद्वयवाद्यपि ।
 शाक्यसिंहस्तु सर्वार्थसिद्धः शौद्धोदनिर्गुरुः ॥ ३४ ॥
 गौतमश्चार्कबन्धुश्च जिनस्त्वर्हस्त्रिकालदृक् ।
 अष्टकर्मपरिभ्रष्टो वीतरागश्च केवली ॥ ३५ ॥
 लक्ष्मीः पद्मालया शक्तिर्मा क्षीरोदसुतेन्दिरा ।
 रमान्धिजा भार्गवी च स्त्रीलिङ्गाश्चाम्बुजाह्वयाः ॥ ३६ ॥
 गरुडः काश्यपसुतो गरुत्मानुरगाशनः ।
 सुपर्णीतनयस्तादर्यो वैनतेयो महेन्द्रजित् ॥ ३७ ॥
 पन्नगारिविष्णुरथः सुपर्णो विहगाधिपः ।
 महेश्वरः पशुपतिः श्रीकण्ठः पांसुचन्दनः ॥ ३८ ॥
 शङ्करो गिरिशो रुद्रो गिरीशः शशिभूषणः ।
 महेश्वरश्चन्द्रमौलिः पिनाकी शशिशेखरः ॥ ३९ ॥
 कपर्दी धूर्जटिः शर्वः कपाली नीललोहितः ।
 ईश ईश्वर ईशानो भर्गो मृत्युञ्जयो मृडः ॥ ४० ॥
 व्योमकेशो महादेवः प्रमथाधिपतिः शिवः ।
 शूली दक्षाध्वरारातिः कामारिः परमेश्वरः ॥ ४१ ॥
 कृत्तिवासा अहिर्बुध्न्यो नीलग्रीवस्त्रिलोचनः ।
 गङ्गाधरो विरूपाक्षो वामदेवो वृषध्वजः ॥ ४२ ॥
 भूतेशः खण्डपरशुः स्थाणुरन्धकसूदनः ।
 भगनेत्रान्तको भीमस्त्रिपुरारिर्हृगायुधः ॥ ४३ ॥
 कटाटङ्को जटाटीरो जटाभाटो महानटः ।
 फिण्डीकान्तो रेरिहाणः सर्वज्ञो नन्दिवर्धनः ॥ ४४ ॥
 स्थालो डिण्डीश उड्डीशः कण्ठेकालो महाघ्नतः ।
 कृतानुरेता जोटिङ्गः कङ्कटीक उमापतिः ॥ ४५ ॥
 खट्वाङ्गी मन्दरमणिरुलन्दो वृषवाहनः ।
 उग्रः कटप्रदिग्वासा फाण्डः षाण्डोऽकुतश्चनः ॥ ४६ ॥
 बहुरूपोऽर्धमकुटो दशबाहुर्दशाव्ययः ।
 ज्ञानं वैराग्यमैश्वर्यं तपः सत्यं क्षमा धृतिः ॥ ४७ ॥
 स्रष्टृत्वमात्मसम्बन्धोऽप्यधिष्ठातृत्वमित्यपि ।
 अव्ययानि दशैतानि शम्भोरव्ययमस्त्रियाम् ॥ ४८ ॥
 वामा ज्येष्ठा शिवा रौद्री चित्तोन्मादकरी सुखा ।
 काली कलेवरा भूतदमनी चेशशक्तयः ॥ ४९ ॥

कपर्दोऽस्य जटाजूटः खट्वाङ्गोऽस्य सुखङ्घ्रुणः ।
 पिनाकोऽजगधं युग्यमजगावमजीगवम् ॥ ५० ॥
 प्रमथाः स्युः पारिषदा नन्दी स्यान्नन्दिकेश्वरः ।
 अथ कूश्माण्डकः केलिकिलो गणपतिप्रियः ॥ ५१ ॥
 भृङ्गरीटः पुनर्भृङ्गी चर्मी भृङ्गिरिटिः शला ।
 वृषाणो लूनदोर्बाणो भेलुकस्तु कृतालकः ॥ ५२ ॥
 वीरभद्रस्तु देवाजो विघ्नेशस्तु विनायकः ।
 लम्बोदरो हस्तिराज एकदन्तो गजाननः ॥ ५३ ॥
 द्वैमातुरः परशुभृदाखुयानो गणाधिपः ।
 कुमारः शरजः स्कन्दस्तारकारिरुमासुतः ॥ ५४ ॥
 महासेनो महातेजाः शक्तिपाणिर्गुहोऽग्निभूः ।
 वैजयन्तः सिद्धसेनः सेनानीः शिखिब्राह्मणः ॥ ५५ ॥
 स्वामो गाङ्गेयगौरेयब्रह्मचारिमहौजसः ।
 षाण्मातुरः कार्तिकेयो ब्रह्मगर्भः षडाननः ॥ ५६ ॥
 सुब्रह्मण्यो नीलदंष्ट्रः क्रौञ्चारिः कुक्कुटध्वजः ।
 अस्य शाखो विशाखश्च नैगमेषश्च पृष्ठजाः ॥ ५७ ॥
 उमा मेनात्मजा रौद्री रुद्राणी सर्वमङ्गला ।
 आर्याऽद्रिजा महादेवी शर्वाणी पार्वती शिवा ॥ ५८ ॥
 भ्रामरी रेवती षष्ठी गौतमी बाभ्रवी सती ।
 अपर्णाऽपरुजा जारी शण्डिली वारुणी हिमा ॥ ५९ ॥
 बर्हिध्वजा शतमुखी योगिनी परमेष्ठिनी ।
 सुनन्दा नन्दिनी नन्दा नन्दयन्ती कपालिनी ॥ ६० ॥
 कालरात्री महारात्री रक्तदन्त्येकपाटला ।
 एकपर्णा भद्रकाली महाकाली करालिका ॥ ६१ ॥
 दुर्गा कात्यायनी चण्डी कैटभी सिंहवाहना ।
 यमेन्द्रकृष्णमैनाकरामाणां भगिनी स्वसा ॥ ६२ ॥
 विन्ध्यमन्दरकान्तारमलयेभ्यश्च वासिनी ।
 चर्ममुण्डा तु चासुण्डा चर्चा मार्जारकर्णिका ॥ ६३ ॥
 कर्णमोटी महाचण्डी महागन्धा कपालिनी ।
 ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री वाराही नारसिंहश्चपि ॥ ६४ ॥
 कौमारी वैष्णवी चेति ता एताः सप्त मातारः ॥ ६५ ॥
 इति भगवता यादवप्रकाशेन विरजितायां वैजयन्तां
 स्वर्गकाण्डे आदिदेवाध्यायः ॥ १ ॥

३५५६५

लोकपालाध्यायः ॥ २ ॥

इन्द्रो दुश्शवनो वज्री वृत्रारिर्वासवो वृषा ।
 वृद्धश्रवाः शुनासीरः सहस्राक्षो दिवस्पतिः ॥ १ ॥
 वास्तोष्पतिर्बलरिपुः पुरुहूतः पुरन्दरः ।
 मघवान् पूर्वदिक्पालः पृतनाषाद् सुराधिपः ॥ २ ॥
 संक्रन्दनो हरिहयो गोत्रभृत् पाकशासनः ।
 पुलोमशत्रुर्हरिवानूर्ध्वधन्वा शचीपतिः ॥ ३ ॥
 कारुर्जम्भरिपुर्जिष्णुर्मरुत्वान् हरिवाहनः ।
 स्वाराट्पुष्पाः सुत्रामा विडौजाः सितकुञ्जरः ॥ ४ ॥
 भूरिश्रवाश्चित्ररथः सुनासीरो युधिष्ठिरः ।
 परमन्युर्वज्रपाणिः शतमन्युर्विभीषणः ॥ ५ ॥
 आखण्डल उग्रधन्वा मेषाण्डोऽप्सरसां पतिः ।
 खदिरो माहिरो दाल्मिः शयीचिर्वियुनो जयः ॥ ६ ॥
 गौरावस्कन्दिवन्दीकौ वारणो देवदुन्दुभिः ।
 महेन्द्रो बाहुदन्तेयस्तुराषाड् वज्रदक्षिणः ॥ ७ ॥
 वृषण्वसु धनाद्यस्य पुराजः शान्तिकर्मकृत् ।
 सुतो जयो जयन्तश्च जयदत्तोऽप्यथो सुता ॥ ८ ॥
 जयन्ती देवनन्दी तु द्वाःस्थः सतस्तु मातलिः ।
 प्रासादो वैजयन्तोऽस्य वैजयन्तो ध्वजोऽपि च ॥ ९ ॥
 अमरावत्यस्य पुरी स्यात् सुदर्शनमित्यपि ।
 अश्वोऽस्य वृषणश्च स्यादारामस्त्वस्य नन्दनम् ॥ १० ॥
 क्रीडासरो नन्दिसरः क्रीडाभूस्त्वस्य नन्दिका ।
 पुलोमजा शचीन्द्राणी पौलोमी जयवाहिनी ॥ ११ ॥
 ऐरावतो राथन्तरिरभ्रनागोऽभ्रमुप्रियः ।
 ऐरावणश्चतुर्दंष्ट्रः सूर्यभ्रातारिमर्दनः ॥ १२ ॥
 अस्त्रियौ वज्रकुलिशौ भिदुरं शतधारकम् ।
 व्याधामः पुंसि दम्भोलिः शतकोटिः पविर्भिदुः ॥ १३ ॥
 वह्निर्वैश्वानरो घासिः कृष्णवर्त्मा समन्तमुक् ।
 जातवेदा बृहद्भानुर्वीतिहोत्रस्तनूनपात् ॥ १४ ॥
 दहनो ज्वलनः शुष्मा रोहिताश्च उषर्बुधः ।
 शोचिष्केशस्त्रिधामाऽग्निरुदधिः पावकोऽनलः ॥ १५ ॥
 हिरण्यरेताः सप्तार्चिर्वसुरेता हुताशनः ।
 कृपीटयोनिरर्चिष्मान् धूमकेतुर्दुरासदः ॥ १६ ॥

मन्त्रजिह्वः सप्तजिह्वः स्रग्जिह्वो हव्यवाहनः ।
 आश्रयाशो वातसखः कृशानुर्वीतसारथिः ॥ १७ ॥
 वमिर्मुजिः पचिः साचिश्चिरिर्वञ्चतिरञ्चतिः ।
 जागृविः सहुरिः सद्भिर्दमुना हवनो हवः ॥ १८ ॥
 सृदाकुर्भरथः पीथो जुहुराणेषिराशिराः ।
 तेजोऽपिप्तमपांपित्तं स्वाहाऽगनायी च तत्प्रिया ॥ १९ ॥
 स्कन्धाग्निः स्थूलकाष्ठाग्निर्मुर्मुस्तु तुषानलः ।
 छागणस्तु करीषाग्निर्मेघवह्निरिर्मदः ॥ २० ॥
 कुक्ष्यग्निर्हृच्छयोऽथौर्वे द्वौ संवर्तकवाडवौ ।
 सहरक्षा दवो दुध्रस्तार्णे क्षामतरत्समौ ॥ २१ ॥
 क्रव्यात्तु प्रेतदाह्माग्निर्देवाग्निर्हव्यवाहनः ।
 सहरक्षास्तु दैत्यानां पितॄणां कव्यवाहनः ॥ २२ ॥
 अपोनपात्तु यज्ञाग्निः क्रत्वग्निः स्यादपान्नपात् ।
 शुक्रान्वाहार्यपचनावध्वरे दक्षिणानिले ॥ २३ ॥
 गार्हपत्यो गृहपतिः पवमानश्च पश्चिमे ।
 शंस्य आहवनीयश्च पूर्वोऽग्निर्हव्यवाहनः ॥ २४ ॥
 सभ्यावसथ्यौ तत्पूर्वावायुः स्यात् पाशुबन्धिकः ।
 पृथिकृद्वर्महोमेषु पदहोमेष्वनीकवान् ॥ २५ ॥
 आधानादिष्वहस्तानः सुरभिर्यूपकर्मणि ।
 ब्रह्मौदनाग्निर्भरतो यविष्ठः । सवनाहुतौ ॥ २६ ॥
 महिमांस्तु विवाहग्निर्वैश्वदेवाग्निरद्भुतः ।
 व्रतान्ते बहुरन्नादः सुलभः पाकयज्ञिकः ॥ २७ ॥
 सव्यस्तु मृतके वह्निरपसव्यस्तु सूतके ।
 धूमस्तरिर्मेघवाही धूपोऽसौ गन्धवासितः ॥ २८ ॥
 शिखा जिह्वार्चिरपुमान् कीला ज्वाला च नृस्त्रियोः ।
 मलका तु महाज्वाला प्रवर्यो नीलकोऽपि च ॥ २९ ॥
 सप्त जिह्वा पुनः काली कराली विष्फुलिङ्गिनी ।
 धूम्रवर्णा विश्वरुचिलोहिता च मनोजवा ॥ ३० ॥
 त्रयी स्फुलिङ्गोऽपुञ्जो ना खट्वाङ्गश्चाथ संवरः ।
 सन्तापः स्यात्प्रकाशस्तु द्योत आलोक आतपः ॥ ३१ ॥
 दीप्ताग्रं काष्ठमुल्का स्यात् क्रमकोऽलातमुल्मुकम् ।
 अङ्गारोऽस्त्रा प्रशान्तार्चिरङ्गालः कारिकाभिर्विद् ॥ ३२ ॥
 भसितं भस्म भूतिः स्यादग्न्युत्पात उपाहितः ।

यमः पितृपतिर्दण्डधरो महिषवाहनः ॥ ३३ ॥
 यमराट् यमुनाभ्राता मन्दे वैवस्वतोऽन्तकः ।
 सावित्रेयः श्राद्धदेवः समवर्ती परेतराट् ॥ ३४ ॥
 कालः कृतान्तः शमनः कीनाशो दक्षिणाधिपः ।
 धर्मराजः पुराणान्तः कालकुन्थो विशीर्णपात् ॥ ३५ ॥
 पत्नी यमस्य धूमोर्णा चित्रगुप्तस्तु लेखकः ।
 पञ्चिका त्वग्रसन्धानी कालीची तु विचारभूः ॥ ३६ ॥
 नरको नारकोऽप्येष निरयो दुर्गतिः स्त्रियाम् ।
 अवीच्यन्ता रौरवाद्याः प्रायशो नरका नरि ॥ ३७ ॥
 नारका जन्तवः प्रेता यात्या अप्यातिवाहिकाः ।
 प्रेताः परेता वेताला गन्धर्वाः सत्त्वका ग्रहाः ॥ ३८ ॥
 यातना कारणा दुःखं त्वामनस्यं प्रसूतिजम् ।
 स्यात् कष्टं कृच्छ्रमाभीलं त्रिष्वेषां तद्वदर्थकाः ॥ ३९ ॥
 अथ रक्षांसि यातूनि राक्षसा अललोहिताः ।
 रात्रिञ्चरा रात्रिचराः क्रव्यात्क्रव्यादनैर्ऋताः ॥ ४० ॥
 कैकसेया यातुधानाः पुरुषादाः प्रवाहिकाः ।
 अनुषा विधुरा रक्तग्रहाः शङ्खव आशराः ॥ ४१ ॥
 अलक्ष्मीनिर्ऋतिर्व्येष्टा रावणस्तु हरान्तः ।
 दशास्यो विंशतिभुजश्चतुष्पान्मानमन्दिरः ॥ ४२ ॥
 लङ्केश्वरो यातुपतिः सन्नाहोऽस्य विचोलकः ।
 चन्द्रहासस्तु खड्गोऽस्य क्रीडाभूस्त्वंमरावली ॥ ४३ ॥
 अशोकवनिकोद्यानं त्रिशिराः समनीपदः ।
 इन्द्रजिन्मेघनादः स्यात् ग्रहस्तः स्यादलम्बुसः ॥ ४४ ॥
 वरुणः शीतलो वामो दुन्दुभिः संवृतोऽप्पतिः ।
 अम्बुवासोऽम्बुकान्तारः पाशी मकरवाहनः ॥ ४५ ॥
 प्रचेता यादसान्नाथः प्रत्यगाशापतिस्तथा ।
 जलभूषण उद्दामो गौरी तु वरुणप्रिया ॥ ४६ ॥
 वातो वायुर्जगत्प्राणः शुषिलः श्वसनोऽनिलः ।
 गन्धवाहो गन्धवहो मातरिश्वा समीरणः ॥ ४७ ॥
 युजिनो लघुगो वातिर्ध्वजप्रहरणो जगत् ।
 दैत्यदेवो बहः प्राणो नभः प्राणोऽङ्कतिः सरः ॥ ४८ ॥
 आशुगः पवनः स्पर्शः पवमानः प्रभञ्जनः ।
 मरुद्घृजिध्वजो मर्कः समीरोऽग्निसखञ्चलः ॥ ४९ ॥

शुष्मर्महाबलो वेगी नभोजातः सदागतिः ।
 नभस्वान् मारुतः शीघ्रः पृषदश्वः प्रकम्पनः ॥ ४० ॥
 सङ्क्रावातः सवृष्टिः स्याद्वात्या वातस्तु मण्डली ।
 मृदुवातश्चिञ्चलिको लेढा लिट् सौरतोऽपि च ॥ ४१ ॥
 मध्यमो हारितो नेरी यौनिकः स्वेदचूषकः ।
 खरः स्वरिङ्गणोऽथासौ ग्रीष्मोऽम्भानिलोऽनिलः ॥ ४२ ॥
 पयोदान्तस्तु पवनो वसन्तेऽमलपालिकः ।
 गरवायुर्निदाघेऽल्पः शिशिरे सपुटानिलः ॥ ४३ ॥
 जारवायुस्तु हेमन्ते शारदः शारणः शरः ।
 गोगन्धनः पुरोवात उत्तरस्तु हिमानिलः ॥ ४४ ॥
 रंहस्तरः झी प्रसभो जवो वेशः स्यदो रयः ।
 कुबेरो यक्षराब् यक्षः कुतनुः किन्नरेश्वरः ॥ ४५ ॥
 मनुष्यधर्मैलविलः पौलस्त्यो धनदो धनी ।
 कैलासनाथस्त्रिशिरा धनाध्यक्षो वटाश्रयः ॥ ४६ ॥
 निधिपालो वैश्रवणो वित्तेशो नरवाहनः ।
 राजराजः पराविद्धः किशाली गुह्यकेश्वरः ॥ ४७ ॥
 एकपिङ्गो रुद्रसखः कुडः पुण्यजनेश्वरः ।
 इच्छावसू रत्नगर्भो रत्नहस्तः सितोदरः ॥ ४८ ॥
 अस्योद्यानं चैत्ररथं पुत्रस्तु नलकूबरः ।
 पुरी कैलाससारास्य विमानं पुष्पकोऽस्त्रियाम् ॥ ४९ ॥
 निधानं गूढकोशो ना निधिः शेवधिरस्त्रियाम् ।
 भेदाः पद्मो महापद्मः शङ्खो मकरकच्छपौ ॥ ५० ॥
 मुकुन्दकुन्दनीलाश्च चर्चश्चेति निधेर्नव ।

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

स्वर्गकाण्डे लोकपालाध्यायः ॥ २ ॥



यक्षाद्यध्यायः ॥ ३ ॥

स्पर्शानन्दास्त्वप्सरसः सुमदाश्च रतेमदाः ।
 स्वर्वेश्याश्चाथ स्वापेयो यक्षोऽथ सुरगायनः ॥ १ ॥
 गन्धर्वो गातुगान्धर्वौ सिद्धाः स्युः सनकादयः ।
 भूतापुत्रास्तु भूतानि भूताश्च शिवपार्श्वगाः ॥ २ ॥
 किन्नराः स्युः किम्पुरुषा मयवोऽश्वमुखाश्च ते ।
 गुह्यका माणिचरयस्तथा देवजनाः सुताः ॥ ३ ॥
 विद्याधरास्तु युचराः खेचराः सत्ययौवनाः ।
 पिशाचः स्यात्कापिशेयोऽनृजुर्दर्वश्च पिण्डकः ॥ ४ ॥
 देवयोनय एते स्युः स्वर्वेश्याद्याः सरक्षसः ।
 नासत्यदक्षौ नासत्यावश्विनौ वरवाहनौ ॥ ५ ॥
 आश्विनेयौ यज्ञवह्नौ देववैद्यौ वरान्तकौ ।
 नासिक्यावाश्विनौ दक्षौ विश्वकर्मा युवर्धकिः ॥ ६ ॥
 त्वष्टा नाम स देवानां मयो नाम सुरद्विषाम् ।
 सनत्कुमारो वैधात्रो नारदः कलहप्रियः ॥ ७ ॥
 रुद्रा वसव आदित्या विश्वे साध्या मरुद्गणाः ।
 तुषिता भास्वराद्याश्च बहवो देवतागणाः ॥ ८ ॥
 मन्वन्तरेषु भिद्यन्ते देवाः सप्तर्षिभिः सह ।
 असुरा दानवा दैत्या दैतेया देवशत्रवः ॥ ९ ॥
 पूर्वदेवाः शुक्रशिष्याः रसागेहा हरिद्विषः ।
 ईदृक्चेत्यादिभिर्मन्त्रैः सदा प्रोक्ता मरुद्गणाः ॥ १० ॥
 स्वानभ्राडिति गन्धर्वगणा एकादशोदिताः ।
 सुधर्मा स्यादेवसभा दिव्य उच्चैःश्रवा हयः ॥ ११ ॥
 मेरुः सुमेरुः स्वर्णाद्रिर्मणिसानुः सुरालयः ।
 महामेरुर्देवगिरिर्गोधुक् चाथापरेऽद्रयः ॥ १२ ॥
 तालाङ्का मेरुगण्डाश्च ये मेरुं परितः स्थिताः ।
 मन्दाकिनी वियद्गङ्गा स्वर्नदी सुरदीर्घिका ॥ १३ ॥
 पञ्चैते देवतरवो मन्दारः पारिजातकः ।
 सन्तानः कल्पवृक्षश्च हरिचन्दनमस्त्रियाम् ॥ १४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

स्वर्गकाण्डे यक्षाद्यध्यायः ॥ ३ ॥

प्रथमः स्वर्गकाण्डः समाप्तः ॥ १ ॥

२. अथान्तरिक्षकाण्डः

ज्योतिरध्यायः ॥ १ ॥

अन्तरिक्षं नभो व्योम गगनं सुरवर्त्म खम् ।
 वियद्विष्णुपदं दिव्यं वायुवर्त्म विहायसम् ॥ १ ॥
 तारावर्त्माम्बरं मेघवर्त्म चाकाशमस्त्रियाम् ।
 दिग्दिशाशा ककुब्दीणीं हरिदेववधूः सरिः ॥ २ ॥
 अथयीभावोऽपदिशमवान्तरदिशा विदिक् ।
 क्रमात् पूर्वादिदिक्नाथा इन्द्राद्याः शङ्कराष्टमाः ॥ ३ ॥
 लोकपालास्ततो ब्राह्मा दिक् चैन्द्रीत्यादयो भिदाः ।
 आग्नेयी तु चराशा स्यान्नैर्ऋती तु दिगन्धकी ॥ ४ ॥
 मारुत्यनन्ता शार्वी तु शालाक्षाप्यपराजिता ।
 कौबेर्यादिषु तूदीची प्राच्यवाची प्रतीच्यपि ॥ ५ ॥
 ब्राह्मी तूर्ध्वाऽथ नागी स्यान्नारकी चाधरा ककुप् ।
 दिक्मण्डलं चक्रवालं दिगन्तः करिशोलुकम् ॥ ६ ॥
 दिक्मध्ये करिणीचारं दिग्युग्मे मण्डपीठिका ।
 अभ्यन्तरं त्वन्तरालमवकाशोऽन्तरं पदम् ॥ ७ ॥
 ऐरावतः पुण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः ।
 पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः ॥ ८ ॥
 करिण्योऽभ्रमुः कपिला पिङ्गलाऽनुपमा क्रमात् ।
 ताम्रपर्णी शुभदती चाङ्गना चाञ्जनावती ॥ ९ ॥
 अर्कः सूर्योऽर्यमा सूरौ द्वादशात्मा दिवाकरः ।
 मार्तण्डः सविता भानुर्भातुः पूषा दिनप्रणीः ॥ १० ॥
 सप्तसप्तिः पद्मबन्धुस्तपनोऽनूरुसारथिः ।
 द्युमणिर्हरिदश्वोऽद्विरशीतांशुर्विकर्तनः ॥ ११ ॥
 द्युमान् कुमुद्वतीशत्रुस्त्वेषांपतिरहर्षतिः ।
 भास्करोऽहस्करो भास्वान् विवस्वाञ्जलतस्करः ॥ १२ ॥
 रश्मिमाली हगध्यक्षः कर्मसाक्षी त्रयीवनुः ।
 तर्धुर्मार्तण्डमुण्डीरपाथिपेरुगभस्तयः ॥ १३ ॥
 पासिर्दृशानो रात्रिद्विट् प्रभाकरविभाकरौ ।
 खाध्वनीनः खतिलकः खगः खाङ्कस्तमोरिपुः ॥ १४ ॥
 चण्डांशुरंशुमानंशुः सहस्रांशुः सदागतिः ।
 आदित्यो मिहिरो मित्रो रविः प्रत्यूषडम्बरः ॥ १५ ॥

वृष्टिपादमयूखांशुसान्ध्योद्योगंगमस्तयः ।
 किरणोत्थौ च रोचिः क्ली रश्मिरक्ली मरीचिवत् ॥ १६ ॥
 तासां शतानि चत्वारि रश्मीनां वृष्टिसर्जने ।
 शतत्रयं हिमोत्सर्गे तावद्धर्मस्य सर्जने ॥ १७ ॥
 आनन्दनाश्च मेध्याश्च नूतना पूतना इति ।
 शतं शतं वृष्टिवहास्ताः सर्वा अमृताः स्त्रियः ॥ १८ ॥
 ता एव भन्दना मन्दाः कातनाः कोतनाः क्रमात् ।
 अथ मेघ्यश्च पोष्यश्च ह्लादिन्यश्च शतं शतम् ॥ १९ ॥
 हिमोत्सर्गाय ताः सर्वाः सर्वाश्चन्द्राश्च नामतः ।
 ता एव रेश्यो वाश्यश्च मेध्याश्चेति यथाक्रमम् ॥ २० ॥
 अथ रुद्रा विश्वभृतः ककुहाश्च शतं शतम् ।
 घर्माय शुक्रास्ताः सर्वा माष्यः शक्य इत्यपि ॥ २१ ॥
 आलोकस्तु प्रभा भा रुचिदीधितिदीपयः ।
 अथातपो रौद्रमिद्धं मृगतृष्णा मरीचिका ॥ २२ ॥
 संज्ञास्य रेणुर्द्युमयी त्रसरेणुः सुवर्चला ।
 त्वाष्ट्री प्रभाऽप्यथच्छाया विष्णुभा भूमिमय्यपि ॥ २३ ॥
 हिमद्युतिः शशी चन्द्रश्चन्द्रमाः शशभृद्विद्युः ।
 परिष्मा रोहिणीकान्तो निशानाथो निशाकरः ॥ २४ ॥
 पुनर्युवा दशाश्वो ग्लौरिन्दुः कुमुदबान्धवः ।
 ओषधीशो निशाकेतुर्मृगलक्ष्माऽत्रिनेत्रजः ॥ २५ ॥
 हृद्यांशुरंशुरञ्जारिरमृतांशुः कलानिधिः ।
 यजतस्तपसः क्लेदुः स्यन्दः स्पन्दो यथासुखः ॥ २६ ॥
 प्राचीनतिलको जर्णो व्याप्त्वः सृप्रस्तृपिस्तृप्तम् ।
 उडुराजः शशाङ्कश्च समुद्रनवनीतकम् ॥ २७ ॥
 चन्द्रपादास्तु संवाला ज्योत्स्ना च शशिनः प्रभा ।
 चन्द्रिका चन्द्रिमा चान्द्री कौमुदी चन्द्रगोलिका ॥ २८ ॥
 अङ्कश्चिह्नमभिज्ञानं लाञ्छनं लक्ष्म लक्षणम् ।
 पुष्पवन्तौ सहैवोक्त्यां सूर्याचन्द्रमसाबुधौ ॥ २९ ॥
 परिग्रहोपरक्तौ तु प्रस्तार्केन्द्रोरथ ग्रहे ।
 उपप्लवोपरगौ द्वौ स तु सन्निहितो रवेः ॥ ३० ॥
 गजच्छायाऽप्यथार्केन्द्रोः परिधिः परिवेषकः ।
 कुजारमङ्गलाङ्गारा लोहिताङ्गो धरासुतः ॥ ३१ ॥
 कर्षको रुधिरौ भौमः प्रव्याप्तोऽप्यथ हर्षुलः ।

बुधः श्यामाङ्ग एकाङ्गः सौम्यश्चान्द्रमसायनि ॥ ३२ ॥
 वाचस्पतिरनिर्वापः सुराचार्यो बृहस्पतिः ।
 गीष्परयाङ्गिरसौ चक्षाश्चारुश्चित्रशिखण्डिजः ॥ ३३ ॥
 प्रचक्षा दीदिविश्वाथ शुक्रो दूतो दिवाचरः ।
 तिर्यग्गाम्यसुराचार्य उशना भार्गवः कविः ॥ ३४ ॥
 मन्दः खोडोऽसितः क्रोडश्छायापुत्रः शनैश्चरः ।
 सौरिः स्थिरगतिः कोणो दीर्णाङ्गो युगवर्तकः ॥ ३५ ॥
 श्रुतकर्मा नीलवासा वक्रः कोलः स्थिरः शनिः ।
 स्वर्भानुर्ग्रहकल्लोलः सैहिकेयो विधुन्तुदः ॥ ३६ ॥
 राहुरभ्रपिशाचश्च केतवो विकचाः कृशाः ।
 धूमजाः शिखिनो ब्रह्मपुत्राः श्रीमन्त आहिकाः ॥ ३७ ॥
 तारा भं रात्रिजं धिष्ण्यं सन्नक्षत्रमुर्धुनं ना ।
 मृगशीर्षं मृगशिरो मार्गायण्याग्रहायणी ॥ ३८ ॥
 इन्वकास्तच्छिरोदेशे तारका इल्वला मताः ।
 योग्यः सिध्यश्च पुष्यः (ः) स्याद्यामकौ तु पुनर्वसू ॥ ३९ ॥
 निष्ठया स्वाती विशाखेतु रावे आर्द्रा तु कालिनी ।
 श्रवणे श्रोणा मूले तु मूलवर्हण्यथ श्रविष्ठासु ॥ ४० ॥
 मन्दागाश्च धनिष्ठाश्च भरण्योऽपभरणीषु योग्याश्च ।
 ज्येष्ठा ज्येष्ठमी स्यात्प्रोष्ठपदाः पुंस्त्रियोः सभाद्रपदाः ॥ ४१ ॥
 अश्विन्यौ वालिन्यावश्वयुजावाश्वकिन्यौ च ।
 यथाप्रयोगमेतेषु वचनं स्याद्वयवस्थितम् ॥ ४२ ॥
 अषाढाकृत्तिकाश्लेषामघा भूमिं स्त्रियश्च ताः ।
 फल्गुन्यौ तु द्वित्वमून्नोर्हस्तः शतभिषक् च सा ॥ ४३ ॥
 अनूराधास्तु पुंभूमिं शेषं सर्ववचः स्त्रियाम् ।
 वीथ्यो नवैव नक्षत्रैरश्विन्याद्यैस्त्रिभिस्त्रिभिः ॥ ४४ ॥
 त्रिर्वाथिका त्रयो मार्गा दक्षिणोत्तरमध्यमाः ।
 उत्तरो देवयानः स्याद्योगियानस्तु मध्यमः ॥ ४५ ॥
 दक्षिणः पितृयाणः स्यात्तत्राद्या नागवीथिका ।
 रोहिण्याद्याजवीथी स्यात्ततस्त्वैरावती परा ॥ ४६ ॥
 मार्गोऽयं देवयानाख्यो मघाद्या पुनरार्षमी ।
 हस्तादिका तु गोवीथी ततो जारद्रवी परा ॥ ४७ ॥
 मार्गोऽयं योगियानाख्यो मूलाद्या गजवीथिका ।
 श्रोणाद्या मृगवीथी स्यात्ततो वैश्वानरी परा ॥ ४८ ॥

मार्गोऽयं पितृयाणाख्यः स्थानान्येषां पथां दिवि ।
 ऐरावतं जारद्वयं वैश्वानरमिति क्रमात् ॥ ४६ ॥
 सप्तर्षयस्तु खे तारारूपाश्चित्रशिखण्डिनः ।
 ज्योतिषामयनं ज्योतिःशास्त्रं राशिर्ग्रहाह्वयः ॥ ४७ ॥
 पूर्वपश्चिमराश्यधौ सन्दालवलयौ क्रमात् ।
 संज्ञा द्रेक्काणहोराद्याः शास्त्रे ज्ञेयाः सलिङ्गकाः ॥ ४८ ॥
 कालोऽनेहा च दिष्टश्च स सूक्ष्मः स्त्री तुटिखुटिः ।
 द्वे तुटी लघुक्षरकस्तौ द्वावक्षरपातकः ॥ ४९ ॥
 तौ निमेषो लिप्तिका तु तौ द्वौ काष्ठा तु ता नव ।
 ते द्वे लवो लवाः पञ्च कला दश च तद्द्वयम् ॥ ५० ॥
 लेशो लेशाः पञ्चदश क्षणो नाडी तु षट् क्षणाः ।
 तौ तु नाडी मुहूर्तोऽस्त्री घटिका धारिकेति च ॥ ५१ ॥
 त्रिंशता तैरहोरात्रः पक्षाङ्गोऽप्यथ वासरः ।
 दिवसं चास्त्रियौ भानुर्घृणिर्घस्रो रविध्वजः ॥ ५२ ॥
 पद्मबन्धुः क्रोकहितो बुधश्च क्ली स्यादहर्निशम् ।
 रजनी यामिनी याम्या त्रियामा क्षणदा क्षपा ॥ ५३ ॥
 तमी तमस्विनी रात्रिर्निशा घारिर्विभावरी ।
 तमिस्रा क्षणिनी क्षाणी शर्वरी वासतेय्युषा ॥ ५४ ॥
 निशीथिनी निशीथ्या च ज्यौत्स्नी ज्योतिष्मती निशा ।
 पूर्णेन्दुस्तु दिनम्मन्या गर्भितं तु निशाद्वयम् ॥ ५५ ॥
 बह्वथस्तु गणरात्रं च चिररात्रं च रात्रयः ।
 पक्षाभ्यामिव याऽहोभ्यां युक्ता सा पक्षिणी निशा ॥ ५६ ॥
 तामसी सात्त्विकी चित्रा चित्रोपमा च राजसी ।
 खण्डिता चेति शर्वयः प्रावृडाद्यृतुषु क्रमात् ॥ ५७ ॥
 या सप्तसप्ततितमे वर्षे मासि च सप्तमे ।
 सप्तमी प्राणिनां घोरा रात्रिर्भैरवस्थी हि सा ॥ ५८ ॥
 ध्वान्तस्तिमिरमासक्तं तामिस्रं शार्वरं तमः ।
 आततिश्चान्धकारोऽस्त्री तत्तु सन्तमसं यदि ॥ ५९ ॥
 परितोऽथावतमसं लघ्वन्धतमसं महत् ।
 छदो व्यवधिरन्तर्धिर्वरणं चापवारणम् ॥ ६० ॥
 अपिधानतिरोधानपिधानाच्छादनानि च ।
 दिनादौ प्राहपूर्वाह्नौ ततः संगतसंगवौ ॥ ६१ ॥
 मध्यन्दिनं तु मध्याह्न उच्छ्रूस्तु विकालकः ।

सायाहोऽप्यपराहोऽस्त्री प्रदोषो मैथिलः समौ ॥ ६५ ॥
 सान्न्वाधिकः परस्तस्मान्निशीथस्त्वर्धरात्रकः ।
 मध्यरात्रो महारात्र उच्चन्द्रोऽपररात्रकः ॥ ६६ ॥
 ब्राह्मोऽप्येते क्रमाद्यामा यामे प्रहरयातुकौ ।
 पुण्याहमहि पुण्योऽशस्त्रिसन्ध्यं तूपवैणवम् ॥ ६७ ॥
 विहानोऽस्त्री प्रविसरो गोसर्गप्रत्युषानुषः ।
 व्युष्टं विभातं प्रत्युषं संयात्रिकमहर्मुखम् ॥ ६८ ॥
 काल्यं प्रभातं स्त्री बोषः सन्धा सन्ध्या पितृप्रसूः ।
 तिथिर्न षण् कर्मवाटी प्रतिपत्त्वेकपक्षतिः ॥ ६९ ॥
 पक्षतिश्चाथ पादूरो भूतेष्टा च चतुर्दशी ।
 निष्पक्षतिर्द्वितीया स्याद्दर्शाऽमावास्यमावसी ॥ ७० ॥
 अमावस्याऽप्यमावास्याऽप्यमामस्याऽप्यमामसी ।
 सा दृष्टेन्दुः सिनीवाली नष्टचन्द्रकला कुहूः ॥ ७१ ॥
 पित्र्या तु पूर्णिमा चान्द्री चन्द्रमाता निरञ्जना ।
 पूर्णा तु पूर्णमासी च पौर्णमासी च पूर्णिका ॥ ७२ ॥
 चन्द्रे कलोनेऽनुमतिः सैव राका तु पूरिते ।
 पर्वणी पञ्चदश्यौ द्वे पक्षान्तौ नन्दिवर्धनौ ॥ ७३ ॥
 आभ्रायणी शङ्कमूली पौर्णमास्याग्रहायणी ।
 पौषी तु महिषी माता माघी स्यादग्निपूर्णिमा ॥ ७४ ॥
 फाल्गुनी दण्डपाता स्याच्चैत्री तु मदनध्वजा ।
 विश्वविस्ता तु वैशाखी ज्यैष्ठी तूपनिवेशिनी ॥ ७५ ॥
 आषाढी कृत्तिमाचारी श्रावणी तु द्विवेदिनी ।
 अथ प्रौष्ठपदी गाङ्गी स्यादाश्विन्यवराविला ॥ ७६ ॥
 वत्सरान्ता त्वरिश्रेणी धैनुकी चापि कार्तिकी ।
 मासाख्याकूर्चनक्षत्रयोगश्च गुरुणा यदा ॥ ७७ ॥
 महाग्रहायणीत्याद्यास्त एव तिथयः क्रमात् ।
 जयन्तीत्यादिकाः संज्ञाः पुराणे तिथिषूदिताः ॥ ७८ ॥
 पक्षोऽर्धमासः पूर्वस्तु शुक्लाख्योऽन्योऽसिताह्वयः ।
 क्षीयमाणतिथिप्रायः पक्षो रिक्तोऽपरस्त्वणिः ॥ ७९ ॥
 अणिकूर्चस्त्वमावास्या भूतेष्टा प्रतिपत्क्षयात् ।
 मासः सांवत्सरस्तान्तः संक्रान्त्या तु स तारणः ॥ ८० ॥
 ज्यौतिषः पुनराचारात् सावनो दिनसंख्यया ।
 आग्रहायणिको मार्गशीर्षो वर्षमुखः सहाः ॥ ८१ ॥

सहस्ये स्युस्तैषपौषसैधा माघे तु शानकः ।
 शातरश्च तपाश्चाथ द्वौ फाल्गुनिकफाल्गुनौ ॥ ८२ ॥
 तपस्ये फल्गुनालश्च चैत्रे मौहनिको मधुः ।
 चैत्रिको मन्मथसखो वैशाखो राघ उच्छुनः ॥ ८३ ॥
 ज्येष्ठामूलीय ईजानो ज्यैष्ठश्च खरकोमलः ।
 ते शुक्ले स्युरथाषाढे शुचिः श्रावणिको नभाः ॥ ८४ ॥
 श्रावणश्च नभस्ये तु भाद्रो भाद्रपदोऽपि च ।
 अपि प्रौष्ठपदस्तस्मिन्नाश्विनाश्वयुजाविषे ॥ ८५ ॥
 कार्तिके स्यात् कार्तिकिको बाहुलः शैलकौमुदौ ।
 क्लीबेऽप्येषु सकारान्ता ऋतुर्बीजं सतेरकम् ॥ ८६ ॥
 हेमन्तः प्रसवो लोभ्रः शैखस्तु शिशिरोऽस्त्रियाम् ।
 मधुर्वसन्तः सुरभिर्वलाङ्गः पुष्पसारणः ॥ ८७ ॥
 पुष्पकालोऽपीष्ममस्त्री ग्रीष्मस्त्वाखोर ऊष्मकः ।
 शुचिरुष्णागमः पात्म उष्ण ऊष्माऽप्यथ क्षरी ॥ ८८ ॥
 प्रावृड् वर्षी भूमिर्न वर्षाः कालोक्षी च घनागमः ।
 घनात्ययः शरत् स्त्री स्याद्विसर्गो दक्षिणायनम् ॥ ८९ ॥
 उत्तरायणमाग्नेयं विषुवान् विषुवोऽस्त्रियौ ।
 संवत्सरोऽब्द आग्नेयो वत्सरः परिवत्सरः ॥ ९० ॥
 वत्सवायव्यसौर्याश्च वर्षोऽस्त्री स्त्री शरत् समाः ।
 कृतं सत्ययुगं सौम्यं त्रेतामेयी द्विसर्गिका ॥ ९१ ॥
 द्वापरे यज्ञियाग्नेयौ पुण्यो भर्भरकः कलिः ।
 त्रियुगं तु युगासारं द्वायायोगं तु युगद्वयम् ॥ ९२ ॥
 मन्वन्तरं त्वन्तरं स्यात् कल्पभागे चतुर्दशे ।
 चतुर्युगसहस्रं तु कल्पस्तद् ब्रह्मणो दिनम् ॥ ९३ ॥
 तद्वात्रौ तु महासुप्तिः समसुप्तिर्जगत्क्षयः ।
 महाप्रलयकल्पान्तौ युगान्तो भूतसम्प्लवः ॥ ९४ ॥
 प्रतिसर्गस्तु संहारः प्रलयः प्रतिसञ्चरः ॥ ९४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्या-
 मन्तरिक्षकाण्डे ज्योतिरप्यायः ॥ १ ॥

मेघाध्यायः ॥ २ ॥

मेघोऽब्दो जलदो नभ्राट् तटित्वान् जलमुग्धनः ।
 धाराधरो वारिधरो धूमयोनिर्बलाहकः ॥ १ ॥
 तटित्पतिः पयोगर्भो नदनुर्मुदिरोऽम्बुभृत् ।
 कादम्बिनी मेघमाला काली कृष्णनवाम्बुदः ॥ २ ॥
 इन्द्रायुधं त्विन्द्रधनुस्तद्दीर्घमृजु रोहितम् ।
 देरावतं च विद्युत्तु चञ्चला चपला चला ॥ ३ ॥
 आकालिकी शतावर्ता जलदा जलपालिका ।
 क्षणांशुः क्षणिका चम्पा तटिहीमा शतहृदा ॥ ४ ॥
 सौदामिन्यैरावती च तद्भेदेऽप्यन्तिमत्रयम् ।
 गर्जितं स्तन्ति शीर्णं वज्रे ह्यादुनयः स्त्रियः ॥ ५ ॥
 वज्रपातस्तु निर्घातश्चण्डकोऽप्यशान्तिर्न षण् ।
 स्फूर्जथुर्वज्रनिष्पेषो न स्त्री वज्रोऽशान्तिर्न षण् ॥ ६ ॥
 वर्षोऽस्त्री वर्षणं वृष्टिः शीकरोऽस्त्र्यम्भसः कणः ।
 घनोपलस्तु करकः पुञ्जिका मचटीति च ॥ ७ ॥
 विप्रुट् स्त्री पृषतो बिन्दुः स्तोको द्रप्सः पृषन्न पुम् ।
 अनावृष्टिरवग्राहो मेघच्छन्नेऽहि दुर्दिनम् ॥ ८ ॥
 अवश्यायस्तु नीहारस्तुषारस्तुहिनं हिमम् ।
 प्रालेयं मिहिका चाथ हिमानी हिमसंहतिः ॥ ९ ॥
 कुहिढोऽस्त्री कुहेलिः स्त्री कुहेडिर्धूमिका त्रयी ॥ १० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां
 वैजयन्त्यामन्तरिक्षकाण्डे मेघाध्यायः ॥ २ ॥

खगाध्यायः ॥ ३ ॥

पक्षी पत्ररथः पत्री पित्सन् पिपतिषन् पतन् ।
 पतङ्गः पतगः प्लावी पतत्र्यङ्गुपतत्रयः ॥ १ ॥
 विहङ्गमो विविहङ्गो विहङ्गो नभसङ्गमः ।
 नीडोद्भवः शुको नीडी मल्लको विप्रुषो भस्मन् ॥ २ ॥
 वशाकुर्मदनः पीतुर्मशाको मदुरो द्विजः ।
 ऊकः शकुन्तः शकुनिः शकुन्तिः शकुनः खगः ॥ ३ ॥
 शलको विकिरस्तुण्डी नीडजो वातगाम्यपि ।
 पक्षिपोतस्तु चिल्लाकश्चम्पुकः पीलुकावटौ ॥ ४ ॥
 गृह्याश्छेकाश्च गेहेषु संसक्ता मृगपक्षिणः ।
 हंसो मरालो नीलाक्षश्चक्रपक्षः सितच्छदः ॥ ५ ॥
 मानसौकाः परिप्लावी वक्राङ्गो जालपादकः ।
 सूतिः सङ्कुचितः शङ्कुर्ज्येष्ठः प्रास्थितधोरणो ॥ ६ ॥
 क्षीराशश्चाप्यसौ राजहंसो रक्तैः पदाननैः ।
 मलिनैर्मल्लिकाश्चस्तैर्धार्तराष्ट्रः सितेतरैः ॥ ७ ॥
 कादम्बः कलहंसश्च हंस आधूसरच्छदः ।
 वरटा हंसकान्ता स्याद् वरालाव रलाऽपि च ॥ ८ ॥
 हंससाचिः क्षुद्रहंसः क्षयिस्तु कुवलायिकः ।
 चक्रवाको रथः कोकश्चक्रश्चक्राहयाह्वयः ॥ ९ ॥
 बको बकोटः कङ्कोऽथ बलाका विसकण्ठिका ।
 बकजातिर्दर्वितुण्डो दर्विः क्रौञ्चश्च दर्विदा ॥ १० ॥
 मद्रुस्तु जलकाकः स्यादातिस्त्वाटिः शराटिका ।
 कारण्डवो महापक्षो जलरङ्गुस्तु वञ्जुलः ॥ ११ ॥
 दात्यूहश्चाथ शकटान्निले प्लवपरिप्लवौ ।
 अन्वर्थनामधेयौ द्वौ जालपादाम्बुकुटौ ॥ १२ ॥
 कुक्कुटो दीर्घवाग्दक्षः शिखी चूलिक आरणी ।
 कृकवाकुर्विवृत्ताक्षस्ताम्रचूडः शिखण्डिकः ॥ १३ ॥
 मयूरश्चटकः शौण्डः पादायुधनखायुधौ ।
 पारावतः कलरवो रक्तहृष्टिर्मदोत्कटः ॥ १४ ॥

काकस्तु द्विक एकाक्षश्चिरजीवी दिवाटनः ।
 आत्मघोषो महानेमिः कण्टको मौकलिः कुणः ॥ १५ ॥
 बलिपुष्ट उल्लकारिर्नोडिजङ्घोऽग्रहृष्टकः ।
 धूलिजङ्घोऽन्यवापश्च परभृद्वायसोऽन्यपुट् ॥ १६ ॥
 द्रोणः सकृत्प्रजोऽरिष्टो ध्वाङ्कः करट इत्यपि ।
 कृष्णकाको वृद्धकाक ऐन्द्रिः काकोल आसुरः ॥ १७ ॥
 धूङ्क्षणा तु श्वेतकाकोऽथ चटको वर आटकः ।
 बलिभुक् कलविङ्कश्च सेव्यस्तिलककण्टकः ॥ १८ ॥
 कलविङ्कस्त्वसौ पीतमुण्डः श्यामा तु पोतकी ।
 व्याघ्राटस्तु भरद्वाजः क्षिप्रः श्येन सुपर्णकः ॥ १९ ॥
 श्येनायां प्राचिकां चित्रपक्षे शरुकपिञ्जलौ ।
 वाचाला मुखरा शारिः कोयष्टिः शिखरी समौ ॥ २० ॥
 कुलालकुक्कुटो गर्तकुक्कुटः पेचिका पुनः ।
 उल्लकचेटी हिका स्यात् कनकाक्षी च पिङ्गला ॥ २१ ॥
 उल्लकः पेचकः कोण्ठः काकारिर्हरिलोचनः ।
 नक्तञ्चरो घर्घरको निशादर्शी बहुस्वनः ॥ २२ ॥
 महापक्षी च कृष्णोऽसौ नक्तकः कृतमालकः ।
 कपोतो बालवत्सः स्यात् खञ्जरीटस्तु खञ्जनः ॥ २३ ॥
 मिथुनी चञ्चलश्चाथ सुप्तोऽस्मिन् कृष्णवक्षसि ।
 गोलनिका खञ्जरीटी शार्ङ्गः कीर्शा च पिप्पिका ॥ २४ ॥
 शुक्लिक्केतुर्मैधावी श्रीमान् वाग्मी फलाशनः ।
 दरणो दण्डिकीरौ च लोपालोपायिके समे ॥ २५ ॥
 पात्रं तु कुण्डृणाची स्त्री कण्ठपालस्तु वञ्जुलः ।
 काकपुष्टस्त्वन्यभृतस्ताम्राक्षः कोकिलः पिकः ॥ २६ ॥
 वसन्तघोषो मधुवाक् कलकण्ठो वनप्रियः ।
 भृङ्गः कलिङ्गो धूम्राटो राजभृङ्गस्तु बुद्धिमान् ॥ २७ ॥
 मान्धीरी वाग्गुदस्तुल्यः स तु मान्धीलवो महान् ।
 आतापी चिञ्जिकोऽथ स्यात् स्वस्तिकः पुष्टिवर्धनः ॥ २८ ॥
 किकिदीविः स्वर्णचूडश्चाषो राजविहङ्गमः ।
 मणिकण्ठश्चित्रवाजो विशोकः पूर्णकूटकः ॥ २९ ॥
 गृध्रस्तु पुरुषव्याघ्रो दूरदर्शी सुदर्शनः ।
 दाक्षाय्यश्चाप्यथ श्येनो वर्तुलाक्षः शशादनः ॥ ३० ॥
 कङ्कस्तु कर्कटस्कन्धः पर्कटः कमलच्छदः ।

दीर्घपादः प्रियापत्यो लोहपृष्ठश्च मल्लकः ॥ ३१ ॥
 पूर्णकूटे कुटपुरिः शकुन्ते भासकुक्कुटौ ।
 चातकस्त्वम्बुजोऽनम्बुः पौरेन्द्रः स्तोककः खगः ॥ ३२ ॥
 सारसो मैथुनी कामी गोनर्दः पुष्कराह्वयः ।
 दार्वाघाटे शतपत्रो लक्ष्मणा सारसप्रिया ॥ ३३ ॥
 क्रौञ्चस्तु कुङ्कुथोऽक्रोशः कुररो मत्स्यनाशनः ।
 टिट्ठिभस्तु कटुकाण उत्पादशयनोऽण्डुकः ॥ ३४ ॥
 तित्तिरिस्तु खरकाणो वरिष्ठश्चेश्वरप्रियः ।
 चकोरस्तु चलच्चक्षुरुत्पिबश्चन्द्रिकाप्रियः ॥ ३५ ॥
 कृकरे त्वर्धकृकणौ दात्यूहे कालकण्ठकः ।
 मयूरो बर्हिणो बर्ही शुष्कापाङ्गः शिखावतः ॥ ३६ ॥
 वर्षामदः शिखी केकी शिखण्डी चित्रपत्रकः ।
 भुजङ्गारिः शापटिको मयूकश्चित्रपिङ्गलः ॥ ३७ ॥
 मार्जारकण्ठः केकालिर्विष्किकरो तर्तनप्रियः ।
 मेघनादानुलासी च दार्वण्डश्चन्द्रकीति च ॥ ३८ ॥
 शब्दोऽस्य केका बर्हस्तु प्रचलाककलापकौ ।
 शिखण्डः पिच्छमप्यस्य मेचको बर्हचन्द्रकः ॥ ३९ ॥
 पक्षिभेदाः खिलिखिलश्रीकर्णायकवर्तकाः ।
 लावकुक्कुटहारीतजीवस्त्रीवाद्योऽपि च ॥ ४० ॥
 हंसादयो जलचरा ग्राम्याः स्युः कुक्कुटादयः ।
 वनजाः पीतमुण्डाद्या भृङ्गाद्याः क्षुद्रपक्षिणः ॥ ४१ ॥
 भृङ्गे भ्रमरभृङ्गाणमधुलिणमधुपालिनः ।
 अलिद्विरेफो लोलम्बो मसलः पुष्पलोलुपः ॥ ४२ ॥
 इन्दिन्दिरो मधुकरश्चञ्चरीको मधुव्रतः ।
 शित्पुटः षट्पदश्चाथ पतङ्गः शलभः समौ ॥ ४३ ॥
 जतुकाऽजिनपत्रा स्यात् परोष्णी तैलपायिका ।
 मलिम्लुचास्तु मशका भम्भराली तु मक्षिका ॥ ४४ ॥
 चर्वणा मक्षिका नीला सरघा मधुमक्षिका ।
 अरण्यमक्षिका दंशो दंशी तज्जातिरल्पिका ॥ ४५ ॥
 कषायिका तु जलजा घोणा कुम्भीरमक्षिका ।
 गण्डोली वरटा न ह्री गृहिणी गृहकारिका ॥ ४६ ॥
 अन्वर्थाख्या कोष्ठकारी कण्टका कण्टकानना ।
 निशामणिध्वान्तमणिः खद्योतो ज्योतिरिङ्गणः ॥ ४७ ॥

भृङ्गारी मीरिका चीरी भिक्षिकाऽथ प्लुषिः पुमान् ।
 पुत्तिका च पतङ्गी च पूत्यण्डाः क्षुद्रपक्षिणः ॥ ४८ ॥
 छदः पत्रो गरुड्राजश्छदनं च तनूरुहम् ।
 पतत्रं च कुलायस्तु पञ्जरं नीडमस्त्रियाम् ॥ ४९ ॥
 पेशी कोशश्च डिम्बोऽण्डं त्रोटिश्चञ्चुः सृपाटिका ।
 डयनं गतिरुड्डीनसण्डीनादि विशेषकम् ॥ ५० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां
 वैजयन्त्यामन्तरिक्षकाण्डे खगाध्यायः ॥ ३ ॥



शब्दाध्यायः ॥ ४ ॥

शब्दो व्योमगुणस्वानस्वननिस्वाननिस्वनाः ।
 निर्हार्दो रवणो नादो द्वेडो ध्वानो ध्वनिः कवः ॥ १ ॥
 कणिर्हार्दो रसो ध्रूणा घोषो गुञ्जनमुञ्जने ।
 गञ्जनं मशनं कानं गानं कोरणरेभणे ॥ २ ॥
 कूजनं कूजितं गर्जा न क्लीबे गर्जना न ना ।
 क्रोश उच्चस्वने प्राणिस्वने त्वाराव आरवः ॥ ३ ॥
 रवो विरावः संरावो रुतं चेत्यथ वाशनम् ।
 वाशितं च तिरश्चां स्यात् ध्वाङ्घ्रौ स्त्री घोरवाशितम् ॥ ४ ॥
 घोरितं तुरगादीनां नासापुटभवे ध्वनौ ।
 तन्दनं रम्भणं रम्भा रम्भितं च गवां ध्वनिः ॥ ५ ॥
 वृकनं श्ववृकध्वाने भषणं भषितं शुनः ।
 वृकस्य रेषणं रेषा हेषा हेषा च वाजिनाम् ॥ ६ ॥
 बृंहितं करिणां शब्दो राणोऽस्त्री मणितं रतेः ।
 काकुः स्त्री भिन्नकण्ठोत्थः शोककोपादिवैकृतात् ॥ ७ ॥
 डकनं हात्कृते पत्रवस्त्रादीनां तु मर्मरः ।
 पर्दनं गुदजे शब्दे कर्दनं कुक्षिकूजिते ॥ ८ ॥
 विष्फारो घनुषः स्वानो भूषादीनां तु शिञ्जितम् ।
 प्रणादस्वनुरागोत्थश्चित्कृतं स्यन्दनध्वनौ ॥ ९ ॥
 स्रोतसां खरको युद्धध्वाने क्रन्दनयोधने ।
 मार्जना मुरजध्वाने गुन्दिलो मर्दलध्वनौ ॥ १० ॥
 वाणं हुडुक्कहिक्कायां भेरीनादे तु टट्टरः ।
 कणनं कणितं काणो निक्काणो निक्कणः कणः ॥ ११ ॥
 वीणायाः कणतेः प्रादेः प्रक्काणप्रक्कणादयः ।
 स्त्री प्रतिश्रुत् प्रतिध्वाने तुमुलो व्याकुले भृशम् ॥ १२ ॥
 गम्भीरे मन्द्र उच्चे तु तारो रम्यास्फुटे कलः ।
 समाहितस्तु निर्दोषवर्णे दोषयुताः परे ॥ १३ ॥
 अत्युच्चारणगर्वेण पीडितोऽपि समाहितः ।
 एणीकृतः प्रतिध्वानदन्तुरो माहिषश्च सः ॥ १४ ॥
 कल्हस्तु गलमूलस्थो गद्गदः स मनाक् स्फुटः ।

लालको बालानुकृतौ लङ्गरो जिह्वया हतः ॥ १५ ॥
 शिथिलोऽस्पष्टसंयोगस्तुम्बुकः सानुनासिकः ।
 सान्त्वं स्यान्मधुरं वाक्यं स्यादवाच्यमनक्षरम् ॥ १६ ॥
 अनिर्बद्धं तूच्चावचमच्छिष्टार्थं तु सङ्कुलम् ।
 अमृते वितथालांकावाहतं तु मृषार्थके ॥ १७ ॥
 अम्बूकृतं सनिष्ठीवं स्यादबद्धमनर्थकम् ।
 कल्या तु वाचि कल्याण्यां रुशती तद्विपर्यये ॥ १८ ॥
 छलवाकतु निरानन्दा शोकभारे तु तीरिता ।
 क्रोधगर्भा तु वैद्योता दैन्यगर्भा तु नश्वरी ॥ १९ ॥
 निर्वेदगर्भा निस्सङ्गा स्नेहगर्भा तु मालुकी ।
 विरहे खण्डिता मोहे शून्या लोभे तु जाङ्गली ॥ २० ॥
 निष्ठुरा परुषा क्षेपे त्रिषु स्युस्तुमुलादयः ।
 अस्त्रियौ वर्णमर्णं च वाक्यं तु वचनं वचः ॥ २१ ॥
 आम्नेडितं द्विस्त्रिरुक्तं गुणितं घोषितं समे ।
 अरार्णनां मुहुः प्रोक्तमनुलापश्च वर्तनम् ॥ २२ ॥
 सम्भाषणं त्वाभाषणमालापः कुरुकुञ्जिका ।
 उपसम्भाषणं साम्नि तत्तूपच्छन्दनं यदि ॥ २३ ॥
 घनादि स्यात् प्रतिज्ञातं गुह्ये तदुपमन्त्रणम् ।
 विभाषणं विवादे स्यादनुवादोऽनुभाषणम् ॥ २४ ॥
 आख्यायनी तु सन्देशो दिष्टं संवदनं च तत् ।
 संवादनं वाचिकं च बलगा त्वतिचाटुवाक् ॥ २५ ॥
 लुञ्जना पिञ्जना चेति सूत्रिते वचनद्वयम् ।
 भञ्जना स्याद्विवरणे पोटना तूत्कटं वचः ॥ २६ ॥
 कोलाहलः कलकलः कुञ्जनाऽस्मिन्नपक्रुधि ।
 चर्चरी चर्मटिस्तुल्ये रथ्यावादे तु कोहलम् ॥ २७ ॥
 उद्धूयस्तु कौरक्रव्या विगर्वा गर्वहारिका ।
 लोचना तु विचारोक्तिर्लोटना सानुसारवाक् ॥ २८ ॥
 विप्रलापो विरोधोक्तिः संलापो भाषणं मिथः ।
 काका वर्णनमुल्लापो विलापः परिदेवनम् ॥ २९ ॥
 प्रलापोऽनर्थकं वाक्यमपलापस्त्वपह्नवः ।
 अपव्ययोऽप्यवज्ञाऽपि हूतिस्त्वाकारणा हवः ॥ ३० ॥
 हकारामन्त्रणाह्वानं संहूतिर्बहुभिः कृता ।
 अभिधानं नामधेयं नामाख्याऽऽह्वाऽभिधाऽऽह्वयः ॥ ३१ ॥

मिथ्याऽभियोगोऽभिख्यानमभिशापोऽभिशंसनम् ।
 शापोऽधिक्षेप आक्रोशः परिवादोऽप्यवर्णवत् ॥ ३२ ॥
 अवर्णवादो निर्वादोऽप्यपवादो विरूक्षणम् ।
 क्षारणं गर्हणं निन्दा जुगुप्सागालिकुत्सनाः ॥ ३३ ॥
 जनवादस्तु वचनं भर्त्सनं प्रतितर्जनम् ।
 आक्षारणं विधुवनमाक्रोशो मैथुलं प्रति ॥ ३४ ॥
 उत्साहः स्यादुपालम्भः परिवाग्भाषणीति च ।
 श्लाघा शंसा प्रशंसा च स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः ॥ ३५ ॥
 यशो जयोदाहरणं साधुवादो गुणावली ।
 ख्यातिः कीर्तिः समज्ञा च सन्देशगिरि वार्चिकम् ॥ ३६ ॥
 अर्थवादः परार्थोक्तिः प्रश्नः पर्यनुयोगवत् ।
 अनुयोगश्च पृच्छा च प्रतिवाक्यं तदुत्तरम् ॥ ३७ ॥
 कथा त्वाख्यानिकाऽऽख्यानं पुराणं पञ्चलक्षणम् ।
 इतिहासः पुरावृत्तमैतिह्यमितिहाऽव्ययम् ॥ ३८ ॥
 वार्तोदन्तोऽपि वृत्तान्तः किंवदन्ती जनश्रुतिः ।
 प्रवल्हिका प्रहेलिका प्रजल्पनं बहूदितम् ॥ ३९ ॥
 विकल्पना पृथक्क्रियाऽवधारणाऽन्यनिहुतिः ।
 समस्या तु समासः स्यात् सङ्क्षेपः स्यादविस्तरः ॥ ४० ॥
 उपोद्धात उदाहार उपन्यासः पुरोवचः ।
 प्रस्तावः पुनरुद्धातः सोऽधिकार उपक्रमः ॥ ४१ ॥
 गद्यपद्यमयी चम्पूः सारणी पद्यमात्रिका ।
 शृङ्गाराद्यधिकं काव्यं समासाढ्यं तु दण्डकम् ॥ ४२ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां
 वैजयन्त्यामन्तरिक्षकाण्डे शब्दाध्यायः ॥ ८ ॥

द्वितीयोऽन्तरिक्षकाण्डः समाप्तः ॥ २ ॥

३. अथ भूमिकाण्डः

देशाध्यायः ॥ १ ॥

भूमिरूर्वी घनश्रेणी स्थगणा गिरिकर्णिका ।
क्षोणी सर्पभृता दक्षा कुः क्षमा क्षान्तिः क्षमा क्षरिः ॥ १ ॥
धरित्री धरणी धात्री भूतधात्री धरा स्थिरा ।
वसुन्धरा वसुमती वसुधा विपुला रसा ॥ २ ॥
ग्मा विश्वा पृथिवी पृथ्वी हेमा सर्वसहा मही ।
अब्धिवस्त्रा नगाधारा मेदिनीला गिरिस्तनी ॥ ३ ॥
अचला कीलिनी पेरा बीजसू रत्नसूः स्वसूः ।
रत्नगर्भा काश्यपी भूः कुह्यर्वनिर्वरा ॥ ४ ॥
द्यावापृथिव्यावेकोक्तौ रोदस्यौ रोदसी इति ।
नाभीदं भारतं वर्षं हिमाद्रेस्तच्च दक्षिणम् ॥ ५ ॥
तेन हैमवतं नाम पराण्यप्येवमुन्नयेत् ।
हेमकूटं किम्पुरुषं हरिवर्षं तु नैषधम् ॥ ६ ॥
इलावृत्तं सौमेरवं सुमेरुं परितो हि तत् ।
भद्राश्वं तु ततः पूर्वं केतुमालं तु पश्चिमम् ॥ ७ ॥
वर्षावेतौ क्रमात् पूर्वगन्धिकापरगन्धिकौ ।
उदक् तु रम्यकं नैलं नीलाद्रेरुत्तरं हि तत् ॥ ८ ॥
ततो हिरण्मयं श्वेतं तच्च श्वेताद् गिरेरुदक् ।
कुरुवर्षं शार्ङ्गवतं कुरवश्च त उत्तराः ॥ ९ ॥
जम्बूद्वीपः कुमारी स्याद्यत्रेमे भारतादयः ।
लावणो लवणोदः स्याद्येनासौ वेष्टितोऽब्धिना ॥ १० ॥
प्लक्षद्वीपादयोऽप्येवं वृता इक्षूदकादिभिः ।
मन्थोदधिस्तु क्षीराब्धिः क्षीरोदः कलशोदधिः ॥ ११ ॥
अथाप्यन्येऽन्तरद्वीपा भारतात् सप्त दक्षिणाः ।
एको वैद्युत्वतो नाम विद्युत्वान् यत्र पर्वतः ॥ १२ ॥
मालं मैत्रं व्रतं जालं नारासङ्गे पराणि षट् ।
अनुद्वीपाश्च षट् तेषामङ्गद्वीपादयो यथा ॥ १३ ॥
अङ्गद्वीपं यवद्वीपं मलयद्वीपमित्यपि ।

शङ्खद्वीपं कुशद्वीपं वराहद्वीपमित्यपि ॥ १४ ॥
 अङ्गद्वीपं चाक्रगिरं मध्ये पश्चिमवारिधि ।
 पूर्वाब्धौ तु यवद्वीपं यत्र कालोदकोऽर्णवः ॥ १५ ॥
 मलयद्वीपमब्धौ स्यादक्षिणे तच्च दार्दरम् ।
 मालयं माहामलयं तत्पाश्वे तु चतुर्थकम् ॥ १६ ॥
 अतः पूर्वं कुशद्वीपं चम्पकद्वीपमप्यदः ।
 यतः पुरो रक्तवहो लोहित्यो नाम वारिधिः ॥ १७ ॥
 अथ प्रतीच्यां वाराहं वराहद्वीपमायतम् ।
 यत्र यज्ञवराहोऽसौ हरिरद्यापि तिष्ठति ॥ १८ ॥
 बर्हिणं सिंहलं हेमकुड्यं द्वारवतीपदम् ।
 पारसीककुलं स्वर्णद्वीपं वैद्युतमार्षभम् ॥ १९ ॥
 अयोमुखं तार्णसौमं स्यात्तार्णं ग्रामणीकुलम् ।
 इत्याद्या भारते वर्षे क्षुद्रा द्वीपाः सहस्रशः ॥ २० ॥
 नीवृज्जनपदो देशस्तद्भेदाः पुंसि भूम्नि च ।
 स्त्रियो वरेन्द्री स्त्रावस्तीराढाद्या नैव भूमनि ॥ २१ ॥
 प्राग्दक्षिणः शरावत्याः प्राच्योऽस्याः पश्चिमोत्तरः ।
 उदीच्यो मध्यदेशस्तु देशो यो मध्यमस्तयोः ॥ २२ ॥
 आर्यावर्तो ब्रह्मवेदिर्मध्यं विन्ध्यहिमागयोः ।
 अथोदीच्या जनपदास्तत्र चीनाः खरम्भराः ॥ २३ ॥
 गान्धारास्तु दिहण्डाः स्युर्यवनास्तु हुरुष्कराः ।
 सम्भालाः स्युः शूरसेना अपि ते शूरसेनयः ॥ २४ ॥
 मध्ये तु शूरसेनानां मधुरा नाम वै पुरी ।
 लम्पाकास्तु मुरुण्डाः स्युस्तोक्षारास्तु युगालिकाः ॥ २५ ॥
 जालन्धरास्त्रिगर्ताः स्युर्होलाः स्युः खरटी स्त्रियाम् ।
 प्रत्यग्रथास्त्वहिच्छत्रास्तैतुलास्तु कलिङ्गकाः ॥ २६ ॥
 टर्कवाङ्गीककाश्मीरतुरुष्केषु ससिन्धुषु ।
 बाह्लीका बाह्लिकाः कीराः शाख्यो दारदाः क्रमात् ॥ २७ ॥
 कुमालकास्तु सौवीरा यौधेयास्तु नृगालिकाः ।
 अप्यन्ये पारदाः किञ्चाः कुल्या इत्यादिनीवृतः ॥ २८ ॥
 अथ प्राच्या जनपदास्तत्र मुद्रकाः कुजाः ।
 प्राग्योतिषाः कामरूपास्तथा प्राग्जालिका अपि ॥ २९ ॥
 विदेहास्तीरभुक्तिः स्त्री स्त्रावस्ती तु परञ्जका ।
 राढा तु सुह्याः पुण्ड्रास्तु वरेन्द्री पुण्ड्रलक्षणा ॥ ३० ॥

भौरिकाः स्युः समतटा अङ्गाश्चम्पोपलक्षणाः ।
 वङ्गास्तु हरिकेलीया मगधाः कीकटाः स्मृताः ॥ ३१ ॥
 अप्यन्येऽन्ध्रा व्रताः सात्वा इत्याद्या नीवृतः पृथक् ।
 विन्ध्यात्तु दक्षिणा देशा दक्षिणापथसंज्ञिताः ॥ ३२ ॥
 तत्र पाण्ड्याः पाण्ड्याः स्युः कुन्तलाः स्तूपहालकाः ।
 चोलाः स्युरुत्पलावर्ता महाराष्ट्रास्तु दण्डकाः ॥ ३३ ॥
 अप्यन्ये केरलाः कुल्याः सेतुजाः कुलकालकाः ।
 इषीकाः शबरारट्टा इत्याद्या नीवृतः पृथक् ॥ ३४ ॥
 अपरान्तास्तु पाश्चात्यास्ते च सूर्यारकादयः ।
 अथेमे मलदाद्याद्या विन्ध्यपर्वतवासिनः ॥ ३५ ॥
 तत्र स्युर्मलदाः स्थौराः करुशास्तु बृहद्गृहाः ।
 त्रैपुरास्तु दहालाः स्युश्चैद्यास्ते चेदयश्च ते ॥ ३६ ॥
 दाशाणीः स्थुर्वेदिपरा मालवाः स्युरवन्तयः ।
 अप्यन्ये मेकला भोजाः कोसलाद्याश्च नीवृतः ॥ ३७ ॥
 अथ देशा मध्यदेशे मरवस्तु दशेरकाः ।
 सात्वास्तु कारकुत्सीयास्तेषां त्वग्यवाः परे ॥ ३८ ॥
 उदुम्बरास्तिलखला महाकारा युगन्धराः ।
 हुलिङ्गाः शरदण्डाश्च षट् सात्वावयवा इमे ॥ ३९ ॥
 अप्यन्ये कुन्तलाः कुल्याः कलिङ्गाः काशिकोसलाः ।
 मेकलाः कुसटाः सैरा जाङ्गलाः पृथवो वृकाः ॥ ४० ॥
 पटञ्चरादयश्चान्ये मध्यदेशस्य नीवृतः ।
 उक्तानामन्तरालेषु बहवः क्षुद्रनीवृतः ॥ ४१ ॥
 मरवः पुंसि धन्वान आसारी तु स्थली स्थलम् ।
 कचङ्गला तु नीलिङ्गी भूर्नाजाजन्तुसंयुता ॥ ४२ ॥
 पङ्किलः पङ्कवान् देशो वेतस्वान् बहुवेतसः ।
 शाद्वलः शादहरितः कुमुद्वान् कुमुदाधिकः ॥ ४३ ॥
 सनलो नड्वलो नड्वाब्धार्करः शर्कराधिकः ।
 देशः शर्करिलोऽप्येवमुन्नेयौ सिकतावति ॥ ४४ ॥
 कृष्णभूमः पाण्डुभूमः कृष्णा पाण्डुश्च यत्र स्मृतः ।
 अनूपः साम्बुरन्यस्तु जाङ्गलः शून्य उच्चटः ॥ ४५ ॥
 स्फुटिते सारणारट्टौ राजन्वास्तु सुराजनि ।
 अन्यत्र राजवान् वृष्टिजीवनो देवमातृकः ॥ ४६ ॥
 स्यान्नदीमातृको देशो नद्यम्बूपादसस्यकः ।
 पथः पदाङ्कयोग्यः स्यात् त्रिष्वेते पङ्किलादयः ॥ ४७ ॥

श्मशानं स्यात् पितृवनं स्त्रीवासः क्रिमिपर्वतः ।
 शतमूर्धा वामलोरो नाकुर्वल्मीकमस्त्रियाम् ॥ ४८ ॥
 मार्गोऽध्वा पदवी पन्थाः पद्या चैकपदी सृतिः ।
 सुपन्था अतिपन्थाश्च सत्पथश्च शुभे पथि ॥ ४९ ॥
 विपथः कापथो व्यध्वो दुरध्वश्च कदध्वनि ।
 अपन्थास्त्वपथं दूरशून्ये प्रान्तरमध्वनि ॥ ५० ॥
 वृत्तिमार्गस्त्वर्धपदः प्राग्वंशः पदिकोऽपि च ।
 संक्रमस्तिस्तिरिस्तुल्यौ शृङ्गाटं तु चतुष्पथः ॥ ५१ ॥
 जङ्घापदं चतुष्पादस्त्रिपादस्तु गृहान्तरम् ।
 अङ्गुलोऽस्त्री यवा अष्टौ समस्तु चतुरङ्गुलः ॥ ५२ ॥
 धनुर्ग्रहश्च दिष्टिश्च स्यातामष्टाङ्गुलावुभौ ।
 दशाङ्गुलः क्रकचिको वितस्तिर्द्वादशाङ्गुलाः ॥ ५३ ॥
 किष्कुः स्यादवटो हस्तश्चतुर्विंशतिरङ्गुलाः ।
 बद्धेन मुष्टिना हस्तः स्याद्रन्निर्मुष्टिको वसुः ॥ ५४ ॥
 अरन्निर्निष्कनिष्ठोऽसौ स प्रजापतिहस्तकः ।
 कुत्सश्चाप्यथवाकुत्सः सधनुर्मुष्टिरेव सः ॥ ५५ ॥
 अथ वर्धकिहस्तः स्याद् द्वाचत्वारिंशदङ्गुलः ।
 तस्मिन् विकिष्कुः क्रकचः किष्कुःक्रकचिकोऽपि च ॥ ५६ ॥
 हस्तद्वयं तु सत्किष्कुर्हस्तत्रयमलीमकम् ।
 चतुर्हस्तो धनुर्दण्डो धनुर्धन्वन्तरं युगम् ॥ ५७ ॥
 ऐश्वरं नालिका चाथ पञ्चहस्तोऽर्धहस्तकः ।
 अष्टहस्ता तु रज्जुः स्यान्नवहस्ता तु नालिका ॥ ५८ ॥
 दशहस्तः पितृनल्वो दीर्घदण्डो निदेशकः ।
 स प्रावेशनिकश्चाथ परिवेषो द्विरज्जुकः ॥ ५९ ॥
 निवर्तनं तु तिसृभी रज्जुभिर्बलिशं च तत् ।
 नल्विकः किष्कुभिः षष्ठ्या नल्वः किष्कुचतुश्शतम् ॥ ६० ॥
 दशधन्वन्तरं स्तोमो दशस्तोमस्तु वंशिकः ।
 दशवंशिक आनाहो दशानाहो नलान्तरः ॥ ६१ ॥
 धन्वन्तरसहस्रं तु क्रोशो गव्या तु तद् द्वयम् ।
 स्त्री गव्यूतिश्च गव्यूतं गोरुतं गोमतं च तत् ॥ ६२ ॥
 गव्यूतानि तु चत्वारि योजना कोसलादिषु ।
 गव्यूतिद्वयमेव स्याद्योजनं मगधादिषु ॥ ६३ ॥
 इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां
 वैजयन्त्यां भूमिकाण्डे देशाध्यायः ॥ १ ॥

शैलाध्यायः ॥ २ ॥

शैलोऽगः पर्वतः दमाभृत् सानुमान् दुर्गमोगिरिः ।
 अहार्यगोत्रकुट्टीरकुट्टारा भूधरोऽचलः ॥ १ ॥
 बन्धाकिः फलिकः कुध्रः प्रपात्यद्रिः शिलोच्चयः ।
 सुचेलः स्याच्चित्रकूटस्त्रिकूटस्त्रिककुब्ज सः ॥ २ ॥
 लोकालोकश्चक्रवालो लोकान्ताद्रिः पराचलः ।
 मलये त्रिकलापादः विन्ध्यस्तु जलवालकः ॥ ३ ॥
 हिरण्यनाभो मैनाकः सुदारुः पारियात्रकः ।
 माः यवांस्तु प्रस्रवणो हिमवांस्तु हिमाचलः ॥ ४ ॥
 रजताद्रिस्तु कैलासो हराद्रिर्महितश्च सः ।
 वेङ्कटो वृषभः सिंहः केशरः केशवप्रियः ॥ ५ ॥
 उदयस्तूदयाद्रिः स्यादस्तस्त्वस्तमयाचलः ।
 दरी गुहा कन्दरोऽक्ली प्रपातस्तु तटो भृगुः ॥ ६ ॥
 उत्सः प्रस्रवणं तोयप्रवाहे भरनिर्भरौ ।
 स्तुर्वप्रोऽस्त्री सानुरस्त्री पादाः पर्यन्तपर्वताः ॥ ७ ॥
 कूटोऽस्त्री शिखरं शृङ्गं नितम्बः कटकोऽस्त्रियाम् ।
 पाषाण उपलोऽश्मा च प्रस्तरश्च शिला दृपत् ॥ ८ ॥
 गण्डशैलास्तु पाषाणाः स्थूलाः प्रगलिता गिरेः ।
 उपत्यका त्वधोभूमिगिरेरुर्ध्वमधित्यका ॥ ९ ॥
 कुडङ्गोऽस्त्री निकुञ्जोऽस्त्री कुब्जो वृक्षवृत्तान्तरे ।
 आकरः स्त्री खनिर्गञ्जा रुमा तु लवणाकरः ॥ १० ॥
 नैरिकं पीतधातुः स्यात् कुनटी तु मनःशिला ।
 रोचनी रञ्जनी हृद्या रसनेत्री महासना ॥ ११ ॥
 करवीरा कला विद्युन्नागमाता विगन्धिका ।
 शिला मनोऽभिधा काला नागजिह्वा च ताः समाः ॥ १२ ॥
 शुक्रधातौ पाकशुक्रा कठिनी कक्खटी खटी ।
 हरितालं तु खर्जूरं पिञ्जरं नटभूषणम् ॥ १३ ॥
 तालमालं वंशपत्रं पीतनं रोमहृद्वरम् ।
 सौगन्धिकस्तु पामारिः पीतो गन्धाश्मगन्धकौ ॥ १४ ॥
 बोलो गोलः शशः पिण्डः प्राणो गन्धरसो रसः ।

अभ्रकं व्योममेघाख्यं चक्रसंज्ञं तु माक्षिकम् ॥ १५ ॥
 शिलाजतु तु गौरेयमर्थ्यमश्मजमद्रिजम् ।
 सौराष्ट्री पार्वती काक्षी कालिका पर्पटी सती ॥ १६ ॥
 आढकी तुवरी काली भूनामा च मृदाह्वया ।
 मुराष्ट्रजाऽप्यथो गोला नैपाली कुनटीति च ॥ १७ ॥
 रुक्मं कार्तस्वरं स्वर्णं महारजतमोजसम् ।
 चामीकरं जातुरूपं तपनीयं शिलोद्भवम् ॥ १८ ॥
 लोभनं कनकं शुक्रं सुवर्णं चन्द्रकाञ्चने ।
 दाक्षायणं श्रीमकुटं गारुडं तारजीवनम् ॥ १९ ॥
 अग्निबीजं रत्नवरं गैरिकं हेम कर्तुरम् ।
 जाम्बूनदं शातकुम्भं हाटकं भूरिरस्त्रिगौ ॥ २० ॥
 वैष्णवं कर्णिकाराभं वेणूतटजकाञ्चनम् ।
 सुवर्णद्वीपजाः स्वर्णशुक्तिकाभ्रकसन्निभाः ॥ २१ ॥
 रसविद्धं तु देवार्हं पवित्रं वज्रधारणम् ।
 अलङ्कारसुवर्णं तु शृङ्गीकनकमाशु च ॥ २२ ॥
 रूप्यहेम्नी तु संश्लिष्टे घनगोलकमस्त्रियाम् ।
 रजतं त्रापुपं रूप्यं चन्द्रभीरु यवीयसम् ॥ २३ ॥
 सौधं सुभीरुकं शुभ्रं खर्जूरं वङ्गजीवनम् ।
 ताम्रं शुल्बं मर्कटास्यं रक्तं व्यष्टं कनीयसम् ॥ २४ ॥
 म्लेच्छं वरिष्ठं म्लेच्छास्यं श्रेष्ठं काम्यमुदुम्बरम् ।
 रिरी तु रीतिरुत्साहा पीतलोहं सुलोहकम् ॥ २५ ॥
 लोह्यमप्यारकूटोऽस्त्री पित्तलं त्वारमस्त्रियाम् ।
 राजरीत्यां ब्रह्मरीतिः स्वर्णरीतिर्महेश्वरी ॥ २६ ॥
 काञ्चनी कपिला राज्ञी ब्राह्मणी कपिलोहकम् ।
 मीलिकायां तु सरटी निष्ठुरं दारुकण्टकम् ॥ २७ ॥
 गुरुव्येष्टं सिंहमलं पञ्चलोहान्यलोहके ।
 कांस्यं तु कृत्रिमं नाट्यं प्रभासमसुराह्वयम् ॥ २८ ॥
 घण्टास्वनं भूरिलोहं रवणं लोहजं मलम् ।
 सौराष्ट्रं चाथ सीसोऽस्त्री योगेष्टं भुजगाह्वयम् ॥ २९ ॥
 यवनेष्टं समोत्कं हेमघ्नं भूतलोद्भवम् ।
 त्रपु नागं चीनपट्टं रङ्गमप्यथ पिच्छटम् ॥ ३० ॥
 रङ्गं वङ्गं त्रपु क्षोभ्यं मृदङ्गं नागजीवनम् ।
 परासं सिंहलं ज्येष्ठं वक्राख्यं मुखभूषणम् ॥ ३१ ॥

कस्तीरं शोभनं नागमरिजं हेमजं शठम् ।
 गुरुपत्रं तमरकं घनं सलवणं रजः ॥ ३२ ॥
 अयः कृष्णायसं चीनं शस्त्राख्यं विषमायुधम् ।
 धीवरं धीमकं लोहं लौहकालदृढानि च ॥ ३३ ॥
 स्त्री कुटिनां पारशवो गिरिसारोऽश्मसारकः ।
 अथ कालायसं तीक्ष्णं सुलोहं रुक्षमासुरम् ॥ ३४ ॥
 वैकृन्तः स्याद् रसवरो रसज्ञो व्योमधारणः ।
 रसकस्त्वयसः सारो विकारो लोहजः कुशी ॥ ३५ ॥
 धूर्तमण्डूरसिंहाणविष्टाख्यानि त्वयोमले ।
 लोहं तु तैजसं सर्वं वसु रत्नं मणिनं षण् ॥ ३६ ॥
 स्फटिकोऽर्को रविग्रावा सूर्यकान्तोऽनलोपलः ।
 चन्द्रकान्तश्चन्द्रमणिः सुलामोऽथ त्वयोमणिः ॥ ३७ ॥
 अयस्कान्तस्तद्विशेषाश्चम्बकध्रामकादयः ।
 गारुत्मतं मरकतमश्मगभं हरिन्मणिः ॥ ३८ ॥
 शोणरत्नं लोहितकं पद्मरागोऽरुणोपलः ।
 विद्रुमो नः प्रवालोऽस्त्री वज्रोऽस्त्री हीरकः पुमान् ॥ ३९ ॥
 इन्द्रनीलं महानीलं वैडूर्यं बालवायजम् ।
 कुरुविन्दास्तु कुल्माषा रत्नभेदास्तु मौक्तिकम् ॥ ४० ॥
 माणिक्यं पौष्पकं शङ्खः पुलको विमलादयः ।
 रसाञ्जनं तार्क्ष्यशैलं शैलेयं रसगर्भकम् ॥ ४१ ॥
 स्रोतोऽञ्जनं तु सौवीरं कपोताञ्जनयामुने ।
 तुत्थाञ्जनं शिखिग्रीवं वितुन्नकमयूरके ॥ ४२ ॥
 रीतिपुष्पं पुष्पकेतुः पौष्पकं कुसुमाञ्जनम् ।
 तुत्थं तु दार्विका काथसम्भवं कर्परीति च ॥ ४३ ॥
 कुलस्थिका तु चक्षुष्या कुम्भकारी कुकालिका ।
 रसस्तु पारतः सूतो हिङ्गुलो दारदो रसः ॥ ४४ ॥
 हिङ्गुलं हंसपादं च कुरुविन्दं च के चन ॥ ४४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां

वैजयन्त्यां भूमिकाण्डे शैलाध्यायः ॥ २ ॥

वनाध्यायः ॥ ३ ॥

अटवी काटिकाऽरण्यं विपिनं काननं वनम् ।
 कक्ष्यकं कुन्दिलं बाक्षं वनी गहनमित्यपि ॥ १ ॥
 महाटवी त्वरण्यानी प्रस्तारस्तु तृणाटवी ।
 कृत्रिमं वनमारामोऽपवनोपवने आपि ॥ २ ॥
 तदेव राज्ञ उद्यानमाक्रीडश्चाथ तस्य तत् ।
 सान्तःपुरस्य प्रमदावनं गेहस्य निष्कुटः ॥ ३ ॥
 पुष्पवाटी त्वमात्यादेख्यी वाटी फलाय चेत् ।
 वृक्षो द्रुमो भूरुहो दुर्विटपी विष्ट्रोऽङ्घ्रिपः ॥ ४ ॥
 अनेकहो जगो भूरुट् तरुः शाखी कुटः कुजः ।
 वसुः करालिकोऽश्चक्षो जर्णो रुक्षः पुलाक्यपि ॥ ५ ॥
 बानस्पत्यः पुष्पफली फली त्वेव वनस्पतिः ।
 ओषधिः फलपाकान्ता ह्रस्वशाखाशिफः क्षुपः ॥ ६ ॥
 अप्रकाण्डे स्तम्बगुल्मावुलपस्तु प्रतानिनी ।
 गुम्भिन्यपि च वल्ली तु व्रततिव्रतती लता ॥ ७ ॥
 बन्ध्यो वृक्षोऽवकेशी स्यादबन्ध्यस्तु फलेप्रदिः ।
 पुष्पितः स्यात् कुसुमितः फलितः फलिनः फली ॥ ८ ॥
 फुल्ले प्रफुल्लस्तफुल्लव्याकोचविकचस्फुटाः ।
 उत्फुल्लोन्मिषितोन्निद्रा उद्बुद्धोन्मिलितस्मिताः ॥ ९ ॥
 फलमामं शलादुः स्याद् वानं शुष्कतरं फलम् ।
 त्रिपु बन्ध्यादयोऽथ स्यादङ्कुरोऽङ्कूरमस्त्रियौ ॥ १० ॥
 प्ररोहश्चाथ वंशः स्याद् योऽङ्कुरः पर्वसूत्थितः ।
 परुः पर्व पुमान् ग्रन्थिर्निर्यासः खपुरो लशः ॥ ११ ॥
 शिफाजटाऽवरोहस्तु सा शाखाजा वटादिषु ।
 मूलं बुध्नोऽङ्घ्रिनामास्मादास्कन्धात् स्यात्प्रकाण्डकम् ॥ १२ ॥
 स दारुमात्रः स्थाण्वस्त्री दारु काण्डमथ त्रयी ।
 छल्ली त्वक् स्त्री त्वचा न ह्री बल्कलं चोलकोऽस्त्रियौ ॥ १३ ॥
 चोचं बल्कं च सारस्तु मज्जा सारः किनाटकम् ।
 निष्कुटः कोटरो न स्त्री विदलं दारु पादितम् ॥ १४ ॥
 स्कन्धः प्रघाणोऽथ शिखा शाखाऽथ शिखरं शिरः ।
 स्कन्धशाखा तु शाला स्यात् प्रवालः पल्लवाङ्कुरः ॥ १५ ॥

विस्तारो विटपः स्तम्ब उच्छ्रायस्तु समुन्नतिः ।
 छदस्तु छदनं पत्रं पलाशं पतनं दलम् ॥ १६ ॥
 पर्णं बर्हं पतत्रं च त्रयी शुङ्गास्य कोशिका ।
 पल्लवोऽस्त्री किसलयं किसलोऽपि नवे दले ॥ १७ ॥
 पत्रमध्यशिरा माढिः पुष्पोऽस्त्री कुसुमं सुमम् ।
 मणीचकं प्रसूनं च सूतं सुमनसः स्त्रियः ॥ १८ ॥
 मकरन्दो मरन्दोऽस्य रसे जालं तु जालकम् ।
 कलिका कोरकश्चाथ कुट्मलो मुकुलोऽस्त्रियौ ॥ १९ ॥
 गुच्छो गुलुच्छः स्तम्बो मञ्ज्यां मञ्जरिवल्ली ।
 प्रसवः पिप्पलं सस्यं फलं वृन्तं तु बन्धनम् ॥ २० ॥
 पण्डास्त्वाम्रादयः शब्दा आम्रादिफलपुष्पयोः ।
 हरीतक्यादिकं स्त्री स्यादश्वत्थादिफले पुनः ॥ २१ ॥
 आश्वत्थमैङ्गुदं प्लाक्षं नैयग्रोधं च बार्हतम् ।
 वैणवं शैग्रवं चाथ जम्बूः स्त्री जम्बु जाम्बवम् ॥ २२ ॥
 जात्यादयः स्वलिङ्गाः स्युः पुष्पार्थे व्रीहयः फले ।
 विदार्याद्यास्तु मूलेऽपि पाटला कुसुमे न ना ॥ २३ ॥
 सप्तम्यन्तपदारम्भाः पर्याया इह कुत्रचित् ।
 सप्तम्यन्तं च पुंलिङ्गं विज्ञेयं संशये सति ॥ २४ ॥
 आम्रे कामाङ्गमाकन्दौ चूतो वेलोऽङ्गनाप्रियः ।
 करको बलयश्चाथ श्रेष्ठेऽत्र सहकारकः ॥ २५ ॥
 अथ श्यामलके लाला लवली लावली फला ।
 केसरे वकुलो मद्यलालसः सिंहकेसरः ॥ २६ ॥
 द्राक्षाफलो गुडश्चाथ न्यग्रोधो बहुपाट्टः ।
 श्रीवृक्षे पिप्पलोऽश्वत्थः प्लाक्षश्चलदलोऽङ्गुलः ॥ २७ ॥
 उदुम्बरे प्राणिफलो मशकी हेमदुग्धकः ।
 प्लक्षस्तु पर्कटिजटिकलापिगिरिलक्ष्मणाः ॥ २८ ॥
 पलाशो किशुकः पर्णो वातपोथस्त्रिपर्णकः ।
 आस्फोटो ब्रह्मवृक्षश्च हस्तिकर्णदले कृती ॥ २९ ॥
 बिल्वे मालूरमङ्गलयौ श्रीफलो गोहरीतकी ।
 परिव्यावे बालभीरुभीरुबालोऽम्बुवेतसः ॥ ३० ॥
 शीतेऽभ्रपुष्पो वानीरो वञ्जुलो वेतसो रथः ।
 विदुले प्रिय आम्राते द्वौ पीतनकपीतनौ ॥ ३१ ॥

कपित्थे स्युर्दधिफलो दधित्थग्राहिमन्मथाः ।
 हृद्यो दन्तशठः पुष्पफलोऽरिष्टे तु फेनिलः ॥ ३२ ॥
 मातुलुङ्गे तु रुचको वराम्लः केसरी शठः ।
 बीजपूरे मातुलुङ्गो लुङ्गः सुफलपूरकौ ॥ ३३ ॥
 देविकायां महाशल्का दूष्याङ्गी मधुकुङ्कुटी ।
 अथात्यम्ला मातुलुङ्गी पूतिपुष्पी वृकाम्लिका ॥ ३४ ॥
 छागो तु करुणो लक्षो मल्लिकाकुसुमप्रियः ।
 जम्बीरे जम्भको दन्तशठो जम्भीरजम्भलौ ॥ ३५ ॥
 नागरङ्गे तु नारङ्गो नार्यङ्गस्तक्रवासनः ।
 त्वग्गन्ध एलको योगी मुचुलिन्दे तु निन्नकः ॥ ३६ ॥
 न्युब्जे कर्मफलो भव्यः कर्मरङ्गः शठेश्वरौ ।
 महीपतिर्दन्तशठः कर्ता नेता च कर्म च ॥ ३७ ॥
 विकङ्कते ग्रन्थिलः स्याद्व्याघ्रपाञ्च मधुच्छदः ।
 सर्जेऽश्वकर्णः साले तु काष्यकः सस्यसवरः ॥ ३८ ॥
 पीतसाले गौरसर्जप्रियकासनपीवराः ।
 रक्तपुष्पोऽप्यथो सिन्धुसर्जे बाणः खरोऽर्जुनः ॥ ३९ ॥
 रोहिते रौहिषो रोही रक्तो रौहितकोऽपि च ।
 स्त्रीप्रिये वञ्जुलोऽशोकः कङ्कलिः कर्णपूरकः ॥ ४० ॥
 हेमपुष्पोऽप्यथाङ्गोले निचोलोऽङ्गोदशोधनौ ।
 रसाले वरणः सेतुस्तिकशाकोऽश्मरीरिपुः ॥ ४१ ॥
 दोषग्रहे तु क्तको द्रावणः स्रवणः सरः ।
 उल्लेखनीयो लक्ष्मीवांस्तेरस्तोयप्रसादनः ॥ ४२ ॥
 राजादने फलाध्यक्षः प्रियकश्च मधुस्रवः ।
 मधुपुष्पे मधुष्ठीलो वानप्रस्थो मधूकवत् ॥ ४३ ॥
 गुडपुष्पोऽप्यद्विजेऽस्मिन् गौरशाको मधूलकः ।
 पारिभद्रस्य भेदे च मन्दारः पारिजातकः ॥ ४४ ॥
 भूर्जपत्रे भुजो भूर्जो मृदुत्वक् चर्मिचर्मिकौ ।
 पीलौ गुडफलः संसी श्यामश्चाथात्र शैलजे ॥ ४५ ॥
 अक्षोढः कर्परालश्च नेमीये त्वतिमुक्तकः ।
 चित्रकृत् तिमिशो नेमी वञ्जुलोऽथायुगच्छदे ॥ ४६ ॥
 सप्तपर्णो विशालत्वक्छारदो विषमच्छदः ।
 कोविदारे चमरिको रक्तपुष्पो युगच्छदः ॥ ४७ ॥
 काञ्चनारोऽप्याग्वधे तु व्याघातश्चतुरङ्गुलः ।
 आरग्वध आरेवतः शम्याकः प्रग्रहोऽग्वधः ॥ ४८ ॥

कृतमालः सुपर्णश्च मदने तु फणी रसः ।
 पिण्डीतके मरुवक इक्ष्वाकुर्गालवामनौ ॥ ४६ ॥
 विचुलः पिचुलो राद्धः कैडर्यो विषपुष्पकः ।
 काकदर्शच्छदनश्चीनो गरलः कण्टकीति च ॥ ४७ ॥
 कालस्कन्धे तिन्दुकोऽक्ली स्फूर्जकः शितिसारकः ।
 काकेन्दौ कालपीलुः स्यात् कुलकः काकतिन्दुकः ॥ ४८ ॥
 सिते लोध्रे महालोध्रः शवरश्चाथ लोहिते ।
 तिरीटो मार्जनश्चित्तः कृष्णेऽस्मिन् लोध्रगालवौ ॥ ४९ ॥
 गुग्गुलौ कालनिर्यासो देवधूपो महेश्वरः ।
 श्रीमान् स्निग्धः सर्वसहः श्लेष्मी तिक्तः कटुर्लघुः ॥ ५० ॥
 कामः पुरो जटायुश्च कुम्भोत्खलकं वरम् ।
 रज्जुदाले नीचुदारः कच्छूदारो गृह्णुमः ॥ ५१ ॥
 गूढवृक्षः श्लेष्मफलो विषघ्नो द्विजकुत्सितः ।
 उद्दालो बहुवारो ना सेलुः श्लेष्मातकी न षण् ॥ ५२ ॥
 शोभाञ्जने तीक्ष्णगन्धः शिग्रुः काक्षीवमोचकौ ।
 उष्णो मुरुङ्गी रक्तेऽस्मिन् मधुशिग्रुः सुभञ्जनः ॥ ५३ ॥
 गृञ्जनः स्वादुगन्धा च प्रियालुस्तु धनुः पटः ।
 काष्मर्ये गोपभद्रा स्यात् काष्मरी कृष्णवृन्तिका ॥ ५४ ॥
 श्रीपर्णी कुमुदा गृष्टिर्गम्भारी भद्रपर्णिका ।
 कैडर्यं कटफलः कुम्भी श्रीपर्णी कुमुदेति च ॥ ५५ ॥
 सुपार्श्वे स्यात् कन्दरालो गर्दभाण्डः कपीतनः ।
 ताम्रपाकी फलेपाकी प्लक्षको गन्धमुण्डकः ॥ ५६ ॥
 कदम्बे पुलकी श्रीमान् प्रावृषेण्यो हलीमकः ।
 महाकदम्बके नीपो धूर्तो धूर्तारदीपनौ ॥ ५७ ॥
 वासन्ते स्यात् कुरवकस्तिलकः कुवको मधुः ।
 शुक्लपुष्पः कुरुवको मदनो धूर्तनागरौ ॥ ५८ ॥
 करञ्जे स्यान्नक्तमालः प्रकीर्यश्चरिबिल्वकः ।
 कालिङ्गे पूतिकरजः पूतिके कलिकारकः ॥ ५९ ॥
 बालपत्रे तिक्तसारः खदिरो दन्तधावनः ।
 सिते तु तस्मिन् कदरः शल्यकश्च मरुन्धवः ॥ ६० ॥
 मरुद्भवे विट्खदिरोऽप्यरिमोऽप्यरिमेदकः ।
 कण्टकी चाप्यथैरण्डे हस्तपर्णोऽप्यलम्बकः ॥ ६१ ॥

रुवुः पञ्चाङ्गुलश्चक्षुरामण्डस्तरुणोऽम्बुकः ।
 गन्धर्वहस्तो रुवुको वातघ्नो व्याघ्रपुच्छकः ॥ ६५ ॥
 प्रियके तु प्रियङ्गुवाख्या कारम्भा फलिनी फली ।
 विष्वक्सेना बला वृन्ता गुन्दा गोबन्दिनी लता ॥ ६६ ॥
 भावज्ञा सर्षपी स्याख्या वृत्ताङ्गी सुयमावनी ।
 कन्या चापि कदम्बस्तु निचुलोऽम्बुज इज्जलः ॥ ६७ ॥
 स्योनाके शोणकट्वाङ्गौ दीर्घवृन्तः कुटन्नटः ।
 मण्डूकपर्णः पत्रोर्णो मल्लकः शुक्रनाशकः ॥ ६८ ॥
 भूतपुष्पो नटो ढङ्क ऋक्षण्डुण्डुक आरलुः ।
 तिलके फलकः श्रीमान् सुगन्धो मुखमण्डनः ॥ ६९ ॥
 कर्णपूरोऽल्पपुष्पश्च पुष्पागो सुरवल्लभः ।
 किदिरे दीनकम्बोजौ तद्भेदे सुरपर्णिका ॥ ७० ॥
 पारिभद्रे द्रुक्लिमं देवदारु सुराह्वयम् ।
 पूतिकाष्ठं भद्रदारु पीतदारु च दारु च ॥ ७१ ॥
 वृक्षोत्पले कर्णिकारः परिव्याधोऽथ भण्डिले ।
 कपीतनः शिरीषश्च करके दाडिमी त्रयी ॥ ७२ ॥
 कुटजे कुटचो वत्सः शक्राख्यो गिरिमल्लिका ।
 एतस्यैवास्त्रियाविन्द्रयवमद्रयवौ फले ॥ ७३ ॥
 पनसे कण्टकिफलः पयोऽण्डो जघनेफलः ।
 कर्कशी मधुबीजश्च सरले पूतिकाष्ठकम् ॥ ७४ ॥
 निम्बे पार्वतकैडर्यद्वेषिच्छर्दनमायिकाः ।
 रोमशः पिचुमन्दश्च लकुचे लिङ्कुचो डहुः ॥ ७५ ॥
 पिचुले म्नावुकः शाके पृथुच्छदहलीमकौ ।
 उन्मत्ते धूर्तधुत्तूरधुस्तूरकितवाः शठः ॥ ७६ ॥
 धूर्धूरः काञ्चनाहोऽथ त्रिपुरे मदमत्तकः ।
 प्रेतालये तु तिक्तीकः शाखोटो गन्धमालहा ॥ ७७ ॥
 कृसरे भीरुमार्जारकिंशुका इङ्गुदी न षण् ।
 पिण्डारके तु पिण्डीकः कृष्णे त्वस्मिन् वलाहकः ॥ ७८ ॥
 पुत्रजीवे त्वक्षफलो रुद्राक्षे तु महामुनिः ।
 एकस्ये त्वत्र माभीदो द्विमुखे तु वरार्गलः ॥ ७९ ॥
 चतुर्मुखे ब्रह्मसंज्ञः पञ्चवक्त्रे हराह्वयः ।
 षण्मुखे तु गुहाख्योऽथ किम्पाके काकमर्दकः ॥ ८० ॥
 तिनृङ्गीकेऽम्लिका चिञ्चा शुक्तिनारी कपिप्रिया ।
 तिन्निणी चाप्यथो हेमपुष्पे चाम्पेयचम्पकौ ॥ ८१ ॥

हरणः शीतलः कान्तः कमनीयः पचम्पचः ।
 हीने त्वङ्निः कुम्भफलश्चाम्पेयो नागकेसरः ॥ ८२ ॥
 करमर्दे वशश्चोलः कृष्णपाकफलैः पदैः ।
 व्यस्तैः समस्तैर्युग्मैश्च पुंसि पञ्चदशाभिधाः ॥ ८३ ॥
 शुषेणो विप्रकोऽप्यल्पफलेऽस्मिन् करमर्दिका ।
 वन्दाके वृक्षको वन्दा जीवन्त्यपदरोहिणी ॥ ८४ ॥
 वृक्षादनी वृक्षरुहा सेव्यास्मिन् क्षीरवृक्षजे ।
 तनुस्तुष्टो जयः कान्तः कुणिः कातुलको द्रुमः ॥ ८५ ॥
 अभिमन्थे हविर्मन्थोऽप्यरणिः पावको वशा ।
 गणिकार्यप्यथो देवताडे वेणी खरागरी ॥ ८६ ॥
 कालस्कन्धे तमालोऽस्त्री तापिच्छे काकतुण्डिका ।
 बदर्या कुवली कोलिः कूली क्रूरा तिरीटिका ॥ ८७ ॥
 लताकोलौ तु खलकी गिरिकोलौ तु सौरसा ।
 हस्तिकोलौ महाघोण्टा गोपघोण्टा महाफला ॥ ८८ ॥
 जलकोलौ तु सङ्गाली नरकोलौ तु कर्कशी ।
 मृगालकोलौ हिंसाऽथ शमी सक्तुफला जया ॥ ८९ ॥
 काकस्थाल्यां कुबेराक्षी कृष्णवृन्ता फलेरुहा ।
 आमोघा पादलिर्न क्ली पूरण्यां शाल्मलिर्न षण् ॥ ९० ॥
 काण्ठीला तूलिनी तूलफलाऽथ कूटशाल्मलौ ।
 रोचनः शिंशपायां तु तीक्ष्णधूमावसादनी ॥ ९१ ॥
 कपिला पिच्छिला भस्मगर्भा मण्डलपत्रिका ।
 जम्बवां त्रिसारा विरजा महाजम्बवां महाफला ॥ ९२ ॥
 सुरसाथो राजजम्बवां सुफलः सुरभिच्छदः ।
 काकजम्बवां तु मेघाभः शिवेष्टः शीतपल्लवः ॥ ९३ ॥
 जम्बूटनीलजम्बूटौ शफर्या श्लक्ष्णपत्रकः ।
 शिलीन्द्राश्मन्तकाम्लोटा धवे गौरधुरन्धरौ ॥ ९४ ॥
 भञ्जातक्यां त्रिलिङ्गायामभिमुख्यप्यरुक्करः ।
 कम्पिल्लो रोचनी गुण्डा रक्ताङ्गश्चन्द्रकर्कशौ ॥ ९५ ॥
 सल्लक्यां सुरभिर्हस्तिप्रिया हस्त्यशना ध्रुवा ।
 वैजयन्त्यां तु तर्कारी नादेयी च जयन्त्यपि ॥ ९६ ॥
 घातक्यामनलज्वाला सुभिक्षा धातृपुष्पिका ।
 स्नुष्णां समन्तदुग्धा स्नुग्वा नन्दासिपत्रिका ॥ ९७ ॥

सिद्धगुण्डः सिन्धुरण्यस्यां विपत्रायां त्रिकण्टकः ।
 वज्री गण्डर्यथो घण्टारवायां शणपुष्पिका ॥ ६८ ॥
 तुण्डिकेयां रवा शीरा केसरा बदराफला ।
 कार्पास्यकल्यत्र वन्यायां भारद्वाज्यपि कुष्ठनुत् ॥ ६९ ॥
 विषघ्न्यां भक्षिका भाञ्जी विष्ठा ब्राह्मणयष्टिका ।
 ब्रह्मदण्डी च पद्मा च सारपण्यां स्थिरा ध्रुवा ॥ १०० ॥
 कोकिलाक्षस्तु काण्डेश्वरिश्चुरः क्षुरकः क्षुरः ।
 वासके त्वाटरूषः स्यात् सिंहास्यो वाजिदन्तकः ॥ १०१ ॥
 वाशा सिंही वैद्यमाता वार्ताक्यां दुष्प्रधर्षिणी ।
 वातिङ्गनस्तु भण्डाकी वार्ताकुर्हिङ्गुलुः क्षियाम् ॥ १०२ ॥
 गोष्ठवातिङ्गने त्वेला परुका जलजम्बुका ।
 हस्तिवातिङ्गने त्विभ्या विशाला दद्रुनाशिनी ॥ १०३ ॥
 बृहत्यां प्रसहा काली वार्ताकी हिङ्गुदी कुली ।
 लताबृहत्यां सुस्निग्धा घन्या प्रसहनी लता ॥ १०४ ॥
 निदिग्धिकायां सन्धानी महासन्धा गिरिप्रिया ।
 कण्टकाल्यां परिकूरा कुल्या कुल्यस्पृशी वरा ॥ १०५ ॥
 दुःस्पर्शा राष्ट्रिका सिंही कण्टकाली निदिग्धिका ।
 दण्डोत्पले सहा देवा तलपोटे प्रमेहनुत् ॥ १०६ ॥
 ह्यपुच्छी तु काम्बोजी माषपर्णी महासहा ।
 मार्कवे भृङ्गराजः स्यात् पर्पणस्तु श्वपामनः ॥ १०७ ॥
 कालमेढ्यां कृष्णफला वागूची वसुवक्षिका ।
 सोमवल्ली पूतिफली सोमराजिरवत्गुजः ॥ १०८ ॥
 पारित्राण्यां त्रायमाणा त्रायन्ती बलभद्रिका ।
 रेवत्यां रामदूती स्याद्धारुणी नागदन्त्यपि ॥ १०९ ॥
 श्रीफलयां क्लीतकी नीली नीलकेशी महारसा ।
 ग्रामीणा रञ्जनी तुत्था कारवाही च नीलिनी ॥ ११० ॥
 फल्गुः काकोदुम्बरिका बलयूर्जघनेफला ।
 दास्यां षडश्रा शार्ङ्गष्ठा काकजङ्घा विलोमिका ॥ १११ ॥
 काकनासा तु काकाङ्गी जीवनीया शिरोरुहा ।
 रुद्ध्यां वयस्या काकोली काकमाची तु वायसी ॥ ११२ ॥
 प्रत्यक्छ्रेण्यां सुतश्रेणी द्रवन्ती शम्बरी वृषा ।
 चित्रोपचित्रा न्यग्रोधी रण्डा मूषिकपर्ण्यपि ॥ ११३ ॥
 देव्यां मूर्वा धनुश्रेणी गोकर्णी पीलुपर्णिका ।
 मधूलिका तिक्तवल्का पीलुनी तेजनी सूवा ॥ ११४ ॥

प्रत्यक्पर्णी तु शिखरी किणिही खरमञ्जरी ।
 अपामार्गः शैखरिको धामार्गवमयूरकौ ॥ ११५ ॥
 अजमृङ्गायां विषाणी स्याद् गोजिह्वादाधिके समे ।
 शङ्खिनी चोरपुष्पी स्यात् केशिनी चाप्यथो लघु ॥ ११६ ॥
 वर्षा लङ्कायिका स्पृका मरुन्माला लता मरुत् ।
 कच्छूरके द्राविडकः काल्यको वेधमुख्यकः ॥ ११७ ॥
 निर्गुण्ड्यामिन्द्रसुरसः सिन्धुवारश्च सिन्दुकः ।
 कुठेरके तु पर्णासो मालोर्जरकठिञ्जरौ ॥ ११८ ॥
 सितेऽस्मिन् मञ्जरी तीक्ष्णस्तीक्ष्णगन्धोऽर्जकोऽत्रः तु ।
 सुगन्धौ श्वेतसुरसा भारती तुलसी शिवा ॥ ११९ ॥
 अल्पपत्रस्तु जम्बीरः फणिर्जकसमीरणौ ।
 अस्मिन् सुगन्धौ सौवासो मञ्जरीकमयूरकौ ॥ १२० ॥
 तीक्ष्णे तीक्ष्णार्जको गौरी भूतघ्नी देवदुन्दुभिः ।
 अल्पमात्रे तु वैकुण्ठो बिल्वगन्धो वचाच्छदः ॥ १२१ ॥
 कालपर्ण्यौ तु सुरभिः करालः कालमालकः ।
 मालो ब्रह्मजटायां तु सलज्जं दानवाञ्जनम् ॥ १२२ ॥
 पुण्डरीकं दमनकं कान्तं दान्तं मुनिः पुमान् ।
 विष्णुकान्ता तु सुमुखी गवसी स्यान्महारसा ॥ १२३ ॥
 ऋषणी द्रोणिका छत्रा चक्षुष्या द्रोणपुष्पिका ।
 सूर्यावर्ते पणिकायां मोरटा मूलपुष्पिका ॥ १२४ ॥
 मुण्ड्यां मुण्डितिका मुण्डा श्रमणी श्रमणी बुधा ।
 रोदन्यां कच्छुरानन्ता ताम्रमूला दुरालभा ॥ १२५ ॥
 यासो यवासो दुस्स्पर्शो धन्वयासः कुनाशकः ।
 वृश्चिकाल्यामुष्ट्रधूम्रपुच्छिका नागवृन्तिका ॥ १२६ ॥
 सर्पदंष्ट्रमरा काली विषघ्नी वृश्चिकच्छदा ।
 वाटपुण्यां बला वाट्या सम्मासा चात्रसंज्ञिका ॥ १२७ ॥
 वाट्यालोऽतिबलायां तु पुष्पवीर्या जनी सहा ।
 अश्वकन्दस्त्वश्वगन्धी तिक्ते तु कटुपर्पटौ ॥ १२८ ॥
 ऋषभी त्वजहाध्यण्डा कण्डूरा प्रावृषायणी ।
 कपिकच्छूः शूकशिम्बिरात्मगुप्ता च कच्छुरा ॥ १२९ ॥
 अस्थिमांस्त्वस्थिसङ्घातोऽप्यस्थिसङ्घहनोऽपि च ।
 एकाष्टीला पापचेली स्थापनी वनतिक्तिका ॥ १३० ॥

पाठाम्बुषा विद्धकर्णी प्राचीना श्रेयसी रसा ।
 गुड्ढ्यां कुण्डली धीरा छन्ना छिन्नरुहा धरा ॥ १३१ ॥
 वत्सादनी सोमवल्ली विशल्या चक्रलक्षणा ।
 जीवन्ती खरुहा देवी विषघ्न्यमृतवल्लीका ॥ १३२ ॥
 दीर्घवल्ल्यां वेन्नवन्थौ कुरुवेन्नश्च भूरदः ।
 गवाक्ष्यां किणिही जैत्री प्रत्यक्छेप्यपराजिता ॥ १३३ ॥
 विष्णुकान्ता परास्फोताश्वखुरी शीतलात्र तु ।
 श्वेतायां चारिणी सूर्या गिरिकर्णी गवादिनी ॥ १३४ ॥
 नीलायां तु महाश्वेता निष्ठयान्ता स्थूलपुष्पिका ।
 जिङ्ग्यां समङ्गा विकसा मञ्जिष्ठाञ्जनवल्लीका ॥ १३५ ॥
 पृश्निपर्ण्या पृथक्पर्णी लाङ्गूली पदपर्णिका ।
 गुहा कलशिधावन्यौ दीर्घा सा चित्रपर्णिका ॥ १३६ ॥
 सिंहपुष्पी फेरुविन्ना चित्राङ्गी क्रोष्टुमेखला ।
 नागर्षा केशिका त्र्यशना त्रिपुटा त्रिपुटी त्रिवृत् ॥ १३७ ॥
 रेचनी महती श्वासा माया कुठरुणात्र तु ।
 कृष्णायां रोचनी श्यामा काला चित्रा सुषेप्यपि ॥ १३८ ॥
 गोपा तु शारिवा भद्रा नागजिह्वा सुगन्धिका ।
 व्योतिष्मत्यां पीतरसा लगणा कटभीङ्गुदी ॥ १३९ ॥
 पारावतपदी पिण्या जीवन्ती स्फुटवल्लली ।
 नागवल्ली तु ताम्बूली तथा ताम्बूलवल्लीका ॥ १४० ॥
 क्षुरे तु कण्टकिफलः स्त्रीगोभ्यां कण्टकः परः ।
 गोक्षुरः स्थलशृङ्गाट इक्षुगन्धा पलङ्कषा ॥ १४१ ॥
 श्वर्दष्टा भीरुपर्ण्या तु शतमूली शतावरी ।
 इन्दीवरी बहुसुताप्यहेरुः पीवरीति च ॥ १४२ ॥
 सुदर्शनायां चक्राङ्का दध्याली वृषपर्ण्यपि ।
 जीवन्त्यां जीवनी जीवा जीवनीया मधुश्च सा ॥ १४३ ॥
 चर्मपर्ण्या तु शार्ङ्गाष्टा सुताह्वयामुपोदिका ।
 ब्रह्म्यां सत्यवती ब्राह्मी मत्स्याक्षी सोमवल्ली ॥ १४४ ॥
 मण्डकपर्ण्या भण्डीरी भाण्डी योजनवल्ल्यपि ।
 शोफघ्न्यां पूरणा पूरी वर्षाभ्वी जीवबोधिनी ॥ १४५ ॥
 पुनर्नवा च रक्तायां तस्यां योग्या कटिल्लिका ।
 श्वेतायां वृश्चिकोऽल्पायां दीर्घपत्री विटाटिका ॥ १४६ ॥
 अस्या जात्यन्तरे स्वल्पे पूरणी हस्तिपूरणी ।
 तुण्डिकेयां रक्तफला बिम्बोष्ठी पीलुपर्ण्यपि ॥ १४७ ॥

लज्जालुस्तु नमस्कारी बदर्यञ्जलिकारिका ।
 गण्डकाली खदिर्या तु लज्जालुः स्याच्छमीफला ॥ १४८ ॥
 कलम्ब्यां शतपर्वा स्यात् कलम्बूर्वायसी वधा ।
 पटुञ्चिकायां तु शिवः शान्तः स्वस्तिककुक्कुटौ ॥ १४९ ॥
 निद्रालुः करुणो मानी वनालुः सुनिषण्णकः ।
 मारिषे जीवशाकः स्यादन्नाल्पे तण्डुलीयकः ॥ १५० ॥
 मेघनादो विगण्डीरमथ स्युर्देवमारिषे ।
 विभाजनो रसोत्सृष्टौ काणमारिष ओलकः ॥ १५१ ॥
 लतामारिषतुवरौ वरशाकोलताटिकाः ।
 जलजोऽसौ चञ्चटकः कुक्कुण्डे कषकोऽस्त्रियाम् ॥ १५२ ॥
 भूवल्लूरमहिच्छत्रं भूस्फोटं भूमिकन्दकम् ।
 छत्राकश्च सिलिन्ध्रश्च मुकुलेऽस्मिन् पलाण्डुकम् ॥ १५३ ॥
 सृगालवास्तुके त्वारुर्वास्तुके क्षारपत्रकः ।
 प्रवालो वीरशाकश्च श्रूषायां कासमर्दकः ॥ १५४ ॥
 हरिपर्णे मल्लकोऽस्त्री सेकिमं बुस्तिका न षण् ।
 नीलकण्ठोऽथ मरुजे शिवं चाणक्यमूलकम् ॥ १५५ ॥
 मत्स्याक्ष्यां शालशालीनौ पत्तूरो लोहमारकः ।
 अगस्त्ये मुनिमार्जारवगस्तिर्वज्रसेनकः ॥ १५६ ॥
 शुक्रनासोऽप्यथो पश्चात् सुन्दरो ग्रीष्मसुन्दरः ।
 कपित्थपत्र्यधःपुष्पी व्रणघ्नी भरसी भरा ॥ १५७ ॥
 प्रपुष्पाडे त्वेडगजो दद्रुघ्नश्चक्रमर्दनः ।
 घोषे कोशफला घण्टा घण्टाला फलिनी फली ॥ १५८ ॥
 जाली पटोली ऋण्डाली कोशातक्यपि चात्र तु ।
 पृथौ महाकोशातकी मृदङ्गः कृतवेधनः ॥ १५९ ॥
 ज्योत्स्न्यां स्वल्पफला ग्राम्या मृदङ्गः कृतवेधनः ।
 अथ जिङ्गी दीर्घफला मागधी मलनोत्तमा ॥ १६० ॥
 बहुजाल्यां कोशफला वन्या तिक्तपटोलिका ।
 कर्कोटक्यां कोशफला राजकोशातकी फला ॥ १६१ ॥
 महाजाली पीतघोषा क्षोडो धामार्गवोऽपि च ।
 हस्तिघोषे तरङ्गोऽल्पे त्वादाली देवदाल्यपि ॥ १६२ ॥
 चाङ्गेर्या चुक्रिका दन्तशाठाम्बष्ठाम्ललोण्यपि ।
 सुषण्यां तिक्तच्छदनः कारवेल्तः कठिञ्जकः ॥ १६३ ॥

राजवल्ल्युरुवल्ल्यम्बुवल्ली रञ्जनवल्ल्यपि ।
 सुगन्धके तु कर्कोटः किलासन्नः पटुच्छदः ॥ १६४ ॥
 बृहत्कर्कोटके त्वैहो हस्तिकर्कोटको बली ।
 पटोलके तु राजीवान् रवणः कर्कशः पटुः ॥ १६५ ॥
 राजी राजामृतापाण्डुभूतेभ्यश्च फलः परः ।
 तिक्ते राजपटोलश्च भीरुस्त्विर्वारुकर्कोटिः ॥ १६६ ॥
 चोदन्युर्वारुवालकयोऽप्यल्पा सा राजकर्कोटिः ।
 तुम्ब्यां पिण्डफालालावूः कटुतुम्ब्यां नृपात्मजा ॥ १६७ ॥
 इक्ष्वाकुर्वसनी निम्ना वृन्ततुम्ब्यां तु तुम्बुका ।
 अल्पतुम्ब्यां कुक्कुटाक्षो वृन्ते कर्कोलिचित्रलौ ॥ १६८ ॥
 कालिङ्गोऽल्पेऽत्र चेन्नाणचेन्नालौ क्रोष्टुकर्कोटिः ।
 कालिङ्ग्यां छत्रकः सोमः कर्कारुर्धनवासकः ॥ १६९ ॥
 कूश्माण्डकः पुष्पफलः पीतपुष्पो नृपात्मजः ।
 महाफला शाकफला सुभद्रा शङ्कुलापि च ॥ १७० ॥
 सुखवासे शीर्णवृन्त उग्रगन्धः सुवासकः ।
 त्रिलिङ्गे त्रपुषे तालुः छर्दनी हस्तिपर्णिनी ॥ १७१ ॥
 चिद्भिटे पुनरुर्वारुर्मुगाद्यां गजचिद्भिटा ।
 विटङ्कोऽतिमृगेर्वारुर्विशालैन्द्रीन्द्रवारुणी ॥ १७२ ॥
 अथो गवाक्ष्यां गोडुम्बा चित्रा च कदले पुनः ।
 वृषा वारवुषा रम्भा काष्ठीलानंशुमत्फला ॥ १७३ ॥
 कदली दीर्घपर्णी च रम्भा सा गौरपर्णिका ।
 कृष्णा तु लम्पा कदली माहेन्द्री तु बृहत्फला ॥ १७४ ॥
 सुगन्ध्यल्पफला मोचा साष्ठी काष्ठी कदल्यसौ ।
 बिभीतकस्त्रिलिङ्गः स्यात् कलिस्तिष्ठ्यः कलिद्रुमः ॥ १७५ ॥
 बिभीदकः कर्षफलो भूतवासो वहेटकः ।
 वैत्यः पापस्तुषः कल्पः कालेयस्तुमुलाक्षकः ॥ १७६ ॥
 संवर्तश्च षडश्रायां त्रिलिङ्ग्यामलकी शिवा ।
 धात्री कर्षफला तिष्या सेठ्याभ्यण्डा मृदा दृढा ॥ १७७ ॥
 हरीतक्यां शुक्रसृष्टा नन्दिनी साधिकाभया ।
 अव्यथा चेतकी पथ्या धारणी कालकृणिका ॥ १७८ ॥
 गुञ्जायां कृष्णला ताम्रा शार्ङ्गस्था रक्तिका वरा ।
 भूडामणिः कपिक्रोडा कालवृन्ती परा नव ॥ १७९ ॥
 काकशब्दात् पीलुपीथ्यौ चिञ्चाणन्त्यदनी नखी ।
 जङ्गा तिक्ता च वक्षा च सा शुक्ला चेन्मधुस्रवा ॥ १८० ॥

द्राक्षायां कृष्णिका स्वाद्वी प्रियाला कालमेषिका ।
 हारभूरा दारुफला मृद्वीका गोस्तनी रसा ॥ १८१ ॥
 मालत्यां रेवती जातिर्यूथिकायां मनोज्वला ।
 मानवी चात्र पीतायां वासन्ती हेमपुष्पिका ॥ १८२ ॥
 मल्लिकायां विचकिलो भूपदी मुक्तबन्धना ।
 शीतभीरुर्मदयन्ती गवाक्षी तृणशून्यकम् ॥ १८३ ॥
 देवमाल्यां वरारोहा गोधामाल्यां तु सेवनी ।
 सुरुपायां तृणं वेश्यं काकमाल्यां वनोज्ज्वा ॥ १८४ ॥
 आस्फोता चैकपटलमाल्यां बालाऽथ रक्तकः ।
 बन्धूको बन्धुजीवश्च सप्तलायां विभावनी ॥ १८५ ॥
 सुगन्धा प्रैष्मिकाताना मालिका नवमालिका ।
 शोफालिका तु निर्गुण्डी नीलिका निवहात्र तु ॥ १८६ ॥
 सितायां श्वेतसुरसा वासन्त्यां माधवी लता ।
 निस्सङ्गजा कान्तनाला प्रहसन्ती कुटुम्बिका ॥ १८७ ॥
 अतिमुक्तश्च कन्यायां कुमारी तरुणी सहा ।
 महासहायामम्लानः पीताम्लाने कुरण्डकः ॥ १८८ ॥
 शोणे बली कुरवको म्नाटेऽस्मिन् कलशोदकः ।
 किङ्किराते किङ्किराटः प्रलोही चापि लातकः ॥ १८९ ॥
 सैरेयके तु फिण्टी स्त्री तस्मिन् कुरवकोऽरुणे ।
 दासी सहाऽप्यार्तगलः कुरण्डश्च सनीलकः ॥ १९० ॥
 पीतेऽव्ययः कुरवकः सहा स्त्री सहचर्यषण् ।
 कुन्दे माध्यः शुक्लपुष्पो वासोऽथ करवीरकः ॥ १९१ ॥
 प्रतिहासः शतप्रासः शितिकुम्भोऽश्वमारकः ।
 चण्डातोऽश्वरिपुः श्वेते मरालोऽन्नातिलोहिते ॥ १९२ ॥
 भुज उग्रविषः काकनासायां शिवमल्लिका ।
 बकपुष्पस्तूलपुष्पः काकशीर्षः शिवप्रियः ॥ १९३ ॥
 वसुभट्टः पाशुपत एकाष्टील्लोऽम्बुको वसुः ।
 नन्दावर्ते तु तगरस्तारावटनभोऽङ्गणौ ॥ १९४ ॥
 जपायामोदपुष्पं स्यादत्र पद्ममादयोऽपि च ।
 विदार्या भूमिकुम्भाण्डः सा तु कृष्णा पलाशिका ॥ १९५ ॥
 कोष्ठिका क्षीरशुक्लेक्षुगन्धिकेक्षुविदारिका ।
 श्वेता क्षीरविदारी सा महाश्वेतर्क्षगन्धिका ॥ १९६ ॥

शारदां लाङ्गली तोयपिप्पली शकुलादनी ।
 गोलोम्यां जटिलोम्रोमगन्धा तीक्ष्णा जया वचा ॥ १६७ ॥
 मङ्गल्या चाथ शुक्ला सा षड्गन्था जललम्बिका ।
 श्यामा तु सा घुणाभीष्टा कोशमीरी देवदुन्दुभिः ॥ १६८ ॥
 कैवर्ती मुस्तकेत्वासौ गुन्द्रायां भद्रमुस्तकः ।
 महोदरी वरारोहा नादेयी वलयो वरम् ॥ १६९ ॥
 मुस्तायां मुस्तकं न स्त्री सुगन्धः कर्णपूरकः ।
 शकुलाक्षः श्वेतमध्ये हंसः पीठरदुन्दुभे ॥ २०० ॥
 जलमुस्ते तु प्लवनं गोदर्भं परिपेलवम् ।
 कुटभटं दशपुरं गोपुरं वर्तकं प्लवम् ॥ २०१ ॥
 बालं तु पिङ्गलं वर्जं ह्रीवेरं दीर्घरोमकम् ।
 चामरं चमकं ज्येष्ठं बहिष्ठं जटिलं जटा ॥ २०२ ॥
 शैलमूलं तु कञ्चोरं पलाशो हिमजा जटी ।
 अशोऽस्यां मुसली ताली तालमूली फलिन्यपि ॥ २०३ ॥
 खञ्जेऽरिष्टो गुहोच्छिष्टो रसनो गृञ्जनः कटुः ।
 कायाङ्गं लघुनं दिव्यं महाकन्दामृतोद्भवे ॥ २०४ ॥
 जीर्णकञ्च पलाण्डुस्तु श्वेतकन्दो मुकुन्दकः ।
 हरितेऽस्मिन् लतार्कः स्यात् फरुण्डो दुद्रुमो रसः ॥ २०५ ॥
 स्वल्पकन्दे हरिद्रक्ते गृञ्जनो गर्जनो गुजः ।
 लघुनं दीर्घपत्रं च पिच्छनखो महौषधः ॥ २०६ ॥
 फरुण्डश्च पलाण्डुश्च लतार्कश्च परारिका ।
 गृञ्जनो यवनेष्टश्च पलाण्डोर्दश जातयः ॥ २०७ ॥
 कन्दं त्वक्नी चित्रदण्ड उत्क्ष्वः कण्डूरसूरणौ ।
 अशोऽग्नौ दैत्यमदनः कचूस्तु दलकूर्चिका ॥ २०८ ॥
 शकटश्चाथ कालार्चः नूतनं वेष्टितं दलम् ।
 शोथशत्रौ महापद्मो मोहो माणो बृहच्छदः ॥ २०९ ॥
 वराहकन्दे वाराही चक्रोष्ट्र्यां मालुवा स्त्रियाम् ।
 मध्वालुको मधुरसः कन्दलः कन्दली समौ ॥ २१० ॥
 गौर्या हरिद्रा रात्र्याख्या हेमघ्नी काञ्चनी परा ।
 रोचनी रञ्जनी पीता पिष्ठा पिण्डा मनश्शिला ॥ २११ ॥
 तोषणी वर्णिनी बाला विटकान्ता तरङ्गिणी ।
 दाढ्या दारुहरिद्रा स्यात् पीतदारुश्च पर्जनी ॥ २१२ ॥
 पचम्पचा कर्कटिनी पर्परा पर्पटी वरा ।
 कटकुटेरी कालेयः प्रकोट्यां तु कटुकटम् ॥ २१३ ॥

कटुशृङ्गं शृङ्गिवेरमार्द्रमार्द्रकमस्त्रियौ ।
 वेणौ तु वंशकर्मारौ मृत्युपुष्पस्तृणध्वजः ॥ २१४ ॥
 त्वचिसारो यवफलः खेलस्तेतनमस्करौ ।
 चपश्च तेषु पवनोद्धूतध्वनिषु कीचकाः ॥ २१५ ॥
 निस्सुषौ विषमो वेणौ क्षुद्रे लगुडवंशिका ।
 तृणराजे तलस्तालो महापत्रः फलेरुहः ॥ २१६ ॥
 क्रमुके वाटिका घोण्टा गुवाकः क्रूर आसवः ।
 कषयो रागवान् पूगः फले पर्कटमस्य तत् ॥ २१७ ॥
 पकं जोडं खरं शुष्कं चिक्कणे चक्कचक्कणे ।
 दीर्घवृन्ते रामपूगो लतापूगे तु योजनः ॥ २१८ ॥
 भूपूगे लघुकः क्षुद्रफले पाधोवकापि च ।
 पूगे गैरेयकः शैलजातेऽथ स्याल्लताङ्कुरः ॥ २१९ ॥
 हिन्तालस्तृणराजश्च नालिकेरे तु लाङ्गली ।
 दाक्षिणात्योऽपफलोऽबालः सुतङ्गः कूर्चकेसरः ॥ २२० ॥
 सदाफलो बली चास्मिन् ह्रस्वे स्यात् खुड्डकोऽत्र तु ।
 रक्ते स्वर्णोऽम्रिकाश्चाथ परिक्रोणास्य पट्टके ॥ २२१ ॥
 खपुरः पूगपट्टोऽथ मधुक्षीरो महारसः ।
 परुषः पाण्डुखर्जूरौ तस्मिन् खर्जूरिकाऽल्पके ॥ २२२ ॥
 हलीमे केतकी न वली दीनो व्यञ्जनजम्बुलौ ।
 स्त्रीभूषणो रजःपुष्पो गुप्तरागो वलीनकः ॥ २२३ ॥
 ताल्यां दृढदला ताडी पत्रताली वराङ्गना ।
 पत्रला फलपाकान्ता तालाद्याः स्युस्तृणद्रुमाः ॥ २२४ ॥
 सवेणवस्ते त्वक्सारस्तृणानीक्षुयवादयः ।
 इक्षुवृष्यो मधुतृणो मृत्युपुष्पो महारसः ॥ २२५ ॥
 खड्गपत्रोऽप्यथानिक्षुर्वीयसालीक्षुपालिका ।
 इक्षुमेदास्तु कान्तारवंशपुण्ड्रादयो नरि ॥ २२६ ॥
 दर्भोऽश्ववालः काशिर्ना काशोऽस्त्री स्त्रीक्षुगन्धिका ।
 कुशे मुनिः कुथो दर्भो वीनाहो यज्ञजागरः ॥ २२७ ॥
 लताकुशे तु शीरी स्त्री धमने शुषिरो नलः ।
 शरो मुखो भद्रमुब्जो गुन्द्रस्तेजनकः खरः ॥ २२८ ॥
 मुब्जस्तु यज्ञियो मेध्यो मृदुत्वग्रहमेखलः ।
 चत्सुकस्तूलपो दर्भ ऊर्ध्वमूलः खरच्छदः ॥ २२९ ॥

बालकेश्यां दृढदला जूर्णा कृकणपत्रिका ।
 पुंभूम्नि बल्वजा वात्यां त्विल्कटः स्यात् पराशकः ॥ २३० ॥
 स्याद्वीरणं वीरतृणं मूलेऽस्योशीरमस्त्रियाम् ।
 सेव्या मृणालनलदलामज्जानि जलाशयम् ॥ २३१ ॥
 नियुतस्तम्बजदृढदैत्यगौरकुदानवम् ।
 अभयं चावदाहं च दूर्वा तु हरितालिका ॥ २३२ ॥
 वरा सहस्रवीर्या च भार्गवी चाथ सा सिता ।
 गोलोमी शतवीर्या च गोऽर्गलस्त्वेरका तृणम् ॥ २३३ ॥
 सौगन्धिकं देवजग्धं ध्यामकं कत्तृणं पुरम् ।
 छत्रातिच्छत्रापालघ्नौ मालातृणकभूस्तृणो ॥ २३४ ॥
 पुञ्जीलस्तु तृणस्तम्ब इषीका तूलिका समे ।
 शष्पं बालतृणं शादः सर्वं तु तृणमर्जुनम् ॥ २३५ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्या
 भूमिकाण्डे वनाध्यायः ॥ ३ ॥

—•—

पशुसङ्गहाध्यायः ॥ ४ ॥

सिंहो मृगेन्द्रः पञ्चास्यः पारीन्द्रः श्वेतपिङ्गलः ।
 व्यादीर्णास्यो महानादः शार्दूलस्तुल्यविक्रमः ॥ १ ॥
 कण्ठीरवो मृगरिपुः सुगन्धिर्हरितो हरिः ।
 हलीक्ष्णस्तृणसिंहः स्यात् कूटरुर्मृगर्हिसकः ॥ २ ॥
 व्याघ्रो मृगारिः शार्दूलो हिंसारश्चन्द्रकी मृगात् ।
 हुण्डश्चाल्पस्त्वयं द्वीपी चुलुको भेलमेहिनौ ॥ ३ ॥
 तरक्षुस्तु मृगाजीवस्तिर्लित्सकमृगादनौ ।
 पिण्डारकस्तु चित्राङ्गो महादंष्ट्रो वरोत्कटः ॥ ४ ॥
 वराहः सूकरो घोणी वक्रदंष्ट्रो जलप्रियः ।
 पीनस्कन्धः स्तब्धरोमा कामरूपी तलेक्षणः ॥ ५ ॥
 भूदारः कुमुखो घृष्टिः स्थूलनासो बहुप्रजः ।
 पङ्कक्रीडनकः पोत्री किटिराखनिकः किरिः ॥ ६ ॥
 भङ्गूको दीर्घरोमक्षो भङ्गाटो वृकधूर्तकः ।
 विकरालोऽच्छभङ्गश्च गण्डके खड्गखड्गिनौ ॥ ७ ॥
 वार्ध्राणसो गणोत्साहः कोकस्त्वीहामृगो वृकः ।
 महिषः सैरिभोऽश्वारिर्जलात्मा गद्रवस्वरः ॥ ८ ॥
 लुलायः कासरः शृङ्गी हेरम्बः कृष्णशृङ्गकः ।
 जरन्तः कलुषः पोत्री वीरस्कन्धो रजस्वलः ॥ ९ ॥
 स्कन्धशृङ्गो यमरथः कटाहो दंशलालिकः ।
 हंसकालीसुतश्चाथ सृजया महिषोऽसितः ॥ १० ॥
 गवलश्च परस्वांश्च महिषः स्यादरण्यजः ।
 मृगः प्लावी भीरुचेता वननो मरुको लिगुः ॥ ११ ॥
 नित्यशङ्की च कृष्णस्तु कृष्णसारो निरञ्जनः ।
 यक्षाङ्ग एणस्ताम्रस्तु हरिणस्तृणसंवरः ॥ १२ ॥
 राजीवस्त्वेष राजीमान् सितक्रोडः स चीनकः ।
 शम्बरस्त्वल्पहरिणः पृषतस्तु स बिन्दुमान् ॥ १३ ॥
 रुर्महान् कृष्णसारः कुरङ्गो हरिणो महान् ।
 रोहिदृश्यो हरिणवन्मृदुशृङ्गः प्रतापसः ॥ १४ ॥

न्यङ्कुस्तु शम्बराकारस्त्रिकेण विपुलोन्नतः ।
 परम्परस्तु गोकर्णः पोटरूपस्तु तत्समः ॥ १५ ॥
 रौहिषो गर्दभाभासो रोहितः श्वेतराजिमान् ।
 वातायुः स्याद्वातमृगो जवी वातप्रमीः शिवः ॥ १६ ॥
 प्रियको रोमभिर्युक्तो मृदूश्चमस्तुर्धनैः ।
 नीलः स श्वेतरखावानथवा श्वेतचन्द्रकः ॥ १७ ॥
 कदली तु बिले शेते मृदुरूक्षोश्चकर्बुरैः ।
 नीलाग्रै रोमभिर्युक्ता सा विशत्यङ्गुलायता ॥ १८ ॥
 श्यामिका तु श्वेतबिन्दुः श्यामला षोडशाङ्गुला ।
 चतुरा तु घनस्निग्धरोमा श्यामा सचन्द्रका ॥ १९ ॥
 कालिका त्वसिता यद्वा कपोता पिङ्गबिन्दुका ।
 सामूना तु समूरुर्ना सार्धहस्तसमायता ॥ २० ॥
 गोधूमाभाऽथवा कृष्णा स्निग्धोश्चमृदुरोमिका ।
 चीनस्तु चीनसी स्त्रीत्वे कपोता त्रिंशदङ्गुला ॥ २१ ॥
 मरुजा तूच्चमस्तृणमृदुपाण्डुरोमिका ।
 रोमराजीमती मध्ये द्वादशाङ्गुलसंमिता ॥ २२ ॥
 चनका तु चमूरुर्ना सिताभा यदि वासिता ।
 कृष्णरोमानुविद्धा वा पुच्छोऽस्या न भवत्यपि ॥ २३ ॥
 सेलिमस्तु मृदुश्वेतरुक्षोश्चघनरोमकः ।
 चमूरुस्तु महाग्रीवः सितः केसरवान् जवी ॥ २४ ॥
 कदली तु श्यामवर्णा हस्तायामा महोदरी ।
 एते स्युः कृष्णसाराद्या मृगा अजिनयोनयः ॥ २५ ॥
 शशतुल्या विजातिश्च रक्ताभा मृगमातृका ।
 बिलेशया तु कृमिरा कुमारी तु हिमद्युतिः ॥ २६ ॥
 कुचारुश्चारुपुच्छः स्यात् सुविषाणो वृषाकृतिः ।
 कृतारुस्तु त निष्पुच्छो जायते हिमवत्तटे ॥ २७ ॥
 रुचुस्तु शुद्धो मेषाभः स पीतः सूकराकृतिः ।
 कृष्णे शृङ्गे च तस्याथ कृतमालो वृकाकृतिः ॥ २८ ॥
 सृमरः स्याद्वालमृगः परुर्नो चमरी न षण् ।
 कालपुच्छस्तु तत्प्रायो नामार्थेनैव भिद्यते ॥ २९ ॥
 चारुकस्तु किशोराभः कन्दरस्तूच्चजानुकः ।
 मृगाः स्युः कृष्णसाराद्यास्त एव पशवः सह ॥ ३० ॥
 सिंहाद्यैश्च शशाद्यैश्च प्रास्यैश्चैव गवादिभिः ।
 शशस्तु रोमकर्णः स्यान्मृदुरोमा च शूलिकः ॥ ३१ ॥

गन्धर्वः स्याद्गोलपुसो रामस्तु वृकधोरणः ।
 शरभस्तु गजारातिरुत्पादश्चाष्टपादपि ॥ ३२ ॥
 गवयः स्याद् वनगवो गोवाही बाह्वारणः ।
 कोलाङ्गकस्तु जलको भालुको भल्लुकाकृतिः ॥ ३३ ॥
 पुरोही स्यात् कुलचरो ललनाक्षो वृकाकृतिः ।
 कोटङ्गः स्याज्जन्तुधरो मार्जारी चमराकृतिः ॥ ३४ ॥
 शालिजातस्तु खट्वासः पूतिः खट्वासिकापि च ।
 शिवेव स्याद् गन्धमृगः कस्तूरी मृगपालिका ॥ ३५ ॥
 अण्डौ तु तस्याः कस्तूरी राजार्ह शितिचन्दनम् ।
 मार्जारिका वेधमुख्या मदनी गन्धचेलिका ॥ ३६ ॥
 श्वाविच्छललशल्लथौ तल्लोम्न्यना शलली शलम् ।
 सृगालो भरुजः क्रोष्टा श्वभीरुर्मृगमत्तकः ॥ ३७ ॥
 शयालुः सूचको घोरः फेरुफेरुण्डफेरवाः ।
 मृगधूर्तो भूरिमायो गोमायुर्वृकधूर्तकः ॥ ३८ ॥
 किखिः स्त्री क्रोष्टुभेदेऽल्पे पृथौ लोपाशगृण्ठिवौ ।
 वानरो मर्कटः कीशः कपिः शाखाभृगो हरिः ॥ ३९ ॥
 महावेगो दधिमुखः कुरङ्गो भल्लुकः पृथुः ।
 बलीमुखो वनौकाः स गोलाङ्गूलोऽसिताननः ॥ ४० ॥
 नीलशीर्षोऽप्यथ द्विङ्को वानरो रोहिताननः ।
 शृङ्गिणी सौरभेयी गौरर्ष्या माहेय्युषा शुभा ॥ ४१ ॥
 अनङ्वाह्यनङ्गुह्यस्ता तम्बा तम्पा निलिम्पिका ।
 रजःपूता च कृष्णाऽसौ बहुला क्षितिसम्भवा ॥ ४२ ॥
 सिता तु धवला पुण्ड्रा सुनन्दा जलसम्भवा ।
 कपिला त्वग्निजा दाक्षी सुरभिः कामरूपिणी ॥ ४३ ॥
 रक्तवर्णा रोहिणी स्याच्छीतला वायुसम्भवा ।
 शबली तु प्रक्षराङ्गी सुमना व्योमसम्भवा ॥ ४४ ॥
 वराङ्गा तु चतुर्वर्षा द्विवर्षा तु द्विहायनी ।
 एकहायन्येकवर्षा बहुक्षीरा तु वज्रुला ॥ ४५ ॥
 नैचिकी गौर्गावां श्रेष्ठा भद्रा गौर्गोमतक्षिका ।
 काल्योपसर्या प्रजने पलिकनी बालगर्भिणी ॥ ४६ ॥
 पष्ठौह्यन्या वशा वन्ध्या वेहद्रर्भोपघातिनी ।
 अवतोका स्रवद्रर्भा वत्सकामा तु वत्सला ॥ ४७ ॥

चिरसूता वष्कयणी गृष्टिः सूतवती सकृत् ।
 समांसमीना सा गौर्या प्रतिवर्षं प्रसूयते ॥ ४८ ॥
 पीनस्तनी तु पीनोष्णी सुखदोह्या तु सुव्रता ।
 दुःखदोह्या तु करटा प्रस्तुता प्रसवोन्मुखी ॥ ४९ ॥
 द्रोणक्षीरा द्रोणदुग्धा बहुसूतिः परेष्टुका ।
 घेनुर्नवप्रसूता गौर्धेनुष्या बन्धके स्थिता ॥ ५० ॥
 अभिवान्यान्यवत्सा गौर्वृषाक्रान्ता तु सन्धिनी ।
 आपीनमूधो वृन्तं तु स्तनो वत्सस्तु तर्णकः ॥ ५१ ॥
 विषाणी वृषभः शृङ्गी बाहो गौरक्षधूर्तिलः ।
 उक्षा गौर्वृषलोऽनड्वान् बाह्यः स्कन्धवहो वही ॥ ५२ ॥
 सौरभेयो बलीवर्दो बाढवेयश्च शाकरः ।
 षण्डस्तु गोपतिः श्रीमान् डङ्क इट्वर ईश्वरः ॥ ५३ ॥
 ककुदी गोवृषो घोणः ककुब्धान् मदकोहलः ।
 जातोक्षो जातमात्रोक्षा दम्यो वत्सतरः समौ ॥ ५४ ॥
 महोक्षः स्यादुक्षतरो वृद्धोक्षस्तु जरद्रवः ।
 आर्षभ्यः षण्डतायोग्यो नैचिक्याः प्राक् परे त्रिषु ॥ ५५ ॥
 भग्नशृङ्गपशुः कूटः प्रष्टवाड् युगपार्श्वगः ।
 स्थूरी पृष्ठयः पृष्ठवाह्यः स्कन्धिकः स्कन्धवाहकः ॥ ५६ ॥
 नस्योतो नस्तिते षोडन् षड्देऽथो धुरन्धरे ।
 धुरीणधुर्यधौरेयाः प्रासङ्गादेस्तु बोद्धृषु ॥ ५७ ॥
 प्रासङ्गयः शाकटो युग्यो हालिकः सैरिकादयः ।
 एवं सर्वधुरीणैकधुरीणैकधुरा अपि ॥ ५८ ॥
 कर्णः कर्णविहीनः स्यात् षण्डस्तु च्छिन्नपुच्छकः ।
 गोमान् गोमी च गोस्वामी गोविन्दोऽधिकृतो गवाम् ॥ ५९ ॥
 नैचिकी गोः शिरोदेशः सास्ना तु गलकम्बलः ।
 गोशकृद्गोमयो न स्त्री गोग्रन्थिः शुष्कगोमयः ॥ ६० ॥
 दोहलं तु करीषोऽस्त्री गोकुलं गोधनं समे ।
 गोमहिष्यादिकं जीवघनं स्यात् पाशबन्धनम् ॥ ६१ ॥
 छगस्तु छगलश्छागो लम्बकर्णः स्तभः पशुः ।
 बस्तोऽजश्च छगी मञ्जी सर्वभक्षा गलस्तनी ॥ ६२ ॥
 चुलुम्पा चित्रला हृद्या पर्णादा पलिकिन्यजा ।
 इलिकस्तु वनच्छागो बालवीज्यो निरायसः ॥ ६३ ॥

मेघे शृङ्गिणसम्फालवृष्णिपेत्वहुलुहदाः ।
 एडकोऽप्युरणो मीढ उरभ्रो रोमशोऽप्यविः ॥ ६४ ॥
 मेघी तु कुररी वेणी जालकिन्यविला रुजा ।
 खररासभचक्रीवद्वाहबालेयगर्दभाः ॥ ६५ ॥
 रूक्षस्वरो धूङ्गकर्णो नेमिर्भारसहः शलः ।
 चिरमेही गोर्दनकः कोलिण्टो बडबापतिः ॥ ६६ ॥
 करभश्च मयस्तूष्ट्रो महाप्रीवः क्रमेलकः ।
 दाशेरकश्च रवणः करभः स्यादसौ शिशुः ॥ ६७ ॥
 करभाः स्युः शृङ्खलका दारवैः पादबन्धनैः ।
 श्वा सारमेयः शुनको भषणो मृगदंशकः ॥ ६८ ॥
 दीर्घनादी गृहमृगः कुक्कुरः क्रोधनः शुनिः ।
 यक्ष इन्द्रमहश्चालः कपिलो मण्डरः शुनः ॥ ६९ ॥
 जिह्वापानः पुरोगामी कृतज्ञो रात्रिजागरः ।
 कौलेयकोऽस्थिखादश्च भवनो मलुहोऽपि च ॥ ७० ॥
 शुनी तु सरमा श्वाली विट्चारो ग्रामसूकरः ।
 ओतुर्बिडालो मार्जार आखुमुक् पृषदंशकः ॥ ७१ ॥
 जाडको गात्रसङ्कोची मण्डली नखरायुधः ।
 पशुस्तु मलुको मोकः कपः शुद्धो जडश्चरिः ॥ ७२ ॥
 बाले तु बर्करः सूता तूबरः शृङ्गवर्जितः ।
 हिंस्रो व्याघ्रादिको व्यालः श्वापदो मरुलः शरिः ॥ ७३ ॥
 पुच्छोऽस्त्री लक्ष्म लाङ्गूलं बालहस्तश्च बालधिः ।
 खुरः शफः शको विष्टा घासस्तु यवसः शरिः ॥ ७४ ॥
 रोमन्थनन्तु रोमन्थो रोमोर्णोर्णास्तुकोऽपि च ॥ ७४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

भूमिकाण्डे पशुसंग्रहाध्यायः ॥ ४ ॥

मनुष्याध्यायः ॥ ५ ॥

मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा मानवा नरः ।
 द्विपादो नहुषा गोधा ब्राताः पञ्चजना नराः ॥ १ ॥
 ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रा इति वर्णाश्चतुष्टये ।
 उपवर्णास्तु सङ्कीर्णा विवर्णास्त्वन्त्यजातयः ॥ २ ॥
 एकवर्णाः सवर्णाः स्युर्हीनवर्णास्तु जङ्गिताः ।
 सवर्णं ब्राह्मणाद्राज्ञी सूते मूर्धावसिक्तकम् ॥ ३ ॥
 वैश्याऽम्बष्ठं निषादं तु शूद्रा पारशवश्च सः ।
 एते विवाहजाः पुत्रा व्यभिचारसुताः पुनः ॥ ४ ॥
 अभिषिक्तः कुम्भकारः शूलिकश्च यथाक्रमम् ।
 विप्रादावृतमुग्रस्त्री निषादी तु मनोजवम् ॥ ५ ॥
 अम्बष्ठकन्या त्वाभीरं खञ्जमन्तावसायिनी ।
 आयोगवी धिग्वनकं कुक्कुटी तु पराजकम् ॥ ६ ॥
 भृञ्जकण्ठी तु सौधातं शनकी तु बहिर्गारम् ।
 वैदेहकी कारुविन्दं मैत्री रन्ध्रं भटी सटम् ॥ ७ ॥
 चण्डाली तु श्वचण्डालं शबरी तु परिच्छदम् ।
 कालकिञ्चं तु करणी यवनी यावशादनम् ॥ ८ ॥
 नटी भटं खषी द्रोहं मागधी तु दमण्डकम् ।
 पराजकी तु सिद्रुण्डं कारुविन्दी कुविन्दकम् ॥ ९ ॥
 रथकारी रथाश्मानमावृती तु खरुञ्जकम् ।
 सूता पारावतं सूते श्वपाकी पालुखञ्जनम् ॥ १० ॥
 पुलकसी भर्मिणं सूते धीवरी तीवरं ततः ।
 एते ब्राह्मणपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ ११ ॥
 सूते विप्रा नृपाद्वैश्या माहिष्यं यवनश्च सः ।
 अश्वपण्यमनूढा सा शूद्राऽनूढैव शूलिकम् ॥ १२ ॥
 उग्रमूढा निषादी तु वेणुकं कुक्कुटी कुटम् ।
 तीवरी महिषं वेनी रट्टासं पुलकसी बकम् ॥ १३ ॥
 चण्डाली रुचिटं मल्ली पल्लमुग्री ऋषा परम् ।
 श्वपाकी कलुषं सूता कीलुषं घर्घरी मिषम् ॥ १४ ॥
 सिद्रुण्डी डिण्डिकं जल्ली भ्रकुञ्चं शनकी कचम् ।
 कची भ्रेणं भ्रकुञ्ची तु पागलं पागली गिलम् ॥ १५ ॥

एते क्षत्रियपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ।
 वैश्याद्वैदेहकं विप्रा क्षत्रकन्या तु मागधम् ॥ १६ ॥
 शूद्रा तु करणं सैव जारात् कटकं ततः ।
 कटकमा स वेनी तु वागुरं वेणुकी वटम् ॥ १७ ॥
 अम्बष्ठी कोहलं रन्ध्री घर्घरं विन्दकी भ्रषम् ।
 कारुविन्दी पराविद्धमुग्रीवेशं कुटी मटम् ॥ १८ ॥
 कुक्कुटी पलिनं मेदी मालुकं मालुकी मकम् ।
 चण्डाली नीलिकं वाटी मेणकं करणी वशम् ॥ १९ ॥
 रथकारी सनालिङ्गं वैदेही वानवासिकम् ।
 श्वपाकी पाणिशं मल्ली विबुकं डिण्डिकी कशम् ॥ २० ॥
 मैत्री वाटं नटी भोलं प्रसूते कीलुषी कितम् ।
 घर्घरी धिर्मिणं घोलमित्येते वैश्यसूतवः ॥ २१ ॥
 चण्डालं ब्राह्मणी शूद्रात् क्षत्रिया पारधेनुकम् ।
 वेलवं सैव चौर्येण वैश्या त्वायोगवं ततः ॥ २२ ॥
 चौर्यात् सा चाक्रिकं वेनी वंशिकं फलिनी कुथम् ।
 निषादी कुक्कुटं भिल्ली शबरं कोहली नसम् ॥ २३ ॥
 पुल्कसी कवटं वाटी मञ्जनं मालुकी मलम् ।
 वैदेहकी नीबलकं धीवरी कलशीनकम् ॥ २४ ॥
 भृज्जकण्ठी कुवादुष्कं करणी कालशीनकम् ।
 सूता मालसुपर्णाण्डौ सैरन्ध्री रथवारकम् ॥ २५ ॥
 नटी भ्राणञ्जकं वाटी विभण्डं द्रमिडी द्रुहम् ।
 कैवर्ती धीवरं रन्ध्री कलशं यवनी क्षुदम् ॥ २६ ॥
 कारावती सुललिकं कुवादुष्की वशामखम् ।
 चण्डाली पाण्डुकं द्रोही छाणकं महिषी पुरम् ॥ २७ ॥
 वरुटी रुण्डकं घोली वीलकं कवटी पुटम् ।
 एते शूद्रस्य पुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ २८ ॥
 निषादाब्राह्मणी मेकं क्षत्रिया कालकुण्डकम् ।
 वैश्या सूचिं हरिं शूद्रा सोऽपि चायोगवः कचित् ॥ २९ ॥
 कैवर्ती बुरुलं भिल्ली शनकं शनकी रसम् ।
 श्वपाकी गर्गुटं घोली घर्घरं द्रमिडी कणम् ॥ ३० ॥
 वैदेही कलशं द्रोही भ्रेणकं छाणकी लुषम् ।
 रथकारी मन्दुपालं मागधी मड्डुकैरिकम् ॥ ३१ ॥

आयोगवी तु कैवर्त निषादान्मार्गरश्च सः ।
 एते निषादपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ ३२ ॥
 जालं वैदेहकाद्विप्रा क्षत्रिया रथकारकम् ।
 वैश्या धन्ववनं शूद्रा गैरुषं करणी कृमिम् ॥ ३३ ॥
 अम्बष्ठी बेनमुग्री तु गर्गरं शनकी हनुम् ।
 आयोगवी तु मैत्रेयं पुलकसी कणकुक्कुटम् ॥ ३४ ॥
 निषादी मेदमन्त्रं तु सैव चेन्नान्यपूर्विका ।
 एते वैदेहपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ ३५ ॥
 मैत्रेयाद् ब्राह्मणी लालं क्षत्रिया जालभूषणम् ।
 वैश्या छण्डभट्टं शूद्रा निषादी लोहमालकम् ॥ ३६ ॥
 आयोगवी तु मधुकं घण्टिकं नान्यपूर्विका ।
 एते मैत्रेयपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ ३७ ॥
 विप्रा नाविकमम्बष्ठादस्मिन् कापि श्वपाकवाक् ।
 वैणवं सैव माहिष्याद्रजकं पारधेनुकात् ॥ ३८ ॥
 श्वपचं सैव चण्डालाच्चर्मकञ्चुकजीवनम् ।
 मागधान्ताभ्रजीवं सा तक्षाणं करणादसौ ॥ ३९ ॥
 आयोगवाच्चर्मकारं राज्ञी वार्मिकसूचकौ ।
 माहिष्याच्चर्मकारं सा खनकं मागधादसौ ॥ ४० ॥
 उद्बन्धं खनकाच्छूद्रा स्पृश्यमम्बरनेजकम् ।
 अधोनापितमम्बष्ठी करणान्मत्स्यबन्धकम् ॥ ४१ ॥
 वैश्या सामुद्रमाजीवेत् पण्यं सामुद्रमेव सः ।
 निषादी धिग्वनाच्चर्मकारं कारावरोऽपि सः ॥ ४२ ॥
 कारावरो निषादेन वैदेह्यामिति केचन ।
 वैदेही पाण्डुसोपाकं चण्डालात् कुङ्कुणश्च सः ॥ ४३ ॥
 आहिण्डिकं निषादात् सा कवटी तु हुरिखकम् ।
 निष्ठयाच्छूद्रा मधुश्रेणि शौण्डिकं मण्डहारकम् ॥ ४४ ॥
 उग्री क्रमेलकं तस्मान्निर्गन्ता रजकश्च सः ।
 सोपाकं पुलकसी निष्ठयाच्चण्डालादिति केचन ॥ ४५ ॥
 अन्ध्री तु शबरान्निष्ठयं भिल्लं सा निष्ठयपूर्विका ।
 किरातं पर्णशबरी शबरान्निष्ठयपूर्विका ॥ ४६ ॥
 पुलिन्दपर्णशबरौ किराती निष्ठयपूर्विका ।
 पुलिन्दश्वपचौ निष्ठयात् किराती नान्यपूर्विका ॥ ४७ ॥
 रथकारं तु माहिष्यात् करणी माहिषाडुकम् ।
 पुलकसं सैव चण्डालात् किरातात् पलगण्डकम् ॥ ४८ ॥

चण्डालात् पुल्कसी डोम्बं निषाद्यन्तावसायिनम् ।
 डोम्बी खषं सैव निष्ठयाद् विभेणं हड्डिकं खषी ॥ ४९ ॥
 तीवरी धीवरात् पौण्ड्रं बबरं यवनादसौ ।
 पुल्कसात् पामरं वेनाच्छुषं डोम्बाद्विराणकम् ॥ ५० ॥
 श्वपाकं क्षत्तुरुग्रस्त्री केचिदाहुविपयं यम् ।
 चूचुं किराती शबराद्वैदेहात् पुल्कसात् कचिन्तु ॥ ५१ ॥
 निष्ठयात्तु वरुटी मदगुं वल्लारं तु किरातिका ।
 निषादपुल्कसाद्यास्तु पूर्वोक्ता इह नोत्तरे ॥ ५२ ॥
 विप्रा ब्रात्याद् भृङ्गकण्ठमावन्त्यं विप्रपूर्विका ।
 अभ्यूढा वाटधान्यं सा शैखं सा नान्यपूर्विका ॥ ५३ ॥
 सा पुष्पवं पुष्पवती सम्यगूढा द्विजन्मना ।
 लिच्छिवि क्षत्रिया ब्रात्याज्जह्मं सा विप्रपूर्विका ॥ ५४ ॥
 ब्रात्यपूर्वा तु सा मल्लं क्षत्रपूर्वा तु सा नटम् ।
 प्राक्प्रसूतस्वजातिः सा वरुटं करणश्च सः ॥ ५५ ॥
 सा वैश्यपूर्वा द्रमिडं शूद्रपूर्वा तु सा खषम् ।
 वैश्या ब्रात्यात् सुधन्वानमाचार्यं विप्रपूर्विका ॥ ५६ ॥
 सुधन्वाचार्य एको वा मैत्रं सा वैश्यपूर्विका ।
 शूद्रपूर्वा द्विजन्मानं सात्त्वतं क्षत्रपूर्विका ॥ ५७ ॥
 अपूर्वा भारुषं कारुं ब्रह्मक्षत्रविशाममी ।
 ब्रात्यानां क्रमशः पुत्राः शूद्रा ब्रात्याच्छ्वकण्टकम् ॥ ५८ ॥
 कुर्वन्त्यनुपनीता ये विवाहं ब्राह्मणादयः ।
 ब्रात्या ब्राताश्च ते सर्वे तत्सुताश्चावृतासु ये ॥ ५९ ॥
 अवरेटः सवर्णायां जाराज्जातः सवर्णकात् ।
 पत्यौ जीवति कुण्डोऽसौ भर्तर्यसति गोलकः ॥ ६० ॥
 अविवाह्यासु जाताश्च तथा स्युः कुण्डगोलकाः ।
 ये च प्रव्रजितापुत्रास्तथा प्रव्रजितस्य ये ॥ ६१ ॥
 क्षत्रकुण्डः पट्टबन्धो भोजः क्षत्रियगोलकः ।
 देवप्रैष्यो विप्रकुण्डो ग्रामप्रैष्यस्तु गोलकः ॥ ६२ ॥
 मणिकारो वैश्यकुण्डः शङ्खकारस्तु गोलकः ।
 शूद्रकुण्डो मालवको घासहारस्तु गोलकः ॥ ६३ ॥
 एषां लक्षणसिद्धयर्थं केषाञ्चिद् वृत्तिरुच्यते ।
 उक्ता प्रागेव केषाञ्चिन्नाम्ना केषाञ्चिद्दृश्यते ॥ ६४ ॥

मूर्धावसिक्तः सेनेशो धनुर्वेद्यस्त्रधारकः ।
 मणिमन्त्रौषधिज्ञश्च सोऽम्बष्ठो यानशिक्षया ॥ ६५ ॥
 चिकित्सागणितज्योतिर्ज्ञानी स्यादभिषिक्तकः ।
 अम्बष्ठो भृजकण्ठोऽस्य चिकित्सा शस्त्रसाधना ॥ ६६ ॥
 कट्याजीवात्स दौष्पन्तो निषादो ध्वजघोषणात् ।
 कुम्भकारो भाण्डवृत्तिरेष स्यादूर्ध्वनापितः ॥ ६७ ॥
 नाभेरूर्ध्वं वपन् पुंसां सूतकप्रेतकादिषु ।
 चित्रमर्हलनृत्तज्ञः कालीं पारशवोऽर्चयेत् ॥ ६८ ॥
 शूलिको दण्डयेद्दण्ड्यान् शूलारोपादिकर्मणा ।
 निषादो मृगघातात् स माहिष्यो नृत्तगीतवित् ॥ ६९ ॥
 स एव मङ्कुशोऽथासौ निषादः सस्यरक्षया ।
 जीवन् सवर्णो नक्षत्रैः सोऽम्बष्ठो वैद्यशास्त्रवित् ॥ ७० ॥
 महानर्मा च मदगुश्च स श्रेष्ठी वैश्यवृत्तितः ।
 अश्वपण्यस्त्वाश्विकाख्यः सोऽश्वव्यापारजीवनः ॥ ७१ ॥
 उग्रो दण्ड्यान् दण्डयेत् स दौष्पन्तो मत्स्यघातनात् ।
 निषादो व्यालादिवधाद्यवनः कुक्षरग्रहात् ॥ ७२ ॥
 पुरो धावन् पारशवो राज्ञः शस्त्रञ्च धारयन् ।
 घनान्तःपुररक्षश्च शूलिकः शूलिकोपमः ॥ ७३ ॥
 करणो लेखको राज्ञां वारकः शकनामकः ।
 चुचूकः शाकताम्बूलक्रमुकादिकविक्रयात् ॥ ७४ ॥
 रथकारो निधिप्रभृद्यूतापणनिरूपणात् ।
 रथकारो व्यालमृगहिंसावृत्तिरिति कचित् ॥ ७५ ॥
 उग्रः पारशवो दुर्गधनान्तःपुरपालनात् ।
 अन्वर्थः स्यात् कटकरो द्वादशैतेऽनुलोमजाः ॥ ७६ ॥
 इतिहासपुराणज्ञः सूतो देवांश्च पूजयेत् ।
 सूत ऊढासुतः पक्ता स्थानालङ्करणादिकृत् ॥ ७७ ॥
 सोऽनूढाजो रथाश्वानां वाहको रथकारकः ।
 वैदेहकस्य स्त्रीरक्षा स वन्दी स्तुतिजीवनात् ॥ ७८ ॥
 मौकल्यो रामको वस्त्रस्यूतिरञ्जनजीवनात् ।
 मागधोऽसावनूढाजो जङ्घाकरिकवृत्तिकः ॥ ७९ ॥
 वाप्याद्यवतरेच्छुद्धयै क्षालयेन्मलिनाम्बरम् ।
 वणिक्पथे मागधस्य वाग्भी राजप्रबोधनम् ॥ ८० ॥

चूचुको वेधनेनासौ स वन्दी स्तुतिकर्मणा ।
 वैतालिको बोधनया वेणुवीणादिवादनैः ॥ ८१ ॥
 धीवरो मार्गसन्त्राणाद् रामको दौत्यजीवनात् ।
 आयोगवः पुल्कसश्च स वासःकांस्यजीवनात् ॥ ८२ ॥
 चौर्याज्जातः पुलिन्दोऽसौ स हन्ता दुष्टसत्त्वकान् ।
 चण्डालो भल्लरीकक्षो वद्धीकण्ठो मलं हरेत् ॥ ८३ ॥
 स्यात् पारधेनुको वेनो गोधादिवधबन्धकृत् ।
 स निषादो मत्स्यघातान्मद्गुराघोषणेन सः ॥ ८४ ॥
 क्षत्ता दौत्यद्वारपाल्यात् पुल्कसो मद्यविक्रयात् ।
 पेलवः पुनरस्पृश्यो जम्भको नृत्तगानवित् ॥ ८५ ॥
 आयोगवस्तैजसकृद्भूमकृन्मणिवेधकृत् ।
 स तक्षा तक्षणाज्जीवन् स्थपतिर्नगराधिकृत् ॥ ८६ ॥
 अन्तावसायी वपनान्मागधश्चित्रकर्मणः ।
 स वैदेहः पाशुपाल्यात् तद्रसानां च विक्रयात् ॥ ८७ ॥
 पुल्कसस्तान्तवेनासौ चाक्रिकस्तैलविक्रयात् ।
 लवणक्रीतकोऽसौ स्याल्लवणस्यैव विक्रयात् ॥ ८८ ॥
 एवमेकादश प्रोक्ता वर्णानां प्रतिलोमजाः ।
 गोधादिवधबन्धास्तु हरीणां पुल्कसाश्च ते ॥ ८९ ॥
 रथकारो वास्तुवृत्तिरिज्याधानोपनीतिमान् ।
 आवृतानां तु हस्त्यश्वस्यन्दनेष्वधिकारिता ॥ ९० ॥
 शूर्पच्छत्रादिकर्माणि सूचीनां ते च पुल्कसाः ।
 कैवर्तानां पक्षिपशुमृगघातनजीवनम् ॥ ९१ ॥
 आन्ध्राणां तु गृहद्वाररथ्यावस्करशोधनम् ।
 मेदानां चक्रवृत्तित्वं विष्णून्मृगहणोज्झनम् ॥ ९२ ॥
 आहिण्डिकानां कारासु बहिः स्थित्वाऽभिरक्षणम् ।
 मेदान्धचूचुमद्गूनामारण्यपशुर्हिसनम् ॥ ९३ ॥
 मैत्रेयकः प्रशंसेन्नृन् घण्टाताडोऽरुणोदये ।
 पारावरश्छत्रधरो दीपधृद्वाहको नृणाम् ॥ ९४ ॥
 कुर्यादासनरक्षां च चर्मच्छेदनसीवनम् ।
 कुक्कुटानां शस्त्रकृती राज्ञां कुक्कुटखेलनम् ॥ ९५ ॥
 मागधादपि शूद्रायां कुक्कुटो नाम जायते ।
 योऽन्वेष्टोद्यानवप्रादेवैश्याज्जातोऽपि कुक्कुटः ॥ ९६ ॥

निषाद्यां तन्तुवायोऽसौ वृक्षच्छेदावरोपकृत् ।
 धिग्वनानां तु कार्मार्यं वेनानां भाण्डवादनम् ॥ १७ ॥
 वेणः कुशीलवश्चासौ लङ्घनप्लवनादिभिः ।
 वेणो राक्षीसुतोऽप्युग्रान्मायासम्मोहनादिकृत् ॥ १८ ॥
 वैदेह्यम्बष्ठजो वेनो नाट्यरङ्गावतारकृत् ।
 आभीराणां जीवधनं कूटानामश्मत्क्षणम् ॥ १९ ॥
 नौवाहो मार्गरो नद्यां नाविकस्त्वब्धिनौगमः ।
 शैखोऽभिचारं कुर्वीत कर्मणं भृजकण्ठकः ॥ १०० ॥
 मन्त्रौषधैर्द्विषत्सेनां वशीकुर्वीत पुष्पवः ।
 आवन्त्यो वाटधानश्च स्वसेनाचित्तवृत्तिवित् ॥ १०१ ॥
 ब्राह्म्याः क्षत्रसुताः शत्रुकोशमन्त्रादिवेदिनः ।
 खषाणां तोयाहरणं द्रमिलानां प्रपाकान्तः ॥ १०२ ॥
 नटानां करणानां च चारवृत्तिः स्फुटास्फुटा ।
 भारुषस्त्वर्चयेन्मातृः श्मशानादि चतुष्पथम् ॥ १०३ ॥
 सुधन्वाचार्य ईशानं शाक्यचैत्यादि मैत्रकः ।
 भूतप्रेतपिशाचांस्तु विजन्मा सूतिवेश्म च ॥ १०४ ॥
 सात्त्वतः पूजयेद्विष्णुमुक्ते भागवतश्च सः ।
 सन्ति भागवताश्चान्ये ब्राह्मणा भगवत्पराः ॥ १०५ ॥
 श्वकण्ठकस्य शूद्रादि मालवस्याश्वपालनम् ।
 वैणवी पाण्डुसोपाकः सोपाको मूलवृत्तिकः ॥ १०६ ॥
 श्मशानचेलरक्षादिवृत्तयोऽन्तावसायिनः ।
 वनश्मशानरक्षा तु चण्डालान्तावसायिनाम् ॥ १०७ ॥
 गरानलप्रयोगाश्च प्रोच्यन्ते दस्युजातयः ।
 ब्राह्मणस्य त्रयः पुत्रा वर्णस्त्रीष्वनुलोमजाः ॥ १०८ ॥
 शूद्रस्य च त्रयः पुत्रास्तास्वेव प्रतिलोमजाः ।
 त्रयस्त्रयः क्षत्रविशोः प्रतिलोमानुलोमजाः ॥ १०९ ॥
 एते द्वादश वर्णानां पुत्रा एकैकशस्तु ते ।
 चातुर्वर्ण्ये प्रसूयन्ते चतुरश्रतुरः सुतान् ॥ ११० ॥
 ते चत्वारिंशदष्टौ च पूर्वैर्द्वादशभिः सह ।
 ब्राह्मणाद्यैश्चतुर्भिश्च चतुष्पष्टिर्हि जातयः ॥ १११ ॥
 ते सर्वे दस्यवो दोषैश्चौर्याद्यैः सद्बहिष्कृताः ।
 आसाविकस्तु सैरिन्द्रो दस्योरायोगवीसुतः ॥ ११२ ॥

दस्यूनां बहुजातित्वाद् बह्वयः सैरिन्द्रजातयः ।
 प्रसाधनोपचारज्ञा मृगादिवधजीवनाः ॥ ११३ ॥
 शाकपुष्पफलानां च विक्रेतारो बहिष्कृताः ।
 राजस्त्रीणां सूतिकाणां द्वास्थ्याः प्रेताम्बरावृताः ॥ ११४ ॥
 विक्रेतारः सुरां कृत्वा सैरिन्द्राः स्युर्यथोचितम् ।
 दस्युम्लेक्षगणानां तु कृषिशस्त्रोपजीवनम् ॥ ११५ ॥
 म्लेच्छाः स्युर्विप्रकृष्टा ये म्लेच्छवाचो वनौकसः ।
 कार्यो क्षत्रुप्रवैदेहैरन्या वृत्तिरगर्हिता ॥ ११६ ॥
 मेदान्ध्रैर्गर्हिता वृत्तिरनुक्ताः कुलवृत्तयः ।
 तत्रापि मातृकीं वृत्तिं गर्हितामनुलोमजाः ॥ ११७ ॥
 भजेरन् प्रतिलोमास्तु पैतृकं कर्म गर्हितम् ।
 अनुलोमा निकृष्टायामुत्कृष्टादुद्भवन्ति ये ॥ ११८ ॥
 प्रतिलोमा विपर्यस्ता ब्राह्म्यास्तत्प्रतिलोमजाः ।
 आनुलोमप्रातिलोम्यादान्तरालिकसंज्ञिताः ॥ ११९ ॥
 वर्णमात्रानुलोमा ये षट् तेऽपशदसंज्ञिताः ।
 षडपध्वंसजा ये स्युर्वर्णानां प्रतिलोमजाः ॥ १२० ॥
 रजकश्चर्मकारश्च वेनो बुरल एव च ।
 कैवर्तमेदभिज्ञाश्च सप्तैता अन्त्यजातयः ॥ १२१ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

भूमिकाण्डे मनुष्याध्यायः ॥ ५ ॥

ब्राह्मणाध्यायः ॥ ६ ॥

ब्राह्मणो मुखजो विप्रो भूदेवो मैत्र एतशः ।
 अग्रजन्मा वेदगर्भो बाडवश्च त्रयीपुषः ॥ १ ॥
 संस्कारास्तु निषेकाद्याः श्मशानान्ता द्विजन्मनाम् ।
 गर्भाधानं तु यौनं स्यात् प्राजापत्यं च मौलिकम् ॥ २ ॥
 आधानिकं पुंसवनं पौस्नमप्यथ गार्भिणम् ।
 सीमन्तोन्नयनं नामकर्मात्मन्त्रणिके समे ॥ ३ ॥
 चौले तु चूडाकरणं क्षुरकर्म तु मुण्डनम् ।
 मौण्डिकं भद्राकरणं वपनं परिवापणम् ॥ ४ ॥
 सशिखं वपनं तोडं निशिखं मिश्रुलोचकम् ।
 ओदितं त्वतिष्ठं स्यात् पञ्चचीरोदितं पुनः ॥ ५ ॥
 आडिण्डिकं त्रिषु परे मुण्डः स्यान्मुण्डितोऽशिखः ।
 शिखावानवमुण्डः स्यात् पञ्चचूडस्तु सारणः ॥ ६ ॥
 उपनायस्तूपनय आनायश्च वदकृतिः ।
 ब्रह्मचारी व्रती वर्णी नैष्ठिकस्तु स आश्रमी ॥ ७ ॥
 गायत्रस्तूपकुर्वाणो वैदिकोऽधीतवेदकः ।
 प्राजापत्यः कृतोद्वाहः स एवौदुम्बरायणः ॥ ८ ॥
 वर्णिलिङ्गी लिङ्गवृत्तिर्निस्स्वाध्यायो निराकृतिः ।
 वान्ताशी भोजनार्थं यो गोत्रादि वदति स्वकम् ॥ ९ ॥
 उच्छिष्टभोजनो देवनिवेद्यबलिभोजनः ।
 जानिमात्रोपजीवस्तु यः स स्याद् ब्राह्मणब्रुवः ॥ १० ॥
 अजपस्त्वसदध्येता देवाजीवस्तु देवलः ।
 अघायवो वधरता विगीताः ख्यातगर्हणाः ॥ ११ ॥
 अवगीताश्च हन्ता तु गुरुणां नरकीलकः ।
 शिशिवदानो दुराचारो निषिद्धैकरुचिः खरुः ॥ १२ ॥
 त्यक्तात्मा त्यक्तसंवासो ह्यवकीर्णी क्षतव्रतः ।
 शाखारण्डोऽन्यशाखास्थो वर्णिलिङ्गयादयस्त्रिषु ॥ १३ ॥
 वानकं तु ब्रह्मचर्यं नियमप्रयमौ व्रते ।
 अग्नीन्धनं त्वम्भिकार्यमाग्नीध्री चाम्निकारिका ॥ १४ ॥
 प्रासे तु पावनी मिक्षा पुष्कलस्तच्चतुष्टयम् ।
 ते चत्वारो हन्तकारो हन्तकारद्वयं घनः ॥ १५ ॥

मुष्ट्यष्टकेऽव्ययं किञ्चित् पुष्कलं तु तदष्टके ।
 पुष्कलानि तु चत्वारि पूर्णपात्रकमस्त्रियाम् ॥ १६ ॥
 भिक्षाचारः कौक्कुटिकस्त्रिषु स्यादौर्ध्वरथ्यकः ।
 मौञ्जी तु मेखला क्षोणी मौर्वी त्वेकलमात्रिका ॥ १७ ॥
 सौत्री तु घटिनी रम्भा दण्डस्तु दमयन्तिका ।
 पालाशो दण्ड आषाढो व्रते राम्भस्तु वैणवः ॥ १८ ॥
 बैल्वः सारस्वतो रौच्यः पैलवस्त्वौपरोधिकः ।
 आश्वत्थस्त्वजितनेमिरौदुम्बर उल्लखलः ॥ १९ ॥
 द्विजायनी ब्रह्मसूत्रं सूत्रं यज्ञोपवीतकम् ।
 पवित्रञ्चोपवीतं तु प्रोद्घृते दक्षिणे भुजे ॥ २० ॥
 प्राचीनावीतमन्यस्मिन्निवीतं कण्ठलम्बितम् ।
 कृष्णाजिनं कर्णिकं स्यात् कृत्तिः स्त्री चर्म चाजिनम् ॥ २१ ॥
 गुरुर्दिशानो बोधानः क्षाणी च ब्राह्मिकोऽथ सः ।
 (देशिकः परमाप्तः स्यादात्मलाभकरो गुरुः ।)
 मन्त्रव्याख्यादिनाऽऽचार्य उपाध्यायस्तु पाठनात् ॥ २२ ॥
 पाठके तु पठिर्वेदपठिता कलपाठकः ।
 पाठको धर्मशास्त्राणां धार्मिको धर्ममाणवः ॥ २३ ॥
 एकतीर्थी सतीर्थ्यैकगुरु सत्रह्यचार्यपि ।
 धर्मभ्राता सहाध्यायी शैक्षाः प्राथमकल्पिकाः ॥ २४ ॥
 छात्रस्तु शिष्यो मोकः प्राडुपज्ञा ज्ञानमादिमम् ।
 समौ सिद्धान्तराद्धान्तौ ज्ञात्वाऽऽरम्भ उपक्रमः ॥ २५ ॥
 पाठे बिन्दुर्ब्रह्मबिन्दुर्ब्रह्माक्षलिरिहाक्षलितः ।
 ऋक् स्त्री साम यजुश्चेति वेदास्ते तु त्रयस्त्रयी ॥ २६ ॥
 आथर्वणं पौरोहितं वेदाश्चत्वार एव ते ।
 छन्दो ब्रह्म श्रुतिर्वेदोऽप्यथ विद्याश्चतुर्दश ॥ २७ ॥
 शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दसां चयः ।
 ज्योतिषामयनं चेति वेदाङ्गान्यङ्गिभिः सह ॥ २८ ॥
 मीमांसया पुराणेन स्मृत्या न्यायगणेन च ।
 आयुर्वेदो वैद्यशास्त्रं गान्धर्व गीतिशासनम् ॥ २९ ॥
 अर्थशास्त्रं दण्डनीतिर्धनुर्वेदोऽस्त्रशासनम् ।
 चत्वार उपवेदास्ते विद्याश्चाष्टादशोदिताः ॥ ३० ॥
 आन्वीक्षिकी तर्कविद्या निरुक्तं पदमञ्जना ।
 नामशास्त्रे निघण्टुर्ना सर्वविद्या कदम्बिका ॥ ३१ ॥

अध्यायः कामिकः काव्ये तूच्छासः सर्ग इत्यपि ।
 प्रपाठकस्त्वाह्निकोऽथो अनुवाकश्च खण्डिका ॥ ३२ ॥
 ब्राह्मणश्चेत्यवच्छेदा एकग्रन्थस्तु फक्किका ।
 विध्यर्थवादमन्त्रास्तु खिलान्युपखिलानि च ॥ ३३ ॥
 छन्दोभेदास्तु गायत्रीप्रमुखा एकविंशतिः ।
 स्त्रियस्तासु क्रमात् क्लीबे स्युर्गायत्रौष्णिहादयः ॥ ३४ ॥
 मुखशोभा वेदशालिमुखे चित्रावनिश्च सा ।
 विधा ह्युच्चारणाभेदाः स्पृष्टसंवृततादयः ॥ ३५ ॥
 कादयो व्यञ्जना क्ली वा स्पर्शास्ते भावसानकाः ।
 स्त्रियोऽन्तस्स्था यरलवा ऊष्माणः शषसाः सहाः ॥ ३६ ॥
 विसर्गस्त्वभिनिष्ठानः परे त्रिष्वनुनासिकः ।
 नीचोऽनुदात्तो निहत उदात्तः स्वरितोऽपि च ॥ ३७ ॥
 वरिवस्या तु शुश्रूषा सेवा भक्तिरुपासना ।
 परिचर्याऽऽराधनञ्च सेवनञ्च प्रसादनम् ॥ ३८ ॥
 पूजाऽर्चना नमस्याऽर्चा सपर्येज्याऽर्हणाऽञ्जनम् ।
 नमस्या तु नमस्कारो वन्दनं चाभिवादनम् ॥ ३९ ॥
 उपसङ्ग्रहणं पादग्रहणेनाभिवादनम् ।
 गृहस्थः स्नातकश्चक्री गृहमेधी गृहीति च ॥ ४० ॥
 तस्मिन् सावित्रशालीनौ यः कुसूलेन धान्यभृत ।
 पृथुचित्रः कुण्डधान्यो विघ्नसाशी दिनत्रयी ॥ ४१ ॥
 यायावरश्चक्रचरः सद्यःप्रश्नालितान्नकः ।
 परिवेत्ताऽग्रजेऽनूढे कृतदारपरिग्रहः ॥ ४२ ॥
 परिवित्तस्तु तज्ज्यायान् परिवित्तिः कुरी च सः ।
 भ्रातुर्मृतस्य जायायां संसक्तो दिधिषूपतिः ॥ ४३ ॥
 स तु स्यादग्रदिधिषुर्योऽनुजो रमते तथा ।
 स्यादग्रेदिधिषुरचासौ स्यादग्रेदिधिषूरपि ॥ ४४ ॥
 या ज्येष्ठायामनूढायामूढाऽग्रेदिधिषूरसौ ।
 पुनरूढा पुनर्भूः स्यादूर्मिला त्यक्तभर्तृका ॥ ४५ ॥
 देवरे विनियुक्ता या यात्यन्यं साऽभिसारिका ।
 प्रसभा निरिणा मीढा निर्लज्जा धर्षणी च सा ॥ ४६ ॥
 विस्तीर्णजानुर्विकटा नतजानुस्तु सिंहिका ।
 दूषिका क्रोधविवशा पृषता श्वेतबिन्दुका ॥ ४७ ॥

अन्यानुरक्ता विगता नष्टा संस्पृष्टमैथुना ।
 कन्याप्रसूतिजा जारी हारी नाम्नैव दूषिता ॥ ४८ ॥
 हरिता पतितोत्पन्ना कोहली मुखरा भृशम् ।
 जडा तु पाली कुब्जा तु दुर्दर्शा कालिकापि च ॥ ४९ ॥
 धृष्टा प्रापणिका व्यङ्गा निघृष्टा कुत्सिता हता ।
 अरणिर्निस्स्पृहा पालिर्हर्षुला विकला सरूक् ॥ ५० ॥
 शरभा तु विशीर्णाङ्गी स्वल्पदेहा मङ्गषिका ।
 द्योता पिङ्गलकेशाक्षी ऋषभा वृषलक्षणा ॥ ५१ ॥
 वर्षकारी स्रवत्पाणिपादा राता विहारिणी ।
 साङ्कारिका तु पित्रादिगृहेष्वग्न्यादिदायिनी ॥ ५२ ॥
 वैधव्यलक्षणोपेता पतिघ्नी खण्डनाऽपि च ।
 सुता त्वजीववत्साया मातुर्या सा विदूषिका ॥ ५३ ॥
 विकटाद्यास्तु नोद्वाह्याः कन्यकाः सप्तविंशतिः ।
 उपयामः परिणयो विवाहो दारसङ्ग्रहः ॥ ५४ ॥
 उद्वाहोपयमौ पाणिग्रहो जम्बूलमालिका ।
 कन्यादाने तु यद्वत्तं यौतकं यौतुकं च तत् ॥ ५५ ॥
 गोपाली वर्णके शान्तियात्रावरनिमन्त्रणे ।
 दौन्दुभी वरयात्रायां धूलिभक्ते तु वार्तिकम् ॥ ५६ ॥
 स्यादिन्द्राणीमहे हेलिरुल्लुर्मङ्गलध्वनिः ।
 धोरी हुलिङ्हुली चासौ सैव मङ्गलमालिका ॥ ५७ ॥
 क्लीबे स्वस्त्ययनं पूर्णकलशे मङ्गलाह्निकम् ।
 नन्दिकौ तोरणस्तम्भौ शुककूटस्तयोः स्रजि ॥ ५८ ॥
 सैव वन्दनमालाऽपि कुहलिः पूगपुष्पिका ।
 हस्तमृत्रं प्रतिसरस्तद्वन्धे हस्तकोहलिः ॥ ५९ ॥
 तद्ग्रन्थिस्त्ववका धानी कर्णं हस्तलेपनम् ।
 उत्सवेषु सुहृद्भिर्गन्धं बलादाकृष्य गृह्यते ॥ ६० ॥
 वस्त्रमाल्यादि तत् पूर्णपात्रं पूर्णानकं च तत् ।
 उत्सवो मह उद्धर्ष उद्धवो हर्षवेणुकः ॥ ६१ ॥
 क्षणः पर्व च कल्याणं भोज्यं तु जठरोत्सवः ।
 मधुपर्कस्तु निष्ठङ्कः शङ्खपात्रं तु पाटली ॥ ६२ ॥
 यज्ञाध्ययनदानानि याजनाध्यापनग्रहाः ।
 षट्कर्माणि महायज्ञा देवयज्ञादिपञ्चकम् ॥ ६३ ॥

निवापः पितृदानं स्यादामपात्रं तु वापिमम् ।
 मृतस्नानमपस्नानं श्राद्धं तु पितृभोजनम् ॥ ६४ ॥
 दशाहे श्राद्धमाग्नेयं साज्यमेकादशेऽहनि ।
 सम्प्रेषणी द्वादशेऽह्नि मासप्राप्तौ तु मासिकम् ॥ ६५ ॥
 एवं त्रिपक्षी षाण्मासी ज्ञेया सांवत्सरीति च ।
 गयायां पिण्डदानं यत् पितृकार्यं तदार्थकम् ॥ ६६ ॥
 आम्रसेकस्तु यस्तत्र सा चारी सा पितृप्रपा ।
 त्रिष्वातिथ्यमतिथ्यर्थं विघसो विप्रशोषतम् ॥ ६७ ॥
 आवेशिकः स्यादागन्तुरातिथ्यः प्राहुणोऽतिथिः ।
 सूर्योदस्तु स सम्प्राप्तो यः सूर्येऽस्तं गतेऽतिथिः ॥ ६८ ॥
 अथान्याधानमाघेयमाधानं चाम्निसङ्ग्रहः ।
 होमस्तु सवनं होत्रं हवनं हुतिराहुतः ॥ ६९ ॥
 अग्निहोत्रं नित्यहोमः कुत्सितास्त्वग्निहोत्रिणः ।
 वीरोज्ज्वलप्रमुखास्तत्र वीरोज्ज्वलो न जुहोति यः ॥ ७० ॥
 अग्निहोत्रं स्वयं वर्षमुत्सन्नाग्निस्तु वीरहा ।
 अग्निहोत्रच्छलाद् याच्चापरो वीरोपजीवकः ॥ ७१ ॥
 वीरविप्लावको जुह्वद् धनैः शूद्रसमाहृतैः ।
 जातमात्रगृहीताग्निर्धनः स जातारणिर्द्विजः ॥ ७२ ॥
 यस्यौपासन एवाग्निरेकाग्निः काल्पिकश्च सः ।
 अग्न्याहितस्त्वाहिताग्निर्नमः पुनरनग्निः ॥ ७३ ॥
 पर्योधाताऽग्रजेऽनग्नौ कृताधानोऽग्रजस्त्वसौ ।
 पर्योहितस्तथा न्यायः परियष्टृपरीष्टयोः ॥ ७४ ॥
 इज्याशीलो यायजूकः सोमपीथी तु सोमपः ।
 सुत्वा त्वभिषवादूर्ध्वं चितवानग्निमग्निचित् ॥ ७५ ॥
 यष्टा तु यजुरादेष्टा यजमानश्च होत्ववत् ।
 सोमे तु दीक्षितः सोत्वो यज्वा स्यादिष्टवानसौ ॥ ७६ ॥
 सर्ववेदाः स यो यागे दत्तसर्वस्वदक्षिणः ।
 यज्ञत्यागी वृथाजातोऽपञ्चयज्ञो मलिम्लुचः ॥ ७७ ॥
 याजका भरता यज्ञलिहः कुरव ऋत्विजः ।
 यतस्तुचो देवयवो वाघतो वृक्तबर्हिषः ॥ ७८ ॥
 अध्वर्यूद्गातृहोतारो ब्रह्मा चेति महर्त्विजः ।
 मन्त्राणां दैवतं छन्दो निरुक्तं ब्राह्मणान्यधीन् ॥ ७९ ॥

कृत्तस्त्रितादि चाज्ञात्वा यजन्तो यागकण्टकाः ।
याजयन्तो लैङ्गधूमाः कौटास्तूभयकारिणः ॥ ८० ॥
प्रसर्पको दृशीकुश्च दर्शनायाध्वरं गतः ।
उपद्रष्टा सदस्यः स्याच्छान्दसश्चोत्रियौ समौ ॥ ८१ ॥
अधीतसाङ्गवेदो यः सोऽनूचानो युगी गणिः ।
यज्ञो यागोऽध्वरः स्तोमः सप्ततन्तुर्मखः सवः ॥ ८२ ॥
सहसानुर्यजः सानुर्वसुनो विश्वहर्यकः ।
पाकयज्ञाः पार्वणाद्या हविर्यज्ञास्त्वसोमकाः ॥ ८३ ॥
पशुबन्धास्तु पशवः सोमाः सौम्याश्च सोमिनः ।
सवनैस्त्रिभिरेकाहास्तैरावृत्तैरहर्गणाः ॥ ८४ ॥

ते दीक्षितैः कृताः सत्राण्यहीना याजकैः कृताः ।
अहीना द्वादशाहात् प्राक् सत्राण्यूर्ध्वं स तु द्वयः ॥ ८५ ॥
सर्वेऽमी यज्ञक्रतवस्त एवैन्द्राः प्रजागमाः ।
ज्योतिष्टोमश्चतुष्टोमो ज्योतिरानृण्यमित्यपि ॥ ८६ ॥
अग्निष्टोमादयः संस्थाभेदाः सप्तास्य तन्तवः ।
सौमिकी दीक्षणीयेष्टिर्दीक्षा तु व्रतसङ्ग्रहः ॥ ८७ ॥
प्रायणीयोदयनीयौ त्रिष्वार्योऽन्त्ये च कर्मणि ।
पुरोडाशस्य प्रथमे प्रणिकं प्रथिकैरुके ॥ ८८ ॥
प्रोक्षण्यासादनं दैष्टं पत्नीसन्नहनं स्पशा ।
स्रुचां सम्मार्जनं शुद्धिः स्रुगासादनमाहुतिः ॥ ८९ ॥
हुतिराज्याधिश्रयणमाज्यावेक्षणमक्षतिः ।
स्यादिधमप्रोक्षणं कार्ष्णञ्चैत्यमाज्याधिवासनम् ॥ ९० ॥
वेद्यास्तरणमाप्रासः प्रस्तरः स्तरणं छदिः ।
त्रैहोत्रं समिदाधानमदितिस्तासु सेचनम् ॥ ९१ ॥
पावकं सोमपानं स्यान्मिश्रकं तु घृतास्ननम् ।
उपांशुस्तु प्राणिकः स्यादन्तर्यामस्त्वपानिकः ॥ ९२ ॥
श्यैतनौधसयोगानं सान्नोरुपनिमन्त्रणम् ।
व्यञ्जनाः पशुमंस्काराः सामिकं त्वभिमन्त्रणम् ॥ ९३ ॥
परम्पराकं शमनं प्रोक्षणं च पशोर्वधे ।
अथ यज्ञोपकरणं यजत्रं यजनं च तत् ॥ ९४ ॥
होमधेनुस्त्वग्निहोत्री होमकाष्ठी तु नालिका ।
होमधूमस्तु निगणो होमभस्म तु वैष्णुतम् ॥ ९५ ॥

होमेन्धने स्यादिध्मोऽस्त्री पुमानेधः समित् स्त्रियाम् ।
 इन्धनं त्वेध आलाद्यमहोत्रं तु तृणेन्धनम् ॥ ६६ ॥
 काष्ठेन्धनं तु गरहं गोकरीषेन्धनं बुसा ।
 यवादि त्वकृतं हव्यं तण्डुलास्तु कृताकृतम् ॥ ६७ ॥
 अन्नादि कृतमामिक्षा दध्नोष्णं संयुतं पयः ।
 पयस्या च क्षीरशरस्तन्मस्तुनि तु वाजिनम् ॥ ६८ ॥
 सान्नाय्यं तु दधिक्षीरं पृषदाज्यं पृषातकः ।
 पृषतोऽपि च दध्याज्ये पुरोडाशस्तु तृप्रकः ॥ ६९ ॥
 हवनी सुक् सुचो भेदाः स्युर्जुहूरुपभृद्भुवा ।
 अथामिहोत्रहवणी श्रपण्याधारणः सुवः ॥ १०० ॥
 चमसोऽस्त्री त्रिपात्राणि वायव्यं सौमिके त्रिषु ।
 परिप्लवार्थदण्डा सुक् दर्वी तु घृतलेखनी ॥ १०१ ॥
 चमूः स्त्री चर्म सुत्यार्थं प्रावाणस्त्वभ्रयोऽश्मसु ।
 विघ्नो घ्नो मुद्गरे नरः फयोद्धननन्दनाः ॥ १०२ ॥
 यूपोऽस्त्री संस्कृतः स्तम्भो होमयूपस्तु शौभिकः ।
 यूपावग्निषु पार्श्वस्थावुपस्थाविति संज्ञितौ ॥ १०३ ॥
 अग्निष्ठं त्रिषु यूपादि यदग्नेः सम्मुखे स्थितम् ।
 यूपमध्यं समादानं यूपाग्रं तर्म न स्त्रियाम् ॥ १०४ ॥
 कटकैऽस्य चषालोऽस्त्री मूले तूपरमक्षते ।
 वेष्टनं तु परिव्याणं कुम्बा सुगहना वृत्तिः ॥ १०५ ॥
 यूपे सप्तदशारत्नावरत्निर्मेथिकोऽधरः ।
 उत्तरेषां क्रमादाख्या उत्त्रासत्वरुमोचनः ॥ १०६ ॥
 तथाञ्जनो वैयतिथः क्षालनः शवशीर्षकः ।
 सुधन्वो रथगरुतः शैखालीककरञ्जकौ ॥ १०७ ॥
 वासवो वैष्णवस्त्वाष्ट्रः सौम्यो माधुरवेजनौ ।
 संचातिकारणिर्न क्ली कुशा वरुणकाष्ठिका ॥ १०८ ॥
 खर्जनी कृष्णविषाणा वेदिर्भूमिः परिष्कृता ।
 कुण्डं हवित्री हवनी कुण्डे स्याद्वर्तुले परम् ॥ १०९ ॥
 वेदिः स्त्रियां चतुष्कोणे त्रिकूटं तु त्रिकोणके ।
 तस्मिन्नास्तावसंस्तावौ स्तुवते यत्र सामभिः ॥ ११० ॥
 चात्वालोऽस्त्री मृत्खनः स्यादुत्करोऽवकरालयः ।
 शस्त्राण्युक्त्यानि सामानि स्तोत्राणि स्तुतयोऽपि च ॥ १११ ॥

याज्या पुरोऽनुवाक्या च याज्यापुटमिति द्वयम् ।
 सौविष्टकृत्यौ संयाज्ये कूर्चालोलस्फुटी पशुः ॥ ११२ ॥
 स्याद्वित् क्रमो विधिः कल्प उपकल्पोऽनुकल्पकः ।
 पौर्वापर्यं त्वानुपूर्व्यं पर्यायोऽनुक्रमः क्रमः ॥ ११३ ॥
 अनुपात्यय आवृत् स्त्री परिपाठ्यानुपूर्व्यपि ।
 पर्ययस्त्वतिपातः स्यादतिक्रम उपात्ययः ॥ ११४ ॥
 इष्टं यागात्मकं कर्म पूर्तं खातादिकर्मणि ।
 आचारो वृत्तचारित्रचरित्रचरणानि च ॥ ११५ ॥
 वृत्तस्याध्ययनस्यापि सम्पत्तिर्ब्रह्मवर्चसम् ।
 पतनं सत्पथाद् भ्रंशश्चर्या त्वीर्योपथस्थितिः ॥ ११६ ॥
 हिसाकर्मभिचारः स्यान्मूलकर्म तु कर्मणम् ।
 वशीकारः संवननं विकर्माकार्यसेवनम् ॥ ११७ ॥
 त्यागो दानं वितरणं विश्राणनविसर्जने ।
 विहापनं निर्वपणं स्पर्शनं प्रतिपादनम् ॥ ११८ ॥
 उत्सर्जनं प्रादेशनमपवर्जनमंहतिः ।
 अतोयं सात्त्विकं दानमुदपूर्वं तु पौष्टिकम् ॥ ११९ ॥
 आशिषा शान्तिकं दानं काम्यदानं प्रवापणम् ।
 आशासनेऽर्थना याच्ना याचनाऽध्येषणाऽर्दना ॥ १२० ॥
 भिक्षा च सनिरङ्गी स्यान्मार्गणा तु गवेषणा ।
 पर्येषणा परीच्छा च मृगणाऽन्वेषणा मृगः ॥ १२१ ॥
 यस्तु नीलवृषोत्सर्गः स षण्डो वृषपूतनः ।
 उद्धन्धवृषभश्चायमापिङ्गलक इत्यपि ॥ १२२ ॥
 लोहितः स्यान्नीलवृषः पुच्छशृङ्गखुरे सितः ।
 यष्टिर्न ह्री स्त्रियां मीना खनित्री तु विशाखिका ॥ १२३ ॥
 बद्धदर्भो वेदयष्टिः कुण्डिका ना कमण्डलुः ।
 वैखानसो वनेवासी वानप्रस्थश्च तापसः ॥ १२४ ॥
 कापोतो वर्षमात्रस्य स वन्याहारसङ्ग्रहात् ।
 औदुम्बरस्तु षाण्माससंग्रही तुर्यकालमुक् ॥ १२५ ॥
 परे त्रिषु तपस्वी स्यात्तापसः पारिकाङ्क्षिकः ।
 चतुर्थकालिको भिक्षुर्व्यष्टिरष्टमकालमुक् ॥ १२६ ॥
 चान्द्रायणरतश्चन्द्रव्रतिकः सौमिकश्च सः ।
 षष्ठकाली तु बलिको नौसो नक्षत्रकालिकः ॥ १२७ ॥

पुष्पाढ्यस्तु स्वयंशीर्णपुष्पमूलफलाशनः ।
 मुङ्क्ते पक्षान्तयोरेव यो यवान् स द्विकालिकः ॥ १२८ ॥
 शीर्णकः शीर्णपर्णाशी वृक्षमूली तु मूलिकः ।
 भूमौ विपरिवृत्त्यास्ते यः स पातालमूलिकः ॥ १२९ ॥
 वर्षवातातपानङ्गे बिभ्रदभ्रावकाशिकः ।
 शिवव्रती स यो विप्रः पादेनैकेन तिष्ठति ॥ ३० ॥
 रुद्रव्रती क्षत्रियश्चेद् वाताहारस्त्वहिव्रती ।
 मत्स्यव्रती जलाचारस्तृणशय्यस्तु पर्णशः ॥ १३१ ॥
 तथैव स्यात् स्थण्डिलश औल्लकोऽङ्गारशाकटे ।
 पाणिपात्रस्तु खपुटो दन्तोल्लखलको व्युपः ॥ १३२ ॥
 पिबत्यधोमुखो धूमं यः स धुर्यावकर्तिकः ।
 जानुभ्यां जानुकस्तिष्ठन्नष्टप्रासो मुनिव्रती ॥ १३३ ॥
 पद्मासनी तु वसिकः क्षीराहारस्तु लोचकः ।
 नीवारपिष्टकानष्टावशनाति मुनिपिष्टकी ॥ १३४ ॥
 एकान्तर्येकान्तरिती तथा कालावलोलकः ।
 और्वव्रती जलाहारो घृताशी घृतभुग् घृती ॥ १३५ ॥
 तपो व्रतोऽस्त्री कृच्छ्रोऽस्त्री तच्च चान्द्रायणादिकम् ।
 चान्द्रायणं चन्द्रव्रतं प्राजापत्यं तु कृच्छ्रकम् ॥ १३६ ॥
 प्राजापत्यं तु गोकृच्छ्रं कृतं गोमूत्रयावकैः ।
 शिशुकृच्छ्रं कृतं पच्छः कच्छ्रमद्भिस्तु यः कृतः ॥ १३७ ॥
 कृच्छ्रः कृच्छ्रातिकृच्छ्रीऽसौ स्याद्वाहान्येकविंशतिम् ।
 शिशुकृच्छ्रातिकृच्छ्रं तत्त्रिसन्ध्यं चेदपः पिबेत् ॥ १३८ ॥
 प्राजापत्यं पाणिपात्रं पूर्णान्नेनातिकृच्छ्रकम् ।
 तप्तकृच्छ्रं तदस्नानात् क्षीरसर्पिर्जलैः कृतम् ॥ १३९ ॥
 एकैकं ग्रहमभ्युष्णैः शीतैस्तैः शीतकृच्छ्रकम् ।
 बिल्वेन मासं श्रीकृच्छ्रं मूलकृच्छ्रं बिसाशनात् ॥ १४० ॥
 पानेन साम्बुसक्तूनां मासं वरुणकृच्छ्रकम् ।
 त्रिस्सप्ताहं पयःपानं कचित् कृच्छ्रातिकृच्छ्रकम् ॥ १४१ ॥
 पिण्याकाचामतक्राम्बुसक्तून् भुक्त्वा क्रमादहः ।
 उपोष्य सौम्यकृच्छ्रं स्याज्जलाचामौ विनैव वा ॥ १४२ ॥
 स्यात् तुलापुरुषोऽभ्यासादेकैकस्य दिनत्रयम् ।
 सौम्यस्य तु द्विरभ्यासात् स्यात्तुलापुरुषः शिशोः ॥ १४३ ॥

उपवासस्तूपवस्तुः सन्यासः स्यादनाशकम् ।
 द्वादशाहे पराको ना षोडशाहे तुरायणम् ॥ १४४ ॥
 तुरायणद्वये सौम्यं चातुर्मास्ये परायणम् ।
 परायणं जलेनैतत् क्षीरेणैतत् परावसु ॥ १४५ ॥
 एकान्तरितमर्धांशं षष्ठकालेषु षाष्टिकम् ।
 गोमूत्रयावकैर्मासो वज्रोऽस्त्री यावकैः पुनः ॥ १४६ ॥
 इयहं वज्राभिषवणं पयसा तु पयोव्रतम् ।
 पञ्चरात्रं पयःपानं सङ्गमः सङ्गतश्च सः ॥ १४७ ॥
 मासं गोष्ठे पयःपानं गोव्रतं ब्राजिकं च तत् ।
 पिवेद् ब्रह्मसुवर्चलामुपोष्योपस्करव्रतम् ॥ १४८ ॥
 कणान्नस्यैव भोजनं द्वादशाहं वसुव्रतम् ।
 कुशापीडः कुशवटो व्रतिनामासनं व्रसी ॥ १४९ ॥
 योगपट्टस्तु चीना स्यात् पर्यस्तिरवसक्थिका ।
 ऋषिस्त्रिकालदर्शी स्यान्मौनी वाचंयमो मुनिः ॥ १५० ॥
 अगस्त्यः कलशीपुत्रस्तपनः पीतसागरः ।
 और्वशेयः कुम्भयोनिरगस्तिर्विन्ध्यकूटकः ॥ १५१ ॥
 मैत्रावरुणिराग्नेयो मुनिर्वातापिसूदनः ।
 दक्षिणाशारतः काथिः सत्याग्निश्चाग्निमारुतः ॥ १५२ ॥
 तस्य कौषीतकी भार्या लोपामुद्रा वरप्रदा ।
 प्राचेतसस्तु वाल्मीकिर्वाल्मीकश्च कुशी कविः ॥ १५३ ॥
 सालातुरीयको दाक्षीपुत्रः पाणिनिराहिकः ।
 हलभूतिस्तूपवर्षः कृतकोटिकविश्च सः ॥ १५४ ॥
 याज्ञवल्क्यस्तु योगास्त्रिर्योगेशो ब्रह्मरात्रिकः ।
 आपवस्तु वसिष्ठः स्याद्यज्ञाढ्यस्तु पराशरः ॥ १५५ ॥
 गौतमस्तु शतानन्दो यवक्रीतस्तु रोहितः ।
 यायावरो जरत्कार्दुर्वासास्तु कुशारणिः ॥ १५६ ॥
 अष्टावक्रस्तु गर्भोजिह्वदच्युत्स्विभ्रमवाहकः ।
 मत्स्यगुश्च्यवनोऽथ स्याद् गोनर्दीयः पतञ्जलिः ॥ १५७ ॥
 अथ व्यालिर्विन्ध्यवासी नन्दनीनन्दनोऽपि च ।
 कात्यायनो वररुचिर्मेधजिह्व पुनर्वसुः ॥ १५८ ॥
 वात्स्यायनस्तु कौटिल्यो विष्णुगुप्तो वराणकः ।
 त्रिभिलः पक्षिलः स्वामी मञ्जनागोऽङ्गुलोऽपि च ॥ १५९ ॥

यतिः पाराशरी भिक्षुः परिव्राट् पाररक्षिकः ।
 अनाशकी प्रव्रजितः कर्मन्दी मस्करी यती ॥ १६० ॥
 परमात्मा परो ब्रह्म जीवः क्षेत्रज्ञ आविशः ।
 शक्तिस्तु माया प्रकृतिर्व्योमाख्यं मूलकारणम् ॥ १६१ ॥
 असदक्षरमव्यक्तं तमः सदसदात्मकम् ।
 अलिङ्गं गुणसामान्यं गुणाः सत्त्वं रजस्तमः ॥ १६२ ॥
 महांस्तु लैङ्गिको ब्रह्मा लिङ्गव्येष्यश्च चेतना ।
 मनीषा शेमुषी बुद्धिर्धीः पूः ख्यातिर्विदा बुधा ॥ १६३ ॥
 ज्ञप्तिः पण्डोपलब्धिस्तु संवित्तरनुभूश्चितिः ।
 अवगत्यनुभूती चिञ्जमिज्ञानं च बोधनम् ॥ १६४ ॥
 षोढा धीस्तत्त्वधीः पण्डा मेधा धीर्धारणक्षमा ।
 ऊहापोहक्षमा चार्वी गृहीतिर्ग्रहणक्षमा ॥ १६५ ॥
 शुश्रूषाबहुला श्रौषिः श्रवणज्ञा तु चत्वरी ।
 धृतिस्तु तुष्टिः सन्तोषः प्रौढिस्तु कियदेतिका ॥ १६६ ॥
 यत्नोत्साहोद्यमायामास्तरीषोऽध्यवसायवत् ।
 वैराग्यं मर्दमुद्वेगो निर्वेदश्च विरागवत् ॥ १६७ ॥
 धर्मोऽस्त्री सुकृतं पुण्यं पाप्माधर्मौ तु दुष्कृतम् ।
 दुरितं पातकं पापं त्रस्तमंहोऽघकल्मषे ॥ १६८ ॥
 स्मयोऽभिमानोऽहङ्कारो गर्वः स्त्री गर्विरस्मिता ।
 शौटीर्यञ्चाथ शृङ्गारगर्वे घञ्जोरवेञ्जरौ ॥ १६९ ॥
 आहोपुरुषिका सा यद् गर्वादात्मनि गौरवम् ।
 अहं पूर्यमहं पूर्वमित्यहम्पूविकोन्नतिः ॥ १७० ॥
 सा स्यादहमहमिका योऽहङ्कारः परस्परम् ।
 अत्याकारः परिभवस्तिरस्कारोऽप्यनादरः ॥ १७१ ॥
 रीढाऽवमाननाऽवज्ञाऽप्यवहेलमसूक्ष्मम् ।
 उच्चलं मानसं चेतश्चित्तमुच्चलितं मनः ॥ १७२ ॥
 स्वान्तं गूढपदं हृष सङ्कल्पो मानसी क्रिया ।
 मनो बुद्धिरहङ्कार इत्यन्तःकरणं त्रिधा ॥ १७३ ॥
 आकृतिर्मतमाकृतं भावोऽभिप्राय आशयः ।
 चित्ताभोगो मनस्कार उत्प्रेक्षा स्वमनीषिका ॥ १७४ ॥
 मीमांसा तु विजिज्ञासा प्रत्यग्दृष्टिर्विकुण्ठना ।
 तर्कमूलिकसम्पर्श ऊहो न कृत्यहना न ना ॥ १७५ ॥

सम्भावना स्यादाशङ्का वितर्कस्तर्कमस्त्रियाम् ।
 प्रतिभा प्रतिभासः स्यान्निर्णयोऽन्तश्च निश्चयः ॥ १७६ ॥
 विचिकित्सा तु सन्देहः संशयो विशयो भ्रमः ।
 विस्मरणं प्रस्मरणमुन्मादश्चित्तविभ्रमः ॥ १७७ ॥
 तन्द्रा कौसीद्यसालस्यं प्रमादोऽनवधानता ।
 स्यादायक्षकमौत्सुक्यमुत्कण्ठोत्कलिका रतिः ॥ १७८ ॥

हृल्लेखो रणरणकोऽप्यभिध्या विषमस्पृहा ।
 तृषिः काङ्क्षा स्पृहेहेच्छा वाञ्छा कामो मनोरथः ॥ १७९ ॥
 अभिलाषश्च लिप्सा तु धनायेप्सा च गर्धना ।
 गर्भिण्याः पुनरिच्छायां श्रद्धा दोहलदौहृदे ॥ १८० ॥
 रागोऽनुरागोऽनुरतिर्वीक्षायां मोहविस्मयौ ।
 शोषुर्ना शुषकोदन्या पिपासाऽप्यपलासिका ॥ १८१ ॥
 बुभुक्षेच्छाऽशनाया क्षुज्जिघत्साऽशिशिषा पचिः ।
 राक्षयलौल्यं तु कौहोलं तपसीच्छा प्रशान्तिकम् ॥ १८२ ॥
 शोकस्तु मन्युरुत्खेदः शुक् स्त्री दैन्यानुशोचने ।
 क्रोधः कोपोऽमर्षरोषौ रुषा रुट्क्रुतक्रुधाः स्त्रियः ॥ १८३ ॥
 मर्षः क्षमा तितिक्षा स्यादसूया दोषदृग्गुणे ।
 वैरं विरोधो विद्वेष ईर्ष्या मात्सर्यमुज्जते ॥ १८४ ॥
 तङ्कोऽस्त्री भीर्भिया भीतिः साध्वसं भयनं भयम् ।
 विप्रतिसारेऽनुशयः पश्चात्तापोऽनुतापवत् ॥ १८५ ॥
 स्नेहोऽस्त्री प्रेम सौहार्दमजय्यं हार्दसौहृदे ।
 आनन्दनं सङ्गतं स्यादप्रच्छन्नं सभाजनम् ॥ १८६ ॥
 सख्यं साप्तपदीनं स्यात् कौतुकं तु कुतूहलम् ।
 कौतूहलं विनोदश्च दुःखं पीडाव्यथाऽऽर्तयः ॥ १८७ ॥
 सम्भरस्तु मदो हर्षः प्रमोदो मोदसम्मदौ ।
 आनन्दो नन्दथुह्नादस्त्रिमुन्नन्दिदृष्टयः ॥ १८८ ॥
 शर्म शातं सुखं सौख्यमयः शुभफलो विधिः ।
 विधौ दैवं दिष्टभाग्ये विपाको भवितव्यता ॥ १८९ ॥
 उपलिङ्गं त्वरिष्टं स्यादजन्यं डिम्बविप्लवौ ।
 डमरोपप्लवोत्पाता उपसर्ग उपद्रवः ॥ १९० ॥
 सम्पत् सम्पत्तिलक्ष्म्यौ श्रीर्विपत्तिर्विपदापदौ ।
 अवसादस्तु सादः स्याद्विषादश्च श्लिङ्गुर्न ना ॥ १९१ ॥

उग्रता तूष्णिका रौद्री करुणा तु दया कृपा ।
 घृणाऽनुकम्पाऽनुक्रोशः कारुण्यं चाथ कौकुटे ॥ १६२ ॥
 क्लेशायासौ जुगुप्सा तु हृणीया हृणिया घृणा ।
 ऋतिः कुत्साऽप्युपक्रोशो गर्हा दोषश्च गर्हणा ॥ १६३ ॥
 मन्दाक्षं ह्रीन्त्रपा लज्जा ब्रीला साऽपत्रपाऽन्यतः ।
 हासिका तु हसो हासो हसनं हास्यघर्घरे ॥ १६४ ॥
 व्याजो मिषं छलं छद्म निभं च कपटोऽस्त्रियाम् ।
 दम्भो दण्डाजिनं कूटं दौन्दुभिश्छन्दनोपधा ॥ १६५ ॥
 रेभटिः कुक्कुटिर्मिथ्याचर्या च परिकल्पना ।
 जागरितं जागरणं जागर्या जागरा न षण् ॥ १६६ ॥
 प्रमीला तामसी तन्द्रा स्वापस्तु स्वप्नसंशयौ ।
 निद्रा गुडाका सुप्तं च स्वप्नस्त्वेवात्र दर्शनम् ॥ १६७ ॥
 संस्कारमात्रजः स्वप्नः कामिको रसकोऽपि च ।
 अदृष्टजस्त्वत्र चाग्रो दोषजस्त्वाङ्गलौकिकः ॥ १६८ ॥
 प्रदोषे बलकः स्वप्नो निशीथे लोचमालकः ।
 नचकोऽपररात्रे स्यात् सद्यःपाको निशात्यये ॥ १६९ ॥
 नन्दीमुखी श्वासहेतिः सुषुप्तिः सुखसुप्तिका ।
 मूर्च्छा तु मूर्च्छना मौढ्यं वैषित्यं कश्मलं लयः ॥ २०० ॥
 कालधर्मस्तु दिष्टान्तो निपातो गमिरन्धकः ।
 कटमोर्षो भूमिलाभो दीर्घनिद्रा निमीलनम् ॥ २०१ ॥
 पञ्चत्वं मरणं मृत्युरक्ली स्यादमतोऽस्त्रियाम् ।
 सर्वलोकतते मृत्यौ मारिः स्त्री मारकोऽस्त्रियाम् ॥ २०२ ॥
 हृषीकमिन्द्रियं प्राणः प्राणा ना भूम्नि चासवः ।
 प्राणापानादयस्त्वस्य वृत्तयः पञ्च वायवः ॥ २०३ ॥
 श्वासस्तु श्वसितं सोऽन्तर्मुख उच्छ्वास आहरः ।
 आनश्चाथ बहिर्वृत्तो निश्वासः पान एतनः ॥ २०४ ॥
 स्थिरस्त्वाश्वास एती च स्यादूवद्धयं गुदानिले ।
 तन्मात्राप्यविशेषाः स्युर्विशेषाः पञ्च खादयः ॥ २०५ ॥
 महाभूतानि भूतानि लोको भुवनविष्टपे ।
 मर्त्यलोको जीवल्लोको मर्त्योऽप्यथ भुवोऽव्ययम् ॥ २०६ ॥
 स्वर्गमहश्च क्रमाल्लोका महरेव महानपि ।
 प्राजापत्यो जनस्तस्माद् गोलोकस्तु तपो न पुम् ॥ २०७ ॥

ब्रह्मलोकः सत्यलोकस्तत्र पुर्यपराजिता ।
 योगस्त्वाध्यात्मिकोऽथासावष्टाङ्गोऽङ्गैर्यमादिभिः ॥ २०८ ॥
 अहिंसा सत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्यमसङ्गग्रहः ।
 यमाः स्युर्नियमाः शौचसन्तोषतपआदयः ॥ २०९ ॥
 आसनं करणं तस्य भेदाः पद्मासनादयः ।
 उत्तानौ चरणावूर्वोन्यस्येन्नाभौ करद्वयम् ॥ २१० ॥
 दक्षिणोत्तरमुत्तानं घ्राणदृक् पद्माकासनी ।
 अर्धपद्मासनं त्वेकपाद ऊरोरधःस्थिते ॥ २११ ॥
 निगूढचरणं तूर्वोरधश्चेच्चरणानुभौ ।
 पादोपवेशस्त्वन्वर्थः संयुज्य पदयोस्तले ॥ २१२ ॥
 ते चत्वारोऽपि पर्यङ्का पृष्ठवंशशिरोधरम् ।
 नियम्य मीलिताक्षश्चेत्पर्यस्तकरणेन वा ॥ २१३ ॥
 नागदन्तकमूर्ध्वज्ञोर्जानुस्थौ प्रसृतौ भुजौ ।
 सूचीमुखमिदं पाणितलौ चेत्संहतौ मिथः ॥ २१४ ॥
 अर्धसूची तु तौ द्वौ चेत् प्रादेशान्तरतो मुखात् ।
 कुट्मलं मुकुलीभूतौ तौ चेदूर्ध्वमुखौ स्थितौ ॥ २१५ ॥
 अस्पृष्टौ नागदन्तस्य स्फिचौ चेद् भुवमुत्कटम् ।
 वहित्रकर्णः संयुज्य जङ्गायुग्मप्रसारणात् ॥ २१६ ॥
 एष पादप्रसारोऽपि स्यादथो मरणालसम् ।
 वस्तिशुण्डकमप्यस्य जङ्गैका चेत्प्रसारिता ॥ २१७ ॥
 अर्धनाकुलमूर्ध्वज्ञोर्जङ्गे बद्धे भुजेन चेत् ।
 द्वाभ्यां चेन्नाकुलं दोभ्यामथ वज्रासनं यदि ॥ २१८ ॥
 जङ्गे पद्मासनावस्थे तत्सन्धिनिहितौ करौ ।
 ताभ्यामेव स्थितौ भूमावन्तरिक्षासनं च तत् ॥ २१९ ॥
 गोधासनं तदेकेन स्थितश्चेत् पाणिना भुवि ।
 पद्मासनस्य पदयोः पाणिना पृष्ठगामिना ॥ २२० ॥
 वामेन दक्षिणाङ्गुष्ठं वामं चान्येन पीडयेत् ।
 वेतालासनमित्येतदेकाङ्गुष्ठग्रहात् किणः ॥ २२१ ॥
 कर्णयोर्जानुपार्श्वाभ्यां स्पर्शौ जानुनिकुञ्चनम् ।
 भुजवेष्टितजङ्घोरोश्चूलिकाश्लेषितावनेः ॥ २२२ ॥
 पृष्ठतो भुजपाशाश्चेन्मृत्युसंयमनोऽपि सः ।
 बिन्दुभेदोऽप्यधो जानुसन्ध्योः पादप्रवेशनात् ॥ २२३ ॥
 स्वस्तिकोऽथ समस्थानं पादौ कुञ्चितसम्पुटौ ।
 आसीनस्यासनान्येतान्यथ सुप्तस्य साम्यतः ॥ २२४ ॥

गवादीनां निषण्णानां स्याद्गोनिषदनादिकम् ।
 उत्तानस्योर्ध्वपादत्वमित्येतद्विद्विभासनम् ॥ २२५ ॥
 दण्डासनादिभेदेन पञ्चधा स्यात् स्थितासनम् ।
 दण्डासनं स्यादन्वर्थं यत्र दण्डवदुत्थितः ॥ २२६ ॥
 स्याद्वीरासनमुत्पादः कृत्वा भूमौ शिरः स्थितः ।
 दुर्योधनासनमपि मृत्युसंयमनोऽपि सः ॥ २२७ ॥
 दण्डपद्मासनं तस्मिन् जङ्घे पद्मासनोचिते ।
 त्रिविक्रमासनं तार्क्ष्यासनमित्यपि साम्यतः ॥ २२८ ॥
 प्राणायामः प्राणयम उत्खातो मानमस्य यत् ।
 छोटिकास्त्रिः परामृश्य जानुस्फोटक्रियाऽथ ताः ॥ २२९ ॥
 षट्त्रिंशन्मन्द उत्खातो द्विगुणत्रिगुणौ पुनः ।
 मध्यमश्चैवोत्तमश्च प्रथमो द्वादशैव वा ॥ २३० ॥
 प्रत्याहारस्त्विन्द्रियाणां विषयेभ्यः समाह्वतिः ।
 धारणा तु क्वचिद्ध्येये चित्तस्य स्थिरबन्धनम् ॥ २३१ ॥
 ध्यानं तु विषये तस्मिन्नेकप्रत्ययसन्ततिः ।
 समाधिर्ना तदेवार्थमात्राभासनरूपकम् ॥ २३२ ॥
 प्रयुक्तं धारणाद्येतत्त्रयमेकत्र संयमः ।
 ओङ्कारः प्रणवस्तारस्तारकं सर्वविन्मतिः ॥ २३३ ॥
 विद्वान् सन् कोविदः सूरिर्मैधावी पण्डितो बुधः ।
 सुधीर्विपश्चित् सङ्ख्यावान् प्राज्ञो धीमान् विचक्षणः ॥ २३४ ॥
 दीर्घदर्शी दूरदर्शी लघ्ववर्णो मनीष्यपि ।
 त्रिवर्गो धर्मकामार्थाश्चतुर्वर्गः समोक्षकः ॥ २३५ ॥
 सबलैस्तेऽश्रतुर्भद्रः शास्त्रीयं तु फलं गतिः ।
 सान्दष्टिकं फलं सद्यः कार्यं कृत्यं प्रयोजनम् ॥ २३६ ॥
 प्राप्तिरैक्येन सायुज्यं सार्ष्टिरैश्वर्यतुल्यता ।
 ब्रह्मभूयं ब्रह्मभावो देवभूयादिकं तथा ॥ २३७ ॥
 अमृतत्वं तु कैवल्यं मुक्तिर्मोक्षोऽपुनर्भवः ।
 मोक्षावलम्बिनः प्रायः पाषण्डा बाह्यलिङ्गिनः ॥ २३८ ॥
 ते च हेरुकशोभाद्याः प्रोक्ताः षण्णवतिः क्वचित् ।
 दशोत्तरं शतं कैश्चित् पाषण्डानां प्रदर्शितम् ॥ २३९ ॥
 शतत्रयं षष्ठ्यधिकमुक्तं चीनेशसंसदि ।
 वेषाजीवकृतान्ताद्यैस्तेषां भेदः परस्परम् ॥ २४० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्या
 भूमिकाण्डे ब्राह्मणाध्यायः ॥ ६ ॥

क्षत्रियाध्यायः ॥ ७ ॥

क्षत्रं बाहुजराजन्यौ भूशक्रः क्षत्रियो विराट् ।
 राजा तु पार्थिवो भूभुग् राड् भूपो नृपतिर्नृपः ॥ १ ॥
 नरेन्द्रो नरदेवश्च वश्यामात्यस्त्वधीश्वरः ।
 सार्वभौमश्चक्रवर्ती नृपोऽन्यो मण्डलेश्वरः ॥ २ ॥
 स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गबलानि च ।
 राज्याङ्गानि प्रकृतयः पौराणां श्रेणयोऽपि च ॥ ३ ॥
 गुणाः साङ्ग्रामिकाः सर्वे स्वामिनस्त्वाभिगामिकाः ।
 इन्द्रव्रतादयश्चाष्टौ सम्पत्तिर्विपदोऽपराः ॥ ४ ॥
 तत्र याः शक्तयस्तिष्ठः प्रभावोत्साहमन्त्रजाः ।
 षाड्गुण्यमस्त्राद्यभ्यासो गुणाः साङ्ग्रामिका इमे ॥ ५ ॥
 षड्गुणा आसनं यानं द्वैधं विग्रह आश्रयः ।
 सन्धिश्चेन्द्रयमादीनां धृत्तमिन्द्रव्रतादिकम् ॥ ६ ॥
 अथ विद्यार्जनं दानमष्टवर्गस्य वर्धनम् ।
 द्विकपञ्चकषट्काणां विजयः सप्तवर्जनम् ॥ ७ ॥
 उपायनैपुणं धर्म इत्याद्याः शोभनाः क्रियाः ।
 दृष्टादृष्टोदयार्था यास्ते गुणा आभिगामिकाः ॥ ८ ॥
 तत्राष्टवर्ग आरम्भः कृषिः सेतुर्वणिक्पथः ।
 खनिस्थानं वनच्छेदो दुर्गं शून्यनिवेशनम् ॥ ९ ॥
 द्विकं तु मनआत्मानाविन्द्रियाणि तु पञ्चकम् ।
 षट्कं कामो मदो मानो लोभो हर्षो रुषाऽपि च ॥ १० ॥
 मृगयाक्षाः स्त्रियः पानं वाक्पारुष्यार्थदूषणे ।
 दण्डपारुष्यमित्येतन्महाव्यसनसप्तकम् ॥ ११ ॥
 मुख्योपायास्तु सामाद्याः क्षुद्रोपायाः पुनस्तयः ।
 मायोपेक्षेन्द्रजालं चेत्येते माया तु शाम्बरी ॥ १२ ॥
 इन्द्रजालं तु कुहकमुपेक्षा त्ववधीरणम् ।
 उपजापस्तु भेदः स्यात् साम सान्त्वं च सान्त्वनम् ॥ १३ ॥
 तन्त्रं स्वराष्ट्रचिन्ता स्यादावापस्त्वरिचिन्तनम् ।
 अदृष्टं वह्नितोयादि दृष्टं स्वपरचक्रजम् ॥ १४ ॥

राज्ञामहिभयं तु स्यात् स्वपक्षप्रभवं भयम् ।
 हैमं सिंहासनं भद्रासनं त्वन्यन्तृपासनम् ॥ १५ ॥
 छत्रं स्यादातपत्रं तन्तृपलक्ष्म नृपस्य चेत् ।
 अभिसारस्त्वनुचरः सहायोऽनुप्लवोऽनुगः ॥ १६ ॥
 सेवकश्चानुजीवी च यस्तु केलिसहायकः ।
 वैहासिकः केलिकिलस्तस्मिन् हासनिकोऽपि च ॥ १७ ॥
 सामन्ता राजसन्धिस्था आरक्षाः पुररक्षिणः ।
 मन्त्र्यमात्यौ तु धीकर्मसहायेऽतः परे त्रिषु ॥ १८ ॥
 अध्यक्षः स्यादधिकृतः स्थाने चेत् स्थानिको ह्यसौ ।
 क्षुद्रोपकरणेषु स्यादध्यक्षः पारिकर्मिकः ॥ १९ ॥
 कुमारोऽमात्यको मन्त्री वर्गे धर्मे तु धार्मिकः ।
 हृष्टे धीकर्मिकः पुर्या चोरिको दण्डपाशिकः ॥ २० ॥
 रजते नैष्किको ग्रामे स्थायुको हेमि भौरिकः ।
 महानसे पौरोगवो दण्डपालोऽखिले बले ॥ २१ ॥
 अन्तःपुरेऽन्तर्बशिको गोपो ग्रामेषु भूरिषु ।
 कालिकोऽधिकृतः शुल्के सौविदक्षस्तु सौविदः ॥ २२ ॥
 स्थापत्यकञ्चुक्यार्याश्च षण्डो वर्षवरः समौ ।
 प्रदेष्टा पञ्चजनीनो भाण्डागारिक इत्यपि ॥ २३ ॥
 दौवारिको वेत्रधरो द्वास्थः क्षत्ता च दर्शकः ।
 द्वारपाले पुरोधास्तु सौवस्तिकपुरोहितौ ॥ २४ ॥
 मौहूर्तिकमौहूर्तज्यौतिषिकज्ञानिगणकदैवज्ञाः ।
 सावत्सर आदेशी कार्तान्तिक इत्यमी तुल्याः ॥ २५ ॥
 यथार्हवर्णो मन्त्रज्ञो भीमरो गूढपूरुषः ।
 चारोऽप्यथ वणिग्भिक्षुरच्छात्रो लिङ्गी कृषीवलः ॥ २६ ॥
 इति संस्थाचाराः पञ्च तत्र भिक्षुरुदास्थितः ।
 कृषीवलो गृहपतिश्छात्रे कापटिकश्चरे ॥ २७ ॥
 सञ्चारास्त्वपरे चाराः स्थिताः संस्थाचरेषु ये ।
 तीक्ष्णोऽतिहिंसनः शूरश्छत्री छद्मप्रधारवान् ॥ २८ ॥
 अपसर्पाः कर्मकरव्याजात् स्थाने वसन्ति ये ।
 वार्तिकः सन्देशहरो दूतः सान्देशिको रभूः ॥ २९ ॥
 वैतालिको बोधकरो वन्दी तु स्तुतिपाठकः ।
 मागधो मधुको घण्टाताडे बाण्टिकचातिकौ ॥ ३० ॥

कृताभिषेका महिषी महादेव्यप्यथापरा ।
 देवी राजकुलोत्था चेत् परिवृत्ती तु पूजिता ॥ ३१ ॥
 वावाता तु प्रियतमा स्वामिनी त्वनृपात्मजा ।
 फालाकली युद्धजिता नृपस्योढाः प्रिया इमाः ॥ ३२ ॥
 अनूढास्तु प्रिया राज्ञः कलाज्ञा गणिकाः स्मृताः ।
 गणिका सा प्रगणिका यानाप्तपचारिका ॥ ३३ ॥
 आज्ञा स्यादाज्ञागणिका या राज्ञाप्तपरिच्छदा ।
 अथालगन्धिकाऽप्याज्ञागणिका कुलसम्भवा ॥ ३४ ॥
 या तु भोगाय वेश्यात्वं गता वैषयिकीति सा ।
 बन्धकी तु गता वेशमर्थायानाप्तसत्कृतिः ॥ ३५ ॥
 शय्यास्त्रभूषणादौ तु निधुक्ता परिचारिका ।
 सञ्चारिका महाकार्ये कथायां द्रविणादिषु ॥ ३६ ॥
 विचारिका तूपवनकक्षान्तरविचारिणी ।
 आशीस्स्वस्त्ययनाभिज्ञा या वृद्धा सा महत्तरी ॥ ३७ ॥
 प्रतिहारी तु राजानं सम्भावयति या सदा ।
 आयुक्तिविनियुक्ता या सा ताम्बूलकरङ्गिका ॥ ३८ ॥
 असिक्न्यन्तःपुरप्रेष्याऽनाप्तभोगा कुमारिका ।
 विषयानन्तरो राजा शत्रुर्मित्रमतः परम् ॥ ३९ ॥
 उदासीनः परस्तस्मात् पाष्णिग्राहस्तु पृष्ठतः ।
 शत्रुर्दस्युरमित्रारी अरातिरहितो द्विषन् ॥ ४० ॥
 द्वेषणः प्रत्यनीको द्विड् जिघांसुर्हिसनो रिपुः ।
 सपत्नोऽसह्नो वैरी दूषकः शात्रवः परः ॥ ४१ ॥
 प्रत्यर्थी पर्यवस्थाता प्रतिपक्षो विपक्षकः ।
 दुर्हृद् द्वेष्यभियातिश्च परिपन्थी विरोध्यपि ॥ ४२ ॥
 मित्रं नपुं त्रिषु स्निग्धवयस्येष्टहितप्रियाः ।
 निजात्मीयाप्तमुहृदः सहायः सद्बुचिः सखा ॥ ४३ ॥
 कोशोऽर्थसञ्चयो राज्ञां भाण्डान्यर्था हि कोशगाः ।
 आयोदयौ धनोत्पत्तौ तत्क्षयेऽपचितिर्व्ययः ॥ ४४ ॥
 पर्याहारः प्रजास्वायो भागधेयो बलिः करः ।
 उपदा तूपहारः स्यादुपग्राह्यमुपायनम् ॥ ४५ ॥
 प्रदेशनं प्राभृतं च लम्बा तूत्कोच आमिषः ।
 दण्डो दमः साहसोऽस्त्री द्विपाद्यो द्विगुणो दमः ॥ ४६ ॥

अपराधो मन्तुरेनः खसृमं विप्रियागसी ।
 अपवादस्तु निर्देशो निदेशः शासनं तथा ॥ ४७ ॥
 शिष्टिराज्ञाऽप्यथ न्यायो देशरूपं समञ्जसम् ।
 राष्ट्रं तु विषयः सोऽपि युक्तो ग्रामैः शताधिकैः ॥ ४८ ॥
 उपवर्त्तनमप्यस्मिन्मण्डलं तैः शताधिकैः ।
 दुष्प्रापं तु पुरं दुर्गं यन्त्रशैलजलादिभिः ॥ ४९ ॥
 वारकादीनि यन्त्राणि परिखाया बहिभवि ।
 पादुका कण्टकी गर्तः पांसुच्छन्नो महापथे ॥ ५० ॥
 तलयन्त्रं क्षुराकारं यदि वा क्रकचोपमम् ।
 श्वदंष्ट्रार्गलशृङ्गाटमण्डूकाद्यन्वितार्थकम् ॥ ५१ ॥
 शरभा जानुमात्री दा दारुजा जानुभञ्जिनी ।
 अवपातस्तु हस्त्यर्थो गर्तश्छन्नस्तृणादिना ॥ ५२ ॥
 स्यात् कण्टकप्रतीसारा रज्जुः कण्टकसञ्चिता ।
 अहिपृष्ठं तु निर्मासपृष्ठास्थ्याभमयोमयम् ॥ ५३ ॥
 उपस्करप्रस्खलिनी भूमिः स्थपुटपिच्छिला ।
 छन्नैरेतैश्छन्नपथं सुरुङ्गादिः कृतश्च यः ॥ ५४ ॥
 सैन्यं चक्रं बलं सेना चमूर्वाहिन्यनीकिनी ।
 पताकिनी च पृतना ध्वजिनी च वरूथिनी ॥ ५५ ॥
 सैन्यं तु भिन्नकूटं तन्नष्टावान्तरनायकम् ।
 शून्यमूलं तदस्थानमन्तश्शल्यं तदोषकम् ॥ ५६ ॥
 त्रिहयं पञ्चपादातं यदेकरथकुञ्जरम् ।
 सैन्यं सा पत्तिरेतस्यास्त्रैर्गुण्यात् स्युर्यथाक्रमम् ॥ ५७ ॥
 सेनामुखं गुल्मगणौ वाहिनी पृतना चमूः ।
 अनीकिनीत्यनीकिन्यः पुनरक्षौहिणी दश ॥ ५८ ॥
 प्रत्यासारश्चमूपाष्णिः सज्जनं तूपरक्षणम् ।
 हस्त्यश्वरथपादातं बलं स्याच्चतुरङ्गकम् ॥ ५९ ॥
 इमो मतङ्गजो हस्ती दन्ती कुम्भी करी रदी ।
 स्तम्बेरमो गजो गजो द्विरदोऽनेकपो द्विपः ॥ ६० ॥
 दन्तावलो महाकायो वारणः कुञ्जरोऽसुरः ।
 महामृगः शूर्पकर्णः सामजः सिन्धुरः कपिः ॥ ६१ ॥
 मदबृन्दः कुषी कम्बुः शुण्डालः षष्टिहायनः ।
 भद्रो मन्द्रो मृग इति गजाः सङ्करजास्तथा ॥ ६२ ॥

अङ्गप्रत्यङ्गभद्रत्वं संक्षिप्तं भद्रलक्षणम् ।
 पृथुत्वं श्लथता स्थौल्यं संक्षिप्तं मन्द्रलक्षणम् ॥ ६३ ॥
 तनुप्रत्यङ्गदीर्घोच्चप्रायो मृगगणो मृगः ।
 भद्रमन्द्रो भद्रमृगो भद्रमन्द्रमृगोऽपि च ॥ ६४ ॥
 मन्द्रभद्रादयोऽप्येवमिति सङ्करजा नव ।
 ऊर्ध्वाधःकायभेदात्ते द्विघेत्यष्टादशोदिताः ॥ ६५ ॥
 पञ्चवर्षो गजो बालः पोतस्तु दशवर्षकः ।
 त्रिंशद्वर्षस्तु कलमो विष्को विंशतिवर्षकः ॥ ६६ ॥
 कालेऽप्यजातदन्तश्च स्वल्पाङ्गोऽपि च मकणः ।
 आह्वाकृद्विनयग्राही यूथनाथस्तु यूथपः ॥ ६७ ॥
 लग्नो मदकलो मत्तः प्रभिन्नोऽप्यथ निर्मदः ।
 चद्वान्तोऽसौ परिणतस्तिर्यग्दन्तप्रहारकः ॥ ६८ ॥
 औपवाह्यो राजवाह्यः सन्नाह्यः समरोचितः ।
 स्थूलह्रस्वरदोऽसोढ ईषादन्त उदग्रदन् ॥ ६९ ॥
 करेणुः करिणी धेनुः कल्पना सज्जना घटा ।
 गण्डूषको बहिष्कर्षः सम्भोगाश्चातिहस्तकः ॥ ७० ॥
 स्थूलहस्तः फलीहस्तः पृथुहस्त इति क्रमात् ।
 उपर्येते गजाङ्गुल्याः प्रदेशाः सा तु कर्णिका ॥ ७१ ॥
 आकर्षः परिकर्षश्च बहिष्कर्षस्य पार्श्वयोः ।
 किरीटी दन्तमूलं स्यात् प्रवेष्टस्तु ततः परम् ॥ ७२ ॥
 मध्येमुखं तु बाहिस्थं पिलाटौ तस्य पार्श्वयोः ।
 कर्णमूले पीतलिका चूलिका पिप्पलीति च ॥ ७३ ॥
 तस्यास्तु पर उद्धात आरक्षः कुम्भयोरधः ।
 उरःपार्श्वौ तु विक्षोभौ दर्दरौ गलपार्श्वयोः ॥ ७४ ॥
 करटोऽस्य कटो गण्डो गात्रं पूर्वोऽङ्घ्रिरस्य तु ।
 मूलेधोऽधः प्रदेशास्तु क्षयश्च पलिपादकः ॥ ७५ ॥
 कूर्मः सन्दानभागश्च प्रोह उत्सङ्ग इत्यपि ।
 विशेषभागो जघनभागो वैशाख्यपि क्रमात् ॥ ७६ ॥
 गात्रे सप्त नखादूर्ध्वं पिण्डकान्तमवस्थिताः ।
 पुच्छवंशोऽपवंशः स्यान्निष्कोशः कुक्षिमध्यकम् ॥ ७७ ॥
 अवरं पश्चिमः पादस्तत्राधोऽधः स्थिताः क्रमात् ।
 कालभागो बहिष्पार्श्वस्तथा जघनपिण्डिका ॥ ७८ ॥

मण्डुकी शकुटा पाष्णिस्तलप्रोहश्च सक्थि च ।
 सन्दानभागः कूर्मश्च प्रदेशाः स्युर्नखावधेः ॥ ७१ ॥
 अत्यूहः ककुदं मेढ्रे क्षीरिका चूचुकान्तरम् ।
 अथ पुच्छे स्थिता किङ्गी संवालो बालपुष्कलम् ॥ ८० ॥
 बालपाशक इत्येवमधोऽधः स्युर्यथोत्तरम् ।
 दन्तभागः पुरोभागः पुच्छभागस्तु पार्श्वतः ॥ ८१ ॥
 मुखे पृषन्ति पद्मानि वमथुः करशीकरः ।
 प्रवृत्तिर्मद आलानं स्तम्भस्तोत्रं तु वेणुकम् ॥ ८२ ॥
 अन्दुको निगलो न स्त्री भिदुरं शृङ्खला त्रयी ।
 कलापकः कण्ठबन्धस्त्रिपदी पादबन्धनम् ॥ ८३ ॥
 चूषा कक्ष्या वरत्रा स्यादङ्कुशोऽस्त्री सृणिर्न षण् ।
 अपष्टं त्वङ्कुशस्याग्रं सूना दण्डोऽर्पिताङ्कुशः ॥ ८४ ॥
 सूनापष्टान्तरं मन्या वक्रकीलो हुरुदकः ।
 कीलस्तु पुष्यलः शङ्कुर्हिंस्त्रीरो लोहशृङ्खलः ॥ ८५ ॥
 पश्चाच्चरणशङ्कौ तु पङ्क्तीशो घुटिकोऽपि च ।
 कदलिः करिणां केतुः शृङ्गारो गजमण्डनः ॥ ८६ ॥
 स्थासको नक्षत्रमाला कर्णशङ्कौ तु शङ्किलौ ।
 गजोपचारकुशलो वाहितो मलहारकः ॥ ८७ ॥
 आधोरणा हस्तिपका हस्त्यारोहा निषादिनः ।
 तत्प्रधाना महामात्रा आरोहा गजजीवनाः ॥ ८८ ॥
 पादकर्म यतं तेषां यातमङ्कुशवारणम् ।
 वीतं तदुभयं यच्च निस्सारं हयकुञ्जरम् ॥ ८९ ॥
 अश्वस्तुरङ्गस्तुरगो हयः सप्तिस्तुरङ्गमः ।
 शालिहोत्री व्रती कुण्डी प्रोथी वारुः प्रकीर्णकः ॥ ९० ॥
 कुदरो घोटकस्तार्क्ष्यः क्रमणो ग्रहभोजनः ।
 पाकलः परुलः पीतिर्माषाशी हि सविक्रमः ॥ ९१ ॥
 श्रीवृक्षकी वक्षसि चेद्रोमावर्तो मुखेऽपि च ।
 मल्लिकाक्षः सितैर्नेत्रैः कृष्णैरिन्द्रायुधो हयः ॥ ९२ ॥
 पञ्चमद्रस्तु हृत्पृष्ठमुखपार्श्वेषु पुष्पितः ।
 पुच्छोरःखुरपुच्छास्थैः सितैः स्यादष्टमङ्गलः ॥ ९३ ॥
 आजानेयाः कुलीना स्युः पारसीकादयश्च ते ।
 पारसीकादिसंज्ञास्तु पारसीकादिदेशजाः ॥ ९४ ॥

ये तु काम्बोजवाह्नीकवनायुजमुखा हयाः ।
 ते निहीनकुलाः किञ्चित् (पश्चि)मोत्तरदेशजाः ॥ १५ ॥
 निहीनास्त्वब्जलारट्टशम्भला दोषिणः परे ।
 तत्र शृङ्गी शृङ्गपदे मांसबुद्बुदवान् हयः ॥ १६ ॥
 मुसल्यन्यप्रभैकाङ्घ्रिः कराली तु जरुर्ददः ।
 ऋषभः ककुदावर्तो यमो हीनाधिकाङ्गकः ॥ १७ ॥
 इन्द्रवृद्धिस्तु निर्मुष्कः स्त्री सरी तु खुरे त्रिके ।
 कृत्तिकापिञ्जरः स स्याद्यः पृषत्युञ्जपिञ्जरः ॥ १८ ॥
 अश्वानामागमे संज्ञा वर्णिता वर्णहेतवः ।
 सिते द्वौ कर्ककोकाहौ खोङ्गाहः श्वेतपिङ्गलः ॥ १९ ॥
 आनीलः स्यान्नीलकोशः पुङ्गाहः कृष्णवर्णकः ।
 शोणः कोकनदच्छायस्त्रियूहः कपिलो हयः ॥ १०० ॥
 कियाहो लोहितः पीतरक्तस्तूद्रकलाहकः ।
 उराहस्तु मनाक् पाण्डुः कृष्णं जङ्गाद्वयं यदि ॥ १०१ ॥
 पाटलो बोरुखानः स्याद् गर्दभाभः सुरूहकः ।
 हलामश्चित्रलो रेखाऽप्यस्य कृष्णाऽस्ति पृष्ठगा ॥ १०२ ॥
 कलाहस्तु मनाक् पीतः कृष्णः स्याद्यदि जानुनि ।
 खेल्गाहः कर्पलच्छायः पाण्डुवालधिकेसरः ॥ १०३ ॥
 पीतस्तु हरियाः पीतहरिते हरिहालकौ ।
 पीयूषवर्णे सेराहः पङ्गुलः सितकाचसः ॥ १०४ ॥
 सर्व एवान्यसंज्ञाः स्युः कर्काद्याः पुण्ड्रके सति ।
 कोकुराहः खुरुराहो हलुराह इति क्रमात् ॥ १०५ ॥
 कर्काद्याः खुरुराहस्तु फाले रेखा च पृष्ठगा ।
 सरुराहः सेरुराहो द्वौ सेराहे सपुण्ड्रके ॥ १०६ ॥
 अश्वपोतः किशोरः स्याद्वाग्न्यश्वा वडबाऽर्वती ।
 लुठितोऽश्व उपावृत्तः सुकरो दुर्विनीतकः ॥ १०७ ॥
 अह्नाऽश्वगम्यमाश्वीनं त्रिष्वेतेऽश्वतरः पुमान् ।
 स्याद्वेसरो वेगसरो मूकरुण्डौ तु वेसरात् ॥ १०८ ॥
 अश्वा सूतेऽश्वतर्या तु मूकाज्जातः किसिद्रुकः ।
 निगालस्तु गलोद्देशे नासाग्रे प्रोथमस्त्रियाम् ॥ १०९ ॥
 आवर्तो रोमजो देवमणिस्त्वेष निगालजः ।
 कश्यमश्वस्य मध्यं स्यादन्तवेष्टस्तु नालिका ॥ ११० ॥

कालिका दन्तरेखा स्यादन्तच्छिद्रमुखखली ।
 कर्तनं धूलिलुठितं वर्तनं तूपवर्तनम् ॥ १११ ॥
 लोठभूर्मुखरञ्जुस्तु स्यादन्ताल्यवरक्षणी ।
 दामाञ्जनं पादपाशो नासारञ्जुस्तु लालिका ॥ ११२ ॥
 कवियोऽस्त्री खलीनोऽस्त्री पञ्चाङ्गी कविका कवी ।
 प्राक्पादरञ्जुरातालो बका स्याद् द्विग्रहे द्वयोः ॥ ११३ ॥
 पर्याणं स्यात् पल्ययनं वल्गावक्षेपणी कुशा ।
 कशा काम्रा वक्त्रपट्टे तलिका तलसारकम् ॥ ११४ ॥
 पादपुट्यां पादफली प्रक्षरं प्रखरोऽस्त्रियाम् ।
 युग्याशनप्रसेवे तु द्वौ बांक्षाणप्ररोहकौ ॥ ११५ ॥
 आयानं स्यादलङ्कारो ग्रीवाभूषा तु गण्डकः ।
 लवणस्य प्रदानाय कृता लवणलायका ॥ ११६ ॥
 तैलस्य नालिका सूत्रसङ्ग्रहोऽश्वस्य कर्षकः ।
 केशकारक्षौरकारौ नालिवाहस्तु घासिकः ॥ ११७ ॥
 अश्वानां तु गतिर्धारा विभिन्ना सा तु पञ्चधा ।
 आस्कन्दितं धौरितकं रेचितं वल्गितं प्लुतम् ॥ ११८ ॥
 इत्येतेषाञ्च पञ्चानामेकैकं बहुभेदकम् ।
 गत्यर्थास्तद्वदर्थार्थं सर्वे ते बाच्यालङ्काराः ॥ ११९ ॥
 तत्रास्कान्दतकं कोपादिव सर्वैः पदैर्मुहुः ।
 उत्प्लुत्योत्प्लुत्य गमनमुपकण्ठापराभिधम् ॥ १२० ॥
 अथ धौरितकं धौर्यं धौरितं धौरणं च तत् ।
 तच्च कङ्कशिखिक्रोडनकुलानां गतैः समम् ॥ १२१ ॥
 रेचितं स्याद्भारवहं तच्चावक्रगतिर्दुता ।
 वल्गितं बलानं पद्भिर्भेदाश्चाष्टौ यमादयः ॥ १२२ ॥
 प्लुतं तु लङ्घनं पश्चिमृगधर्मेण भिद्यते ।
 यानं सांयात्रिकं युग्यं वाहनं बाह्यधोरणे ॥ १२३ ॥
 योग्यं चास्मिंश्चक्रयुते शताङ्गः स्यन्दनो रथः ।
 वहित्रं वहनं चास्मिंश्चतुरश्रे सकूबरे ॥ १२४ ॥
 दीर्घद्विपक्षवहनमनः क्ली शंकटोऽस्त्रियाम् ।
 प्रवाहिर्ना वृत्तमध्ये पक्षकूबरवर्जिते ॥ १२५ ॥
 देवतार्थो देवरथो युद्धार्थः साम्परायिकः ।
 क्रीडार्थः स्यात् पुण्यरथः कृतः कर्णारथो मृदा ॥ १२६ ॥

कर्णरथं प्रवहणं हयनं रथगर्भके ।
गन्त्री स्त्री कूबरं न स्त्री रथे कम्बलिवाद्यके ॥ १२७ ॥
रथस्तु जयकृजैत्रो यात्रार्थः पारियाणकः ।
रथेऽत्र द्वैपवैयाघ्रौ प्रावृते व्याघ्रचर्मणा ॥ १२८ ॥
वृते रथे पाण्डुभिः स्यात् कम्बलैः पाण्डुकम्बली ।
एवं काम्बलवाखाद्याः कम्बलादिभिरावृते ॥ १२९ ॥
योग्यारथो वैनयिको जैत्रप्रभृतयस्त्रिषु ।
धूः स्त्री धुर्वी यानमुखं युगमीषान्तबन्धनम् ॥ १३० ॥
कस्तम्भि युगमध्येऽस्त्री स्यादक्षश्चक्रधारणम् ।
अक्षक्रीले त्वणिर्न क्ली ध्रुवः कीलोऽप्यनिर्न षण् ॥ १३१ ॥
रथलीडो रथस्यान्तं बन्धुरा तनुकूबरम् ।
रथगुप्तिर्वरूथो ना कूबरो ना युगन्धरः ॥ १३२ ॥
अनुकर्पो रथस्याधोधरणन्दावथानसः ।
युगो द्वितीयः प्रासङ्गः पताका तु ध्वजोऽस्त्रियाम् ॥ १३३ ॥
अस्योच्चूडावचूडौ द्वावूर्ध्वाधोमुखचूडकौ ।
अरि चक्रं रथपदं रथाङ्गं केशवायुधम् ॥ १३४ ॥
स्त्री नेमिनी प्रधिश्चक्रप्रान्ते तुम्बा तु नाभिका ।
अरास्तयोः स्थिता मध्ये रथाङ्गानि त्वपस्कराः ॥ १३५ ॥
शिबिका याप्ययानं स्याद्दोला हेलार्थरूपणम् ।
प्रेङ्खोलनं तु प्रेङ्खोलं प्रेङ्खो रिङ्खोलनाद्यपि ॥ १३६ ॥
आन्दोलनं स्यादान्दोलो दोला स्याद्दोलिकाऽपि च ।
परम्परावाहनं यत्तद्वैनीतकमस्त्रियाम् ॥ १३७ ॥
नियन्ता प्राजिता क्षत्ता यन्ता सूतश्च सारथिः ।
सव्येष्टो दक्षिणेस्थश्च स्यन्दपार्ष्णिसारथिने ॥ १३८ ॥
सेवका युधि योद्धृणां भटा यौधाश्च यौधकाः ।
पदातिपत्तिपादातपदातिकपदाजयः ॥ १३९ ॥
पातिकः पादिकः पट्टो रथिको रथिनो रथी ।
सेनास्थाः सैनिकाः सैन्याः सेनारक्षास्तु सैनिकाः ॥ १४० ॥
पार्ष्णिग्राहास्तु पृष्ठस्थाः साहस्रास्तु सहस्रिणः ।
परिधिस्थाः परिचराः सेनानीर्वाहिनीपतिः ॥ १४१ ॥
दंशिते स्युः कवचित्सज्जसन्नद्धवमिताः ।
आबद्धः पुनरामुक्तः प्रतिमुक्तः पिनद्धवत् ॥ १४२ ॥

काण्डपृष्ठस्वायुधिक आयुधीयोऽस्त्रजीवनः ।
 धन्वी धनुष्मान् धानुष्को निषङ्गयस्त्री धनुधरः ॥ १४३ ॥
 चर्मी शाक्तीकयाष्टीकपारश्वधिककौन्तिकाः ।
 काण्डीरखाङ्गिकाद्याश्च चर्मशक्त्यादिधारिणः ॥ १४४ ॥
 छायाकरश्छत्रधरः पताकी वैजयन्तिकः ।
 पुरस्सरः पुरोगोऽग्रेसरः प्रष्टोऽग्रतस्सरः ॥ १४५ ॥
 पुरोगमः पुरोगामी यस्त्वलं यात्यरीन् प्रति ।
 सोऽभ्यमित्रोऽभ्यमित्रिणोऽप्यभ्यमित्रिय इत्यपि ॥ १४६ ॥
 शूरो वीरश्च विक्रान्तः पटुश्चारभटोऽपि च ।
 अशूरो हतकः क्लीबो जिष्णौ तु जयिजित्वरौ ॥ १४७ ॥
 शक्ये तु जेतुं जय्यः स्याज्जेयो जेतव्यमात्रके ।
 जैत्रो जेता जितो भग्नः कृतहस्तस्तु शिक्षितः ॥ १४८ ॥
 लघुहस्तः सुहस्तश्च कृतास्त्रः कृतपुङ्गवः ।
 सांयुगीनो रणे साधुरत्यन्तीनो भृशं गते ॥ १४९ ॥
 कामङ्गाम्यनुकामीनो जवी तु जवनो जवः ।
 जङ्घालोऽतजवे धीरमन्थरौ मन्दगामिनि ॥ १५० ॥
 स्यादुरस्वानुरसिल ऊर्जस्व्यूर्जस्वलोजितौ ।
 बली प्रबल ओजस्वी वाच्यवद्रथिकादयः ॥ १५१ ॥
 संशप्तकास्तु संग्रामात् समयेनानिवर्तिनः ।
 त्वक्त्रं तु दंशनं वर्म तनुत्रं कवचोऽस्त्रियाम् ॥ १५२ ॥
 माठिः स्त्री जागरो वक्षश्छदः सन्नाहकङ्कटौ ।
 तत्सूत्रकं सूत्रमयं जालिका स्यादयोमयी ॥ १५३ ॥
 नागोदर्युदरत्राणं जङ्घात्राणं तु मत्कुणम् ।
 पटुस्तु लिपिसन्नाहः प्रकोष्ठादौ कृतो यथा ॥ १५४ ॥
 बाहुलं बाहुरक्षा च मर्दनी पादरक्षणी ।
 गोधा तला च न नरौ हस्तन्नो व्यानिवारणे ॥ १५५ ॥
 अङ्गुलित्रे कपी शीर्षत्राणे शीर्षण्यशीर्षके ।
 अधिकाङ्गं सारसनं मध्ये धार्य सकङ्कटैः ॥ १५६ ॥
 सर्वाभिसारः सर्वौघः सर्वसन्नहनार्थकः ।
 न क्ली हेतिः शस्त्रमस्त्रमायुच्छत्रुघ्नमायुधम् ॥ १५७ ॥
 ऋष्टिः खड्गः प्रचारोऽसिर्धर्मपालः प्रजागरः ।
 धर्मो विशसनो देवो मनुष्येष्टः शिवङ्करः ॥ १५८ ॥

श्रीगर्भो विजयः शास्ता कृपाणासङ्गरिष्टयः ।
 कौक्षेयको भद्रसुतो ह्रस्वनिर्वशकस्त्वसिः ॥ १५६ ॥
 स्तुनीदलाभो निखिंशो मण्डलाग्रोऽन्वितार्थकः ।
 चन्द्रहासोऽर्धचन्द्राग्र इली तु करवालिका ॥ १६० ॥
 जम्बूगतेस्तु खड्गाम्बु न्यस्ततैलरुचिर्यदि ।
 वराभोऽनिल परण्डबीजाभपुलकावलिः ॥ १६१ ॥
 हुण्डुतः पुलकैरण्डः सितदीर्घानवस्थिनैः ।
 हरकस्तरवारिः स्त्री यष्टिश्चापि मृदौ पृथौ ॥ १६२ ॥
 कुण्डलो दीर्घनिर्वशो पुलकास्त्वणुराजयः ।
 अथासिपुत्री क्षुरिका शस्त्रिका चाक्षिघेनुका ॥ १६३ ॥
 साऽतिदीर्घा पत्रफला कुट्टन्ती हुलमात्रिका ।
 पट्टसो लोहदण्डो यस्तीक्ष्णधारः खुरोपमः ॥ १६४ ॥
 कण्टकच्छेदनोऽप्येवं द्विमुखश्च भवत्यसौ ।
 प्रासः कुन्तो हाटकस्तु स त्रिकण्टकसंज्ञितः ॥ १६५ ॥
 मिण्डिपालः क्षेपणीयः सृगो दीर्घे महाफले ।
 तोमरोऽस्त्री लोहहुलदण्डे कासूश्च सर्वला ॥ १६६ ॥
 कणयो लोहमात्रोऽथ शङ्कुर्ना शल्यमस्त्रियाम् ।
 वराहकर्णकोऽन्वर्थः क्षुरिकाद्याः हुलामकाः ॥ १६७ ॥
 हुलं द्विफलपत्राग्रं मुनयोऽस्त्यस्य शेखरम् ।
 प्रत्याकारपरीवारौ कोशो मुष्टौ त्सरुः पुमान् ॥ १६८ ॥
 शतघ्नी तु चतुस्ताला लोहकण्टकसञ्चिता ।
 अयःकण्टकसंज्ञा शतघ्न्येव महाशिला ॥ १६९ ॥
 मुसुण्डी स्याद्धारुमयी वृत्तायःकीलसञ्चिता ।
 हस्तिचारो गजत्रासहेतुः शरभसन्निभः ॥ १७० ॥
 देवदण्डोऽरन्निमात्रो दीर्घो मुसलयष्टिकः ।
 दुधणे मुद्गरघनौ परिघः परिघातनः ॥ १७१ ॥
 अस्त्रियौ चापधनुषावासेष्वासौ धनुर्द्वणम् ।
 कार्मुकं धन्व कोदण्डमायुधाम्रथं शरासनम् ॥ १७२ ॥
 कार्मुकं तु चतुर्हस्तं कोदण्डं त्र्यङ्गुलं विना ।
 कामुकात् तु क्रमात् पञ्च विद्यायुधशरायुधे ॥ १७३ ॥
 गौतमं रथायुधकं कोसलं गाण्डिवोऽस्त्रियाम् ।
 पातनं मार्गणं चेति द्विगुणानि यथोत्तरम् ॥ १७४ ॥

उच्चलं ब्रह्मदण्डश्च वैशिखं बिम्बसारकम् ।
 द्विगुणानि क्रमादाद्यं त्वष्टोत्तरशताङ्गुलम् ॥ १७५ ॥
 केतनं पञ्चविंशत्या पलैर्द्वे द्विगुणे परे ।
 करीरपृष्ठं व्यासञ्च सहितं तु शतैस्त्रिभिः ॥ १७६ ॥
 पलानां पञ्चभिस्त्वेषां शतैः स्यात् सहितोत्तरम् ।
 लस्तुको धनुषो मध्यमग्रं लुस्तमटन्यपि ॥ १७७ ॥
 अतिरार्तिः किरिः कोटी ज्या जीवा मौर्विका द्रुणा ।
 तूणी तूण उपासङ्गतूणीरौ विशिखाश्रयः ॥ १७८ ॥
 निषङ्ग इषुधिर्न क्ली पत्री तु विशिखः खगः ।
 पृषत्को रोपणो बाणः कलम्बो मर्मभेदनः ॥ १७९ ॥
 चित्रपुङ्खो वीरशङ्कुः शरो रोध इपुर्न षण् ।
 प्रद्वेलनस्तु नाराच एषणश्चायसे शरे ॥ १८० ॥
 अर्धशल्योऽर्धनाराचः कङ्कपत्रः शिलीमुखः ।
 त्रिभागशल्यनाराचे द्वौ दण्डासनदण्डिकौ ॥ १८१ ॥
 अर्धचन्द्रः क्षुरप्रः स्याद्विकर्णिः कर्णिकारलः ।
 स्नुहीदलफलो भल्लश्चिपाटोऽल्पस्तदाकृतिः ॥ १८२ ॥
 पाददण्डोऽन्वितार्थः स्याद् बाणस्तु गतपत्रणः ।
 तीरी त्वल्पा वेगवती त्वग्बलाः शरजालकाः ॥ १८३ ॥
 अयश्शलाका कूटोऽस्त्री पत्रकूटः सपत्रणः ।
 द्विर्वाविंशत्यङ्गुलिः स्यान्निचोटे द्व्यङ्गुलोत्तराः ॥ १८४ ॥
 स्युश्चोटलिङ्गकस्तालः कुलिको बिम्बसारकः ।
 कर्तरी पुङ्ख आरामं त्वग्रं वाजश्छदावलिः ॥ १८५ ॥
 पत्रणा पक्षरचना धारा शखमुखं फलम् ।
 स्थानानि धन्विनां पञ्च तत्र वैशाखमस्त्रियाम् ॥ १८६ ॥
 त्रिवितस्त्यन्तरौ पादौ मण्डलं तोरणाकृती ।
 अन्वर्थं स्यात् समपदमालीढं तु ततेश्प्रतः ॥ १८७ ॥
 दक्षिणे वाममाकुञ्च्य प्रत्यालीढं विपर्यये ।
 वैहायसञ्च वेधे तु योगावाप उपक्रमः ॥ १८८ ॥
 हस्तावापः शरादानं प्रमाथो लस्तकग्रहः ।
 मुष्ट्यायोजनमादानमिषोर्ज्यायां समूहनम् ॥ १८९ ॥
 वितानं संहितस्येषोः किञ्चिदेव विकर्षणम् ।
 निमित्तग्रहणं लक्ष्यग्रहो बुद्धिदृगादिना ॥ १९० ॥

आकर्णकर्षणं ' पूर्णमायामं त्वङ्गुलाधिकम् ।
 ततोऽप्यर्धाङ्गुलाकृष्टसन्धानं तेजनं न ना ॥ १६१ ॥
 मुष्टिमान्धं निर्हरणं व्यवच्छेदस्तु मोक्षणम् ।
 कैराती गतिरूर्ध्वाऽधःप्रकर्षस्तु गतेर्लघुः ॥ १६२ ॥
 दृढदुष्करचित्राणि कर्माणि हरणानि च ।
 मुचुटी सिंःकर्णी च पताका चेति मुष्टयः ॥ १६३ ॥
 लक्षं तु लक्षणं लक्ष्यमभिसन्धानमासिकम् ।
 वेध्यं शरव्यं न नरि श्रमस्थानं खलुरिका ॥ १६४ ॥
 योगाभ्यासः परिचयो बाणाभ्यास उपासनम् ।
 शक्त्याद्यस्त्रं पाणिमुक्तं यन्त्रमुक्तं शरादिकम् ॥ १६५ ॥
 मुक्तामुक्तं धृतं मुक्तं नागपाशादिदीर्घकम् ।
 अमुक्तं छुरिकादि स्यादिति शस्त्रं चतुर्विधम् ॥ १६६ ॥
 धौते निशातं निशितं दणुतं तेजितमर्थवत् ।
 फलं चर्ममयं चर्म फलकं खेटकं समम् ॥ १६७ ॥
 अन्तर्लोहेन बद्धान्ते फलान्ते स्याद्वलाहका ।
 हस्तिकर्णः परोवण्टः फली फलकिकाल्पिका ॥ १६८ ॥
 कावाटो लघुकाष्ठः स्यात् सयष्टिर्यष्टिवारणः ।
 कटिका सूत्रसंस्थूता शलाकाः परिमण्डलाः ॥ १६९ ॥
 अङ्गुनं सैव वेत्राद्यैः सङ्ग्राहो मुष्टिरेषु या ।
 लोहाभिसार उद्योगे राज्ञां नीराजनाविधिः ॥ २०० ॥
 यत्सेनयाऽभिनिर्घाणं पत्युस्तदभिषेजनम् ।
 आसारस्तु प्रसरणी प्रचक्रं चलितार्थकम् ॥ २०१ ॥
 विरतं तु भटोद्योगोऽभिक्रमो यानमभ्यरीन् ।
 वीरपाणं तु यत्पानं वृत्ते भाविनि वा रणे ॥ २०२ ॥
 नासीरोऽवग्रयानं स्यादवस्कन्दस्तु सौप्तिकः ।
 मृधमास्कन्दनं युद्धं समिकं साम्परायिकम् ॥ २०३ ॥
 आयोधनं रणं सङ्ग्रहं प्रथनं प्रविदारणम् ।
 सम्प्रहारसमाघातकलिसंस्फोटसंयुगाः ॥ २०४ ॥
 अभिमर्दाभिसम्पातप्रघाताभ्यागमाहवाः ।
 समुदायः समुदयः सम्मर्दः सङ्गरः स्पशः ॥ २०५ ॥
 संग्रामः समरोऽस्त्री स्त्री संयुदायुष युत् समित् ।
 वीराशंसनमाजैर्भूर्धोरा लोलो महारणम् ॥ २०६ ॥

नियुद्धं बाहुयुद्धं स्यादवमर्दस्तु पीडनम् ।
 अभ्यवस्कन्दनं त्वभ्यासादनं स्वलितं चलम् ॥ २०७ ॥
 अविषादो धृतिर्धैर्यमवष्टम्भस्तु सौष्टवम् ।
 वीराणां यद्रेणे नृत्तं तस्मिन् वीरजयन्तिका ॥ २०८ ॥
 प्रसभोऽस्त्री बलात्कारो हठश्च विजयो जयः ।
 प्रतीकारो वैरशुद्धिरपदानं पराक्रमः ॥ २०९ ॥
 शौर्यं वीर्यमथ स्थाम बलं शुष्म तरः सहः ।
 नाशस्त्वपक्रमोऽपायो विप्रयाणं पलायनम् ॥ २१० ॥
 सन्द्रवोद्द्रावसन्द्रावप्रदावद्रवविद्रवाः ।
 विशस्तु घात उन्मथो विशरः प्रमथो वधः ॥ २११ ॥
 निर्वासनं निहननं निबर्हणनिषूदने ।
 निस्तर्हणं निशरणं निकारणनिशुम्भने ॥ २१२ ॥
 निर्वापणं निरसनं निर्ग्रन्थननिर्हिसने ।
 प्रमापणं प्रमथनं प्रवासनमपासनम् ॥ २१३ ॥
 परासनं विशसनं मारणं प्रतिघातनम् ।
 उद्वासनं प्रशसनं क्षणनं परिवर्जनम् ॥ २१४ ॥
 उज्जासनं संज्ञपनं काथनं प्रविसारणम् ।
 व्यापादनं च हिंसा च कदनं सङ्कुलो वधः ॥ २१५ ॥
 रुण्डोऽशिराः कबन्धोऽस्त्री कुणपस्तु शवोऽस्त्रियाम् ।
 शवयानं कटः खाटिश्रिता चित्या चितिः स्त्रियाम् ॥ २१६ ॥
 अरुः क्षतं ना क्षणितुर्ब्रणोऽपीमोऽपि न स्त्रियौ ।
 किणो रूढं व्रणस्थाने तुमुलं रणसङ्कुलम् ॥ २१७ ॥
 जितकाशी जितरणः कान्दिशीको भयद्रुतः ।
 अपराद्धशरोऽसौ स्याद्यस्य लक्ष्याच्छ्रुतः शरः ॥ २१८ ॥
 पराजितः पराभूतः प्रणष्टस्त्वगृहीतदिक् ।
 प्रस्कन्नपतितौ ध्वस्ते मूढे मूर्खालमूर्च्छितौ ॥ २१९ ॥
 परासुरपसम्पन्नः प्रमीतः संस्थितो मृतः ।
 जीवो जीवन् किणादूर्ध्वं त्रिषु जीवस्तु जीवितम् ॥ २२० ॥
 आयुर्जीवितकाले ह्ये जीवातुर्जीवितागदः ॥ २२० ॥
 इति भगवता यादवप्रकाशेन ।वरवितायां वैजयन्त्या
 भूमिकाण्डे क्षत्रियाध्यायः ॥ ७ ॥

वैश्याध्यायः ॥ ८ ॥

अर्यो भूमिस्पृशो वैश्या ऊरव्या ऊरुजा विशः ।
 आजीवो जीविका वृत्तिर्वाता वर्तनजीवने ॥ १ ॥
 मृतं क्ली याचितं भैक्षममृतं स्यादयाचितम् ।
 उञ्छो धान्यश आदानं कणिशाद्यर्जनं सिलम् ॥ २ ॥
 ऋतं तदुभयं स्त्री तु कृषिः क्ली प्रमृतानृते ।
 सत्यानृतं तु वाणिज्यं वणिज्या वणिजा स्त्रियौ ॥ ३ ॥
 पाशुपाल्यं जीववृत्तिः स्यादृणं पर्युदञ्चनम् ।
 तदवृद्धिकमुद्धारः कुसीदं तु सवृद्धिकम् ॥ ४ ॥
 वार्धुष्यं वार्धुषं धान्यवृद्धिर्वृद्धिः पुनः कला ।
 सा कायिकान्वहं देया प्रतिमासं तु कालिका ॥ ५ ॥
 कारिका तु स्वयं दृष्टा चक्रवृत्तिस्तु वृद्धिजा ।
 परिवर्तेन निर्वृत्तं वस्तु स्यादापमित्यकम् ॥ ६ ॥
 सेवा श्ववृत्तिरेताश्च याजनाद्याश्च वृत्तयः ।
 त्रिष्वालेखात् कुडुम्बी तु क्षेत्राजीवः कृषीवलः ॥ ७ ॥
 कर्षकोऽथ द्वैगुणिको वृद्धयाजीवः कुसीदिकः ।
 वार्धुषी स्याद्वार्धुषिके प्रयोक्त्युत्तमर्णकः ॥ ८ ॥
 गृहीतर्यधमर्णः स्यादाप्तः प्रत्ययितः समौ ।
 मध्यस्थः प्राशिनकः साक्षी मूली स्याद्दुष्टसाक्षिणि ॥ ९ ॥
 कूटसाक्षी मृषासाक्षी प्रतिभूर्लग्नकोऽन्तरः ।
 अभियोक्ता शिरोवर्ती शिरस्थोऽथाभियुक्तके ॥ १० ॥
 सन्दंशितोऽभिशास्तश्च वसुराक्षारिकोऽपि च ।
 सदेवासत्कृतं सभ्यैस्तिरितं साक्षिणा तु चेत् ॥ ११ ॥
 अनुशिष्टमथो लेखो लेख्यं दिव्यं तु दैविकम् ।
 न्यासस्तूपनिधिस्थाप्यनिक्षेपा न्यस्तकोऽस्त्रियाम् ॥ १२ ॥
 सदस्या देशिकाः स्थेयाः सभास्ताराः सभासदः ।
 सभ्याः सामाजिकाश्चाथ गोष्ठ्यास्था परिषत् सभा ॥ १३ ॥
 समञ्या तारणी संसद् घटा स्थानं सदोऽप्यना ।
 द्रष्टरि व्यवहाराणां प्राङ्वावपाकोऽक्षदर्शकः ॥ १४ ॥
 न्यायोऽक्षो व्यवहारोऽथ सम्प्रश्नः सम्प्रधारणम् ।
 समर्थनं च संस्था तु मर्यादा धारणा स्थितिः ॥ १५ ॥

अर्थिनो वचनं भाषा स्यात् प्रत्यर्थिन उत्तरम् ।
 कारणं त्वभ्यवस्कन्दः प्रत्यवस्कन्द इत्यपि ॥ १६ ॥
 अवस्कन्दश्च भाषार्थमङ्गीकृत्य विशेषीः ।
 केदारः केदरः क्षेत्रमुर्वरा सर्वसस्यभूः ॥ १७ ॥
 भूमिच्छिद्रं कृष्ययोग्या प्रहतं नालमुत्थितम् ।
 खिलं त्वप्रहतं स्थानमूषवत्यूषरेरिणौ ॥ १८ ॥
 मौद्गीनकौद्रवीणाद्याः क्षेत्रे मुद्रादिसम्भवे ।
 यन्यत्रैह्यशालेयषष्टिक्याः सयवक्यकाः ॥ १९ ॥
 यवादेस्तिलतैलीनौ तिलस्योमाणुभङ्गतः ।
 माषाच्चैवं द्विरूपत्वं शाकाच्छाकिनशाकटौ ॥ २० ॥
 एवं वास्तुकवार्ताकबालकाशेक्षुमूलकात् ।
 द्रोणाढकादिवापेषु द्रौणिकाढकिकादयः ॥ २१ ॥
 खारीवापे तु खारीकं हल्यं सीत्यं च कृष्टके ।
 तृतीयाकृतं त्रिसीत्यं त्रिहल्यं त्रिगुणाकृतम् ॥ २२ ॥
 त्रिष्कृष्ट एवं द्विष्कृष्टे शम्बाकृतमिहाधिकम् ।
 बीजाकृतं तूमकृष्टं प्रहतप्रमुखास्त्रिषु ॥ २३ ॥
 लोष्टोऽस्त्री दरिणिर्न क्ली लेष्टुर्ना मृत्तु मृत्तिका ।
 पुरीषं मृत्तिकाचूर्णं मृत्सा मृत्स्ना प्रशस्तमृत् ॥ २४ ॥
 मरुका त्विष्टकाया विद्वषस्तु क्षारमृत्तिका ।
 धूलिः स्त्रियां रजः पांसू रेणुः पुंस्यथ कर्दमे ॥ २५ ॥
 दारिपत्परिपत्पक्वचिकिलाश्च निषद्वरः ।
 शादावकीलजम्बाला वप्रोऽस्त्री पालिराल्यपि ॥ २६ ॥
 क्षेत्रमध्ये कृता साल्पा स्थाला स्यादथ लाङ्गलम् ।
 हलं गोदारणं सीरमीषा सीरादिदण्डकः ॥ २७ ॥
 निरीषः कृषकः फालः शम्या तु युगकीलकम् ।
 योक्त्रं तु योत्रमाबन्धः खनित्रमवदारणम् ॥ २८ ॥
 गोदारणं तु कुन्दालमग्निः स्त्री चणूस्तु तन्मुखे ।
 प्रतोदः प्राजनं तोत्रं कोटिशो लोष्टमस्त्रनः ॥ २९ ॥
 दात्रं लवित्रमसिदो योऽस्य मुष्टिः स वण्टकः ।
 स्यात्समीकरणं मत्यं सीता लाङ्गलपद्धतिः ॥ ३० ॥
 न स्त्री मेथिः खले पाली खलधानं पुनः खलः ।
 ग्रीहिर्वरेणुको बीव्यो धान्यं सस्यं लवेटिका ॥ ३१ ॥

ब्रीहयः स्तम्बकरयः शालयः श्वेततण्डुलाः ।
 सुगन्धिको महाशाली रक्तशालिः सलोहितः ॥ ३२ ॥
 सांवत्सरः कृष्णशालिर्बालकश्चावरोहकः ।
 श्वेतशालोऽपौरशूरचपलाः करसूकरौ ॥ ३३ ॥
 षष्टिको गर्भपाकी स्यात् प्रवरः शालियष्टिकः ।
 कलापकास्तु कलमा हायनास्तु महाबुसाः ॥ ३४ ॥
 माषस्तु मलदो नन्दी घरी बीजवरो बली ।
 वृण्यो महावृषो गुच्छा कुलिङ्गाटी फलाङ्कुरा ॥ ३५ ॥
 मुद्गस्तु प्रथनो लोभ्यो बलाङ्गो हरितो हरिः ।
 पीतेऽस्मिन् वसुखण्डीरप्रवेलजयशारदाः ॥ ३६ ॥
 सुराष्ट्रचीनचक्षुष्या हरिमन्थार्धरूपकौ ।
 कृष्णे प्रवरवासन्तौ हरिमन्थजशिम्बिकौ ॥ ३७ ॥
 वनमुद्गे तु वरकनिगूढककुलीमकाः ।
 खण्डी च राजमुद्गे तु मरिष्टकमयष्टकौ ॥ ३८ ॥
 जर्तिलोऽरण्यजर्तिलो जालकश्चूलिकस्तिलः ।
 कृष्णेऽस्मिस्तिलके (षण्डे) पिङ्गपेजौ तिलात्परौ ॥ ३९ ॥
 तिलपुष्पं वज्रपुष्पं मसुरस्तु मसूरकः ।
 मङ्गल्यं पृथुसूप्यश्च ब्रीहिकङ्को मसूरिका ॥ ४० ॥
 कदम्बकस्तु शुभकः सर्षपोऽस्मिन् पुनः सिते ।
 त्रिष्टुभभ्रातरक्षोष्णाः शठः सिद्धार्थतोटकौ ॥ ४१ ॥
 पक्तिका त्रिष्टुभा चास्मिन् गौरेऽथो राजसर्षपे ।
 क्षुधा क्षुधाभिजननस्त्वाष्ट्रको राजिकासुरी ॥ ४२ ॥
 वंशवर्णे कृष्णवर्णः संवर्तो वातुलश्चणः ।
 कलायः स्यात् कालपूरः खण्डिकः कालपूरकः ॥ ४३ ॥
 पूरकोऽप्योलहा जाड्यो वर्तुलेऽत्र सतीनकः ।
 खुडारे त्रिपुटः खेलौ रङ्गुटी तु हरेणुकः ॥ ४४ ॥
 स्नेहपूरे तु फलकः कर्षायौ पाकचूडकौ ।
 सुवर्चलामसृण्यौ च क्षुमा चोमाऽप्यतस्यपि ॥ ४५ ॥
 खल्वे तु पवनिष्पावौ शिम्बिकाऽस्य प्रियैलिका ।
 अलसान्द्रे राजमाषो निष्पावः श्वेतशिम्बिका ॥ ४६ ॥
 काकाण्डः स्याच्चोदनिका कृष्णशिम्बिर्विचक्षणा ।
 कृष्णवृन्ते खलकुलं ताम्रवृन्तः कुलस्थकः ॥ ४७ ॥

प्रचूडकः कफहरी प्रवृत्तिश्च कुलुत्थिका ।
 आढकी तुवरी वल्ला सौराष्ट्री करवीरिका ॥ ४८ ॥
 पतङ्गना च पृथ्वी सा वर्णा स्यात् पाटलिङ्गिका ।
 छत्रा कुस्तुम्बरी धान्या धन्या धाना धनीयिका ॥ ४९ ॥
 कुमारी मुसली वंश्या गुडूची कटुकैषणा ।
 सुचरित्रा च धन्याकधन्येयकतकानि च ॥ ५० ॥
 कुस्तुम्बुरु च धान्यं च भृङ्गा स्यान्मातुलानिका ।
 यवे रूढो दीर्घशूकः शितशूकः महाबुसः ॥ ५१ ॥
 आरूढश्च पवित्रश्च याज्ञिकोऽश्वप्रियोऽपि च ।
 महायवे प्ररूढोऽल्पे वनाशोऽतियवोऽपि च ॥ ५२ ॥
 यावके बलकुल्माषौ यवके तोयपर्णिका ।
 गोधूमस्तु म्लेच्छभोज्यः सुमनः श्लेष्मलो गुरुः ॥ ५३ ॥
 शतपर्वा बहुवक्रः कोद्रवे कोरदूषकः ।
 बालनाटकाट्यालौ वरकः कूरदूषकः ॥ ५४ ॥
 विरूक्षकोद्रबोभालमदनाः वनकोद्रवे ।
 चिककाणकङ्गुनी कङ्गुः प्रियङ्गुः पीततण्डुला ॥ ५५ ॥
 शीतकङ्गुस्तु मुसुटी पीतकङ्गुस्तु मागवी ।
 श्यामकङ्गुस्तु मधुका यवनालस्तु जोनलः ॥ ५६ ॥
 जूर्णोद्द्वयो देवधान्यं जोभाला बीजपुष्पिका ।
 नीवारस्तु वृषावाहः प्रतीचो मुनिसोवतः ॥ ५७ ॥
 अव्यादा लोलिका सेव्या जलजा तृणधान्यकम् ।
 श्यामाको नीलपुष्पः स्यात् स्मयाकश्च मुनिप्रियः ॥ ५८ ॥
 स्त्री काककङ्गुश्रीनः स्यात् तृणकोलोऽप्युदारकः ।
 गर्भुत् पुनर्गर्भुटिका घुलुञ्छस्तु गवीधुका ॥ ५९ ॥
 व्योतिष्मती सुलवणा गोजिह्वा भक्षिणी शिवा ।
 गुन्द्रा कुत्रफला गुच्छा क्षेत्रिया बालनायिका ॥ ६० ॥
 रूक्षणीया जन्तुफला गवेषुश्च गवेषुका ।
 गाङ्गेरुकी नागबला ऋषा ह्रस्वगवेषुका ॥ ६१ ॥
 गोरक्षतण्डुलश्चाथ शाको मर्कटकः समौ ।
 माषादयः शमीधान्ये शूकधान्ये यवादयः ॥ ६२ ॥
 कोद्रवाद्याः कुधान्यानि ब्रीहयः शालिकादयः ।
 स्तम्बे गुचक्षुषौ काण्डे नाली त्रय्यफला तु सा ॥ ६३ ॥

पलालोऽस्त्री कर्णिका स्त्री पूलोऽस्त्री तृणपञ्चिका ।
 कडङ्गरो बुसोऽथ स्यात् कणिशं धान्यमञ्जरी ॥ ६४ ॥
 पीनकोशी शमी शिम्बा तीक्ष्णाग्रे शूकमस्त्रियाम् ।
 धान्यराशिस्तु बलजा वरण्डस्तृणसञ्चयः ॥ ६५ ॥
 गृहार्थोऽसौ कपोलः स्त्री विक्षिप्तः खस्तरो ह्यसौ ।
 समौ प्रयामनीवाकौ क्रपुकात्प्राक् परे त्रिषु ॥ ६६ ॥
 ऋद्धमावसितं धान्य पूतं तु बहुलीकृतम् ।
 खलपूः स्याद्बहुकरश्छादिपेयं छदिस्तृणम् ॥ ६७ ॥
 कायिकः क्रयिकः क्रेता विपूर्वाः क्रेयवस्तुदे ।
 क्रये प्रसारितं क्रय्यं क्रेयं क्रेतव्यमात्रकम् ॥ ६८ ॥
 विक्रेयं पणितव्यं च पण्येऽथ क्रपुकः क्रयः ।
 भेटकः प्रक्रयः क्रेणी विक्रयो विपणः पणः ॥ ६९ ॥
 वस्नोऽर्घोऽवक्रयो मूल्यं बन्धः प्रणय आधिकः ।
 नीवी परिपणं मूलं धनं लाभोऽधिकं फलम् ॥ ७० ॥
 परिवर्तो विनिमयो वैमेयो निमयोऽपि च ।
 सत्यङ्कारः पुनः सत्याकृतिः सत्यापनं च तत् ॥ ७१ ॥
 पण्याजीवः सार्थवाहो नैगमो वाणिजो वणिक् ।
 वैदेहकः प्रापणिकः क्रयविक्रयिकोऽपि च ॥ ७२ ॥
 वितपोऽर्थः स्वापतेयं रिक्तं पृक्तं धनं वसु ।
 वित्तं च द्रविणं द्युम्नं हेमरूप्यात्मकं तु तत् ॥ ७३ ॥
 अकुप्यं कुप्यमन्यत् स्याद्भूष्यं तद्द्वयमाहतम् ।
 कोशमस्त्री हिरण्यं च हेमरूप्यं कृताकृतम् ॥ ७४ ॥
 ओषध्यो जातिमात्रे स्युरजातौ सर्वमौषधम् ।
 स्त्री शुण्ठिरूषणं विश्वभेषजं सिंहलं कटम् ॥ ७५ ॥
 शृङ्गिवेरं महाकन्दं हंसच्छत्रं कलापकम् ।
 पिप्पली मागधी शौण्डी वृषलं चोषणा बला ॥ ७६ ॥
 श्यामोपकुल्या वैदेही ग्रन्थिनी तीक्ष्णतण्डुला ।
 जालिनी तण्डुला तन्वी काल्यम्बष्ठा मनोहरी ॥ ७७ ॥
 कपिवल्त्यां कोलबल्ली गण्डीरी हस्तिपिप्पली ।
 काण्डी वसीरकाण्डीरौ गृहकाण्डः शिरः पुमान् ॥ ७८ ॥
 मरीचं तु विरावृत्तमुषणं धर्मपत्तनम् ।
 (मरिचं) पलितं श्यामं वेङ्गनं पेन्नकं कटु ॥ ७९ ॥

लोहाख्यं श्यामवल्ली च श्यूषणं (तूषणादिकम्) ।
 कावेरं त्रिकटु व्योषमप्यं कोलं कटूत्कटम् ॥ ८० ॥
 ग्रन्थिकानलचव्यैस्तु चतुष्पञ्चषड्वषणम् ।
 चव्यं तु चविकं कोला भार्गी पद्मा च विष्टिका ॥ ८१ ॥
 त्रिफला तु मदोदका भूतसारी फलत्रिका ।
 बलकाली बलारोहा चित्रकस्त्वग्निसंज्ञकः ॥ ८२ ॥
 पञ्चकोलं कणाशुण्ठीचव्यग्रन्थिकचित्रकाः ।
 अजाजी तु जया दीप्यो जीरको जीरणः सितः ॥ ८३ ॥
 मागधश्चाथ सूक्ष्मोऽसौ कणजीरण ओसरः ।
 अग्निसन्धो हृद्यगन्धः सुगन्धिः कालिका कणा ॥ ८४ ॥
 कृष्णे तु जीरके पृथ्वी पृथुः कालोपकुञ्चिका ।
 सुषवी कारवी फारी पृथ्विका पृथुशालिका ॥ ८५ ॥
 कटुः कटुम्भराऽशोका रोहिणी कटुरोहिणी ।
 कृष्णभेदी मत्स्यपित्ता चक्राङ्गी शकुलादनी ॥ ८६ ॥
 निष्कुट्यां चन्द्रबालैला पृथ्वीका त्रिदिवाऽत्र तु ।
 सूक्ष्मायां त्रिपुटा कुन्तिस्तुत्थोपकुञ्चिका ॥ ८७ ॥
 कोराङ्गी नन्दिनी शाला कलुषी संयतोऽपि च ।
 काश्मीरं पौष्करे मूले पद्मपत्रं च पुष्करम् ॥ ८८ ॥
 अव्यथाऽतिचरा पद्मा चारटी पद्मचारिणी ।
 जन्या जतूका रजनी जतुकृष्णकवर्तिनी ॥ ८९ ॥
 शृङ्गी विषा प्रतिविषाऽतिविषोपविषाऽरुणा ।
 शिशुत्रं श्वेतमरिचं त्वक्क्षीरा वंशरोचना ॥ ९० ॥
 पद्मोत्तरं वह्निशिखं महारजतमित्यपि ।
 कुसुम्भे पिप्पलीमूले ग्रन्थिकं चटिका शिरः ॥ ९१ ॥
 बर्हिपुष्पे ग्रन्थिपर्णं स्थौणेयं कुक्कुरं शुक्रम् ।
 शतपर्व च मित्रञ्च कमलञ्च शिलञ्च तत् ॥ ९२ ॥
 समृद्धिः प्राणदा सिद्धिर्लक्ष्मीः सर्वजनप्रिया ।
 ऋश्यप्रोक्ता श्रोत्रकान्ता श्रावणी हस्तिपादिका ॥ ९३ ॥
 ऋषिः सृष्टा वृषा वृष्या हृद्या योव्या युगाह्वया ।
 अथ वृद्धिर्बोधनीया महाश्रावणिका बुधा ॥ ९४ ॥
 हरेणू रेणुका कौन्ती कपिला भस्मगन्धिनी ।
 पलावालुकमैलेयं सुगन्धि हरिवालुकम् ॥ ९५ ॥

वालुकं चाथ शैलेयं वृद्धं गिरिशिलाह्वयम् ।
 कालानुसार्य पाषाणपुष्पं शितशिवं शिवम् ॥ ६६ ॥
 क्रिमिघ्नस्तुण्डुलो वेङ्गममोघा चित्रतण्डुला ।
 विडङ्गोऽस्त्री सुगन्धा तु सुरसा गन्धनाकुला ॥ ६७ ॥
 नाकुली सुवहा राक्षा छत्राकी सर्वलोचना ।
 गन्धिनी स्यात्तालपर्णी दैत्या गन्धकुटी सुरम् ॥ ६८ ॥
 कुष्ठं वाप्यं पारिभाण्यं रोगाख्यं पाकलोत्पले ।
 व्यालायुधं व्याघ्रनखं करञ्जं चक्रकारकम् ॥ ६९ ॥
 सुषिरा विद्रुमलता कपोताङ्घ्रिर्नटी नली ।
 जटिला लोमशी मांसी तपस्विन्यामिषी जटा ॥ १०० ॥
 धमन्यञ्जनकेश्यौ तु हनुर्हृद्विलासिनी ।
 अपि शुक्तिः खुरः शङ्खो नखं कालदलं समाः ॥ १०१ ॥
 अजमोदा तूष्पगन्धा ब्रह्मदर्भा यवानिका ।
 कारवी च खराश्वोष्ट्रा दीप्यका लोचमस्तकः ॥ १०२ ॥
 मधुः क्लीतकं यष्टिमधुका मधुयष्टिका ।
 लवङ्गं देवकुसुमं श्रीसंज्ञं च बरालकम् ॥ १०३ ॥
 त्वक्पत्रं तु त्वचं चोचं वराङ्गं भृङ्गमुत्कटम् ।
 मृगनाभिर्मृगमदो नगः कस्तूरिकाऽपि च ॥ १०४ ॥
 घनसारस्तु कर्पूरः सिताङ्गो हिमवालुका ।
 चन्द्रनामानि चाथ स्यात् तक्कोलं कोलकं परम् ॥ १०५ ॥
 अपि कोशफलं फालं कार्पासकृतमालकौ ।
 जातीकोशं कोशफलमथागर नृपार्हकम् ॥ १०६ ॥
 लोहाख्यं कृमिजं भृङ्गं जोङ्गकं जाङ्गलं मतम् ।
 वंशकं वंशिकं शीर्षं प्रकरं मृदुलं लघु ॥ १०७ ॥
 वनमायः पुरमदः काकतुण्डो वनद्रुमः ।
 कालागरु तु मङ्गल्या मल्लिकासमगन्धि चेत् ॥ १०८ ॥
 श्रीवेष्टः पायसं श्रयाख्यं श्रीवासो रक्तशीर्षकः ।
 वेष्टः श्रीवत्सपिण्याको दधिश्च सरलद्रवे ॥ १०९ ॥
 वृकधूपश्च तूणस्तु पिण्डकश्चपलश्चलः ।
 कप्याख्यः कपिलः सिंहः कृत्रिमः क्षेत्रिको वरः ॥ ११० ॥
 तुरुष्कः पावनश्चाथ सर्ज्जनो लालनो रसः ।
 बहुरूपो यक्षधूपोऽप्यरालोऽप्यथ कृत्रिमे ॥ १११ ॥

वृकधूपोऽङ्गुलालस्तु महिषाक्षः पलङ्कषः ।
 चन्दनोऽस्त्री मलयजो भद्रश्री रोहणद्रुमः ॥ ११२ ॥
 श्रीखण्डो गन्धसारश्च ताम्रसारं तु चन्दनम् ।
 पीतचन्दनमर्केष्टं गोशीर्षं हरिचन्दनम् ॥ ११३ ॥
 किरातजं बला हार्या पिञ्जनं तैलपर्णिकम् ।
 तथा कुचन्दनं पीतदारु रक्ते तु चन्दने ॥ ११४ ॥
 पत्राङ्गं रञ्जनं सेव्यं धूर्तमैरावतं लसम् ।
 कुचन्दनं जघन्यञ्च रक्तं च तिलपर्ण्यपि ॥ ११५ ॥
 कुङ्कुमं घुसृणं वर्ण्यं रक्तं लोहितचन्दनम् ।
 करटं चितकावेरं गौरवं वासनीयकम् ॥ ११६ ॥
 काश्मीरजं पुष्परजः सङ्कोचं पीतनं वरम् ।
 घोरं चाग्निशिखं चापि जपापुष्पं प्रियङ्गु च ॥ ११७ ॥
 नागोद्भवं तु सिन्दूरं कुङ्कुमेन समप्रभम् ।
 गवलं माहिषं शृङ्गं शशीर्षं शशलोमनि ॥ ११८ ॥
 अन्धिजे लवणे खण्डं त्रिकूटं त्रिकुटं कुटम् ।
 भोजनीयं कटकटमणु प्रवरवारिजे ॥ ११९ ॥
 अक्षीवं बिसिरं सेव्यं सैन्धवं तु नदीभवम् ।
 माणिमन्थं शितशिवं नादेयं वेधकं पटु ॥ १२० ॥
 विशुन्थलवणं सङ्गं सिन्धि सिन्दूद्भवं मुखम् ।
 सम्भरी पुनरेतद्द्रौमकं तु रुमाभवम् ॥ १२१ ॥
 वस्नं चाथो भूलवणं कनिष्ठं पाक्यमुद्भिदम् ।
 क्षुद्रकं पांसुलवणं कुप्यं पानीयसम्भवम् ॥ १२२ ॥
 ऊषमूषरजं क्षेप्यं पांशुजं यवनं पटु ।
 शूलिका तु महाजाली वेष्टावारं महाविडम् ॥ १२३ ॥
 विडं तु पाक्यं बहुलं कृत्रिमद्राविणासुराः ।
 घटिकालवणं तृणं विडवद्धनकालकम् ॥ १२४ ॥
 सौवर्चलं तु रुचकं दुर्गन्धं शूलनाशकम् ।
 अक्षं तादर्यं रुचिष्यं च तिलकं त्वत्र कृष्णके ॥ १२५ ॥
 सौवर्चलं द्रवस्तु स्याज्जारणं लोहितोऽब्धियाम् ।
 दशेत्थं लवणानि स्युरथोपलवणास्त्रयः ॥ १२६ ॥
 तत्र क्षारो यवक्षारो निपीती कासनुद्वरः ।
 श्वेतक्षारस्तीक्ष्णरसो विपाकी च स तु द्विधा ॥ १२७ ॥

यवाप्रजो यावशूकस्तत्रान्त्यो बहुसारकः ।
 रसाह्व्यो रसको योगी पत्रकः पत्रसारकः ॥ १२८ ॥
 वीज्योऽसुवर्चिका क्षारः कापोतः सुखवर्चकः ।
 स्नुघ्निका स्वर्जिका स्वर्जियोगवाही सुवर्चिका ॥ १२९ ॥
 टङ्कणस्तु क्रामणको लोहसंश्लेषकः कटुः ।
 रसयोनिः पावनको मालतीतीरसम्भवः ॥ १३० ॥
 परशुः शस्त्रकण्टकः शस्त्रक्षारो महाबलः ।
 सहस्रवेधि बाह्लीकं जतुकं हिङ्गु रामठम् ॥ १३१ ॥
 पत्रेऽस्य करवी बाष्पी पृथ्विका कारवी पृथुः ।
 तिनृणीके तु वृक्षाम्लं चुक्रं शुक्ती रुचिः स्त्रियाम् ॥ १३२ ॥
 सहस्रवेधी चुक्रोऽम्लवेतसः शतवेध्यपि ।
 गूथः क्षारस्य विकृतौ मत्स्यण्डी खण्डशर्करा ॥ १३३ ॥
 फाणितं क्षुद्रकं खण्डं न स्त्रयथो शर्करा सिता ।
 मधूलं तु मधुनं स्त्री मधुकं तत्पुरातनम् ॥ १३४ ॥
 भ्रामरं तु भ्रमरकं क्षौद्रं सारधमाक्षिके ।
 अन्वर्थं पौत्तिकं दालं दद्रुजं रूक्षवालुकम् ॥ १३५ ॥
 औदालकं तु शालाकं विषजिन्मधुराम्लकम् ।
 छात्रं सर्वौघमत्यर्थस्वाद्विमा मधुजातयः ॥ १३६ ॥
 मदनस्तु मधूच्छिष्टं स्नेहोऽस्त्री पिच्छिले रसे ।
 स्नेहे तिलानां तैलं स्यादन्येषां नामपूर्वकम् ॥ १३७ ॥
 घृतमाज्यं हविः सर्पिः कौम्भं त्वाज्यं दशान्दिकम् ।
 हैयङ्गवीनं पीथं च नवनीतं तु तक्रजम् ॥ १३८ ॥
 दधि विप्रप्रियं हृद्यं क्षीरजं श्रीघनं गुरु ।
 स्थूलं श्वेतं च मङ्गल्यं कद्वारः शण्डगोरसौ ॥ १३९ ॥
 सब्जावने तूपमात्रे प्राङ्मन्दात् सर्जकं दधि ।
 मन्दन्तु मण्डजातं तद् बालजातं तु बालकम् ॥ १४० ॥
 अम्लजुण्डी तु गर्भात् प्राग्गर्भस्तु सुखबन्धनम् ।
 वलीमुखं तु गाढास्यं तत्स्थं तु सशरं दधि ॥ १४१ ॥
 छिन्नं दधि ब्रुसं रूक्षं खलं सेव्यं च निशारे ।
 बहुसूदनमप्यस्मिन् द्रप्सं स्यादघनं दधि ॥ १४२ ॥
 पत्रलं चाथ पक्वं स्यात् सब्जातं पयसः शृतात् ।
 धुक्षिमं तूदघृतस्नेहान्मथितान्तु प्रमाथितम् ॥ १४३ ॥

तक्रपिण्डं चाथ मस्तु प्राग्राढं दधिमण्डके ।
 आतञ्चनं सञ्जावनं प्रतीवापश्च मूतकम् ॥ १४४ ॥
 पयो दुग्धं च पीथं च स्तन्यं पुंसवनं सरम् ।
 गव्यं व्येषं मधु क्षीरं योग्यं सोमरसोद्भवम् ॥ १४५ ॥
 ऊधस्यं जीवनीयं च धारोष्णं त्वमृतं पयः ।
 आसप्ताहान्तु पीथूषं ततो मोरटमोरके ॥ १४६ ॥
 अविसोढाविमरीसे अविदूसमवेः पयः ।
 सन्तानिनी क्षीरशरः शरोम्रद्रवसंहतिः ॥ १४७ ॥
 तिलाटः कूर्चिका चेति क्षीरस्य विकृती उभे ।
 घोलं तूष्णं कालशेयं दण्डाहतरसायने ॥ १४८ ॥
 मोरटं गोरसश्चाथ घोलः पादाम्बुसंयुते ।
 तक्रं कट्वरमशोढं श्वेतच्छाणं च सारणम् ॥ १४९ ॥
 निरम्बुः घोलं मथितमुदश्वित्तु जलार्धकम् ॥ १५० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

भूमिकाण्डे वैश्याध्यायः ॥ ८ ॥

शुद्धाध्यायः ॥ ९ ॥

शुद्धोऽन्त्यवर्णो वृषलो द्विजपोतो जघन्यजः ।
 पञ्जः पद्योऽप्येकजातिः शुद्धाः सङ्करजा अपि ॥ १ ॥
 दासे भृत्यः परिस्कन्दः परजातः परैधितः ।
 नियोज्यचेटकप्रेष्यभुजिष्यपरिचारकाः ॥ २ ॥
 लाडीककिङ्करप्रेङ्खपाळकपरिकर्मिणः ।
 सञ्चारिते धीकरश्च गोप्याः स्युर्दाससूनवः ॥ ३ ॥
 बन्धके स्थित आयत्तो भक्त्यायैव स्थितः कृतः ।
 स्वस्कन्दो भिन्नकुम्भश्च भुजिष्यो दासमोचितः ॥ ४ ॥
 भृतके भृतिभुक्कर्मकरो वैतनिकस्त्रिषु ।
 भरण्यं भरणं भर्म वेतनं निष्क्रयो भृतिः ॥ ५ ॥
 कर्मण्या तुलिका भृत्या भारवाहस्तु भारिकः ।
 वार्त्ताहरो वैवधिको भारयष्टिर्विहङ्गिका ॥ ६ ॥
 शिष्यं तल्लम्बि काचश्च पाथेयं शम्बलोऽस्त्रियाम् ।
 कारवः शिल्पिनः सर्वे कुलिकास्ते कुलोत्तमाः ॥ ७ ॥
 कला शिल्पं च कर्माथ तन्तुवायः कुविन्दकः ।
 वाणिर्व्यूतिश्च वानं स्याद् वेमा ना वानदण्डकः ॥ ८ ॥
 तर्कुः कर्तनभाण्डे ना त्रसरः सूत्रवेष्टनः ।
 घराः कार्पासतूलाः स्युस्तूलमल्ली पिचुः पुमान् ॥ ९ ॥
 पिञ्जनं स्याद्विहननं घराणां प्रविसारणम् ।
 कल्पनं कर्तनं तुल्ये त्रिवृतं तु त्रिवित् त्रिषु ॥ १० ॥
 आवर्तनं तु बलनं सूत्राणि नरि तन्तवः ।
 सौचिकस्तुन्नवायः स्यात् सूचिः सूचा च सीवनी ॥ ११ ॥
 सूचिसूत्रं पिप्पलकमोतं प्रोतमुभे त्रिषु ।
 सीवनं सेवनं स्यूती रङ्गाजीवस्तु चित्रकृत् ॥ १२ ॥
 लेखनी तूलिका कूर्ची पुस्तं लेप्यादिकर्मणि ।
 या तु लेप्यमयी नारी सा स्यादञ्जलिकारिका ॥ १३ ॥
 पाञ्चालिका तु वस्त्रादिमुत्रिका सालभक्षिका ।
 पलगण्डो लेपकारः कल्पाणिः समलेपनी ॥ १४ ॥
 संवाहकोऽङ्गमर्दी स्याच्छस्त्रमार्जोऽसिधावकः ।
 मणिकारो वैघटिकः शौल्बिकस्ताम्रकुट्टकः ॥ १५ ॥

नाडिन्धमः स्वर्णकारः कलादो 'मौष्टिकः समाः ।
 कर्मारः स्यादयस्कारो व्योकारो लोहकारकः ॥ १६ ॥
 शाङ्गिकः स्यात् काम्बविको भस्त्रा चर्मप्रसेविका ।
 सन्दंशः स्यात् कङ्कमुखः काणा मूका बुषा स्मृता ॥ १७ ॥
 विध्यते येन मण्यादिराविधोऽसौ निघोऽपि च ।
 आस्फोटनी वेधनिका भ्रमः कुन्दश्च यन्त्रकम् ॥ १८ ॥
 नाराची स्यादेषणिका शाणस्तु निकषः कषः ।
 रोषाणस्तु घृषिर्घृष्वो हेमादिनिकषाश्मनि ॥ १९ ॥
 यत्र निक्षिप्य कूटेन हन्यते सा निघानिका ।
 प्रतिच्छाया प्रतिकृतिः प्रतिमा प्रतियातना ॥ २० ॥
 प्रतिच्छन्दः प्रतिनिधिर्बेरं च प्रतिरूपकम् ।
 प्रतिबिम्बोपमाने च सादृश्ये सन्निभं निभम् ॥ २१ ॥
 हरिणी हेमप्रतिमा सूर्मिः स्थूणान्यलोहजा ।
 कूटोऽश्मकुट्टकोऽथ स्यादृक्कः पाषाणदारकः ॥ २२ ॥
 कायस्थः स्याल्लिपिकरः करणोऽक्षरजीवनः ।
 लेखकोऽक्षरचञ्चुश्च लिबिलेखाक्षरस्य या ॥ २३ ॥
 लिपिस्त्वालेख्यलेखा स्याद्रेखा तु स्यादकृत्रिमा ।
 वर्णान्तरस्य सर्पादौ लाजिलेखा तु कृत्रिमा ॥ २४ ॥
 मेलामन्दो मषिघटी मेलाम्बु मलिनाम्बु च ।
 मेलो (मणिर्न षण् तस्या लेखन्या) कणिकोद्घृता ॥ २५ ॥
 चण्डिलः क्षुरमर्दी स्यान्नापितोऽन्तावसाय्यपि ।
 क्षुरोऽस्य वपनं शस्त्रं कत्रिका कर्तनी कृवी ॥ २६ ॥
 कुम्भकारः कुलालोऽस्य पचनं पाकमण्डलम् ।
 घूसरश्चाक्रिकस्तैली पिण्याको ना खलिः स्त्रियाम् ॥ २७ ॥
 आभीरस्तु मशशूद्रो गोपो गोसङ्ग्रहगोदुहौ ।
 गोपालो वल्लवश्चाथ वत्सीयस्त्रिषु तद्धिते ॥ २८ ॥
 जाबालः स्यादजाजीवः कोणोऽक्ली लगुडो नरि ।
 सन्दानं दामनी दामा न ना दाम पशोस्तु या ॥ २९ ॥
 रज्जुः सा बन्धनी तन्त्री त्वल्पा पाशस्तु कर्णिका ।
 गुणो वराटो रज्जुः स्त्री न ना शुल्बा घटी व्रयी ॥ ३० ॥
 ग्रन्थिर्बन्धो व्रजो गोष्ठो गौष्ठीनं तु पुरा व्रजः ।
 मन्थस्तु मन्था मन्थानो वैशाखः खजकोऽपि च ॥ ३१ ॥

कुठारो मन्थविष्कम्भो मन्थपात्रं तु गर्गरी ।
 घोष आभीरपल्ली स्यात् पक्वोऽस्त्र्यन्यजालयः ॥ ३२ ॥
 मालाकारो माल्यजीवी मालिकः प्रातिहारकः ।
 ऊर्णा स्नावः कदल्यादेः करण्डी तु पुटी त्रयी ॥ ३३ ॥
 तक्षा तु वर्धकिस्त्वष्टा रथकारश्च काष्ठतट् ।
 ग्रामाधीनो ग्रामतक्षः कौटतक्षोऽनधीनकः ॥ ३४ ॥
 स उद्धनो यत्र काष्ठे काष्ठं निक्षिप्य तक्ष्यते ।
 व्रश्चनः पत्रपरशुः परशुस्तु परश्वधः ॥ ३५ ॥
 स्वधितिर्ना कुठारोऽक्ली वासी स्याद्धारुतक्षणी ।
 क्रकचोऽस्त्री करपत्रं स्वधितिः कर्त्तनः समौ ॥ ३६ ॥
 जीवान्तको मांसिकश्च कौटिको मांसविक्रयी ।
 सूनातटिर्वधस्थानं कृपाणीली च कर्तरी ॥ ३७ ॥
 मृगयुर्लुब्धको व्याधो द्वौ वागुरिकजालिकौ ।
 आच्छोटनं खेटनञ्च मृगव्यं मृगयाऽपि च ॥ ३८ ॥
 आखेटश्च वराधिश्च वागुरा मृगबन्धिनी ।
 श्वा विश्वकद्वुर्मृगयादक्षोऽलर्कस्तु योगितः ॥ ३९ ॥
 दक्षिणेर्मा तु स मृगो यो लुब्धैर्दक्षिणे हतः ।
 वैतंसिकः शाकुनिक उन्माथः कूटयन्त्रकम् ॥ ४० ॥
 शल्यमस्त्री शलाका स्याद् वितंसः पक्षिबन्धनम् ।
 पक्षिणा येन गृह्यन्ते पक्षिणोऽन्ये स दीपकः ॥ ४१ ॥
 कैवर्तो धीवरो दाशो नौजीवी जालिमार्गारौ ।
 मत्स्यधानी कुवेणी स्याद् बलिशं मत्स्यवेधनम् ॥ ४२ ॥
 जालमानाय उद्दालस्तूत्रतो मुकुलाकृतिः ।
 पादूकुर्बर्मकारः स्यादारा चर्मप्रभेदनी ॥ ४३ ॥
 वदूर्ध्वी नदूर्ध्वी वरत्रा च शौण्डिकस्त्वासुतीवलः ।
 कल्यापालो ध्वजी चाथ मद्यं स्यात् कपिशायनम् ॥ ४४ ॥
 शीघ्रु कश्यमिरा कल्या शुण्डा देवी परिस्तुता ।
 परिस्तुन्माधवी हाला प्रसन्ना मदिरा सुरा ॥ ४५ ॥
 मदना मोहकलिका मदिष्टा काचमालिका ।
 कादम्बरी वारुणी च मधूलैस्तु मधूलिका ॥ ४६ ॥
 पक्वैस्त्वक्षुरसैरक्षो शीघ्रुः पङ्कुरसः शिवः ।
 शीतपङ्को रुक्षणीयोऽप्यपक्वै रसिकासवौ ॥ ४७ ॥

मधुमद्ये तु माध्वीकं कामिकान्तं मदोत्कटम् ।
 विक्रान्तं कपिशं हृद्यं मुखवासः सुखोदयः ॥ ४८ ॥
 मध्वासवोऽसितः सेव्यः शार्करो माधवोऽस्त्रियाम् ।
 मैरेयमासवो धात्रीधातकीगुडवारिभिः ॥ ४९ ॥
 काकोली पैष्टिकी श्वेताऽप्यापानं पानगोष्ठिका ।
 नग्नहूर्ना मद्यबीजं किण्वमप्यथ मेदकः ॥ ५० ॥
 जगलोऽथ सनिस्सारो मर्कसो मासरोऽपि च ।
 आसूतिर्मद्यसन्धानमासवोऽभिषवोऽपि च ॥ ५१ ॥
 कारोत्तरः सुरामण्ड आसवोऽप्यथ भक्षणम् ।
 उपदंशोऽपदंशश्च मधुवारा मधुक्रमाः ॥ ५२ ॥
 शुण्डापानं मदस्थानं सपीतिः सहपानकम् ।
 सरकं चषकं चास्त्री गत्वर्तोऽप्यनुकर्षणम् ॥ ५३ ॥
 पानगोष्ठीषु यन्नृत्तं तत्र स्यादुच्चतालकम् ।
 प्लवचाण्डालचण्डालमातङ्गास्तु जनङ्गमे ॥ ५४ ॥
 विष्टिर्ना कारितं कर्म हठाद्येऽपि च तत्कृतः ।
 अथैकागारिकश्चोरः परिमोषी मलिम्लुचः ॥ ५५ ॥
 प्रतिरोधी परास्कन्दी तस्करः प्रतिरोधकः ।
 स्तेनो रात्रिचरो दस्युर्मोषकः पारिपन्थिकः ॥ ५६ ॥
 पश्यतो यो हरत्यर्थं स चोरः पश्यतो हरः ।
 पटच्चरः पटच्चरो बन्दी स्त्री प्रग्रहो ग्रहः ॥ ५७ ॥
 लोप्त्रं हृतोऽर्थश्चौर्यं तु स्तेयं स्तेन्यं च चौरिका ।
 धूर्तोऽक्षधूर्तः कितवो द्यूतकृत् कृष्णकोहलः ॥ ५८ ॥
 चौरिकश्चाक्षजीवी च सभिका द्यूतकारकाः ।
 द्यूतोऽस्त्रियामक्षवती तद्भेदाः पञ्चिकादयः ॥ ५९ ॥
 समाधिश्च समङ्गश्च परिवी रञ्जनं च तत् ।
 पणो ग्लहो देवनस्तु पाशकोऽक्षोऽथ शारयः ॥ ६० ॥
 शाराः स्युः परिणायस्तु तेषां सबचारणेऽभितः ।
 अक्षपाता अयास्ते तु चतुस्त्रिव्येकयोगिनः ॥ ६१ ॥
 कृतं त्रेता द्वापरं च कलिश्चेति यथाक्रमम् ।
 जायाजीवस्तु शैल्यः शैलाली भरतो नटः ॥ ६२ ॥
 रङ्गाजीवो नृत्तुर्नग्नो नण्डो रङ्गावतार्यपि ।
 सर्वकेशी कृशाग्धी च नर्तकस्त्वभ्रकुल्लकः ॥ ६३ ॥

यो यष्टिरञ्जुखड्गेषु प्रनृत्यति स पूरकः ।
 केलकः प्रवकश्चासौ चारणास्तु कुशीलवाः ॥ ६४ ॥
 नर्तको भूमिकां प्राप्तो देवानामर्धमानुषः ।
 रङ्गावतारी रुद्रस्य (कृष्णस्य) त्वर्धमानवः ॥ ६५ ॥
 रामस्य स्याद्देवरथः शक्रस्य तु शचीबलः ।
 रावणस्य तु रङ्गोपमर्दी कंसस्य भूमिकाम् ॥ ६६ ॥
 प्राप्तः फालगलालेपो यस्तु स्त्रीभूमिकां गतः ।
 स भ्रुकुंसो भ्रुकुंसश्च भ्रुकुंसश्च भ्रुकुंसवत् ॥ ६७ ॥
 तत्तद्वेषो भूमिका स्यात् तद्वारी भूमिकागतः ।
 पात्राणि नाट्येऽधिकृताः सूत्रधारस्तु सूचकः ॥ ६८ ॥
 नान्दी तु पाठको नान्द्याः पार्श्वस्थाः पारिपाश्विकाः ।
 विदूषकः केलिकिलः प्रहासी प्रतिभोऽपि च ॥ ६९ ॥
 वेश्याचार्यः पीठमर्दः विद्वो वातसुतो विटः ।
 मार्दङ्गिको मौरजिको वीणावादास्तु वैणिकाः ॥ ७० ॥
 वेणुधमाः स्युर्वैणविकाः पाणिवादास्तु पाणिघाः ।
 नृत्तं गीतं वाद्यमिति नाट्यं तौर्यत्रिकं त्रिकम् ॥ ७१ ॥
 सङ्गीतकं प्रेक्षणार्थं नाट्योक्ते नाट्यधर्मिका ।
 उत्तमोत्तमिकं श्लोकैः सैन्धवं प्राकृतोक्तिभिः ॥ ७२ ॥
 ताण्डवोऽस्त्री नृत्तलास्यनटनाक्षजनर्तनम् ।
 नटितिर्नाटकी रासो नृत्तं बाह्यं स्वकल्पितम् ॥ ७३ ॥
 रसभावाङ्गहाराद्यैः शास्त्रोक्तै रूपकाश्रयम् ।
 नृत्तमाभ्यन्तरं नाम स्थायिभावात्मको रसः ॥ ७४ ॥
 शृङ्गारहास्यबीभत्सवीराद्भुतभयानकाः ।
 रौद्रश्च करुणश्चाष्टौ रसाः शान्तोऽपि च क्वचित् ॥ ७५ ॥
 स्थायिभावाः क्रमादेशां रतिर्हासो जुगुप्सनम् ।
 उत्साहो विस्मयो भीतिः क्रोधः शोकः शमोऽपि च ॥ ७६ ॥
 बीभत्समाने बीभत्सो विस्मेतर्यद्भुतो रसः ।
 भयानको रसो भीते हास्यो हसितरि स्थितः ॥ ७७ ॥
 बीभत्सो विकृतिश्चित्रं त्वाश्रयं फुल्लमद्भुतम् ।
 भयानकं प्रतिभयं भीमं भीष्मं भयङ्करम् ॥ ७८ ॥
 भैरवं भीषणं घोरभाभीलं दारुणं च तत् ।
 करुणः सकृपो रौद्रस्तूभोऽमी विंशतिविधु ॥ ७९ ॥

भावो मनोविकारः स्यादनुभावोऽस्य सूचकः ।
 विभावो हेतवस्तस्य भावस्य हृदि वत्स्यतः ॥ ८० ॥
 स्थायिसञ्चारिभेदेन द्विधा भावो व्यवस्थितः ।
 स्वेदो घर्मो निदाघः स्यात् कालिका तु विवर्णता ॥ ८१ ॥
 रोमोद्गमो रोमहर्षो रोमाञ्चः कण्ठकोऽपि च ।
 रोमाङ्ग उल्लसनकमप्युल्बणकमित्यपि ॥ ८२ ॥
 स्मितं त्वदृष्टदशने हासो वक्रोष्ठिका न ना ।
 रुचिः स्त्री हसितं दृष्टदन्ते विहसितं श्रुते ॥ ८३ ॥
 सोत्प्राप्ते त्वाच्छ्रुरितकं तथोपहसितं भवेत् ।
 निकुञ्चितशिरोगात्रमदृहासो महाहसे ॥ ८४ ॥
 अतिहासस्त्वनुस्यूतोऽपहासोऽकारणात् कृते ।
 स्वरभेदस्तु कल्कत्वं स्वरकम्पस्तु वेपथुः ॥ ८५ ॥
 आकारगोपनायामपटीकाप्यवकटापि स्त्री ।
 न पुमानवहित्था स्यादक्ली गृहजालिकाप्यस्याम् ॥ ८६ ॥
 क्रन्दितं रुदितं क्रुष्टं लोतोऽश्रु नयनोदकम् ।
 अश्रु रोदनमास्रं च क्रीडा खेला च कुर्दनम् ॥ ८७ ॥
 न स्त्री केलिः परीहासः क्रीडा लीला च नर्म च ।
 जृम्भणं तु त्रयी जृम्भा मुखभेदस्तु जृम्भिका ॥ ८८ ॥
 एजनं वेपथुः कम्पः प्रलयोऽस्पन्दनस्थितिः ।
 आटोपावेगसंरम्भसम्भ्रमास्तु त्वरा त्वरी ॥ ८९ ॥
 असौम्येऽक्षण्यदृष्टिः स्यादवलोकस्त्वधः कृतः ।
 उन्मीलनं स्यादुन्मेषो निमिषस्तु निमीलनम् ॥ ९० ॥
 स्फुरितं स्पन्दितमथ भ्रुकुटिर्भ्रुकुटिः स्त्रियाम् ।
 भ्रुकुटिर्भ्रुकुटिः सारी काली तीरतरङ्गिका ॥ ९१ ॥
 चतुरं त्वल्पा भ्रुकुटी रेचितं त्वेकया भ्रुवा ।
 चेष्टाः शृङ्गारजाः स्त्रीणां हावा लीलादयो दश ॥ ९२ ॥
 वल्लभानुकृतिर्लीला विलासः श्लिष्टविक्रिया ।
 विच्छिर्त्तिर्वस्त्रमाल्यादेन्यासोऽनास्थोपशोभितः ॥ ९३ ॥
 सकृत्सुरिलष्टरुदितस्मितादि किलिकिञ्चितम् ।
 बिम्बोकोऽहङ्कृतेनैव प्राप्तेऽभीष्टेऽप्यनादरः ॥ ९४ ॥
 विकृतं तूचितस्यापि लज्जादिभिरभाषणम् ।
 मोहायितं वल्लभस्य चिन्ता कुट्टमितं पुनः ॥ ९५ ॥

स्तनोष्ठादेर्दृढस्पर्शाद् (तुःखवत्) सुखसम्भ्रमः ।
 विभ्रमो दृग्विपर्यासो ललितं कोमलक्रमः ॥ ६६ ॥
 सत्त्वाद्भावस्ततो हावो लीला हावात् समुत्थिता ।
 अङ्गहारोऽङ्गविच्छेपो नानाकरणसंहतिः ॥ ६७ ॥
 करणान्यङ्गचेष्टाः स्युर्हरणं करणं समे ।
 व्यञ्जकोऽभिनयो यस्तु सूच्योऽर्थोऽभिनयः स च ॥ ६८ ॥
 भूषणाद्यैर्गिराऽङ्गेन सत्त्वेनाभिनयाः कृताः ।
 त्रिषु क्रमात् स्युराहार्यवाचिकाङ्गिकसात्त्विकाः ॥ ६९ ॥
 नाटकं नाटिका भाणो वीथिः प्रहसनं छिमः ।
 ईहामृगः प्रकरणमङ्कः समवकारकः ॥ १०० ॥
 व्यायोगश्चेति रूपाणि नाट्यस्यैता विकल्पनाः ।
 भारती सात्त्वती चैव कैशिक्यारभटीति च ॥ १०१ ॥
 चतस्रो वृत्तयो भाषाः संस्कृताद्या विकल्पिताः ।
 भारती संस्कृता वाणी शेषाश्चेष्टा इति क्वचित् ॥ १०२ ॥
 अथ नाट्योक्तयो राजा देवो भट्टारकोऽपि च ।
 महाराजश्च राज्ञी तु स्वामिनी महिषी तु चेत् ॥ १०३ ॥
 देवी स्याद्भट्टिनी त्वन्या गणिका पुनरञ्जुका ।
 भट्टारिका राजमाता तत्पुत्री भर्तृदारिका ॥ १०४ ॥
 तनयस्त्वस्य गोस्वामी (स्वामी) चाप्यथ राष्ट्रियः ।
 स्यालोऽस्य युवराजस्तु कुमारो भर्तृदारकः ॥ १०५ ॥
 पतिस्त्वार्य आर्यपुत्र आर्यौ मारिषमार्षकौ ।
 आबुक्स्तु पिताऽम्बा तु माता वयेष्टा स्वसौप्तिका ॥ १०६ ॥
 बला बुसा कनिष्ठा स्यादाबुक्तो भगिनीपतिः ।
 बाला वासुर्भदन्ताः स्युः शाक्यक्षपणकादयः ॥ १०७ ॥
 आर्यभ्राता क्षुल्लतातो देवरस्त्वार्यपुत्रकः ।
 हण्डे हब्जे हलाऽऽह्वाने नीचां चेटीं सखीं प्रति ॥ १०८ ॥
 अब्रह्मण्यमवद्यं स्यान्निष्ठा निर्वहणं समे ।
 गीतं गेयं च गानं च यत्तु तन्त्रीसमुद्भवम् ॥ १०९ ॥
 तन्निर्गीतं बहिर्गीतं गान्धर्व दिव्यमैश्वरम् ।
 सप्त स्वरास्त्रयो ग्रामा मूर्च्छना एकविंशतिः ॥ ११० ॥
 तानान्येकोनपञ्चाशदित्येष स्वरविस्तरः ।
 स्थानान्युरः शिरः कण्ठः श्रावकः कण्ठजो गुणः ॥ १११ ॥

यो दूराच्छ्रावयत्यन्ये त्वन्वर्था मधुरादयः ।
 काकीत्याद्याः कण्ठदोषास्तत्र काकी नृलिङ्गकः ॥ ११२ ॥
 अगम्भीरः स्वरोऽथ स्यात्तम्बिकी घ्राणनिर्गतिः ।
 सन्दष्टो भेदसम्मिश्रः कफिलो घर्घरः कफात् ॥ ११३ ॥
 काकली तु कले सूक्ष्मे रागा गीतेर्विधाः पृथक् ।
 वादित्रं वादनं वाद्यमोतोद्यं तच्चतुर्विधम् ॥ ११४ ॥
 ततं वीणादिकं वाद्यं तालाद्यं विततं घनम् ।
 वंशादिकं तु सुषिरमानन्दं मुरजादिकम् ॥ ११५ ॥
 घनं चाथाद्यवाद्ये द्वे विततं सहकीर्तने ।
 विपञ्ची वल्लकी वीणा घोषवत्यनुवादिनी ॥ ११६ ॥
 स्यात् कण्ठकूणिका चाथ स्याच्चित्रा परिवादिनी ।
 तन्त्र्यश्चेत् सप्त ताश्चेत् स्युश्चतुर्दश चतुर्दशी ॥ ११७ ॥
 एकादश्येकादश चेदेवं वीणा त्रयोदशी ।
 वीणा स्थाणोरनालम्बी गणानां तु प्रभावती ॥ ११८ ॥
 विश्वावसोस्तु बृहती तुम्बुरोस्तु कलावती ।
 महती नारदस्य स्यात् सरस्वत्यास्तु कच्छपी ॥ ११९ ॥
 कोलम्बकस्तु कायोऽस्याः ककुभस्तु प्रसेवकः ।
 वीणा वंशशलाका तु कणिका कूणिका च सा ॥ १२० ॥
 परिवादो वादनार्थ उपनाहस्तु बन्धनम् ।
 तन्त्रीष्वङ्गुष्ठसंस्पर्शः कलस्तासां तु ताडनम् ॥ १२१ ॥
 निष्कोटितोऽस्त्री सव्येन तलस्त्वन्येन पाणिना ।
 लयस्तु साम्यं दशभिश्छन्दोऽक्षरपदैः सह ॥ १२२ ॥
 विलम्बितं द्रुतं मध्यं तत्त्वमोघो घनं क्रमात् ।
 तालः कालक्रियामानं क्रियाङ्गुलिकरोद्भवा ॥ १२३ ॥
 ताली त्रयी कांस्यताली विताली तालपत्रिका ।
 मिङ्गिलस्तु पयोऽथ स्याद् दर्दरः कलशीमुखः ॥ १२४ ॥
 वंशे तु वंशिका पूरी मुरली वेणुका च सा ।
 शृङ्गवाद्ये खरमुखं स्यादाघट्टलिकेति च ॥ १२५ ॥
 तोट्टभी चाथ पिच्छोला पाली तु जतुकाहला ।
 काहला तु कहाला स्याच्चण्डकोलाहलेति च ॥ १२६ ॥
 नालिका सुषिरच्छेदे मुरली पुष्पिकेति च ।
 वाण्डालिका तु कण्डोलवीणा चण्डालवल्लकी ॥ १२७ ॥

काण्डवीणा कुवीणा च ढक्कारी किन्नरीति च ।
 सारिका कुङ्कुणी चाथ यो दण्डोऽल्पकलस्वनः ॥ १२८ ॥
 दण्डिका कारवी सृष्टा किङ्किरो जर्जरश्च सः ।
 मुरजास्तु मृदङ्गास्ते त्वङ्क्यालिङ्गयोर्ध्वकास्त्रयः ॥ १२९ ॥
 पूर्वः पूर्वो महानेषामेतत्पुष्करमण्डले ।
 व्यापारस्त्वङ्गुलीनां यो मार्जना सा त्रिधा त्वियम् ॥ १३० ॥
 मायूरी चार्धमायूरी तथा कर्मारवीति च ।
 घर्घरी स्याद् घर्घरिका वादने मूर्च्छना न ना ॥ १३१ ॥
 स्युः षड्जर्षभगान्धारमध्यमाः पञ्चमस्तथा ।
 धैवतश्च निषादश्च तन्त्रीकण्ठोद्भवाः स्वराः ॥ १३२ ॥
 ते केकिचातकाजक्रुड्पिकभेकगजस्वराः ।
 दुन्दुभिस्त्वानको भेरी भम्भा नासूश्च नान्द्यपि ॥ १३३ ॥
 स्याद् यशःपटहो ढक्का पटहस्त्वानकोऽस्त्रियौ ।
 हुडुकस्तु हडक्कोऽस्त्री समौ पणवमर्हलौ ॥ १३४ ॥
 वाद्यप्रभेदा डमरुमड्डुडिण्डिममर्मराः ।
 तिमिलाटट्टरीवेध्यालुम्बिकाकुक्षिकादयः ॥ १३५ ॥
 वादित्रलगुडे कोणो न नपुं शारिका स्त्रियाम् ।
 तूर्योऽस्त्री वाद्यनिर्घोषे वादित्रं वादनञ्च तत् ॥ १३६ ॥
 तूरकामध्वजौ चाथ सायन्तूर्येऽक्षताडनम् ।
 संवेशने तु भ्रुकुटः प्रकटः प्रतिबोधने ॥ १३७ ॥
 पटहाडम्बरौ युद्धे मङ्गले प्रियवादिका ।
 देवतार्चनतूर्ये तु धूमलोऽस्त्री बलिर्न षण् ॥ १३८ ॥
 क्षुण्णकं मृतयात्रायामर्धतूरो रणोद्यमे ।
 नटोत्साहनमङ्के स्यात् पूर्वरङ्गास्त्वतः परे ॥ १३९ ॥
 प्रत्याहारोऽत्र कुतमविन्यासे कुतपः पुनः ।
 वाद्यवादकसामग्र्यामारम्भः गीत्युपक्रमे ॥ १४० ॥
 निवेशने गायिकानां न पुमानवतारणम् ।
 लोकपालार्चने दिक्षु करणीपरिवर्तनम् ॥ १४१ ॥
 नन्दी चारी महाचारी कथा सूत्रं प्ररोचना ॥ १४२ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्या

भूमिकाण्डे शुद्धाध्यायः ॥ ९ ॥

तृतीयो भूमिकाण्डः समाप्तः ॥ ३ ॥

४. अथ पातालकाण्डः

सरीसृपाध्यायः ॥ १ ॥

पातालं बलिसद्माधोभुवनं वडबामुखम् ।
रसातलं तलं नागलोको दैत्यक्षयो रसा ॥ १ ॥
अगाधो भुवनं रोकं रन्ध्रं निर्व्यथनं बिलम् ।
कुहरं सुषिरं छिद्रं श्वभ्रोऽस्त्र्यक्ली सुषिर्वपा ॥ २ ॥
गर्तः पतेरो भूश्चभ्रमवखातोऽवटोऽवधिः ।
शेषोऽनन्तो नागराजः सर्पराजस्तु वासुकिः ॥ ३ ॥
नागा बहुफणाः सर्पास्तेषां भोगवती पुरी ।
सर्पो द्विरसनो व्यालो दन्दशूकः सरीसृपः ॥ ४ ॥
उरगो भुजगो जिह्वो भुजङ्गोऽहिर्भुजङ्गमः ।
फुल्लरीको लेलिहानः कुण्डल्याशीविषः फणी ॥ ५ ॥
दीर्घपृष्ठो विषधरः पन्नगो दृक्श्रवा हरिः ।
बिलौका गूढपाञ्चक्री नाकुसद्मानिलाशनः ॥ ६ ॥
दर्वीकरा मण्डलिनो राजिमन्तश्च पन्नगाः ।
रथाङ्गलाङ्गलच्छत्रस्वस्तिकाकुशलाब्धनाः ॥ ७ ॥
फणिनः शीघ्रगतयः सर्पा दर्वीकराभिधाः ।
दीर्घा मन्दा मण्डलिनो मण्डलैर्विविधैर्युताः ॥ ८ ॥
राजिमन्तो राजियुता राजीला राजिलाश्च ते ।
वैकरब्जाः सङ्करजास्त्रयाणां व्यन्तरास्तथा ॥ ९ ॥
षड्विंशतिर्मण्डलिनस्तथा दर्वीकराभिधाः ।
त्रयोदश च राजीला वैकरब्जाभिधास्त्रयः ॥ १० ॥
निर्विषा द्वादशेत्येवमशीतिः सर्पजातयः ।
दर्वीकरा महासर्पः फुल्लः पुष्पाभिकीर्णकः ॥ ११ ॥
कुम्भीनसो लोहिताहिः कृष्णसर्पः कुलस्थकः ।
शङ्खपालो महापद्मः काकोदर इतीदृशाः ॥ १२ ॥
आशीविषाश्च सर्वेऽथ कृष्णसर्पो वलाहकः ।
अथ मण्डलिनस्तन्तुर्गोनसो वृद्धगोनसः ॥ १३ ॥
किंशुकः पीनसः पिङ्गो देवभिन्न इतीदृशाः ।
गोनसस्तु तिलित्सः स्याद्गोनासो घोणसोऽपि च ॥ १४ ॥

राजिलाः स्युः पुण्डरीकश्चित्रको लोहिताक्षकः ।
 दिव्येलकः सर्पराजः किकीसादः इतीदृशाः ॥ १५ ॥
 अथ पुष्करसादः स्यात् सर्पराजश्च सर्पभृक् ।
 वैकरञ्चाः पोटगलस्तथा पुष्पाभिकीर्णकः ॥ १६ ॥
 दिव्योऽलकौऽप्यथो सर्पा निर्विषा दिव्यकालिनी ।
 पैङ्गराजोऽप्यजगरः शुक्रपोत्रो वलाहकः ॥ १७ ॥
 वर्षाभीः शकलज्योतिः कोलकः पादवाहिकः ।
 पुष्पकोऽहिपताकश्च गन्धाहिक इतीदृशाः ॥ १८ ॥
 अलगद्धो जलव्यालो वाहसोऽजगरः शयुः ।
 मालुधानो मातुलाहिः पुण्डरीकस्तु डुण्डुभः ॥ १९ ॥
 राजिलः क्षीरकश्चाथ नानीपातः स्वजः समौ ।
 अहीरिणिः स्त्री द्विमुखी निर्मुक्तो मुक्तकञ्चुकः ॥ २० ॥
 सर्पाश्चरस्तु निर्मोकः कञ्चुको नित्वयन्यपि ।
 अहिनित्वयनी चाथ स्फटा भोगः फणा न षण् ॥ २१ ॥
 गरलं तु विषं द्वेलो गरस्तु कृतकं विषम् ।
 द्वेलास्तु कालकूटाद्या मूलपुष्पफलात्मकाः ॥ २२ ॥
 कालकूटः कटोऽथ स्याद् गौराद्रौ ब्रह्मबालुकम् ।
 ब्रह्मघोषश्च घोषश्च पुण्डरीकं तु बालुकम् ॥ २३ ॥ —
 एवमन्येऽपि काकोलो वत्सनाभो हलाहलः ।
 सौराष्ट्रिको ब्रह्मपुत्रशौक्लिकेयेन्द्रदारदाः ॥ २४ ॥
 मुस्तः कुष्ठो मेषशृङ्ग इत्याद्याश्चाथ वातिकः ।
 विषवैद्यो जाङ्गलिको व्यालग्राह्याहितुण्डिकः ॥ २५ ॥
 गोधा निहाका मुसली वृक्षजा सा शयण्डकः ।
 अथ गौधेरगौधारौ भुजगीगोधयोः सुते ॥ २६ ॥
 गौधेयश्चाथ चिक्रोडस्तालको रोमशीति च ।
 नकुलः पिङ्गलोऽथैष कर्शो रोमशपुच्छकः ॥ २७ ॥
 नकुलस्तु महान् बभ्रुर्धरीको नकुलाकृतिः ।
 कृकलासः प्रतिरविः शयानः सरटः शयः ॥ २८ ॥
 स कामरूपी बिम्बः स्यात् कृकवाकुः सुदुष्प्रभः ।
 हालाहलस्त्वञ्जनिका ब्राह्मणी रक्तपुच्छिका ॥ २९ ॥
 सृजया चाथ दैवज्ञा ज्येष्ठा स्याद् गृहगौलिका ।
 टट्टनी मुसली पल्ली माणिक्या गृहगोधिका ॥ ३० ॥

कुड्यमत्स्या सुरश्वेता कुण्डणाची सुराजिका ।
 उन्दुरुर्मूषिकः काण्डमाखुस्तु खनकः क्रमः ॥ ३१ ॥
 चुचुन्दरी तु गन्धाखुर्गिरिका बालमूषिका ।
 वृश्चिके त्वात्यलिद्रूणा मलं तत्पुच्छकण्टकः ॥ ३२ ॥
 खर्जुरो वृश्चिका न क्ली शूकक्रीटोऽपि वृश्चिकः ।
 आढा शतपदी कर्णजल्लका ढारिकापि च ॥ ३३ ॥
 मूषिका लूतिका लूता तन्तुवायश्च जालिकः ।
 ऊर्णनाभस्तन्तुनाभः कृमिर्मर्कटकोऽपि च ॥ ३४ ॥
 ऊर्णाबहिश्चोर्णवाहीराशाबन्धोऽस्य जालकम् ।
 लूतापट्टस्तु तत्कोश उद्देशो मत्कुणः समौ ॥ ३५ ॥
 घुणः कृमिः काष्ठभवा लूतातः स्यात् पिपीलिका ।
 ब्राह्मणी स महान् पिङ्गः कपिशा तु गृहेडिका ॥ ३६ ॥
 उलङ्कलो महान् कृष्णः सा मर्कोटपिपीलिका ।
 या कृष्णाऽल्पाऽथ सूदमाऽन्या जातिः कन्यापिपीलिका ॥ ३७ ॥
 वन्नो वन्नच्युपदीकोपजिह्विका चोपदेहिका ।
 तत्प्राया शिथिली पिङ्गा यूकस्तु शिरसि क्रिमिः ॥ ३८ ॥
 नीलाङ्गा क्रामेरन्तर्जः क्षुद्रः कीटो बहिर्भवः ।
 पुल्लकास्तूभयेऽपि स्युः कीकसाः क्रमयोऽणवः ॥ ३९ ॥
 सरीसृपास्तु सर्पाद्या दन्दशूकास्तु दंशकाः ।
 शलभाद्याः पतङ्गाः स्युर्योदांसि जलजन्तवः ॥ ४० ॥
 पृथुरोमा ऋषो मत्स्यो मीनो वैसारिणस्तिमिः ।
 जलपिप्पिक आत्माशी शकुली स्वकुलक्षयः ॥ ४१ ॥
 स्थिरजिह्वः सङ्घचारी विसारः शम्बरः सण्डजः ।
 अथो सहस्रदंष्ट्रः स्याद् गलेवालौ उपदालकः ॥ ४२ ॥
 वदालस्त्वहिकश्चित्रः पाठीनो मृदुकण्टकः ।
 फलकी स्याच्चित्रफली लोहितस्त्वावतारिकः ॥ ४३ ॥
 एत्थालः स्याच्चीननको महाशल्कः सितायुधः ।
 शृङ्गी तु सर्पशफरी प्रोष्ठी तु शफरी न षण् ॥ ४४ ॥
 नलमीनश्चिलिचिमो गण्डकाः शकुलार्भकाः ।
 क्षुद्राण्डो मत्स्यसङ्घातः पोताधानं नमुंसकम् ॥ ४५ ॥
 उद्दण्डपालनदलद्रेकराजीवकोत्पलाः ।
 कुलीरः कर्कटः पृष्ठचक्षुः पार्श्वोदरप्रियः ॥ ४६ ॥

बिल्वकोऽण्डप्रहरणः षोडशाङ्घ्रिद्विधागतिः ।
 भेके शालुः प्लवव्यङ्गशालूराण्डुककेण्डुकाः ॥ ४७ ॥
 मण्डूकश्चैष गृहजो म्लानः कोणेपिशाचकः ।
 पीतेऽस्मिन् कूलमण्डूको वारिपिण्डोऽश्ममध्यजः ॥ ४८ ॥
 कृष्णास्या कृतभीः श्वेता कोटिका तद्विपर्यये ।
 चित्रे चित्राणुकः कूपे भवः कूपेपिशाचकः ॥ ४९ ॥
 कूर्मः कच्छप ओहारः पञ्चगूढश्चतुर्गतिः ।
 गुहाशयस्तूपपृष्ठः कश्यपो जीवथो मृथः ॥ ५० ॥
 दुली दुणी च तत्कान्ता मकरो मत्स्यराड् मूषः ।
 खड्गनामा खड्गपुच्छस्तिमिशत्रुस्तिमिङ्गिलः ॥ ५१ ॥
 तद्भेदो हस्तिमकरोऽथ स्याद् वारुणपाशकः ।
 ग्राहस्तन्त्रस्तन्तुनागस्तन्द्रश्चाभोघतन्तुकौ ॥ ५२ ॥
 नके तु कुम्भी कुम्भीरो गोमुखश्च महामुखः ।
 तालुजिह्वः शङ्खमुख आलास्यस्त्वम्बुसूकरः ॥ ५३ ॥
 उद्रस्तु जलमार्जारः पारी परकुलो वशी ।
 शिशुमारस्त्वम्बुकपिरुष्णवीर्यो महावसः ॥ ५४ ॥
 असिप्लवोऽम्बुलूकी स्त्री वीरलस्तु महामूषः ।
 त्रयी तु कम्बुः शङ्खोऽस्त्री सुग्रीवो मधुरस्वनः ॥ ५५ ॥
 त्रिरेखः षोडशावतः स तु शङ्खनखोऽल्पकः ।
 मुक्तास्फोटोऽब्धिमण्डूकी शुक्तिर्मुक्ता तु मौक्तिकम् ॥ ५६ ॥
 मुक्ताफलं शौक्तिकेयं गङ्गेष्टिः कटशर्करा ।
 शम्बूकः क्षुल्लकः शङ्खः कपर्दस्तु वराटकः ॥ ५७ ॥
 स्त्री चूर्णिरथ शुक्तिः स्याद् दुर्नामा दीर्घकोशिका ।
 जल्लका तु जलालोका सूक्था भूम्नि जलौकसः ॥ ५८ ॥
 या जलौका वृणचरी सा स्यात् वृणजलायुका ।
 गण्डूपदः किञ्चुलुको भूलता तत्प्रिया शिल्ली ॥ ५९ ॥
 स्थले करिनराश्वाद्या यावन्तः सन्ति जन्तवः ।
 ते जलेऽपि जलाख्याः स्युर्जलपर्यायपूर्वकाः ॥ ६० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

पातालकाण्डे सरीसृपाध्यायः ॥ १ ॥

जलाध्यायः ॥ २ ॥

सलिलं मलिनं तोयं मरुतं मेघजं कतम् ।
 नीरं वारि पयोऽम्भोऽर्णो मेघपुष्पं कुलीनसम् ॥ १ ॥
 पानीयं जीवनीयं कं जलमम्बूदकं दकम् ।
 विषं पाथो घनपदं भुवनं जीवनं वनम् ॥ २ ॥
 वार्नं पुंसि स्त्रियो भूमन्यापो घनरसः पुमान् ।
 वल्ध्वरं तु सितं तोयमतिक्षारं तु किट्टिमम् ॥ ३ ॥
 काचिमं स्यादतिस्वच्छमूतं कलुषमाविलम् ।
 शीतलं स्वादुर्नि जले द्राग्भृतं तत्क्षणोद्धृतम् ॥ ४ ॥
 जलाशया जलाधारास्ते त्वगाधजला हृदाः ।
 अखातं देवखाते स्यात् पुष्करिण्यां तु खातकम् ॥ ५ ॥
 आधारस्तु तटाकोऽस्त्री कासारः सरसी सरः ।
 आवाहो दीर्घिका वापी वेशन्तस्त्वल्पपल्वले ॥ ६ ॥
 अन्धुरब्धः प्रहिः कूपश्चुण्डी चौण्डश्च चूतकः ।
 अवखातस्तु कीर्णः स्यादुत्कीर्णश्च पुरी स्त्रियाम् ॥ ७ ॥
 विकिरः स्यात् कीर्णजल उद्भिदस्तु जलोद्गमः ।
 पीनाहस्तु स्त्रियां नेमिः कूपस्य मुखबन्धनम् ॥ ८ ॥
 आहावश्च निपानश्च कूपपार्श्वजलाश्रयः ।
 प्रदरस्तूदपानोऽस्त्री बद्धाम्बु स्रोतसो धृतम् ॥ ९ ॥
 आवालमालवालं स्यात् सेतौ वारणसंवरौ ।
 उदधिः सागरोऽपारो जलराशिरपांपतिः ॥ १० ॥
 रत्नाकरो जलनिधिः समुद्रो मकरालयः ।
 उदन्वान् वरुणावासः सरितांपतिरपतिः ॥ ११ ॥
 सरित्पतिरकूपारः पारावारोऽब्धिर्णवः ।
 मितद्रुः संवरः पेरुः स्तम्भी स्तम्भिर्महोदधिः ॥ १२ ॥
 कूजेऽस्य वेला मर्यादा पूर्णर्वेलाम्बुवर्धनम् ।
 डिण्डीरोऽम्बुकफः फेनो बुद्बुदस्थासकौ समौ ॥ १३ ॥
 भङ्गस्तरङ्गो वीचिः स्त्री तस्मिंस्त्वेव महत्यषण् ।
 ऊर्मिः कल्लोल उल्लोलो लहर्युत्कलिकेति च ॥ १४ ॥

पोहित्थं तु प्रवहणं पोथश्चाप्यथ मङ्गिनी ।
 नौस्तरिस्तरणी वेटी द्रोणी काष्ठांनुवाहिनी ॥ १५ ॥
 उडुपं तु प्लवो भेल आरोहोऽसौ तरण्डकः ।
 केनिपातास्त्वरित्राणि पोलिन्दास्तु पुलिन्दकाः ॥ १६ ॥
 कर्णं पृष्ठस्थितारित्रं नौशिरो मङ्गमस्त्रियाम् ।
 नावो दण्डः क्षेपणी स्त्री कूपस्तु गुणवृक्षकः ॥ १७ ॥
 आतरस्तरपण्यं स्यात् सेकपात्रं तु सेचनम् ।
 सांयात्रिकः पोतवणिक् पोतवाहो नियामकः ॥ १८ ॥
 कर्णधारस्तु निर्यामो नावारोहास्तु नाविकाः ।
 अगाधमतलस्पर्शमस्थानञ्च गभीरकम् ॥ १९ ॥
 गम्भीरञ्चाथ नौतार्यं नाव्यं स्यान्ते नव त्रिषु ।
 घट्टोऽवतारस्तीर्थोऽस्त्री प्रणाल्यङ्की पयोवहा ॥ २० ॥
 सरणी हरणिर्भूणिर्निर्गमद्वारि तु भ्रमः ।
 उद्धाटनं घटीयन्त्रं पादावर्तोऽरघट्टकः ॥ २१ ॥
 नदी स्रोतस्विनी कुल्या स्रवन्ती निम्नगा सरित् ।
 हिरण्यवर्णा गिरिजा रोधोवक्त्रा पयस्विनी ॥ २२ ॥
 तरङ्गिणी शैवलिनी तटिनी ह्लादिनी धुनी ।
 अन्धा कूलङ्कषा सिन्धुरापगा वाहिनी बहा ॥ २३ ॥
 त्रिस्रोता जाह्नवी गङ्गा देवसिन्धुस्त्रिमार्गगा ।
 भागीरथी विष्णुपदी स्वर्वापी हरशेखरा ॥ २४ ॥
 धर्मद्रवी त्रिमार्गा च पाताले भोगवत्यसौ ।
 यमस्वसा तु यमुना कालिन्द्यर्कात्मजा यमी ॥ २५ ॥
 नर्मदा स्यात् सोमभवा रेवा मेकलकन्यका ।
 बाहुदा त्वर्जुनी सैता श्यामाङ्गी सैतवाहिनी ॥ २६ ॥
 टापी तु तापिनी शैब्या चन्द्रभासा तु चन्द्रिका ।
 शतद्रस्तु शुतुद्री स्याद्विपाशा तु विपाट् स्त्रियाम् ॥ २७ ॥
 गोदावरी तु गोदा स्यात् कावेरी त्वर्धजाह्नवी ।
 शरावती वेत्रवती तुङ्गभद्रा सरस्वती ॥ २८ ॥
 ताम्रपर्णी कृष्णवर्णा गोमत्याद्याश्च निम्नगाः ।
 नदः सरस्वान् भिद्योद्धयौ कुल्या कर्षूः कृता नदी ॥ २९ ॥

वेणिर्घारा प्रवाहौघौ पूरस्तु जलवृंहणम् ।
 चक्राणि पुटभेदाः स्युरावर्तः पयसां भ्रमः ॥ ३० ॥
 जलोच्छ्वासाः परीवाहाः कूपकास्तु विदारकाः ।
 सञ्छेद्यं सङ्गमो नद्योः सम्भेदोऽप्यथ रोधसि ॥ ३१ ॥
 तीरं कूलं प्रपातश्च प्रान्ते कच्छस्तटी त्रयी ।
 पारावारे परात्रत्ये कूले पात्रं तदन्तरम् ॥ ३२ ॥
 अस्त्री द्वीपोऽन्तरीपं छी पुलिनं तज्जलोत्थितम् ।
 सैकतं सिकताप्रायं सिकता भूमिर्न बालुकाः ॥ ३३ ॥
 उत्पल स्यात् कुवल्यं कुवेलं कुवलं कुवम् ।
 नीलोत्पलश्च कन्दोष्ठं कन्दोब्जं कर्णभूषणम् ॥ ३४ ॥
 इन्दीवरश्च नीलाब्जं रक्तपाणिकमुत्पले ।
 वरोत्पलं तु कल्हारं सौगन्धिकशिशुप्रिये ॥ ३५ ॥
 कंसोत्पलं विगन्धि स्याद् वनजं वन्यकं जले ।
 पद्मोऽस्त्री पङ्कजं कञ्जं कुविलीनं सरोरुहम् ॥ ३६ ॥
 सरसीजं सरसिजं सारसं सरसीरुहम् ।
 सरोजमब्जमप्पुष्पमरविन्दं महोत्पलम् ॥ ३७ ॥
 सहस्रपत्रं नलिनं शतपत्रं कुशेशयम् ।
 बिसप्रसूनं राजीवं निर्लेपं बिसनाभिजम् ॥ ३८ ॥
 पङ्केरुहं तामरसं कमलं दारदोलके ।
 रक्ते तु पद्मे कण्डारं बिसखण्डमथोऽम्बुजम् ॥ ३९ ॥
 चारुनालं कोकनदं श्वेते तु शुचिकर्णिकम् ।
 पुण्डरीकं महापद्मं पवित्रं पुण्यगन्धिकम् ॥ ४० ॥
 श्रीपुष्पं स्वर्णराजश्च कुमुदं गर्दभाङ्गयम् ।
 गन्धसोमं कुमुच्चन्द्रं कैरवश्चाथ लोहिते ॥ ४१ ॥
 अस्मिन् कोकनदं जारं सुनालं रक्तकुण्डलम् ।
 करहाटः शिफा कन्दं नाला नालमथ त्रिषु ॥ ४२ ॥
 मृणाली शतपर्वं छी बिसश्च नलिनी पुनः ।
 बिसिनी पद्मिनीत्याद्याः पद्मस्तम्बे सरस्यपि ॥ ४३ ॥
 भवेत् पुटकिनी पद्मस्तम्बमात्रे प्रकीर्तिता ।
 कुमुद्वती कुमुदिनी शालुकं कन्दमौत्पलम् ॥ ४४ ॥

संवर्तिका नवदलं पद्म स्त्री कुसुमच्छदः ।
 किञ्चलकः केसरो न स्त्री बीजकोशो वराटकः ॥ ४५ ॥
 कर्णिका कर्णिकं चाथ पद्माक्षं पद्मकर्कटी ।
 हठः कुम्भी वारिपर्णी किञ्चोलस्त्वङ्गलोड्यकः ॥ ४६ ॥
 शुक्रकारं तु कृसरं वृष्यकन्दं कशेरु च ।
 शृङ्गाटकस्तु गरुलो दन्तबीजस्त्रिकण्टकः ॥ ४७ ॥
 क्षीरबीजः क्षीरशुक्रस्तर्पणो जलकण्टकः ।
 चिञ्चोटिका स्यादवका स्वादुमुस्ता गरोलिका ॥ ४८ ॥
 शैवलो जलशूरः स्यादवका जलनील्यपि ।
 शैवालश्चाथ शेवालं चूर्णीभं लोहितं जले ॥ ४९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

पातालकाण्डे जलाध्यायः ॥ २ ॥



पुराध्यायः ॥ ३ ॥

पुर्यना नगरी पूः स्त्री स्थानीयं नगरं पुटः ।
 पुर्याः शाखापुरी गृह्णा पुरेऽल्पे खेटमस्त्रियाम् ॥ १ ॥
 ग्रामः पर्युपसन्निभ्यः प्रतेश्च वसथः परः ।
 स्थानीयं तु महाग्रामो ग्रामाः क्षुद्राः परे क्रमात् ॥ २ ॥
 स्युः कर्वेटं कार्वटिकं कार्वटं नृङ्गपट्टने ।
 कर्वटोऽस्त्री द्रोणमुखं पट्टनं पुटभेदनम् ॥ ३ ॥
 पत्तनं चाप्यथानृङ्गे नृङ्गो द्रङ्गं विवेशिका ।
 कटकोऽस्त्री संवासः स्कन्धावारश्च राजधानी स्यात् ॥ ४ ॥
 शिबिरं मार्गनिवेशो गामार्धे वाटकोऽस्त्री स्यात् ।
 साकेतं स्यादयोध्यायां कोसलानन्दिनीति च ॥ ५ ॥
 द्वारका तु द्वारवती मधुरा तु मधूषिका ।
 मथुरा च मधूपन्ना कौशं तु स्यात् कुशस्थली ॥ ६ ॥
 वाराणसी शिवपुरी वारणास्यपि काशिका ।
 मिथिला पूर्वदेहेषु कन्याकुब्जो महोदयः ॥ ७ ॥
 हस्तिनी हास्तिनपुरं नागाहं हस्तिनापुरम् ।
 अथास्त्री खाण्डवप्रस्थं जयन्तीपुरमाहुकम् ॥ ८ ॥
 अवन्ती स्यात्तक्षशिला काकुन्दी वारणावतम् ।
 देवीकोटः कोटिवर्ष माहिष्मत्यां वृकस्थली ॥ ९ ॥
 ग्रामादिभूमिर्वास्त्वस्त्री सन्दंशस्त्वस्य कोणभूः ।
 ब्रह्मस्थली वास्तुमध्यं ब्रह्मधारा तदन्तभूः ॥ १० ॥
 प्रशस्ता वास्तुभूमिर्या प्रवीरा नन्दिनी च सा ।
 सीमा तु सीमा मर्यादा ग्रामसीमोपशल्यकम् ॥ ११ ॥
 प्रान्तरं ग्रामयोर्मध्यमुपग्रं त्वन्तिकाग्रयः ।
 पर्यन्तभूः परिसरः कटो ग्रामेयकः पुनः ॥ १२ ॥
 ग्रामीणं च त्रिषु ग्राम्ये ग्रामधान्यं तु खेटकम् ।
 खेयं तु परिखाऽथास्त्री वप्रः प्राकारमूलिकः ॥ १३ ॥
 प्राकारो वरणः सालः प्राचीरं त्वेष सच्छदिः ।
 आवेष्टकस्तु वाटोऽस्त्री विवृतश्च वृत्तिद्रुमैः ॥ १४ ॥

वारिकूटो हस्तिमुखो नगरद्वारकुट्टके ।
 गोपुरं तु पुरद्वारं दिक्तु निस्सारणं मुखम् ॥ १५ ॥
 रथ्या प्रतोली विशिखाऽप्युपरथ्या तु दर्शनी ।
 राजमार्गे संसरणं श्रीघण्टाभ्यां पथः परः ॥ १६ ॥
 स एव पुरि दिङ्मार्गे बाहनी चोपविष्करम् ।
 अगारं भवनं धाम वस्तं वस्त्यं निकेतनम् ॥ १७ ॥
 शय्यं निवसनं सद्य बुन्दिरं वेश्म मन्दिरम् ।
 निकायवासावसथनिकायनिलयालयाः ॥ १८ ॥
 न नोदवसितं न स्त्री गेहं पुम्भूम्नि वा गृहम् ।
 महाकीर्तनमोक्षश्च केतरं केतनं क्षयः ॥ १९ ॥
 आथर्वणं शान्तिगृहमास्थानगृहमिन्द्रकम् ।
 वासागारं तल्पगृहमरिष्टं सूतिकागृहम् ॥ २० ॥
 कुचशाला तु सन्धानी पक्षिशाला कुनालिका ।
 चतुरं हस्तिनां शाला वाजिशाला तु मन्दुरा ॥ २१ ॥
 सन्दानिनी तु गोशाला हविशाला विषाणिका ।
 आवेशनं शिल्पिशाला तन्त्रशाला तु गर्तिका ॥ २२ ॥
 कुम्भशाला पाकपुटी चित्रशाला तु जालिनी ।
 संवासनं कर्मशाला प्रपा पानीयशालिका ॥ २३ ॥
 वेशनी मुखशाला च पक्षशाला तु पक्षकः ।
 तैलशाला यन्त्रगृहं पोटकी कटकी च सा ॥ २४ ॥
 इक्षुपीडनयन्त्रस्य शालिका त्विक्षुसूनिका ।
 वपनी स्यात् खरकुटी शिल्पा चाप्यथ कुण्डिनी ॥ २५ ॥
 क्षणा बुशाल्याश्रमे तु पर्णशालोटजोऽस्त्रियाम् ।
 चतुश्शालं सञ्चवनं सत्रशाला शुभा स्थली ॥ २६ ॥
 मठावसथ्यौ छात्रादिवासो वेष्टं विटाश्रये ।
 कुटीरस्तु कुटी पल्ली क्षेत्रपल्ली तु गर्गरी ॥ २७ ॥
 सन्यासपल्ली निर्बीरा मण्टपोऽस्त्री जनाश्रयः ।
 देवतायतनं चैत्यं बिहारो लयनालिकः ॥ २८ ॥
 सौधोऽस्त्री मुघया श्वेतं मेढो हर्म्यं च मालिका ।
 तदेव राजदेवानां स्यात् प्रासादः प्रसादनः ॥ २९ ॥
 राजवेश्मोपकार्यो स्यादुपकार्योपकारिका ।
 स्वस्तिकः सर्वतोभद्रो नन्यावर्तादयोऽपि च ॥ ३० ॥

पिच्छन्दिका राजधानां सन्निवेशो निकर्षणम् ।
 कूटागारं तु वलभी निर्यूहो मत्तवारणम् ॥ ३१ ॥
 कुट्टिमोऽस्त्री बद्धभूमिः कोद्रङ्गस्तु तमङ्गकः ।
 इन्द्रकोशोऽप्यथो मञ्च उद्धातो डुण्डुरोऽपि च ॥ ३२ ॥
 वेश्यागृहे कायमानं तथेदं केलिमण्डपे ।
 अट्टालयोऽट्टः क्षौमोऽस्त्री तलिन्यट्टालिके समे ॥ ३३ ॥
 चन्द्रशाला शिरोगेहं पणिकस्तु वणिग्गृहम् ।
 आपणस्तु निषद्या स्यान्माटङ्को लवणापणः ॥ ३४ ॥
 संवासो विपणिः पण्यवीथी हट्टस्तु पण्यभूः ।
 आवालिर्हट्टवेशमाली वेशो वेश्याजनाश्रयः ॥ ३५ ॥
 अवरोधः पराविद्धः शुद्धान्तोऽन्तःपुरं वृषम् ।
 अङ्गणस्त्वजिरं चारं वेदिका तु वितर्दिका ॥ ३६ ॥
 कुड्योऽस्त्री भित्तिका कन्थाऽप्येड्ढकं त्वन्तरस्थिकम् ।
 नीत्रं वलीकं चोलान्ते चोलोऽस्त्री पटलं छदिः ॥ ३७ ॥
 सन्धिस्तु कुड्यच्छदिषोः कावातायनिका कला ।
 अपशाला तु संहारी विटका तु विटाटिका ॥ ३८ ॥
 गोपानसी तु वलभी छादने वक्रदारुणि ।
 वेश्मस्थूणा गृहस्थूणमुल्बस्थूणा तु पादिका ॥ ३९ ॥
 मेढी तु पादिकाशीर्षे स्थूणाशीर्षे शिली शिला ।
 नासा धारकदारु स्यात् पालिकाष्ठं तु धारणा ॥ ४० ॥
 कोणप्रतिग्राहि शिरोविष्टब्धिकरमाढकम् ।
 सूकरी तूपरिस्थूणा सन्धिकपाष्ठं तु वासिकम् ॥ ४१ ॥
 द्वाः स्त्री द्वारं पक्षकं तु पक्षद्वारं खड्गिका ।
 तोरणोऽस्त्री बहिर्द्वारं प्रच्छन्नद्वारमान्तरम् ॥ ४२ ॥
 कवाटं द्वारबन्धोऽस्य धारके व्याघ्रकोऽस्त्रियाम् ।
 उत्तराङ्गं तूर्ध्वदारु द्वारस्यैरुण्डकः पुनः ॥ ४३ ॥
 गृहावग्रहणी देहल्यम्मरोदुम्बरोम्बुरा ।
 सट्टं सपट्टी तत्पार्श्वे वृकवाला परालिनी ॥ ४४ ॥
 नासा तु द्वार्यधोदारु शिला नासाविधारिणी ।
 प्रधानप्रघणालिन्दाः पिण्डकोऽलिन्दवासनौ ॥ ४५ ॥
 बहिर्द्वारप्रकोष्ठे स्युर्गृहश्रेणी तु वीथिका ।
 अथ त्रय्यौ कवाटोऽपि कुवाटोऽप्यरं न पुम् ॥ ४६ ॥

पार्श्वद्वयस्थं तद्युग्ममनीरिति निगद्यतै ।
 विष्कम्भकेऽस्य गुडको द्रुमशोऽप्यर्गला न षण् ॥ ४७ ॥
 सूचिस्त्वयोर्गलैषा चेद् द्वारोर्ध्वं तूर्ध्वसूचिका ।
 मर्कटं मर्कटी सूची विष्कम्भार्थमथाकुटः ॥ ४८ ॥
 साधारणी कुञ्चिका च द्वास्थ्यन्त्रं तु तालकम् ।
 एतस्योद्धाटनं यन्त्रं ताल्यपि प्रतिताल्यपि ॥ ४९ ॥
 अर्गलं द्वारपटलं विदण्डस्त्वर्गला त्रयी ।
 अस्त्री तु घर्घरोऽट्टादेरधोद्वारकवाटिका ॥ ५० ॥
 गर्भागारोऽपवरको भ्रमन्तो गृहकोऽल्पकः ।
 आरोहणं स्यात् सोपानं निश्रेणिस्त्वधिरोहणी ॥ ५१ ॥
 कोणाश्रौ नर्यणिनं क्ली स्त्रियोऽश्रिस्तक्तिकोटयः ।
 सम्मार्जनी शोधनी तन्मलेऽवकरसङ्करौ ॥ ५२ ॥
 दन्तिका नागदन्ताः स्थुर्लङ्गनी वस्त्रधारणी ।
 कपोतपाली स्त्री न स्त्री विटङ्कोऽथ गवाक्षकम् ॥ ५३ ॥
 वातायनं गवाक्षश्च रसवत्यां महानसम् ।
 उद्धानमश्मन्तमधिभ्रयणी चुञ्जिरन्तिका ॥ ५४ ॥
 हसन्यङ्गारशकटी हसन्यङ्गारधान्यपि ।
 पिठरः स्थाल्युखा कुम्भिः पिधानं स्यादुदञ्चनम् ॥ ५५ ॥
 कंटाहः कर्परो लट्ठो मणिकः स्यादलिङ्गरम् ।
 भ्राष्ट्रः पुंस्यम्बरीषोऽस्त्री कन्दुर्नो स्वेदनी स्त्रियाम् ॥ ५६ ॥
 ऋचीषं पिष्टपचनं मल्लो मल्ली च कोशिका ।
 वर्धनी तु गलन्त्यालुः कर्करी करकोऽपि च ॥ ५७ ॥
 भृङ्गारो हेमकरकः करङ्को नालिकेरजः ।
 निपो घटः कुटः कुम्भः करीरः कलशी त्रयी ॥ ५८ ॥
 घटी पारी कपाली तु त्रयी चोत्तमश्च कर्परः ।
 शालाजिरो वर्धमानः शरावोऽस्त्री दृतिस्तु ना ॥ ५९ ॥
 खल्वं क्लीबे चर्ममयी त्वालुः करकवर्तिका ।
 स्नेहपात्रं कुतूः कृत्तिः सैवालपा कुतुपः पुमान् ॥ ६० ॥
 अवगाहो जलद्रोणिरुष्टिका काञ्चिकाविभृत् ।
 भद्रकुम्भः पूर्णकुम्भः स्थालं स्यात् कांस्यपात्रकम् ॥ ६१ ॥
 भाण्डमावपनेऽमत्रं भाजने पात्रमित्युभे ।
 चर्मकोशं तु कललं करालं तरलं च तत् ॥ ६२ ॥

पेटकः पिटकः पेटा मञ्जूषा सा तु चर्मणा ।
 वृता तरिः स्त्री तमतो वस्त्रकोशं करोटकम् ॥ ६३ ॥
 स्यूतः प्रसेवकोऽथ स्यात् समुद्रगः सम्पुटः पुटः ।
 धान्यकोष्ठे कुसूलोऽथ कण्डोलः पिटकः पिटः ॥ ६४ ॥
 प्रस्फोटनं शूर्पमस्त्री न स्त्री तितउ चालनी ।
 अयोनिर्मुसलोऽस्त्री स्यादुदूखलमुलूखलम् ॥ ६५ ॥
 प्रस्फोटनं तु पवनमवघातस्तु कण्डनम् ।
 फलीकृतस्तण्डुलः स्याद्धान्यानां तु तुषस्त्वचि ॥ ६६ ॥
 शम्बूकास्तु कणाः सूक्ष्मास्तण्डुलस्य च यो मलः ।
 शम्बूकः कण्डनं चासौ ज्येष्ठाम्बु तु तदम्बुनि ॥ ६७ ॥
 गोधूमचूर्णे शमिता चिक्षसो यवचूर्णके ।
 पृथुकश्चिपिटो लाजाः पुंभूम्नि परिवारकः ॥ ६८ ॥
 खदिका तु गुडाद्याढ्यलाजसक्तुषु तर्पणम् ।
 सुस्विन्नभृष्टमृदिता उत्कुञ्चः कल्कपिण्डिकाः ॥ ६९ ॥
 पिण्डिर्ना पिष्टधानादिचूर्णे गौडी तु मर्मरा ।
 उलुम्बं बुम्बिका बुम्बी चक्षुष्या सक्तवः कणाः ॥ ७० ॥
 ते घृतादियुता मन्थः करम्भो दधिसक्तवः ।
 धानाः स्त्रियो भृष्टयवा दारपत्रस्तु पोलिकः ॥ ७१ ॥
 पूपस्तु पिष्टकोऽपूपः कोकुन्दाः पिष्टपिण्डिकाः ।
 उत्कारिका चूर्णपूपे कुलमाषा यवपिष्टकाः ॥ ७२ ॥
 शमिता त्वम्लदुग्धार्द्रा पक्वा खण्डे घृतोत्तरे ।
 संयावोऽयं युतश्चूर्णैः खण्डैलामरिचार्द्रकैः ॥ ७३ ॥
 क्षीराढ्यः शमितापिण्डो घृतपूरो घृते शृतः ।
 फेनकः शमिता शुक्ला घृतपक्वालपशर्करा ॥ ७४ ॥
 शङ्कुली त्वायता पिष्टगुडतैलतिलैः कृता ।
 जीवनाम्नाशनान्धांसि कूरं भक्तं प्रसादनम् ॥ ७५ ॥
 पाजो वाजोऽप्योदनोऽस्त्री भिस्सा स्त्री दिदिविर्न षण् ।
 पुन्नपुंसकयोश्चोरं करमाहार्यमित्यपि ॥ ७६ ॥
 दग्धान्नं भिस्सिटा मिह्नी परमान्नं तु पायसम् ।
 क्षैरेयी चाथ मण्डोऽस्त्री रसामोऽथ करोटिका ॥ ७७ ॥
 द्वागुल्या स्याद्धानाम्लायां द्वागुली मण्डिका समे ।
 मासराचामनिस्त्रावप्रस्त्रावा भक्तमण्डके ॥ ७८ ॥

वाट्यमण्डो यवैर्भृष्टैर्लाजमण्डोऽन्वितार्थकः ।
 तिलतण्डुलमाषैस्तु त्रिरसा कृसरा त्रयी ॥ ७६ ॥
 यवागूरुष्णिगा आणा पिच्छा सा तु घनाद्रवा ।
 विलेपी स्याद्विलेप्या च सा पेया तरणान्यथा ॥ ८० ॥
 खलिः स्त्री तण्डुलैः पिष्टैर्जले पक्का घनद्रवा ।
 सौवीरं काञ्चिकं कुण्डमारनालं गृहोदकम् ॥ ८१ ॥
 अवन्तिसोमं रक्षोघ्नं शुक्ताभिषुतकुञ्जलम् ।
 गोलकुल्माषसन्धानान्यौदरो मधुरा न षण् ॥ ८२ ॥
 तद्वान्ययोनि धान्याम्लं तुषाम्बु तुषसंहितम् ।
 मूलकाद्यैः संहिते स्यान्मूलकादिसुतं न ना ॥ ८३ ॥
 मूलकच्छदसन्धानं शिण्डाकी स्वादुसुद्रवा ।
 यन्मस्त्वादि शुचौ भाण्डे सक्षौद्रगुडकाञ्चिकम् ॥ ८४ ॥
 त्रिरात्रं धान्यराशिस्थं तच्छुक्तं शुद्धमित्यपि ।
 निष्ठानं तेमनं तच्च व्यञ्जनं स्याद् घृतादि च ॥ ८५ ॥
 सुपोऽस्त्री प्रहितं सूदोऽप्युपदंशोऽपदंशकः ।
 स्त्री पकभृष्टे भरुटा सगुडाज्योषणैः पुनः ॥ ८६ ॥
 वेशवारः पिष्टमांसे पके भूतिस्ततोऽन्यथा ।
 रसको मांसनिष्काथः पिष्टमांसकृतो रसः ॥ ८७ ॥
 सोरावासो निर्लवणः परिशुष्कं पुनर्घृते ।
 सिक्त्वा मांसे मृदूष्णाम्बुपक्वं युक्तं कणादिभिः ॥ ८८ ॥
 उत्तमं शुष्कमांसं स्याद्वल्बरा त्रय्यथ स्त्रियाम् ।
 पेशिः शुण्ठः पिचिण्डस्तु निकृत्तोऽवयवः पशोः ॥ ८९ ॥
 शाकोऽस्त्री हरितं शिम्रः स्त्री तन्नाले कडम्बकः ।
 कन्दमस्त्री मूलसस्यं वेशवार उपस्करः ॥ ९० ॥
 लेह्यं पेयञ्च चूष्यञ्च खाद्यमास्वाद्यमित्यपि ।
 पञ्चामृतमिदं स्वाद्यं मुक्त्वा त्वन्नं चतुर्विधम् ॥ ९१ ॥
 त्रिष्वानुताम्रक्षकारे द्वौ कान्दविकपौपिकौ ।
 सूपकारे त्वारालिकसूदान्धसिकवल्गवाः ॥ ९२ ॥
 गुणौदनिकसूपाश्च लवणो लवणोत्कटः ।
 पक्वं तु रन्धितं सिद्धं भृष्टं पक्वं विनाम्बुना ॥ ९३ ॥
 प्रणीतमुपसम्पन्नं प्रयस्तं स्यात् सुसंस्कृतम् ।
 शूलाकृतं भटित्रं च शूल्यमुख्यं तु पैठरम् ॥ ९४ ॥

सार्पिष्कदाधिकाद्यं स्यात्सपिर्द्ध्यादिसंस्कृते ।
 शीनं स्त्यानं शृतं पक्वं विलीनं विद्रुतं द्रुतम् ॥ ६५ ॥
 तक्रं कपित्थचाङ्गेरीमरीचाजाजिचित्रकैः ।
 यत्पक्वं गुडजूषोऽसावलकाम्बलिकोऽपरः ॥ ६६ ॥
 दध्यम्लो लवणस्नेहतिलमाषविपाचितम् ।
 अपक्वतक्रं सव्योषचतुर्जातगुडार्द्रकम् ॥ ६७ ॥
 सजीरकं रसालः स्यान्मार्जिता शिखरिण्यपि ।
 सा जाजी डाडिमव्योषं पटे घृष्टं च सट्टकम् ॥ ६८ ॥
 बलकं स्याद् गुडक्षीरं यमकं तैलसर्पिषी ।
 त्रिस्नेहं त्रैवृतं मार्जा चतुस्स्नेहं वसान्वितम् ॥ ६९ ॥
 मधु सर्पिश्च मिथुनं यूषोऽस्त्री यूः पुमान् रसे ।
 परिवेषणं वर्धनं च प्रतीच्छा पततो ग्रहः ॥ १०० ॥
 कषलः कषतो ग्रासो गुडः पिण्डो गुडेरकः ।
 गण्डोरश्च गडोलश्च चर्वणं चूषणं रदैः ॥ १०१ ॥
 जग्धिस्तु निघसो न्यादो लेपोऽप्यभ्यवहारवत् ।
 प्रत्यवसानमशनं भोजनं जेमनादने ॥ १०२ ॥
 स्वदनं परिपत्रं च सग्धिः स्त्री सहभोजनम् ।
 चूषणं तु रसादानं जिह्वास्वादस्तु लेहनम् ॥ १०३ ॥
 धीतिस्तु धयनं पानं जक्षा खादनभक्षणे ।
 काभं निकामं पर्याप्तं प्रकामं च यथेप्सितम् ॥ १०४ ॥
 पर्याप्तं तु परित्राणं हस्तवारणमित्यपि ।
 वृप्तिः सुधा च सौहित्यं वृप्तं तु सुहितं त्रिषु ॥ १०५ ॥
 करम्बः सेकमिश्रात्रे फेला पिण्डेऽधिकोऽभिक्ते ।
 खण्डपर्कटमुद्वेगं ताम्बूलं मुखभूषणम् ॥ १०६ ॥
 अम्बलोर्णं चर्वितेऽस्य चूर्णेऽस्य त्वम्बला रसे ।
 करङ्को वेडादिकृते पूगताम्बूलभाजने ॥ १०७ ॥
 स्यात् पूगावपनी गन्त्री कर्त्तर्युद्वेगकर्त्तरी ।
 भवेत् क्षुरसमुद्वेगं तु त्रिष्वाकर्णकरन्धके ॥ १०८ ॥
 अस्त्री तु पुस्तकं सिन्दूरदेर्दारवभाजने ।
 चातुरीकं त्रिषु भवेच्चन्दनद्रवभाजने ॥ १०९ ॥
 नागवल्लीपलाशानां तैलाक्तानां रसातलः ।
 निष्ठानं वीतकं प्रोक्तं चन्द्रमन्दारचूर्णधृतम् ॥ ११० ॥

वीरस्नाका या तु शरशलाकायन्त्रनिमिता ।
 पाठार्थमुद्गृहीता स्यात् कबली पत्रपञ्चिका ॥ १११ ॥
 परिकर्माङ्गसंस्कारः कङ्कतस्तु प्रसाधनः ।
 प्रसाधनं स्यादभ्यङ्गः सोत्पाताच्छुरिते समे ॥ ११२ ॥
 उद्वर्तनं तूत्सादनं स्नानं त्वाप्लाव आप्लावः ।
 उपस्पर्शोऽभिषेकश्च गोसव्यं गोमयेन तत् ॥ ११३ ॥
 सुगन्धामलकैः स्नानं यत्तल्लक्ष्मीनिकेतनम् ।
 यत्तु सर्वाषधिस्नानं तन्मङ्गल्यमलोचकम् ॥ ११४ ॥
 यन्मृत्तिकाऽम्भसा स्नानं दिष्टं देशनिकं च तत् ।
 ऋषीणां तर्पणं यत्तत् कौलकुल्यं कुलं च तत् ॥ ११५ ॥
 सिक्खी पटोऽस्त्री सिचयो वासो वसनमंशुकम् ।
 आच्छादनं निवसनं वसितं वस्त्रमम्बरम् ॥ ११६ ॥
 चेलं च तच्चतुर्धा स्यात् त्वक्फलक्रिमिरोमजम् ।
 बालकं क्षौमादिके वस्त्रे फाले कार्पासवादरौ ॥ ११७ ॥
 कौशेयं कृमिकौशोत्थे राङ्गवं मृगारोमजे ।
 पत्रोर्णं धौतकौशेयं महामूल्यं महाधनम् ॥ ११८ ॥
 अग्निगौचं वक्रवल्लीपदे वज्रांशुकं तथा ।
 राजावर्तं चित्रपटे राजवर्तो नवश्रियाम् ॥ ११९ ॥
 अहतं निष्प्रवाणिः स्यात् तन्त्रकं च नवांशुके ।
 निवीतं प्रावृते धौतयुग्मं तूद्गमनीयकम् ॥ १२० ॥
 आप्रपदीनं प्रपदव्यापि बालकादयस्त्रिषु ।
 अन्तरीयोपसंव्यानपरिधानान्यधोऽशुके ॥ १२१ ॥
 चण्डातकं वरस्त्रीणां स्यादर्धोरुकमम्बरम् ।
 संव्यानमुत्तरीयं क्षौमं सूक्ष्मं दुकूलं स्यात् ॥ १२२ ॥
 बैकट्यं तु बृहतिका प्रावारश्चोतरासङ्गः ।
 चन्द्रोदय उल्लोचः कदरश्चन्द्रातपो वितानोऽस्त्री ॥ १२३ ॥
 मशकहरी तु चतुष्की शिरसि क्षिगुष्णीषमस्त्री स्यात् ।
 काण्डपटः स्यादपटी प्रतिसारायवनिकातिरस्करिणी ॥ १२४ ॥
 दूष्यं स्थूलं पटकुटी गुणलयनी केणिका तुल्याः ।
 नालकं नलकं चापि नलिकं चेत्यपि त्रयः ॥ १२५ ॥
 पर्याया धनुरादीनां कवचेऽप्राणिनाममी ।
 निचोलः प्रच्छदपटो वरासी स्थूलशाटका ॥ १२६ ॥

चोली तु शाटिका शाटो वरकोऽस्त्री द्विखण्डकः ।
 निशारो हिमसम्पातत्राणे जीर्णे पटच्चरम् ॥ १२७ ॥
 निचोलः कञ्चुकश्चोलः कूर्पासश्चाङ्गिकोऽस्त्रियाम् ।
 चीवरं भिक्षुसङ्घाटी कन्थाकन्थटिके समे ॥ १२८ ॥
 कक्ष्यापटस्तु कौपीनं समौ रत्नककम्बलौ ।
 विशालस्त्वाविकौरभ्रौ हस्तिकर्णस्तु रोचकः ॥ १२९ ॥
 शाणी गोणी छिद्रवस्त्रैश्चिरं खण्डलमस्त्रियाम् ।
 नक्तकः कर्पटो वस्त्रग्रन्थोऽस्त्री नीविरुच्चयः ॥ १३० ॥
 कक्षः कच्छो गुह्यबन्धः कक्ष्या पृष्ठे कृतोऽञ्चलः ।
 वस्त्रान्तस्त्वञ्चलो वस्तिस्त्वक्ली भूम्नि दशा न षण् ॥ १३१ ॥
 पुष्कलस्तुम्बिका चाथ प्रान्तत्रसरकेसराः ।
 आकल्पवेधौ नैपथ्यं प्रतिकर्म प्रसाधनम् ॥ १३२ ॥
 अलङ्कारस्त्वाभरणं भूषणं मण्डनं पुनः ।
 विभूषणं परिष्कारः कर्णिका कर्णभूषणम् ॥ १३३ ॥
 उत्क्षिप्तिका तु कर्णाकस्तालपत्रं तु तालकम् ।
 कर्णपूरस्तु पुष्पाद्यैस्ताडङ्गो दन्तकादिभिः ॥ १३४ ॥
 बालिका कर्णपृष्ठस्था कुण्डलं कर्णवेष्टनम् ।
 मौलिः कोटीर उष्णीषं किरीटं मकुटोऽस्त्रियाम् ॥ १३५ ॥
 चूडामणिः शिरोरत्नं स्वस्तिकस्तु त्रिकोणकः ।
 बालपाश्या पारितध्या पत्रपाश्या ललाटिका ॥ १३६ ॥
 ग्रैवेयकं कण्ठभूषा लम्बनं तु ललन्तिका ।
 स्वर्णैः प्रालम्बिकाऽथोरस्सूत्रिका मौक्तिकैः कृता ॥ १३७ ॥
 हारो मुक्तावली स्त्री स्यात्तद्भेदा यष्टिसङ्ख्याया ।
 देवच्छन्दः शतं साष्टमिन्द्रच्छन्दः सहस्रकम् ॥ १३८ ॥
 तस्यार्धं विजयच्छन्दो हारस्त्वष्टोत्तरं शतम् ।
 अर्धं रश्मिकलापोऽस्य द्वादशस्त्वर्धमाणवः ॥ १३९ ॥
 द्विर्द्वादशोऽर्धगुच्छोऽथ पञ्च हारफलं लताः ।
 अर्धहारश्चतुष्षष्टिर्गुच्छमाणवमन्दराः ॥ १४० ॥
 अपि गोस्तनगोपुच्छावर्धमर्धं यथोत्तरम् ।
 एकावत्यनुकण्ठी च हारः स्यादेकयष्टिकः ॥ १४१ ॥
 यष्टिर्नक्षत्रमालैका सप्तविंशतिमौक्तिका ।
 गुडकैर्मणिसोपानं चाटुकारश्च हेमजैः ॥ १४२ ॥

हारमध्यस्थितं रत्नं तरलो नायकोऽपि च ।
 केयूरमङ्गदं भूषा दोर्मूले कङ्कणं करे ॥ १४३ ॥
 आवापकः पारिहार्यं वलयं कटकोऽस्त्रियाम् ।
 पादेऽसौ हंसकः स्त्रीणामङ्गुलीयकमूमिका ॥ १४४ ॥
 साक्षराऽङ्गुलिमुद्रा सा क्षुद्रघण्टा तु किङ्किणी ।
 शिञ्जिनी ना तुलाकोटिर्मञ्जीरो नूपुरोऽस्त्रियौ ॥ १४५ ॥
 कटिसूत्रं सारसनं मेखला रशनाऽथ सा ।
 स्त्रीकट्यां सप्तकी काञ्ची पुंस्कट्यां शृङ्खला त्रयी ॥ १४६ ॥
 स्त्री चर्चिर्वर्णकालेपावनुबोधः प्रबोधनम् ।
 माष्टिश्चर्चा च चर्चिक्यं समालम्भनमित्यपि ॥ १४७ ॥
 स्थासको हस्तबिम्बः स्यात् पत्तिच्छेदास्तु राजयः ।
 चित्रं तमालपत्रं क्ली तिलकोऽस्त्री विशेषकम् ॥ १४८ ॥
 पत्तिस्तु पत्रकं लेखा बाहुगण्डस्तनादिषु ।
 पत्राङ्गुलिः पत्ररेखा सा ललाटे ललाटिका ॥ १४९ ॥
 राढा शोभा ह्यवी रुक् त्विट् सुषमा परमा ह्यविः ।
 त्रिगन्धमेलात्वक्पत्रैस्त्रिसुगन्धं त्रिजातकम् ॥ १५० ॥
 चतुर्जातं तदेव स्यान्नागकेसरकेसरैः ।
 सर्वगन्धमिदं सेन्दुतकोलागरुसिल्हकम् ॥ १५१ ॥
 लवङ्गपूगतकोलजातीफलहिमांशवः ।
 पञ्च पञ्चसुगन्धं स्यादथ तकोलकुङ्कुमैः ॥ १५२ ॥
 कस्तूर्यगरुकर्पूराः सुगन्धो यक्षकदर्दमः ।
 यावो द्रुमामयोऽलको लाक्षा रक्ता जतु क्रिमिः ॥ १५३ ॥
 कालानुसार्यं कालेयं जावकं चाप्यथ स्रजि ।
 मालाङ्किलिरथापीडे वतंसोत्तंसशेखराः ॥ १५४ ॥
 केशेषु गर्भकं माल्यं प्रालम्बं कण्ठलम्बितम् ।
 प्रभ्रष्टकं शिखालम्बि पुरोन्यस्तं ललामकम् ॥ १५५ ॥
 वैकट्यं तिर्यगुरसि स्थितं निर्माल्यमुज्झिते ।
 संस्कारो गन्धधूपाद्यैरपुमानधिवासनम् ॥ १५६ ॥
 अञ्जनं त्वक्षिसंस्कारः कज्जलं धूमयोनि तत् ।
 चूर्णीनि वासयोगाः स्युः पिष्टातः पटवासकः ॥ १५७ ॥
 रचना स्यात् परिस्कन्धो भावना वासना समे ।
 अथोपकरणं सर्वं परिबर्हः परिच्छदः ॥ १५८ ॥

व्यजनं तालवृन्तं स्याद् धवित्रं चर्मणा कृतम् ।
 आलावर्तस्तु वस्त्रेण चामरं तु प्रकीर्णकम् ॥ १५६ ॥
 पन्तद्वहः प्रतिग्राहो वालोऽस्त्री दारुणा कृतः ।
 आसन्दी स्त्री नरि प्रेङ्खो दीपवल्ली तु दीपिका ॥ १६० ॥
 दीपवृक्षस्तदाधारो दशा वर्तिरथ स्त्रियाम् ।
 वर्तिर्गृहमणिर्दीपो गिरीयकगुडौ गिरिः ॥ १६१ ॥
 दर्पणो मुकुरादशौ कन्दुको गण्डकः समौ ।
 पादुकाऽनुपदीना स्यादुपानत् पादरक्षिणी ॥ १६२ ॥
 उपला तु दृषत्पुत्रः शिला माता दृषत्समाः ।
 दर्विस्तु कम्बिस्तर्ङ्गः स्यात् खजाका दारुहस्तकः ॥ १६३ ॥
 विष्टरं त्वासनं पीठं दारुजं वेत्रजं पुनः ।
 आसन्दी मञ्चकः खट्वापाश्रयो मत्तवारणम् ॥ १६४ ॥
 शय्या पर्यङ्कपल्यङ्कौ शयनं शयनीयवत् ।
 प्रस्तरः संस्तरः शय्या रचिता पल्लवादिभिः ॥ १६५ ॥
 कटः किलिञ्जो वर्णस्तु परिस्तोमः कुथा त्रयी ।
 नमतं चाप्यास्तरणं प्रस्तरस्तुत्तरच्छदः ॥ १६६ ॥
 उपधानं तूपबर्हमुच्छीर्षमुपबर्हणम् ।
 संवापः शयनं स्वापः संवासो वासनं सह ॥ १६७ ॥
 शयने शयसंवेशावुपशायोऽन्तिकेशयः ।
 पर्यादेरथ पर्यायाः परिशायः समन्ततः ॥ १६८ ॥
 कामध्वजः कामोत्सवः शृङ्गारः कामविक्रिया ।
 परिरम्भः परिष्वङ्ग आश्लेष उपगूहनम् ॥ १६९ ॥
 आलिङ्गनमपि क्रोडीकरणं चाङ्गपाल्यपि ।
 ग्राम्यधर्मः कामकेली रतिर्निधुवनं रतम् ॥ १७० ॥
 मेहनं मिथुनत्वं च समे निसनचुम्बने ॥ १७०३ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

पातालकाण्डे पुराध्यायः ॥ ३ ॥

भूताध्यायः ॥ ४ ॥

भूतानि प्राणिनो जीवा जन्तवो जन्यवोऽङ्गिनः ।
 पुंसः प्राक् त्रिषु गुल्माद्यमुद्भिदुद्भिज्जमुद्भिदम् ॥ १ ॥
 स्वेदजा दंशयूकाद्या नृपश्वाद्या जरायुजाः ।
 अण्डजाः पक्षिसर्पाद्याः पुमांस्तु पुरुषो वृषः ॥ २ ॥
 पूरुषो नाऽप्यथ क्लीबः पण्डः षण्डो नपुंसकम् ।
 तृतीयाप्रकृतिश्चाथ पोटा स्त्रीपुंसलक्षणा ॥ ३ ॥
 स्त्री योषिज्जलना योषा वशा सीमन्तिनी वधूः ।
 वनिता महिला नारी तद्भेदास्तु नितम्बिनी ॥ ४ ॥
 प्रतीपदर्शिनी वामा प्रमदा भीरुरङ्गना ।
 अबला भामिनो कान्ता कामिनी वामलोचना ॥ ५ ॥
 सुन्दरी रमणी रामा वेणिनी चान्वितार्थकाः ।
 कुमारी कन्यका कन्या किञ्चित्प्रौढा महोदया ॥ ६ ॥
 अचिरव्यूढा तु वधूः पतिवरा तु स्वयंवरा वर्या ।
 कुलपालिका कुलस्त्री कुल्याऽथ सती पतिव्रता साध्वी ॥ ७ ॥
 स्त्रीव्यञ्जनकृता श्यामा चीरिणी तु सुवासिनी ।
 प्राप्तर्तुर्दिक्षरी राका युवतिस्तलुनी चरी ॥ ८ ॥
 वधूटी च चिरण्टी च द्वितीयवयसि स्त्रियाम् ।
 स्वैरिणी धर्षिणी पुंश्चल्यसती कुलटेवरी ॥ ९ ॥
 बन्धकी पांसुला चर्चा चला नग्ना तु कोट्टवी ।
 भिक्षुकी श्रमणी मुण्डा तीव्रकोपा तु भामिनी ॥ १० ॥
 विप्रशिनका त्वीक्षणिका दैवज्ञा प्रश्नवादिनी ।
 कामुकेच्छुः कामुकी तु वृषस्यन्ती रतार्थिनी ॥ ११ ॥
 वरारोहोत्तमा नारी सैव स्मन्मत्तक्राशिनी ।
 कामात् कान्तं याति याऽसावविनीताऽभिसारिका ॥ १२ ॥
 अभ्यूढा चाधिविन्ना च कृता यस्याः सपत्निका ।
 वीरपत्नी वीरभार्या वीरमाता तु वीरसू ॥ १३ ॥
 पतिवन्नी जीवपतिर्विश्वस्ता विधवाऽथ सा ।
 कात्यायनी द्वितीयं चेद्वयः काषायमन्बरम् ॥ १४ ॥

उदक्या मलवद्वासा आत्रेयी पुष्पवत्यपि ।
 रजस्वला च मलिना स्त्रीधर्मिण्यृतुमत्यपि ॥ १५ ॥
 ऋतुः पुंस्यार्तवं रक्तं पुष्पं चाथानृतुर्वधूः ।
 निष्कलाऽऽपन्नसत्त्वा तु स्र्यन्तर्वन्नी च गर्भिणी ॥ १६ ॥
 अद्यश्चीना तु सा या स्याद्य श्वः प्रसवोन्मुखी ।
 विजाता तु प्रजाता च प्रसूता च प्रसूतिका ॥ १७ ॥
 जनुर्जननजन्मानि जनिरुत्पत्तिरुद्भवः ।
 गर्भाशयो जरायुः स्यादुल्बं च कललोऽस्त्रियाम् ॥ १८ ॥
 बालस्य नाभिनालायाममरा कालिनीति च ।
 सूतिमासो वैजननो जीवतोका तु जीवसूः ॥ १९ ॥
 बिन्दुर्नश्यत्प्रसूतिः स्यादशिश्वी शिशुवर्जिता ।
 अवीरा निष्पतिसुता किमिला बहुसूतिका ॥ २० ॥
 कुटुम्बिनी तु गृहिणी पुरन्ध्री मारुकेति च ।
 वृद्धा पलिकनी प्राज्ञी तु प्रज्ञा प्राज्ञा तु धीमती ॥ २१ ॥
 उपाध्यायान्युपाध्यायी शूद्रचर्या क्षत्रियीति च ।
 आचार्यानी च पुंयोगादर्यार्याण्यौ तु जातितः ॥ २२ ॥
 क्षत्रिया क्षत्रियाणी च शूद्रा चेत्यपि जातितः ।
 स्यादुपाध्याय्युपाध्यायाऽप्याचार्या च स्वयंकृता ॥ २३ ॥
 पण्यस्त्री गणिका वेश्या वारस्त्री रूपजीवना ।
 वारमुख्या सत्कृताऽसौ दूती सञ्चारिणी समे ॥ २४ ॥
 कुट्टिनी शम्फली चुन्दी वयस्याली सखी सुहृत् ।
 सैरन्ध्री परवेशमस्था स्वतन्त्रा शिल्पकारिणी ॥ २५ ॥
 दासी तु चेटिका चेटा वडबा कुम्भधारिका ।
 जनयित्री जनन्यम्बा माताऽथ भगिनी स्वसा ॥ २६ ॥
 सा ज्येष्ठाम्बाऽप्यवन्ती च कनिष्ठा कन्यसाम्बिका ।
 ननान्दा तु स्वसा पत्युः ननन्दा नन्दिनीति च ॥ २७ ॥
 पत्न्यास्तु भगिनी ज्येष्ठा ज्येष्ठश्चश्रूः कुलीति च ।
 कनिष्ठा स्यालिका हाली पत्रिणी केलिकुञ्जिका ॥ २८ ॥
 बीजी तु जनको वप्ता तातो जनार्जिता पिता ।
 पितामहः पितृपिता तत्पिता प्रपितामहः ॥ २९ ॥
 मातुर्मातामहाद्येवं तदूर्ध्वं वृद्धपूर्वकाः ।
 दम्पत्योर्व्यत्ययान्माता श्वश्रूः स्यात् श्वशुरः पिता ॥ ३० ॥

सहजः स्वसरो भ्राता कनिष्ठोऽवरजोऽनुजः ।
 पूर्वजस्त्वग्रजो ज्येष्ठः पितृव्याः सहजाः पितुः ॥ ३१ ॥
 ज्येष्ठतातः पितृज्येष्ठः क्षुल्लतातोऽनुजः पितुः ।
 स्यालः स्यादनुजः पत्न्यास्तस्याः स्यादबलोऽग्रजः ॥ ३२ ॥
 देवरो देवदेवानौ मातुर्भ्राता तु मातुलः ।
 दम्पत्योराजिकोऽन्योन्यो वैमात्रेयो विमातृजः ॥ ३३ ॥
 समानोदर्यसोदर्यौ सगर्भः सोदरः समाः ।
 भार्या जाया सहचरी द्वितीया सहघर्मिणी ॥ ३४ ॥
 सधर्मचारिणी पाणिगृहीती पालुषी बधूः ।
 पत्नी क्षेत्रं कलत्रं च गृहाः पुंभूम्नि दारवत् ॥ ३५ ॥
 जाया प्रजावती मातुर्ज्येष्ठभ्रातुः प्रिया बधूः ।
 स्नुषा बधूर्जनी सूनुर्मातुलानी तु मातुली ॥ ३६ ॥
 भ्रातृवर्गस्य या भार्या यातरस्ताः परस्परम् ।
 रुच्यः प्रियः पतिर्भर्ता सेक्ता वरयिता घवः ॥ ३७ ॥
 पतिर्ननान्दुः कौतूलो नशिको भगिनीपतिः ।
 जारस्तु स्यादुपपतिर्जामाता दुहितुः पतिः ॥ ३८ ॥
 वेश्यापतौ विद्वगकुम्भभुजङ्गविटपल्लवाः ।
 पुत्रस्तु तनयः सूनुरात्मजो नन्दनोऽङ्गजः ॥ ३९ ॥
 सुतः पोतश्च पुङ्गवे नरो दुहितरि स्त्रियः ।
 द्वयोश्च गर्भसन्तानौ प्रसवश्च नरः सदा ॥ ४० ॥
 तोकापत्ये नपुं स्त्री तु प्रसूतिः सन्ततिः प्रजा ।
 जामेयभागिनेयौ तु स्वस्त्रीयोऽथ पितृष्वसुः ॥ ४१ ॥
 पुत्रे पैतृष्वसेयश्च पितृष्वस्त्रीय इत्यपि ।
 एवं मातृष्वसुश्च द्वौ भ्रात्रीयो भ्रातुरात्मजः ॥ ४२ ॥
 सौभागिनेयकानीनौ सुभगाकन्ययोः सुतौ ।
 दास्या दासेयदासेरौ पौत्रलेयोऽसतीसुते ॥ ४३ ॥
 बन्धुलबान्धकिनेयौ च कौलदेयश्च कौलटेरश्च ।
 साध्वी तु भिक्षुकी चेत् कौलटिनेयश्च कौलदेयश्च ॥ ४४ ॥
 पौनर्भवः पुनर्भूज उरस्थस्त्वौरसः स्वजः ।
 नप्तारौ पौत्रदौहित्रौ प्रतिनप्ता प्रपौत्रकः ॥ ४५ ॥

परम्परस्तु तत्पुत्रस्तत्पुत्रोऽपि परम्परः ।
 अयं पत्न्ययनोऽपि स्यात् कल्पनस्तु तदात्मजः ॥ ४६ ॥
 सह प्रवाच्यौ भगिनीभ्रातरौ भ्रातराविति ।
 मातापितरौ पितरौ मातरपितराविति प्रसूतातौ ॥ ४७ ॥
 श्वश्रूश्चशुरौ श्वशुराविति पुत्राविति सुतापुत्रौ ।
 जायापती तु मिथुने जम्पती दम्पती इति ॥ ४८ ॥
 पितरस्तु पितुर्वश्या मातुर्मातामहाः कुले ।
 अन्ववायोऽन्वयो वंशः सन्तानो जननं कुलम् ॥ ४९ ॥
 राजबीजी राजवंश्यो बीज्यो वंश्यश्च वंशजः ।
 स्युर्ज्ञातयः सगोत्राश्च सपिण्डास्तु सनाभयः ॥ ५० ॥
 स्वजनो बान्धवो बन्धुः कुटुम्बन्तु सुतादिकम् ।
 परिवारः परिजनः परिस्पन्दः परिग्रहः ॥ ५१ ॥
 देहोऽस्त्री स्त्री तनुर्गात्रं क्षेत्रमङ्गं कलेबरम् ।
 चतुश्शाखं संहननं शरीरं करणं सिनम् ॥ ५२ ॥
 बन्धः प्रजानुकः कायो भूषणः सञ्चरोऽपि च ।
 प्राया वयांस्यस्य दशास्तारुण्यं यौवनं वयः ॥ ५३ ॥
 ज्यानिर्जीर्णिः स्थाविरं तु पात् स्त्री विस्रंसजा जरा ।
 शिशुत्वं शैशवं बाल्यं सामुद्रं देहलक्षणम् ॥ ५४ ॥
 गात्राण्यङ्गानि चास्यांशाः प्रतीकापघनावपि ।
 अंशस्त्ववयवो भाग एकदेशः कलेति च ॥ ५५ ॥
 भित्तं शकलखण्डे वा पुंस्यर्धोऽर्धं समेऽशके ।
 अस्त्री चरणमङ्घ्रिर्ना पत् पादः क्रमणं पदम् ॥ ५६ ॥
 तद्वन्थी घुटिकौ गुल्फौ प्रपदं चरणाम्रकम् ।
 गुल्फशीर्षस्त्विन्द्रवस्तिः कूर्चस्त्वङ्गुष्ठकान्तरम् ॥ ५७ ॥
 पादाङ्गुष्ठाङ्गुलीमध्ये क्षिप्रं क्षेपणमस्त्रियाम् ।
 प्रसृता जाघनी जङ्घा पिण्डिका स्यात् पिचिण्डिका ॥ ५८ ॥
 नलतीरं तूरुपर्व जानुरष्टीवदस्त्रियौ ।
 सक्थि क्लीबं पुमान् बोरुहुरुमूलानि वङ्कणाः ॥ ५९ ॥
 अङ्गुस्तूपस्थ उत्सङ्गः पीठीवं त्वण्डमूलकम् ।
 पायुस्तु ना गुदापाने त्रिवलीकं बुलिश्च्युतिः ॥ ६० ॥

शङ्कुर्मैढः शोफकोशौ शिशनं मेहनशोफसी ।
 पुषो भगं कामपदमक्ली योनिश्च्युतिर्बुलिः ॥ ६१ ॥
 उक्तद्वयमुपस्थोऽस्त्री गुह्यप्रजनने नपुम् ।
 सीवन्यस्मादधःसूत्रं गुह्यमध्यं गुडो मणिः ॥ ६२ ॥
 धारका गुह्यधारायां पुष्फिका गुह्यजे मले ।
 अस्त्रियो मुष्ककोशाण्डाः फेलुको वृषणोऽण्डुकः ॥ ६३ ॥
 काञ्चीपदं कलत्रं च कटिः श्रोणिः ककुद्धानी ।
 पुरोभागोऽस्य जघनो नितम्बोऽपरभागकः ॥ ६४ ॥
 ऊखौ पुंसि कटिप्रोथौ पूलकौ च स्फिचौ स्त्रियौ ।
 कुकुन्दरे कटीकूपौ कटौ तु कटिशीर्षकौ ॥ ६५ ॥
 वंशस्तु पृष्ठमध्यास्थि (मूलभागोऽस्य तु त्रिकम्) ।
 मूत्राशयो वस्तिरक्ली नाभिर्नाभी प्रतारिका ॥ ६६ ॥
 कुक्षिको मलुकस्तुन्दं जठरं चोदरं न ना ।
 अवलम्बलम्बौ तु मध्यमो मध्यमस्त्रियाम् ॥ ६७ ॥
 हृदयं हृदुरो वक्षः स्तनो वक्षसिजः कुचः ।
 स्तनाग्रे पिप्पलं वृन्तं चूचुकं मेचकं शिखा ॥ ६८ ॥
 न क्ली कक्षा बाहुमूलं पार्श्वमस्त्री तयोरधः ।
 पश्चिमाङ्गं तनोः पृष्ठमंससन्धी तु जघुणी ॥ ६९ ॥
 उल्लखलं तु सन्धिः स्यात् कक्षाया वङ्गणस्य च ।
 कण्ठेगुडः कण्ठमणिरंसान्तौ पीठबन्धनौ ॥ ७० ॥
 स्कन्धो दोशिशखरोऽसोऽस्त्री बाहा बाहुभुजौ न षण् ।
 दोर्न स्त्री करपोणिर्ना हरणः करणः प्लवः ॥ ७१ ॥
 प्रवेष्टश्च कफोण्यां तु कूर्परः कफणिर्न षण् ।
 प्रगण्डः कूर्परादूर्ध्वं प्रकोष्ठः कूर्परादवाक् ॥ ७२ ॥
 मणिबन्धो मणिः पाणिमूले पाणौ करः शयः ।
 पञ्चशाखस्तलो हस्तस्तर्जनी तु प्रदेशिनी ॥ ७३ ॥
 अनामिका तु सावित्री कनिष्ठा तु कनीनिका ।
 व्येष्टा तु मध्यमाऽङ्गुष्ठस्त्वङ्गुलोऽथाङ्गुलिः स्त्रियाम् ॥ ७४ ॥
 करशाखाऽथ करभो मध्यं मणिकनिष्ठयोः ।
 तीर्थानि हस्तावयवा नखरस्तु नखोऽस्त्रियाम् ॥ ७५ ॥

पुनर्भवः पाणिरुहो महाराजः पुनर्भवः ।
 खरुलः करजश्चाथ स प्रवृद्धः स्मराङ्कुशः ॥ ७६ ॥
 चपेटश्चर्पटस्तालः प्रहस्तः प्रतलस्तलः ।
 षट् ते तताङ्गुले हस्ते न्युञ्जेऽस्मिन् प्रसृते करे ॥ ७७ ॥
 तौ संहतौ संहतलः सोऽञ्जलिः करभावपि ।
 प्रसृते तु द्रवाधारे गण्डूषश्चुलुकश्चुलः ॥ ७८ ॥
 पताकः कुञ्चिताङ्गुष्ठे संश्लिष्टप्रसृताङ्गुलौ ।
 अक्लीबौ मुष्टिमुस्तू द्वौ सङ्ग्राहो मुचुटिः स्त्रियाम् ॥ ७९ ॥
 घण्टाङ्गुष्ठेन भिन्ना सा खेटकस्त्वर्धमुष्टिकः ।
 प्रदेशतालगोकर्णं वितस्तिः स्त्री यथाक्रमम् ॥ ८० ॥
 तर्जन्यादिभिरङ्गुष्ठे वितते विततैः सह ।
 अवटोमनहस्तः स्यात् सप्रकोष्ठं तताङ्गुलिः ॥ ८१ ॥
 दन्नद्वयसमात्रास्तु जान्वादेस्तत्तदुन्मिते ।
 व्यायामो न्यग्रोधो व्यासश्च भुजौ प्रसारितौ तिर्यक् ॥ ८२ ॥
 त्रिषु तु परे चत्वारः पौरुषमुद्वाहुपुम्माने ।
 गलो निगरणः कण्ठो गरो ग्रीवा तु कन्धरा ॥ ८३ ॥
 शिरोधरावशुषिरा शिरोधिर्व्यापलण्डिका ।
 कम्बुग्रीवा त्रिरेखा सा शिरःपीठः कृकाटिका ॥ ८४ ॥
 घाटाऽप्यवदुरक्लीब उत्तमाङ्गं पुनः शिरः ।
 उष्णीषं शीर्षमक्षत्रं पुंसि मूर्ध्ना च मस्तिकः ॥ ८५ ॥
 मुण्डोऽस्त्री मस्तकोऽप्यस्त्री मुखं तु वदनं घनम् ।
 तैरं तुण्डं वक्त्रमास्यमाननं च द्विजालयम् ॥ ८६ ॥
 ओष्ठस्याधस्तु चिबुकं चुबुकं चबुकं च तत् ।
 अधरस्त्वधरोष्ठः स्यादोष्ठो दन्तच्छदोऽपि च ॥ ८७ ॥
 दन्तवस्त्रं च तत्प्रान्तौ सूकणी दशनाः पुनः ।
 रदनाः खादना दन्ता दंशा मल्ला रदा द्विजाः ॥ ८८ ॥
 मध्यदन्ता राजदन्ता दंष्ट्रा तत्पार्श्वयोर्द्वयोः ।
 तत्पार्श्वयोः स्थिता दन्ता जम्भास्तालु तु काङ्कुदम् ॥ ८९ ॥
 रसज्ञा रसना जिह्वा राजिः सूनाऽप्यधः स्थिता ।
 गण्डो गल्लः कपोलश्च तत्परा तु हनुर्न षण् ॥ ९० ॥

वक्रो नकुटकं घ्राणं घोणा नासा विघूणिका ।
 शिङ्गाणी नासिका चाथ घमनौ नासिकापुटौ ॥ ६१ ॥
 नासाग्रे दृष्टिबन्धोऽथ शिङ्गाणो नासिकामलः ।
 पिण्डूषः कर्णजमलः कर्णः शब्दग्रहः श्रवः ॥ ६२ ॥
 पैण्डूषोऽस्त्री श्रुतिः श्रोत्रं श्रोतश्च श्रवणं श्रवः ।
 पालिस्तु कर्णलतिका वेष्टनं कर्णशङ्कुली ॥ ६३ ॥
 ईक्षणं नयनं चक्षुरक्षि लोचनमम्बकम् ।
 दृष्टिर्दृक् चाथ न पुमांस्तारकाक्षः कनीनिका ॥ ६४ ॥
 बल्गु पद्म च दृग्लोमिन् दृक्छदो वर्त्मवर्त्मनी ।
 बिडालको नेत्रपिण्डो दूषिका त्वक्षिजं मलम् ॥ ६५ ॥
 ललाटमलिकं गोधिः स्त्री तत्प्रान्तौ तु शङ्खौ ।
 भूर्मिल्लिकाऽथ शिरसः पृष्ठे नापितकोलिका ॥ ६६ ॥
 जटुले कालकः पिप्पुस्तिलके तिलकालकः ।
 तनूरुहं रोम लोम केशाः शिरसिजाः कचाः ॥ ६७ ॥
 वालाः कञ्जास्तीर्थवाहाः कुन्तलाश्च शिरोरुहाः ।
 कुञ्चितास्ते कर्कराला बर्बरा अलका अपि ॥ ६८ ॥
 ते ललाटे भ्रमरकाः कुरुला भ्रमरालकाः ।
 पर्यया स्याद्वल्लरीका मल्लर्या मम्पटिः क्षुवः ॥ ६९ ॥
 केशकूटस्तु धम्मिल्लः कबरी कर्परी समे ।
 चोचुस्तु बालकूर्चालः सीमन्तः केशपद्धतिः ॥ १०० ॥
 तद्ग्रन्थिः सन्धितोऽथ प्ता जालिनी गरुडा जटा ।
 प्रलोभ्यं तु शिरस्यं च शीर्षण्यं चामलाः कलाः ॥ १०१ ॥
 चूडा केशी केशपाशी शिखण्डी कमुजा शिखा ।
 बालानां सा काकपक्षः शिखण्डश्च शिखण्डकः ॥ १०२ ॥
 श्मश्रु तु व्यञ्जनं चोटः समे शिङ्गाणशिङ्गिनी ।
 त्वक् स्त्री छदिस्तनुः कृत्तिः संछादन्यप्यस्तृगधरा ॥ १०३ ॥
 रसस्तु घनधातुः स्यादात्रेयः षड्रसासवः ।
 मूलधातुर्वह्निस्तो महाधातुरसृक्करः ॥ १०४ ॥
 रुधिरं लोहितं रक्तमस्रं क्षतजमासुरम् ।
 राक्थं शोष्यं मांसकरं रसतेजो रसोद्भवम् ॥ १०५ ॥

आग्नेयं प्राणदं विस्त्रं वासिष्ठं शोणितासृजी ।
 मांसं तु काश्यपं क्रव्यं तरसं पललं पलम् ॥ १०६ ॥
 रक्ततेजो रक्तभवं पिशितं कीनमामिषम् ।
 मेदस्करं च मेदस्तु पलतेजः पलोद्भवम् ॥ १०७ ॥
 विस्त्रमस्थिकरं स्नेहवरं गौतममित्यपि ।
 अथास्थि कीकसं विडुं कललं ऋमाढिकम् ॥ १०८ ॥
 कुल्यं मेदोभवं मेदस्तेजो मज्जाकरं बलम् ।
 भारद्वाजं श्रुदयितं सारसङ्घातकर्कराः ॥ १०९ ॥
 मज्जा स्त्री कौशिकं सूक्ष्ममस्थितेजोऽस्थिसम्भवम् ।
 अस्थिस्नेहो वीर्यकरो मज्जतेजस्विनौ बली ॥ ११० ॥
 रेतो बीजं वरं वीर्यं हर्षजं स्नेहु पौरुषम् ।
 शुक्लं प्रधानधातुश्च धातवोऽमी नवाष्ट वा ॥ १११ ॥
 तिलकं छोम गोर्द तु मस्तिष्को मस्तुलुङ्गकः ।
 पेशिर्मांसलताऽथ द्वौ वृक्षयौ पार्श्वगतौ गुडौ ॥ ११२ ॥
 अस्त्री परीतदान्त्रं स्यात् कालखण्डं पुनर्यकृत् ।
 गुल्मः ग्रीवा च डिम्बः स्यादष्ट्रीला गर्भसम्पुटः ॥ ११३ ॥
 अग्रमांसं तु हृदयं हृद्वसा त्वामिषो रसः ।
 कङ्कालोऽस्त्री तनोरस्थि करङ्कोऽप्यस्थिपञ्चरम् ॥ ११४ ॥
 पार्श्वस्य वङ्कः पर्वस्त्री पृष्ठस्यास्थि कशेरुना ।
 कर्परो ना करोटिः स्त्री कपालोऽस्त्री शिरोऽस्थिनि ॥ ११५ ॥
 शाखास्थि नलकं जानोरष्टी स्यात् कूर्परस्य च ।
 धमनी त्वीलिका नाली सिरा दोषप्रणालिका ॥ ११६ ॥
 ग्रीवायास्तु शिरा मन्या महास्नायुस्तु कन्धरा ।
 नखारुस्तु स्नसा स्नावः स्नाय्वना सन्धिबन्धनम् ॥ ११७ ॥
 लसीका लसिका रक्तरसमांसविपाकजाः ।
 पूयं तु कुणपं दूष्यं पुरीषं शमलं शकृत् ॥ ११८ ॥
 उच्चारो विण्ण ना गूथो वर्चस्को मलमस्त्रियाम् ।
 विष्ठा चाप्यथ लण्डोऽस्त्री विष्ठा राजियुता दृढा ॥ ११९ ॥
 प्रस्रावो देहवारि स्थान्मूत्रमेकाङ्गुलं च तत् ।
 सृणिका स्यन्दिनी लाला मलं किट्टं च न स्त्रियाम् ॥ १२० ॥

पित्तं मायुर्नरि श्लेष्मा बलासः खेटकः कफः ।

क्षुत् स्त्री क्षुतः क्षवः पुंसि प्रतिश्यायस्तु पीनसः ॥ १२१ ॥

दध्नुः परितापः स्याद् ग्लानिः स्त्री ग्लवधुः पुमान् ।

शोफोऽस्त्री श्वयधुः शोथः पादस्फोटो विपादिका ॥ १२२ ॥

स्फोटकः कीलको गण्डो विस्फोटः पिटका त्रयी ।

खसः पुमान् स्त्रियः कच्छूपामपामाविचर्चिकाः ॥ १२३ ॥

कण्डूकण्डूतिकण्डूयाः खर्जूः कण्डूयने स्त्रियः ।

यक्ष्मा यक्ष्मः क्षयः शोषः कोष्ठः कुष्ठं च मण्डलम् ॥ १२४ ॥

श्वित्रं श्वेतेऽत्र चक्रं तु दद्रुः स्त्री मुखजः पुनः ।

पुंहलोऽपि वरण्डोऽपि व्यङ्गो नीलं वृषन्मुखे ॥ १२५ ॥

मङ्कुस्तु सिद्धम् सिद्धं च केशघ्नं त्विन्द्रलुप्तकम् ।

उद्गालो वमथूद्गारौ वान्तिः प्रच्छदिका वमिः ॥ १२६ ॥

मिणिका वातसञ्चारो हिक्का हेक्का च हिक्किा ।

उच्छ्वासरोधो योऽकस्मात् क्राथोऽसौ क्रथनं क्षणम् ॥ १२७ ॥

अश्मरी मूत्रकृच्छ्रं स्यात् प्रमेहस्त्वतिमूत्रतः ।

आनाहो मलविष्टम्भ उत्थानं तु मलसृतिः ॥ १२८ ॥

नातिभिन्नस्त्वतीसारो ग्रहणी स्त्री प्रवाहिका ।

गलगण्डो गण्डमालो रोहिणी तु गलाङ्कुरः ॥ १२९ ॥

गुल्मः स्यादुदरग्रन्थिः सीवनीजो भगन्दरः ।

शम्बूकावर्त एष स्यात् त्रिदोषोत्थोऽथ पित्तजः ॥ १३० ॥

स्यादुष्टग्रीवकोऽथ स्त्री परिस्त्रावी कफोद्भवः ।

अशौ दुर्नाम वृद्धिस्तु कुरण्डआण्डवर्द्धने ॥ १३१ ॥

उपदंशो लिङ्गशोफ उदावर्तो गुदग्रहः ।

नेत्ररुक् कामला स्त्री कुम्भः स्यात् सा महत्तरा ॥ १३२ ॥

श्लीपदः पदवल्मीको गतिर्नाडीघ्नः पुमान् ।

अर्बुदो मांसकीलः स्यात् पृष्ठग्रन्थिर्गुण्डो गड्डः ॥ १३३ ॥

सुप्तः कुक्कुट एकाङ्गग्रहश्च वरुणग्रहः ।

गजे व्वरस्य नामानि सिंहे तोये च सोऽण्डिकः ॥ १३४ ॥

उष्ट्रे लसोऽभितापोऽश्वे व्याघ्रे पोतो गवीश्वरः ।

बिडाले कणकः पोत्रण्यलसः छर्दनः शुचिः ॥ १३५ ॥

क्रमाद्धारिद्रेन्द्रमदौ मृगरोगौ पपा ततः ।
 महिषे मत्स्यमृगयोः खगे चाक्षेपकोऽनिले ॥ १३६ ॥
 धरण्यां करकोत्पाटावुद्भिजे पाण्डुवर्णकः ।
 मारिर्मसूरी रुग्भेदाः शूलाद्या विद्रधिर्न षण् ॥ १३७ ॥
 व्याधिव्याप्यामया माथरोगामा देहमर्दनः ।
 सन्तापोऽपाटवं मान्द्यमाकुल्यं रुद्रुजे स्त्रियौ ॥ १३८ ॥
 उपचर्या चिकित्सा स्याल्लङ्घनं त्वपतर्पणम् ।
 कुशी भग्नास्थिबन्धः स्यादरिष्टो दंशबन्धनम् ॥ १३९ ॥
 पट्टस्तु व्रणबन्धः स्यान्नस्यं नस्तं च नावनम् ।
 अङ्गुल्यग्रेण चूर्णाद्यैर्घर्षणं प्रतिसारणम् ॥ १४० ॥
 जायुः पुंस्यगदस्तन्त्रं भैषज्यौषधभेषजम् ।
 काथः कषायो निर्यूहः फाण्टोऽतिकाथजो रसः ॥ १४१ ॥
 काथादेस्तु पुनः काथाद् घनीभावो रसक्रिया ।
 वार्तं पाटवमारोग्यं सङ्ग-थं स्वास्थ्यमनामयम् ॥ १४२ ॥
 त्रिष्वतः पटुरुल्लाघो वार्तः कल्यो निरामयः ।
 रोगहार्यगदङ्कारो भिषग्वैद्यश्चिकित्सकः ॥ १४३ ॥
 निदानज्ञस्तु दोषज्ञ आयुर्वेदी तु शास्त्रवित् ।
 आतुरोऽभ्यमितोऽभ्यान्तो विवृन्तो व्याधितोऽपटुः ॥ १४४ ॥
 आमयावी समौ ग्लास्तुग्लानौ पामनकच्छुरौ ।
 वाताशोदद्गुमन्तः स्युर्वातलार्शसदद्गुणाः ॥ १४५ ॥
 श्लेष्मसूः श्लेष्मलः खेटी सातिसारोऽतिसारकी ।
 किलासी सिध्मलो वृद्धनाभौ तुन्दिभतुन्दिनौ ॥ १४६ ॥
 खल्वाटः खलतिर्बभ्रुः शिपिविष्टैन्द्रलुप्तिकौ ॥ १४६ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

पातालकाण्डे भूताध्यायः ॥ ४ ॥

चतुर्थः पातालकाण्डः समाप्तः ॥ ४ ॥

५. अथ सामान्यकाण्डः

गणाध्यायः ॥ १ ॥

पूगप्रकरसङ्घातविसरव्रातसञ्चयाः ।
 वारस्कन्धगणस्तोमसमवायचयव्रजाः ॥ १ ॥
 सन्दोहनिबहव्यूहसमूहनिकराकराः ।
 समुदायः समुदयो निकुरुम्बं कदम्बकम् ॥ २ ॥
 वृन्दं जातं चक्रवालं जालकं पेटकं जटा ।
 धान्यादिवृन्दे कूटोऽस्त्री राशिपुञ्जोत्करा नरिः ॥ ३ ॥
 वृन्दे तिरश्चां यूथोऽस्त्री निकायस्तु सधर्मणाम् ।
 सङ्घसाथौ तु जन्तूनां वर्गस्तु सदृशां गणे ॥ ४ ॥
 पशूनां समजोऽन्येषां समाजो धीमतां सभा ।
 उद्विज्जानां तु षण्डोऽस्त्री स्कन्धोऽश्वनरहस्तिनाम् ॥ ५ ॥
 पटल्यपुं सुश्लिष्टानां सजातीयगणे कुलम् ।
 शौककापोतशावाद्याः शुकादीनां गणे नपुम् ॥ ६ ॥
 क्ली गोत्रप्रत्ययान्तेभ्यः स्यादौपगवकादिकम् ।
 माणवानां तु माणव्यं बाढव्यं तु द्विजन्मनाम् ॥ ७ ॥
 राजन्यकं मानुष्यकं राजकं च पृथक् पृथक् ।
 गर्भिणं यौवनं तासां गाणिक्यं गणिकागणे ॥ ८ ॥
 जनबन्धुगजग्रामसहायानां गणे स्त्रियः ।
 जनताबन्धुतेत्याद्या बाढवं बडबागणे ॥ ९ ॥
 हास्तिकमौष्ट्रकमौक्षकमौरभ्रकमाजकं गजादीनाम् ।
 एवं धैनुकवात्सकमाश्वीयं त्वाश्वमश्वानाम् ॥ १० ॥
 सवर्मणां कावचिकं पादातं पादचारिणाम् ।
 आपूपिकं शाष्कुलिकमित्यादिकमचेतसाम् ॥ ११ ॥
 कैदारिकं तु कैदार्यं क्षैत्रं कैदारकं समम् ।
 केशानां कैशिकं कैश्यं खल्या तु खलिनी समे ॥ १२ ॥
 भैक्षसाहस्रकारीषवार्मणानि च तद्गणे ।
 रथकट्या तु रथ्या स्याद् गोत्रा गव्या च गोगणे ॥ १३ ॥

धूम्या वात्या पाश्या हल्या गल्या नट्या वन्या तृण्या ।
 पृष्ठ्यं तत्तद्वृन्दे सर्वं पार्श्वं वृन्दे पर्शूनां स्यात् ॥ १४ ॥
 मिथुनं द्वितयं द्वैतं द्वयं द्वन्द्वं युगं यमम् ।
 यमलं युगलं युगमं युतकं च द्वयोर्गणे ॥ १५ ॥
 त्रयं त्रयाणां त्रितयं मिथुनं तद्वति त्रिषु ।
 स्त्रीपुंसयोस्तु मिथुनं कशिपुः स्वयन्नवस्त्रयोः ॥ १६ ॥
 औशीरं शय्यासनयोलिङ्गं बुद्ध्यादिसङ्गतौ ।
 ग्रामः परोऽस्त्राद्विषयाद् (गुणाद्) भूतेन्द्रियार्थकात् ॥ १७ ॥
 पक्षः पाशश्च हस्तश्च केशार्थेभ्यः परो गणे ।
 पशूनां गोयुगं युग्मे तत्तदाह्वयपूर्वकम् ॥ १८ ॥
 गणपूरणं गणतिथं पूगतिथं चैवमेव सङ्घतिथम् ।
 बहुतिथसंवत्सरतममासतमान्यर्धमासतमम् ॥ १९ ॥
 यावतिथैतावतिथे तावतिथं कतिथमपि च कतिपयथम् ।
 पञ्चमसप्तमनवमान्यष्टमदशमद्वितीयानि ॥ २० ॥
 षष्ठं प्रथमतृतीये तुरीयतुर्ये चतुर्थञ्च ।
 द्वादशमेकादशमिति रूपं स्याद् विंशतेरर्वाक् ॥ २१ ॥
 विंशं विंशतितममेकविंशमिति वत्परं द्विधा सर्वम् ।
 षष्टितममिति षडेकं रूपमसङ्ख्यादिषष्ट्यादेः ॥ २२ ॥
 शततममेकशततमं सहस्रतममिति च सर्वमेकविधम् ।
 ओजमयुगमं युगमं युगिति द्वितीयतुर्यादि ॥ २३ ॥
 त्रिष्वेते पूरणार्थाः स्युः शब्दा गणतिथादयः ।
 आवलिः पद्धतिः पङ्क्तिरालिलेखा च मालिका ॥ २४ ॥
 एकादयश्च सङ्ख्येये शब्दाः प्राग्विंशतेस्त्रिषु ।
 द्वित्रा द्वौ वा त्रयो वा स्थुरेवं त्रिचतुरा अपि ॥ २५ ॥
 चतुःपञ्चाः पञ्चषाश्च षट्सप्ताद्याश्च तादृशाः ।
 स्त्री पङ्क्तिर्विंशतिस्त्रिंशच्चत्वारिंशच्च पञ्चाशत् ॥ २६ ॥
 षष्टिः सप्तत्यशीतिश्च नवतिश्च दशोत्तराः ।
 क्रमेणाथ परेणाथ परे दशगुणोत्तराः ॥ २७ ॥
 शतं सहस्रमयुतं नियुतं प्रयुतार्बुदे ।
 न्यबुवं बुन्दस्त्रवे च निस्त्रव शङ्खमम्बुजम् ॥ २८ ॥

समुद्रो मध्यमन्तं च परार्धं च यथाक्रमम् ।
 परं परार्धाद् द्विगुणमथ स्त्री कोटिरर्बुदे ॥ २६ ॥
 व्यत्यासेन च दृश्येते नियुतप्रयुते कचित् ।
 वृन्दादिषु तु षट्स्वन्ये निखर्वं बद्धमक्षितम् ॥ ३० ॥
 व्योम चान्तश्च सर्वश्च समुद्राद्यास्तु वा त्रिषु ।
 अन्ये त्वाहुः शतं कोटिः शङ्कुर्वृन्दं महागुणः ॥ ३१ ॥
 पद्मं महाम्बुजं चेति क्रमाक्षगुणोत्तरम् ।
 सहस्राणां शते लक्षा लक्षं च नियुतञ्च तत् ॥ ३२ ॥
 पङ्क्त्यादयः स्युः संख्यायां संख्येयेषु च वस्तुषु ।
 संख्यायां द्वयेकबहुताः संख्येयेषु सदैकता ॥ ३३ ॥
 तद्यथा विंशतिर्गावः स्वावृत्तौ जातु नैकता ।
 तद्यथा विंशतिर्विप्रास्तिस्रो विंशतयो भटाः ॥ ३४ ॥
 बहुव्रीहौ बहुवचो वाच्यलिङ्गं च तद्यथा ।
 उपविंशैर्भुजैर्भुक्तमुपत्रिंशा अजा इति ॥ ३५ ॥
 कला गणनसंख्याने हननं ताडनं समे ।
 वर्गस्तावत्कृतिश्चेति तावत्कृत्वः कृतेर्द्वयम् ॥ ३६ ॥
 तन्मूले तु पुमान् हेतुर्गच्छा वाञ्छितराशयः ।
 गण्डः कपर्दाश्चत्वारस्ते बोध्री पञ्च तद्द्वयम् ॥ ३७ ॥
 बिन्दुकोऽस्त्री तद्द्वये तु पणपाणिकपादिकाः ।
 क्रमात्ततोऽङ्गजो रुच्यः कार्षिकश्च चतुर्गुणाः ॥ ३८ ॥
 कार्षापणः कार्षिकः स्यात् स षोडशपणः कचित् ।
 लोहे विंशतिमाषोऽसौ कार्षिके ताम्रिके पणः ॥ ३९ ॥
 ताम्रकर्षकृता मुद्रा कचित् कार्षापणः पणः ।
 स एव चाधिकेत्युक्ते धानका तच्चतुष्टयम् ॥ ४० ॥
 ता द्वादश सुवर्णोऽस्त्री निष्को दीनार इत्यपि ।
 साशीतिपणसाहस्रो दण्ड उत्तमसाहसः ॥ ४१ ॥
 त्रसरेणुभिरष्टाभिलिङ्गा सैव मरीचिका ।
 रथरेणुश्च रेणुश्च तस्तिष्ठो राजसर्षपः ॥ ४२ ॥
 धुरणश्च यवाग्रश्च ते त्रयो गौरसर्षपः ।
 तेऽष्टौ यवः षोडश तु यवा माषोऽथवा त्रिभिः ॥ ४३ ॥

यवैर्गुञ्जा पञ्च गुञ्जा माषः कुप्ये तु सप्त ताः ।
 रूप्यमाषो द्विगुञ्जो वा धरणं षोडशैव ते ॥ ४४ ॥
 शतमानं तु दशभिर्धरणैः पलमेव च ।
 माषस्तण्डुलमात्रो वा हेम्नस्तैरष्टभिः पणः ॥ ४५ ॥
 निष्कोऽस्त्री विंशतिपणस्तेऽष्ट वा दश वा पलम् ।
 यः पञ्चकृष्णलो माषः कुप्ये वा सप्तकृष्णलः ॥ ४६ ॥
 तौ द्वौ माषावर्णिका स्याल्लोहितीकं त्रिमाषकम् ।
 शाणो मण्डः पिचूलं च माषाः स्युश्चतुरादयः ॥ ४७ ॥
 मक्षुणं सप्तमाषं स्यादण्डिका तच्चतुर्थवा ।
 द्रक्षुणं द्रक्षुमं कोलं वटकं चाष्टमाषके ॥ ४८ ॥
 तृतीये ध्वानका शाणभागे माषास्तु षोडश ।
 सुवर्णोऽक्षः पिचुः पाणिः कर्षोऽस्त्री क्रोडबिन्दुके ॥ ४९ ॥
 बिडालपादकं हंसपदं ग्रासग्रहं तलम् ।
 शतमानं तु कर्षे द्वे शुक्तिरष्टमिका न ना ॥ ५० ॥
 ते द्वे चतुर्थिका वा क्ली निक्कुञ्च्याज्यपलानि च ।
 बिल्वः प्रकुञ्चं मुष्टिश्च हेम्नोऽक्षे विस्तवारदौ ॥ ५१ ॥
 पादिकं ताम्रकर्षं स्यादिन्दुः स्याद्रजते पले ।
 कुरुविस्तः पले हेम्नः प्रसृतोऽस्त्री द्विमुष्टिके ॥ ५२ ॥
 प्रसृतौ द्वावञ्जलिः स्यात् कुडपो बाहिकोऽध्युषः ।
 तौ द्वौ मान्यष्टमानं च ते द्वे प्रस्थः स कुप्यके ॥ ५३ ॥
 द्वात्रिंशत्पलकोऽन्येषां द्वादशैव पलानि सः ।
 चतुष्प्रस्थः पुना राशिर्महोद्रेको बृहाणकः ॥ ५४ ॥
 पात्रं शूर्पावरं पिष्टं सेहिका द्व्याढकोऽस्त्रियाम् ।
 कंसं चाथ चतुष्के स्युर्द्रोणोऽस्त्री कलशो घटः ॥ ५५ ॥
 अमर्णं नल्वलं शौर्पमुन्मानं तद्द्वयं पुनः ।
 कुम्भः शूर्पोऽस्त्रियां तौ द्वौ गोणी बाहस्तु तद्द्वयम् ॥ ५६ ॥
 तौ द्वौ खारी परे त्वेनां विदुः कुम्भी परे पुनः ।
 खारीं कंसयुगेनान्ये मानीं बाहं परे विदुः ॥ ५७ ॥
 बाहं केचिच्चतुःखारीं खारीभागं च गोणिकाम् ।
 बाहं प्रस्थद्वयं केचित् कुम्भानां विंशतिर्जटी ॥ ५८ ॥

दश कुम्भाः पाञ्चमिकः कुम्भोऽयमिति केचन ।
 धारणं तु पलान्यष्टौ हेम्नस्तान्नस्य सप्ततिः ॥ ५६ ॥
 दशान्येषां शतं मानं साधै रूष्यपलैस्त्रिभिः ।
 तुला पलशतं तास्तु दशर्क्षं धटिकोऽस्त्रियाम् ॥ ६० ॥
 तौ तु द्वौ शाकटो भारः शाकटीनः शलाटवत् ।
 भारा दश समं सङ्गं धारभारं च शाकटम् ॥ ६१ ॥
 आचितं द्वयाचितं होढं हेलकं समकं समम् ।
 बाहितं भारितं चाष्टावृक्षादशगुणाः क्रमात् ॥ ६२ ॥
 माषः शाणस्तलं मुष्टिरञ्जलिः प्रस्थ आढकः ।
 द्रोणो गोणी च खारी च क्रमादेतच्चतुर्गुणम् ॥ ६३ ॥
 पाय्यं हस्तादिभिर्मानं द्रुवयं कुडबादिभिः ।
 पौतवं तुलया तस्य सूत्रं स्याद्रागसूत्रकम् ॥ ६४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 सामान्यकाण्डे गणाध्यायः ॥ १ ॥

धर्मकर्माध्यायः ॥ २ ॥

रूपं तत्त्वं सतत्त्वं च स्वरूपं च सलक्षणम् ।
 सहजं निजमाजानं धर्मसर्गौ निसर्गवत् ॥ १ ॥
 स्वभावः प्रकृती रीतिरवस्था तु दशा स्थितिः ।
 प्रभावः प्रभवन्ती स्यात् प्रभुता प्रभविष्णुता ॥ २ ॥
 परभागो गुणोत्कर्षः प्राग्भारोऽतिशयो भरः ।
 विस्तारो विग्रहो व्यासः स तु शब्दस्य विस्तरः ॥ ३ ॥
 अनायासार्थकं फाण्टं दौर्मत्यं तु करैरकम् ।
 विघ्नोऽन्तरायः प्रत्यूहो रोषे त्वादीनवाश्रवौ ॥ ४ ॥
 दैर्घ्यमायाम आनाहः परिणाहो विशालता ।
 वैपरीत्यं विपर्यासो व्यत्ययश्च विपर्ययः ॥ ५ ॥
 व्यत्यासो व्यतिहारः स्यादन्तर्गङ्गु निरर्थकम् ।
 तत्क्षणं स्यादेकपदं यदृच्छा नियमोऽस्मितिः ॥ ६ ॥
 वण्टो विभागो भागोऽशः पादस्त्वंशश्चतुर्थकः ।
 कला तु षोडशो भागो वारस्त्ववसरः क्षणः ॥ ७ ॥
 प्रतिकूलानुकूलार्थे अपष्ठुरमपष्ठु च ।
 पृष्ठमांसादनं पश्चाद् गतस्यार्थस्य गर्हणम् ॥ ८ ॥
 आग्नेडनं ऋटप्पः स्याज्झम्पः सम्पातपाटवम् ।
 कर्म क्रियाऽप्यनुष्ठानं तद्भेदा गमनादयः ॥ ९ ॥
 यात्रा ब्रव्या च गमनं प्रस्थानं च गतिर्गमः ।
 चक्रावर्तो भ्रमो भ्रान्तिर्भ्रमिर्धूर्णिश्च घूर्णनम् ॥ १० ॥
 ईहनं शीघ्रगमनं सारणं छद्मना गतिः ।
 ब्रव्याऽटाटया पर्यटनमल्पेऽश्वनि गतागतम् ॥ ११ ॥
 सविकारा गतिः सोरो भेलनं तरणं प्लवः ।
 कादाचित्कस्तु भेयोऽसौ क्षेपो लङ्गनलङ्घने ॥ १२ ॥
 निर्याणं स्यान्निर्गमनमंहनं वक्षसा गतिः ।
 प्रतिबन्धः प्रतिष्ठम्भः सम्बन्धः प्राप्तिरापनम् ॥ १३ ॥
 निर्बन्धोऽभिनिवेशः स्यात् प्रवेशोऽन्तरगाहनम् ।
 आस्यासनोपवेशश्च निवेशो रचना स्थितिः ॥ १४ ॥

अथाभ्यादानमारम्भः प्रक्रमः स्यादुपक्रमः ।
 प्रत्युत्क्रमः प्रयोगः स्यादारोहणमभिक्रमः ॥ १५ ॥
 आक्रमोऽभिक्रमः क्रान्तिर्व्युत्क्रमस्तूत्क्रमो मृतम् ।
 विक्रमः शौर्यकरणमत्याधानमतिक्रमः ॥ १६ ॥
 भूमानं विक्रमः पद्भ्यां निर्हारीऽभ्यवकर्षणम् ।
 अनुहारोऽनुकारः स्यात् परिहारो निवर्तना ॥ १७ ॥
 प्रत्याहार उपदानमभिहारस्त्वभिग्रहः ।
 समास उपसंहारः समाहारः समुच्चयः ॥ १८ ॥
 अपहारस्त्वपादानं प्रहारस्त्वभिताडनम् ।
 उपलम्भस्त्वनुभवो विलम्भस्त्वतिसर्जनम् ॥ १९ ॥
 विप्रलम्भो विसंवादः प्रतिलम्भस्तु लम्भनम् ।
 स्वतन्त्रवृत्तिर्व्युत्थानमभ्युत्थानं तु गौरवम् ॥ २० ॥
 संस्थानं सन्निवेशः स्यादुपस्थानं तु सङ्गतिः ।
 धान्योत्क्षेपणमुत्कारः पराकारस्तु धिक्क्रिया ॥ २१ ॥
 विकारो विप्रकारः स्यादाकारस्त्वङ्ग इङ्गितम् ।
 उपक्रियोपकारः स्यादपकारोऽन्यतः कृतिः ॥ २२ ॥
 प्रकार इत्थम्भावः स्यादपकारोऽन्यपीडनम् ।
 प्रत्याख्यानं निराकारः प्रत्यादेशो निरासवत् ॥ २३ ॥
 परिणामोऽन्यथाभावः सन्नामस्त्वन्यथाकृतिः ।
 प्रणामः प्रणिपातः स्यादुन्नामस्तुङ्गतोन्नतिः ॥ २४ ॥
 उद्योगोऽस्त्री समुत्थानं विनियोगोऽर्पणं फले ।
 विधिर्नियोगः सम्प्रेष उपयोगः फलक्रिया ॥ २५ ॥
 संयोगसम्प्रयोगौ सम्भेदः सन्निपातसंश्लेषौ ।
 सम्पाते विश्लेषे तु विप्रयोगविरहवियोगाः ॥ २६ ॥
 विगमोऽपगमोऽपायो मेलने सङ्गसङ्गमौ ।
 शमथस्तु शमः शान्तिर्दान्तिस्तु दमथो दमः ॥ २७ ॥
 बन्धनं प्रसितिर्बन्धः क्लान्तिस्तु क्लमथः क्लमः ।
 परिसर्या परीसारः परिसर्पः परिक्रमः ॥ २८ ॥
 लवे विलावो लवनं तेमः स्तेमः समुन्दनम् ।
 प्रतिश्रवः प्रतिख्यातिरपेक्षा प्रतिज्ञागरः ॥ २९ ॥
 संयामसंयमौ यामो वियामो वियमो यमः ।
 संवाहनं मर्दनं स्यात् पर्यवस्था विरोधनम् ॥ ३० ॥

संस्तवः स्यात् परिचय उदजः प्रेषणे पशोः ।
 पवनं पवनिष्पावौ जूतिस्तु जवनं जवः ॥ ३१ ॥
 प्रेजनं स्यादपसरो रन्धनं पचनं पचा ।
 क्षयः क्षिया नयो नायो मदो मादः स्नवः स्नावः ॥ ३२ ॥
 उद्वेग उद्वभ्रमः श्रायः श्रयणं प्रमितिः प्रमा ।
 स्फातिस्तु वृद्धिः स्फुरणं स्फुलनं क्षेपणं क्षिपा ॥ ३३ ॥
 उद्यमो गुरणं श्च्योतिः प्रघारः प्रथनं प्रथा ।
 भङ्गिस्तु व्याकृतिः खेदो निर्वेदो घटना घटा ॥ ३४ ॥
 यत्प्रेषणं समाहूय तस्मिन् स्यात् प्रतिशासनम् ।
 वञ्चनं त्वतिसन्धानं व्यलीकं च प्रतारणम् ॥ ३५ ॥
 निष्ठीवोऽस्त्री निष्ठीवनमपि निष्ठेवनं च निष्ठ्यूतिः ।
 उपरत्यारत्यपरतिविरतय उपरमण उपरामः ॥ ३६ ॥
 संविदागूः प्रतिज्ञाऽऽस्थाऽप्यभ्युपायः प्रतिश्रवः ।
 अङ्गीकाराभ्युपगमनियमाश्रवसंश्रवाः ॥ ३७ ॥
 प्रणीतिः स्यादनुनयः प्रश्रयः सान्त्वनं तथा ।
 सपत्राकृतिनिष्पत्राकृती त्वत्यन्तपीडने ॥ ३८ ॥
 वर्णनं स्याद्विभजनं प्रवाहस्तु परम्परा ।
 श्रन्थनं ग्रन्थनं गुम्फः सन्दर्भो रचना न ना ॥ ३९ ॥
 विधूननं विधुवनं त्यागो हानं च वर्जनम् ।
 आवर्जनं द्रवक्षेपे निधानं क्षेपणासने ॥ ४० ॥
 सम्मूर्च्छनं व्यापनं स्याद् विदरः स्फुटनं मिदा ।
 आवर्तनं कथनं स्यात् कथनं पाकवर्तनम् ॥ ४१ ॥
 संवीक्षणं विचयनं लोटनं तु विवेष्टनम् ।
 इत्यादयः क्रियाशब्दा लक्ष्या धातुषु लक्षणैः ॥ ४२ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 सामान्यकाण्डे धर्मकर्माध्यायः ॥ २ ॥

गुणाध्यायः ॥ ३ ॥

गुणो जसुर्द्रव्यपदो द्वौ स्नेहे मार्जमार्जनौ ।
 मसृणत्वे तु मारुङ्गक्रासनौ द्रवणे द्रुतिः ॥ १ ॥
 खादीनां तु गुणाः शब्दः स्पर्शो रूपं रसः क्रमात् ।
 गन्धश्चेतीन्द्रियार्थास्ते विषया गोचराश्च ते ॥ २ ॥
 सत्यं तथ्यमृतं सम्यक् समीचीनं तथार्थवाक् ।
 कर्कशे परुषो रूक्षो मठरः खोरणः खरः ॥ ३ ॥
 उत्क्षुद्रलोऽथ मसृणे श्लक्ष्णसोमालचिकणाः ।
 पिच्छिले स्याद् विज्विलः कठिने खरटः खटः ॥ ४ ॥
 कठोरनिष्ठुरक्रूरदृढदारुणकक्खटाः ।
 खरश्च सुकुमारे तु कोमलो मृदुलो मृदुः ॥ ५ ॥
 शीतले शीकरः शीतः सुषिकः सुषिमो जडः ।
 समीकः सोलिकः सोलः स्कन्दोलो मेकलस्तलः ॥ ६ ॥
 तुषारः शिशिरः स्फीतः सेभ्यः सीमो हिमोऽपि च ।
 उष्णं ज्वलः खरः क्रूरो बालस्तिग्मः कृशश्चुपः ॥ ७ ॥
 सोमलो वह्निको व्यक्तस्तालको जलशीनकः ।
 अङ्गारो दहनस्तप्तः प्रूष्वो धूम्रः प्रतापनः ॥ ८ ॥
 तीक्ष्णश्चण्डोल्बणप्रोन्द्रकरालिविकारालिनः ।
 मन्दोष्णमोष्णं कोष्णं च कवोष्णं च कदुष्णवत् ॥ ९ ॥
 शुक्ले शुभ्रश्चिश्वेताः पुण्ड्रको घबलोऽर्जुनः ।
 अवदातः सितो गौरो विशदश्येतपाण्डराः ॥ १० ॥
 काले कृष्णासितश्यामनीलश्यामलमेचकाः ।
 रोहिते लोहितो रक्तो हारिद्रे पीतपीतले ॥ ११ ॥
 उत्पिशस्तु सितश्यामे हरिणे पाण्डुपाण्डरौ ।
 कपोतस्तु कपोताभः पद्मः पीतसितासितः ॥ १२ ॥
 पिङ्गो नीलसितश्यामः सोबालः कृष्णधूमलः ।
 सितकाचस्तु पिङ्गाणः कण्डारः सितकाचरः ॥ १३ ॥
 बरालः सितपिङ्गाणः स्तोकपाण्डुस्तु धूसरः ।
 कोसलः पाण्डुलः श्यामश्चाटः कृष्णहरिः सितः ॥ १४ ॥

बलक्षस्तु सितश्यामः सैराभः श्वेतपीतलः ।
 सितपीतहरित्रीलस्तरलो वृद्धपत्रवत् ॥ १५ ॥
 रक्तपीतासितश्येते बोलः कारीषभस्मवत् ।
 उत्पिशाद्यास्त्वमी मिश्रवर्णाः शुक्लप्रधानकाः ॥ १६ ॥
 शोणोऽरुणश्च सन्ध्याभः श्वेतरक्तस्तु पाटलः ।
 मरालोऽल्पः पीतरक्तः पीतरक्तस्तु पिञ्जरः ॥ १७ ॥
 बभ्रुः कडारः कपिलो विदग्धो दुष्टरक्तवत् ।
 श्यावे तु कपिशः पिङ्गे पिशाङ्गः कटुपिङ्गलौ ॥ १८ ॥
 नीलपीतारुणः शारो जोणालो नीललोहितः ।
 इति लोहितवर्गीणा अथ पीतप्रधानकाः ॥ १९ ॥
 सेरालोऽल्पसितः पीतः पेरालः पीतधूमलः ।
 पीतश्यामल ओरालो गौरः स्यात् पीतलोहितः ॥ २० ॥
 कीनाशः पीतहरितो हरितो नीलपीतलः ।
 कृष्णवर्ग्याः पुनर्धूमधूमलौ कृष्णलोहिते ॥ २१ ॥
 पीतकृष्णहरिद्राभः काचरः कृष्णधूमलः ।
 कृष्णपीतस्तु काचोऽथ पालाशो हरितो हरित् ॥ २२ ॥
 तारावतारकिर्मीरशबलैतास्तु चित्रके ।
 स चान्योन्यानवष्टम्भान्नानावर्णसमुन्नयः ॥ २३ ॥
 कर्बुरः शुक्लहरित आरुः स्यात् कृष्णपिङ्गलः ।
 सितकृष्णस्तु कल्माषः पिञ्ज्रूषः सितकाचरः ॥ २४ ॥
 कृष्णरक्तसितः शारः क्रिमिरः सितलोहितः ।
 मधुरस्तु रसज्येष्ठो गुली स्वादुर्मधूलकः ॥ २५ ॥
 अम्लस्तु पाचनः शुक्तो लवणस्तु पटुः सरः ।
 ऊषणस्तु कटुस्तीक्ष्णस्तिक्तस्तु विसरः कटुः ॥ २६ ॥
 कषायोऽस्त्री स्वप्रतिष्ठस्तुवरो मधुराङ्गकः ।
 मधुराम्लौ सलवणौ कटुतिक्तकषायकाः ॥ २७ ॥
 षट् ते मूलरसाः शेषा रसका योग्योनयः ।
 स्युः शाडववराश्रयूषाः श्रयूष आसोऽपि च क्रमात् ॥ २८ ॥
 अम्लाद्या मधुरोपेताः साम्लास्तु लवणादयः ।
 चाटसस्तीक्ष्णचो रूषः शुक्तश्च लवणेन तु ॥ २९ ॥
 युक्ता वैखारकः क्षारः स्वाद्यश्च कटुकादयः ।
 तिक्तिकः कटुतिक्ते स्यात् कुल्या कटुकषायके ॥ ३० ॥

तैलित्सस्तिककषाय एवं पञ्चदश द्विकाः ।
 क्रमेण शोणिकः श्यावो रातपं रागशालवः ॥ ३१ ॥
 सस्वाद्वम्ला लवणाद्याः सस्वादुलवणेषु ते ।
 कटुकादिषु कट्वारो माधुरो मधुकः क्रमात् ॥ ३२ ॥
 तिक्तकषायौ सस्वादुकटू मधुमधूलिकौ ।
 स्वादुतिक्तकषाये तु मधुलोऽमी दश त्रिकाः ॥ ३३ ॥
 कट्वाद्याः साम्ललवणा बोसरः खलुषः क्रमात् ।
 कोलश्चाथो साम्लकटू कलुषत्रिखरौ क्रमात् ॥ ३४ ॥
 कषायतिक्तौ सोलस्तु शुक्ततिक्तकषायके ।
 अम्लतिक्तकषायेऽस्मिन् बालाम्लो बालचूतकः ॥ ३५ ॥
 कषार्यातिक्तौ सपटुकटू वेलानवेलजौ ।
 कषायतिक्तलवणेऽसोलोऽथैलारसालकः ॥ ३६ ॥
 कटुतिक्तकषाये स्यात् तदेवं विंशतिस्त्रिकाः ।
 स्वाद्वम्ललवणोपेता कट्वाद्या मधुमालकः ॥ ३७ ॥
 मधुबोलः सोरणश्च कचिदन्त्यः करोलकः ।
 सस्वाद्वम्लकटौ तिक्ते लीमुषः परुषः पुनः ॥ ३८ ॥
 कषायेऽत्रैव कलुषाकषायौ जालनः पुनः ।
 स्वाद्वम्लतिक्ततुवरे सस्वादुलवणोषणे ॥ ३९ ॥
 रसकोपशाडविकौ कषाये बलजः पुनः ।
 तिक्ते तिक्तपटुस्वादुकषाये फलसोऽथुसौ ॥ ४० ॥
 सस्वादुकटुतिक्ते तु कषाये स्यात् कलापकः ।
 जलोलकः साम्लपटुकटौ तिक्ते कषायके ॥ ४१ ॥
 तुवरः स्यात् कुवेलश्च खरस्तु लवणे युते ।
 अम्लतिक्तकषायैस्तैः संयुते पलुषः कटौ ॥ ४२ ॥
 कट्वाद्यालोडकास्त्वेवं चतुष्का दश पञ्च च ।
 स्वादुमेकं विहायान्ये युक्ताः पञ्च स्युरोलकः ॥ ४३ ॥
 आलुकस्तु विहायाम्लं पटुं हित्वा पराञ्जनः ।
 ओलकः कटुकं हित्वा विना तिक्तेन चोलकः ॥ ४४ ॥
 समोलकः कषायेण षडेवं पञ्चका रसाः ।
 षट्कस्त्वेकः षड्रसः स्यात् त्रिषष्टिः स्युस्ततो रसाः ॥ ४५ ॥
 मधुराम्लादिसंज्ञाश्च शाडवादौ समुन्नयेत् ।
 न स्यात् पूर्वसस्याख्या परावररसाह्वयात् ॥ ४६ ॥

सुरभ्यसुरभी गन्धौ विभिन्नौ तौ च योगतः ।
 बहुधा तत्र सुरभिः कटुस्तिक्तः कषायकः ॥ ४७ ॥
 समष्टिरप्यतोऽन्यो यो गन्धोऽसुरभिरित्यसौ ।
 मल्लिकायां स्थितो गन्धो मङ्गल्या मङ्गलश्च सः ॥ ४८ ॥
 जात्यां सौमनसो नागकेशरे गन्धसारणः ।
 चम्पके सुरभिः पद्मे वासनः कुटजे घुणः ॥ ४९ ॥
 कस्तूरिकायामामोदः कुङ्कुमे पलशीनकः ।
 पारिहाव्यो मरुवके पाटले तृणशोणकः ॥ ५० ॥
 चन्दने चन्द्रिकः साले शोणो गन्धिक उत्पले ।
 केतके शोणितं सर्जधूपे सरलशोणिकः ॥ ५१ ॥
 वकुले स्यात् परिमलो बलनोऽगरुधूपके ।
 सहकारे सरलिको गुग्गुलौ त्ववलोलुकः ॥ ५२ ॥
 कुन्दोपरातो मदने दुलो जम्बीर(के स्थितः) ।
 मल्ल्यां (स्थितस्तु) खवुकः कर्पूरे मुखवासनः ॥ ५३ ॥
 आब्ये समशनोऽशोके सुरवस्तिलके कुलः ।
 गात्रे गन्धो गन्धके तु गन्धिकः पित्तले लसः ॥ ५४ ॥
 गुदवायौ तु दुर्गन्धः किट्टे कोलः कफे घनः ।
 मस्त्यत्वच्यामिषो निम्बे तिक्तको गोमुखे सणिः ॥ ५५ ॥
 उद्दंशे देहलिर्गोविण्मूत्रयोर्मुकमुर्मुखौ ।
 शुक्ले मांसिर्मदे रुक्षो मूत्रिते त्वन्धमेहलः ॥ ५६ ॥
 स्नेहदोषे मेचटिको गूढे स्थालिकवैणिकौ ।
 चिस्त्रो यकृति पूये तु पूतिर्मूत्रे तु मेहलः ॥ ५७ ॥
 दुष्टव्रणे तु कथितो रुधिरे त्वाममांसकः ।
 गन्धशब्दास्त्वमी योज्याः साम्याद् द्रव्यान्तरेष्वपि ॥ ५८ ॥
 एते सत्यादयः शब्दाः शब्दस्पर्शादिगोचराः ।
 उक्तलिङ्गा गुणार्थास्ते सर्वेऽपि गुणिनि त्रिषु ॥ ५९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

सामान्यकाण्डे गुणाध्यायः ॥ ३ ॥

अर्थवलिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

गुणयुक्तं क्रियायुक्तं द्रव्ययुक्तं च वक्ति यः ।
 स शब्दो वाच्यवलिङ्गो बालो वक्ता धनी यथा ॥ १ ॥
 बालो हिम्भोऽर्भकः शावः कुमारो दारकः शिशुः ।
 अप्युत्तानशयो वत्सः स्तनपस्तु स्तनन्धयः ॥ २ ॥
 वटुर्माणवकोऽथ स्याद् वयस्थस्तरुणो युवा ।
 जीनो जीर्णो वृद्धवयाः प्रवयाः स्थविरो जरन् ॥ ३ ॥
 वर्षीयान् दशमी व्यायान् कनिष्ठोऽवरजोऽनुजः ।
 जघन्यजो बबीयांश्च पूर्वजे त्वग्निरोऽग्रजः ॥ ४ ॥
 पितुर्विभक्तः संसृष्टी भ्रात्रार्थेनैकतां गतः ।
 पृथिः किरातोऽल्पतनुर्दुर्बलस्तु कृशस्तनुः ॥ ५ ॥
 पीनस्तु पीवरः पीवा प्रबलो मांसलोऽसलः ।
 सिंहसंहननः स्वङ्गस्तुण्डिरुन्नतनाभिकः ॥ ६ ॥
 पिचण्डिलस्तूदरिलस्तुन्दिलस्तुन्दितुन्दिकौ ।
 वलिनो वलिभो बिभ्रद्वली राजीस्तु राजिलः ॥ ७ ॥
 एवं सिरालमणिलौ प्रलम्बाण्डस्तु मुष्करः ।
 केशवः केशिकः केशी रोमशो लोमशः समौ ॥ ८ ॥
 श्मश्रुलो जटिलश्चैवं दन्तुरः स्यादुदग्रदन् ।
 किरिभस्तद्विपर्यासे मिर्मिरः स्तब्धलोचनः ॥ ९ ॥
 आसीनः उपविष्टः स्यादूर्ध्वङ्गस्तूर्ध्वजानुकः ।
 संङ्गः संहतजालुः स्यात् प्रङ्गः प्रगतजानुकः ॥ १० ॥
 विकलाङ्गस्तु पोगण्डो गङ्गुले न्युब्जकुब्जकौ ।
 खुरणाः स्यात् खुरणसो नःक्षुद्रः क्षुद्रनासिकः ॥ ११ ॥
 खरणाः स्यात् खरणसो विग्रो विगतनासिकः ।
 नतनासेऽवटीटः स्यादवनाटोऽप्यवभटः ॥ १२ ॥
 केकरो वलिरोऽनेडमूकोऽन्धः काण एकहृक् ।
 एडस्तु वधिरः कण्व एडमूकस्त्ववाक्छ्रुतिः ॥ १३ ॥
 अनेडमूकस्तु जडो जलो मूकः कलोऽप्यवाक् ।
 पङ्गुः श्रोणे खङ्गकोलौ खोडेऽथ कुकरे कुणिः ॥ १४ ॥

शिपिविष्टस्तु दुश्चर्मा दुर्बालश्च द्विनम्रकः ।
 क्षपणश्रमणौ नम्रो नम्राटश्च दिगम्बरः ॥ १५ ॥
 आजीवो जीवको जैनो निर्ग्रन्थो मलवार्यपि ।
 हृदयालुः सुहृदयो महेच्छस्तु महाशयः ॥ १६ ॥
 प्रौढः प्रगल्भः प्रतिभायुक्तोऽन्यस्त्वपगल्भकः ।
 धृष्टो धृष्णुर्विजातश्च शालीनस्तु विपर्यये ॥ १७ ॥
 अधीरे कातरत्रस्तुभीरुभीरुकभीलुकाः ।
 दरिते भीतचकितत्रस्ताः स्निग्धस्तु वत्सलः ॥ १८ ॥
 प्रवीणोऽभिजनोऽभिज्ञो विज्ञो वैज्ञानिकः कृती ।
 कृतकृत्यः कृतमुखो निष्णातो दक्षशिक्षितौ ॥ १९ ॥
 अग्राम्ये सरलोदारविदग्धच्छेकदक्षिणाः ।
 गर्विते स्तब्ध उद्वीवो बाहो धीरः स इत्यपि ॥ २० ॥
 मूर्खे त्वनेढो देवानांप्रियो यो नामवर्जितः ।
 अपि वैधेयमूढाज्ञा मातृशिष्टयथोद्भूतौ ॥ २१ ॥
 नीचे तु हीनापशदपामरेतरबबेराः ।
 नैकृतः स्यान्नैकृतिकः शठः कौनृतिकोऽनृजुः ॥ २२ ॥
 कुहकः स्यात् कापटिको दाण्डाजिनिकजालिकौ ।
 ढौण्डुको ढण्डुकश्चाथ कोलाकोऽर्यरतः सदा ॥ २३ ॥
 क्रूरो नृशंसोऽप्यदये धूर्ते व्यसकवञ्चकौ ।
 कौक्रुटो मायिको मायी मायावी प्रातिहारिकः ॥ २४ ॥
 ना दुर्जनः खले कर्णेजपः पिशुनसूचकौ ।
 कद्वदः कुत्सितोऽत्यर्थं परिभोक्ता गुरुस्वभृत् ॥ २५ ॥
 नीलीरागः स्थिरप्रेमा हरिद्रारागकः पुनः ।
 अस्थिरप्रेम्णि गोष्ठश्वः पुनः स्थाने स्थितो द्विषन् ॥ २६ ॥
 अन्वेष्टा स्यादनुपदी चिद्रूपस्तु सुमानसः ।
 स्वच्छन्दोऽपावृतः स्वैरी स्वतन्त्रो निरवग्रहः ॥ २७ ॥
 परच्छन्दः पराधीनः परवान् परतन्त्रकः ।
 निम्नः प्रसव्य आयत्तो विधेयो गृह्यको वशः ॥ २८ ॥
 अहंयुः स्यादहङ्कारी शुभंयुस्तु शुभान्वितः ।
 सूक्ष्मदर्शी कुशाग्रीयधीर्विलक्षः सविस्मयः ॥ २९ ॥
 यद्भविष्यो दैवपरो यद्वदः स्यादनुत्तरः ।
 परीक्षकः कारणिक उद्युक्ते प्रसितोत्सुकौ ॥ ३० ॥

अन्तर्वाणिः शास्त्रवित् स्यादविनीतः समुद्धतः ।
 प्रत्युत्पन्नमतिस्तु स्यात् तत्कालोत्पन्नधीर्नरः ॥ ३१ ॥
 प्रणेत्यः प्रश्रितो वश्यो विधेयो निभृतो यतः ।
 क्रोधनः कोपनोऽमर्षी चण्डस्तु भृशकोपनः ॥ ३२ ॥
 सहिष्णुः सहनः सोढा तितिष्ठुः क्षमिता क्षमी ।
 हर्षमाणो विकुर्वाणः प्रमना मुदितः समुत् ॥ ३३ ॥
 दुर्मना विमना अन्तर्मनाः स्यादुत्क उन्मनाः ।
 दोषदर्शी पुरोभागी कमनः कामनोऽनुकः ॥ ३४ ॥
 कामुकः कमिताऽभीकः कन्नः कमयिताऽभिकः ।
 वृष्णक् तु गर्धनो गृध्नुर्लिप्सुर्लुब्धोऽभिलाषुकः ॥ ३५ ॥
 लोलुपे लोलुभो लोलो लम्पटो लालसोऽपि च ।
 बुभुक्षुः क्षुधितः श्रान्तो जिघत्सुरशनायितः ॥ ३६ ॥
 पिपासितस्तु वृषितः पिपासुस्तषितः सरट् ।
 मत्ते शौण्डोत्कटक्षीबा श्राद्धः श्रद्धालुरास्तिकः ॥ ३७ ॥
 नास्तिकस्तद्विपर्यासे गृह्यालुर्गृहीतरि ।
 संशयालुस्तु सन्देग्धा पतयालुस्तु पातुकः ॥ ३८ ॥
 दयालुः स्यात् कारुणिकोऽनुकम्प्यः कारुणः समौ ।
 स्वप्नक् शयालुर्निद्रालुर्निद्राणः शयितः समः ॥ ३९ ॥
 लज्जाशीलोऽपत्रपिष्णुर्वर्तिष्णुर्वर्तनः समौ ।
 निराकरिष्णुः क्षिप्नुः स्याद् वर्धिष्णुर्वर्धनः समौ ॥ ४० ॥
 उन्मदिष्णुस्तु सोन्मादोऽलङ्कारिष्णुस्तु मण्डनः ।
 भूष्णुर्भविष्णुर्भविता प्रजतिष्णुस्तु भावुकः ॥ ४१ ॥
 उत्पतिष्णुस्तत्पतिता रोचिष्णू रोचनः समौ ।
 स्थास्तुस्तु स्थायुकः स्थायी शरारुहिर्ज्ञघातुकौ ॥ ४२ ॥
 वेदिता विदुरो विन्दुः सान्द्रः स्निग्धस्तु मेदुरः ।
 आशंसुराशंसितरि वन्दारुर्भिवादकः ॥ ४३ ॥
 जागरुको जागरिता ऋक्षवाक् तु प्रियंवदः ।
 शङ्को मधुरवाक् चाथ रूक्षो लक्षो विपर्यये ॥ ४४ ॥
 वदो वदावदो वक्ता वागीशो वाक्पतिः समौ ।
 वाचोयुक्तिपटुर्वाग्मी वावदूकश्च दक्षवाक् ॥ ४५ ॥
 जल्पकस्त्वपि वाचालो वाचाटो बहुगर्हवाक् ।
 मुखरो दुर्मुखोऽबद्धमुखो मातृमुखोऽपि च ॥ ४६ ॥

कद्वदो गर्हवादी स्याल्लोहलोऽस्फुटभाषणः ।
 अधरो दीनवादी स्यात् सम्मुखः प्रतिभातवाक् ॥ ४७ ॥
 नालीकरस्तु नालीकवाक् स्वनोऽशोभनस्वरः ।
 कुवदे कुचरः शब्दकारे रवणशब्दनौ ॥ ४८ ॥
 व्युत्पन्नः प्रहतः क्षुण्णो वचनेस्थित आश्रवः ।
 परान्नः परपिण्डादः परजातपरैधितौ ॥ ४९ ॥
 सर्वाङ्गीनः सर्वभक्ष आमिषादी तु शौल्किकः ।
 आत्मम्भरिः कुक्षिम्भरिर्भक्षको घस्मरोऽद्भरः ॥ ५० ॥
 आद्यूनः स्यादौदरिको विमुक्तो विजिगीषया ।
 ह्रीणो ह्रीतो लज्जितः स्यादन्वेष्टा तीक्ष्णसाधनैः ॥ ५१ ॥
 अद्रुते धीरविस्रब्धावुत्तालः कर्मणि द्रुतः ।
 कुटुम्बव्यापृते तु द्वावभ्यागारिक उत्थितः ॥ ५२ ॥
 दीर्घदृष्टिस्तु यो दूरादर्थानर्थौ निरीक्षते ।
 आमुष्यायण उत्पन्नः प्रख्यातकुलतः पितुः ॥ ५३ ॥
 वैरङ्गिको विरागार्ह उत्पश्यः पुनरुन्मुखः ।
 चतुरः पेशलो दक्षः सूत्थानः पटुरुष्णकः ॥ ५४ ॥
 मन्दस्तुन्दपरिमृज आलस्यः शीतकोऽलसः ।
 चेमङ्करोऽरिष्टतातिः शिवतातिः शिवङ्करः ॥ ५५ ॥
 लक्ष्मीवान् लक्ष्मणः श्रीलो महामात्रोऽधिकर्धिकः ।
 उदारोदीर्घधन्यास्तु महात्मा सुकुतीति च ॥ ५६ ॥
 समृद्धः स्यादुपचितो धनवानस्तिमान् समौ ।
 आढ्यस्त्विम्यो धनी नेता त्वीश्वरो नायकः प्रभुः ॥ ५७ ॥
 अधिभूरधिपोऽधीश ईशिताऽधिपतिः पतिः ।
 ईशः परिवृढः स्वामी स्थूललक्षो बहुव्यये ॥ ५८ ॥
 कदर्ये कृपणक्षुद्रकिम्पचानमितम्पचाः ।
 आशयश्चाप्यदाता च दरिद्रे स्यादकिञ्चनः ॥ ५९ ॥
 अपि दुस्स्थक्रूरदीननीचदुर्गतदुर्विधाः ।
 मार्गणः स्याद् याचनको याचकोऽर्थी वनीपकः ॥ ६० ॥
 आर्यः कौलेयको जात्यः कुलीनः कुलजोऽभिजः ।
 जगत्प्रसचरप्राणमिषदिङ्गञ्च जङ्गमम् ॥ ६१ ॥
 स्थावरं तस्थिवच्चान्यदुभयं तु चराचरम् ।
 वा ह्री प्रधानं प्रमुखप्रबर्हप्रवरोत्तमाः ॥ ६२ ॥

मुख्यवर्यवरेण्याश्च प्रवेकोऽनपराध्यवत् ।
 श्रेष्ठः प्राग्रहरं प्राग्रमग्रमग्रीयमग्रियम् ॥ ६३ ॥
 परार्थ्यं प्रागणीः स्पर्ध्यं जात्यं च वरमग्रणीः ।
 उपाग्रस्तु गुणः पुंसि छीवे स्यादुपसर्जनम् ॥ ६४ ॥
 तत्तु स्यादासेचनकं न तृप्तिर्यस्य दर्शनात् ।
 पवित्रं प्रयतं पूतं मेध्यं शुद्धं शुचीति च ॥ ६५ ॥
 निर्णिकं शोधितं मृष्टं निश्शोध्यमनवस्करम् ।
 विमले वीद्भ्रं मलिने द्वौ कश्चरमलीमसौ ॥ ६६ ॥
 आत्तगन्धोऽभिभूतः स्याद् बद्धे कीलितसंयतौ ।
 आक्षिप्तो हतकः क्षिप्तो विह्वलो विह्वलः समौ ॥ ६७ ॥
 विहस्तो व्याकुलो व्यग्रश्चले सङ्कुसुकोऽस्थिरः ।
 व्यसनार्तस्तूपरक्त आततायी बधोद्यतः ॥ ६८ ॥
 शत्रूणां तापयितरि द्विषन्तपपरन्तपौ ।
 द्वेष्यस्त्वक्षिगतोऽनिष्टो दुर्भगोऽपि च विप्रिये ॥ ६९ ॥
 चक्षुष्यः सुभगः कान्तो दयितो वल्लभः प्रियः ।
 गेहेनर्दी गृहेशूरः पिण्डीशूरो गृहे प्रभुः ॥ ७० ॥
 बध्यो विष्यो विषेण स्यान्मुसल्यो मुसलेन च ।
 निष्कासितोऽपकृष्टः स्यादपध्वस्तस्तु धिक्कृतः ॥ ७१ ॥
 कर्मक्षमोऽलङ्कर्मिणः कर्मशूरस्तु कर्मठः ।
 कर्मस्तु कर्मशीलः स्याद्दीर्घसूत्रश्चिरक्रियः ॥ ७२ ॥
 कर्मण्यकृत् कर्मकरः कर्मकारस्तु तत्क्रियः ।
 निर्वार्यः कार्यकृद्यः स्याद्युक्तः सन् सत्त्वसम्पदा ॥ ७३ ॥
 क्रियावान् कर्मवान् कर्मी कुण्ठो मन्दः क्रियासु यः ।
 स आयश्शूलिको यः स्यादन्वेष्टा तीक्ष्णसाधनैः ॥ ७४ ॥
 गह्वोऽपकृष्टचेलावरेफयाप्याधमावमाः ।
 प्रतिकृष्टावद्यखेटनिकृष्टाणककुत्सिताः ॥ ७५ ॥
 जघन्यं तु कुपूयं स्यादसारं लघु फल्गु च ।
 पुंस्यादिराद्यपौरस्त्यप्रथमग्रमुखादिमाः ॥ ७६ ॥
 अग्रद्यं त्वग्रिममग्रस्थं मध्यमीयं तु मध्यमम् ।
 अन्त्ये जघन्यपाश्चात्यचरमान्तिमपश्चिमाः ॥ ७७ ॥
 करम्बः कम्बरो मिश्रः सम्पृक्तः खचितः समाः ।
 चलाचलं तु प्रचलं चपलं चञ्चलं चलम् ॥ ७८ ॥

चिकुरं चटुलं कम्प्रं पारिप्लवपरिप्लवौ ।
 स्थास्नवेकरूपं कूटस्थं स्थेयान् स्थेष्टोऽप्यतिस्थिरे ॥ ७६ ॥
 विशालमुरु विस्तीर्णं विपुलं पृथुलं पृथु ।
 स्फारं भद्रं बृहद् व्यूढमुदूढं बहुलं बहु ॥ ८० ॥
 प्रांशूच्चमुन्नतं तुङ्गमुदग्रं तूच्छिताग्रकम् ।
 न्यङ्नीचह्रस्वखर्वास्तु वामने दीर्घमायते ॥ ८१ ॥
 विशालं विकरालं स्याद् विकटं च विशङ्कटम् ।
 वर्तुलं निस्तलं वृत्तं सुवृत्तं परिमण्डलम् ॥ ८२ ॥
 चिपिटः पिच्छितो व्यूढे स्थपुटं विषमोन्नतम् ।
 आनतं तु नतं नम्रं बन्धुरं तून्नतानतम् ॥ ८३ ॥
 क्षीणं क्षामं विलिष्टं स्यात् स्थूलं तु बहलं दृढम् ।
 प्रभूतं प्रचुरं प्राज्यं बहलं बहुलं बहु ॥ ८४ ॥
 अदभ्रमधिकं भूरि भूयिष्ठं पुरुहं पुरु ।
 समग्रं सकलं सर्वं समस्तं निखिलाखिले ॥ ८५ ॥
 अखण्डकृत्स्ननिशेषपूर्णविश्वसमानि च ।
 खण्डनेमोनविकलाः पूर्णे भरितपूरितौ ॥ ८६ ॥
 सम्पूर्णश्चाथ वशिकं शून्यं तुच्छं च रिक्तकम् ।
 पुराणे प्राक्तनप्रत्नपुरातनचिरन्तनाः ॥ ८७ ॥
 नूत्ने त्वभिनवो नव्यो नवीनो नूतनो नवः ।
 शाश्वते त्वमृतो नित्यः सनातनसदातनौ ॥ ८८ ॥
 सद्यस्तने तु साद्यस्कप्रत्यग्राभ्यग्रशारदाः ।
 ह्यस्तनश्चस्तनाद्याः स्युर्ह्यआदिस्थेषु वस्तुषु ॥ ८९ ॥
 कालवाच्यव्ययेभ्यः स्यादन्येभ्योऽपि तथा तनः ।
 न्यक् स्यादधोमुखं न्युब्जमुदुब्जोत्तानमुन्मुखे ॥ ९० ॥
 उदक् प्रत्यक् परागर्वाक् प्राक् च तिर्यग्वागपाक् ।
 विष्वक् चैवमुदीचीनप्रमुखाः स्युर्यथाक्रमम् ॥ ९१ ॥
 दिग्देशकालवचनमुदगादिकमव्ययम् ।
 दिग्देशकालसम्बन्धिपदार्थेष्वभिधेयवत् ॥ ९२ ॥
 यः सहाञ्चति सध्र्यङ् स विष्वद्र्यङ् विष्वगञ्चति ।
 देवानञ्चति देवद्र्यङ् सधीचीनादि चोन्नयेत् ॥ ९३ ॥
 अविलम्बितमुच्चण्डं संशितं तु सुतेजितम् ।
 उत्पिब्जलं समुत्पिब्जमिति द्वे भृशमाकुले ॥ ९४ ॥

अनादृते त्ववज्ञातमवतीर्णापहस्तितम् ।
 चलितप्रेङ्खिताधूतवेङ्खिताकम्पिता ध्रुते ॥ ६५ ॥
 रुचिते हृद्यलषितवाञ्छितेष्टेडितेहिताः ।
 संवीतं स्याद् वलयितं वेष्टितं रुद्धमावृतम् ॥ ६६ ॥
 नुन्नास्तनुत्तप्रहितक्षिप्तविद्धाः स्युरीरिते ।
 बद्धे सन्नाहितं नद्धं मुद्रितं सन्दितं सितम् ॥ ६७ ॥
 सन्तापितं धूपायितं दूनं तप्तञ्च धूपिते ।
 मार्गिते मृगितान्विष्टावन्वेषितगवेषितौ ॥ ६८ ॥
 लब्धाप्तासादितप्राप्तभूतविन्नास्तु भाविते ।
 प्रयत्ते मुदितप्रीतदृष्टाः सुहितचम्पवत् ॥ ६९ ॥
 आबर्हिते तूद्वृद्धितोन्मूलितोत्पाटितोद्वृताः ।
 ऊतगोपायितत्रातत्राणगुप्तास्तु रक्षिते ॥ १०० ॥
 मनिते विदितज्ञातौ बुधिते बोधबुद्धवत् ।
 त्यक्ते तु विधुतोत्सृष्टहीनधूतसमुज्झिताः ॥ १०१ ॥
 कृत्ते लूनच्छिन्नदातवृक्कणच्छातच्छितार्दिताः ।
 स्रस्ते भ्रष्टध्वस्तपन्नगलितस्कन्नविच्युताः ॥ १०२ ॥
 प्रेङ्खोलितं तरलितं लुलितं प्रेङ्खितं च तत् ।
 भजमाने प्राप्तयुक्तन्याय्यान्यौपयिकोचिते ॥ १०३ ॥
 न्यस्ते त्वारोपितोऽध्यस्तो निहितोऽपहितो हितः ।
 उपसन्नं तूपनतमुपप्राप्तमुपस्थितम् ॥ १०४ ॥
 शुश्रूषितं परिवसितमुपासितञ्च वरिवसितञ्च समम् ।
 अपचायितं नमसितं नमस्यितं सममपचितञ्च ॥ १०५ ॥
 पणितपणायितपनिताः पनायितस्तुतनुतेडिताःशस्ते ।
 वर्णितगीर्णौ च तथा सङ्कीर्णोपश्रुतौ प्रतिज्ञाते ॥ १०६ ॥
 उन्नोत्ततिमितक्लिन्नस्नपितार्द्राणि सार्द्रवत् ।
 स्युः प्रत्यवसिते प्सातजगधान्नाशितखादिताः ॥ १०७ ॥
 प्रस्तग्लस्ताभ्यवहृतमुक्तभक्षितजक्षिताः ।
 परिक्षिप्तं तु निवृतं निदिग्धोपचितौ समौ ॥ १०८ ॥
 प्राप्ते प्रणिहितापन्नौ विस्मृतोऽन्तर्गतेऽस्मृते ।
 सङ्गूढं स्यात् सङ्कलितं स्यन्नं रीणं स्तुतं स्तुतम् ॥ १०९ ॥
 अवरीणो धिक्कृतः स्याद् दृब्धे प्रथितमुद्रितौ ।
 सङ्कीर्णे सङ्कुलाकीर्णौ विस्वृते विस्वृतं ततम् ॥ ११० ॥

सिद्धे निर्वृत्तनिष्पन्नौ भिन्ने भेदितदारितौ ।
 वेधितच्छिद्रतौ विद्धे तष्टत्वष्टौ तनूकृते ॥ १११ ॥
 ऊतं स्यूतमुतं तन्तुसन्तते प्रार्थितेऽर्दितम् ।
 उद्धृतं समुदस्तं स्यान्मर्मस्पृक् स्यादरुन्तुदम् ॥ ११२ ॥
 गुण्डितं रुषिते क्लिष्टे क्लेशितं पूजितेऽश्रितम् ।
 ज्ञप्तं तु ज्ञपिते हन्नं गूने मीढं तु मूत्रिते ॥ ११३ ॥
 पुषिते पुष्टमुद्गूर्णोद्यत(यत्ताः प्रयत्नवान्) ।
 दमिते दान्तं शमिते शान्तमुद्धान्तमुद्रते ॥ ११४ ॥
 पन्नं प्रपतिते सन्नं लिष्टे तुन्नं तु पीडिते ।
 निष्पक्वे कथितं सोढे क्षान्तं निचितमाचिते ॥ ११५ ॥
 मुषिते लुण्ठितं यस्ते निसृष्टं वृद्धमेधिते ।
 काचितं शिक्यिते दिश्यं दिग्भवेऽभ्रभवेऽभ्रिथम् ॥ ११६ ॥
 यज्ञियं यज्ञकर्माहं चक्षुष्यं चक्षुषे हितम् ।
 तत्तद्वात्रभवे दन्त्वं हस्त्यमोष्ठ्यमितीदृशाः ॥ ११७ ॥
 पुंसः पौंसं स्त्रियाः स्त्रौणमग्नेराग्नेयमित्यपि ।
 दण्डवान् दण्डिको दण्डीत्येवं नेयमदन्ततः ॥ ११८ ॥
 ब्रीहिणो ब्रीहिमन्तः स्युर्यवमन्तो यवान्विताः ।
 निर्जने स्थान एकान्तं विविक्तं विजनं तथा ॥ ११९ ॥
 छन्नं गुह्यं निश्शलाकं रहः क्लीबोऽथवाऽव्ययम् ।
 गुह्यं रहस्यमित्येतावप्रकाशयेऽपि वस्तुनि ॥ १२० ॥
 समं समानं सविधं सदृक्षं सदृशं सदृक् ।
 तुल्यं सवर्णं शब्देभ्यः परे स्युः प्रतिमा प्रभा ॥ १२१ ॥
 आभा प्रख्योपमाभिख्या प्रकारः सन्निभं निभम् ।
 निकाशाद्याश्च साम्यार्थाः समे स्युः शब्दतः पराः ॥ १२२ ॥
 परस्परं स्यादन्योन्यमितरेतरमित्यपि ।
 वक्रं वृजिनमाविद्धमूर्मिमत् कुञ्चितं नतम् ॥ १२३ ॥
 अरालं कुटिलं भुग्नमवक्रे प्रगुणोऽप्यजुः ।
 सत्वरं त्वरितं तूर्णमरं क्षिप्रं लघु द्रुतम् ॥ १२४ ॥
 अजिरं चपलं शीघ्रमविलम्बितमाशु च ।
 विरलं तनु विशिलमघनं तलिनं तथा ॥ १२५ ॥

निबिडं निबिरीसं स्याद् घनं सान्द्रं निरन्तरम् ।
विकटं तु विरूपं स्यात् सम्बाधः सङ्कटः समौ ॥ १२६ ॥

प्रतीपं प्रतिकूलं स्यादनुकूलं विपर्यये ।
अनुलोममनुचीनं प्रतिलोमं विपर्यये ॥ १२७ ॥

अव्ययीभावोऽनुपदमन्वगन्वक्षमित्यपि ।
एकसर्गोऽनन्यवृत्तिरेकाग्रैकायनैकगम् ॥ १२८ ॥

अप्येकतान एकान्तोऽप्येकायनगतोऽपि च ।
साधारणं तु सामान्यं मोघं व्यर्थमपार्थक्यम् ॥ १२९ ॥

नित्यानवरताजस्रसतताश्रान्तसन्तताः ।
अनारतं चाविरतमसक्तं चानिशं नपुम् ॥ १३० ॥

अतिमात्रेऽतिमर्याद मतिवेलातिमानकम् ।
भृशमत्यन्तमत्यर्थमधिकोद्गाढनिर्भरम् ॥ १३१ ॥

तीव्रं तु गाढमेकान्तं नितान्तं दृढबाढवत् ।
वशेऽनर्गलमुद्दाममुच्छृङ्खलमयन्त्रितम् ॥ १३२ ॥

परोक्षेऽतीन्द्रियोऽध्यक्षप्रत्यक्षौ तु समक्षवत् ।
सकाशं स्यात् सन्निहिते समन्तं तु समन्तिकम् ॥ १३३ ॥

प्रकाशं प्रकटं स्पष्टमुल्बणं विशदं स्फुटम् ।
सुन्दरं रुचिरं रुच्यं मनोज्ञं मञ्जु मञ्जुलम् ॥ १३४ ॥

शोभनं सुषमं चारु हृद्यं चौक्षं मनोहरम् ।
न्युङ्क्तं हारि प्रियं साधु लब्धं च मनोरमम् ॥ १३५ ॥

अल्पं सूक्ष्ममणु स्तोकं दहं दहरमर्हकम् ।
किञ्चिन्मात्रं मितं दभ्रं श्लक्ष्णं तनु च पेलवम् ॥ १३६ ॥

अतिरिक्तोऽतिशयितो दृढः समधिकोऽधिकम् ।
चतुरं पेशलं दक्षं कटु तूल्बणमुत्कटम् ॥ १३७ ॥

विशेषणं क्रियाया स्युः समाद्याः क्ली च तद्यथा ।
पुत्रं धत्ते सममिति नित्याद्यास्तु गुणस्य च ॥ १३८ ॥

नित्यं धत्ते सितो नित्यमिति द्रव्ये पुनस्त्रिषु ।
उभयेऽपि यथा धत्ते समो नित्योऽर्थवानिति ॥ १३९ ॥

प्रथमं चरमं पूर्वमित्याद्यप्येवमुन्नयेत् ।
समीपनिकटाभ्यग्राभ्यर्णाभ्याशान्तिमा इव ॥ १४० ॥

सदेशसविधासन्नसन्निकृष्टसवेशवत् ।
उपकण्ठसमर्यादसवेधानि सनीडकम् ॥ १४१ ॥

उपान्ते विप्रकृष्टे तु दूरं व्यवहितं परम् ।
भासुरं भविकं भव्यं कल्याणं श्रोवसीयसम् ॥ १४२ ॥

श्वश्रेयसं शिवं भद्रं कुशलं सूत्रतं शुभम् ।
श्रेयश्चैते समीपाद्या धर्मे क्ली तद्वति त्रिषु ॥ १४३ ॥

सुखं दुःखं मलं छिद्रं किलासं सिध्ममर्मरौ ।
रभसः पलितं श्वित्रमेतेऽपि त्रिषु धर्मिणि ॥ १४४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां सामान्यकाण्डे

अर्थवर्त्तिज्ञाध्यायः ॥ ४ ॥

पञ्चमः सामान्यकाण्डः समाप्तः ॥ ५ ॥



६. अथ द्यक्षरकाण्डः

पुलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

अथ काण्डैरनेकार्थाः प्रोच्यन्तेऽत्र परैस्त्रिभिः ।
 द्व्यक्षरास्त्र्यक्षराः शेषा इति काण्डेषु ते क्रमात् ॥ १ ॥
 अकारादिहकारान्तं नाम्नामाद्यक्षरक्रमात् ।
 संग्रहो द्व्यक्षरादीनां प्रोक्तान् प्रायो विना पुरा ॥ २ ॥
 अर्थः स्याद्विषये मोक्षे शब्दवाच्ये प्रयोजने ।
 व्यवहारे धने शास्त्रे वस्तुहेतुनिवृत्तिषु ॥ ३ ॥
 अर्कोऽर्कपणे स्फटिके ज्येष्ठभ्रातरि भास्वति ।
 अवयः शैलमेषार्का अद्रयोऽर्कगिरद्रुमाः ॥ ४ ॥
 अट्टावतिशयक्षौमावर्धौ पूजाप्रतिक्रयौ ।
 अर्याः शास्त्रस्वामिवैश्याः सर्पे वृत्रासुरेऽप्यहिः ॥ ५ ॥
 अंशुः सूत्रादिसूक्ष्मांशेऽप्यङ्गुलिह्येऽन्तिकोरसोः ।
 आत्मा जीवे धृतौ देहे स्वभावे परमात्मनि ॥ ६ ॥
 यत्नेऽर्केऽग्नौ मतौ वातेऽप्याखू सूकरमूषिकौ ।
 आधिस्तु व्यसने चित्तदुःखेऽधिष्ठानबन्धयोः ॥ ७ ॥
 इन्द्रो विषात्मशक्रार्केष्वीश्वरे नामतः परः ।
 इष्णोऽभिलाष आचार्य ऊमो व्योम्नि पुरेऽपि च ॥ ८ ॥
 ग्रीष्मोष्णबाष्पा ऊष्माण ऊर्जावुत्साहकार्तिकौ ।
 ऋषिस्तु वेदे भृगवादौ ज्ञानवृद्धे दिगम्बरे ॥ ९ ॥
 ओषः परम्परायां स्याज्जलस्रोतसि सञ्चये ।
 करो घनोपले हस्ते प्रत्याये रश्मिशुण्डयोः ॥ १० ॥
 दातुं भूषितकन्यायां कूपो गर्ते प्रहावपि ।
 क्षणो व्यापारवैकल्ये कालभेदाल्पकालयोः ॥ ११ ॥
 उत्सवे परतन्त्रत्वे मध्यावसरपर्वसु ।
 कन्तु कुसूलकन्दपौ प्राज्ञकाव्यकृतौ कवी ॥ १२ ॥

कण्ठो गलेऽन्तिके शब्दे कपयोऽर्कभवानराः ।
 गुडभस्मरसाः क्षाराः क्षोदो रजसि पेषणे ॥ ११ ॥
 क्रतू अश्वरसङ्कल्पौ कल्पान्तेऽपचये क्षयः ।
 कुक्षौ वासे च कच्छस्तु पार्श्वे गुह्याम्बरे तटे ॥ १४ ॥
 कारुस्तु विश्वकर्मापि धान्यांशे शीकरे कणः ।
 कालो दिष्टे यमे काचो मृद्भेदे शिष्यद्वभृजोः ॥ १५ ॥
 उत्पातेऽङ्के ध्वजे केतुः छेदौषधिशशाङ्कयोः ।
 कोणाः शब्दाश्रितगुडा कल्पो न्याये सुरद्रुमे ॥ १६ ॥
 विकल्पेऽपि च कश्चस्तु गुल्मे स्पर्धापदे तृणे ।
 काम्यस्पृहास्मराः कामाः कलहेऽन्त्ययुगे कलिः ॥ १७ ॥
 कुम्भो गजशिरोऽन्तेऽपि पद्मर्केष्वनिलाः खगाः ।
 खरुः पुंस्मररुद्रेषु गर्मुद्रुक्मे खगे रवौ ॥ १८ ॥
 गणाः प्रमथसङ्गधौघाः प्रावाणौ पर्वतोपलौ ।
 तन्तुनागाग्रहौ ग्राहौ गुल्मो व्यूढा च वाहिनी ॥ १९ ॥
 गण्डो गर्वेऽप्यथार्कादिसत्त्वादानाग्रहा ग्रहाः ।
 गुणस्त्वावृत्तिशब्दादिज्येन्द्रियामुख्यतन्तुपु ॥ २० ॥
 ग्रन्थो द्रव्यं वचश्शास्त्रं द्वात्रिंशद्वर्णसञ्चयः ।
 गर्भोऽपवरकेऽन्नेऽग्नौ सुते पनसकण्टके ॥ २१ ॥
 कुक्षौ कुक्षिस्थजन्तौ च गन्धो लेशे महीगुणे ।
 घृणिर्ज्वालांशुवीचीषु चरुः स्थाल्यां हविष्यपि ॥ २२ ॥
 चटुश्चाटुश्च राजादिस्तुतौ पशुपिचिण्डके ।
 चक्री विष्णौ कुलालेऽहौ च्युपौ पवनसङ्क्रमौ ॥ २३ ॥
 वशाभिप्राययोश्छन्दो जूर्णी रविहविर्मुजौ ।
 टङ्कौ प्रमाणगर्वौ च डिम्बः प्रीहखगाण्डयोः ॥ २४ ॥
 तर्काः काङ्क्षावितर्कोहास्त्वष्टा तदिण्युशिल्पिनि ।
 मणिदोषे भये त्रासस्तिष्यः पुष्ये कलौ युगे ॥ २५ ॥
 द्वारपाले यमे दण्डी दन्तोऽद्रिकटके रदे ।
 दायो दाने यौतकादिधने वित्ते च पैतृके ॥ २६ ॥
 दवदावौ वनारण्यवह्नयोः खगार्कयोर्द्युवा ।
 धवो वृत्ते नरे पत्यौ ध्वाङ्कः स्याद् वायसे बके ॥ २७ ॥
 धातुर्वातादिशब्दादिगैरिकादित्वगादिषु ।
 महाभूतेष्विन्द्रियेषु शब्दयोनिस्वभावयोः ॥ २८ ॥

लोहेऽर्थे गैरिकस्वर्णरेतोऽस्थिषु विशेषतः ।
 नरोऽर्जुने मनुष्ये च नाकः स्वर्गान्तरिक्षयोः ॥ २६ ॥
 ग्राहाम्राह्मिगजा नागा नाभिः क्षत्रे महानृपे ।
 न्यङ्कुरुङ्कुलेवासी शिष्यो मुनिमृगावपि ॥ ३० ॥
 नाशः पलायने मृत्यौ परिध्वंसेऽप्यदर्शने ।
 नग्ना वैतालिकाद्याश्च पिण्डो वृत्ते तनौ गुडे ॥ ३१ ॥
 पीयुः काल उल्लूके च पीलुः काण्डे गजे द्रुमे ।
 पुण्ड्राः कृमीक्षुतिलकाः पत्री श्येने शरे खगे ॥ ३२ ॥
 प्रेषणे मर्दने प्रैषः पुङ्खः श्वेतशराङ्गयोः ।
 पवी वातास्त्रधारे च पाकपोतौ शिशावपि ॥ ३३ ॥
 पट्टो नेत्रेऽपि शाणे स्यात् पिण्डः कल्केऽपि तैलजे ।
 पणो मूल्ये ग्लहे माने कार्षिकव्यवहारयोः ॥ ३४ ॥
 द्यूते विक्रयशाकादिबद्धमुष्टौ भृतौ धने ।
 पक्षः पार्श्वगुरुत्साध्यसहायबलभित्तिषु ॥ ३५ ॥
 पार्श्वद्वारे विरोधेऽर्धमासे चुल्लिबिलेऽन्तिके ।
 प्रायो वयसि बाहुल्ये तुल्यानशनमृत्युषु ॥ ३६ ॥
 पाशो रज्जौ कर्णशब्दात् परः कर्णेऽतिशोभने ।
 क्रमनिम्नमहीभागकपिप्लुतिखगाः प्लवाः ॥ ३७ ॥
 प्राणस्तु प्रणवे जीवे जीविते परमात्मनि ।
 इन्द्रिये वायुभेदे च बलान्तर्यामिणोरपि ॥ ३८ ॥
 श्वेतार्के ङाडिमे फालो बन्धाः सीसाधियन्त्रणाः ।
 बलिः पूजोपहारे च दैत्यभेदे करेऽपि च ॥ ३९ ॥
 बाष्पोऽश्रूण्यम्बुधूमे च भानवोऽर्कह्रांशवः ।
 भ्रूणोऽर्भके स्त्रैणगर्भे गर्भिण्यां श्रोत्रियद्विजे ॥ ४० ॥
 भवो भद्रे हरे प्राप्नौ रुत्तासंसारजन्मसु ।
 भागा भाग्यांशतुर्यांशा भरभारौ गरिम्ण्यपि ॥ ४१ ॥
 भरवीवधयोश्चान्त्यौ भूस्पृशौ वैश्यमानवौ ।
 विश्लेषे दारणे भेदो भेनः सूर्ये निशाकरे ॥ ४२ ॥
 भावो लीलाक्रियाचेष्टाभूत्यभिप्रायजन्तुषु ।
 पदार्थमात्रे सत्तायामात्मयोनिस्वभावयोः ॥ ४३ ॥
 भोगो राज्ये धने सौख्ये पालनाभ्यवहारयोः ।
 फणे देहे च सर्पस्य वेश्यादीनां भृतावपि ॥ ४४ ॥

मन्त्रावृगादिगुह्योक्ती मन्युर्दैन्येऽध्वरे क्रुधि ।
 मर्को मनसि वायौ च मोहाः क्रुन्मौर्ख्यमूढताः ॥ ४५ ॥
 मार्गो मृगपदे मासि सौम्यर्क्षेऽन्वेषणेऽध्वनि ।
 मूत आतश्चने व्रीहौ व्रीह्यादेर्बन्धने रुणैः ॥ ४६ ॥
 मृगस्तु मृगशीर्षेऽपि मोक्षो मृत्यौ मरुद्गिरौ ।
 यन्ता हस्तिपके सूते यक्षोऽग्न्यात्महरीष्टिषु ॥ ४७ ॥
 ययुरश्वेऽश्वमेधाश्वे योगो विस्त्रब्धघातिनि ।
 प्राप्नौ सन्नहनोपायध्यानसङ्गतिर्युक्तिषु ॥ ४८ ॥
 रसो राने विषे वीर्ये तिक्तादौ पारदे द्रवे ।
 रेतस्यास्वादने हेम्नि निर्यासेऽमृतशब्दयोः ॥ ४९ ॥
 रश्मी ज्वालाप्रग्रहौ च रदो दन्तविलेखयोः ।
 राजा तु क्षत्रिये चन्द्रे लताभेदे नृपे प्रभौ ॥ ५० ॥
 रागोऽनुरागे लाक्षादौ त्विषि राकस्तु पूष्णि च ।
 रङ्गौ तु स्थानरागौ च भूप्रदेशे मृगे लिङ्गुः ॥ ५१ ॥
 भोजने लेपने लेपो लोकः स्याद् विष्टपे जने ।
 वंशः पृष्ठास्त्रि गेहोर्ध्वकाष्ठे वेणौ गणे कुले ॥ ५२ ॥
 नासोर्ध्वास्त्रीक्षुभेदे च बहिरुद्दिण हयेऽनले ।
 बलो धान्येऽसुरे काके गत्रां श्वासेऽनिले वहः ॥ ५३ ॥
 वेणू वेदसहस्रांशू गोष्ठाध्वनिवहा व्रजाः ।
 बालौ पुच्छाश्वपुच्छौ च व्याजश्छद्वापदेशयोः ॥ ५४ ॥
 विधी तु दैवकालौ च वाजी त्वश्वे शरे खगे ।
 विधुर्निशाकरे काले विष्णौ वातेऽग्निरक्षसोः ॥ ५५ ॥
 वृन्दविन्यासयोर्व्यूहो वृषोऽप्यग्रये पुमिन्द्रयोः ।
 वृत्राः शत्रुतमोदैत्या वेगः किम्पाकरंहसोः ॥ ५६ ॥
 वेघसो विष्णुधातृजाः शादः कर्दमशष्पयोः ।
 शम्भुर्धातृहरार्हत्सु शक्रः कुटजवज्रिणोः ॥ ५७ ॥
 शम्भो वज्रे लोहमयबलये मुसलाग्रो ।
 शरो रसाग्रसारेऽपि शूकोऽनुक्रोशशुङ्गयोः ॥ ५८ ॥
 शब्दोऽक्षरे यशोगीत्योर्वाक्ये खे श्रवणे ध्वनौ ।
 शङ्कुः पत्रसिराजाले कीलेऽस्त्रे मेढ्रसङ्ख्ययोः ॥ ५९ ॥
 कुक्कुटेऽग्नौ मयूरैः शौ वृत्ते केतुग्रहे शिखी ।
 पद्मे यशसि च श्लोकः षण्डौ विट्चरपण्डकौ ॥ ६० ॥

ण्ड्यूमसूमौ जले चन्द्रे तन्तुमङ्गलरश्मिषु ।
 सम्राजोऽग्नीन्द्रविष्णवर्का यश्च स्यान्मण्डलेश्वरः ॥ ६१ ॥
 राजसूयेन येनेष्टं राज्ञः शास्त्याज्ञया च यः ।
 सर्गास्तु सर्जनाध्यायस्वभावोत्साहनिश्चयाः ॥ ६२ ॥
 सन्धिः श्लेषे सुरुङ्गायां नाट्याङ्गे योनिरन्ध्रयोः ।
 स्वरोऽकाराद्युदात्ताद्योः षड्जादौ प्राणिनां स्वने ॥ ६३ ॥
 सरटौ पक्षिजलदौ स्पशौ तु चरसंयुगौ ।
 स्तम्भौ स्थूणाजडीभावौ यूपांशे कुलिशे स्वरुः ॥ ६४ ॥
 स्कन्दो धाता नदीकूलं साद्यश्च!रोहसूतयोः ।
 सालो मत्स्ये वृक्षभेदे प्राकारद्रुममात्रयोः ॥ ६५ ॥
 सिक्थो ना भक्तपूलाके मधूच्छिष्टे क्वचिन्नपुम् ।
 सुतः पुत्रे सोमरसे सोमौ व्योमनिशाकरौ ॥ ६६ ॥
 स्तूपा वायुरणोच्छ्वाया आज्ञाऽऽह्वानाध्वरा ह्वाः ।
 हर्तुर्मृत्यौ महारागे हरा रुद्राग्निगर्दभाः ॥ ६७ ॥
 हंसोऽश्वेऽर्के हरे विष्णौ खगे निलोभभूभुजि ।
 जीवे श्वेतवृषे भिक्षौ पार्श्विकाप्रसभौ हठौ ॥ ६८ ॥
 वारिपर्णी च हेतुस्तु कारणे कर्मजन्मनोः ।
 हीरः सर्पे हरे सिंहे हेलिरालिङ्गने रवौ ॥ ६९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

द्व्यक्षरकाण्डे पुंलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

स्त्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

अर्चा पूजाप्रतिमयोरर्तिश्चापाग्रपीडयोः ।
 अन्दूस्तु शृङ्खला पादभूषाऽप्यष्टी फलास्थ्यपि ॥ १ ॥
 आस्था गोष्ठ्यां प्रतिज्ञायां तत्परत्वेऽवलम्बने ।
 आशीरुगदंष्ट्रायां शुभवाक्याभिलाषयोः ॥ २ ॥
 आलिः सेतौ सखीपङ्क्त्योराशा दिगतिवृणयोः ।
 आजिः समेऽपि भूभागे गोनाडीभूद्युवाद्विड्डा ॥ ३ ॥
 इलाऽप्येतासु चार्घे च स्याद्विज्या यागपूजयोः ।
 इष्टिः स्पृहायजनयोरिरा भूवाक्सुराम्बुषु ॥ ४ ॥
 अन्ने च स्यादथो ईतिरुपसर्गप्रवासयोः ।
 ईहा तु लिप्सोद्यमयोरुतिः सूत्यभिरक्षयोः ॥ ५ ॥
 ऊर्णा भ्रमध्यगावर्ते तन्तौ मेषादिलोमसु ।
 हिंसाविक्षेपयोः कीणिः कीर्तिः पङ्के यशस्यपि ॥ ६ ॥
 कक्ष्या कच्छे वरत्रायां काञ्च्यां गेहप्रकोष्ठके ।
 कर्मा हाटकपुत्र्यां स्यादापि शालापलालयोः ॥ ७ ॥
 कासूर्बुद्धौ कुवाच्यस्त्रे कान्तिः शोभाभिकामयोः ।
 काष्ठोत्कर्षे सीम्नि दिशि क्षोण्यां वासे क्षये क्षितिः ॥ ८ ॥
 क्रिया तु निष्कृतौ शिक्षाचिकित्सोपायकर्मसु ।
 करणारम्भपूजासु चेष्टायां सम्प्रधारणे ॥ ९ ॥
 काले शिल्पे वित्तवृद्धौ चन्द्रांशे कलने कला ।
 महाभूतेष्विन्द्रियेषु ज्ञानावयवयोरपि ॥ १० ॥
 कोटिस्त्वश्रौ प्रकर्षेऽग्रे दशोपायगमे गतिः ।
 गुप्तिः क्षितिर्व्युदासेऽपि गुञ्जा भाण्डेऽपि वादने ॥ ११ ॥
 घृणा जुगुप्साकृपयोर्घोणाऽपि रथकणिका ।
 चिन्ताचिकित्थयोश्चर्चा चूर्णिग्रन्थे कपर्दके ॥ १२ ॥
 चापाग्रे पिष्टके चूलिशङ्खर्दिरुद्धान्तिरेतसोः ।
 छाया त्वनारुपे कान्तौ प्रतिबिम्बार्कजाययोः ॥ १३ ॥

जनिर्वरस्त्रीपत्योश्च जामिः स्वस्त्यकुलस्त्रियोः ।
 जातिश्छन्दसि मालत्यां सामान्ये जन्मगोत्रयोः ॥ १४ ॥
 अलक्ष्म्यप्रजयोर्ज्येष्ठा गृहगोत्र्यक्षभेदयोः ।
 जिह्वा वागसनाचिष्णु तन्द्रा निद्राप्रमीलयोः ॥ १५ ॥
 तन्त्रीगुण्डीसिरयो रज्ज्वां वीणादिरो गुणे ।
 तन्दूद्रोणिप्लवे दर्व्या वाद्ये काले लवे तुटिः ॥ १६ ॥
 तुला साम्ये स्तम्भपीठे लेशसंशययोस्तुटिः ।
 तूली शय्याकूर्चिकयोस्त्रेता त्वभिन्नये युगे ॥ १७ ॥
 दरदो भीतिद्वद्गूढा दृष्टिर्धीदर्शनादिषु ।
 द्रोणी स्यादम्बुवाहिन्यां द्रवभाण्डे गिरिप्लवे ॥ १८ ॥
 दिष्टिः सुखे च दाने च धात्री भूव्युपमातरि ।
 धनुः सुखीधनुर्ज्योसु धानो बीजेऽपि भूरुहाम् ॥ १९ ॥
 धारास्त्राग्रेऽम्बुसन्तत्यां सैन्याग्रेऽश्वगतिष्वपि ।
 धीता सुतायां बुद्धौ च धृतिः सौख्येऽपि धारणे ॥ २० ॥
 निष्ठोत्कर्षे व्यवस्थायां नाशेऽन्ते व्रतयज्ञयोः ।
 भित्तिमूले प्रधौ नेमिर्निन्दा कुत्साऽपवादयोः ॥ २१ ॥
 पालिरग्निः प्रदेशोऽङ्कः सश्मश्रुः स्त्री त्सरुश्छदः ।
 छन्दः सङ्ख्यावली पङ्क्तिः पक्तिर्गौरवपाकयोः ॥ २२ ॥
 क्षुद्रग्रामेऽपि पल्ली स्यात् प्रभाऽर्चिषि च भासि च ।
 प्रज्ञा प्राज्ञस्त्रियां बुद्धौ प्रजा तु जनपुत्रयोः ॥ २३ ॥
 प्रसूर्जनन्यामश्वायां पारिः सृणिगुणेऽपि च ।
 पादुकोपानहोः पादूः प्राप्ती अभिगमोदयौ ॥ २४ ॥
 पीडाऽवमर्दकृपयोः प्रीतिः प्रेमप्रमोदयोः ।
 प्रेक्षा नृत्तेक्षणे बुद्धौ बाधा दुःखनिषेधयोः ॥ २५ ॥
 भसदौ गुह्यवित्कोष्ठौ भक्तिर्भागे निषेवणे ।
 भिक्षा तु भिक्षितान्नादौ याचनायां भृतिसेवयोः ॥ २६ ॥
 भूमिः क्षितौ स्थानमात्रे भूतिः श्रीजन्मभस्मसु ।
 मतिः काङ्क्षा शेमुषी च मल्लिर्भृत्यान्त्रपीठयोः ॥ २७ ॥

माता तु गव्यकारादौ ब्राह्मणाद्यासु प्रसूमयोः ।
मूर्तिर्देहप्रतिमयोः काककाठिन्ययोरपि ॥ २८ ॥

पुंश्चल्यां मौक्तिके मुक्ता कारासंयमयोर्यतिः ।
गमने जीवने यात्रा रुजा रुग्भृङ्गमृत्यवः ॥ २९ ॥

राजिः पङ्क्तौ राजसर्पे क्षेत्रेऽधो रसनस्य च ।
रीतिर्दग्धसुवर्णादिमले स्थित्यारकूटयोः ॥ ३० ॥

प्रचारे श्रवणे पङ्क्तौ रण्डा स्याद्विधवाऽपि च ।
रुचिः कान्त्यर्चिषोर्भोक्षि तिन्निन्दीके स्पृहाश्रियोः ॥ ३१ ॥

रेटिर्वह्नेश्च रटितं वाणी चासंयतोत्कटा ।
रेखायामावलौ रेखा लङ्का पूर्वोदशाखयोः ॥ ३२ ॥

लीला क्रिया विलासश्च वपा गोण्डो बिलं तथा ।
वलिर्मध्यगरेखोर्मिजीर्णत्वग्गृहदारु च ॥ ३३ ॥

वर्ध्नी स्नायुनि नध्र्यां च ब्रज्या पर्यटने गतौ ।
विधा विधाने हस्त्यन्ने भृत्यामृद्धिप्रकारयोः ॥ ३४ ॥

वीरुधौ गुल्मगुल्मिन्यौ वीथी पङ्क्त्यध्वनोरपि ।
वीचिः पङ्क्त्यूर्मिलेशेषु व्युष्टी फलसमृद्धते ॥ ३५ ॥

वृत्तिर्ग्रन्थाजीवयोश्च वेलाऽन्धिजलवर्धने ।
काले सीम्नि च वेणी तु केशबन्धे जलस्रुतौ ॥ ३६ ॥

वृद्धिः सुखेऽपि जङ्घापि वारुः शुक्तिस्तु दृग्गुजि ।
अश्ववर्ते च शाला तु गृहाङ्गस्कन्धशाखयोः ॥ ३७ ॥

शक्तिः कासूर्बलं लक्ष्मीः शारदावृतुवत्सरौ ।
शङ्का वितर्कभययोः श्रद्धाऽऽस्तिक्याभिलाषयोः ॥ ३८ ॥

शाखा वेदप्रभेदेषु बाहौ पादद्रुमाङ्गयोः ।
श्यामा कन्या निशा चाथ शान्तिः प्रशममङ्गले ॥ ३९ ॥

शिखा श्वालाकेकिमौल्योः शिफा शाखाग्रमौलिषु ।
शुण्डा करिकरे मद्ये श्रुतिर्वेदे श्रवस्यापि ॥ ४० ॥

शय्या तल्पे ग्रन्थगुम्फे शंसा तु स्तववाक्ययोः ।
संविद् युद्धे प्रतिज्ञायां सङ्केताचारनामसु ॥ ४१ ॥

सम्भाषणे क्रियाकारे विज्ञाने तोषणेऽपि च ।
 सभा तु संसदि द्यूते गृहे सामाजिकेषु च ॥ ४२ ॥
 संज्ञाऽर्कभार्या चैतन्यं हस्ताद्यैः सूचनाऽभिधा ।
 संस्था व्यवस्थाप्रणिधिसमाप्त्याकारमृत्युषु ॥ ४३ ॥
 सन्धाऽवधौ प्रतिज्ञायां सातिर्दानावसानयोः ।
 सीमसीमे तु कूलेऽपि स्थानमर्यादयोः स्थितिः ॥ ४४ ॥
 गङ्गेष्टिमूर्वयोः स्नुह्यां लेपभेदेऽमृते सुधा ।
 राशमेखलयोः स्थूना सीता सस्ये हलाध्वान् ॥ ४५ ॥
 स्थूणा सूर्या गृहस्तम्भे हिंसा चौर्यादिके वधे ।
 हेलाऽवज्ञाभावचारौ हेतिर्ज्वालांशुरायुधम् ॥ ४६ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 द्वयक्षरकाण्डे स्त्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥



नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

अन्नं सलिलदे व्योमन्यस्त्रं कोदण्ड आयुधे ।
 अग्रं पुरःशिखामानशैष्ट्याधिक्यफलेषु च ॥ १ ॥
 मुष्के पद्म्यादिकोशेऽण्डं दुःखैनोव्यसनेष्वधम् ।
 अर्शसी व्याधिदुर्नाम्नी आज्ये श्रीवाससर्पिषि ॥ २ ॥
 वर्षार्थजीवितेष्वायुरास्यं मुखविले मुखे ।
 उरस्तु वक्षसि श्रेष्ठ ऋतं तथ्यशिलोऽब्धयोः ॥ ३ ॥
 ओजोऽवष्टम्भबलयोरोकसी मन्दिराश्रमौ ।
 क्रियायजनयोः कर्म क्षीरं दोहजमम्बु च ॥ ४ ॥
 कुण्डं स्थात्यां जलाधारविशेषेऽनलगर्तके ।
 पिण्याको नम्रहूः किण्वं कूलं तीरे चमूकटौ ॥ ५ ॥
 क्षेत्रं गृहे पुरे देहे केदारे योनिभार्ययोः ।
 पुण्यस्थाने समूहे च घृतं त्वाज्येऽम्बुसर्पिषोः ॥ ६ ॥
 चक्रं सैन्ये जलावर्ते रथाङ्गे चयराष्ट्रयोः ।
 संसारे मण्डले वृत्ते छद्मभेदास्त्रभेदयोः ॥ ७ ॥
 चैत्यं चिताङ्के बुद्धाण्डे उद्देशेऽद्रौ सुरालये ।
 चिह्नमङ्के पताकायां छद्म सद्धानि कैतवे ॥ ८ ॥
 छन्दः श्रुतीच्छापद्येषुच्छिद्रं रन्ध्रापराधयोः ।
 जालं गवाक्ष आनाये क्षारके कपटे गणे ॥ ९ ॥
 जीलं चर्मपुटः कोशो दृतिः करकपत्रिका ।
 ज्योतिस्ताराग्निभाज्ज्वालाहकपुत्रार्थाध्वरात्मसु ॥ १० ॥
 तन्त्रं स्वराष्ट्रव्यापारे तन्तुवाने परिच्छदे ।
 शास्त्रौषधान्त्रमुख्येषु प्रयोगेऽध्वरकर्मणम् ॥ ११ ॥
 एकस्यैवोभयार्थत्वे कुडुम्बव्यापृतावपि ।
 तल्पं शय्यादृजायासु तनुषी तनुविस्तृती ॥ १२ ॥
 त्रपु सीसे च रङ्गे च तरसी बलरंहसी ।
 तीर्थं मन्त्राद्युपाध्यायशास्त्रेष्वम्भसि पावने ॥ १३ ॥
 पात्रोपायावतारेषु स्त्रीपुष्पे योनियज्ञयोः ।
 तेजो बले प्रभावेऽन्ते ज्योतिष्यर्चिषि रेतसि ॥ १४ ॥

नवनीतेऽनले धर्मे दानं हस्तिमदेऽपि च ।
 द्रव्यं गुणानामाधारे भेषजे योगवित्तयोः ॥ १५ ॥
 द्वन्द्वं युग्मं हिमोष्णादि मिथुनं कलहो रहः ।
 धाम जन्मप्रभावान्नभाःसु खे भोजने गृहे ॥ १६ ॥
 नेत्रं नाड्यां तरोर्मूले वस्त्रे दृशि मथो गुणे ।
 नाट्यं तौर्यत्रिके नृत्ते नालं विवरशेषसोः ॥ १७ ॥
 पदं स्थाने शरे त्राणे पादाङ्के पादचिह्नयोः ।
 शब्देऽशुबस्तुवाक्येषु व्यवसायापदेशयोः ॥ १८ ॥
 पर्व ग्रन्थौ पञ्चदश्यां प्रस्तावे विषुवादिके ।
 पक्ष्म सूत्राद्यवयवे किञ्चलके नेत्रलोमसु ॥ १९ ॥
 पत्रं तु वाहने पर्णे क्षुरिकागरुतोरपि ।
 पयोऽम्भसि च दुग्धे च पाथसी सलिलौदनौ ॥ २० ॥
 पात्रं तु भाजने योग्ये वित्ते कूलद्वयान्तरे ।
 पार्थीषि स्वर्गचन्द्रार्का पिच्छं बर्हे खगच्छदे ॥ २१ ॥
 पोत्रं मुखाग्रदेशे स्यात् सूकरस्य हलस्य च ।
 नवनीतं पयः पीथं बर्हं पर्णशिखण्डयोः ॥ २२ ॥
 बीजं शुक्ले फलास्थन्यन्ने भर्मणी स्वर्णवेतने ।
 वणिङ्मूलधने पात्रे भाण्डं भूषाश्चभूषयोः ॥ २३ ॥
 भाग्यं कर्मण्यन्यजन्मकर्मण्यपि शुभाशुभे ।
 भर्गसी रेतआलोकौ महसी तेजउत्सवौ ॥ २४ ॥
 माल्यं पुष्पे पुष्पदाम्नि मूल्यं वेतनवस्त्रयोः ।
 मुखं तु वदने मुख्ये तान्ने द्वाराभ्युपाययोः ॥ २५ ॥
 मूलं वशीकृतौ स्वीये शिफातारान्तिकादिषु ।
 गमने वाहने यानं रत्नं श्रेष्ठे मणावपि ॥ २६ ॥
 रहो रहस्ये सुरते रिष्टं नाशे शुभेऽशुभे ।
 रुक्मं हेम सुलोहं च रेतसी शुक्लमम्बु च ॥ २७ ॥
 रूपं शब्दे पशौ श्लोके ग्रन्थावृत्तौ सितादिषु ।
 सौन्दर्ये च स्वभावे च शरद्रेण्वार्तवे रजः ॥ २८ ॥
 लालं पल्लव उद्याने लक्ष्म चिह्नवरिष्ठयोः ।
 स्यादुपच्छन्दने लालं गुह्यार्थपरभार्ययोः ॥ २९ ॥
 लिङ्गं शोफसि वेधेऽशे चिह्ने बुद्ध्यादिसंहतौ ।
 वयः खगेऽन्ने वर्षेऽर्थे शुभाकारे तनौ वपुः ॥ ३० ॥

वर्चोऽर्चिरूपविड्भाःसु वनं भास्यप्सु कानने ।
 व्रतं विष्णुवृत्तुवर्षेज्यातपोमासाग्निभुक्तिषु ॥ ३१ ॥
 वीर्यं पराक्रमे रेतस्यन्नमाहात्म्ययोरपि ।
 वेष्टं ब्रह्मणि नाके च शलके शकलवल्कले ॥ ३२ ॥
 शाखाण्यस्त्रमयःशंसा शास्त्रं ग्रन्थनिदेशयोः ।
 शार्ङ्गं चापे हरेश्चापे शीलं वृत्तस्वभावयोः ॥ ३३ ॥
 शुल्बं ताम्रे यज्ञकर्मण्याचारे जलसन्निधौ ।
 शोचिः शोकांशुपैङ्गल्यशुद्धत्वेषु सरोऽप्सु च ॥ ३४ ॥
 यज्ञभेदे सदादाने सत्रमाच्छादने वने ।
 सर्पिर्घृते च तोये च सान्त्वे दाक्षिण्यसान्त्वने ॥ ३५ ॥
 स्नानीयेऽभिषवे स्नानं स्थानं स्यादाश्रये स्थितौ ।
 सूत्रं तन्तौ सङ्ग्रहोक्तौ सुखमानन्दतोययोः ॥ ३६ ॥
 स्रोतोऽम्बुनिर्गमद्वार इन्द्रियेऽप्सु जलस्रुतौ ।
 हविर्हव्ये घृते तोये हेम्नी काञ्चनवेतने ॥ ३७ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

द्व्यक्षरकाण्डे नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥



अर्थवह्निज्ञाध्यायः ॥ ४ ॥

अर्थोऽर्थयुक्तात्मवतोरन्त्योऽन्त्यजनिऋष्टयोः ।
 क्लृप्तेऽर्घ्यार्घ्यमर्घाहेऽप्यदस्त्वत्र परत्र च ॥ १ ॥
 अन्यौ विभिन्नसदृशावार्यः साधुकुलीनयोः ।
 आद्यमादिभवे भक्ष्येऽप्युत्पत्तिरहितेऽप्यृजुः ॥ २ ॥
 मुख्यान्यकेवलेष्वेकः कष्टौ गहनदुःखितौ ।
 कल्या नीरुग्दक्षसज्जा योग्ययुक्तहिताः क्षमाः ॥ ३ ॥
 कटुस्तिक्ताप्रियाकार्यसुरभ्यूषणमत्सरे ।
 क्रूरो भयङ्करे क्रुद्धे नृशंसे कठिनोष्णयोः ॥ ४ ॥
 गौरोऽरुणे सिते पीते गृह्यस्त्वस्वैरिपक्षयोः ।
 छिन्नाक्षे छिन्ननेत्रे च चिल्लं चुल्लं च पिब्लवत् ॥ ५ ॥
 चोद्यं चित्रे चोदनाहे चारु चित्रवचस्यपि ।
 जडो जाल्मश्च निर्बुद्धौ स्तब्धेऽनालोच्यकारिणि ॥ ६ ॥
 ज्यायान् ज्येष्ठश्चाग्रजन्मन्यतिवृद्धातिशस्तयोः ।
 जात्यः श्रेष्ठे कुलीने च डिम्भो बालिशबालयोः ॥ ७ ॥
 द्रुतं शीघ्रे शीघ्रगतेऽप्यवदीर्णविलीनयोः ।
 दृढं गाढेऽधिके स्थूले धूतं त्यक्ते प्रकम्पिते ॥ ८ ॥
 धृष्णुर्धृष्टे प्रगल्भे च कुटिले बन्धुरे नतम् ।
 न्यक्षं छिष्टे निकृष्टे च निजमात्मीयनित्ययोः ॥ ९ ॥
 नीचं खर्वे निकृष्टे च समर्थेऽधिपतौ प्रभुः ।
 प्राप्तं न्याय्ये च लब्धे च विपुलानेकयोर्बहु ॥ १० ॥
 बालो मूर्खे शिशौ भव्यो भावी योग्यः शुभोऽपि च ।
 मिश्रेऽपि भिन्नं म्लिष्टं तु म्लानाविस्पष्टवाक्ययोः ॥ ११ ॥
 मुग्धं सौम्ये नवे मूढे मूढो मोहिनि तन्द्रिते ।
 मृद्वतीक्षणे कोमले च बद्धोपरतयोर्यतः ॥ १२ ॥
 याप्यं गह्वं यापनीये पृथक्संयुक्तयोर्युतम् ।
 न्याय्यसंयुक्तयोर्युक्तं रूक्षो निष्प्रेम्यचिक्कणे ॥ १३ ॥
 रथ्यो रथहितेऽमुष्य स्वीयेऽस्याश्वे च वोढरि ।
 रागवद्रोहितौ रक्तौ रामश्चारौ सितेऽसिते ॥ १४ ॥

न्याय्यलब्धव्ययोर्लभ्यं लिप्तो भक्षितदिग्धयोः ।
 लघु त्वसारागुरुणोरिष्टे क्षिप्रमनोज्ञयोः ॥ १५ ॥
 लोलं चले लोलुपे च व्यग्रो व्यापृत आङ्गुले ।
 वल्गु मञ्जौ च वामस्तु सौम्ये सव्यप्रतीपयोः ॥ १६ ॥
 विद्धं विदारिते तुल्ये विन्नं लब्धे विचारिते ।
 शितिः श्वेते च नीले च शुभो मञ्जुप्रशस्तयोः ॥ १७ ॥
 शुभ्रं शुक्ले भास्वरे च शुक्तं तु परुषाम्लयोः ।
 सभ्यः सामाजिके साधौ सव्यो दक्षिणवामयोः ॥ १८ ॥
 सन्नमल्पे विशीर्णादौ स्वादुर्मधुरमृष्टयोः ।
 स्फुटाः स्पष्टव्याप्तफुल्लाः स्थूलौ तु जडपीवरौ ॥ १९ ॥
 मन्त्रिण्यपि सुहृत्स्निग्धे प्रतिज्ञावत्यपि स्थितः ।
 मन्दस्वच्छन्दयोः स्वैरो हीनो मुक्तविगर्हयोः ॥ २० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

द्वयक्षरकाण्डे अर्थवलिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥



नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

नानालिङ्गेषु सर्वत्र स्वयमेव क्वचित् क्वचित् ।
 उन्नेयमर्थवल्लिङ्गं गुणद्रव्यक्रियार्थकम् ॥ १ ॥
 अक्षो रथाङ्ग आधारे व्यवहारे विभीतके ।
 शकटे पाशके कर्षे द्यूतभेदेऽक्षमिन्द्रिये ॥ २ ॥
 अब्जो धन्वन्तरौ शङ्खे चन्द्रे क्ली लवणेऽम्बुजे ।
 प्रदेशेऽश उपायेऽङ्गमङ्गो देशेऽङ्गशालिनि ॥ ३ ॥
 अविर्भूषणवत्योः स्त्री वायुप्राकारभाःसु ना ।
 अजः पितामहेऽनादौ छागे विष्णौ हरे रवौ ॥ ४ ॥
 अन्तोऽस्त्र्यवसिते मृत्यौ स्वरूपे निश्चयेऽन्तिके ।
 नार्धमासेऽणिरकल्यश्रौ रूप्येऽक्षामध्रुवे ध्रुवे ॥ ५ ॥
 अर्हन्तौ जिनसम्मान्यावर्वन्तौ ह्यकुत्सितौ ।
 अन्धोऽचक्षुस्तमोऽप्यन्धमर्चिर्भास्वालयोर्न ना ॥ ६ ॥
 अस्र आस्रश्च पुंलिङ्गौ क्लेशे क्ली रुधिराऽश्रुणि ।
 आद्यो मुख्ये धातृपूर्वेष्वाभ्यामोऽपकेऽपि रुच्यपि ॥ ७ ॥
 इनास्त्वात्माधिपार्काढ्या उष्णोऽग्नौ चतुरेऽपि च ।
 उशिर्नागनावुशीरेऽस्त्री न नोषः कल्यसन्ध्ययोः ॥ ८ ॥
 उन्नः किरण उन्ना गौर् ऋक्षं निर्लोमनीन्द्रिये ।
 कम्बुस्त्री वलये शंखे शम्बूके कणसंख्ययोः ॥ ९ ॥
 कल्को ना सिङ्घके न स्त्री किट्टे दम्भेऽघपिष्टयोः ।
 कारा बन्धनगेहे स्त्री करे ना बन्धने न षण् ॥ १० ॥
 कांस्यं कंसोऽस्त्रियां पानपात्रे तैजस आढके ।
 काण्डोऽस्त्रीषौ बले नाले गर्होऽवसरवर्गयोः ॥ ११ ॥
 ग्रन्थौ स्तम्बे प्रकाण्डेऽप्सु कश्यं मद्यकशार्हयोः ।
 क्षुद्रो दरिद्रे कृपणे नृशंसेऽल्पनिकृष्टयोः ॥ १२ ॥
 क्षुद्रा व्यङ्गा नटी वेश्या सरघा कण्टकारिका ।
 कूटोऽस्त्री पुञ्जमायावेष्बद्रिशृङ्गेषुभेदयोः ॥ १३ ॥
 अयोधनेऽनृते फाले दम्भे निश्चलयन्त्रके ।
 कृष्णं सीसाघतोद्देषु कृष्णो नीले नले कलौ ॥ १४ ॥

शूद्रे काके पिके व्यासे ध्वान्तपक्षेऽङ्गुने हरौ ।
 कोशोऽस्त्री कुङ्कुमले दिव्ये शास्त्रेऽथौघे गृहे तनौ ॥ १५ ॥
 गुह्येऽण्डे वेष्टके पेश्यां पुस्तकासिपिधानयोः ।
 कोलं बदरतक्कोलशुण्ठीव्योषेऽर्धकर्षके ॥ १६ ॥

कोला चव्येऽस्त्रपिप्पल्योः कोलः खञ्जे प्लवे किटौ ।
 कायो लक्ष्ये तनौ वृन्दे पुमांस्त्रिषु कदैवते ॥ १७ ॥
 कर्षूः स्त्री तुषकोष्ठे कुल्यायां ना च ना करीषाग्नौ ।
 श्रोण्यां भृशे किलिञ्जे गजगण्डे शवरथे शवे च कटः ॥ १८ ॥
 किष्कुर्वितस्तावनपुं सप्रकोष्ठकरे पुमान् ।
 कीलोऽस्त्री कफणौ ज्वाले वाहौ ना शङ्कुशर्वयोः ॥ १९ ॥

पीठे श्मश्रुणि कूर्चोऽस्त्री भ्रूमध्ये कथने कुशे ।
 कृत्या क्रियादेवतयोः कार्ये स्त्री कुपिते त्रिषु ॥ २० ॥
 युगेऽक्षपाते पर्याप्ते कृतं स्त्री विहितेऽर्थवत् ।
 द्वेढा वेणुशलाकायां सिंहनादे विषे तु ना ॥ २१ ॥
 क्षेमो ना प्राप्तरक्षायां मोक्षेऽप्यस्त्री तु मङ्गले ।
 स्वीयेऽन्तःकुक्षि कोष्ठोऽस्त्री कुसूलेऽन्तर्गृहे पदे ॥ २२ ॥
 क्रोडं स्त्री कर्ष उत्सङ्गे सूकरे ना न नोरसि ।
 औषधे रुजि कुष्ठोऽस्त्री कुब्जोऽस्त्री गह्वरे हनौ ॥ २३ ॥

दर्भे कुशोऽस्त्री तोये क्ली कुटिवेक्रे गृहे नषण् ।
 कृष्टिर्विलेखे प्राज्ञे ना खेटो ग्रामे कफेऽधमे ॥ २४ ॥
 अर्धे गुडविकारे च खण्डोऽस्त्री खण्डिते त्रिषु ।
 खलं भूस्थानकल्केषु खलो नीचः खलेत्तरी ॥ २५ ॥
 गन्धूतौ गोगणे गव्या ज्यायागद्रव्ययोर्नपुम् ।
 भाण्डागारे पुमान् गङ्गाः स्त्री तु खन्यां सुरागृहे ॥ २६ ॥
 गुडौ पिण्डेऽभुविकृती स्नुहीगुलिकयोर्गुडा ।

गुरुर्गोष्पतिपित्राद्योः पौरोहित्यकरे च ना ॥ २७ ॥
 मात्रादौ स्त्री बृहत्खातदुर्भरालघुषु त्रिषु ।
 गोत्रा गोनिचये भूम्यां गोत्रं नान्नि कुलेऽचले ॥ २८ ॥

गङ्गुः पृष्ठगुडे कुब्जे गदो रोगो गदायुधम् ।
 गोप्यो रक्ष्ये दाससुते घ्राणमाघ्रातनासयोः ॥ २९ ॥
 घनाः कठिनसङ्घातमेषकाठिन्यमुद्गराः ।
 चित्रा सुभद्रा तारा च चित्रमालेख्यमिश्रयोः ॥ ३० ॥

चेलं वासोऽक्षमं काम्यं गर्हितं बर्हिचन्द्रकः ।
 चुम्बो नाशे विषण्णे च चोक्षो गीतमनोज्ञयोः ॥ ३१ ॥
 छेको विदग्धे गृह्ये च जिह्वं मन्देऽघवक्रयोः ।
 जन्यं रणे जनितरि विगीतजननीययोः ॥ ३२ ॥
 ज्ञातिभृत्या नवोढाया जन्याः स्निग्धा वरस्य च ।
 जीवः प्राणे त्रयी ना तु जन्तवात्मनि गीष्पतौ ॥ ३३ ॥
 त्रिषु जीवति मौर्व्या स्त्री स्याज्जीर्णो वज्रवृद्धयोः ।
 भृषा नागबलायां स्त्री ना मत्स्ये मकरे वने ॥ ३४ ॥
 तनुः स्त्री त्वचि देहे च त्रिष्वल्पे विरले कृशे ।
 तमा राहुस्तमोऽघं शुक् स्वरूपेऽघस्तलोऽस्त्रियाम् ॥ ३५ ॥
 क्ली तुल्यदेशे तारस्तु मुक्ताशुक्तौ समौक्तिके ।
 उडुहृद्वाध्ययोरक्ली तुच्छं त्वसुखशून्ययोः ॥ ३६ ॥
 ताम्रं शुल्बे शुल्बनिभे तिग्मास्तीक्ष्णोष्णभास्कराः ।
 तीक्ष्णमुष्णे दणुते युद्ध आत्मत्यजि विषेऽयसि ॥ ३७ ॥
 कर्णमूलेऽध्रहरितोस्तोकमं तोकमो हरिद्यवः ।
 दण्डोऽस्त्री शासने राज्ञां हिंसायां लगुडे दमे ॥ ३८ ॥
 मिथ्याऽऽज्ञायां सैन्यभेदे दलो भागे दलं छदे ।
 दरोऽस्त्री शङ्खभीगर्तेष्वल्पार्थे त्वव्ययं दरम् ॥ ३९ ॥
 दंष्ट्री प्राहे सदंष्ट्रेऽहौ शार्दूले मूषिके किटौ ।
 परिमाणे दारुपात्रे द्रोणोऽस्त्री वायसे पुमान् ॥ ४० ॥
 दिग्धो विषप्रलिप्तेषौ लिप्ते स्नेहप्रवृद्धयोः ।
 दुर्गो राष्ट्रे वने दुर्गं दुर्गमे नरके पुरे ॥ ४१ ॥
 दृश्या स्यात् पृतना दृश्यं दर्शनीये विभूषणे ।
 धर्मोऽस्त्री सुकृते साम्ये स्वभावे ना तु सोमपे ॥ ४२ ॥
 न्यायाचारयमाहिंसास्वस्त्री मेढ्राङ्गयोर्ध्वजः ।
 धिष्ण्यौ शुक्रानलौ धिष्ण्यमृत्ते स्थाने बले गृहे ॥ ४३ ॥
 ध्रुवो धात्रीशकीलर्क्षनित्येषु स्त्री तु भूक्षुचोः ।
 क्ली तर्के निश्चिते व्योम्नि धीरोऽब्धौ मन्थरे बुधे ॥ ४४ ॥
 निष्कोऽस्त्री हेम्नि दीनारे साष्टे कर्षते पले ।
 वक्षोविभूषणे कर्षे नाथस्त्वन्द्रे प्रभावपि ॥ ४५ ॥
 न्युब्जं कुब्जे कर्मरङ्गे न्युब्जो व्याघावधोमुखे ।
 नेमः पुरोहिते तुल्ये प्रस्थोऽस्त्री सानुमानयोः ॥ ४६ ॥

बन्धने दूरमार्गे च प्राध्वं क्ली प्रवणे त्रिषु ।
 पूर्वोऽर्थलिङ्गः प्राच्यादौ पूर्वजेषु नृभूमवान् ॥ ४७ ॥
 पद्मोऽस्त्रयब्जेऽष्टकायां ह्री सङ्ख्यायां गजबिन्दुषु ।
 ना तु नागे निधौ व्यूहे पङ्कोऽस्त्री कर्दमैनसोः ॥ ४८ ॥
 परं दूरान्यमुख्येषु परोऽरिपरमात्मनोः ।
 पार्श्विणरुन्मत्तनार्या ह्री पादग्रन्थेरधोऽपि च ॥ ४९ ॥
 पुमांस्तु पृतनाकट्यां पापं स्यात् कूरपाप्मनोः ।
 पुण्यं धर्मे जले हेम्नि पुष्पे ह्री सुन्दरेऽर्थवत् ॥ ५० ॥
 पार्श्वमस्त्री समीपेऽपि पूज्यः श्वशुरमान्ययोः ।
 स्नेहे केलौ प्रेम न ह्री पीतिः पाने ह्ये तु ना ॥ ५१ ॥
 स्यात् परेत इव प्रेतो मृतप्राणिविशेषयोः ।
 लाभनिष्पत्तिभोगेषु बीजे फाले धने फलम् ॥ ५२ ॥
 फली ताम्रादिफलके बहिर्नाऽग्नौ नपुं कुशे ।
 ब्रह्मा रुद्रेन्द्रभृग्वादिविप्रत्विग्यज्ञघातृषु ॥ ५३ ॥
 अर्केऽग्नौ ह्री तु वेदेऽन्ने स्वाध्यायात्मतपःसु च ।
 बलं रूपेऽस्थनि स्थौल्ये शक्तिरेतश्चमूषु च ॥ ५४ ॥
 बलो रामे बलाढ्ये च बाढं त्वनुमते दृढे ।
 बिम्बोऽस्त्री मण्डलसमप्रतिमामुखलक्ष्मसु ॥ ५५ ॥
 प्रतिबिम्बे तत्प्रकृतौ क्ली तु स्याद् बिम्बिकाफले ।
 साज्ये मधुनि तक्केले बोलं बोलोऽम्भसां भ्रमः ॥ ५६ ॥
 बोधिरर्थे सुविज्ञाने कुक्कुटाश्वत्थयोस्तु ना ।
 बालोऽक्ली नीलकिण्ट्यां च भेलौ तूडुपभीरुकौ ॥ ५७ ॥
 भगं योन्यां भगो यत्ने यशोवीर्यार्कभूतिषु ।
 कान्तीच्छाज्ञानवैराग्यधर्मैश्वर्यतपःसु च ॥ ५८ ॥
 खादौ जन्तौ च भूतं क्ली समातीतोचिते त्रिषु ।
 भास्वानिन्दौ भास्वरेऽर्के भेको वर्षाश्व कातरे ॥ ५९ ॥
 अन्नतत्परयोर्मक्तं भद्रं कल्याणसौख्ययोः ।
 मन्दाः सरोगनिर्भाग्यस्वल्पाज्ञापदसूर्यजाः ॥ ६० ॥
 क्षौद्रादौ तद्रसेऽप्यस्त्री ना वसन्ते रसेऽसुरे ।
 चैत्रे मधूके क्ली त्वप्सु मद्ये पुष्परसे मधु ॥ ६१ ॥
 अक्ली मणिरजाकण्ठस्तने रत्नेऽप्यलिङ्गरे ।
 मात्रा परिच्छदेऽर्थेशे प्रवृत्तौ कर्णभूषणे ॥ ६२ ॥

अक्षरावयवे माने मात्रं कात्स्न्येऽवधारणे ।
 मध्यं युक्तेऽन्तराले च महद्राज्यविशालयोः ॥ ६३ ॥
 मोचा कदल्यां स्त्री वृक्षरसे ना पाटले नषण् ।
 मौलिः संयतकेशेषु चूडायां मुकुटेऽप्यवण् ॥ ६४ ॥
 मलं किट्टाघयोश्चास्त्री यमजान्तकयोर्यमः ।
 ययुर्ना मोक्षमार्गेऽश्वे स्त्री त्वाप्तौ दोर्घयष्टिके ॥ ६५ ॥
 युगोऽस्त्री स्यन्दनाद्यङ्गे क्ली तु युग्मे कृतादिके ।
 योनिः स्त्रीणां भग्नो स्थाने कारणे ताम्रकेऽप्यवण् ॥ ६६ ॥
 योग्यं यन्त्रक्षमापूपयानोपायिषु चन्दने ।
 योग्याभ्यासः क्षमापुण्ये रोको रश्मौ बिले नपुम् ॥ ६७ ॥
 राजते भूपणे रूप्यं रजते हेम्नि चाहते ।
 त्रिषु प्रशस्तरूपेऽथ रणोऽस्त्री युधि ना ध्वनौ ॥ ६८ ॥
 राष्ट्रेऽस्त्री विषये जन्तौ लोहोऽस्त्री तैजसायसोः ।
 लक्षं नपुं शरव्ये ना स्त्री व्यजे नियुते न ना ॥ ६९ ॥
 वर्णो नीलादिविप्राद्योः कीर्तौ गीतिक्रमे स्तुतौ ।
 कुथे वृतेऽक्षरे त्वस्त्री प्रकारे लेपशोभयोः ॥ ७० ॥
 वशा करिण्यां बन्ध्यायां रामायां दुहितर्यपि ।
 वशो जनस्पृहायत्तेष्वायत्तत्वप्रभुत्वयोः ॥ ७१ ॥
 वरो ना रूपजामात्रोर्देवादेरीप्सिते वृत्तौ ।
 त्रिष्वप्रथे क्ली मनागिष्टे व्यक्तं स्पष्टे बुधे तु ना ॥ ७२ ॥
 वत्सो ना कुटजे वर्षे तर्णके तनयादिके ।
 बाले च वक्षसि त्वस्त्री वज्रोऽस्त्री हीरकास्त्रयोः ॥ ७३ ॥
 व्यालो दुष्टगजे सर्पे श्वापदे च पुमांस्त्रिषु ।
 शठेऽथ वित्तमर्थे क्ली त्रिषु ख्याते विचारिते ॥ ७४ ॥
 वीतं शान्ते दुर्गजाश्वे वधो हिंसितृहिसयोः ।
 वार्ता वातिङ्गणोदन्तवाणिज्यादिषु वर्तने ॥ ७५ ॥
 निःसारारोग्ययोः षण्डो वृत्तिमञ्जीरुजोस्त्रिषु ।
 वृत्तं स्वरूपे चरिते वृत्तौ छन्दोविधासु च ॥ ७६ ॥
 त्रिष्वतीतद्वदाधीतवर्तुलेष्वथ गीष्पतौ ।
 श्रेष्ठोक्षाश्वाखुरेतःसु पुंघर्मेन्द्रबले वृषः ॥ ७७ ॥
 वसुर्हर्देऽग्नौ योक्त्रेऽशौ वसु तोये धने मणौ ।
 विश्वं जगति सर्वस्मिन्त्रिषु शुण्ठ्यां पुनर्न ना ॥ ७८ ॥

वप्रः पितरि ना न स्त्री क्षेत्रे रोधसि सानुनि ।
 वर्षोऽस्त्री भारताद्यब्दवृष्टिषु प्रावृष्टि स्त्रियः ॥ ७६ ॥
 वास्त्वस्त्री गृहभूपूर्योगृहे सीमसुरुङ्गयोः ।
 वानं शुष्के गतौ व्यूतौ गन्धे वृद्धौ सुधीयमौ ॥ ८० ॥
 वर्ष्म न स्त्री शुभाकारे सौम्ये देहप्रमाणयोः ।
 विभुः सर्वगते पत्यौ चन्द्रे रविकुबेरयोः ॥ ८१ ॥
 वीरो राहौ हरे शक्रे शूरे स्कन्दकुबेरयोः ।
 गजग्रहणभूमौ स्त्री वारिः स्यात् सलिलं नपुम् ॥ ८२ ॥
 शङ्खोऽस्त्री बलये कम्बौ संख्यायां च निधौ तु ना ।
 अमावस्यां च नागे च शितौ बाणतनूकृतौ ॥ ८३ ॥
 शिवा हरीतकी क्रोष्टा शमी नद्यामलक्युमा ।
 शिवो घोले पद्मरागे हरे कीले शिवं जले ॥ ८४ ॥
 भद्रे चाथोपधा शुद्धसचिवेऽभौ हरौ शुचिः ।
 चन्द्रेऽर्के च त्रिषु त्वेष शुद्धेऽनुपहते शिते ॥ ८५ ॥
 शुक्रः सिते कवौ चन्द्रे मासभेदेऽनले द्विजे ।
 शुक्रं मध्येऽप्सु पुण्येऽर्थे रुक्मेऽक्षिरुजि रेतसि ॥ ८६ ॥
 क्रीडाम्बुयन्त्रे शृङ्गोऽस्त्री पर्वताग्रप्रभुत्वयोः ।
 पञ्चङ्गे चाथ शेषस्त्रिष्वन्यस्मिन्नुपयुक्ततः ॥ ८७ ॥
 माल्याक्षतादिदाने स्त्री ना नागेशाग्रधानयोः ।
 ना पर्याणे विहङ्गे स्त्री शारिर्द्युते गुडे नषण् ॥ ८८ ॥
 पथि देये शुल्कमस्त्री जामात्रा यच्च दीयते ।
 श्रुतं शास्त्रावधृतयोर्नपुमाकर्णितेऽर्थवत् ॥ ८९ ॥
 सजातिशिल्पसंहत्यामषण्डः श्रेणिराबलौ ।
 शौण्डी जलदमालायां शौण्ढौ समदकुक्कुटौ ॥ ९० ॥
 शको विष्ठा पशूनां स्याद्देशे च गवये शकाः ।
 शबले मारुते शारः शुद्धाः पूतार्ककेवलाः ॥ ९१ ॥
 शुभ्रिर्नार्केऽर्थवत्सौम्ये शूरौ विक्रान्तकुक्कुटौ ।
 शूलोऽस्त्री रुजि शस्त्रे च श्वेतं धवलरूप्ययोः ॥ ९२ ॥
 शीतो ना वेतसे शेलौ शैत्ये क्ली तद्वति त्रिषु ।
 सत्त्वोऽस्त्री जन्तुषु क्ली तु व्यवसाये पराक्रमे ॥ ९३ ॥
 आत्मभावे पिशाचादौ द्रव्ये सत्तास्वभावयोः ।
 प्राणे बलेऽन्तःकरणे स्वामी पत्यौ षडानने ॥ ९४ ॥

समा स्त्री वत्सरे साधुसर्वतुल्येषु वाच्यवत् ।
 परमार्थेऽर्थवत् सत्यं षण्डः शपथतध्ययोः ॥ १५ ॥
 स्पर्शः संस्पर्शने स्पष्ट्युपतापप्रदानयोः ।
 साधुस्त्रिषृचि ते सौम्ये सज्जने वार्धुषौ पुमान् ॥ १६ ॥
 सारो बले स्थिरांशेऽर्थे पुमान् न्याये वरेऽर्थवत् ।
 स्त्री नद्यां ना नदे सिन्धुर्देशभेदेऽम्बुधौ गजे ॥ १७ ॥
 सौम्यो विप्रे सोमजेऽब्दे सुन्दरे सोमदैवते ।
 सखा सहाये बन्धौ ना सूक्ष्ममध्यात्मदभ्रयोः ॥ १८ ॥
 सूनं पुण्ये सुतायां स्त्री स्नेहोऽस्त्री द्रवहार्दयोः ।
 विष्णुचन्द्रेन्द्रवातार्कयमाश्वांशुशुक्राग्निषु ॥ १९ ॥
 कपिभेकाहिसिंहेषु हरिर्ना कपिले त्रिषु ।
 हृद्यो वशीक्रिया मन्त्रे हृद्यं दध्युपलेपने ॥ २० ॥
 हृत्प्रिये हृद्धिते हृज्जे ह्रीकौ नकुललज्जितौ ।
 यमेऽल्पे वामने ह्रस्वो हरित् स्त्री दिशि षण् तृणे ॥ २१ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

द्व्यक्षरकाण्डे नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

द्व्यक्षरकाण्डः समाप्तः ॥ ६ ॥



७. अथ त्र्यक्षरकाण्डः

पुंलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

अविनौ विहगाध्वर्यु अरन्नी हस्तकूर्परौ ।
 अत्ययोऽतिक्रमे कृच्छ्रे मरणे दण्डदोषयोः ॥ १ ॥
 आसारः स्यात् प्रसरणे वेगवृष्टौ सुहृद्वले ।
 आग्रहः स्यात् स्वीकरणे निर्बन्धेऽनुग्रहेऽपि च ॥ २ ॥
 आम्नायोऽध्ययने वेदे सम्प्रदाये कुलेऽपि च ।
 आकर्षः शारिफलको द्यूत आकृष्टिपाशकौ ॥ ३ ॥
 गन्धमाल्योपहारे स्यादायोगो व्यापृतावपि ।
 आनर्त्तो नृत्तशालायां देशभेदे जने युधि ॥ ४ ॥
 आक्रन्दः क्रन्दने रावे नाथे घोररणेऽपि च ।
 आधार आलवालेऽम्बुबन्धेऽधिकरणेऽपि च ॥ ५ ॥
 आशिरः क्षीरविकृतौ भोजने पावके रवौ ।
 आवापो न्यास आवाले स्मरे घातरि चात्मभूः ॥ ६ ॥
 श्रोण्याश्चरोह आकारस्त्वाकृतावात्मवैकृते ।
 आमोदौ हर्षसौगन्धे आभोगौ यत्नपूर्णते ॥ ७ ॥
 आघातौ घातसीमानावाहारौ भक्षणान्धसी ।
 आलोकौ दर्शनोद्योतावागमौ शास्त्रमागतिः ॥ ८ ॥
 रुग्भीतितापेष्वतङ्क आशुगोऽर्के शरेऽनिले ।
 तदावे पात आपात आकरो निकरे खनौ ॥ ९ ॥
 अप्याकर्षणमाक्षेप आलम्भः स्पर्शहिंसयोः ।
 ईशानौ हरिधातारावुत्सेधौ वपुरुन्नती ॥ १० ॥
 उपाधिर्धर्मचिन्तायां कुडुम्बव्यापृतेऽपि च ।
 उत्सवस्त्विच्छाप्रसर उत्सेधामर्षयोर्महे ॥ ११ ॥
 उदर्क उत्तरे काले यच्च स्यात् फलमुत्तरम् ।
 उदान उदरावर्त्ते सर्पवायुप्रभेदयोः ॥ १२ ॥
 ऊर्णायुर्गुणनाभे स्यान्मेषतल्लोमकम्बले ।
 ऋषभोऽग्रये मत्तगजे श्रोत्ररन्ध्रे स्वरे वृषे ॥ १३ ॥

कुम्भीरपुच्छे च जलस्थाने त्वृक्षर ऋत्विजि ।
 वेणौ हुमाङ्गे रोमाङ्गे क्षुद्रशत्रौ च कण्टकः ॥ १४ ॥
 कञ्चुकः सर्पनिर्मोके कवचे वारवाणके ।
 कलापो भूषणे काञ्च्यां सङ्घाते बर्हतूणयोः ॥ १५ ॥
 क्षारको मत्स्यपक्ष्यादिपिटके पुष्पजालके ।
 दैवे कृतान्तः सिद्धान्ते यमाकुशलकर्मणोः ॥ १६ ॥
 कौशिको गुग्गुलुलक्षशक्रषिष्वाहितुण्डिके ।
 कलङ्कोऽङ्केऽपवादे च कलहो द्वन्द्वयुद्धयोः ॥ १७ ॥
 कलमोऽङ्कुरलेखन्योः कठाकुः खगशिल्पिनोः ।
 कारुजः कलभे नाके क्षवथुः क्षुतकासयोः ॥ १८ ॥
 कर्परोऽग्नौ कपालेऽपि करभांऽपि खरोष्ठयोः ।
 शरे किशारुकादम्बौ कुरण्डस्तु मूषेऽपि च ॥ १९ ॥
 कुटीरस्तु कुलीरेऽपि कुम्भीलस्तस्करेऽपि च ।
 कपोतः पारावतेऽपि कोकिलस्तूलमुकेऽपि च ॥ २० ॥
 वायौ वसन्ते क्षिपणुः क्षिपणो वायुकालयोः ।
 कुषाकुः पावके सूर्ये केसरी हयसिंहयोः ॥ २१ ॥
 किङ्किरौ क्रोष्टुखट्वाङ्गौ खेचरः पवनेऽपि च ।
 खपुरः पूगवेष्टेऽपि पूगनिर्यासयोरपि ॥ २२ ॥
 खोलकः पूगकोशे स्याद् भग्नभाण्डे शिरस्त्रके ।
 गोलको मणिके पिण्डे कम्बले विधवासुते ॥ २३ ॥
 अन्तरामवसत्त्वे स्याद् गन्धर्वो गायने ह्ये ।
 गरुत्मान् विहगे तार्क्ष्ये वृषार्केन्द्रेषु गोपतिः ॥ २४ ॥
 चङ्कुरः स्यन्दने दैत्ये चाक्रिकौ तैलघाण्टिकौ ।
 चिकिरोऽहौ गेहबभ्रौ जसुरिः पावके शनौ ॥ २५ ॥
 जम्बुकौ क्रोष्टुवरुणौ जम्बालौ पङ्कशैबलौ ।
 श्वेतस्तिलोऽपि जामाता जीमूतौ मेघपर्वतौ ॥ २६ ॥
 जगलो मेदके पिष्टमद्येऽपि कितवेऽपि च ।
 जनिमा मातापितरावुत्पत्तिस्तनयोऽपि च ॥ २७ ॥
 त्रिवर्गस्त्रिफला व्योषं स्थितिवृद्धिक्षया अपि ।
 तमोनुदोऽभिचन्द्रार्कास्तक्षकौ नागवर्धकौ ॥ २८ ॥
 तपनो भास्करे ग्रीष्मे त्रिदिवो व्योम्नि दिव्यपि ।
 त्रिशङ्कू तार्क्ष्यमार्जारौ त्रिधामा केशवेऽनले ॥ २९ ॥

सपिण्डपुत्रौ दायदौ द्वापरौ युगसंशयौ ।
 दिवौकाश्चातके देवे द्रुघणौ धातुमुदगरौ ॥ ३० ॥
 दरथो विवरे भीत्यां दिक्षु चापि प्रसारणे ।
 द्विजातिश्च द्विजन्मा च ब्राह्मणादिपतत्रिणोः ॥ ३१ ॥
 द्रुहिणौ हरिधातारौ शास्त्रोदाहरणयोस्तु दृष्टान्तः ।
 दोषज्ञौ बुधभिषजौ धरुणाः स्तनधातुलोकार्काः ॥ ३२ ॥
 धाराटश्चातकेऽश्वे च नभसौ व्योमसागरौ ।
 निवेशौ शिबिरोद्वाहौ निरोधौ रोधसंक्षयौ ॥ ३३ ॥
 निदेशावाज्ञाकथने विग्रहः सीम्नि भर्त्सने ।
 निवहो वायुभेदेऽपि निषङ्गस्तूणसङ्गयोः ॥ ३४ ॥
 ऊर्णाविकारे नमतो धूमे दिनकरेऽपि च ।
 निगमो निश्चये वेदे पुरे पथि वणिक्पथे ॥ ३५ ॥
 नितम्बः पश्चिमश्रोणिभागेऽद्रिकटके कटौ ।
 निष्क्रमो बुद्धिसामर्थ्ये निगतौ चाथ भूपतौ ॥ ३६ ॥
 नरेन्द्रो विषवैद्ये च नैगमस्तु श्रुतावपि ।
 निकारस्तु तिरस्कारे धान्यस्योत्क्षेपणेऽपि ॥ ३७ ॥
 द्वार्यापीडे काथरसे निर्यूहो नागदन्तके ।
 निषधोऽद्रौ देशभेदे कठिने तस्य राजनि ॥ ३८ ॥
 निहवः स्यादविश्वासेऽपह्वे निकृतावपि ।
 निर्वेशः सम्मूर्च्छने स्यात् कर्मभृत्युपभोगयोः ॥ ३९ ॥
 प्रतिज्ञायन्त्रणाऽऽज्ञासु नियमो निश्चये व्रते ।
 पतङ्गः शलभे शालौ मार्जारोऽग्नौ रवौ खगे ॥ ४० ॥
 परिधिर्यज्ञिये काष्ठे प्राकारे परिवेशणे ।
 परिघाते मूढगर्मे परिघोऽर्गलदण्डयोः ॥ ४१ ॥
 परागः पुष्परेणौ च स्नानीयादौ रजस्यपि ।
 पर्जन्यो गर्जदभ्रेऽभ्रध्वाने शक्नेऽस्त्रयन्त्रके ॥ ४२ ॥
 प्रलयो मरणे श्लेषे मूर्च्छासंवर्तयोरपि ।
 प्रवहो वायुभेदे स्याद् वायुमात्रे बहिर्गतौ ॥ ४३ ॥
 प्रयोगो प्राम्यधर्मे स्यात् कुसीदे कर्मणां विधौ ।
 प्रणयः स्यात् परिचये याच्यायां सौहृदेऽपि च ॥ ४४ ॥
 प्रवाहस्तु प्रकृष्टाश्वे जलवेगे प्रवर्तने ।
 पादपः पादपीठे स्यात् पादयाने द्रुमेऽपि च ॥ ४५ ॥

पिण्याकः सिङ्गके किण्वे श्रीवासतिलकल्कयोः ।
 पुरुषो धातुपुन्नागपुंस्त्वात्मपरमात्मनोः ॥ ४६ ॥
 पुलकोऽखे रत्नराज्यां रोमाञ्छे हीरके क्रिमौ ।
 पुलाकस्तुच्छधान्ये स्यात् सङ्क्षेपे भक्तसिक्थके ॥ ४७ ॥
 प्रसवो जननानुज्ञापुत्रेषु फलपुष्पयोः ।
 पारम्पर्ये प्रसङ्गेऽपि प्राणिनां गर्भमोचने ॥ ४८ ॥
 तुलासूत्रेऽश्वादिश्मौ प्रग्रहः प्रग्रहः पुनः ।
 तयोश्च संयमोद्योतपूलाबन्धगर्भघेषु च ॥ ४९ ॥
 प्रभवः स्यादपां मूले विक्रमे जन्मकारणे ।
 आद्योपलब्धिस्थाने च पुद्गलो देह आत्मनि ॥ ५० ॥
 प्रत्ययस्तु ख्यातिरन्ध्रविश्वासाधीनहेतुषु ।
 विज्ञाने शपथे शब्दे प्रस्तरोऽश्मा मणिः कुशः ॥ ५१ ॥
 पर्यस्त्यामपि पर्यङ्कः प्रकोष्ठोऽलिन्दकेऽपि च ।
 गजस्कन्धेऽपि पणवः प्रघणौ लोहमुद्गरौ ॥ ५२ ॥
 प्रियकः कृकलासेऽपि पेचकस्त्वचि हस्तिनाम् ।
 पुच्छमूले प्रपातस्तु पाते रोधसि सौप्तिके ॥ ५३ ॥
 पदाजिर्युधि मार्गे च रक्षोवृक्षौ पलाशिनौ ।
 प्रतिघौ रुट्प्रतीघातौ प्रतापौ पौरुषातपौ ॥ ५४ ॥
 प्रसादौ स्वाच्छब्दानुरोधौ पर्यायोऽवसरे क्रमे ।
 प्रदोषौ दोषराज्यशौ प्रणिधिः प्रार्थने चरे ॥ ५५ ॥
 वरुणेऽनले प्रचेताः प्रतापमाहात्म्ययोः प्रभावः स्यात् ।
 भेदसमते प्रकारौ विपर्यये विस्तरे प्रपञ्चः स्यात् ॥ ५६ ॥
 रुग्भङ्गबाणाः प्रदराः श्रेष्ठोक्षाणौ तु पुङ्गवौ ।
 पिशाचौ सत्त्वमार्जारौ पिचण्डः कुक्षिशय्ययोः ॥ ५७ ॥
 पृथुकश्चिपिटे बाले पृदाकुर्व्याघ्रसर्पयोः ।
 भासन्तावर्कनक्षत्रे सूर्यश्चाग्निश्च भास्करौ ॥ ५८ ॥
 भ्रातृव्यौ भ्रातृजामित्रौ मुरण्यु विष्णुभास्करौ ।
 भूमिस्पृशौ वैश्यनरौ भुवन्यौ वह्निभास्करौ ॥ ५९ ॥
 भूतात्मा पवने देहे यश्च कर्त्तुं तनौ पुमान् ।
 राजभेदाहिमार्जारश्चार्कशुक्रेषु मण्डली ॥ ६० ॥
 धुतूरे सर्पभेदे च मातुलो मदनः पुनः ।
 सिक्थे वसन्ते धुतूरे कन्दर्पेऽप्यथ माधवः ॥ ६१ ॥

विष्णौ वसन्ते वैशाखे मरुकौ भेककेकिनौ ।
 मिहिः वायुमेघार्का यज्वरौ तु ह्याध्वरौ ॥ ६२ ॥
 युञ्जानः सारथौ विप्रे रभसो विषवेगयोः ।
 रक्ताक्षौ रक्षोमहिषौ रमती स्वर्गमन्मथौ ॥ ६३ ॥
 रुचको भूषणे दन्ते रुचथः कुक्कुटे ध्वनौ ।
 वज्रथः कोकिले काले वर्तकोऽश्वसुरे खगे ॥ ६४ ॥
 व्यवायो मैथुनेऽन्तर्धौ चित्रे दर्पे च विस्मयः ।
 बाहसौ बह्वचजगरौ दुप्रवालौ तु विद्रुमौ ॥ ६५ ॥
 विस्मभौ स्नेहविश्वासौ विबुधौ सुरपण्डितौ ।
 विकारौ रोगविकृती विष्किरौ शिखकुङ्कुटौ ॥ ६६ ॥
 रहःप्रकाशौ वीकाशौ विपाकः स्वेदपाकयोः ।
 विश्वात्माकेऽपि विष्कम्भो विस्तारप्रतिबन्धयोः ॥ ६७ ॥
 स्पर्धायां पौरुषे व्यामे व्यायामोऽथ परिक्रमे ।
 विहारः सौगतावासे क्रीडायां चाथ विग्रहः ॥ ६८ ॥
 युद्धे देहे विस्तरे च कुशमुष्टौ च विष्टरः ।
 विभ्रमः संशये भ्रान्तौ शोभायां चाथ बालुका ॥ ६९ ॥
 विकीर्णोऽर्थश्च विकिरौ विसर्गो मुक्तिवर्चसी ।
 विनयो धर्मविद्याधीशिक्षाचारप्रशान्तिषु ॥ ७० ॥
 विवधो वीवधश्च द्वौ पर्याहारेऽध्वभारयोः ।
 वृत्तान्तः स्यात् प्रकरणे कात्स्न्ये वार्ताप्रकारयोः ॥ ७१ ॥
 वासरौ नागदिवसौ वैकुण्ठाविन्द्रकेशवौ ।
 विषयो यस्य यो ज्ञातस्तत्र शब्दादिकेष्वपि ॥ ७२ ॥
 शपथः कर आक्रोशे शपने च सुतादिभिः ।
 बालके शिशुमारे च शिशुकोऽथाध्वरे पशौ ॥ ७३ ॥
 अध्वर्यौ च श्रपायः स्याच्छकुन्तौ भासपक्षिणौ ।
 कक्ष्यान्तरेऽपि शुद्धान्तः श्वशुर्यौ स्यालदेवरौ ॥ ७४ ॥
 मन्त्री सहायः सचिवः सहुरी वृषभास्करौ ।
 स्यमीकौ वृक्षवल्मीकौ समीकौ मिथुनार्णवौ ॥ ७५ ॥
 सरण्यू वायुजलदौ संस्तरौ प्रस्तराध्वरौ ।
 क्षये रोधे च संरोधः संवर्तोऽब्दे जगत्क्षये ॥ ७६ ॥
 सङ्घर्षौ घर्षणं स्पर्धा शरखड्गौ तु सायकौ ।
 समिको वृक्षवल्मीकौ सृदाक् व्याघ्रपावकौ ॥ ७७ ॥

सविता सारथौ रुद्रे पितर्यर्के सुजातिभिः ।
 सन्निवेशे गणे गोहे संस्त्यायः संग्रहाः पुनः ॥ ७८ ॥
 स्वीकारोच्छ्रायसङ्क्षेपाः सम्भ्रमोऽत्यादरे भये ।
 सम्भवो जन्मसंहत्योराधारानतिरेचने ॥ ७९ ॥
 आधेयस्याथ सम्भोगो भोगे करिकरे रते ।
 प्रत्यक्षे सन्निधाने च सन्निधिः स्थपतिः पुनः ॥ ८० ॥
 स्थापत्येऽधिपतौ तद्दिण बृहस्पतिसवी च यः ।
 समाधिर्ध्याननीवाकप्रतिज्ञासु समर्थने ॥ ८१ ॥
 सन्नयः समवाये च पृष्ठस्थायिबलेऽपि च ।
 समयस्तु क्रियाकारे सङ्केते चरिते सताम् ॥ ८२ ॥
 सिद्धान्ते शपथे काले स्वाध्यायो जपवेदयोः ।
 सारसो विहगे चन्द्रे हिमारिः पावके रवौ ॥ ८३ ॥
 हर्यक्षो घनदे सिंहे ब्रीह्यान्दाचिष्णु हायनः ।
 महोदरेऽपि हेरम्बो हरिमा मृत्युरोगयोः ॥ ८४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां दैजयन्त्यां

त्रयक्षरकाण्डे पुंलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

स्त्रोलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

अमनिः पशुवङ्क्षण्यां जलपात्रे च दारवे ।
 अदितिः शैलकन्यायां पृथिव्यां देवमातरि ॥ १ ॥
 अभिरूपा त्विड्यशोनामस्वम्बिका मातुलान्युमा ।
 अमतिर्मरणे मोहेऽप्याकारे देह आकृतः ॥ २ ॥
 आयतिर्दीर्घतायां स्यात् प्रभावागामिकालयोः ।
 उपधा सुपरीक्षाऽपि कृपाण्यामपि कर्तरी ॥ ३ ॥
 कल्पना समर्थनाऽपि कषिके सस्यमक्षिके ।
 कणिका तिलकाण्डेऽशे गोधूमे तस्य चूर्णके ॥ ४ ॥
 करिका यातनायां स्याच्छ्लोके विवरणे कृतौ ।
 कूर्चिका मस्तुपिण्डेऽपि सूचितूलिकयोरपि ॥ ५ ॥
 तुर्येऽशे मापदण्डस्य माषस्यापि च काकणी ।
 विंशतौ च कपर्दानां पादुकैककर्पदयोः ॥ ६ ॥
 गृहिणी काञ्चिकं जाया देहली गृहकारिका ।
 वेश्याकरिण्योर्गणिका वेष्टनेऽपि च गोलका ॥ ७ ॥
 पार्या कालेऽपि घटिका रथयायामपि चत्तरी ।
 जुगुप्सा निन्दाघृणयोर्जननी करुणाऽम्बयोः ॥ ८ ॥
 जगती विष्टपे मह्यां वास्तुच्छन्दविशेषयोः ।
 छत्रान्तालाम्बिवस्त्रेऽपि मङ्गरी केशवाद्ययोः ॥ ९ ॥
 चापे तृणत्वे तृणता दारिद्र्येऽपि च दुर्गतिः ।
 पद्माकरेऽब्जे नलिनी स्वास्थ्ये नाशे च निर्वृतिः ॥ १० ॥
 निवृत्तिस्तु मनस्तोषे मोक्षेऽस्तमयबाढयोः ।
 नालिका चुल्लिकारन्ध्रे विवरे वेणुभाजने ॥ ११ ॥
 नाले काले देशमाने नियतिः संयमे विधौ ।
 प्रकृतिः पञ्चभूतेषु स्वभावे मूलकारणे ॥ १२ ॥
 छन्दःकारणगुह्येषु जन्त्वमात्यादिमातृषु ।
 पक्षतिर्गर्भतो मूले द्वयोः प्रतिपदोरपि ॥ १३ ॥
 अधिकारे प्रकारे च प्रक्रियोत्पादनेऽपि च ।
 गृहादिधिष्ण्ये पिण्डे च जङ्घामांसे च पिण्डिका ॥ १४ ॥
 परीष्टिर्मार्गणे भक्तौ पङ्क्तौ पथि च पद्धतिः ।
 प्रतिष्ठे स्थितिमाहात्म्ये प्रवृत्तौ तत्तिवीरुधौ ॥ १५ ॥

बोधे तिथौ च प्रतिपत् प्रवृत्तिर्वृत्त्युदन्तयोः ।
 प्रवेणी तु कुथावेण्योः प्रसृतिः पुत्रजन्मनोः ॥ १६ ॥
 पाताली वागुरा स्थाली बन्धकी तु करिण्यपि ।
 बृहती पद्यवार्ताक्योः कण्टकार्या च वाचि च ॥ १७ ॥
 भित्तिका तु शतावर्या वज्रे चाप्यथ मेखला ।
 श्रोणिस्थानेऽद्रिकटके कटिबन्धेऽसिबन्धने ॥ १८ ॥
 महिषी पशुराट्पत्न्योर्मर्यादा सीम्नि धारणे ।
 पेटा पुरी च मञ्जूषा मनाका कामिनी गजी ॥ १९ ॥
 गव्यक्षेत्रे रेवती देव्यां शुक्लायां रजनी निशि ।
 रोचना रक्तकल्हारे गवां पित्ते वरस्त्रियाम् ॥ २० ॥
 पथ्यायां गव्युमाकन्यालोहिनीषु च रोहिणी ।
 नक्षत्रे कण्ठरोगे च वर्तनी वृत्तिमार्गयोः ॥ २१ ॥
 विपणिस्तु निषद्यापि बालुकोमिश्र च बालुका ।
 बडवा स्त्रीविशेषेऽपि वाशिता करिणीस्त्रियोः ॥ २२ ॥
 वसतिस्तु निशि स्थित्यां जैनानामाश्रमे गृहे ।
 वाणिनी तु विदग्धायां नर्तक्यां मत्तयोषिति ॥ २३ ॥
 वीणा विपञ्ची सैवालपदण्डा सा नवतन्त्रिका ।
 वृषल्यनुमती कन्या शूद्रा बन्ध्या मृतप्रजा ॥ २४ ॥
 वनिता स्निग्धनार्याश्च नार्याश्चाप्यथ वेदिका ।
 वेदिश्चाङ्गुलिमुद्रा च काञ्ची छन्दश्च शकरी ॥ २५ ॥
 शङ्कुल्यपूपभेदेऽपि शिञ्जिनी नूपुरज्ययोः ।
 शर्करा तु शिलाभेदे रुग्भेदाल्पकपालयोः ॥ २६ ॥
 शर्करावत्प्रदेशेषु सितायां शकले गुडे ।
 समितिः परिषत्स्थाने युद्धे संसदि सङ्गमे ॥ २७ ॥
 सन्ततिस्त्वन्ववाये स्यात् पारम्पर्ये सुतेऽपि च ।
 संहिता वर्णसंयोगे शास्त्रवेदैकदेशयोः ॥ २८ ॥
 सिद्धौ स्वभावे संसिद्धिर्वाञ्छाऽनुज्ञा च सम्मतिः ।
 संवित्ती ज्ञानसंवादौ ह्यादन्यौ वज्रविद्युतौ ॥ २९ ॥
 हरिणी हरिता पाण्डुः सुवर्णप्रतिमा मृगी ॥ २९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्या

त्र्यक्षरकाण्डे स्त्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

अयनं निलये मार्गे सूर्योदग्दक्षिणागतौ ।
 अंशुकं केवले वस्त्रे सूर्यमवस्त्रोत्तरीययोः ॥ १ ॥
 अभीक्ष्णमव्ययं वा स्यात् पौनःपुन्यभृशार्थयोः ।
 अरुलं सलिले पोतेऽप्यलीकं त्वप्रियेऽनृते ॥ २ ॥
 अनूकमन्वये शीलेऽप्यारूपदं स्थानकृत्ययोः ।
 स्तम्भमात्रेऽपि चालानं हस्तिनोऽसेऽपि चासनम् ॥ ३ ॥
 रेतसीन्द्रियमच्चे च दर्शनेऽक्षणि चेक्षणम् ।
 उद्यानं सङ्ग्रहोदगत्योर्वेनभेदे प्रयोजने ॥ ४ ॥
 उत्थानमुद्यमे वास्तौ तन्त्रेहापौरुषेषु च ।
 उद्धानमुदगमे चुल्ल्यामौशीरे दण्डचामरे ॥ ५ ॥
 कटीरं कन्दरे कट्यां कलत्रं श्रोणिभार्ययोः ।
 क्रन्दनं रुदिते ध्वाने कार्मुकं शस्त्रचापयोः ॥ ६ ॥
 कारणं हेतुवधयोः कारकं हिंसकेऽपि च ।
 कीलालं रुधिरे तोये कुहरं गह्वरे बिले ॥ ७ ॥
 कुरीरं ग्राम्यधर्मेऽब्जे कुन्नानं कुण्डशिक्ययोः ।
 कैतवं कपटे द्यूते कृपीटमुदरे जले ॥ ८ ॥
 करणं कारणे काये साधने बवकादिषु ।
 स्पृष्टाद्युच्चारणाभेदध्यानपद्मासनादिषु ॥ ९ ॥
 रतबन्धे नाड्यभेदे गीतके कर्मणीन्द्रिये ।
 कौतुकं विषयाभोगे हस्तसूत्रे कुतूहले ॥ १० ॥
 कामे ख्याते मङ्गले च हस्तसूत्रेऽपि कङ्कणम् ।
 कटित्रं चर्म सुस्यूतं कटीवेष्टनचर्म च ॥ ११ ॥
 कोदण्डं तु चतुर्हस्तं धनुर्वेणुर्धनुर्धरः ।
 केतौ तु केतनं चापे कृत्यार्थोपनिमन्त्रणे ॥ १२ ॥
 कौलीनं प्राणिभिर्द्युते कुलीनत्वापवादयोः ।
 गुह्यकार्ये च कौपीनं गन्धनं तु प्रकाशने ॥ १३ ॥
 सूचनेऽपि च हिंसायां परस्योत्साहनेऽपि च ।
 ग्रहणं बन्दिरादानमादरोऽर्काद्यपल्लवः ॥ १४ ॥

गह्वरं कन्दरे दम्भे चलनं पादयन्त्रयोः ।
 जघनं स्यात् कटौ पूर्वश्रोणिभागापराङ्गयोः ॥ १५ ॥
 तल्लिमं कुट्टिमे तल्पे तर्पणं त्विन्धनेऽपि च ।
 तानितं तूलितपटे गुणवादित्रभाण्डयोः ॥ १६ ॥
 तेमनं व्यञ्जने क्लेदे तोत्रे तोदे च तोदनम् ।
 दर्शनं चक्षुषि स्वप्ने बुद्धिशास्त्रोपलब्धिषु ॥ १७ ॥
 दुकूलं शुक्लवस्त्रेऽपि द्योतनं दीपनेऽर्चिण च ।
 धाराग्रमवतारेऽश्रौ निमित्तं हेतुलक्षयोः ॥ १८ ॥
 नाभीलं नाभिगन्धश्च वङ्कणं च वरस्त्रियाः ।
 निर्याणं हस्तिनेत्रान्ते मरणे निर्गमेऽपि च ॥ १९ ॥
 निर्वाणं निर्वृतौ मोक्षे विनाशे गजमज्जने ।
 निदानमपदाने स्यात् खण्डनेऽप्यादिकारणे ॥ २० ॥
 पललं तिलचूर्णे स्यान्मांसकर्दमभेदयोः ।
 प्रयाणं गजहृक्पूर्वप्रदेशे मरणे गतौ ॥ २१ ॥
 प्रज्ञानं लाञ्छने बुद्धौ प्रसूनं फलपुष्पयोः ।
 पातालं लोक और्वश्च पतत्रं खे गरुत्यापि ॥ २२ ॥
 नवसूतगवीदुग्धे पीयूषममृतेऽपि च ।
 प्रमाणं बोधनेयत्तामर्यादाशास्त्रहेतुषु ॥ २३ ॥
 सम्यग्वक्तरि चाथ स्यात् प्रायणं मरणे गतौ ।
 पुष्करं हस्तिहस्ताग्रे जले वाद्यमुखे युधि ॥ २४ ॥
 खेऽब्जे दिव्यसिधारायां तीर्थभेषजभेदयोः ।
 ब्राह्मण्यं ब्राह्मणत्वे स्याद्विप्रौघे विप्रकर्मणि ॥ २५ ॥
 बाह्लीकं कुक्कुमं हिङ्गु भण्डनं कवचे रणे ।
 भूतिकं भूमिनिम्बे च भूस्तृणे कत्तृणेऽपि च ॥ २६ ॥
 मणीचमग्रहस्तेऽपि पुष्पमौक्तिकयोरपि ।
 मन्दिरं देहपुर्योश्च सम्बन्धे मैथुनं रते ॥ २७ ॥
 यापनं स्यान्निरसने नृत्ते प्रस्थापनेऽपि च ।
 लक्षणं कार्षिके चिह्ने नास्ति मुद्राङ्गसम्पदोः ॥ २८ ॥
 लाङ्गूलं बालधौ मेढ्रे वर्जनं त्यागहिंसयोः ।
 वराङ्गं स्त्रीभगे मूर्ध्निच्छेदे वृद्धौ च वर्धनम् ॥ २९ ॥
 व्यञ्जनं श्मश्रुनिष्ठानचिह्नेष्ववयवेऽक्षरे ।
 वृद्धत्वे वृद्धसङ्घाते वृद्धकर्मणि वार्द्धकम् ॥ ३० ॥

बालकं त्वङ्गुलीये स्याद् बर्हिष्ठे वलयेऽपि च ।
 व्युत्थानं प्रतिकूलत्वे स्वातन्त्र्यकरणेऽपि च ॥ ३१ ॥
 व्यसनं शक्तिविपदोदैवानिष्टफलैऽहसि ।
 पैशुन्यादौ च कोपोत्थे मृगयादौ च कामजे ॥ ३२ ॥
 विधानं हस्तिकबले प्रेरणेऽभ्यर्चने धने ।
 वेतने चाप्युपाये च प्रकारे वैरकर्मणि ॥ ३३ ॥
 वेष्टने मकुटोष्णीषौ शकले खण्डवल्कले ।
 शाल्कं पङ्कजे कन्दे जले शमलमप्यघे ॥ ३४ ॥
 शासनं निग्रहे लेख्ये वेदवाक्येषु कर्मणि ।
 वाङ्मनियोगे प्रहरणे शास्त्रे ग्रामे च निष्करे ॥ ३५ ॥
 साधनं शेफास धने सिद्ध्युपायनिवृत्तिषु ।
 मारणे मृतसंस्कारे दापनेऽनुगमे गमे ॥ ३६ ॥
 सेनाङ्गे यातनायाञ्च सेवनं स्यूतिसेवयोः ।
 मृत्यौ समाप्तौ संस्थानं सन्निवेशे चतुष्पथे ॥ ३७ ॥
 मणौ शीघौ शीघुपाने सरकं मद्यभाजने ।
 सामर्थ्ये शक्तिसम्बन्धौ हृदयं तु मनस्यपि ॥ ३८ ॥
 हिरण्यं काञ्चने वित्ते मानभेदेऽप्यकुप्यके ।
 हरणं करणे नृत्ते चापेनान्यास्त्रवारणे ॥ ३९ ॥
 हतौ कथितशीताप्सु पणने यौतकादिके ॥ ३९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 त्र्यक्षरकाण्डे नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

अर्थवलिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

अधमौ गर्हितन्यूनावभीकौ निर्भयाभिकौ ।
 प्रत्यक्षेऽधिकृतेऽध्यक्षमखिलं गर्हाकृत्स्नयोः ॥ १ ॥
 आविद्धौ क्षिप्रकुटिलावाहतौ सादरार्चितौ ।
 विपन्नप्राप्तावापन्नावाभीलौ कष्टभीषणौ ॥ २ ॥
 आप्लुतौ स्नातकस्नातावाहतं गुणिते हते ।
 आयस्तः कुपिते क्षिप्ते क्लेशिते तेजितेऽपि च ॥ ३ ॥
 इरिणं तूषरस्थाने भूभागे च निराश्रये ।
 उदारो महति ख्याते दक्षिणे दानशौण्डके ॥ ४ ॥
 उद्धृतं भुक्तनिर्मुक्ते तुलिते चाप्यथोच्छ्रितम् ।
 वृद्धे तुङ्गे समुत्पन्नेऽप्युदितौ कथितोद्गतौ ॥ ५ ॥
 उद्धावूढप्रथुलावुत्तमौ प्रवरान्तिमौ ।
 महत्युदात्त उच्चोक्तेऽप्युपोढो निकटोढयोः ॥ ६ ॥
 अभ्यस्तेऽप्युचितं न्याग्येऽप्युषितं स्थितदग्धयोः ।
 उत्तालो द्रुत उत्तानेऽप्युत्कटो मत्त उद्भटे ॥ ७ ॥
 करालो दन्तुरे तुङ्गे विशाले विकृतेऽपि च ।
 कर्कशः प्रखरस्पर्शे निर्दये साहसिन्यपि ॥ ८ ॥
 द्वौ कनिष्ठकनीयांसौ यून्यत्यल्पेऽनुजेऽपि च ।
 क्षुल्लका नीचनिःस्वाल्पाः कलितो ज्ञातबद्धयोः ॥ ९ ॥
 कल्माषौ कृष्णमिश्रौ च कुहकोऽपीर्ष्या युते ।
 क्षेत्रियं दुष्प्रतीकारे व्याधौ क्षेत्रोद्भवे तृणे ॥ १० ॥
 देहान्तरचिकित्साहं गरले पारदारिके ।
 चतुरौ दक्षधीमन्तौ जघन्योऽन्त्यकुपूपयोः ॥ ११ ॥
 जरठः कठिने जीर्णे तलिनो विरलाल्पयोः ।
 पशुः कालेऽपि निःशृङ्गो नरोऽश्मश्रुश्च तूपरौ ॥ १२ ॥
 दुर्विधो निर्धने नीचे निहतो न्यक्स्वरे हते ।
 निर्ग्रन्थः श्रमणे निःस्वे निरस्तस्तु निराकृते ॥ १३ ॥
 निष्ठयते प्रास्तवान्ते च वचने च द्रुतोदिते ।
 निवातो दृढसन्नाहे निर्वातेऽप्याश्रयेऽपि च ॥ १४ ॥
 निर्दयः परदोषोक्तिपरे निष्ठुरभाषिणि ।
 प्रणाप्योऽसम्मतेऽपि स्यादनभिष्वङ्गवत्यपि ॥ १५ ॥

प्रतीतो भूषिते ख्याते ज्ञाते प्रत्ययिते बुधे ।
 प्रार्थितं त्वभियुक्ते स्यान्निहिते याचितेऽपि च ॥ १६ ॥
 पिण्डलः स्थूलजङ्घे च गणनाकुशलेऽपि च ।
 प्रतीक्ष्यौ प्रतिपाल्याच्यौ प्रथमौ प्रवरादिमौ ॥ १७ ॥
 प्रहतौ क्षुण्णव्युत्पन्नौ प्रयतौ पूतसंस्कृतौ ।
 सव्यायतौ प्रसव्यौ द्वौ प्रवृद्धौ प्रसृतैर्धितौ ॥ १८ ॥
 पिण्डितौ घनसङ्ख्यातौ प्रसिद्धौ ख्यातभूषितौ ।
 पेशलौ चारुचतुरौ पूर्णश्रेष्ठौ तु पुष्कलौ ॥ १९ ॥
 मिश्रास्त्रिगधौ च परुषौ प्रगाढो गहने दृढे ।
 पामरोऽपशदेऽङ्गे च बालशो बालमूर्खयोः ॥ २० ॥
 बीभत्सौ कृरविकृतौ बहलौ सान्द्रपुष्कलौ ।
 बन्धुरौ नम्रसुन्दरौ भङ्गुरौ वक्रनश्वरौ ॥ २१ ॥
 भावितौ लब्धवासितौ भुजिष्यौ स्वैरिक्किङ्करौ ।
 मधुरौ स्वादुसुन्दरौ मूर्च्छितौ मूढसोच्छ्रयौ ॥ २२ ॥
 विधुतौ त्यक्तकम्पितौ विदितौ ज्ञातसंश्रुतौ ।
 विलीनौ लीनविद्रुतौ वेङ्गितौ धूतकुञ्चितौ ॥ २३ ॥
 विगतौ वीतनिस्पृहौ विविक्तौ शुद्धनिर्जनौ ।
 विवर्णौ मूर्खदुर्वर्णौ व्यायतो व्यापृते दृढे ॥ २४ ॥
 विकृतौ रोगिदूरूपौ विशदो धवले शुचौ ।
 वल्लभौ दयिताध्यक्षौ वरिष्ठोऽतिवरेऽत्युरौ ॥ २५ ॥
 पृथौ कराले विकटो विसृतं विगते तते ।
 वदान्यो वल्गुवाग्दानोर्वरीयान् सत्तमेऽत्युरौ ॥ २६ ॥
 विवशस्त्वस्वतन्त्रात्माप्यरिष्टेन च दुष्टधीः ।
 त्रिधुरः पत्न्यपेते स्यात् क्षिष्टविस्मिष्टयोरपि ॥ २७ ॥
 संस्कृतं लक्षणोपेते कृत्रिमे निर्मलीकृते ।
 मिश्रीकृते च संसृष्टं शुद्धे च वमनादिभिः ॥ २८ ॥
 साधीयोऽनुमतेऽत्यर्थं सत्तमे शोभनेऽपि च ।
 तथ्यपथ्यार्थवाक्येऽपि सूनृतोऽथ क्षमे हिते ॥ २९ ॥
 सम्बद्धेऽपि समर्थः स्यात् स्तिमितं स्तम्भवत्यपि ॥ ३० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

अक्षरकाण्डे अर्थवलिज्ञाप्यायः ॥ ४ ॥

नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

गुणाद्यर्थेऽर्थलिङ्गत्वमिहाप्यूह्यं स्वयं क्वचित् ।
 अन्तरः परिधानीये बाह्ये स्वीयेऽन्तरात्मनि ॥ १ ॥
 क्ली तु मध्येऽवकाशे च तादर्थ्येऽवसरेऽवधौ ।
 विशेषविवरान्तर्धिष्ववसानविनार्थयोः ॥ २ ॥
 अक्षरोऽसौ हरौ घातर्यक्षरं प्रणवे विधौ ।
 धर्मे वर्णे तपःक्रत्वोः खे मोक्षे मूलकारणे ॥ ३ ॥
 अनन्तो नागराड्विष्णुरनन्तं खनिरन्तयोः ।
 अनन्ता पूर्णिमा दूर्वा यवाषः शारिबा मही ॥ ४ ॥
 अर्जुनः पाण्डवे पाण्डौ मातुरेकसुते द्रुमे ।
 नेत्ररोगे चाङ्गुनं तु तृणे हेमन्यर्जुनी गवि ॥ ५ ॥
 विषारुणारुणं ताम्रमरुणः सूर्यसारथौ ।
 अव्यक्तरागे शशिजे सन्ध्याभ्रे लोहिते रवौ ॥ ६ ॥
 अमृतं व्योम्नि देवान्ने यज्ञशेषे रसायने ।
 अयाचिते जले जग्धौ मोक्षेऽन्ने हेमिन् गोरसे ॥ ७ ॥
 क्लीबो ना त्वमरे स्त्री तु गुल्फच्यां मद्यभिक्षयोः ।
 आमलक्यां हरीतक्यां त्रिषु तु स्वादुनित्ययो ॥ ८ ॥
 अरिष्टो वायसे निम्बे गोरसे निरुपद्रवे ।
 क्ली तु वर्णे मृत्युचिह्ने मद्ये ताम्रे शुभेऽशुभे ॥ ९ ॥
 अङ्गजो ना सुतेऽनङ्गे क्ली रोगे रुधिराऽपि च ।
 न ना क्वाटे क्ली लोहे सोमे स्यादररः पुमान् ॥ १० ॥
 लाजेध्वभ्योषमभ्योषाः साज्याम्भःपेयसक्तवः ।
 कृकलासेऽण्डजो मत्स्ये खगे कसूरिकाऽण्डजा ॥ ११ ॥
 अविषो निर्विषेऽम्भोधावविषो दिवि पुंसि वा ।
 अपानो देहजो वायुरपानं वृषणे गुदे ॥ १२ ॥
 प्रधानेऽव्यक्तमव्यक्तो ब्रह्मण्यस्पष्टमूर्खयोः ।
 अमरेन्द्रपुरी स्थूणा गुडुची चामराः सुराः ॥ १३ ॥
 कृत्यक्षतं तण्डुले धान्ये न ना लाजेषु ना यवे ।
 अजिरं जर्जरे कामे विषयाङ्कणयोर्दुते ॥ १४ ॥
 अलसौ पादरुङ्मन्दावण्डीरौ शक्तपूरुषौ ।
 विद्युत्पव्योरुक्थशनिरनीकोऽस्त्री चमूयुधोः ॥ १५ ॥

अधरोऽनूर्ध्वहीनोष्ठेष्वनृतं वितथे कृषौ ।
 आश्रमोऽस्त्री मुनिस्थाने ब्रह्मचर्यादिके मठे ॥ १६ ॥
 कोट्टारे कृपणे जीर्णे स्थानेऽभिप्राय आशयः ।
 शर्करायां दृषत्पुत्रे स्रज्यस्रज्यश्मन्युपलो मणौ ॥ १७ ॥
 उत्तरं प्रतिवाक्ये स्याद्दुदीच्ये प्रवरोर्ध्वयोः ।
 स्त्रीलिङ्गत्वे धनुर्लक्ष्म्यां पुरुषे पावके च ना ॥ १८ ॥
 करीरो ना घटे न स्त्री पादपे वैणवाङ्गुरे ।
 करेणुस्तु करिण्यां स्त्री कर्णिकारे गजे च ना ॥ १९ ॥
 भिक्षापात्रे तु कमठं कमठौ खर्बकच्छपौ ।
 अस्त्री कशिपु शय्यायां वस्त्रेऽन्ने तद्द्वयेऽपि च ॥ २० ॥
 करटो दुर्दुरुटे स्याद् बिल्वे काकेभगण्डयोः ।
 कल्याणी दमोमयोः क्ली तु मङ्गलेऽक्षयरुक्मयोः ॥ २१ ॥
 रागे काथे कषायोऽस्त्री निर्यासे सौरभे रसे ।
 कान्तार इक्षुभेदे ना न स्त्री व्यध्वे महावने ॥ २२ ॥
 कीनाशो रक्षसि यमे कदर्ये कर्षकेऽर्थवत् ।
 कुहनो मूषिके सेष्ये कुहना दम्भशीलता ॥ २३ ॥
 कुशलं निपुणे पुण्ये पर्याप्तौ मङ्गले क्षमे ।
 कुकूलं शङ्कुभिः कीर्णे श्वभ्रे ना तु तुषानले ॥ २४ ॥
 कुण्डली चित्रलमृगे सर्पे कुण्डलवत्यपि ।
 कुङ्कुमे महारजने कुसुम्भं ना कमण्डलौ ॥ २५ ॥
 केवलं निश्चिते क्लीवे वाच्यवत्त्वेककृत्स्नयोः ।
 कमलं छुरिकादीनां हेमाद्यैश्चित्रिताजिने ॥ २६ ॥
 रक्ताब्जजेऽप्सु च श्रीस्तु कमला कमलो मृगः ।
 अक्ली कोल्यां क्रोष्टुकोल्यां कर्कन्धूः स्त्री तु संयुगे ॥ २७ ॥
 तथा मध्वाज्यसंसिक्तधवलाजजतर्पण ।
 कुमारः स्याद् गुहे बाले वरणेऽश्वानुचारके ॥ २८ ॥
 युवराजे च ना क्ली तु द्वीपे पुंस्त्री मृगोमयोः ।
 कुतपो भागिनेयेऽर्के विप्रेऽग्नावतिथौ गवि ॥ २९ ॥
 अस्त्री त्वहोऽष्टमे भागे तिलेषु छागकम्बले ।
 दर्भे च केसरस्त्वस्त्री सिंहकेशाश्वकेशयोः ॥ ३० ॥
 कलिलं गहने वृन्दे सैन्येऽपि कटकोऽस्त्रियाम् ।
 किञ्चलकः केसरे खे क्ली कृषकौ फालकर्षकौ ॥ ३१ ॥

कातरः पण्डके त्रस्नौ चैत्रज्ञावात्मशिक्षितौ ।
 कुसीदमृणवृद्धौ क्ली वाच्यवद् वृद्धिजीविनि ॥ ३२ ॥
 कलिङ्गं तु यवे ना तु देशपक्षिविशेषयोः ।
 खनको भूमिवित्तज्ञे मूपिकेऽप्यवदारके ॥ ३३ ॥
 गर्जितो मत्तमातङ्गे क्ली तन्नादेऽम्बुदध्वनौ ।
 गण्डूषोऽस्त्री गण्डपूतौ प्रसृते गजपुष्करे ॥ ३४ ॥
 पार्थचापे चापमात्रे गाण्डीवो गाण्डिवोऽस्त्रियौ ।
 कशेरुहेम्नोर्गाङ्गेयं गाङ्गेयो गुहभीष्मयोः ॥ ३५ ॥
 ग्रामणीः स्वामिनि श्रेष्ठे ग्रामेशे नापिते तु ना ।
 गोमुखोऽस्त्री वाद्यभेदे नक्रे नाले वने नपुम् ॥ ३६ ॥
 गोष्पदं गोखुरश्वभ्रे मानगोगम्ययोरपि ।
 वृत्तैकमक्ते चरणे चरणा बह्वृचादयः ॥ ३७ ॥
 स्थण्डिले प्राङ्गणे च क्ली चत्वरं ना चतुष्पथे ।
 चातुरः शकटे चक्रगण्डे नयनगोचरे ॥ ३८ ॥
 चपलः पारदे शीघ्रे दुर्विनीते चले कपौ ।
 चले केशे च चिकुरो जराटवस्त्र्यम्बुजेऽपि च ॥ ३९ ॥
 जृम्भितं जृम्भणोऽम्बुविष्वदेषु विचेष्टिते ।
 जीवकः प्रवरे जन्तौ श्रमणे वृद्धिजीविनि ॥ ४० ॥
 जर्जरस्त्रिषु जीर्णे स्यात् पुमानिन्द्रध्वजे पिके ।
 टगरष्टङ्गनक्षारे ना केकरदृशि त्रिषु ॥ ४१ ॥
 स्त्री नौनद्योर्ब्रजस्तम्भे तरणिर्नार्णवे रवौ ।
 भुवीन्द्रपुत्र्यां तविषी ताविष्यब्धिवोर्नरौ ॥ ४२ ॥
 तमिस्रा स्त्री ध्वान्तनिशि निश्यन्धतमसे न ना ।
 तातगुः शुद्धताते ना ताताय तु हिते त्रिषु ॥ ४३ ॥
 तातलो लोहकूटे ना त्रिषु तप्ते मनोजवे ।
 तरलो भास्वरे हारे चञ्चलेऽप्यथ तारका ॥ ४४ ॥
 न नाक्षिमध्ये नक्षत्रे द्विजिह्वौ सूचकोरगौ ।
 दुर्वर्णं दुष्प्रभे रूप्ये देयभेदे तु दक्षिणा ॥ ४५ ॥
 त्रिष्ववाक्सरलावामेष्वन्यच्छन्दानुवर्तिनि ।
 कनिष्ठपत्न्यामरतौ पुनर्भूपरिविन्नयोः ॥ ४६ ॥
 स्त्री पुनर्भ्वास्तु पत्यौ ना दिधिषुर्दिधिषूरपि ।
 स्याद् दीपकमलङ्कारे स्वरूपे दीप्तिमत्यपि ॥ ४७ ॥

दुन्दुभिः पुंसि भेर्या स्त्री त्वक्षबिन्दुत्रिकद्वये ।
 धर्षणं सुरते घाष्ट्ये कुलटायां तु धर्षणी ॥ ४८ ॥
 चारौ श्रेष्ठे वृषे श्वेते धवलो धवली गवि ।
 धौताञ्जले रजक्याञ्च धावनी धावनं गतिः ॥ ४९ ॥
 धिषणा स्त्री धियां गौर्या स्त्रीचिह्ने ना तु गीष्पतौ ।
 नागरं पुरजे चुक्रे शुण्ठीराजकशेरुणोः ॥ ५० ॥
 निधनोऽस्त्री कुले नाशे निखिंशः क्रूरखङ्गयोः ।
 नालीकमञ्जे बाणे ना निशान्तं गृहशान्तयोः ॥ ५१ ॥
 केशादिशौक्ये पलितं शैलेये ना तु कर्दमे ।
 पटलं दृभ्रुक्छदिषोः क्ली न ना पिटके गणे ॥ ५२ ॥
 पर्याप्तं स्याद्यथाकामे तृप्तौ शक्तौ निवारणे ।
 प्रवणो दक्षिणे प्रह्वे क्रमनिम्ने चतुष्पथे ॥ ५३ ॥
 प्रकाशोऽर्चिषि दीधित्यां ना तुल्यस्फुटयोस्त्रिषु ।
 मुखे प्रतीकस्त्रिषु तु प्रतिकूलानुरूपयोः ॥ ५४ ॥
 वीणादण्डे प्रवालोऽस्त्री विद्रुमे नवपल्लवे ।
 असूनमर्थवज्जाते पुष्पे क्ली सारथौ पुमान् ॥ ५५ ॥
 प्रग्रीवमस्त्री कलशे ग्रीवाप्रासादयोरपि ।
 पाटला गवि पाटल्यामाशुग्रीहिस्तु पाटलः ॥ ५६ ॥
 पिनाकोऽस्त्री रजोवर्षे शूले शङ्करधन्वनि ।
 त्रिषूर्ध्वबाहुपुमात्रे क्ली पुंसो भावकर्मणोः ॥ ५७ ॥
 पौरुषं पल्लवं त्वस्त्री प्रकोष्ठेऽप्यतिविस्तृतौ ।
 पवित्रोऽग्नौ हरौ पूते क्ली तु ताम्रोऽप्सु गोमये ॥ ५८ ॥
 मन्त्रे दधिनि ब्रह्मसूत्रे हेम्नमर्थे कलशे कुशे ।
 पुलस्त्यवंशये पुरुषे पौलस्त्यः क्ली तु संयुगे ॥ ५९ ॥
 फलकी चन्दने स्त्री न स्त्री दार्वासनचर्मणोः ।
 फेनिलं बदरे फेनयुक्तेऽथ ब्राह्मणो द्विजे ॥ ६० ॥
 आमस्त्रे क्ली तु विधिवद्वेदभागतदंशयोः ।
 बहुलः कृष्णपक्षेऽग्नौ पुमांस्त्रिष्वसिते बहौ ॥ ६१ ॥
 स्त्री स्यात् पृथिव्यामुस्त्रायामेलायां कृत्तिकासु च ।
 भविलं भवने भव्ये भ्रमरः कामुकेऽलिनि ॥ ६२ ॥
 उद्याने मलयं ना तु गिर्यशगिरिभेदयोः ।
 मत्सरोऽन्योदयद्वेषे तद्वत्कृपणयोस्त्रिषु ॥ ६३ ॥

मन्थरः सूचके कोपे मन्थाने मन्दगामिनि ।
 मार्गणं मृगणायां स्यान्मार्गणो याचके शरे ॥ ६४ ॥
 दूर्वायां स्त्रीक्षुमूले क्ली गोरसेऽपि च मोरटम् ।
 त्रिलिङ्गं मण्डलं वृन्दे ग्रामौघप्रतिबिम्बयोः ॥ ६५ ॥
 उपसूर्यं कुष्ठरोगे देशे द्वादशराजके ।
 मुचिरौ धर्मदातारौ मोदकौ खाद्यहर्षकौ ॥ ६६ ॥
 पित्रादेः कन्वयाऽऽमेऽर्थे क्ली स्वीये त्रिषु यौतकम् ।
 युतकं युगले युक्ते यौतके वसनाञ्जले ॥ ६७ ॥
 संश्रयेऽग्रे च शूर्पस्य वस्त्रभेदे च योषितः ।
 रसनं क्ली कषायेऽन्ने द्रवे स्नेहे विषे फले ॥ ६८ ॥
 निर्यासे हेस्मिन् रूप्ये च जिह्वास्वादनयोर्न ना ।
 रेवटं दक्षिणावर्तशङ्खे रेणौ तु रेवटः ॥ ६९ ॥
 वातूले विषवैद्येऽथ रजतं शोणिते ह्वे ।
 श्वेते हरेऽप्यथोष्ट्रेऽलौ रवणः शब्दनेऽर्थवत् ॥ ७० ॥
 रोषाणो रोषणे स्वर्णघर्षणग्राणि पारदे ।
 रौहिषं रक्तकतृणे मत्स्यभेदे मृगे च ना ॥ ७१ ॥
 लालसा तु ना नौत्सुक्ये दौहदाद्यभिलाषयोः ।
 ललामोऽस्त्री ललामापि प्रभावे पौरुषे ध्वजे ॥ ७२ ॥
 श्रेष्ठे भूषापुण्ड्रशृङ्गपुच्छचिह्नाश्वलिङ्गिषु ।
 लोचको मांसपिण्डे स्यान्नोलिन्यां चर्मणि भ्रूवि ॥ ७३ ॥
 रक्तांशुके दुष्टबुद्धौ क्रोष्टृधूतौ तु वस्त्रकौ ।
 विनीतस्त्रिष्वपि प्राप्ते निभृते विजितेन्द्रिये ॥ ७४ ॥
 विनयं ग्राहिते चैव सुखवाहिहये पुमान् ।
 विषयी राज्ञि कन्दर्पे विषयस्थजने च ना ॥ ७५ ॥
 अर्थवद्विषयोपेत इन्द्रिये तु नपुंसकम् ।
 अस्त्री वितानमुल्लोचे विस्ताराध्वरयोः क्षणे ॥ ७६ ॥
 त्रिषु शून्ये च मन्दे च विषाण्युक्षेमशृङ्गिषु ।
 भेक्यां पुनर्नवायां स्त्री वर्षाभूर्ददुरे न षण् ॥ ७७ ॥
 वयःस्थाऽऽमलकीपद्म्यान्नास्त्रीषु तरुणे त्रिषु ।
 वलजा वरनार्या च क्षेत्रे द्वारि च सा न ना ॥ ७८ ॥
 वर्णकोऽस्त्री प्रकारे स्याच्चन्दने स्यञ्जलेपने ।
 दुःखे विलक्षे व्यलीकमप्रियाकार्ययोस्तु ना ॥ ७९ ॥

वातूलो वातसङ्घाते वातले मरुतोऽसदे ।
 विहायाः पुंनपुं व्योम्नि पुमानैव पतत्रिणि ॥ ८० ॥
 विशिखा तु खनित्री च क्ली चित्ते ना त्वसौ शरे ।
 विमानोऽस्त्री देवयाने सप्तभूमे च सद्मनि ॥ ८१ ॥
 विटपोऽस्त्री द्रुविस्तारे पल्लवे स्तम्बशाखयोः ।
 विषाणस्त्रिषु लिङ्गेषु पश्वङ्गगजदन्तयोः ॥ ८२ ॥
 वेदना दुःखानुभवे ज्ञाने च स्त्रीनपुंसकम् ।
 स्कन्दे विशाख ऋद्धे स्त्री विहायः स्फुटहासयोः ॥ ८३ ॥
 पापेऽपि वृजिनं केशे पुमानिन्दुस्तु शर्वरः ।
 स्त्री रात्रिसन्ध्याशर्वर्योदैत्ये ना शम्बरोऽप्सु षण् ॥ ८४ ॥
 शयथुस्त्रिषु निद्रालौ मृत्यावजगरे च ना ।
 शय्यायां शयनं न स्त्री निद्रासुरतयोर्नपुम् ॥ ८५ ॥
 शरत्पक्वादिशालीनौ प्रत्यगोऽब्जश्च शारदः ।
 गम्भार्या कट्फले श्रीपर्ण्यग्निमन्थाब्जयोर्नपुम् ॥ ८६ ॥
 यमेऽपि शमनो ध्वान्ते क्ली हिंसे त्रिषु शर्वरः ।
 करञ्जभेदे षड्ग्रन्थः षड्ग्रन्था ग्रन्थिकं वचा ॥ ८७ ॥
 समानः प्राणभेदे ना त्रिष्वेकसमसाधुषु ।
 संस्कारो ना संस्कृतिः स्त्री सङ्कल्पप्रतियत्नयोः ॥ ८८ ॥
 स्पर्शनः पवमाने स्यात् स्पर्शनं सृष्टिदानयोः ।
 सारङ्गः शबलो वर्णश्चातकः षट्पदो मृगः ॥ ८९ ॥
 छिद्रे छिद्रान्विते वाद्ये सुपिरं सुषिरो नडः ।
 सुमनाः पुष्पमालत्योः स्त्री देवबुधयोः पुमान् ॥ ९० ॥
 सैन्धवोऽश्वेऽश्वभेदे ना न स्त्री तु लवणोत्तमे ।
 बदरेऽपि च सौवीरं ना नीवृद्रोपघोण्टयोः ॥ ९१ ॥
 सङ्गरो ना क्रियाकारे प्रतिज्ञाविपदोर्युधि ।
 शमीफले तु षण्डोऽथ सम्बाधौ योनिः सङ्कटौ ॥ ९२ ॥
 सुरभिर्वाच्यवत् सौम्ये सुगन्धौ स्त्री त्वसौ गवि ।
 पुमांश्चैत्रे वसन्ते च सेवकौ स्यूतभाजकौ ॥ ९३ ॥
 सुकृतं शोभने धर्मे हर्षुलो मृगकामिनोः ॥ ९३ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

त्र्यक्षरकाण्डे नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

त्र्यक्षरकाण्डः समाप्तः ॥ ७ ॥

८. अथ शेषकाण्डः

पुंलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

अकारादिक्रमेणादाविहोक्त्वा चतुरक्षरान् ।
 अध्यायान्तेषु सङ्कीर्णाः कृताः पञ्चाक्षरादयः ॥ १ ॥
 अनुबन्धो दोषभावे प्रकृत्यादेर्विनश्वरे ।
 मुख्यानुयायिनि शिशौ प्रकृतस्यानुवर्तने ॥ २ ॥
 अपहारः पुनश्चोरे द्यूतयुद्धादिविश्रमे ।
 निमन्त्रणोपनेतव्यद्रव्ये ग्राहाख्ययादसि ॥ ३ ॥
 अवग्रहो वृष्टिरोधे प्रतिबन्धे गजालिके ।
 अवष्टम्भः समालम्भे स्तब्धिकाञ्चनयोरपि ॥ ४ ॥
 पिशाचादिग्रहे तीर्थेऽप्यवतारोऽवतारणे ।
 अवरोहोऽवतरणं शाखाप्याप्रादुगताङ्घ्रितः ॥ ५ ॥
 अधिवासो निवासे स्याद् गन्धधूपादिसंस्कृतौ ।
 अपवर्गः क्रियासाध्यफलाप्तौ त्यागमोक्षयोः ॥ ६ ॥
 अपभ्रंशोऽपशब्दे स्याद् भापाभेदप्रपातयोः ।
 अपदेशस्तु लक्ष्णे स्यान्निमित्तव्याजयोरपि ॥ ७ ॥
 अनुभावः प्रभावे स्यान्निश्चये भावसूचके ।
 पश्चात्तापे त्वनुशयो दीर्घद्वेषानुबन्धयोः ॥ ८ ॥
 अनुषङ्गस्तु कारुण्ये प्रकृतस्यानुवर्तने ।
 अभिमानस्तु विज्ञाने प्रणये दर्पहिंसयोः ॥ ९ ॥
 अभिषङ्गस्त्वभिभवे सङ्ग आक्रोशनेऽपि च ।
 अभिहारोऽभियोगे च चौर्यसन्नाहयोरपि ॥ १० ॥
 स्नाने मद्यस्य सन्धानेऽभिषवः सवनेऽपि च ।
 अभिग्रहोऽभियोगे च समन्ताद्ग्रहणेऽपि च ॥ ११ ॥
 संयुगे स्यादभिमरः सबलादपि साध्वसे ।
 कुले त्वभिजनो जन्मभूमौ चाथामरे ऋषे ॥ १२ ॥
 अनिमेपोऽप्यनिमिषोऽप्यथ चण्डालशिष्ययोः ।
 स्यादन्तेवास्यथर्वज्ञे त्वथर्वाणिः पुरोहिते ॥ १३ ॥
 नृपरक्षिष्वनीकस्थो हस्तिशिक्षाविचक्षणो ।
 अपवादौ तु निन्दाज्ञे स्तुतिस्नेहावपह्नवौ ॥ १४ ॥

वह्निवातावपाङ्गभौ गुह्यगूधाववस्करौ ।
 कूर्मेशोऽन्धावकूपारोऽवलेपो लेपगर्वयोः ॥ १५ ॥
 अशिःस्कौ बाहुरुण्डाववलोणेऽस्फुटापि वाक् ।
 आशाचनी तु वह्नीन्दू आत्मयोनी स्मरानिलौ ॥ १६ ॥
 ब्रह्माऽप्यथोपचर्यायामुपचार उपायने ।
 उपनाहो वैरबन्धे वीणायाश्च निबन्धने ॥ १७ ॥
 उपक्रमश्चिकित्सायामुपधाऽऽरम्भयोरपि ।
 उपग्रहस्तु बन्दौ स्याद् ग्रहणेऽप्यनुकूलने ॥ १८ ॥
 उपतापौ रुजातापौ द्वारपालेऽप्युदास्थितः ।
 स्नानाचान्त्योरुपस्पर्शो हरावुच्चैःश्रवा हये ॥ १९ ॥
 दात्यौहाली कलकाणौ खड्गिखड्गौ करालिकौ ।
 कलहंसो राजहंसे कादम्बे श्रेष्ठभूभुजि ॥ २० ॥
 कुरुविन्दो द्विङ्गुलेऽपि मुस्तेऽप्यथ गुहाशयः ।
 ऋक्षे सिंहे च कूर्मे च ग्रहराजोऽर्कचन्द्रयोः ॥ २१ ॥
 घनाघनो मत्तगजे वासवे वार्षिकाम्बुदे ।
 चक्रपादौ रथगजौ वित्रभानू इनानलौ ॥ २२ ॥
 देशे जने जनपदश्चन्द्रेऽर्केऽग्नौ तमोनुदः ।
 तमोपहोऽप्यथोल्लुके तस्करे कुमुदाकरे ॥ २३ ॥
 दिवाभीतो दिवाकीर्ती पुनश्चण्डालनापितौ ।
 ददुरीकोऽनले वाद्ये पार्थाग्नीन्द्रा धनञ्जयाः ॥ २४ ॥
 अग्न्युत्पातौ धूमकेतू धन्वन्तरिरिनाब्जयोः ।
 पर्परीकौ वह्निभक्ष्यौ शौर्योद्योगौ पराक्रमौ ॥ २५ ॥
 अग्निरुद्रौ पशुपती नाशावज्ञपराभवौ ।
 रक्षःसन्तौ पुण्यजनौ नीचमूर्खौ पृथग्जनौ ॥ २६ ॥
 द्वारद्वाःस्थौ प्रतीहारौ स्तनाम्भोदौ पयोधरौ ।
 काशे नडे पोटगलः पवमानोऽग्निवातयोः ॥ २७ ॥
 परिमर्देऽपि परिमलः पितामहौ ब्रह्मपितृतातौ ।
 परिवारः प्रावारेऽपि नृपार्हार्थेऽपि परिबर्हः ॥ २८ ॥
 परिवर्तो जगन्नाशो निमयेऽब्दे परिभ्रमे ।
 पर्युप्तौ च परीवाप आलवाले परिच्छदे ॥ २९ ॥
 पत्नीस्वीकारशपथमूलेष्वपि परिग्रहः ।
 परिक्षेपो हस्तिपादपार्श्वे सम्परिवेष्टने ॥ ३० ॥

प्रतियत्नस्तु संस्कार उपग्रहणलिप्सयोः ।
स्थाने गोष्ठ्यां सत्रशाले प्रत्याहारे प्रतिश्रयः ॥ ३१ ॥

प्लवङ्गमः कपौ भेके प्लवङ्गप्लवगाविव ।
मौक्तिकेऽन्धे पारशवो विप्राच्छूद्रासुतेऽयसि ॥ ३२ ॥

विवेके स्यात् परिकरः पर्यस्तिपरिवारयोः ।
प्रगाढगात्रिकाबन्धे समूहारम्भयोरपि ॥ ३३ ॥

प्रतिग्रहः क्रियाकारे चमूषृष्टे पतद्गृहे ।
दानद्रव्ये स्वीकृतौ च त्वष्टर्यर्के प्रजापतिः ॥ ३४ ॥

दक्षादिष्वभिजामात्रो राज्ञि ब्रह्मणि धातरि ।
ब्रह्मपुत्रस्तु रुद्रेऽपि बाहुलेयो गुहे वृषे ॥ ३५ ॥

धूम्याटेऽलौ भृङ्गराजो महाराजौ नृपार्थपौ ।
महालयो महागेहे विहारे परमात्मनि ॥ ३६ ॥

महाकालस्तु किम्पाके हरे बाणासुरेऽपि च ।
रजसानू धर्ममेधौ रौहिणेयौ हलीन्दुजौ ॥ ३७ ॥

लक्ष्मीपुत्रोऽश्व आढ्ये च राज्ञि लक्ष्मीपतिर्हरौ ।
लोकपालो नृपेन्द्राद्योर्हये वातप्रसीमृगे ॥ ३८ ॥

बाढवेयोऽश्विनोर्विप्रे वासुदेवो ह्ये हरौ ।
विश्वगोप्ता हरौ शक्रे चन्द्रेऽर्केऽग्नौ विभावसुः ॥ ३९ ॥

वृषसानुः पुंसि मृत्यौ विष्णौ रुद्रे वृषाकपिः ।
वानप्रस्थौ मधुष्ठीलपलाशावथ सङ्करे ॥ ४० ॥

व्यसने च व्यतिकरो विश्वकर्माब्जजो रविः ।
त्वष्टा च विप्रलापस्तु विप्रलम्भोपमर्दयोः ॥ ४१ ॥

वारवाणिज्यौतिषिके धर्माध्यक्षेऽप्यथो वटे ।
वनस्पतिर्वृक्षमात्रेऽप्यग्नीन्द्रर्को विरोचनाः ॥ ४२ ॥

व्यवहारो वाक्प्रयोगे सम्बन्धे द्यूतदण्डयोः ।
शासने वित्तसंवादे विवादेऽसिवाणिज्ययोः ॥ ४३ ॥

वर्धमानः शरावे स्यादेरण्डे भूषणेऽपि च ।
शङ्कुकर्णौ गर्दभोष्ट्रावलिबाणौ शिलीमुखौ ॥ ४४ ॥

श्रीवत्साङ्कौ हरिवृकौ सिंहकाकौ सकृत्प्रजौ ।
सहसानुर्मयूरेऽहौ सम्प्रयोगो रतेऽन्वये ॥ ४५ ॥

स्तनयितुर्गर्जितेऽभ्रे विरोधे तु समुच्छ्रयः ।
उन्नतावप्यथ क्रोष्टौ शुनि सालावृको वृके ॥ ४६ ॥

समाहारस्तु सङ्क्षेप एकत्र करणेऽपि च ।
समाह्वयस्तु पद्याद्यैर्द्युते नामनि संयुगे ॥ ४७ ॥

सम्परायस्तु सङ्ग्राम आपदागामिकालयोः ।
स्थूलोच्चयस्त्वसाकल्ये गजानां मध्यमे गते ॥ ४८ ॥

सोमयोनिः सुरे विप्रे हरिरोमाब्जजेन्द्रयोः ।
हस्तिमल्लो गणपतौ महेन्द्रस्य च कुक्षरे ॥ ४९ ॥

(इति चतुरक्षराः)

वर्णमात्रेऽभिनिष्ठानो हरीशावपराजितौ ।
आशुशुक्ष्णिरर्केऽमौ यज्वन्यप्यासुतीवलः ॥ ५० ॥

शौण्डिके चाप्यथानन्ते कुबेरे चैककुण्डलः ।
आग्ने चामरपुष्पः स्यात् काशकेतकयोरपि ॥ ५१ ॥

ज्योतिषाम्पतिरर्के च चन्द्रे चाप्यथ चुम्बने ।
ओष्ठे च दशनोच्छिष्ट उच्छ्वासेऽप्यथ नीपके ॥ ५२ ॥

धूलीकदम्बो वरुणफलेऽथो नागवारिकः ।
गणस्थे हस्तिपाले च यमेऽपि पृथिवीपतिः ॥ ५३ ॥

प्राचीनबर्हिर्निद्राग्न्यो रुद्रेन्द्रौ मेषवाहनौ ।
मातुलपुत्रस्तून्मत्तफले मातुलसुतेऽपि स्यात् ॥ ५४ ॥

कुटजेऽपि च यवफलको बडबामुख और्ववह्नौ च ।
विकङ्कते गोक्षुरे च कोल्यां च स्वादुकण्टकः ॥ ५५ ॥

निम्बेऽपि हिङ्गुनिर्यासो हिङ्गुवृक्षरसेऽपि च ।
हिरण्यबाहुः शोणाख्ये नदे विषमलोचने ॥ ५६ ॥

(इति पञ्चाक्षराः)

निदाघ ऊष्मणि ग्रीष्मे स्वेदे घर्मस्तु तेषु च ।
आतपे च दिने चाथ वरुणे यादसांपतिः ॥ ५७ ॥

यादस्पतिश्च तावन्धावप्यथो यक्षगुह्यकौ ।
धनदेऽप्यथ वृत्तेऽद्रौ शिखर्यगनगागमाः ॥ ५८ ॥

भ्रमरेष्टालिप्रियाद्या आम्ने जम्बूकनीपयोः ।
वतंसोत्तंसावतंसाः कर्णपूरेऽपि शेखरे ॥ ५९ ॥

अंशौ च केतुसूक्ष्माग्रा अप्यद्रौ शृङ्गिभैरवौ ।

(इति विषमाक्षराः)

आकाशे दिवसे च द्युर्विः पक्षिपरमात्मनोः ॥ ६० ॥
पुमांसौ पुरुषात्मानौ मासौ मासनिशाकरौ ॥ ६०३ ॥

(इत्येकाक्षराः)

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
शेषकाण्डे पुलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥



स्त्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

अर्चनायामपचितिः प्रक्षये निष्कृतौ व्यये ।
 अजमोदा शाल्मलेश्च निर्यासेऽथ गदद्रुहि ॥ १ ॥
 घाट्यां पाल्यां चाङ्कपालिरभिशस्तिस्तु दूषणे ।
 प्रार्थने चान्तशय्या तु भूमिशय्याश्मशानयोः ॥ २ ॥
 अनर्थवाचीतिकथा स्यादश्रद्धेयवाचि च ।
 रहस्यार्थे तूपनिषद्धर्मवेदान्तयोरपि ॥ ३ ॥
 उपलब्धिस्तु शेमुष्यां प्राप्तिविज्ञानयोरपि ।
 ऋश्यप्रोक्ता शतावर्या कण्डूरातिबलर्षिषु ॥ ४ ॥
 फलिनी स्याद् गण्डफली कलिका चम्पकस्य च ।
 वाद्यभेदे घर्घरिका वाद्यानां लगुडेऽपि च ॥ ५ ॥
 श्रीवेष्टे तैलपर्णी स्याद् धवलेऽपि च चन्दने ।
 दाक्षायणी भवान्यां भुव्यश्विन्याद्युडुषु श्रियाम् ॥ ६ ॥
 गौरीदिशोर्दक्षकन्या प्रतिपत्तिस्तु गौरवे ।
 प्रत्याप्तिप्रतिभाज्ञानेष्वथ नीलीविशल्ययोः ॥ ७ ॥
 मधुपर्णीत्यथ द्राक्षादूर्वे मधुरसेत्युभे ।
 चुच्छन्दर्या राजपुत्री राजकन्या पिचिण्डके ॥ ८ ॥
 वैजयन्ती पताकायां जयन्त्यां केशवस्रजि ।
 गुह्यायूध्यौ शिखण्डिन्यौ द्राक्षा स्वादुरसा सुरा ॥ ९ ॥
 समुद्रान्ता यवाषे च कार्पासीस्पृक्तयोरपि ।
 गौर्यामपि सिनीवाली मदिरापि हरिप्रिया ॥ १० ॥
 गङ्गा पथ्या हैमवती गौरी शुक्लवचापि च ।

(इति चतुरक्षराः)

गोरक्षजम्बूगोधूमधान्ये गोरक्षतण्डुले ॥ ११ ॥
 चिलिमीलिकातसी स्यात् खद्योते कण्डभूषणे चापि ।
 योजनगन्धा सीता कस्तूरी व्यासमाता च ॥ १२ ॥
 वृषाकपायी श्रीगौर्योः शोफल्यां प्रावृषायणी ।
 हरिद्रायां वरायां च रामायां वरवर्णिनी ॥ १३ ॥

(इति पञ्चाक्षराः)

व्यथने सूचना सूचा दर्शनेऽभिनयेऽपि च ।
 पार्वत्यामपि मातङ्गी रौद्रयुमा कौशिकीति च ॥ १४ ॥

माषपर्ण्यं कृष्णवृन्ता सिंहपुच्छी महासहा ।
रात्रावप्यर्जुनी सौम्या शिखा चूडा शिरस्यपि ॥ १५ ॥
(इति विषमाक्षराः)

भूः क्षितौ स्थानमात्रे च वस्त्रिकायोषितोः स्त्रियौ ।
उपायद्वारयोर्द्वीः स्यात् पूः स्यान्नगरदेहयोः ॥ १६ ॥
धूः स्याद्यानमुखे भारे नौस्तु काले तरावपि ।
ज्या पृथिव्यां च मौर्व्या च स्वर्व्योऽन्योर्द्यौर्दिवावुभौ ॥ १७ ॥
ऋशब्दः स्याद्विव्यदितौ त्विड् ज्वालाकान्तिदीप्तिषु ।
उत्साहेऽन्नरसेऽप्यूर्क् स्यात् झुक् झुवे शोपणे गतौ ॥ १८ ॥
लक्ष्मीरिव लवङ्गे श्रीः पद्मायां कान्तिसम्पदोः ।
रुग्ज्वालाकान्तिवाञ्छासु तृट् तु लिप्सापिपासयोः ॥ १९ ॥
यथा तृष्णा यथा तर्षस्त्वगन्धद्रव्यवल्कयोः ॥ १९ ॥
(इत्येकाक्षराः)

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां दैजयन्त्यां

शेषकाण्डे छीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥



नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

आत्याहितं महाभीत्यां प्राणानाकाङ्क्षिकर्मणि ।
 अपादानं कर्मणि स्यादतिवृत्तेऽवखण्डने ॥ १ ॥
 आभ्याधानमभिन्यासे वह्न्यर्थं चेध्मसङ्ग्रहे ।
 अन्वाहार्यममावास्याश्राद्धमिष्टेश्च दक्षिणा ॥ २ ॥
 समूहे स्यादाकलनं कलनज्ञानयोरपि ।
 आच्छादनं संविधाने स्यादावरणवाससोः ॥ ३ ॥
 आतश्चनं प्रतीवापे जपाप्यायनयोरपि ।
 आराधने तोषणाप्ती घात आयोधनं रणे ॥ ४ ॥
 जन्मोद्गमावुत्पत्तने रहोऽन्तिकमुपहरे ।
 च्छासने वधोद्वासावप्युत्सादनमुन्नतौ ॥ ५ ॥
 स्यादुद्धरणमुद्धान्तभक्तेऽप्युत्पाटनेऽपि च ।
 तिन्निडीकं तु वृक्षाम्ले चिञ्चायामम्लवेतसे ॥ ६ ॥
 त्रिवर्णकं त्रिगन्धे स्यात् त्रिफलायां कटुत्रये ।
 निर्यातनं प्रतीकारे दाने न्यासघनार्पणे ॥ ७ ॥
 निर्भर्त्सनमलक्तेऽपि मोक्षे निःश्रेयसं शुभे ।
 शस्त्रे युद्धे प्रहरणं कार्ये हेतौ प्रयोजनम् ॥ ८ ॥
 प्रतिदानं परीवर्ते न्यासद्रव्यस्य चार्पणे ।
 पारायणं कात्स्न्यवचस्यकुशस्य च बन्धने ॥ ९ ॥
 प्राणिद्युतं तु सङ्ग्रामे द्यूते च पशुपक्षिभिः ।
 शुण्ठ्यामतिविषायां च लशुने च महौषधम् ॥ १० ॥
 रतर्धिकं सुखे स्नाने दीनमङ्गलयोरपि ।
 विदारणं तु काष्ठादेद्वैधीकारे विडम्बने ॥ ११ ॥
 संसारे स्यात् संसरणमसन्बाधचमूगतौ ॥ १२ ॥
 समापनायां हिंसायां समाप्तौ च समापनम् ।

(इति चतुरक्षराः)

अवतरणं भूतादिग्रहे निवसनाञ्चले ॥ १३ ॥
 स्यादुपस्पर्शनं स्पर्शे स्नानाचमनयोरपि ।
 दुग्धाग्रे दुग्धतालीयं स्यात् फेनेऽपि च दुग्धजे ॥ १४ ॥

निन्दोपालम्भ आलापे नियमे परिभाषणम् ।
(इति पञ्चाक्षराः)

पराक्रमे धने द्युम्नं द्रविणं तु ग्रहेऽपि च ॥ १५ ॥
आगः किल्बिषमेनश्च त्रीणि पाप्मापराधयोः ।
शकुनं च निमित्तं च शुभादेः सूचकेऽपि च ॥ १६ ॥
यज्ञोपवीतोपवीते ब्रह्मसूत्रोत्तरीययोः ।
गम्भीरं गहनं रत्नं गह्वरं शरणं वपुः ॥ १७ ॥
स्नेहं सेव्यं महच्छुद्धं धरुणं सर्वतोमुखम् ।
पातालं स्वादु दिव्यं च तानि पञ्चदशास्त्वपि ॥ १८ ॥
(इति विषमाक्षराः)

खमिन्द्रिये दिवि व्योम्नि रन्ध्रनक्षत्रयोरपि ॥ १८३ ॥
(इत्येकाक्षरः)

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
शेषकाण्डे नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥



अभिधेयवल्लिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

(अर्थवल्लिङ्गाध्यायः)

अभिजातः कुलीने च न्याय्यपण्डितयोरपि ।
अभिनीतः सुयुक्ते स्यादमर्षवति संस्कृते ॥ १ ॥
अभिपन्ना विपन्नाप्रस्तात्तद्भुतदक्षिणाः ।
अधिक्षिप्तं प्रणिहिते प्रेषिते भस्सितेऽपि च ॥ २ ॥
निश्चिते स्यादवसितं समाप्त उषितेऽपि च ।
अवदातः सिते गौरे शुद्धे चाथावलम्बिते ॥ ३ ॥
अविदूरेऽप्यवष्टब्धमसम्पृक्तो रहस्यपि ।
उज्झिते धिक्कृतेऽपि स्यादवध्वस्तोऽवचूर्णिते ॥ ४ ॥
स्यादभ्यारूढमारूढे सातिरेके च सम्पदा ।
उत्कीर्णे स्यादुल्लिखितमनुषक्ते तनूकृते ॥ ५ ॥
उद्ग्राहितमुपन्यस्ते बद्धग्राहितयोरपि ।
कौक्कुटिको दाम्भिके स्याद् यश्चादूरेरितेक्षणः ॥ ६ ॥
दशमीस्थस्तु स्थविरे नष्टबीजे मृताशने ।
परिप्राप्ते परिगतं प्रज्ञाते परिवेष्टिते ॥ ७ ॥
प्रतिशिष्टप्रतिक्षिप्तावाहूय प्रेषितास्तयोः ।
विशिष्टे स्यात् प्रतिहतं प्रतिस्खलितवस्तुनि ॥ ८ ॥
समाहिते प्रणिहितं न्यस्ताभिप्राप्तयोरपि ।
पुरस्कृतः पूजिते द्विडभियुक्तेऽग्रतः कृते ॥ ९ ॥
पौरुषेयं वधे पुंसो बृन्दे कार्यविकारयोः ।
ब्रह्मबन्धुरधिद्वेष्टे निर्देश्ये ब्राह्मणाधमे ॥ १० ॥
यातयामं यातयामे जीर्णे भुक्तोज्झितेऽपि च ।
लालाटिकः प्रभोश्छन्ददर्शी कार्याक्षमश्च यः ॥ ११ ॥
विशारदो बुधे धृष्टे वञ्चिते तु विलम्बितम् ।
मन्दे चाथ समुन्नद्धौ पण्डितम्मन्यगर्वितौ ॥ १२ ॥

(इति चतुरक्षराः)

कथाप्रसङ्गस्तु विषवैद्ये वाताधिकेऽपि च ।

(इति पञ्चाक्षरः)

प्रहृष्टो हृषितो हृष्टः प्रहर्षवति विस्मिते ॥ १३ ॥

सरोमाञ्चे प्रतिहतेऽप्यथ सप्रभदग्धयोः ।

स्युः प्रदीप्तप्रज्वलितदीप्ता ज्वलित इत्यपि ॥ १४ ॥

कुत्सिते वाच्यवक्तव्यौ वदितव्यविहीनयोः ।

प्राप्तरूपोऽभिरूपश्च पण्डिते रूपवत्यपि ॥ १५ ॥

(इति विषमाक्षराः)

सन् सत्येऽभ्यर्हिते श्रेष्ठे साधीयसि भवत्यपि ।

किं प्रशनाच्चेपकुत्सानां वितर्कस्य च गोचरे ॥ १६ ॥

(इत्येकाक्षरौ)

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

शेषकाण्डे अभिधेयवह्निज्ञाध्यायः ॥ ४ ॥



नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

सुखान्ध्यर्का अन्यथिषा अन्यथिष्यौ निशाक्षितौ ।
 अवगीतं मुहुर्दृष्टे निर्वोदे गर्हितेऽपि च ॥ १ ॥
 पुमानधिपतिर्मूर्ध्न आवर्तेऽधीश्वरे त्रिषु ।
 काञ्चने शारिफलके स्यादष्टापदमस्त्रियाम् ॥ २ ॥
 अम्बरीषं रणे वर्षे तृणे नार्ककिशोरयोः ।
 आत्मनीनः सुते स्याले प्राणधारिणि दूषके ॥ ३ ॥
 आडम्बरोऽस्त्री संरम्भे पटहे गजगर्जिते ।
 उदुम्बरो द्रुदेहल्योर्ना स्त्री हेमाक्षताम्रयोः ॥ ४ ॥
 वचाजमोदयोरुग्रगन्धा ना लशुने सिते ।
 कलधौतं रूप्यहेम्नोः षण्डस्त्री तु कलध्वनौ ॥ ५ ॥
 कर्णपूरो वतंसे ना स्त्री सौगन्धिक उत्पले ।
 काण्डपृष्ठः क्रीतसुते दत्ते शूद्रासुताम्भसोः ॥ ६ ॥
 शास्त्राजीवे च यश्चान्यकुलं याति स्वकं विना ।
 नासा गन्धवहा गन्धवहो मृगानभस्वतोः ॥ ७ ॥
 जलेशयो जलकपौ मत्स्ये पद्मं जलेशयम् ।
 जीवितेशः प्रेतनाथे दायिते द्रविणागमे ॥ ८ ॥
 जैवातृकश्चन्द्रभिषगायुष्मत्सु कृषीवले ।
 अम्ललोण्यां दन्तशठा त्रिष्वम्लेऽम्लगुणे तु ना ॥ ९ ॥
 दुरोदरे नपुं द्यूते पणे द्यूतकरे तु ना ।
 नारायणी शतावर्या लक्ष्म्यां गौर्या च ना हरौ ॥ १० ॥
 निश्चारको निर्गमके पुरीषोत्सर्गिमारुते ।
 निषद्वरी निशा कामकर्दमौ तु निषद्वरौ ॥ ११ ॥
 निरूपणा नपुं स्त्री च निरीक्षणविचारयोः ।
 निशाचर्यसती फेरु रक्षःसर्पौ निशाचरौ ॥ १२ ॥
 यूथभ्रष्टे पक्षचरः स्यादेकचरपक्षिणोः ।
 परायणमभिप्रेते तत्परे परमाश्रये ॥ १३ ॥
 प्रतिष्कशः पुमान् द्यते त्रिष्वग्रसहाययोः ।
 अस्त्री प्रतिसरो हस्तसूत्रे ना तु चमूकटौ ॥ १४ ॥

आरत्ने व्रणशुद्धौ च नियोजये त्वभिधेयवत् ।
 पारावतः खगातस्योरीषत्पाण्डौ च पारदे ॥ १५ ॥
 नीचे ब्रीहाविन्द्रनीले प्राणनाथो यमे प्रिये ।
 पुण्डरीकं सितच्छत्रे कुण्ठभेदे सिताम्बुजे ॥ १६ ॥
 ना त्वाम्रे दिग्गजे व्याघ्रे राजिलाहौ गजे ज्वरे ।
 दीप्यां प्रद्योतनं नार्के घोरे प्रतिभयं भये ॥ १७ ॥
 नकुले मूषिकेऽहौ ना गोधायां स्त्री बिलेशयः ।
 वृन्दारकः पुमान् देवे श्रेष्ठसुन्दरयोस्त्रिषु ॥ १८ ॥
 भागधेयं नपुं भाग्ये दायादे ना करे न षण् ।
 मस्तुलुङ्गः शिरःस्नेहे न स्त्री क्ली दधिमण्डके ॥ १९ ॥
 ओतौ चारौ धौतिदेशे मार्जालीयोऽङ्गशोधने ।
 महावीरो यज्ञपात्रे गरुडे सुभटे खरो ॥ २० ॥
 वज्रेऽश्वे तनये हंसे शूरेऽग्नौ अवरे हरौ ।
 राजादनं प्रियाले ना क्षीरिकायां पलाशके ॥ २१ ॥
 वारवाणं तु कूर्पासे कवचेऽपि च न स्त्रियाम् ।
 विश्वम्भरा धरित्री स्यादग्नौ विश्वम्भरो हरौ ॥ २२ ॥
 विश्वावसुस्तु गन्धर्वभेदे ना स्त्री पुनर्निशि ।
 वेणौ ना दूर्वावचयोः स्त्री बिले शतपर्व षण् ॥ २३ ॥
 शिपिविष्टस्तु खलतौ दुश्चर्मणि महेश्वरे ।
 पलमाने षोडशिका न ना न स्त्री पलद्वये ॥ २४ ॥
 सनातनो हृषीकेशे चतुर्वक्त्रे सदातने ।

(इति चतुरक्षराः)

आशितम्भवमन्तादि तृप्तिः स्यादाशितम्भवः ॥ २५ ॥
 पर्याप्तानुपसम्पन्नं मृते प्राप्ते सुसंस्कृते ।
 नक्षत्रनेमी रेवत्यां स्त्री ना विष्णौ हिमद्युतौ ॥ २६ ॥
 मूर्ध्नाभिषिक्तो ना राज्ञि क्षत्रिये चार्थवत् प्रभौ ।
 हरिचन्दनमस्त्री स्याच्चन्दने देवपादपे ॥ २७ ॥

(इति पञ्चाक्षराः)

श्रेष्ठे वृषाङ्गे राजाङ्गे ककुदोऽस्त्री ककुन्न षण् ।
 तपस्वी शिशिरे शोच्ये चन्द्रे मांसी तपस्विनी ॥ २८ ॥
 द्वीपवत्यौ धरानद्यौ द्वीपवानम्बुधौ नदे ।
 धर्मे वाद्ये प्रसूत्वा ना प्रतिपत्तिः प्रसूत्वरी ॥ २९ ॥

पद्मी गजे पद्मिनी तु नलिन्यां हस्तिनीश्रियोः ।
 ब्रह्मचारी व्रती स्कन्दो दुर्गा तु ब्रह्मचारिणी ॥ ३० ॥
 भगवत्युमा भगवान् बुद्धे पूज्ये हरे हरौ ।
 भोगी ग्रामाद्यधिकृते सर्पे सुखिमहीभुजोः ॥ ३१ ॥
 विहाय महिषीमेकां भोगिन्योऽन्या नृपस्त्रियः ।
 श्रेयोऽत्यन्तं प्रशस्ते स्यात् कल्याणे धर्ममोक्षयोः ॥ ३२ ॥
 श्रेयसी हस्तिपिप्पल्यामभयाराक्षयोरपि ।
 सरस्वती सरिद्वेदे सरिन्मात्रे गवि क्षितौ ॥ ३३ ॥
 मत्स्याद्यां वाचि गङ्गायां सरस्वानम्बुधौ नदे ।

(इति विषमसङ्ख्याः)

विभूतिर्भूतिरैश्वर्यमणिमादिकसम्पदोः ॥ ३४ ॥
 ईशेश्वरौ प्रभौ रुद्रे पार्वत्यामीश्वरेश्वरी ।
 स्वभावे स्यान्निसर्गश्च सृष्टिश्चोत्पादनेऽपि च ॥ ३५ ॥
 गेहे कुलायो नीलोऽस्त्री रेतस्यपि रजो मदः ।

(इति विषमाक्षराः)

काश्चित्तात्मार्कधीधातृवाता मूर्ध्नि सुखेऽप्सु कम् ॥ ३६ ॥
 द्युपन्निष्वंशुवज्राम्बुभूवाग्दिग्दृष्टु गौर्न षण् ।
 दृक् स्त्री स्यादशने बुद्धौ नेत्रे द्रष्टरि तु त्रिषु ॥ ३७ ॥
 स्वोऽस्त्री धने त्रिषु स्वीय आत्मनि स्वजने तु ना ।
 गूर्गुदे स्त्री प्रयत्ने ना रा न स्त्री धनरुक्मयोः ॥ ३८ ॥
 आत्मनि ज्ञातरि ज्ञः स्यान्ना विद् वैश्ये जने न षण् ।
 तेशब्दः क्रीडने स्त्री स्यात् क्रीडके त्वभिधेयवत् ॥ ३९ ॥
 सेशब्दः सेवने स्त्री स्यात् सेवके त्वभिधेयवत् ॥ ३९ ॥

(इत्येकाक्षराः)

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 शेषकाण्डे नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

पर्यायसंयोगन्यायप्रदर्शनाध्यायः ॥ ६ ॥

घातुः सर्वेऽपि पर्याया रुद्राक्षे स्युश्चतुर्मुखे ।
 तस्मिन् पञ्चमुखे शम्भोः कुमारस्य तु षण्मुखे ॥ १ ॥
 गुग्गुलुलककुटजेष्विन्द्रस्याग्नेश्च चित्रके ।
 भस्मातकेऽप्यथार्कस्य भस्मातक्यर्कपर्णयोः ॥ २ ॥
 कर्पूरकम्पिल्लकयोरिन्दोर्वज्रस्य हीरके ।
 गौर्यास्त्वतस्यां कौबेरा वन्दाके क्षीरवृक्षजे ॥ ३ ॥
 खस्याभ्रके ब्रह्मणि च मेघस्याभ्रकमुस्तयोः ।
 भुवो नामानि सौराष्ट्राणां शैलेषु प्रावशैलयोः ॥ ४ ॥
 शर्वर्यास्तु हरिद्रायां प्रियङ्गुव्रततौ स्त्रियाः ।
 भवजधूममृगेन्द्राणां श्वेक्षरासमहस्तिनाम् ॥ ५ ॥
 वायसस्य पर्यायाः क्रमात् पूर्वादिवेशमसु ।
 हंसेन्दुकुमुदां रूप्ये कुमुदेऽपि खरस्य षण् ॥ ६ ॥
 स्योनाके तु सृगालस्य वानरस्य तु सिंहके ।
 स्पृक्कायां तस्करस्य स्युरुशीरे समरस्य हि ॥ ७ ॥
 वाट्यालकेऽस्य सान्नस्य शोणितस्य तु कुङ्कुमे ।
 कुष्ठाख्यभेषजे व्याघ्रेर्मातुर्गौर्या दृषद्गवोः ॥ ८ ॥
 पिण्डारे त्ववटोः पाणेश्चायुधस्य त्वयस्यपि ।
 अपरावे तु रन्ध्रस्य बदरस्य तु नागरे ॥ ९ ॥
 रुक्मस्याञ्जनभेदे क्ली पुंलिङ्गा नागकेसरे ।
 उन्मत्तेऽपि च बिन्दोस्तु सिध्मादौ देहवैकृते ॥ १० ॥
 रूप्यस्याञ्जनभेदे स्युरटव्यां जलमुस्तके ।
 षण्डाः केशस्य बर्हिष्ठे शिरसः शिखरे तरोः ॥ ११ ॥
 माक्षिके क्ली स्त्रियो लक्ष्म्यां नरः पद्मस्य सारसे ।
 त्वचो लवङ्गे पर्णस्य पक्षे ह्री किंशुके नरः ॥ १२ ॥
 गणस्याब्धेश्च सङ्ख्यायां बर्हिष्ठे मुस्तकेऽप्यपाम् ।
 मकराम्बुजकूर्माणां निधिभेदेषु ते नरः ॥ १३ ॥
 सङ्ख्याभेदेऽपि शङ्खस्य मीनमेषविषाणिनाम् ।
 मिथुनस्य कुलीरस्य सिंहकन्यातुलालिनाम् ॥ १४ ॥

धनुर्मकरकुम्भानां क्रमाद् द्वादशराशिषु ।
 सर्पस्य सीसके नागकेसरे द्विपसर्पयोः ॥ १५ ॥
 अगुरुण्ययसो गुन्द्रे शरस्य मकरे त्वसेः ।
 शुभस्य फेनिले पुंसि कार्पासे वाससो नरः ॥ १६ ॥
 धूल्यश्वयोरश्वकन्दे पर्पटे मरिचेऽयसः ।
 इत्यादीन्यन्यनामानि बोद्धव्यान्यन्यवस्तुषु ॥ १७ ॥
 वृक्षस्य गृहनामान्ता नरः पक्षिमयूरयोः ।
 वीरात् परास्ते भङ्गाते ततः शक्राच्च तेऽर्जुने ॥ १८ ॥
 पलाशे ब्रह्मतोऽश्वत्थे श्रीतः कारस्क्रे विषात् ।
 मुनेः पलाशसरलस्योनाकेङ्गुचगस्तिषु ॥ १९ ॥
 नौस्तम्भे गुणतश्चैत्यादश्वत्थोद्देशवृक्षयोः ।
 व्याघाते राजतो दीपाहीपमालाविधारके ॥ २० ॥
 नरो भुगन्ताः सर्पस्य राजसर्पमयूरयोः ।
 तार्क्ष्ये चाथारिनामान्ता नकुले केकितार्क्षयोः ॥ २१ ॥
 पञ्चपूर्वास्तु वक्त्रस्य व्याघ्रे सिंहे हरे नरः ।
 कण्ठस्य नीलनामभ्यो ग्रीवायाश्चेशकेकिनोः ॥ २२ ॥
 नखस्य शस्त्रनामान्ता नरो मार्जारसिंहयोः ।
 कुचन्दने कुङ्कुमे च रक्तादेश्चन्दनादयः ॥ २३ ॥
 एवं संयोगनामानि सलिङ्गान्युन्नयेत् स्वयम् ।
 पूर्वोक्तेष्वपि शब्देषु योगसम्प्राप्तवृत्तयः ॥ २४ ॥
 स्वयमूहा यथा कन्दः कं ददातीति वारिदः ॥ २४३ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां शेषकाण्डे
 पर्यायसंयोगन्यायप्रदर्शनाध्यायः ॥ ६ ॥

अनेकार्थव्ययाध्यायः ॥ ७ ॥

उक्ता लिङ्गान्विताः शब्दा निर्लिङ्गान्यव्ययान्यतः ।
 आङ्गीषदर्थेऽभिविधौ सीम्नि कर्मविशेषणे ॥ १ ॥
 आ प्रगृह्यः स्मृतौ वाक्य आस्तु सन्तापकोपयोः ।
 ऐ दुःखभावने कोपे प्रत्यक्षे सन्निधावपि ॥ २ ॥
 औ स्याद् ब्रह्मण्यनुज्ञायां कं सुखेऽऽम्भसि मूर्ध्नि च ।
 प्रश्ने क्षेपे विलम्बे किं कु पापेऽलपार्थक्यसयोः ॥ ३ ॥
 चान्वाचये समाहारे मिथोयोगे समुच्चये ।
 तु भेदावधारणयोदुरशोभनदुःखयोः ॥ ४ ॥
 धिग्भर्त्सने कृत्सने च नि न्यग्भावनिकामयोः ।
 नाभावान्यविरोधेषु निर्निर्णयनिषेधयोः ॥ ५ ॥
 प्रश्ने विकल्पे नु स्वित्वा प्रादौ यात्राप्रकृष्टयोः ।
 वि निषेधे पृथग्भावे वा विकल्पोपमानयोः ॥ ६ ॥
 समुच्चये च वै पापे वाक्यारम्भप्रसिद्धयोः ।
 स्मृतौ वृत्ते निषेधे स्म स्वः स्वर्गपरलोकयोः ॥ ७ ॥
 समभेदे समीचीने सुप्तपूजासुखेषु सु ।
 प्रत्यारम्भे प्रसिद्धौ ह हा विषादशुगतिषु ॥ ८ ॥
 हि स्याद्विशेषणे हेतौ हि हेतावधारणे ।
 आमन्त्रणे भर्त्सने हुं हूं सम्प्रश्नवितर्कयोः ॥ ९ ॥
 उ तापेऽव्ययमीशे ना मा निषेधे श्रियां स्त्रियाम् ।
 अ निषेधे पुमान् विष्णावि विचित्रे स्मरे पुमान् ॥ १० ॥
 तद्धेतौ त्रिष्वमुष्मिन् स्याद्यद्धेतौ प्रगते त्रिषु ।
 ह ह्यु तु स्म च वै पादपूरणेऽपि प्रयुज्जते ॥ ११ ॥
 (इत्येकाक्षराः)

अमा संहर्षे सामीप्येऽप्यद्धा प्रत्यक्षसत्ययोः ।
 अयि प्रश्ने सानुनये विनियोगे क्रियास्वह ॥ १२ ॥
 षीडेर्ष्याऽनुमतिष्वस्तु स्यादध्यधिक ईश्वरे ।
 अलं तु भूषणे शक्तौ पर्याप्तौ विनिवारणे ॥ १३ ॥
 अपि सम्भावनाप्रश्नगर्हाशङ्कासमुच्चये ।
 अथाथोऽनन्तराऽप्यर्थविकल्पारम्भमङ्गले ॥ १४ ॥

अति स्यादधिकार्थोक्तौ प्रशंसायामतिक्रमे ।
 पश्चाद्धेतूनसाम्येषु भागे वीप्साप्रकारयोः ॥ १५ ॥
 लक्षणेऽप्यनु वीप्सादित्रयेऽप्यभिमुखेऽप्यभि ।
 अतो निन्दाहेतुचित्रेष्वादा दूरसमीपयोः ॥ १६ ॥
 इति हेतुप्रकरणप्रकारादिसमाप्तिषु ।
 विस्तारेऽङ्गीकृतावूरी स्यादुर्युररी यथा ॥ १७ ॥
 उपाधिकेऽन्तिके हीनेऽप्युत प्रश्नविकल्पयोः ।
 समुच्चयेऽनुमत्यां चाप्येव साम्येऽवधारणे ॥ १८ ॥
 पादपूरणकृत्वायमेवं साम्याभ्यनुज्ञयोः ।
 कश्चित् प्रश्ने कामवादे वार्तासम्भाव्ययोः किल ॥ १९ ॥
 निषेधे वागलङ्कारे झीप्सनेऽनुनये खलु ।
 तूष्णीमर्थे मुखे जोषं तर्हि स्यात् प्रश्न उत्तरे ॥ २० ॥
 तथा समुच्चये साम्ये परमार्थाभ्यनुज्ञयोः ।
 तिरोऽन्तर्द्धौ तिरश्चीने दिष्ट्या स्यान्मङ्गलादिषु ॥ २१ ॥
 तर्कनिश्चितयोर्नूनं नानाऽनेकोभयार्थयोः ।
 प्रश्नावधारणैतिह्यसमीहानुमते ननु ॥ २२ ॥
 नाम प्रकाश्यसम्भाव्यक्रोधोपगमकुत्सने ।
 प्रबन्धे निकटेऽतीते पुराणेऽनागते पुरा ॥ २३ ॥
 पुनरप्रथमे प्रश्ने व्यावृत्तावधारणे ।
 प्रतिदाने प्रतिनिधौ तुल्ये मात्राभिमुख्ययोः ॥ २४ ॥
 भागे प्रकारकथने वीप्सायां लक्षणे प्रति ।
 भागादिष्वेषु परि च वर्जनेऽप्यपवत् परि ॥ २५ ॥
 परा निहीनेऽनावृत्तौ बत त्वामन्त्रणेऽद्भुते ।
 तोषे खेदे कृपायाञ्च बाढं त्वनुमते भृशे ॥ २६ ॥
 मुहुः क्षणेऽनुक्षणे च मिथोऽन्योन्यरहस्ययोः ।
 यथा सादृश्ययोग्यत्ववीप्सास्वर्थानतिक्रमे ॥ २७ ॥
 यावत्तावच्च साकल्यमानावध्यवधारणे ।
 वृथा निष्कारणाविध्योः शश्वद् भूयः सदेति च ॥ २८ ॥
 सकृत् सदैकवारे च सामि स्यादर्धनिन्दयोः ।
 स्वस्ति मङ्गलनिष्पापक्षेमेष्वाशीर्वचस्यपि ॥ २९ ॥
 साक्षात् प्रत्यक्षसदृशोः पृथगर्थेऽन्तिके हिरुक् ।
 वाक्यारम्भेऽनुकम्पायां हन्त हर्षविषादयोः ॥ ३० ॥
 (इति द्व्यक्षराः)

अञ्जसा त्वरिते तत्त्वेऽप्यहहादभुतखेदयोः ।
 समीपोभयतश्शीघ्रशाकल्याभिमुखेऽभितः ॥ ३१ ॥
 रहस्येऽर्थ उपांशु स्यादश्रुतोच्चारणेऽपि च ।
 परितोऽन्तिके सर्वतोऽर्थे पूर्वेषुः प्रत्युषेऽपि च ॥ ३२ ॥
 पुरस्तात् पूर्वदिश्यन्ते पुराप्रथमयोरपि ।
 शीघ्रे सपदि सद्योऽर्थे समयाऽन्तिकमध्ययोः ॥ ३३ ॥
 सद्योऽर्थे सहसा हेतुशून्ये युक्तेऽपि साम्प्रतम् ॥ ३३३ ॥

(इति त्र्यक्षराः)

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 शेषकाण्डे अनेकार्थाव्ययाध्यायः ॥ ७ ॥

अव्ययपर्यायाध्यायः ॥ ८ ॥

शीघ्राथे मृदिति स्नाग्द्राक् मङ्ग्वहाय सपद्यपि ।
 चिरेण चिररात्राय दीर्घकाले चिराच्चिरम् ॥ १ ॥
 विकल्पे किमुताहोस्वित् किमुताहो किमूत च ।
 सम्बोधने ननु प्याद् पाट् हे है भो अङ्ग हन्त च ॥ २ ॥
 वौषड्वोषड्वषड्वौक्षड्ववाक्षट् श्रौषड्वषट्कृतौ ।
 परितः सर्वतो विष्वक् समन्ताच्च समन्ततः ॥ ३ ॥
 किमुतातीव बलवत् स्वति सुष्ठु च साधिके ।
 पृथग्विना हिरुङ् नानाऽन्तरेणते च वर्जने ॥ ४ ॥
 कालेऽस्मिन्नधुनेदानीं सम्प्रत्येतर्हि साम्प्रतम् ।
 यदा यर्हि तदा तर्हि तदानीं सर्वदा सदा ॥ ५ ॥
 शश्वत् सनात् सना ज्योक् च युगपत्त्वेकदा सकृत् ।
 द्विस्त्रिचतुष्पञ्चकृत्व इत्याद्यावर्तने कृते ॥ ६ ॥
 कदाचिज्जातु सद्यस्तु तत्क्षणेऽन्यक्षणेऽन्यदा ।
 दोषा नक्तं च निश्यहि दिवाद्यैतदहर्निशम् ॥ ७ ॥
 अपरेऽह्यपरेद्युः स्यादेवं पूर्वैतराधरे ।
 उत्तरेऽन्यान्यतरयोस्तर्क्याः पूर्वैद्युरादयः ॥ ८ ॥
 उभयेद्युस्तूभयद्युः परे त्वहि परेद्यवि ।
 ह्यो गतेऽनागते तु श्वः परश्वस्तु ततः परे ॥ ९ ॥
 सायं साये प्रगे प्रातः काल्ये संवत्तु वत्सरे ।
 अतीतानन्तरे वर्षे परारि परुदेषमः ॥ १० ॥
 अतीते वर्तमाने च स्यादन्ते रजनेरुषा ।
 मुहुः पुनःपुनः शश्वत् पुरस्तु पुरतोऽग्रतः ॥ ११ ॥
 सङ्कोचे चिञ्चन व्यर्थे मुधा शश्वत्तु शाश्वते ।
 किञ्चनेषन्मनाक् किञ्चिद् विकल्पेऽवश्यं तु निश्चिते ॥ १२ ॥
 निष्पमं दुष्पमं दुष्ठु गर्ह्ये सुष्ठु सु शोभने ।
 मिथ्या मृषा च वितथे यथार्थं तु यथातथम् ॥ १३ ॥
 मतप्रदाने यदि चेद् यथास्वं तु यथायथम् ।
 युक्ते स्थाने रुषोक्तावूम् बहिर्बाह्ये नमो नतौ ॥ १४ ॥

मौने तु तूष्णीं तूष्णीकां समया निकषा हिरुक् ।
 साम्ये व वैवमेवेव प्रेत्यामुत्र भवान्तरे ॥ १५ ॥
 प्राध्वं स्यादानुकूल्यार्थमशीघ्रे शनकैः शनैः ।
 अहो ही विस्मये प्रायो भूमन्यस्तमदर्शने ॥ १६ ॥
 समकं तु सजूः साकं सार्धं सत्रा समं सह ।
 मुखे दिष्ट्योपजोषं शमेवमां परमं मते ॥ १७ ॥
 हठे प्रसह्य मध्ये स्यादन्तरेणान्तरेऽन्तरा ।
 प्रादुराविः प्रकाशेऽर्वागवरे स्वयमात्मनि ॥ १८ ॥
 उपरिष्ठादुपयूष्वे स्यादधस्तादवागधः ।
 तिरस्त्रि साच्युच्च उच्चैर्नीचैर्नीच्युच्चकैर्भृशे ॥ १९ ॥
 प्रकारेऽन्यथेतरथा कथमित्थं यथा तथा ।
 द्विधा द्वेधा त्रिधा त्रेधा चतुर्धा द्वैधमादि च ॥ २० ॥
 अर्थे यत्रादि सप्तम्याः पञ्चम्या यत आदिकम् ।
 इतिह स्यात् सम्प्रदाये पारेऽपारे हशौ पशु ॥ २१ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 शेषकाण्डे अनेकार्थाव्ययाध्यायः ॥ ८ ॥

लिङ्गसङ्ग्रहाध्यायः ॥ ९ ॥

नाम्नां पूर्वमिहोक्तानामनुक्तानां च कृत्स्नशः ।
 सामान्यैर्लक्षणैः कैश्चित् क्रियते लिङ्गसङ्ग्रहः ॥ १ ॥
 अवाधिते विशेषोक्त्या भवेत् सामान्यलक्षणम् ।
 एकस्वरं हलादीदृद् दृङ् मा श्रीर्भूरिति स्त्रियाम् ॥ २ ॥
 इच्च सर्वमुदन्तेषु पाकुरज्ज्वादि किञ्चन ।
 नदीनामाह्वयाः सर्वे प्रायेण च लताह्वयाः ॥ ३ ॥
 णचोऽन्वि व्यवहार्याद्या अङ्ङन्तास्तु पचादयः ।
 अप्रत्यये जुगुप्साद्या युजन्ता भावनादयः ॥ ४ ॥
 क्तिन्नन्तास्ततिगत्याद्याः क्तिन्नन्ताः सम्पदादयः ।
 इन्वि स्युः कारिबोध्याद्या ण्वुलि प्रच्छर्दिकाऽऽदयः ॥ ५ ॥
 क्रीडाप्रहरणे णान्ताः पाल्लवाद्या घवस्तु ज्ञे ।
 क्रियायां दाण्डपाताद्यास्तल्ङ्ग्याबूङ्ङ्यन्धतादयः ॥ ६ ॥
 अके वैरादिवीप्सादौ स्युः काकोल्लकिकादयः ।
 क्यपि तु ब्रह्महत्याद्या दत्याद्यल्पत्वकीर्तने ॥ ७ ॥
 त्रिलोकीत्यादयोऽदन्तैः समाहरार्थकद्विगौ ।
 त्रिपात्रत्रियुगाद्याः षण्णभवन्यादयस्त्वनौ ॥ ८ ॥

(इति स्त्रीलिङ्गाः)

अदन्ताः पुंस्युपान्ताश्चेत् कणौ भरमटास्तथौ ।
 षसौ च सान्ता ये च स्युरुदन्ताः प्रायशो नरः ॥ ९ ॥
 इदन्नेष्वरतिर्विर्बर्णिर्होर्हिर्ग्रहिः प्रहिः ।
 स्तभिः कपिः सनीरालिरर्दनिर्वमतिर्नरः ॥ १० ॥
 अङ्ग्याबन्ताश्च वृक्षार्थाः प्रायो रोहित्तरन्तथा ।
 शैलानामह्वयाः सर्वे गोत्राख्याश्चरणाह्वयाः ॥ ११ ॥
 कन्यन्ता राजतक्षाद्या ऋदोरपि करादयः ।
 इकस्तिपोः शासिशास्त्याद्याः स्युरेरचि जयादयः ॥ १२ ॥
 अवश्यायादयो णान्ता घान्ता दन्तच्छदादयः ।
 प्रध्याद्याः प्रादितो घोः कौ स्युर्वमध्वादयोऽद्युचि ॥ १३ ॥
 प्रश्नाद्या नङि पाकाद्या घान् ल्यौ नन्दनादयः ।
 प्रथिमाद्या इमनिचि कुणप्पीलुकुणादयः ॥ १४ ॥
 (इति पुल्लिङ्गाः)

त्रान्तद्वयचकासिसुस्नान्तं लोपधं युक्तयोपधम् ।
 अम्बुपुष्पाणि च क्लीवे रेचकं त्वभयाफले ॥ १५ ॥
 ब्रह्मोद्याद्या भावकृत्यः शब्दोऽणि त्रिष्ठुभादयः ।
 स्मिताद्या भावनिष्ठान्ताः कर्णजाहादि जाहचि ॥ १६ ॥
 समूहकर्मभावार्थतद्धिते वार्धकादयः ।
 साराविणोपमानदि नोपान्तं भावसंज्ञयोः ॥ १७ ॥
 एकद्वन्द्वाव्ययीभावाः स्युरितोऽकर्मधारये ।
 अनवत्तत्पुरुषे शब्दाः कन्थोशीनरनामसु ॥ १८ ॥
 यथा सौशमिकन्थं स्याद् बाहुल्ये तु समासभाक् ।
 छाया यथा खगच्छायं नृपामर्त्यार्थकात् परा ॥ १९ ॥
 अराजतः सभा भूयुत्सभं रक्षःसभं यथा ।
 न काष्ठादेरशालार्था सैव दासीसभं यथा ॥ २० ॥
 उपज्ञोपक्रमान्तं च तदादित्वे विवक्षिते ।
 पाणिन्युपज्ञमित्यादि पथस्सङ्ख्याऽव्ययात् परः ॥ २१ ॥
 शशादूर्णा गृहात् स्थूणा क्रियाऽव्ययगुणानुगम् ।
 एकत्वञ्चास्य पुण्यात्तु सुदिनादप्यहः परः ॥ २२ ॥
 कुटिलं गच्छतीत्यादि क्रियाणां तु विशेषणम् ।
 नपुंसकं तु भद्रं स्वरित्यव्ययविशेषणम् ॥ २३ ॥

(इति नपुंसकलिङ्गाः)

स्त्रीप्राण्यर्थाः स्त्रियां पुंसि पुंप्राण्यर्था विना त्विह ।
 स्त्रीत्वेनोक्तैस्तथाऽपत्येऽणादि च्चुन्नादि शिल्पिनि ॥ २४ ॥
 कचिद्रश्मिमयूखांशुघृणिघृष्टिगभस्तयः ।
 सृपाटी त्रिसरा सूर्मिः सुषुम्ना यष्टिरिङ्गुदी ॥ २५ ॥
 कलम्बी शल्लकी मल्ली वरटा जाटलिः कुटी ।
 शाटी रेणुहरेणूरुजल्लकाकोलिधूलयः ॥ २६ ॥
 उत्कण्ठा कङ्कती कन्दूवितस्ती रथिरञ्जलिः ।
 कूपस्य च त्रिका व्रीडा प्रेङ्खोलिः फलकी कटी ॥ २७ ॥

(इति स्त्रीपुंसलिङ्गाः)

अर्धर्चादिगणे प्रोक्तं सर्वं नृस्त्रीबलिङ्गकम् ।
 तच्च लिङ्गान्तरेऽनुक्तं सर्वमुक्तं घृतादि च ॥ २८ ॥

तत्र केचिद् घृतादीनां पुंस्त्वाद्यं वैदिकं विदुः ।
 अत एकेन लिङ्गेन ते पूर्वमिह वर्णिताः ॥ २६ ॥
 पिशाचादिषु भूतोऽस्त्री शङ्कुरप्राणिगोचरः ।
 विशेषकञ्च तिलकं पुण्ड्रे ब्रह्मा द्विजेऽब्जजे ॥ ३० ॥
 द्वेडाश्च कन्दलाः कालकूटाद्याः स्युः कमण्डलुः ।
 सक्तः परीतन्महिमा कर्म पर्व च लोम दोः ॥ ३१ ॥

(इति नृषण्डाः)

अपुंसि चालनी दाम वणिज्याऽशसन्तिका स्थली ।
 शरव्यार्चिचर्गुडा पत्री स्यात् कुथे वर्णतर्णिका ॥ ३२ ॥
 सगरी नटने कृत्या त्वभिचारजदैवते ।
 मद्ये मधूलकं चेति क्वाप्यथाकर्मधारये ॥ ३३ ॥
 अनन्तत्पुरुषे सेनाच्छाया शाला निशा सुरा ।
 नृसेनं पादपच्छायं गोशालं श्वनिशं यथा ॥ ३४ ॥
 नृसेनेत्यादयोऽप्येवं कुत्रचिद्भावकर्मणोः ।
 साहायकं साहायिका मैत्र्यं मैत्री च वृक्ष्यजोः ॥ ३५ ॥
 द्विगुरन्तन्त आबन्तोऽप्येवं नश्चात्र लुप्यते ।
 यथा त्रितक्षं त्रितक्षी क्षिखट्वं च त्रिट्व्यपि ॥ ३६ ॥

(इति स्त्रीषण्डाः)

त्रिलिङ्ग्यां तु कचिच्छुङ्गा कलशी कन्दरी दरी ।
 पेटी पुटी पटी वाटी कवाटी पिटका वटी ॥ ३७ ॥
 अर्गला दाडिमी पात्री विडङ्गा कुवली तटी ।
 मृणाली कन्दली नाली मुस्ता जृम्भा हरीतकी ॥ ३८ ॥
 त्रिजातकी गन्धिघना मठी स्थाने तपस्विनाम् ।

(इति त्रिलिङ्गाः)

गुणद्रव्यक्रियायुक्तं बुवन्तो वाच्यलिङ्गकाः ॥ ३९ ॥
 येनार्थः प्रस्तुतो नाम्ना तल्लिङ्गं वाच्यलिङ्गकम् ।
 न त्रिषु स्युर्विशिष्टार्थस्पर्शिनः पङ्कजादयः ॥ ४० ॥
 भेद्यनिष्ठत्वमेकार्थवृत्तिमात्रैककारणम् ।
 अतन्त्रीकृत्य भेदोक्तिः कैश्चिदाभीयते पुनः ॥ ४१ ॥

ते स्युरर्थसमा यद्वत् सत्त्वाद्या वाक्यगोचराः ।
 मचर्चिका मतल्लिका प्रकण्डमुद्धतल्लजौ ॥ ४२ ॥
 अमीषु नार्थलिङ्गता प्रशस्तवाचकेष्वपि ।
 योनिसम्बन्धवाचिन्यः पुत्राद्याः पुंगिरो नरि ॥ ४३ ॥
 मात्राद्याः स्त्रीगिरः स्त्रीत्वे विद्यासम्बन्धगोचराः ।
 आचार्यत्विगुपाध्यायशिष्या याज्यार्थिकास्तथा ॥ ४४ ॥
 शास्त्रार्था वैदिकार्थाश्च स्थपतिश्रोत्रियादयः ।
 अधिकारकृता मन्त्रिस्थापत्याद्यभिधास्तथा ॥ ४५ ॥
 भट्टारको भट्टरको भट्टस्तत्रभवान् भवान् ।
 भगवान् पूज्यपादश्च देवाश्चार्चार्थिकास्तथा ॥ ४६ ॥
 शत्रुमित्रज्ञशिल्प्यर्थाः प्रायस्तद्वन्न तु त्रिषु ।
 वाच्यवत् स्याद् बहुव्रीहिर्दिङ्नामसु तु स स्त्रियाम् ॥ ४७ ॥
 कृतः कर्तर्यसंज्ञायां कृत्याद्या ल्युट् च कारके ।
 सर्वनामान्यणाद्याश्च तद्धिताः संज्ञया विना ॥ ४८ ॥
 तद्धिताः चतुर्थ्या ये सङ्केतात् कृतकाह्वयाः ।
 षट्संज्ञा युष्मदस्मच्च त्रिषु लिङ्गेष्वभेदवत् ॥ ४९ ॥

(इत्यभिधेयवल्लिङ्गाः)

कृतद्वितसमासाख्या प्रसिद्धाख्ये च लिङ्गिनि ।
 तद्यथा चक्रभृद्विष्णुर्लताभेदाभिधा यथा ॥ ५० ॥
 द्वन्द्वस्तत्पुरुषोऽप्यन्त्यलिङ्गोऽश्वबडबौ नरि ।
 तथैवोक्षवशावह्वरात्राहाश्च टजन्तकाः ॥ ५१ ॥
 क्लीबे सङ्ख्यापरं रात्रमर्धाञ्ना पञ्चस्वार्थेना ।
 त्रिष्वर्थः प्राक् चतुर्थ्यन्तस्तद्धितार्थो द्विगुलिषु ॥ ५२ ॥
 प्रादिप्राप्तलमापन्नात् परं च प्रवरो यथा ।
 प्राप्तार्थोऽलङ्कुमारिश्च पुमान् स्त्रीपुंसयोर्युतौ ॥ ५३ ॥
 ग्राम्यानेकशफाबालबहुपञ्चन्वये स्त्रियः ।
 क्ल्यक्लीयुतौ षण्णैक्यं वा व्यक्त्यादि लुपि युक्तवत् ॥ ५४ ॥
 परवद् वानुवादिषु तिङ्ग्ययमलिङ्गकम् ।
 अचः पुंसि हलो दीर्घाः स्त्रियां लोपधनत्रसाः ॥ ५५ ॥

षण्डे सर्वे गुणद्रव्यक्रियायुक्तार्थकास्त्रिषु ।
 बहुत्वमेकता च स्याज्जात्याख्यायां यथा यवाः ॥ ५६ ॥
 यवश्च ग्रीहयो ग्रीहिरित्यथ स्याद् विशाखयोः ।
 द्वित्वं बहुवचश्चैवं द्वयं प्रोष्ठपदास्वपि ॥ ५७ ॥
 अनेकमिति शब्दस्य तद्विशेषस्य चैकता ।
 सङ्ख्यार्थस्याबहुग्रीहेर्यथाऽनेका वधूरिति ॥ ५८ ॥
 विरोधे पूर्वदौर्बल्यं लोकतः शेषमुन्नयेत् ।

(इति सामान्यन्यायाः)

सर्वे जनाः सहस्रास्या युगपद्वक्तुमुद्यताः ॥ ५९ ॥
 न कलामपि भारत्या ब्रूयुर्वर्षशतैरपि ॥ ५९½ ॥
 इति भगवता विदितनिखिलनिगमनिचयरहस्यविद्येन दिनमणिसमतेजसा
 सकलतत्त्वप्रकाशेन यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 शेषकाण्डे लिङ्गसङ्ग्रहाध्यायः ॥ ९ ॥

अष्टमः शेषकाण्डः समाप्तः ॥ ८ ॥

ग्रन्थोपसंहारः

इति यतिवरसङ्गपूजिताङ्घ्रिः

प्रथितयशा भुवि यादवप्रकाशः ।

वयरचयदभिधानशास्त्रमेतत्

सह वचनैः सह लिङ्गसङ्ग्रहेण ॥ १ ॥

एतां शुभामष्टभिरुक्तकाण्डै-

भूतस्वरूपैरिव नाममालाम् ।

धत्तां विशाले हृदये मुरारि-

स्त्वां वैजयन्तीमिव वैजयन्तीम् ॥ २ ॥

एवं सूक्ष्मैर्न्यायनिर्णीतशब्दैः

सर्वार्थानां व्यञ्जकोऽसौ निघण्टुः ।

संविक्तीनां भूषणं सत्कवीनां

प्राप्तः पारं वैजयन्तीनिघण्टुः ॥ ३ ॥

[नानाविद्यावेद्यवाग्रजमाला

मूर्तं वेदं वेदयन्ती त्रिवेद्याः ।

रोद्धुं बुद्धिध्वंसकध्वान्तचक्रं

प्राज्ञैर्ज्ञेया वैजयन्ती जयन्ती ॥ ४ ॥]

(इति वैजयन्ती समाप्ता)



परिशिष्टम्

वैजयन्तीस्थानाब्दाः काण्डाशुद्धाः कोशान्तरस्थानाब्दाः कोशान्तरनामानि स्थलनिर्देशाः

मिहुरम्	११२।१३	मिहिरम्	अमरकोशः (व्याख्यासुधा)	१११।४७
कृकरः, क्रकरः	२।३।३६	क्रकरः, क्रकणः	"	२।५।९
मदलः	२।४।१०	मदलः	" (व्याख्यासुधा)	१।७।८
रुशती	२।४।१८	उपती	" "	१।७।८
फणिर्जकः	३।३।१२०	फणिज्जकः	"	२।४।७९
पिण्या	३।३।१४०	पण्या	"	२।४।१५०
विम्बोष्ठी	३।३।१४७	विम्बिका	"	२।४।१३९
वाध्रीणसः	३।४।८	वाध्रीणसः	त्रिकाण्डशेषः	२।५।३
		वाधीनसः	"	२।५।३
नैचिकी	३।४।४६	नैचिकम्	"	२।९।२२
स्थूरी	३।४।५६	स्थूरी	अमरकोशः	२।८।४६
कुक्कुरः	३।४।६९	कुक्कुरः	अभिधानचिन्तामणिः	४।३।४५
		कुर्कुरः	"	४।३।४५
कदञ्जिका	३।६।३१	कलिन्दिका	"	२।१।७२
		कडिन्दिका	" (मणिप्रभा)	२।१।७२
		कलन्दिका	" "	२।१।७२
वैष्णुतम्	३।६।९५	वैष्णुतम्	"	३।५।०१
		वैष्णुभम्	त्रिकाण्डशेषः	२।७।७
वृसी	३।६।१४९	वृषी	अमरकोशः	२।७।४६
		वृसी	" (व्याख्यासुधा)	२।६।४६
क्रियदेतिफा	३।६।१६६	क्रियदेहिका	त्रिकाण्डशेषः (व्याख्या)	१।७।४
चूषा	३।७।८४	दूष्या	अमरकोशः	२।८।४२
जागरः	३।७।१५३	जगरः	अभिधानचिन्तामणिः	३।४।३०
		जगरः	अभिधानरत्नमाला	२।३।०४
मिण्डिपालः	३।७।१६६	मिण्डिपालः	अमरकोशः	३।८।९१
		"	अभिधानचिन्तामणिः	३।४।४९

दैजयन्तीस्थशब्दाः काण्डायङ्काः कोषान्तरस्थशब्दाः कोषान्तरनामानि स्थलनिर्देशाः

समिकम्	३७।२०३	समीकम्	अमरकोषः	२।८।१०४
खले पाली	३।८।३१	खलेवाली	अभिधानचिन्तामणिः	३।५।५८
मरिष्टक-मयष्टकौ	३।८।३८	मकुष्ठक-मयुष्टकौ	"	४।२४०
			अमरकोषः	२।९।१७
विटङ्कः	३।८।९७	विटङ्कम्	"	२।२।१५
यष्टिमधुका	३।८।१०३	यष्टीमधुकम्	"	२।४।१०९
		मधुयष्टी	" (व्याख्यासुधा)	२।४।१०९
		यष्टी	"	
मणिमन्	शितशिवम् ३।८।१२०	शीतशिवं माणिमन्धम्	"	२।९।४२
		सितशिवम्	" (व्याख्यासुधा)	२।९।४२
		माणिबन्धम्	" (चीरस्वामी)	२।९।४२
मूका	३।९।१७	मूषा	"	२।१०।३३
कुठारः	३।९।३२	कुठरः, कुटरः	"	२।९।७४
		कुटरः	अभिधानचिन्तामणिः	४।८९
कलकरवम्	३।९।८५	कल्लरवम्	"	२।२२०
निकार्यं	४।३।१८	निकार्यः	अमरकोषः	२।२।५
		निकार्यः	"	२।२।५
		निकार्यः	अभिधानचिन्तामणिः	४।५६
कुण्डिनी	४।३।२५	कण्डनी	त्रिकाण्डशेषः	२।९।६
मण्डपः	४।३।२८	मण्डपः	अमरकोषः	२।२।९
		"	अभिधानचिन्तामणिः	४।६९
मिस्सिटा	४।३।७७	मिस्सटा	"	३।६०
		"	अमरकोषः	२।९।४९
मुकुटः	४।३।१३५	मुकुटः	"	२।६।२०२
		मुकुटः	" (व्याख्यासुधा)	२।६।२०२
		"	अभिधानचिन्तामणिः	३।३।१४
		मुकुटः	" (स्वोपश्रवृत्तिः)	३।३।१४
पिचिण्डिका	४।३।५८	पिचण्डिका	"	२।२७९

वैजयन्तीस्थशब्दाः काण्डायङ्काः कोषान्तरस्थशब्दाः कोषान्तरनामानि स्थलनिर्देशाः

प्रसृतः	४।४।७७	प्रसृतिः	अमरकोषः	२।६।८५
कलाः	४।४।१०१	कचाः	"	२।६।९८
गोर्दम्	४।४।११२	गोदम्	"	२।६।६५
		गोदः	" (मणिप्रभा)	२।६।६५
परीतवान्त्रम्	४।४।११३	पुरीतत्, अन्त्रम्	"	२।६।६६
वातकः	४।४।१४५	वातकी (-किन्)	"	२।६।५९
श्लेष्मसूः	४।४।१४६	श्लेष्मणः	"	२।६।६०
यौवनम्	५।१।८	यौवत्तम्	"	२।६।२२
निर्वार्यः	५।४।७३	निर्वार्यः	" (व्याख्यासुधा)	३।१।१३



वैजयन्तीकोषस्य शब्दानुक्रमणिका

[इस अनुक्रमणिका में क्रमशः शब्द, लिङ्गादि के अङ्क (१. पुलिङ्ग, २. स्त्रीलिङ्ग, ३. नपुंसकलिङ्ग, ४. अव्यय), ए. = एकवचन, द्वि. = द्विवचन, व. = बहुवचन तथा () इस कोष्ठक के अन्तर्गत ग्रन्थान्तरस्थ पाठान्तर और अन्त में क्रमशः काण्डाङ्क, अध्यायाङ्क, तथा श्लोकाङ्क दिये गये हैं] ।

अ]

[अगच्छ

शब्दः लिङ्गाद्यङ्काः	काण्डाङ्काः अध्यायाङ्काः श्लोकाङ्काः	शब्दः लिङ्गाद्यङ्काः	काण्डाङ्काः अध्यायाङ्काः श्लोकाङ्काः	शब्दः लिङ्गाद्यङ्काः	काण्डाङ्काः अध्यायाङ्काः श्लोकाङ्काः
अ		अकुत्स १.	३११५५	अक्षपात १.	३१९६१
अ ४.	८७७१०	अकुप्य ३.	३१८७४	अक्षफल १.	३३३७९
अंश १.	४१४१५५	अकुप्यसहाय १.	५११५४	अक्षर ३.	३१६१६२
„ १.	५१२१६	अकूपार १.	४१२१२	„ १ व.	७५५३
अंशु १.	२१११५	„ १.	८१११५	अक्षरचुम्बु १.	३१९२३
„ १.	२१११६	अकृत १.	३१६१७	अक्षरजीवन १.	३१९२३
„ १.	२११२६	अक्ष १.	३१७१३१	अक्षरपातक १.	२११५२
„ १.	६११६	„ १.	३१८१५	अक्षवती २.	३१९५९
„ १.	८११२५	„ ३.	३१८१२५	अक्षि ३.	४११९४
अंशुक ३.	४३११६	„ १.	३१९१०	अक्षिगत १.२.३.	५११६९
„ ३.	७३११	„ ३.	५११४९	अक्षित ३.	५११३०
अंशुमत् १.	२१११५	„ १. ३.	६५१२	अक्षिसंस्कार १.	४३१५७
अंस १. ३.	४११७१	अक्षकील १.	३१७१३१	अक्षीव ३.	३१८१२०
अंसल १. २. ३.	५११६	अक्षज ३.	३१९७३	अक्षोड १.	३३१४६
अंससन्धि १.	४११६९	अक्षजीविन् १.	३१९५९	अक्षौहिणी २.	३१७५८
अंसान्त १.	४११७०	अक्षत १. २. ३.	७५११४	अखण्ड १. २. ३.	५११८६
अंहति २.	३१६११९	अक्षताडन ३.	३१९१३७	अखात ३.	४१२५
अंहन ३.	५१२१३	अक्षति २.	३१६१९०	अखिल १. २. ३.	५११८५
अंहस् ३.	३१६१६८	अक्षत्न ३.	४११८५	„ १. २. ३.	७१११
अकषाय १.	५१३३९	अक्षदर्शक १.	३१८१४	अग १.	३१२१
अकार्यसेवन ३.	३१६११७	अक्षधूर्त १.	३१९५८	„ १.	८११५८
अकिञ्चन १.२.३.	५११५९	अक्षधूर्तिल १.	३११५२	अगच्छ १.	३३१५

अगद १.	४४१४१	अग्न्याहित १.	३६१७३	अङ्कुट १.	४३१४८
अगदङ्कार १. २. ३.	४४१४३	अग्न्युत्पात १.	१२१३३	अङ्कुर १. ३.	३३११०
अगम १.	८११५८	अग्र १.	३६१९८	अङ्कुरा १. ३.	३७१८४
अगरी २.	३३१८६	„ १. २. ३.	५४१६३	अङ्कुर १. ३.	३३११०
अगरु १.	३८१०६	„ ३.	६३११	अङ्कुरोद १.	३३१४१
अगस्ति १.	३३१५६	„ १.	८११६०	अङ्कुरोल १.	३३१४१
„ १.	३६१५१	अग्रज १.	४४१३१	अङ्कुर १.	३११२९
अगस्त्य १.	३३१५६	„ १. २. ३.	५४१४	अङ्ग १ व.	३११३१
„ १.	३६१५१	अग्रजन्मन् १.	३६११	„ ३.	३६१२०८
अगाध १.	४११२	अग्रणी १. २. ३.	५४१६४	„ ३.	४४१५२
„ १. २. ३.	४२११९	अग्रतः (-स्) ४.	८८१११	„ ३.	४४१५५
अगार ३.	४३११७	अग्रतःसर १. २. ३.	३७१४५	„ १. २. ३.	६५१३
अगृहीतदिश १. २. ३.	३७१२९	अग्रदिधिषु १.	३६१४४	„ ४.	८८१२१
अग्रायी २.	१२११९	अग्रद्रवसंहतिर. ३.	८११४७	अङ्गचेष्टा २.	३११९८
अग्नि १.	१२११५	अग्रमांस ३.	४४११४	अङ्गज १.	४४१३९
„ १.	८६१२	अग्रयान ३.	३७१२०३	„ १.	५११३८
अग्निक १.	३३१२२१	अग्रसन्धानी २.	१२१३६	„ १. ३.	७५११०
अग्निकारिका २.	३६११४	अग्रस्थ १. २. ३.	५४१७७	अङ्गजा २.	४४१३९
अग्निकार्य ३.	३६११४	अग्राम्य १. २. ३.	५४१२०	अङ्गद ३.	४३११४३
अग्निगौच ३.	४३११९	अग्रिम १. २. ३.	५४१७७	अङ्गद्वीप ३.	३१११३
अग्निचित् १.	३६१७५	अग्रिय १. २. ३.	५४१४	„ ३.	३१११४
अग्निजा २.	३४१४३	„ १. २. ३.	५४१६३	„ ३.	३१११५
अग्निपूर्णिमा २.	२११७४	अग्रीय १. २. ३.	५४१६३	अङ्गना २.	२११९
अग्निबीज ३.	३२१२०	अग्नेदिधिषु १.	३६१४४	„ २.	४४१५
अग्निमन्य १.	३३१८६	अग्नेदिधिषू १.	३६१४४	अङ्गनाग्रिय १.	३३१२५
„ १.	३८१८४	„ २.	३६१४५	अङ्गमर्दिन् १.	३१११५
अग्निमुखी २.	३३१९५	अग्रेसर १. २. ३.	३७१४५	अङ्गलोढ्यक १.	४२१४६
अग्निविश्व २.	१२१३२	अग्रथ १. २. ३.	५४१७७	अङ्गविचेप १.	३११९७
अग्निशिव ३.	३८११७	अघ ३.	३६११६८	अङ्गसंस्कार १.	४३११२
अग्निष्टोम १.	३६१८७	„ ३.	६३१२	अङ्गहार १.	३११९७
अग्निष्ठ १. २. ३.	३६११०४	अघन १. २. ३.	५४१२५	अङ्गार १. ३.	१२१३२
अग्निसख १.	१२१४९	अघायु १. २. ३.	३६१११	„ १.	२११३१
अग्निसङ्ग्रह १.	३६१६८	अङ्क १.	२११२९	„ १.	५३१८
अग्निसञ्ज्ञक १.	३८१८२	„ १.	३१११००	अङ्गारधानी २.	४३१५५
अग्निहोत्र ३.	३६१७०	„ १.	४४१६०	अङ्गारशकटी २.	४३१५५
अग्निहोत्रहवणी २.	३६११००	„ १.	६११६	अङ्गारशकट १. २. ३.	३६११३२
अग्निहोत्री २.	३६१९५	अङ्कण १.	४३१३६	अङ्गिन् १.	४४११
अग्नीन्धन ३.	३६११४	अङ्कति १.	१२१४८	अङ्गीकार १.	५२१३७
अग्न्याधान ३.	३६१६९	अङ्कपालि २.	८२१२	अङ्गु १.	२३११
		अङ्कपाली २.	४३११७०	अङ्गुल १. ३.	३११५२
		अङ्कलि २.	४३११५४		

अङ्गुल १.	३३३२७	अजिर ३.	४११३६	अणु ३.	३८११९
„ १.	३६११५९	„ १. २. ३.	५११२५	„ १. २. ३.	५११३६
„ १.	४११७९	„ १. २. ३.	७५११४	अणुराजि २.	३७११६३
अङ्गुलाल १.	३८१११२	अजीगव ३.	१११५०	अण्ड ३.	२३१५०
अङ्गुलि २.	४११७४	अङ्गुका २.	३९११०४	„ १.	३७११६२
अङ्गुलित्र ३.	३७११५६	अङ्ग १. २. ३.	५११२१	„ १. ३.	४११६३
अङ्गुलिमुद्रा २.	४३११४५	अङ्गति १.	१२११८	„ ३.	६३१२
अङ्गुलीयक ३.	४३११४४	अङ्गन ३.	३६१३९	अण्डज १.	४११४२
अङ्गुष्ठ १.	४११७४	अङ्गल १.	४३१३१	„ १. २. ३.	४११२
अङ्गुष्ठकान्तर १.	४११५७	अङ्गित १. २. ३.	५१११३	„ १.	७५१११
अङ्गुष्ठि १.	४११५६	अङ्गन १.	२११८	अण्डजा २.	७५१११
अङ्गुष्ठिनामन् १.	३३११२	„ १.	३६११०७	अण्डप्रहरण १.	४११४७
अङ्गुष्ठिप १.	३३११४	„ ३.	४३११५७	अण्डमूलक ३.	४११६०
अचल १.	३२११	अङ्गनकेशी २.	३८११०१	अण्डवर्धन ३.	४११३१
अचला २.	३१११४	अङ्गनवह्निका २.	३३११३५	अण्डिक १.	४११३४
अचिरव्यूहा २.	४११७	अङ्गनावती २.	२१११९	अण्डिका २.	५११४८
अच्छभङ्ग १.	३११७	अङ्गनिका २.	४११२९	अण्डीर १.	७५११५
अच्युत १.	१११११	अङ्गलि १.	४११७८	अण्डुक १.	२३१३४
अज १.	३३१६२	„ १.	५११५३	„ १.	४११४७
„ १. २. ३.	६१५४	„ १.	५११६३	„ १.	४११६३
अजगर १.	४१११७	„ १.	८११२७	अतः (—स्) ४.	८७११६
„ १.	४१११९	अङ्गलिकारिकार २.	३३११४८	अतलरूपार्थ १. २. ३.	४१११९
अजगव ३.	१११५०	„ २.	३९११३	अतसी २.	३८१४५
अजगाव ३.	१११५०	अङ्गसा ४.	८७१३१	अति ४.	८७१५५
अजन्य ३.	३६११९०	अङ्गि १.	३३१८२	„ ४.	८८१४
अजप १. २. ३.	३६१११	अटनी २.	३७११७७	अतिकृच्छक ३.	३६१३९
अजमोदा २.	३८११०२	अटवी २.	३१११	अतिक्रम १.	३६१११४
„ २.	८२११	„ २.	८६१११	„ १.	५२११६
अजय्य ३.	३६११८६	अटाव्या २.	५२१११	अतिचरा २.	३८१८९
अजवीथी २.	२११४६	अट्ट १.	४३१३३	अतिचाटुवाच् २.	२११२५
अजशृङ्गी २.	३३११४१	„ १.	६११५	अतिच्छत्र १.	३३१२३४
अजस्र १. २. ३.	५११३०	अट्टहास १.	३९१८४	अतिजव १. २. ३.	३७११५०
अजहा २.	३३११२९	अट्टालिका २.	४३१३३	अतिथि १.	३६१६८
अजा २.	३३१६३	अट्टन ३.	३७१२००	अतिव्यर्थ १. २. ३.	३६१६७
आजाजी २.	३८१८३	अणक १. २. ३.	५११७५	अतिपथिन् १.	३११४९
आजाजीव १.	३९१२९	अणव्य १. २. ३.	३८१२०	अतिपात १.	३६१११४
अजित १.	११११२	अणि १.	२११७९	अतिबला २.	३३११२८
अजितनेमि १.	३६११९	„ १. २.	३७१३३	अतिमर्याद १. २. ३.	५११३१
अजिन ३.	३६१२१	„ १. २.	४३१५२	अतिमात्र १. २. ३.	५११३१
अजिनपत्रा २.	२३१४४	„ १. २.	६१५५	अतिमानक १. २. ३.	५११३१
अजिनयोनि १.	३३१२५	अणिकूर्च १.	२११८०	अतिमुक्त १.	३३१३८८

अतिमुक्तक १. ३।३।४६
 अतिमृगा २. ३।३।१७२
 अतियव १. ३।८।५२
 अतिरिक्त १. २. ३. ५।४।१३७
 अतिविषा २. ३।८।९०
 अतिवेल १. २. ३. ५।४।१३१
 अतिशय १. ५।२।३
 अतिशयित १. २. ३. ५।४।१३७
 अतिसन्धान ३. ५।२।३५
 अतिसर्जन ३. ५।२।१९
 अतिसारकिन् १. २. ३. ४।४।१४६
 अतिस्थिर १. २. ३. ५।४।७९
 अतिहस्तक १. ३।७।७०
 अतिहास १. ३।९।८५
 अतिहिंसन ३. ३।७।२८
 अतीन्द्रिय १. २. ३. ५।४।१३३
 अतीव ४. ८।८।४
 अतीसार १. ४।४।१२९
 अत्यन्त १. २. ३. ५।४।१३१
 अत्यन्तीन १. २. ३. ३।७।१४९
 अत्यन्ता २. ३।३।३४
 अत्यय १. ७।१।१
 अत्यर्थ १. २. ३. ५।४।१३१
 अत्यर्थस्वादु ३. ३।८।१३६
 अत्याकार १. ३।६।१७१
 अत्याधान ३. ५।२।१६
 अत्याहित ३. ८।३।१
 अत्यूह १. ३।७।८०
 अत्रिनेत्रज १. २।१।२५
 अथ ४. ८।७।१४
 अथर्वाणि ३. ८।१।१३
 अथो ४. ८।७।१४
 अदन ३. ४।३।१०२
 अदन्न १. २. ३. ५।४।८५
 अदय १. २. ३. ५।४।२४
 अदस् १. २. ३. ६।४।१
 अदात् १. २. ३. ५।४।५९
 अदिति २. ३।६।९१
 " २. ७।२।१
 अदितिनन्दन १. १।१।३

अदष्ट ३. ३।७।१४
 अदष्टि २. ३।९।९०
 अद्धा ४. ८।७।१२
 अद्भुत १. १।२।२७
 " १. ३।७।७५
 " १. ३।७।७७
 " १. २. ३. ३।७।७८
 अद्भर १. २. ३. ५।४।५०
 अद्य ४. ८।८।७
 अद्यश्चीन २. ४।४।१७
 अद्रि १. २।१।११
 " १. ३।२।२
 " १. ६।१।४
 अद्रिज ३. ३।२।१६
 अद्रिजा २. १।१।५८
 अद्रिष्टत् १. १।१।२५
 अद्रुत १. २. ३. ५।४।५२
 अद्वयवादिन् १. १।१।३४
 अधः (-स्) ४. ८।८।१९
 अधःपुष्पी २. ३।३।१५७
 अधम १. २. ३. ५।४।७५
 " १. २. ३. ७।४।१
 अधमर्ण १. २. ३. ३।८।९
 अधर १. ४।४।८७
 " १. २. ३. ५।४।४७
 " १. २. ३. ७।५।१६
 अधरा २. २।१।६
 अधरेद्युः (-स्) ४. ८।८।८
 अधरोष्ठ १. ४।४।८७
 अधर्म १. ३।६।१६८
 अधस्तात् ४. ८।८।१९
 अधि ४. ८।७।१३
 अधिक १. २. ३. ५।४।८५
 " १. २. ३. ५।४।१३१
 " १. २. ३. ५।४।१३७
 अधिकधिक १. २. ३. ५।४।५६
 अधिका २. ५।१।४०
 अधिकाङ्ग ३. ३।७।१५६
 अधिकार १. २।४।४१
 अधिकृत १. २. ३. ३।७।१९
 अधिष्ठित १. २. ३. ८।४।२

अधिष्ठेप १. २।४।३२
 अधित्यका २. ३।३।९
 अधिप १. २. ३. ५।४।५८
 अधिपति १. २. ३. ५।४।५८
 " १. २. ३. ८।५।२
 अधिभू १. २. ३. ५।४।५८
 अधिरोहिणी २. ४।३।५१
 अधिवास १. ८।१।६
 अधिवासन २. ३. ४।३।१५६
 अधिविज्ञा २. ४।४।१३
 अधिश्रयणी २. ४।३।५४
 अधिष्ठात्त्व ३. १।१।४८
 अधीतवेदक १. ३।६।८
 अधीर १. २. ३. ५।४।१८
 अधीश १. २. ३. ५।४।५८
 अधीश्वर १. ३।७।२
 अधुना ४. ८।८।५
 अधोऽशुक ३. ४।३।१२१
 अधोऽञ्ज १. १।१।१३
 अधोनापित १. ३।५।४१
 अधोभुवन ३. ४।१।१
 अधोमुख १. २. ३. ५।४।९०
 अध्यक्ष १. २. ३. ३।७।१९
 " १. २. ३. ५।४।१३३
 " १. २. ३. ७।४।१
 अध्यण्डा २. ३।३।१२९
 " २. ३।३।१७७
 अध्ययन ३. ३।६।६३
 अध्यवसाय १. ३।६।१६७
 अध्यस्त १. २. ३. ५।४।१०४
 अध्यापन ३. ३।६।६३
 अध्याय १. ३।३।३२
 अध्युष १. ५।१।५३
 अध्यूढा २. ४।४।१३
 अध्येषणा २. ३।६।१२०
 अध्वन् १. ३।१।४९
 अध्वर १. ३।६।८२
 अध्वर्यु १. ३।६।७९
 अनंशुमत्फला २. ३।३।१७३
 अनक्षर १. २. ३. २।४।१६
 अनमिक १. ३।६।७३

अनङ्ग १.	१११२७	अनिल १.	१२१४७	अनूप १. २. ३.	३११४५
अनङ्गुह १.	३११५२	„ १.	३१७१६१	अनूराध १ व.	२११४४
अनङ्गुही २.	३११४२	अनिलाशन १.	४११६	अनूसारथि १.	२११११
अनङ्गवाही २.	३११४२	अनिश ३.	५११३०	अनूङ्ग १.	४१३४
अनन्त १.	४११३	अनिष्ट १. २. ३.	५११६९	अनृज १.	१३३४
„ १. २. ३.	७५१४	अनी २.	४३३४७	„ १. २. ३.	५११२२
अनन्तशायिन् १. ११११३		अनीक १. ३.	७५११५	अनृत १. २. ३.	२१११७
अनन्ता २.	२११५	अनीकवत् १.	१२१२५	„ ३.	३८३३
„ २.	३३१२५	अनीकस्थ १.	८१११४	„ ३.	७५११६
„ २.	७५१४	अनीकिनी २.	३७१५५	अनेक १. २. ३.	८११५८
अनन्यज १.	१११२८	„ २.	३७१५८	„ १. २. ३ ए.	८११५८
अनन्यवृत्ति १. २. ३.		अनु ४.	८७१६	अनेकप १.	३७१६०
„ ५११२८		अनुक १. २. ३.	५११३४	अनेह १. २. ३.	५११२१
अनपरार्थ्य १. २. ३.	५११६३	अनुकण्ठी २.	४३११४१	अनेहमूक १. २. ३.	५११३३
अनम्बु १.	२३३३२	अनुकम्पा २.	३१११९२	„ १. २. ३.	५११३४
अनर्गल १. २. ३.	५११३२	अनुकर्ष १.	३७१३३	अनेहस् १.	२११५२
अनर्थक १. २. ३.	२१११८	अनुकर्षण ३.	३११५३	अनोकह १.	३३१५
अनल १.	१२११५	अनुकल्पक १.	३१११३	अन्त १.	३११७६
„ १.	३८८८१	अनुकामीन १.	३७१५०	„ १. २. ३.	५११२९
अनलज्वाला २.	३३१९७	अनुकार १.	५१११७	„ १.	५१३१
अनलोपल १.	३२३३७	अनुकूल १. २. ३.	५११२७	„ १. ३.	६५११
अनवधानता २.	३१११७८	अनुक्रम १.	३१११३	अन्तःकरण ३.	२११७३
अनवरत १. २. ३.	५११३०	अनुक्रोश १.	३१११९२	अन्तःपुर ३.	४३३३६
अनवस्कर १. २. ३.	५११६६	अनुग १.	३७११६	अन्तक १.	१२३३४
अनस् ३.	३७१२५	अनुचर १.	३७११६	अन्तर ३.	२११७
अनादर १.	३१११७१	अनुज १.	४१३३१	„ ३.	२११९३
अनादृत १. २. ३.	५११९५	„ १. २. ३.	५११४	„ १. २. ३.	३८११०
अनामय ३.	४११४२	अनुजीविन् १.	३७११७	„ १.	७५११
अनामिका २.	४११७४	अनुताप १.	३१११८५	अन्तरगाहन ३.	५१११४
अनारत १. २. ३.	५११३०	अनुत्तर १. २. ३.	४११२५	अन्तरद्वीप १.	३१११२
अनालम्बी २.	३११११८	अनुदात्त १. २. ३.	३११३७	अन्तरा ४.	८८११८
अनावृष्टि २.	२१२८	अनुद्वीप १.	३१११३	अन्तराय १.	५१२४
अनाशक ३.	३१११४४	अनुनय १.	५१२३८	अन्तराल ३.	२११७
अनाशकिन् १.	३१११६०	अनुनासिक १. २. ३.	३११३७	अन्तरिक्ष ३.	२१११
अनि १. २.	३७१३३१	अनुपद ४.	५११२८	अन्तरिक्षासन ३.	३११२९
अनिष्ट १.	३३३२२६	अनुपदिन् १. २. ३.	७३३२७	अन्तरीप ३.	४३३३६
अनिमिष १.	८१११३	अनुपदीना २.	४३३१६२	अन्तरीय ३.	४३३१२१
अनिमेष १.	८१११३	अनुपमा २.	२१११९	अन्तरेण ४.	८८१४
अनिरुद्ध १.	१११२९	अनुपात्यय १.	३११११४	„ ४.	८८११८
अनिर्वद्ध १. २. ३.	२१११७	अनुधान १.	३११८२	अन्तर्गद्ग ३.	५१२६
अनिर्वाप १.	२११३३	अनुचीन १. २. ३.	५११२७	अन्तर्धि १.	२११६३

अन्तर्मनस् १. २. ३. पा१४३४	अन्ध १. ३५५९३	अपकृष्ट १. २. ३. पा१४७५
अन्तर्यामि १. ३६१९२	” १. ३५५९१७	अपक्रम १. ३७२१०
अन्तर्वाशिक १. ३७२२२	अज्ञ ३. ४३१७५	अपगम १. ५२२७
अन्तर्वर्त्ती २. ४४११६	” १. २. ३. पा१५०७	अपगतभक्त १. २. ३. पा१५१७
अन्तर्वाणि १. २. ३. पा१५३१	” ३. ८६८	अपघन १. ४४५५
अन्तश्चय्या २. ८२२२२	अज्ञमंजिका २. ३३१५२७	अपचायित १. २. ३. ५४१०५
अन्तस्था २. ३६१३६	अज्ञाद १. १२२२७	अपचित १. २. ३. पा१५०५
अन्तावसायिन् १. ३५५४९	अन्य १. २. ३. ६४१२	अपचिति २. ३७४४४
” १. ३५५८७	अन्यतरेद्युः (-स्) ४. ८८८	” २. ८२११
” १. ३५५१०७	अन्यथा ४. ८८२०	अपद्ययज्ञ १. ३६१७७
” १. ३५५१०७	अन्यथाकृति २. ५२२२४	अपटी २. ४३१२४
” १. ३५२२६	अन्यथाभाव १. ५२२२४	अपटीका २. ३९८६
अन्तिका २. ४३५४	अन्यदा ४. ८८१७	अपटु १. २. ३. ४४११४४
अन्तिकाश्रय १. ४३१२२	अन्यनिहति २. २४४४०	अपतर्पण ३. ४४१३९
अन्तिकेशय १. ४३१६८	अन्यपीडन ३. ५२२२३	अपत्य ३. ४४४११
अन्तिम १. २. ३. पा१४७७	अन्यपुष् १. २३११६	अपत्रपा २. ३६१९४
” १. २. ३. पा१५१४०	अन्यमृत १. २३२२६	अपत्रपिण्ड १. २. ३. पा१४४०
अन्तेवासिन् १. ८१११३	अन्यलोहक ३. ३२२२८	अपथ ३. ३१५५०
अन्त्य १. २. ३. पा१४७७	अन्यवाप १. २३११६	अपथिन् १. ३१५५०
” १. २. ३. ६४११	अन्यशाखास्थ १. २. ३. ३६११३	अपदंश १. ३९१५२
अन्त्यजाति १. ३५५२	अन्यानुरक्ता २. ३६१४८	अपदंशक १. ४३१८६
” २. ३५५१२१	अन्येद्युः (-स्) ४. ८१७४	अपदरोहिणी २. ३३१८४
अन्त्यजालय १. ३९१३२	अन्योन्य १. २. ३. पा१५१२३	अपदान ३. ३७२०९
अन्त्यवर्ण १. ३९११	अन्व १. २. ३. पा१५१२८	” ३. ८३११
अन्दुक १. ३७८३	अन्वच् १. २. ३. पा१५१२८	अपदालक १. ४११४२
अन्दू २. ६२११	अन्वय १. ४४१४९	अपदिश ४. २११३
अन्ध १. २. ३. पा१५१३	अन्ववाय १. ४४१४९	अपदेश १. ८११७
” १. ६५५६	अन्वाहार्य ३. ८३१२	अपध्वंसज १. ३५५१२०
अन्धक १. ३६२०१	अन्वाहार्यवचन १. १२२२३	अपध्वस्त १. २. ३. पा१४७१
(इन्धक)	अन्विष्ट १. २. ३. पा१५९८	अपभरणी २. २११४१
अन्धकसूदन १. १११४३	अन्वेपणा २. ३६१२२१	अपभ्रंश १. ८११७
अन्धकार १. ३. २११६२	अन्वेपित १. २. ३. पा१५९८	अपरगन्धिक १. ३११८
अन्धकी २. २११४	अन्वेष्ट १. २. ३. पा१५२७	अपरति २. ५२२३६
अन्धतमस ३. २११६२	अप् २ व. ४२२३	अपररात्रक १. २११६६
अन्धता २. ८११६	” २. ८७१३३	अपराजित १. ८११५०
अन्धमेहल १. ५३१५६	अप ४. ८७२५	अपराजिता २. २११५
अन्धस् ३. ४३१७५	अपकार १. ५२२२२	” २. ३३१३३३
अन्धु १. ४२२७	” १. ५२२२३	” ३. ३६१२०८
अन्ध १ व. २३१३२	अपकृष्ट १. २. ३. पा१४७१	अपराद्धशर १. २. ३. ३७२१८
” १. ३५५३५		अपराध १. ३७४७७
” १. ३५५९२		अपरान्त १ व. ३११३५

अपराह १.	२।१।६५	अपान्नपात् १.	१।२।२३	अब्द १.	२।२।१
अपरुजा २.	१।१।५९	अपामार्ग १.	३।३।११५	अब्ध १.	४।२।७
अपरेद्युः (-स्) ४.	८।८।८	अपाप्पति १.	४।२।१०	अब्धा २.	४।२।२३
अपर्णा २.	१।१।५९	अपाप्पित्त ३.	१।२।१९	अब्धि १.	४।२।१२
अपलाप १.	२।४।३०	अपाय १.	३।७।२।०	” १.	८।६।१३
अपलासिका २.	३।६।१८१	” १.	५।२।२७	अब्धिजा २.	१।१।३६
अपवृक्ष १.	३।७।७७	अपार १.	४।२।१०	अब्धिमण्डूकी २.	४।१।५६
अपवन ३.	३।३।२	अपार्थक १.२.३.	५।४।१२९	अब्धिवस्त्रा २.	३।१।३
अपवरक १.	४।३।५१	अपावृत १. २. ३.	५।४।२७	अब्रह्मण्य ३.	३।९।१०९
अपवर्ग १.	८।१।६	अपाश्रय १.	४।२।१६४	अभय ३.	३।३।२३२
अववर्जन २.	३।६।११९	अपि ४.	८।७।१४	अभया २.	३।३।१७८
अपवाद १.	२।४।३३	अपिधान ३.	२।१।६४	अभवनि २.	८।९।८
” १.	३।७।४७	अपुञ्ज १.	१।२।२१	अभि ४.	८।७।१६
” १.	८।१।१४	अपुनभञ्च १.	३।६।२३८	अभिक १. २. ३.	५।४।३५
अपवारण ३.	२।१।६३	अपूप १.	४।३।७२	अभिक्रम १.	३।७।२०२
अपव्यय १.	२।४।३०	अपेक्षा २.	५।२।२९	” १.	५।२।१५
अपदाब्द १.	३।५।१२०	अपोनपात् १.	१।२।२३	” १.	५।२।१६
” १. २. ३.	५।४।२२	अपौर १.	३।८।३३	अभिख्या २.	५।४।१२२
अपशाला २.	४।३।३८	अप्पति १.	१।२।४५	” २.	७।२।२
अपष्ठ ३.	५।२।८	” १.	४।२।११	अभिख्यान ३.	२।४।३२
अपट्ट ३.	५।२।८	अप्यिक्त ३.	१।२।१९	अभिग्रह १.	५।२।१८
अपसर १.	५।२।३२	अप्युष्प ३.	४।२।३७	” १.	८।१।११
अपसर्प १.	३।७।२९	अपफल ३.	३।३।२२०	अभिचार १.	३।६।११७
अपसव्य १.	१।२।२८	अप्य ३.	३।८।८०	अभिज १. २. ३.	५।४।६१
अपस्कर १.	३।७।१३५	अप्रकाण्ड १.	३।३।७	अभिजन १.२.३.	५।४।१९
अपस्त्रान ३.	३।६।६४	अप्रच्छन्न ३.	३।६।१३६	” १.	८।१।११
अपहस्ति १.२.३.	५।४।९५	अग्रहत १. २. ३.	३।८।१८	अभिजात १. २. ३.	८।४।१
अपहार १.	५।२।१९	अग्रहृष्टक १.	२।३।१६	अभिज्ञ १. २. ३.	५।४।१९
” १.	८।१।३	अप्सरस् २.	१।३।१	अभिज्ञान ३.	२।१।२९
अपहास १.	३।९।८५	अप्सरसाम्पति १.	१।२।६	अमितः (-स्) ४.	८।७।३१
अपहित १.२.३.	५।४।१०४	अफला २.	३।३।९९	अमिताहन ३.	५।२।१९
अपह्व १.	२।४।३०	अबद्ध १. २. ३.	२।४।१८	अमिताप १.	४।४।१३५
” १.	८।१।१४	अबद्धमुख १.२.३.	५।४।४६	अमिधा २.	२।४।३१
अपाङ्गर्भ १.	८।१।१५	अबल १.	४।४।३२	अभिधान ३.	२।४।३१
अपाच् ४.	५।४।९१	अबला २.	४।४।५	अभिध्या २.	३।६।१७९
अपाचीन १.२.३.	५।४।५१	अबाल ३.	३।३।२२०	अभिनय १.	३।९।९८
अपाटव ३.	४।४।१३८	अब्ज ३.	४।२।३७	” १.	३।९।९८
अपादान ३.	५।२।१९	” १.	६।५।३	अभिनव १. २. ३.	५।४।८८
अपान ३.	४।४।६०	अब्जल १.	३।७।९६	अभिनिवेश १.२.३.	५।२।१४
” १.	७।५।१२	अब्जारि १.	२।१।२६	अभिनिष्ठान १.	३।६।३७
अपानिक १.	३।३।९२	अब्द १.	२।१।९०	” १.	८।१।५०

[अभिनित]

अभिनीत १. २. ३. ८१११
 अभिपक्ष १. २. ३. ८११२
 अभिप्राय १. ३१६१७४
 अभिमूत १. २. ३. ५११६७
 अभिमन्त्रण ३. ३१६१९३
 अभिमर १. ८१११२
 अभिमर्द १. ३१७२०५
 अभिमान १. ३१६१९९
 „ १. ८१११९
 अभियाति १. ३१७१४२
 अभियुक्तक १. २. ३. ३१८११०
 अभियोक्तृ १. २. ३. ३१८११०
 अभिरूप १. २. ३. ८१११५
 अभिलाष १. ३१६१८०
 अभिलाषुक १. २. ३. ५११३५
 अभिवादक १. २. ३. ५११४३
 अभिवादन ३. ३१६३९
 अभिवान्या २. ३११५१
 अभिशंसन ३. २११३२
 अभिशस्त १. २. ३. ३१८१११
 अभिशस्ति २. ८१२१२
 अभिशाप १. २११३२
 अभिषङ्ग १. ८१११०
 अभिषव १. ३१७५१
 „ १. ८११११
 अभिषिक्त १. ३१५५
 अभिषिक्तक १. ३१५६६
 अभिषुत ३. ४३३८२
 अभिषेक १. ४३३११३
 अभिषेणन ३. ३१७२०१
 अभिसन्धान ३. ३१७१९४
 अभिसम्पात १. ३१७२०५
 अभिसार १. ३१७१६
 अभिसारिका २. ३१६४६
 „ २. ४११२
 अभिहार १. ५१२१८
 „ १. ८१११०
 अभीक १. २. ३. ५११३५
 „ १. २. ३. ७१११
 अभीषण ३. ७३१२
 अभ्यग्र १. २. ३. ५११८९

वजयन्तीकोषः

अभ्यग्र १. २. ३. ५१११४०
 अभ्यङ्ग १. ४३३११२
 अभ्यन्तर ३. २११७
 अभ्यमित १. २. ३. ४१११४४
 अभ्यमित्र १. २. ३. ३१७१४६
 अभ्यमित्रीण १. २. ३. ३१७१४६
 अभ्यमित्रीय १. २. ३. ३१७१४६
 अभ्यर्ण १. २. ३. ५१११४०
 अभ्यवकर्षण ३. ५१२१७
 अभ्यवस्कन्द १. ३१८११६
 अभ्यवस्कन्दन ३. ३१७२०७
 अभ्यवहार १. ४३३१०२
 अभ्यवहृत १. २. ३. ५१११०८
 अभ्यागम १. ३१७२०५
 अभ्यागारिक १. २. ३. ५११५२
 अभ्यादान ३. ५१२१५
 अभ्याधान ३. ८३३२
 अभ्यान्त १. २. ३. ४१११४४
 अभ्यारूढ १. २. ३. ८११५
 अभ्याश १. २. ३. ५१११४०
 अभ्यास १. ३१७१९५
 अभ्यासादन ३. ३१७२०७
 अभ्युत्थान ३. ५१२२०
 अभ्युपगम १. ५१२३७
 अभ्युपाय १. ५१२३७
 अभ्योष १. ७५५११
 अन्न ३. ६३३१
 अन्नक ३. ३२११५
 अन्ननाग १. १२१२
 अन्नपिशाच १. २११३७
 अन्नपुष्प १. ३३३३१
 अन्नफुल्लक १. ३१९६३
 अन्नमव १. २. ३. ५१११६
 अन्नमु २. २११९
 अन्नमुप्रिय १. १२१२२
 अन्नावकाशिक १. २. ३. ३१६१३०
 अन्नि १. ३१६१०२
 „ २. ३१८२९

[अमृतांशु]

अम्रिय १. २. ३. ५११११६
 अमृत १. ३. ३१६२०२
 अमति २. ७२२२
 अमन्न ३. ४३३६२
 अमन १. ३३३४९
 अमनि २. ७२२१
 अमर १. ७५१३
 अमरा २. ३३३१२७
 „ २. ४३३१९
 „ २. ७५१३
 अमरावती २. १२११०
 अमरावली २. १२१४३
 अमर्त्य १. १५१५
 अमर्त्यभवन ३. १११२
 अमर्ष १. ३१६१८३
 अमर्षिन् १. २. ३. ५११३२
 अमलपालिक १. १२१५३
 अमा ४. ८१७१२
 अमात्य १. ३१७३
 „ १. ३१७१९
 अमात्यक १. ३१७२०
 अमामस्या २. २११७१
 अमामसी २. २११७१
 अमावसी २. २११७०
 अमावस्या २. २११७१
 अमावासी २. २११७०
 अमावास्या २. २११७१
 अमित्र ३. ३१७४०
 अमुक्त ३. ३१७१९६
 अमुत्र ४. ८१८१५
 अमृणाल ३. ३३३२३१
 अमृत ३. ३१८२
 „ ३. ३१८१४६
 „ १. २. ३. ५११८८
 (अवमृत)
 „ ३. ७५१७
 अमृतत्व ३. ३३३२३८
 अमृतफल १. ३३३१६६
 अमृतवह्निका २. ३३३१३२
 अमृता २ ब. २१११८
 अमृतांशु १. २११२६

अमृताशन

शब्दानुक्रमिका

[अरुन्ध

अमृताशन १.	१११४	अम्बुवास १.	२११४५	अरणि १.	२४१२२
अमृतोज्ज्व १.	३१३२०४	अम्बुवेतस १.	३१३३०	,, १.	३१३८६
अमोघ १.	४११५२	अम्बुसूकर १.	४११५३	,, २.	३१३५०
अमोघा २.	३१३९०	अम्बुकृत १.२.३.	२४११८	,, १. २.	३१३१०८
,, २.	३१८९७	अम्भस् ३.	४२११	अरण्य ३.	३१३११
अम्बक ३.	४१४९४	अम्भरा २.	४१३४४	अरण्यजतिल १.	३१८३९
अम्बर ३.	२११२	अम्ल १.	५१३२६	अरण्यमक्षिका २.	२१३४५
,, ३.	४३११६	अम्लजुण्डी २.	३१८१४१	अरण्यानी २.	३१३१२
अम्बरीष १. ३.	४३१५६	(अम्लदुण्डी)		अरति १.	८१९१०
,, १.	८५१३	अम्लतिक्तकपाय १.		अरलि १.	३११५५
अम्बला २.	४३११०७		५१३३५	,, १.	७१११
अम्बलोर्ण ३.	४३११०७	अम्लदुण्डी २.	३१८१४१	अरर ३.	४३१४६
अम्बष्ठ १.	३१५४	अम्ललोणी २.	३१३१६३	,, १.	७५११०
,, १.	३१५६५	अम्लवेतस १.	३१८१३३	अरविन्द ३.	४२११७
,, १.	३१५६६	अम्लान १.	३१३१८८	अराति १.	३१७४०
,, १.	३१५७०	अम्लिका २.	३१३८१	अराल १.	३१८१११
अम्बछा २.	३१३१३१	अम्लोट १.	३१३९४	,, १. २. ३.	५१४१२४
,, २.	३१३१६३	अय १.	३१६१८९	अरि १.	३१७४०
,, २.	३१८७७	,, १.	३१९६१	अरिचिन्तन ३.	३१८१४
अम्बा २.	३१९१०६	अयन ३.	७३११	अरिज ३.	३२१३२
,, २.	४१४२६	अयन्त्रित १.२.३.	५१४१३२	अरिन्न ३.	४२११६
,, २.	४१४२७	अयश्शलाका २.	३१७१८४	अरिन् ३.	३१७१३४
अम्बिका २.	४१४२७	अयस ३.	३१२३	अरिम १.	३१३६४
,, २.	७२१२	,, ३.	८१६१६	अरिमर्दन १.	१२११२
अम्बु ३.	४२१२	,, ३.	८१६१७	अरिमेदक १.	३१३६४
,, ३.	८१९१५	अयस्कान्त १.	३२१२८	अरिमेदक १.	३१३६४
अम्बुक १.	३१३६५	अयस्कार १.	३१९१६	अरिभेणी २.	२११७७
,, १.	३१३१९४	अयाचित ३.	३१८२	अरिष्ट १.	२३११७
अम्बुकपि १.	४११५४	अयि ४.	८१७१२	,, १.	३१३३२
अम्बुकफ १.	४२१३३	अयुगच्छद १.	३१३४६	,, १.	३१३२०४
अम्बुकान्तार १.	१२१४५	अयुग्म १. २. ३.	५१३२३	,, ३.	३१३१९०
अम्बुकुकुट १.	२३११२	अयुत ३.	५१३२८	,, ३.	४३१२०
अम्बुज १.	२३१३२	अयोध्या २.	४३१५	,, १. २. ३.	७५१९
,, १.	३१३६७	अयोनि १.	४३१६५	अरिष्टाति १.२.३.	५१४१५५
,, ३.	४२१३९	अयोमणि १.	३२१३७	अरिष्टेनेमि १.	११११२
,, ३.	५१३२८	अयोमल ३.	३२१३६	अरुण १.	५३११७
,, १.	८१६१३	अयोमुख ३.	३११२०	,, १. २. ३.	७५१६
अम्बुजा २.	१११३६	अयोर्जाला २.	४३१४८	अरुणा २.	३१८९०
अम्बुसूत १.	२२१२	अर १.	३१७१३५	,, २.	७११६
अम्बुवर्धन ३.	४२१३३	,, १. २. ३.	५१४१२४	अरुणोपल १.	३२१२०
अम्बुवह्नी २.	३१३१६४	अरघट्टक १.	४२१२१	अरुन्ध १. २. ३.	५१४११२

अरुल ३.	७३१२	अर्थ १.	३८१७३	अर्जुन १.	४४१३३
अरुणकर १.	३१३१५	” १.	६११३	” ३.	५११२८
अरुसु ३.	३१७२१७	अर्थना २.	३६१२०	अर्भक १. २. ३.	५४१२
अकं १.	२१११०	अर्थवाद १.	२४१३७	अर्मण ३.	४११५६
” १.	३२११७	” १.	३६१३३	अर्य १.	३८११
” १.	५४१४	अर्थशास्त्र ३.	३६१३०	” १.	६११५
” १.	८६१२	अर्थसञ्चय १.	३७१४४	अर्यमन् १.	२१११०
अकवन्धु १.	१११३५	अर्थिन् १. २. ३.	५४१६०	अर्या २.	४४१२२
अकस्मिजा २.	४२१२५	अर्थ्य १.	२३१३६	अर्याणी २.	४४१२२
अकैष्ट ३.	३८११३३	” ३.	३२११६	अर्या २.	४४१२२
अगल ३.	३१७५१	” १. २. ३.	६४११	अर्वन १. २. ३.	६५१६
” १. २. ३.	४३१४७	अर्दना २.	३६१७०	अर्वती २.	३१७१०७
” ३.	४३१५०	अर्दनि १.	८१११०	अर्वन् १. २. ३.	५४१७५
” १. २. ३.	४३१५०	अर्दित १. २. ३.	५४११०२	” १. २. ३.	६५१६
” १. २. ३.	८११३८	” १. २. ३.	५४११२	अर्वाक् ४.	८८११८
अर्ग्वध १.	३३३४८	अधे १.	४४१५६	अर्वाच् ४.	५४१९१
अर्घ १.	३८१७०	अर्धचन्द्र १.	३७१९८२	अर्वाचीन १. २. ३.	५४१९१
” १.	६११५	अर्धगुच्छ १.	४३१५४०	अर्वास् ३.	४४१३३१
अर्घ्य १. २. ३.	६४११	अर्धजाह्नवी २.	४२१२८	” ३.	६३१२
अर्घ्या २.	३४१४१	अर्धतूर १.	३९१३२९	अर्वास् १. २. ३.	४४१४४५
अर्चना २.	३६१३९	अर्धनाकुल ३.	३६१२१८	अर्वाज्ञ १.	३३१२०८
अर्चा २.	३६१३९	अर्धनाराच १.	३७१९८१	” ३.	३८११४९
” २.	६२११	अर्धपद १.	३११५१	अर्वाज्ञी २.	३३१२०३
अर्चिष्मत् १.	१२११६	अर्धपद्मासन ३.	३६१२११	अर्हक १. २. ३.	५४१३३६
अर्चिस् ३.	१२१२९	अर्धमुकुट १.	१११३७	अर्हणा २.	३६१३९
” २. ३.	६५१६	अर्धमाणव १.	४३१३२९	अर्हत १. २. ३.	१११३५
” २. ३.	७५१३२	अर्धमानव १.	३९१६५	” १.	६५१६
अर्जक १.	३३११९९	अर्धमानुष १.	३९१६५	अलक १.	४४१९८
अर्जुन १.	३६१३९	अर्धमायूरी २.	३९१३३१	अलकाम्बलिक १.	४३१९६
” ३.	३३१२३५	अर्धमास १.	२११७९	अलक्त १.	४३११५३
” १.	५३११०	अर्धमासतम १. २. ३.	५१११९	अलक्ष्मी २.	१११४२
” १. २. ३.	७५१५	अर्धमुष्टिक १.	४४१८०	अलगर्ध १. ३.	४१११९
अर्जुनी २.	४२१२६	अर्धरात्र १.	८११५२	अलङ्कारिण्यु १. २. ३.	५४१४१
” २.	७५१५	अर्धरात्रक १.	२११६६	अलङ्कर्मिण १. २. ३.	५४१७२
” २.	८२११५	अर्धरूपक १.	३८१३७	अलङ्कार १.	४३१३३३
अर्ण १. ३.	२४१२१	अर्धर्च १. ३.	८११२८	अलङ्कारसुवर्ण ३.	३२१२२
अर्णव १.	४२११२	अर्धशक्त्य ३.	३७१९८१	अलङ्कमारि १. २. ३.	५४१५३
अर्णस् ३.	४२११	अर्धसूची २.	३६१२१५	अलम् ४.	८७१३३
अर्णिका २.	४४१४३	अर्धहस्तक १.	३११५८	अलम्बक १.	३३१६४
अर्ति २.	३७१७८	अर्धहार १.	४३१४०	अलर्क १.	३७१३९
” २.	६२११	अर्धोरुक ३.	४३१२२२	अललोहित १.	१२१४०

अलस १. ४४१३५
 „ १. २. ३. ५४१५५
 „ १. २. ३. ७५१५५
 अलसान्द्र १. ३८१४६
 अलस्फुटिन् १. ३६११२
 अलात ३. १२३३२
 अलावू २. ३३११६७
 अलि १. २३१४२
 अलि (-न्) १. ४११३२
 अलिक ३. ४४१९६
 अलिङ्ग ३. ३६११६२
 अलिक्षर ३. ४३१५६
 अलिन् १. २३१४२
 „ १. ८६११४
 अलिन्द १. ४३१४५
 अलिप्रिय १. ८११५९
 अलीक १. २. ३. २४११७
 „ ३. ७३३२
 अलीप्त ३. ३११५७
 अलोचक ३. ४३१११४
 अल्प १. १२१५३
 „ १. २. ३. ५४१३६
 अल्पतनु १. २. ३. ५४१५
 अल्पतुम्बी २. ३३११६८
 अल्पपच १. ३३११२०
 अल्पपल्लव ३. ४२१६
 अल्पपुष्प ३. ३३१७०
 अल्पफला २. ३३११७५
 अल्पमात्र १. ३३११२१
 अल्पहरिण १. ३४११३
 अवकटा २. ३११८६
 अवकर १. ४३१५२
 अवकरालय १. ३६११११
 अवका २. ३६१६०
 „ २. ४२१४८
 „ २. ४२१४९
 अवकाश १. २११७
 अवकीर्णिन् १. २. ३. ३६११३
 अवकील १. ३८१२६
 अवकेशिन् १. २. ३. ३३१८
 अवक्र १. २. ३. ५४१२४

अवक्रय १. ३८१७०
 अवक्षेपणी २. ३७११४
 अवखात १. ४११३
 „ १. ४२१७
 अवगति २. ३६११६४
 अवगाह १. ४३१६१
 अवगीत १. २. ३. ३६१२
 „ १. २. ३. ८५११
 अवग्रह १. ८११४
 अवग्राह १. २२१४
 अवघात १. ४३१६६
 अवचूड १. ३७१३४
 अवच्छेद १. ३६१३३
 अवज्ञा २. २४१३०
 „ २. ३६१७२
 अवज्ञात १. २. ३. ५४१९५
 अवट १. २३१४
 „ १. ३११५४
 „ १. ४११३
 अवटीट १. २. ३. ५४१२
 अवट्ट १. २. ४४१८५
 „ १. २. ८१६१९
 अवटोमनहस्त १. ४४१८१
 अवतंस १. ८११५९
 अवतमस ३. २११६३
 अवतरण ३. ८३१३३
 अवतार १. ४२१२०
 „ १. ५३१२३
 „ १. ८११५
 अवतारण १. २. ३. ३१११४१
 अवतीर्ण १. २. ३. ५४१९५
 अवतोका २. ३४१४७
 अवदात १. ५३११०
 „ १. २. ३. ८४१३
 अवदारण ३. ३८१२८
 अवदाह १. ३३१२३२
 अवद्य १. २. ३. ५४१७५
 अवधारणा २. २४१४०
 अवधि १. ४११३
 अवधीरण ३. ३७१३३
 अवध्वस्त १. २. ३. ८४१४

अवनाट १. २. ३. ५४१२
 अवनि २. ३११४
 „ २. ३३१६७
 अवन्ति १ व. ३११३७
 अवन्तिसोम ३. ४३१८२
 अवन्ती २. ४३१९
 „ २. ४४१२७
 अवन्ध्य १. २. ३. ३३१८
 अवपात १. ३७१५२
 अवभट १. २. ३. ५४१२
 अवम १. २. ३. ५४१७५
 अवमर्द १. ३७१२०७
 अवमानना ३. ३६१७२
 अवमुण्ड १. २. ३. ३६१६
 अवयव १. ४४१५५
 अवर ३. ३७१७८
 (अपर)
 अवरक्षणी २. ३७११२
 अवरज १. ४४१३१
 „ १. २. ३. ५४१४
 अवराविला २. २११७६
 अवरीण १. २. ३. ५४११०
 अवरोट १. ३११६०
 अवरोध १. ४३१३६
 अवरोह १. ३३१३२
 „ १. ८११५
 अवरोहक २. ३८१३३
 अवर्ण १. ३. २४१३२
 अवर्णवाद १. २४१३३
 अवलम्ब १. ४४१६७
 अवलेप १. ८१११५
 अवलोक १. ३११९०
 अवलोर्ण १. ८१११६
 अवलोलुक १. ५४१५२
 अवलुज १. ३३११०८
 अवश्यम् ४. ८८१२२
 अवश्याय १. २२१९
 „ १. ८११३३
 अवष्टम्भ १. २. ३. ८४१४
 „ १. ८११३

अवसविकका]

वैजयन्तीकोषः

[अष्टावक्र

अवसविकका २.	३६१५०
अवसर १.	५१२१७
अवसाद १.	३६१९१
अवसादनी २.	३३१९१
अवसित १. २. ३.	८१४३
अवसुषिरा २.	४१४८४
अवस्कन्द १.	३७२०३
” १.	३८११७
अवस्कर १.	८१११५
अवस्था २.	५१२१२
अवहित्या २. ३.	३१९८६
अवहेल ३.	३६१७२
अवाक ४.	८८११९
अवाकश्चुति १. २. ३. ५१४१३	
अवाच् १. २. ३. ५१४१४	
” ४.	५१४११
अवाची २.	२११५
अवाचीन १. २. ३. ५१४११	
अवाच्य १. २. ३. २१४१६	
अवान्तरदिशा २.	२११३
अवार ३.	४१२३२
अवि १.	३१४६४
” १.	५१४४
” १. २.	६५१४
अविदूष ३.	३८११७७
अविन १.	७११९
अविनीत १. २. ३. ५१४३१	
अविनीता २.	४१४१२
अविमरीस ३.	३८११४७
अविरत १. २. ३. ५१४१३०	
अवलम्बित १. २. ३. ५१४९४	
” १. २. ३. ५१४१२५	
अविला २.	३१४६५
अविशेष १.	३६१२०५
अविष १. २. ३. ७५१२	
अविषाद १.	३७२२८
अविसोढ ३.	३८११४७
अविस्तर १.	२१४४०
अवीची १.	१२१३७
अवीरा २.	४१४२०
अव्यक्त ३.	३६११६२
” १. २. ३. ७५११३	

अव्यथ १.	३३११९१
अव्यथा २.	३३११७८
” २.	३८१८९
अव्यथिष १. २.	८५११
अव्यय १. ३.	१११४८
” ३.	८७११
अव्यादा २.	३८१५८
अशन ३.	४३१७५
” ३.	४३१०२
अशनाया २.	३६११८२
अशनायित १. २. ३. ५१४३६	
अशनि १. २.	२१२१६
” १. २.	२१२१६
” १. २.	७५११५
अशिख १. २. ३. ३६६६	
अशित १. २. ३. ५१४१०७	
अशिरस् १.	३७२१६
अशिरस्क १.	८१११६
अशिशिषा २.	३६११८२
अशिषी २.	४१४२०
अशीतांशु १.	२११११
अशीति २.	५११२७
अशूर १. २. ३. ३७११४७	
अशोक १.	३३१४०
अशोकवनिता २. ११२४४	
अशोका २.	३८१८६
अशोभनस्वर १. २. ३.	
” ५१४४८	
अशमकुट्टक १.	३११२२
अशमगर्भ ३.	३१२३८
अशमज ३.	३१२१६
अशमन् १.	३१२१८
” १.	३६११०२
अशमन्त ३.	४३११०४
अशमन्तक १	३३१९४
अशमन्तिका २. ३. ८८३३२	
अशमरी २.	४१४१२८
अशमरीरिपु १.	३३१४१
अशममारक १.	३१२३४
अश्र १.	४३१५२
अश्रान्त १. २. ३. ५१४१३०	

अश्रि २.	४३१५२
अश्रु ३.	३१९८७
अश्रुदार्थ १. २. ३. २१४१७	
अश्व १.	१११३०
” १.	३७१९०
” १.	८६११७
अश्वकन्द १.	३३१२८
अश्वकर्ण १.	३३३३८
अश्वखुरी २.	३३१३४
अश्वगन्धी २.	३३१२८
अश्वतर १.	३७१०८
अश्वस्थ १.	३३३२७
अश्वपण्य १.	३५११२
” १.	३५१७१
अश्वपोत १.	३७१०७
अश्वमिय १.	३८१५२
अश्वबडव १ द्वि.	८११५१
अश्वमारक १.	३३१९२
अश्वमुख १.	१३३३
अश्वयुज २.	२११४२
अश्वरिपु १.	३३१९२
अश्ववाल १.	३३२२७
अश्वा २.	३७१०७
अश्वारि १.	३३४८
अश्विन् १ द्वि.	१३३२
अश्विनी २.	२११४२
अपाढा १ व.	२११४३
अष्टकर्मपरिअष्ट १. १११३५	
अष्टप्रास १. २. ३. ३६१३३	
अष्टपाद १.	३४३३२
अष्टम १. २. ३. ५११२०	
अष्टमक १. २. ३. ५११५०	
अष्टमकालमुज् १. २. ३.	
” ३६१२६	
अष्टमङ्गल १.	३७१९३
अष्टमान ३.	५११५३
अष्टमिका २.	५११५०
अष्टवर्ग १.	३७१९
अष्टाङ्ग १.	३६१२०८
अष्टापद १. ३.	८५१२
अष्टावक्र १.	३६११५७

अष्टी २.	३१६११६	असृक्कर १.	४१४१०४	अह ४.	८१७१२
” २.	६१२११	असृग्धरा २.	४१४१०३	अहयु १. २. ३.	५१४१२९
अष्टीला २.	४१४११३	असृज् ३.	४१४१०६	अहङ्कार १.	३१६१६९
अष्टीवत् १. ३.	४१४१५९	असोढ १.	३१७१६९	अहङ्कारिन् १. २. ३.	५१४१२९
असक्त १. २. ३.	५१४१३०	असोल १.	५१३१३६	अहत ३.	४१३१२०
असङ्ग्रह १.	३१६१२०९	अस्त १.	३१२१६	अहन् ३.	२११५६
असत् ३.	३१६११६२	” १. २. ३.	५१४१९७	अहमहमिका २.	३१६१७१
असती २.	४१४१९	अस्तम् ४.	८१८१६	अहम्पूर्विका २.	३१६१७०
असतीसुत १.	४१४१४३	अस्तमयाचल १.	३१२१६	अहर्गण १.	३१६१८४
असदध्येत् १. २. ३.	३१६१११	अस्तिमत् १. २. ३.	५१४१५७	अहर्षति १.	२१११२
असन १.	३१३१३९	अस्तु ४.	८१७१३३	अहर्मुख ३.	२११६८
असम्पुष १.	११११५५	अस्तेय ३.	३१६१२०९	अहस्कर १.	२१११२
असम्पृक्त १. २. ३.	८१४१४	अस्त्र ३.	३१७१५७	अहस्तान १.	११२१२६
असहन १.	३१७१४१	अस्त्रग्राम १.	५११११७	अहह ४.	८१७३२
असार १. २. ३.	५१४१७६	अस्त्रजीवन १. २. ३.	३१७१४३	अहार्य १.	३१२११
असि १.	३१७१५८	अस्त्रशासन ३.	३१६१३०	अहि १.	४११५
” १.	३१७१५९	अस्त्रिन् १. २. ३.	३१७१४३	” १.	६११५
” १.	८१६१६	अस्थान ३.	३१७१५६	अहिंसा २.	३१६१२०९
असिक्री २.	३१७१३९	” १. २. ३.	४१२११९	अहिक १.	४११४३
असित १.	२११३५	अस्थि ३.	४१४१०८	अहिच्छत्र १ व.	३११२६
” १.	२११७९	” ३.	४१४१०८	” ३.	३१३१५३
” १.	३१५१९९	अस्थिखाद १.	३१४१७०	अहित १.	३१७४०
” १.	५१३१११	अस्थितेजस् ३.	४१४११०	अहिनिखयनी २.	४११२१
असितानन १.	३१४१४०	अस्थिपञ्जर ३.	४१४११४	अहिपताक १.	४१११८
असिद १.	३१८१३०	अस्थिमत् १.	३१३१३०	अहिपृष्ठ ३.	३१७५३
असिधावक १.	३१९१५५	अस्थिर १. २. ३.	५१४१६८	अहिभय ३.	३१७१५५
असिधेनुका २.	३१७१६३	अस्थिप्रेमन् १२३.	५१४१२६	अहिर्बुध्न्य १.	१११४२
असिपत्त्रिका २.	३१३१९७	अस्थिसङ्घात १.	३१३१३०	अहिमतिन् १. २. ३.	३१६१३१
असिपुत्री २.	३१७१६३	अस्थिसन्नहन १.	४१४१३०	अहीन १.	३१६१८५
असिप्लव ३.	४१११५५	अस्थिसम्भव ३.	४१४११०	” १.	३१६१८५
असु १ व.	३१६१२०३	अस्थिस्नेह १.	४१४११०	अहीरिणि २.	४११२०
असुर १.	११३१९	अस्पन्दनस्थिति २.	३१९१८९	अहेरु २.	३१३१४२
” १.	३१७१६१	अस्फुटभाषण १. २. ३.	५१४१४७	अहो ४.	८१८१६
” १.	३१८१२४	अस्मद् १. २. ३.	८१९१४९	अहोत्र ३.	३१६१९६
असुरभि १.	५१३१४७	अस्मिता २.	३१६१६९	अहोरात्र ३.	२११५५
” १.	५१३१४८	अस्त्र ३.	४१४१०५	अह्नाय ४.	८१८११
असुराचार्य १.	२११३३४	” १. ३.	६१५७	आ	
असुराह्वय ३.	३१२१२८	अस्तु ३.	३१९१८७	आ ४.	८१७११
असुवर्चिका २.	३१८१२९	अस्वम १.	१११३३	” ४.	८१७१२
असूया २.	३१६११८४				
असूयण ३.	३१६११७२				

[आ]

वैजयन्तीको

[आख्य]

आः ४. ८७१२
 आकम्पित १.२.३. ५४१९५
 आकर १. ३१२१०
 " १. ५११२
 " १. ७११९
 आकर्णक १.२.३. ४३११०८
 आकर्णकर्षण ३. ३१११९१
 आकर्ष १. ३१७७२
 " १. ७११३
 आकलन ३. ८३१३
 आकल्प १. ४३११३२
 आकार १. ५२१२२
 " १. ७११७
 आकारगोपना २. ३११८६
 आकारणा २. २१३३०
 आकालिकी २. २२१४
 आकाश १. ३. २११२
 आकीर्ण १.२.३. ५४१११०
 आकुल्य ३. ४३१३८
 आकूत ३. ३१६१७४
 आकृति २. ३१६१७४
 आकृति २. ७२१२
 आक्रन्द १. ७११५
 आक्रम १. ५२११६
 आक्रीड १. ३३३३
 आक्रोश १. १४३२
 आचारण ३. २१३३४
 आचारित १.२.३. ३१८११
 आक्षिप्त १. २. ३. ५४१६७
 आक्षेप १. ७१११०
 आक्षेपक १. ४३१३६
 आक्षोड १. ३३३४६
 आखण्डल १. १२१६
 आखनिक १. ३३३६
 आखु १. ४११३१
 " १. ६११७
 आखुभुज् १. ३३३७१
 आखुयान १. १११५४
 आखेट १. ३१९३९
 आखोर १. २११८८
 आख्या २. २१३३१

आख्यान ३. २१३३८
 आख्यायनी २. २१३२५
 आख्यायिका २. २१३३८
 आगन्तु १. ३१६६८
 आगम १. ७११८
 आगस् ३. ३१७४७
 " ३. ८३११६
 आगू (-अगुर) २. ३१८४७
 आग्निमास ३. ३१६१५२
 आग्नीध्री २. ३१६१४
 आग्नेय ३. २११९०
 " १. २११९०
 " १. २११९२
 " ३. ३१६६५
 " १. ३१६१५२
 " ३. ४३११०६
 " १.२.३. ५४१११८
 आग्नेयी २. २११४
 " २. २११९१
 आग्रह १. ७११२
 आग्रहायणिक १. २११८१
 आग्रहायणी २. २११३८
 " २. २११७४
 आग्रायणी २. २११७४
 आघट्टिका २. ३१७१२५
 आघात १. ७११८
 आघारण १. ३१६१००
 आङ्गलौकिक १. ३१६१९८
 आङ्गिक १. २. ३. ३१७९९
 " १. ३. ४३१२८
 आङ्गिरस १. २११३३
 आचाम १. ४३१८८
 आचार १. ३१६११५
 आचारा २. ११११६
 आचार्य १. ३१५५६
 " १. ३१६१२२
 " १. २. ८११४४
 आचार्या २. ४३१२३
 आचार्यानी २. ४३१२२
 आचित ३. ५११६२
 " १.२.३. ५४१११५

आच्छादन ३. २११६४
 " ३. ४३१११६
 " ३. ८३३३
 आच्छुरित ३. ४३१११२
 आच्छुरितक ३. ३१९८४
 आच्छोटन ३. ३१९३८
 आजक ३. ५१११०
 आजान ३. ५२११
 आजानज १. १११६
 आजानेय १. ३१७९४
 आजि २. ६२३३
 आजीव १. ३१८११
 " १. ३. ३. ५४११६
 (आजिल)
 आज्ञा २. ३१७३४
 " २. ३१७४८
 आज्ञागणिका २. ३१७३४
 आज्य ३. ३१८१३८
 " ३. ५११५१
 " ३. ६३३२
 आज्याधिवासन ३. ३१६१९०
 आज्याधिभ्रयण ३. ३१६१९०
 आज्यावेक्षण ३. ३१६१९०
 आटक १. २३३१८
 आठरूप १. ३३३१०१
 आटि ३. २३३११
 आटोप २. ३१९८९
 आढम्बर १. ३१९१३८
 " १. ३. ८१५४
 आधिण्डिक ३. ३१६१६
 आढक ३. ४३३४१
 " १. ५११६३
 आढकिक १.२.३. ३१८२१
 आढकी २. ३२११७
 " २. ३१८४८
 आढा २. ४३३३३
 आढिक ३. ४३३१०८
 आढ्य १. २. ३. ५४१५७

आणवीन]

शब्दानुक्रमणिका

[आभिगामिकगुण

आणवीन १.२.३.	३८।२०
आतङ्क १.	७।१९
आतञ्जन ३.	३८।१४४
” ३.	८।३४
आततायिन् १.२.३.	५।४।६८
आनति २.	२।१।६२
आतप १.	१।२।३१
” १.	२।१।२२
आतपत्र ३.	३।७।१६
आतर १.	४।२।१८
आताना २.	३।३।१८६
आतपिन् १.	२।३।२८
आताल १.	३।७।११३
आति २.	२।३।११
आतिथ्य १.२.३.	३।६।६७
” १.	३।६।६८
आतिवाहिक १.	१।२।३८
आतुर १.२.३.	४।४।१४४
आतोद्य ३.	३।९।११४
आत्तगन्ध १.२.३.	५।४।६७
आत्मगुप्ता २.	३।३।१२९
आत्मघोष १.	२।३।१५
आत्मज १.२.	४।४।३९
आत्मन् १.	६।१।६
आत्मनीन १.	८।५।३
आत्मन् १.	७।१।६
आत्मम्भरि १.२.३.	५।४।५०
आत्मयोनि १.	८।१।१६
आत्मसम्बन्ध १.	१।१।४८
आत्माशिन् १.	४।१।४१
आत्मीय १.२.३.	३।७।४३
आत्रेय १.	४।४।१०४
आत्रेयी २.	४।४।१५
आथर्वण ३.	३।६।२७
” ३.	४।३।२०
आदर्श १.	४।३।१६२
आदान ३.	३।७।१८९
आदाली २.	३।३।१६२
आदि १.	५।४।७६
आदितेय १.	१।१।३
आदित्य १.	१।१।३

आदित्य १.	१।१।१९
” १.	१।३।८
” १.	२।१।१५
आदिदेव १.	१।१।५
आदिम १.२.३.	५।४।७६
आदीनव १.	५।२।४
आहत १.२.३.	७।४।२
आदेशिन् १.	३।७।२५
आद्य १.२.३.	५।४।७६
” १.२.३.	६।४।२
” १.	६।५।७
आद्यून १.२.३.	५।४।५१
आधान ३.	३।६।६९
आधानिक ३.	३।६।३
आधार १.	४।२।६
” १.	७।१।५
आधि १.	६।१।७
आधिक १.	३।८।७०
आधूत १.२.३.	५।४।९५
आधेय ३.	३।६।६९
आधोरण १.	३।७।८८
आध्यात्मिक १.	३।६।२०८
आन १.	३।६।२०४
आनक १.	३।९।१३३
” १.३.	३।९।१३४
आनकदुन्दुभि १.	१।१।२६
आनत १.२.३.	५।४।८३
आनद्ध ३.	३।९।११५
आनन ३.	४।४।८६
आनन्द १.	३।६।१८८
आनन्दन ३.	३।६।१८६
आनन्दना २ व.	२।१।१८
आनर्त १.	७।१।४
आनाय १.	३।६।७
” १.	७।१।४३
आनाह १.	३।१।६१
” १.	४।४।१२८
” १.	५।२।५
आनील १.	३।७।१००
आनुपूर्वी २.	३।१।११४
आनुपूर्व्य ३.	३।६।११३

आन्तरालिक १.	३।५।११९
आन्त्र ३.	३।४।११३
(अन्त्र)	
आन्दोल १.	३।७।१३७
आन्दोलन ३.	३।७।१३७
आन्धसिक १.२.३.	४।३।९२
आन्वीचकी २.	३।६।३१
आपगा २.	४।२।२३
आपण १.	४।३।३४
आपद् १.	३।६।१९१
आपन ३.	५।२।१३
आपन्न १.२.३.	५।४।१०९
” १.२.३.	७।४।२
आपन्नसत्वा २.	४।४।१६
आपमित्यक ३.	३।८।६
आपव १.	३।६।१५५
आपाण्डुफल १.	३।३।१६६
आपात १.	७।१।९
आपान ३.	३।९।५०
आपिक्कलक १.	३।६।१२२
आपिजन ३.	३।८।११४
आपीड १.	४।३।१५४
आपीन ३.	३।४।५१
आपूपिक ३.	५।१।११
आप्त १.२.३.	३।७।४३
” १.२.३.	३।८।९
” १.२.३.	५।४।९९
आप्रपदीन १.२.३.	
” ३।३।१२१	
आप्राप्त १.	३।६।९१
आप्लव १.	४।३।११३
आप्लाव १.	४।३।११३
आप्लुत १.२.३.	७।४।३
आबद्ध १.२.३.	३।७।१४२
आबन्ध १.	३।८।२८
आबर्हित १.२.३.	५।४।१००
आबुक् १.	३।९।१०६
आभरण ३.	४।३।१३३
आभा १.२.३.	५।४।१२२
आभाषण ३.	२।४।२३
आभिगामिकगुण १.	३।७।४
” १.	३।७।८

आभीर]

आभीर १.	३५५६
" १.	३५५९
" १.	३५१२८
आभीरपल्ली २.	३५१३२
आभील ३.	११२३९
" १. २. ३.	३५१७९
" १. २. ३.	७४१२
आभोग १.	७४११७
आभ्यन्तरवृत्त ३.	३५१७४
आम् ४.	८८८१७
आम १.	४४११३८
" १.	६५५७
आमण्ड १.	३३३६५
आमनस्य ३.	११२३९
आमन्त्रण ३.	२४३३१
आमन्त्रणिक ३.	३६३३
आमपात्र ३.	३६३६४
आमसांसक १.	५३३७६
आमय १.	४४११३८
आमयाविन् १. २. ३.	४४११४५
आमलक १. २. ३.	३३३१७७
आमिन्ना २.	३६३९८
आमिष १.	३७३४६
" ३.	४४११०७
" १.	४४१११४
" ३.	५३३५५
आमिषाशिन १. २. ३.	५४३५०
आमिषी २.	३८३१००
आमुक्त १. २. ३.	३७३१४२
आमुष्यायण १. २. ३.	५४३५३
आमोद १.	५३३५०
" १.	७४११७
आम्नाय १.	७४१३३
आम्न ३.	३३३२१
" १.	३३३२५
आम्नात १.	३३३३१
आम्नेडन ३.	५३३९
आम्नेडित १. २. ३.	२४३२२

वैजयन्तीकोषः

आय १.	३७३४४
आयत १. २. ३.	५४३८१
आयति २.	७३३३
आयत्त १.	३५३४
" १. २. ३.	५४३२८
आयल्लक ३.	३६३१७८
आयश्शूलिक १. २. ३.	५४३७४
आयस्त १. २. ३.	७४३३
आयान ३.	३७३११६
आयाम १.	३६३१६७
" ३.	३७३१९१
" १.	५३३५
आयास १.	३६३१९३
आयु १.	१३३२५
आयुध २.	३७३१५७
" २.	३७३२०६
आयुध ३.	३३३३३
" ३.	३७३१५७
" ३.	८६३९
आयुधाय २.	३७३१७२
आयुधिक १. २. ३.	३७३१४३
आयुधीय १. २. ३.	३७३१४३
आयुर्वेद १.	३६३२९
आयुर्वेदिन् १. २. ३.	४४३१४४
आयुस् ३.	३७३२२१
" ३.	६३३५
आयोग १.	७४३१४
आयोगव १.	३५३२२
" १.	३५३२९
" १.	३५३८२
" १.	३५३८६
आयोधन ३.	३७३२०४
" ३.	८३३४
आर १.	२४३३१
" १.	३३३२६
आरकूट १. ३.	३३३२६
आरक्ष १.	३७३१८
" १.	३७३७४
आरग्वध १.	३३३४८
आरट्ट १ व.	३३३३४

[आर्य

आरट्ट १. २. ३.	३३३४६
" १.	३७३९६
आरणिन् १.	२३३१३
आरति २.	५३३३६
आरनाल ३.	४३३८१
आरभट्ट १. २. ३.	३७३१४७
आरभटी २.	३५३१०१
आरम्भ १.	३५३१४०
" १.	५३३१५
आरल्ल १.	३३३६९
अरव १.	२४३३
आरा २.	३५३३३
आरात्र ३.	३७३१८५
आरात् ४.	८७३१६
आराधन ३.	३६३३८
" ३.	८३३४
आराम १.	३३३२
आरालिक १. २. ३.	४३३९२
आराव १.	२४३३
आरु १.	३३३१५४
" १.	५३३२४
आरूढ १.	३८३५२
आरेवत १.	३३३४८
आरोग्य ३.	४४३१४२
आरोपित १. २. ३.	५४३१०४
आरोह १.	३७३८८
" १.	७४३१७
आरोहण ३.	४३३५१
" ३.	५३३१५
आगर्वध १.	३३३४८
आर्जिक १. २. ३.	४४३३३
आर्तगल १.	३३३१९०
आर्तव ३.	४४३१६
आर्ति २.	३६३८७
" २.	३७३१७८
आर्द्र १. ३.	३३३२१४
" १. २. ३.	५४३१०७
आर्द्रक १. ३.	३३३२१४
आर्द्रा २.	२४३४०
आर्य १.	३७३२३
" १.	३५३१०६

आर्य १. २. ३.	पा४६१	आवर्त १.	४२३०	आशा २.	२११२
" १. २. ३.	६४३३	आवर्तन ३.	३११११	" २.	६२३३
आर्यक ३.	३६६६	" ३.	५२१४१	आशावन्ध १.	४१३३५
आर्यपुत्र १.	३१११०६	आवलि २.	५११२४	आशासन ३.	३६१२०
आर्या २.	१११५८	आवसथ १.	४३१८	आशितम्भव १.	८५२५
आर्यावर्त १.	३११२३	आवसथ्य १.	१२२५	आशिर १.	१२१९
आर्यभ ३.	३११९	" १.	४३२७	" १.	७१६
आर्यभी २.	२११४७	आवसित १. २. ३.	३८६७	आशिस् २.	६२२
आर्यभ्य १. ३.	३१४५५	आवाप १.	३७१४	आशीविष १.	४१५
आल ३.	३२१४	" १.	७१६	" १.	४११३
आलगन्धिका २.	३७३४	आवापक १.	४३१४४	आशु ३.	३२२२
आलम्भ १.	७११०	आवाल ३.	४२१०	" १. २. ३.	पा४१२५
आलय १.	४३१८	आवालि २.	४३३५	आशुग १.	१२४९
आलवाल ३.	४२११०	आवाह १.	४२६	" १.	७१९
आलस्य ३.	३६१५८	आविः (-स्) ४.	८८१८	आशुशुचि १.	८१५०
" १. २. ३.	पा४५५	आविक १.	४३१२९	आशोचनि १.	३११६
आलान ३.	३७८२	आविद्ध १. २. ३.	पा४१२३	आश्रय १. २. ३.	३१७८
" ३.	७३३	" १. २. ३.	७३२	आश्रम १. ३.	४३२६
आलाप १.	२४२३	आविध १.	३९१८	" १. ३.	७५१६
आलावर्त १.	४३१५९	आविल ३.	४२४	आश्रय १.	३७६
आलास्य १.	४२१५३	आविश १.	३६१६१	आश्रयाश १.	१२१७
आलि १.	४१३२	(आवश)		आश्रव १.	पा२४
" २.	पा१२४	आवृत्त १.	३९१०७	" १.	पा२३७
" २.	६२३	आवृत् २.	३६११३	" १. २. ३.	पा४४९
आलिङ्गन ३.	४३१७०	" २.	३६११४	आश्लेष १.	४३१६९
आलिङ्ग्य १.	३९१२९	आवृत्त १.	३५५	आश्लेषा २.	२१४३
आलिन्द १.	४३४५	" १.	३५९०	आश्व ३.	पा११०
आली २.	३८२६	" १. २. ३.	पा४९६	आश्वकिनी २.	२१४२
" २.	४४२५	आवेग १.	३९८९	आश्वस्थ ३.	३३२२
आलीढ ३.	३७१८७	आवेशन ३.	४३२२	आश्वयुज १.	२१८५
आलु २.	४३५७	आवेशिक १.	३६६८	आश्वस १.	३६२०५
आलुक १.	पा३४४	आवेष्टक १.	४३१४	आश्विक १.	३५७१
आलेख्यलेखा २.	३९२४	आशंसित्व १. २. ३.	पा४४३	आश्विन १ द्वि.	१३६
आलेप १.	४३१४७	आशंसु १. २. ३.	पा४४३	" १.	२१८५
आलोक १.	१२३१	आशङ्का २.	३६१७६	आश्विनी २.	२१७६
" १.	७१८	आशय १.	३६१७४	आश्विनेय १ द्वि.	१३६
आवतारिक १.	४१४३	" १. २. ३.	पा४११४	आश्वीन १. २. ३.	३७१०८
आवन्त्य १.	३५५३	" १.	७५१७	आश्वीय ३.	पा११०
" १.	३५१०१	आशर १.	१२४१	आषाढ १.	२१८४
आवपन ३.	४३६२			" १.	३२३
आवर्जन ३.	पा२४०				

आपाठ]

आषाढ १.	३।६।१८
आषाढी २.	२।१।७६
आस १.	३।७।१७२
„ १.	५।३।२८
आसक्त ३.	२।१।६२
आसङ्ग ३.	३।१।१३
„ १.	३।७।१५९
आसन ३.	३।६।२१०
„ ३.	३।७।६
„ ३.	४।३।१६४
„ ३.	५।३।४०
„ ३.	७।३।३
आसना २.	५।२।१४
आसन्दी २.	४।३।१६०
„ २.	४।३।१६४
आसन्न १. २. ३.	५।४।१४१
आसव १.	३।३।२१७
„ १.	३।९।४७
„ १.	३।९।४९
„ १.	३।९।५१
„ १.	३।९।५२
आसादित १. २. ३.	५।४।९९
आसार १.	३।७।२०१
„ १.	७।१।२
आसारी २.	३।१।४२
आसाविक १.	३।५।११२
आसिक ३.	३।७।१९४
आसीन १. २. ३.	५।४।१०
आसुतीबल १.	३।९।४४
„ १.	८।१।५०
आसुर १.	२।३।१७
„ ३.	३।२।३४
„ १.	३।८।१२४
„ ३.	४।४।१०५
आसुरी २.	३।८।४२
आसूति २.	३।९।५१
आसेचनक १. २. ३.	५।४।६५
आस्कन्दन ३.	३।७।२०३

वैजयन्तीकोषः

आस्कन्दित १. २. ३.	३।७।११८
आस्कन्दितक १. २. ३.	३।७।१२०
आस्तरण ३.	४।३।१६६
आस्ताव १.	३।६।११०
आस्तिक १. २. ३.	५।४।३७
आस्था २.	३।८।१३
„ २.	५।२।३७
„ २.	६।२।२
आस्थान ३.	३।८।१४
आस्थानगृह ३.	४।३।२०
आस्थानी २.	३।८।१४
आस्पद ३.	७।३।३
आस्फोटनी २.	३।९।१८
आस्फोट १.	३।३।२९
आस्फोता २.	३।३।१३४
„ २.	३।३।१८५
आस्य ३.	४।४।८६
„ ३.	६।३।३
आस्या २.	५।२।१४
आस्र ३.	३।९।८७
„ १.	६।५।७
आस्वाद्य ३.	४।३।९१
आहत १. २. ३.	२।४।१७
„ १. २. ३.	७।४।३
आहति २.	३।६।८९
आहर १.	३।६।२०४
आहव १.	३।७।२०५
आहवनीय १.	१।२।२४
आहार १.	७।१।८
आहार्य ३.	३।८।११४
„ १. २. ३.	३।९।९९
„ ३.	४।३।७६
आहाव १.	४।२।९
आहिक १ व.	२।१।३७
„ १.	३।६।१५४
आहिण्डिक १.	३।५।४४
(आहिण्डिक)	
„ १.	३।५।९३

[इच्छु

आहिताग्नि १	३।६।७३
आहितुण्डिक १.	४।१।२५
आहुक ३.	४।३।८
आहुति २.	३।६।६९
आहोपुरुषिका २.	३।६।१७०
आहोस्वित् ४.	८।८।२
आह्निक १.	३।६।३२
आह्नय १.	२।४।३१
आह्ना २.	२।४।३१
आह्नान ३.	२।४।३१
इ	
इ ४.	८।१।१०
इच्छु १.	३।३।२२५
इच्छुगन्धा २.	३।३।१४१
इच्छुगन्धिका २.	३।३।१९६
(गण्डिका)	
„ २.	३।३।२२७
इच्छुपालिका २.	३।३।२२६
इच्छुभेद १.	३।३।२२६
इच्छुर १.	३।३।१०१
इच्छुविदारिका २.	३।३।१९६
इच्छुशाकट १. २. ३.	३।८।२२
इच्छुशाकिन १. २. ३.	३।८।२२
इच्छुसूनिका २.	४।३।२५
इच्छुदक ३.	३।१।११
इच्छुवाक्कु १.	३।३।४९
„ २.	३।३।१६८
इक्ष १.	५।२।२२
इक्षत् १. २. ३.	५।४।६१
इक्षाल १.	१।२।३२
इक्षित ३.	५।२।२२
इक्षुव १. २. ३.	३।३।७८
इक्षुवी २.	३।३।३३९
इच्छा २.	३।६।१७९
„ २.	३।६।१८२
इच्छावसु १.	१।२।५८
इच्छु २.	४।४।११

इज्जल]

इज्जल १.	३१३६७
इज्या २.	३१३३१
” २.	६१२४
इज्याशील १.	३१३७५
इट्ठ १.	३१४५३
इडा २.	६१२३
इतर १. २. ३.	५१४२२
इतरथा ४.	८१८२०
इतरेतर १. २. ३.	५१४१२३
इतरेथुः (-स्) ४.	८१८१८
इति ४.	८१७१७
इतिकथा २.	८१२३
इतिह ४.	२१४३८
” ४.	८१८२१
इतिहास १.	२१४३८
इत्थम् ४.	८१८२०
इत्थम्भाव १.	५१२२३
इत्थरी २.	४१४९
इत्वास १.	३१३१९९
इदानीम् ४.	८१८५
इद्ध ३.	२११२२
इध्म १. ३.	२११८८
” १.	३१६९६
इध्मप्रोक्षण ३.	२१६९०
इध्मवाहक १.	३१६१५७
इन १.	६१५७
इन्दिन्दिर १.	२१३४३
इन्दिरा २.	१११३६
इन्दीवर ३.	४१२३५
इन्दीवरी २.	३१३१४२
इन्दु १.	२११२५
” १.	५११५२
” १.	८१६३
” १.	८१६६
इन्द्र १.	११२१
” १.	६११८
” १.	८१६३
इन्द्रक ३.	४१३२०
इन्द्रकोश १.	४१३३२
इन्द्रच्छद १.	४१३१३८
इन्द्रजाल ३.	३१७१३

शब्दानुक्रमणिका

इन्द्रजित् १.	११२४४
इन्द्रदारद १.	४११२४
इन्द्रधनुस् ३.	२१३३
इन्द्रनील ३.	३१२४०
इन्द्रभगिनी २.	१११६२
इन्द्रमद १.	४१४१३६
इन्द्रमह १.	३१४६९
इन्द्रयव १. ३.	३१३७३
इन्द्रलसक ३.	४१४१२६
इन्द्रवस्ति १.	४१४५७
इन्द्रवारुणी २.	३१३१७२
इन्द्रवृद्धि १.	३१७९८
इन्द्रव्रतादिक ३.	३१७६
इन्द्रसुरस १.	३१३१९८
इन्द्रस्वम् २.	१११६२
इन्द्राणी २.	११२११
इन्द्राणीमह १.	३१६५७
इन्द्रायुध ३.	२१३३
” १.	३१७९२
इन्द्रावरज १.	११११९
इन्द्रिय ३.	३१६२०३
” ३.	७१३४
इन्द्रियग्राम १.	५१११७
इन्द्रियार्थ १.	५११२
इन्धन ३.	३१६९६
इन्वका २ व.	३१३३९
इभ १.	३१७६०
इभ्य १. २. ३.	५१४५७
इभ्या २.	३१३१०३
इरम्मद १.	११२२०
इरा २.	३१९४५
” २.	६१२४
इरिण १. २. ३.	३१८१८
” १. २. ३.	७१४४
इर्वा १.	३१३१६६
” २.	३१३१७२
इला २.	३११३
” २.	६१२४
इलावृत्त ३.	३११७
इलिक १.	३१४६३
इली २.	३१७१६०

[ईश्वर

इश्वला २ व.	२११३९
इव ४.	८१८१५
इप १.	२११८५
इपीक १ व.	३११३४
इपीका २.	३१३२३५
इपु १. २.	३१७१८०
इपुधि १. २.	३१७१७९
इष्ट ३.	३१६११५
” १. २. ३.	३१७३३
” १. २. ३.	५१४९६
इष्टका २.	३१८२५
इष्टि २.	६१२४
इष्वा १.	६११८
इष्वास १.	३१७१७२
ई	
ईक्षण ३.	४१४९४
” ३.	७१३४
ईक्षणिका २.	४१४११
ईजान १.	२११८४
ईडित १. २. ३.	५१४९६
” १. २. ३.	५१४१०६
ईति २.	६१२५
ईहश् १.	११३१०
ईप्सा २.	३१६१८०
ईरित १. २. ३.	५१४९६
ईर्म १. ३.	३१७२१७
ईर्यापयस्थिति २.	
	३१६११६
ईर्या २.	३१६१८४
ईषिका २.	४१४११६
ईली २.	३१९३७
ईहा १.	१११४०
” १. २. ३.	५१४५८
” १.	८१५३५
ईशशक्ति २.	१११४९
ईशान १.	१११४०
” १.	७१११०
ईशित् १. २. ३.	५१४५८
ईश्वर १.	१११४०
” १.	३१३३७
” १.	३१४५३

ईश्वर]

वैजयन्तीकोषः

[उत्तमसाहस

ईश्वर १.	४१४१३५
" १. २. ३.	५१४१५७
" १.	७१४३५
ईश्वरप्रिय १.	२३३३५
ईषत् ४.	८८११२
ईषा २.	३८८२७
ईपादन्त १.	३१७६९
ईषान्तबन्धन ३.	३१७१३०
ईषिर १.	११२१९
ईहन ३.	५१२११
ईहा २.	३१६१७९
" २.	६१२१५
ईहामृग १.	५१५८
" १.	३१७१००
ईहित १. २. ३.	५१४९६
उ	
उ ४.	८१७१०
" ४.	८१७११
उक्थ ३.	३१६१११
उक्षतर १.	३१४५५
उक्षन् १.	३१४५२
" १.	८१६१५
उक्षवश १.	८१९५१
उखा २.	४१३५५
उख्य १. २. ३.	४१३९४
उग्र १.	१११४६
" १.	३१५१३
" १.	३१५७२
" १.	३१५७६
" १.	३१५११६
" ३.	३१८१२४
" ३.	३१८१४८
" १. २. ३.	३१९७९
उग्रगन्ध १.	३३३१७९
" १.	८१५१५
उग्रगन्धा २.	३३३१९७
" २.	३१८१०२
" २.	८१५१५
उग्रता २.	३३३१९२
उग्रधन्वन् १.	११२१६
उग्रविष १.	३३३१९३

उग्रा २.	३३३१९७
" २.	३१८१०२
" २.	८१२१४
उग्रिका २.	३३३१९२
उचित १. २. ३.	५१४१०३
" १. २. ३.	७१४३७
उच्च १. २. ३.	५१४८१
उच्चकैः (-स्) ४.	८८११९
उच्चण्ड १. २. ३.	५१४९४
उच्चतालक ३.	३१९५४
उच्चन्द्र १.	२११६६
उच्चय १.	४३३१३०
उच्चल ३.	३३३१७२
" ३.	३१७१७५
उच्चलित ३.	३१७१७२
उच्चस्वन १.	२१४३
उच्चार १.	४३३११९
उच्चारणा २.	३३३३५
उच्चूड १.	३१७१३४
उच्चैः (-स्) ४.	८८११९
उच्चैःश्रवस् १.	१३३११
" १.	८१११९
उच्छिष्टभोजिन् १. २. ३.	
	३३३१०
उच्छीर्ष ३.	४१२१६७
उच्छुन ३.	२११८३
उच्छूर १.	२११६५
उच्छृङ्खल १. २. ३.	
	५१४१३२
उच्छ्राय १.	३३३१६
उच्छ्रित १. २. ३.	७१४५
उच्छ्रिताग्रक १. २. ३.	
	५१४८१
उच्छ्रास १.	३१५३२
" १.	३३३२०४
उज्जट १. २. ३.	३३३४५
उज्जासन ३.	३१७२१५
उज्ज्व १.	३१८२
उज्ज १. २.	४३३२६
उहु २. ३.	२११३८
उहुप ३.	४१२१६

उहुराज १.	२११२७
उड्डीन ३.	२३३५०
उड्डीश १.	१११४५
उत १. २. ३.	५१४११२
" ४.	८१७१८
" ४.	८१८२
उताहो ४.	८१८२
उत्क १. २. ३.	५१४३४
उत्कट १.	३३३२३०
(इट्कट, तिस्कट)	
" ३.	३३३२१६
" ३.	३१८८०
" ३.	३१८१०४
" १. २. ३.	५१४३७
" १. २. ३.	५१४३७
" १. २. ३.	७१४३७
उत्कण्ठ १. २. ३.	८१९२७
उत्कण्ठा २.	३३३१७८
उत्कर १.	३३३१११
" १.	५११३
उत्कलिका २.	३३३१७८
" २.	४१२२४
उत्कार १.	५१२२१
उत्कारिका २.	४३३७२
उत्कीर्ण १.	४१२३७
उत्कुञ्च १.	४३३६९
उत्कोच १.	३१७४६
उत्क्रम १.	५१२१६
उत्क्रोश १.	२३३३४
उत्क्षिप्तिका २.	४३३१३४
उत्क्षुद्रल १.	५३३४
उत्खात १.	३३३२२९
उत्खेद १.	३३३१८३
उत्त १. २. ३.	५१४१०७
उत्तंस १.	४३३१५४
" १.	८११५९
उत्तस ३.	४३३८९
उत्तम १. २. ३.	५१४६२
" १. २. ३.	७१४६
उत्तमर्णक १. २. ३.	३१८८
उत्तमसाहस १.	५११४१

उत्तमा २.	३३११६०	उत्पिब १.	२३३३५	उदरग्रन्थि १.	४१११३०
उत्तमाङ्ग ३.	४१४८५	उत्पिषा १.	५३११२	उदरत्राण ३.	३१७१५४
उत्तमोत्खात १.	३३६१३०	उत्प्रास १.	२१४३५	उदरिल १. २. ३.	५१४७
उत्तमोत्तमिक ३.	३३९१५२	उत्प्रेक्षा २.	३३६१७४	उदर्क १.	७१११२
उत्तर ३.	२१४३७	उत्फुल्ल १. २. ३.	३३३१९	उदर्चिस् १.	११२१५
” ३.	३३८१६	उत्स १.	३३२७	उद्वसित १. २. ३.	
” १. २. ३.	७५११८	उत्सङ्ग १.	३३७७६		४३३१९
उत्तरच्छद १.	४३३१६६	” १.	४१४६०	उद्विषित ३.	३३८१५०
उत्तराङ्ग ३.	४३३१४३	उत्सन्नामि १.	३३६७१	उदात्त १. २. ३.	३३६३७
उत्तरायण १.	२११९०	उत्सर्जन ३.	३३६११९	” १. २. ३.	८१७६
उत्तरासङ्ग १.	४३३१२३	उत्सव १.	३३६६१	उदान १.	७१११२
उत्तरीय ३.	४३३१२२	” १.	७११११	उदार १. २. ३.	५१४२०
उत्तरेद्युः (-सू) ४. ८१८८		उत्सादन ३.	८३३५	” १. २. ३.	५१४५६
उत्तान १. २. ३.	५१४९०	उत्साधन ३.	४३३११३	” १. २. ३.	७१४४
उत्तानशय १. २. ३.	५१४२	उत्साह १.	३३६१६७	उदारक १.	३३८५९
उत्ताल १. २. ३.	५१४५२	” १.	३३९७६	उदावर्त १.	४११३२
” १. २. ३.	७१४७	उत्साहा २.	३३२१५	उदासीन १.	३३७४०
उत्त्रास १.	३३६१०६	उत्सुक १. २. ३.	५१४३०	उदास्थित १.	३३७२७
उत्थान ३.	४१४१२८	उत्सृष्ट १.	३३३१५१	” १.	८१११९
” ३.	७३३५	” १. २. ३.	५१४१०१	उदाहार १.	२१४४१
उत्थित १. २. ३.	३३८१८	उत्सेध १.	७१११०	उदित १. २. ३.	७१४५
” १. २. ३.	५१४५२	उदक ३.	४२१२	उदीची २.	२११५
उत्थुस १.	५३३४०	उदक्या २.	४१४१५	उदीचीन १. २. ३.	
उत्पत्तन ३.	८३३५	उदग्र १. २. ३.	५१४८१		५१४९१
उत्पत्तित्व १. २. ३.	५१४४२	उदग्रदत् १.	३३७६९	उदीच्य १.	३३१२२
उत्पत्तिष्णु १. २. ३.	५१४४२	” १. २. ३.	५१४९	उदीर्ण १. २. ३.	५१४५६
उत्पत्ति २.	४१४१८	उदच् ३.	२११८	उदुब्ज १. २. ३.	५१४९०
उत्पल ३.	३३८९९	” १. २. ३. ४.		उदुम्बर १ व.	३३३३९
” १.	४११४६		५१४९१	” ३.	३३२२५
” ३.	४२३३४	उदज १.	५२३३१	” १.	३३३२८
” ३.	४२३३५	उदञ्जन ३.	४३३५५	” १. ३.	८१५४
उत्पलावर्त १ व.	३३१३३	उदधि १.	४२३१०	उदुम्बरा २.	४३३४४
उत्पश्य १. २. ३.	५१४५४	उदन्त १.	२१४३९	उदुल्ल २.	४३३६५
उत्पाट १.	४१४१३७	उदन्या २.	३३६१८१	उदूढ १. २. ३.	५१४८०
उत्पादित १. २. ३.		उदन्वत् १.	४२३१०	” १. २. ३.	७१४६
	५१४१००	उदपान १. ३.	४२३९	उद्गत १. २. ३.	५१४११४
उत्पात १.	३३६१९०	उदय १.	३२३६	उद्गमनीयक ३.	४३३१२०
उत्पाद १.	३३४३२	” १.	३३७४४	उद्गढ १. २. ३.	५१४१३१
उत्पादशयन १.	२३३३३	उदयनीय १.	३३६५८	उद्गातृ १.	३३६७९
उत्पिञ्जल १. २. ३.		उदयाद्रि १.	३२३६	उद्गार १.	४१४१२६
	५१४९४	उदर ३. २.	४१४६७	उद्गाल १.	४१४१२६

[उद्गूर्ण]

वैजयन्तीकोषः

[उपताप]

उद्गूर्ण १. २. ३. ५४११४
 उद्गाहित १. २. ३. ८४४
 उद्गीव १. २. ३. ५४१२०
 उद्ग १. ८५१४२
 उद्गन १. ३१५३५
 उद्गाटन ३. ४१२२१
 उद्गात १. २४४४१
 " १. ३१७२४
 " १. ४३३३२
 उद्गंश १. ४११३५
 उद्गण्ड १. ४१४६
 उद्गाम १. ११२४६
 " १. २. ३. ५४११३२
 उद्गाल १. ३३३६०
 " १. ३१५४३
 उद्ग्राव १. ३१७२११
 उद्गन १. ३३३१०२
 उद्गरण ३. ८३३६
 उद्गर्ष १. ३३३६१
 उद्गव १. ३३३६१
 उद्गान ३. ४३३५४
 " ३. ७३३५
 उद्गार १. ३३८४
 उद्गूम १. २४१२८
 उद्घत १. २. ३.
 ५४११००
 " १. २. ३. ५४१११२
 " १. २. ३. ७४१५
 उद्घथ १. ४१२२९
 उद्घन्ध १. ३५४१
 उद्घन्धवृषभ १. ३३३१२२
 उद्घुद्ध १. २. ३. ३३३१९
 उद्घुहित १. २. ३.
 ५४११००
 उद्घव १. ४१११८
 उद्घिज १. २. ३. ४१११
 उद्घिद् २. ४१११
 उद्घिद् ३. ३३३१२२
 " १. ४११८
 " १. २. ३. ४१११
 उद्घम १. ५१२३३

उद्यत १. २. ३. ५४११४
 उद्यम १. ३३३१६७
 " १. ५१२३४
 उद्यान ३. ३३३३
 " ३. ७३३४
 उद्युक्त १. २. ३. ५४३०
 उद्योग १. ३. ५१२२५
 उद्योत १. २१११६
 उद्र १. ४११५४
 (दर)
 उद्रकलाहक १. ३३३१०१
 उद्रर्तन ३. ४३३११३
 उद्रान्त ३. ३३३६८
 " १. २. ३. ५४११४
 उद्रासन ३. ३३३२१४
 " ३. ८३३५
 उद्राह १. ३३३५५
 उद्ग्रेग १. ३३३१६७
 " ३. ४३३१०६
 " १. ५१२३३
 उद्ग्रेगकर्तरी २. ५३३१०८
 उन्दुर १. ४१३३१
 उन्न १. २. ३. ५४११०७
 उन्नत १. २. ३. ५४१८१
 उन्नतनासिक १. २. ३.
 ५४१६
 उन्नतानत १. २. ३.
 ५४१८३
 उन्नति २. ५१२२४
 उन्नाम १. ५१२२४
 उन्नाल १. ३३३५५
 उन्निद् १. २. ३. ३३३१९
 उन्मत्त १. ३३३७६
 उन्मदिष्णु १. २. ३.
 ५४१४१
 उन्मनस् १. २. ३. ५४३३४
 उन्मथ १. ३३३२११
 उन्माथ १. ३३३४०
 उन्माद १. ३३३१७७
 उन्मान ३. ५११५६
 उन्मिपित १. २. ३. ३३३१९

उन्मीलन ३. ३३३१९०
 उन्मीलित १. २. ३. ३३३१९
 उन्मुख १. २. ३. ५४१५४
 " १. २. ३. ५४१९०
 उन्मूलित १. २. ३.
 ५४११००
 उन्मेष १. ३३३१९०
 उप ४. ८३३१८
 उपकण्ठ १. २. ३. ३३३१२०
 " १. २. ३. ५४११४१
 उपकर्या २. ४३३३०
 उपकल्प १. ३३३११३
 उपकार १. ५१२२२
 उपकारिका २. ४३३३०
 उपकार्या २. ४३३३०
 उपकुञ्जिका २. ३३३८५
 " २. ३३३८७
 उपकुर्वाण १. ३३३८८
 उपकुल्या २. ३३३८७
 उपक्रम १. २४१४१
 " १. ३३३२५
 " १. ५१२१५
 " १. ८३३१८
 उपक्रिया २. ५१२२२
 उपक्रोश १. ३३३१९३
 उपखिल ३. ३३३३३
 उपगूहन ३. ४३३१६९
 उपग्रह १. ८३३१८
 उपग्राह्य ३. ३३३४५
 उपग्र ३. ४३३१२
 उपचर्या २. ४३३१३९
 अपचार १. ८३३१७
 उपचित १. २. ३. ५४१५७
 " १. २. ३. ५४११०८
 उपचित्रा २. ३३३११३
 उपच्छन्दन ३. २४१२३
 उपजाप १. ३३३१३
 उपजिह्विका २. ४३३३८
 उपजोषम् ४. ८३३१७
 उपज्ञा २. ३३३२५
 उपताप १. ८३३१९

उपत्यका २.	३।२।९	उपरक्षण ३.	३।७।५९	उपसत्र १.२.३.	पा३।१०४
उपत्रिंश १. २. ३ व.	पा१।३५	उपरति २.	४।२।३६	उपसम्पन्न १. २. ३.	३।७।२२०
उपदंश १.	३।१।५२	उपरथ्या २.	४।३।१६	" १. २. ३. ४।३।९४	
" १.	४।३।८६	उपरमग ३.	पा२।३६	" १. २. ३. ८।५।२६	
" १.	४।४।३२	उपराग १.	२।१।३०	उपसम्भाषण ३.	२।४।३३
उपदा २.	३।७।४५	उपराम १.	पा२।३६	उपसर्ग १.	३।६।१९०
उपदीका २.	४।१।३८	उपरि ४.	८।८।१९	उपसर्जन ३.	पा३।६४
उपदेहिका २.	४।१।३८	उपरिष्ठात् ४.	८।८।१९	उपसर्ग २.	३।४।४६
उपद्रव १.	३।६।१९०	उपरिस्थूणा २.	४।३।४१	उपस्कर १.	४।३।९०
उपद्रष्टृ १.	३।६।८१	उपल १.	३।२।८	उपस्करस्वलिनी २.	३।७।५४
उपधा २.	३।६।१९५	" १. २. ३.	७।५।१७	उपस्करव्रत ३.	३।६।१४८
" २.	७।२।३	उपलब्धि २.	३।६।१६४	उपस्थ १.	३।६।१०३
उपधान ३.	४।३।१६७	" २.	८।२।४	(उपस्थाव)	
उपनत १.२.३.	पा३।१०४	उपलम्भ १.	पा२।१९	" १.	४।४।६०
उपनय १.	३।६।७	उपलवण १.	३।८।१२६	" १. ३.	४।४।६७
उपनाय १.	३।६।७	उपला २.	४।३।१६३	उपस्थान ३.	पा२।२१
उपनाह १.	३।९।१२१	उपलिङ्ग ३.	३।६।१९०	उपस्थित १. २. ३.	पा३।१०४
" १.	८।१।१७	उपवन ३.	३।३।२	उपस्पर्श १.	४।३।११३
उपनिधि १.	३।८।१२	उपवर्ण १.	३।५।२	" १.	८।१।१९
उपनिमन्त्रण ३.	३।६।९३	उपवर्तन ३.	३।७।४९	उपस्पर्शन ३.	८।३।१४
उपनिवेशिनी २.	२।१।७५	" ३.	३।७।१११	उपहसित ३.	३।९।८४
उपनिषद् २.	८।२।३	उपवर्ष १.	३।६।१५४	उपहार १.	३।७।४५
उपन्यास १.	२।४।४१	उपवसथ १.	४।३।२	उपहालक १ व.	३।१।१७
उपपत्ति १.	४।४।३८	उपवस्तु १.	३।६।१४४	उपह्वर ३.	८।३।५
उपप्राप्त १. २. ३.	पा३।१०४	उपवास १.	३।६।१४४	उपांशु १.	३।६।९२
उपप्लव १.	२।१।३०	उपविंश १. २. ३ व.	पा१।३५	" ४.	८।७।३२
" १.	३।६।१९०	उपविषा २.	३।८।९०	उपाग्न १. २. ३.	पा३।६४
उपबर्ह ३.	४।३।१६७	उपविष्कर ३.	४।३।१७	उपात्यय १.	३।६।११४
उपबर्हण ३.	४।३।१६७	उपविष्ट १. २. ३.	पा३।१०	उपादान ३.	पा२।१८
उपभृत् २.	३।६।१००	उपवीत ३.	३।६।२०	उपाधि १.	७।१।११
उपमन्त्रण ३.	२।४।४	" ३.	८।३।१७	उपाध्याय १.	३।६।२२
उपमा २.	पा३।१२२	उपवेद १.	३।६।३०	" १. २. ३. ८।९।४४	
उपमान ३.	३।९।२१	उपवेश ३.	पा२।१४	उपाध्याया २.	४।३।२३
" ३.	८।९।१७	उपवैणव ३.	२।१।६७	उपाध्यायानी २.	४।३।२२
उपयम १.	३।६।५५	उपशब्दक ३.	४।३।११	उपाध्यायी २.	४।३।२२
उपयाम १.	३।६।५४	उपशाय १.	४।३।१६७	" २.	४।३।२३
उपयोग १.	पा२।२५	उपश्रुत १.२.३.	पा३।१०६	उपानह २.	४।३।१६२
उपरक्त १.	२।१।३०	उपसंन्यान ३.	४।३।१२१		
" १. २. ३.	पा३।६८	उपसंहार १.	पा२।१८		
		उपसंग्रहण ३.	३।६।४०		

उपान्त]

वैजयन्तीकोपः

[ऊरव्य

उपान्त १. २. ३.	उर्वरा २.	३११४	उपस् २. ३.	२११६९
५४१४२	" २.	३११५७	" २. ३.	६५१८
उपायन ३.	उर्वारि २.	३३११६७	उपा २.	२११५७
उपालम्भ १.	" १.	३३११७२	" २.	३१४४१
उपावृत्त १. २. ३.	उर्वी २.	३११११	" ४.	८८१११
३१७११०७	उलङ्कल १.	४११३७	उपापति १.	१११२९
उपासङ्ग १.	उलन्द १.	१११४६	उषित १. २. ३.	७४१७
उपासन ३.	उलप १.	३३३७	ऊढू १.	३१४६७
उपासना २.	" १.	३३३२२९	उद्ग्रीवक १.	४४१३३
उपासित १. २. ३.	उलुम्ब ३.	४३३७०	उद्ग्रीवपुच्छिका २.	३३३१२६
५४११०५	उलूक १.	२३३२२	उट्टिका २.	४३३६१
उपाहित १.	उलूकचेटी २.	२३३२१	उट्ण १.	२११८८
उपेचा २.	उलूकारि १.	२३३१६	" १.	३३३५६
उपेन्द्र १.	उलूखल १.	३३३१९	(कृष्ण)	
उपोढ १. २. ३.	" ३.	४३३६५	" ३.	५३३७
उपोदिका २.	" ३.	४४१७०	" १. २. ३.	६५१८
उपोद्गत १.	उलूखली २.	३३३१११	उट्णक १. २. ३.	५४१५४
उसकृष्ट १. २. ३.	उलूल १.	३३३५७	उट्णवीर्य १.	४११५४
उभयद्युः (-स्) ४. ८८१९	उत्का २.	११३३२	उट्णागम १.	२११८८
उभयेद्युः (-स्) ४. ८८१९	उत्त ३.	४४११८	उट्णिका २.	४३३८०
उमा २.	उत्तवण १.	५३३१९	उट्णीष १. ३.	४३३२४
" २.	" १. २. ३.	५४१३४	" ३.	४३३३५
उमापति १.	" १. २. ३.	५४१३७	" ३.	४४१८५
उमासुत १.	उत्तवणक ३.	३३३८२	उत्त १.	२१११६
उम्बुरा २.	उत्तवस्थूणा २.	४३३३९	" १. २.	६५१९
उम्य १. २. ३.	उत्तमुक ३.	१३३३२	उत्ता २.	३३३४२
उरग १.	उत्तसनक ३.	३३३८२	ऊ	
उरगाशन १.	उत्ताघ १. २. ३.	४४१३३	ऊक १.	२३३३
उरण १.	उत्ताप १.	२४३२९	ऊख १.	४४३६५
उरभ्र १.	उत्तलिखित १. २. ३.	८४३५	ऊत ३.	४३३४
उररी ४.	उत्तल १.	३३३२०८	" १. २. ३.	५४११००
उरस् ३.	उत्तलक १.	३३३२२९	" १. २. ३.	५४१११२
" ३.	उत्तलेखनीय १.	३३३४२	ऊति २.	६३३५
उरसिल १. २. ३.	उत्तोच १.	४३३१२३	ऊधस् ३.	३३३५१
उरस्य १.	उत्तोल १.	४३३१४	ऊधस्य ३.	३३३४६
उरस्वत् १. २. ३.	उशनस् १.	२३३३४	ऊन १. २. ३.	५४३८६
उरस्त्रिका २.	उशि १. ३.	६५१८	ऊम् ४.	८८११४
उराह १.	उशीर १. ३.	३३३२३१	ऊम १.	६३३८
उरु १. २. ३.	उप १.	२३३६८	ऊररी ४.	८८११७
उरुक्रम १.	उयण ३.	३३३७९	ऊरव्य १.	३३३१
उरुवह्नी २.	उयर्बुध १.	१३३१५		

[उरी]

शब्दानुक्रमिका

[एकविंशतितम]

उरी ४.	८७१७	ऊपणा २.	३८७६	ऋवम १.	३७९७
ऊरु १. २.	४४५९	(दूपणा)		" १.	३९१३२
" १. २.	८९१२६	ऊपर १. २. ३.	३८१९८	" १.	७११३३
ऊरुज १.	३८११	ऊपरज ३.	३८१२३	ऋपभा २.	३६५१
ऊरुपर्वन् ३.	४४५९	ऊपवत् १. २. ३.	३८१९८	ऋपभी २.	३३१२९
ऊरुमूल ३.	४४५९	ऊपमक १.	२११८८	ऋपि १.	११३०
ऊर्ज २.	८२१९८	ऊपम् १.	२११८८	" १.	३६१५०
ऊर्ज १.	६११९	" १.	३६३६	" २.	३८१९४
ऊर्जस्वल १. २. ३.		" १.	५४१९	" १.	६११९
	३७१५१	ऊह १. २.	३६१७५	ऋष्टि १. २.	३८१५८
ऊर्जस्विन् १. २. ३.		ऊहन ३. २.	३६१७५	ए	
	३७१५१	ऋ		एक १. २. ३.	५१२५
ऊर्जित १. २. ३.	३७१५१	ऋ २.	८२१९८	" १. २. ३.	६४३३
ऊर्णनाम १.	४१३३४	ऋच १.	३३३६९	एककुण्डल १.	८११५१
ऊर्णवाहि १.	४१३३५	" १.	३४३७	एकग १. २. ६.	५४१२८
ऊर्णा २.	३४२५	" ३.	५१६०	एकगुरु १.	३६२४
" २.	३९३३	" १. २. ३.	६५१९	एकग्रन्थ १.	३६३३
" २.	६२३६	ऋक्षगन्धिका २.	३३३९६	एकतान १. २. ३.	
ऊर्णायु १.	७१३३	ऋक्षर १.	७१३४		५४१२९
ऊर्णविहि १.	४१३३५	ऋच २.	३६२६	एकतीर्थिन् १.	३६२४
ऊर्ध्वक १.	३९१२९	ऋचीष ३.	४३५७	एकदन्त १.	११५३
ऊर्ध्वजालुक १. २. ३.		ऋजु १. २. ३.	५४१२४	एकदा ४.	८८६
	५४१०	" १. २. ३.	६४२	एकदृश् १. २. ३.	५४३३
ऊर्ध्वजु १. २. ३.	५४१०	ऋण ३.	३८१४	एकदेश १.	४४५५
ऊर्ध्वधन्वन् १.	१२३	ऋत ३.	३८३	एकधुर १. २. ३.	३४५८
ऊर्ध्वनापित १.	३५६७	" १. २. ३.	५३३	एकधुरीण १. २. ३.	
ऊर्ध्वमूल १.	३३२२९	" ३.	६३३		३४५८
ऊर्ध्वलोक १.	११११	ऋतु १.	२११८६	एकपक्षति २.	२१६९
ऊर्ध्वसूचिका २.	४३४८	" १.	४४१६	एकपटलमाली २.	
ऊर्ध्वा २.	२१३६	ऋतुमती २.	४४१५		३३१८५
ऊर्मि १. २.	४२१४	ऋते ४.	८८४	एकपद ३.	५२३६
ऊर्मिका २.	४२१४४	ऋत्विज् १.	३६७८	एकपदी २.	३१४९
ऊर्मिमत् १. २. ३.		" १.	८९४४	एकपर्णा २.	११६१
	५४१२३	ऋद्ध १. २. ३.	३८६७	एकपाटला २.	११६१
ऊर्मिला २.	३६४५	ऋमु १.	११३	एकपिङ्ग १.	१२५८
ऊवध्य ३.	३६२०५	ऋमुक्षिन् १.	१२४	एकरूप १. २. ३.	५४७९
ऊष १.	३८२५	ऋश्य १.	३४१४	एकवर्ण १.	३५३
" ३.	३८१२३	ऋश्यकेतु १.	११२९	एकविंश १. २. ३.	
" १.	५३२८	ऋश्यप्रोक्ता २.	३८३		५४२२
ऊषण ३.	३८७५	" २.	८२४	एकविंशतितम १. २. ३.	
" १.	५३२६	ऋषणी २.	३३१२४		५४२२

एकशततम]

वैजयन्तीकोषः

[ओषधि

एकशततम १. २. ३.	५११२३
एकसर्ग १. २. ३.	५११२८
एकहायनी २.	३११४५
एकाक्ष १.	२३३१५
एकाग्नि १.	३१६७३
एकाग्र १. २. ३.	५११२८
एकाङ्ग १.	२११३२
एकाङ्गग्रह १.	४११३३
एकाङ्गुल ३.	४११२०
एकादश १. २. ३.	५११२१
एकादशी २.	३१११८
एकान्त १. २. ३.	५१११९
" १. २. ३.	५११२९
" १. २. ३.	५११३२
एकान्तरित्तिन् १. २. ३.	३११३५
एकान्तरिन् १. २. ३.	३११३५
एकायन १. २. ३.	५११२८
एकायनगत १. २. ३.	५११२९
एकावली २.	४३१४१
एकाष्टील १.	३३१९४
एकाष्टीला २.	३३१३०
एकाह १.	३१६८४
एजन ३.	३१९८९
एड १. २. ३.	५११३३
एडक १.	३१६४४
एडगज १.	३३१५८
एडमूक १. २. ३.	५११३३
एडूक ३.	४३३३७
एण १.	३११२२
एणीकृत १. २. ३.	२१११४
एत १.	५३३२३
एतन १.	३३३२०४

एतर्हि ४.	८१८५
एतश १.	३३६१
एतावतिथ १. २. ३.	५११२०
एतिन् १.	३३३२०५
एत्थाल १.	४११४४
एध १.	३३६९६
एधस् ३.	३३६९६
एधित् १. २. ३.	५१११६
एनस ३.	३३७४७
" ३.	८३११६
एरका २.	३३३२३३
एरण्ड १.	३३३६४
एलक १.	३३३३६
एला २.	३३३१०३
" २.	३३८८७
एलारसालक ३.	५३३३६
एलावालुक ३.	३३८९५
एव ४.	८३११८
" ४.	८३११५
एवम् ४.	८३११९
" ४.	८३११५
" ४.	८३११७
एषण १.	३३७१८०
एषणा २.	३३८५०
एषणिका २.	३३९१९
एषमः (-स्) ४.	८३११०
ऐ	
ऐ ४	८३१२
ऐकागारिक १.	३३९५५
ऐकगुद ३.	३३३२२
ऐतिह्य ३.	२३३३८
ऐन्द्र १.	३३६८६
ऐन्द्रलुप्तिक १. २. ३.	४३११७७
ऐन्द्रि १.	२३३१७
ऐन्द्री २.	१३३६२
" २.	२३३१४
" २.	३३३१७२
ऐरावण १.	१३३१२

ऐरावत १.	१३३१२
" १.	२३३१८
" ३.	२३३१४९
" ३.	२३३२३
" ३.	३३८११५
ऐरावती २.	२३३१४६
" २.	२३३२५
ऐरुक ३.	३३६८८
ऐरुण्डक १.	४३३४३
ऐलविल १.	१३३१५६
ऐलेय ३.	३३८९५
ऐश्वर ३.	३३३१५८
" ३.	३३९११०
ऐश्वर्य ३.	१३३१४७
" ३.	८३३३४
ऐह १.	३३३१६५
ओ	
ओकस् ३.	४३३१९
" ३.	६३३४
ओघ १.	३३९१२३
" १.	४३३३०
" १.	६३३१०
ओङ्कार १.	३३३२३३
ओज १. २. ३.	५३३२३
ओजस् ३.	६३३४
ओजस्विन् १. २. ३.	३३७१५१
ओद्वित ३.	३३३५
ओत १. २. ३.	३३९१२
ओतु १.	३३३७१
ओदन १. ३.	४३३७६
ओम् ४.	८३३३
ओराल १.	५३३२०
ओलक १.	३३३१५१
" १.	५३३४३
" १.	५३३४४
" १.	५३३४४
ओलहन् १.	३३८४४
ओषक ३.	३३७५६
ओषधि २.	३३३३६
" २.	३३८७५

[ओषधीश]

शब्दानुक्रमणिका

[कटक]

ओषधीश १.	२।१।२५	औष्टक ३.	५।१।५	कङ्काल १. ३.	४।४।११४
ओष्ठ १.	४।४।८७	औष्णिह ३.	३।६।३४	कङ्कलि १.	३।३।४०
ओष्ठय १. २. ३.	५।४।११७	क		कङ्क २. ३.	३।८।५५
ओष्ण ३.	५।३।९	क १.	१।१।७	कच १.	३।५।१५
ओसर १.	३।८।८४	" ३.	४।२।२	" १.	५।१।९७
ओहार १.	४।१।५०	" १.	८।५।३६	कचङ्काल २.	३।१।४२
अौ		कंवि २.	४।३।१२३	कचू १.	३।३।२०८
औक्षक ३.	५।३।१०	कंस ३.	५।१।५५	कचूर १. २. ३.	५।४।६६
औजस ३.	३।२।१८	" १. ३.	६।५।११	कच्चित् ४.	८।७।१९
औत्सुक्य ३.	३।६।१७८	कंसरिपु १.	१।१।२६	कच्चोर ३.	३।३।२०३
औदनिक १. २. ३.	४।२।९३	कंसोरपल ३.	४।२।७२	कच्छ १.	४।२।३२
औदर १.	४।३।८२	ककुद् १. २.	८।५।२८	" १.	४।१।१४
औदरिक १. २. ३.	५।४।५१	ककुद् ३.	३।७।८०	कच्छप १.	१।२।६०
औदुम्बर १.	३।६।१२५	" ३.	८।५।२८	" १.	४।१।५०
औदुम्बरायण १.	३।६।८	ककुदावर्त १.	३।७।९७	कच्छपी २.	४।१।११९
औद्दालक ३.	३।८।१३६	ककुदिन् १.	३।४।५४	कच्छुर १. २. ३.	४।४।१४५
औपगवक ३.	५।१।७	ककुद्वात् १.	३।४।५४	कच्छुरा २.	३।३।१२५
औपयिक १. २. ३.	५।४।१०३	ककुद्वाती २.	४।४।६४	" २.	३।३।१२९
औपरोषिक १.	३।६।१९	ककुम् २.	२।१।२	कच्छू २.	४।४।१२३
औपवाह्य १.	३।७।६९	ककुम् १.	३।९।१२०	कच्छूदार १.	३।३।५४
औसिका २.	३।९।१०६	ककुहा २ व.	२।१।२१	(कच्छूदार)	
औमीन १. २. ३.	३।८।२०	कक्खट १.	५।३।५	कच्छूरक १	३।३।११७
औरञ्ज १.	४।३।१२९	कक्खटी २.	३।२।१३	कज्जल ३.	४।३।१५७
औरञ्जक ३.	५।१।१०	कच १.	४।३।३३१	कन्जुक १.	४।१।२१
औरस १.	४।३।४५	" १.	६।१।३४	" १.	४।३।१२८
और्ध्वरथ्यक १. २. ३.	३।६।१७	" १. २. ३.	४।४।६७	" १.	७।१।१५
और्व १.	१।२।२१	कच्यक ३.	३।३।१	कन्जुकिन् १.	३।७।२३
और्वन्नतिन् १. २. ३.	३।६।१३५	कचया २.	३।७।८४	कज ३.	४।२।३६
और्वशेय १.	३।६।१५१	" २.	४।३।३३१	" १.	४।४।९८
औल्लूक १. २. ३.	३।६।१३२	" २.	६।२।७	कज्जल ३.	४।२।३६
औशीर ३.	५।१।१७	कचयापट १.	४।३।१२९	कट १.	३।७।७५
" ३.	७।३।५	कङ्क १.	२।३।३१	" १.	३।७।२१६
औषध ३.	३।८।७५	कङ्कट १.	३।७।१५३	" ३.	३।८।७५
" ३.	४।४।१४१	कङ्कटीक १.	१।१।५५	" १.	४।१।२३
		कङ्कण ३.	४।३।१४३	" १.	४।३।१२
		" ३.	७।३।११	" १.	४।३।१६६
		कङ्कत १.	४।३।११२	" १.	४।४।६५
		" १. २. ३.	८।९।२७	" १. २. ३.	६।५।१८
		कङ्कपत्र १.	३।७।१८१	" १. २. ३.	८।९।२७
		कङ्कमुख १.	३।९।१७	कटक १. ३.	३।२।८

कटक]

वैजयन्तीकोषः

[कतृण

कटक १. ३.	४३१४
" १. ३.	४३१४४
" १. ३.	७५३१
कटकट ३.	३१८११९
कटकर १.	३१५१७
" १.	३१५७६
कटकर्मन् १.	३१५१७
कटकी २.	४३१२४
कटङ्कदेरी २.	३३१२१३
कटम् १.	१११४६
कटमी २.	३३११३९
कटमोष १.	३३१२०१
कटशर्करा २.	४११५७
कटाटङ्क १.	१११४४
कटाह १.	३३११०
" १.	४३१५६
कटि २.	४३१६४
कटिका २.	३७११९९
कटिन्न ३.	७३१११
कटिप्रोथ १.	४३१६५
कटिल्लक १.	३३११६३
कटिल्लका २.	३३११४६
कटिशीर्षक १.	४३१६५
कटिसूत्र ३.	४३११४६
कटी २.	८११२७
कटीकूप १.	४३१६५
कटीर ३.	७३१६
कटु १.	३३१५३
" १.	३३१२८
" १.	३३१२०४
" ३.	३३१२१३
" ३.	३१८७९
" ३.	३१८८०
" २.	३१८८६
" १.	३१८१३०
" १.	५३१२६
" १.	५३१२६
" १.	५३१४७
" १. २. ३.	६१११३७
" १. २. ३.	६१४४
कटुकषायक १.	५३१३०

कटुका २.	३१८५०
कटुकाण १.	२३१३४
कटुतिक्त १.	५३१३०
कटुतिक्तकषाय १.	
कटुतुम्बी २.	५३१३७
कटुभङ्ग ३.	३३१२१४
कटुम्भरा २.	३१८८६
कटुरोहिणी २.	३१८८८
कटूत्कट ३.	३३१२१३
" ३.	३१८८०
कटुफल १.	३३१५८
कटुवङ्ग १.	३३१६८
कटुवर ३.	३१८१४९
कटुवाङ्ग १.	३३१६८
कटुवार १.	३१८१३९
" १.	५३१३२
कटाकु १.	७१११८
कठार १.	३११३२
कठिञ्जर १.	३३१११८
कठिन १.	५३१४
कठिनी २.	३१२१३
कठोर १.	५३१५
कडङ्गर १.	३१८६४
कडम्बक १.	४३१९०
कडार १.	५३११८
कज १.	३१५३०
" १.	४३१३७
" १.	४३१७०
" १.	६१११५
कणकुक्कुट १.	३१५३४
कणजीरण १.	३१८८४
कणय १.	३१७१६७
कणा २.	३१८८४
कणि १.	२३१२
कणिका २.	३११२५
" २.	३११२०
" २.	७३१४
कणिश ३.	३१८६४
कण्टक १.	२३११५
" १.	३१८८४

कण्टक १.	७१११४
कण्टकच्छेदन १.	३१७१६५
कण्टकप्रतीसार २.	
	३१७५३
कण्टका २.	२३१४७
कण्टकानना २.	२३१४७
कण्टकारी २.	५३११०५
कण्टकाली २.	५३११०६
कण्टकिन् १.	३३१५०
" १.	३३१६४
कण्टकिफल १.	३३१७४
" १.	३३११४१
कण्ठ १. २. ३.	४३१८३
" १.	६१११३
कण्ठकूणिका २.	३११११७
कण्ठदोष १.	३११११२
कण्ठपाल १.	२३१२६
कण्ठभूषा २.	४३१३३७
कण्ठमणि १. २.	४३१७०
कण्ठीरव १.	३३१२
कण्ठकाल १.	१११४५
कण्ठेगुड १.	४३१७०
कण्ठन ३.	४३१६६
" ३.	४३१६७
कण्ठार ३.	४३१३९
" १.	५३११३
कण्डू २.	४३१२४
कण्डूति २.	४३१२४
कण्डूयन ३.	४३१२४
कण्डूया २.	४३१२४
कण्डूर १.	३३१२०८
कण्डूरा २.	३३१२९
कण्डोल ३.	४३१६४
कण्डोलवीणा २.	३११२७
कण्व १. २. ३.	५३११३
कत ३.	४३११
कतक १.	३३१४२
" ३.	३१८५०
कतिथ १. २. ३.	५३१२०
कतिपयथ १. २. ३.	५३१२०
कतृण ३.	३३१२३४

कथम्]

शब्दानुक्रमणिका

[कपोल

कथम् ४. ८८१२०
 कथा २. २१४३८
 ,, २. ३१९१४२
 कथाप्रसङ्ग १. २. ३. ८१४१३
 कथित १. ५३१५८
 कदध्वन् १. ३११५०
 कदन ३. ३१७२१५
 कदन्निका २. ३१६३१
 कदम्ब १. ३१३६०
 ,, १. ३१३६७
 कदम्बक १. ३१८४१
 ,, ३. ५११२
 कदर १. ३१३६३
 ,, १. ४३१२३
 कदर्य १. २. ३. ५१४५९
 कदल १. ३११७३
 कदलि २. ३१७८६
 कदली २. ३११७४
 ,, २. ३१४१८
 ,, २. ३१४२५
 कदाचित् ४. ८८१७
 कदुष्ण ३. ५३१९
 कद्गु १. ५३१८
 कद्गु १. २. ३. ५१४२५
 ,, १. ५१४९७
 कनक ३. ३१२१९
 कनकाक्षी २. २३१२१
 कनिष्ठ ३. ३१८१२२
 कन्दर्प १. १११२७
 ,, ३. ४१४३१
 ,, १. २. ३. ५१४४
 ,, १. २. ३. ७१४९
 कनिष्ठा २. ४१४२७
 ,, २. ४१४७४
 कनीनिका २. ४१४७४
 ,, २. ४१४९४
 कनीयस् १. २. ३. ७५५९
 कनीयस् ३. ३१२२४
 कन्तु १. ६१११२
 कन्थटिका २. ४३१२८

कन्था २. ४३३३७
 ,, २. ४३१२८
 कन्द १. ३. ३३३२०८
 ,, १. ३. ४२१४२
 ,, १. ३. ४३१९०
 ,, १. ८६१२५
 कन्दर १. २. ३. ३१२१६
 ,, १. ३१४३०
 ,, १. २. ३. ८१९३७
 कन्दराल १. ३३३५९
 कन्दरी २. ८१९३७
 कन्दल १. ३३३२१०
 ,, १. ८१९३१
 ,, १. २. ३. ८१९३८
 कन्दली २. ३३३२१०
 ,, २. ८१९३८
 कन्दु १. ४३१५६
 ,, १. २. ३. ८१९२७
 कन्दुक १. ४३१६२
 कन्दोज्ज ३. ४२३३४
 कन्दोष्ठ ३. ४२३३४
 कन्धरा २. ४१४८३
 ,, २. ४१४११७
 कन्यका २. ४१४६
 कन्यसा २. ४१४२७
 कन्या २. ३३३६७
 ,, २. ३३३८८
 ,, २. ४१४६
 ,, २. ८६११४
 कन्याकुब्ज १. ४३३७
 कन्यापिपीलिका २. ४१३३७
 कन्याप्रसूतिजा २. ३३३४८
 कप १. ३३३७२
 (कृपा)
 कपट १. ३. ३६१९५
 कपर्द १. १११५०
 ,, १. ४११५७
 कपर्दिन् १. १११४०
 कपाल १. २. ३. ४३१५९
 ,, १. ३. ४१११५
 कपालिन् १. १११४०

कपालिनी २. १११६४
 कपाली २. ४३१५९
 कपि १. ३३३३९
 ,, १. ३३३६१
 ,, १. ६१११३
 ,, १. ८१९१०
 कपिकच्छ २. ३३३१२९
 कपिकोटा २. ३३३१७९
 कपिञ्जल १. २३३२०
 कपिथ १. ३३३३२
 (कृप)
 कपिस्थपत्नी २. ३३३१५७
 कपिमिया २. ३३३८१
 कपिल १. १११३०
 ,, १. १११३१
 ,, १. ३३३६९
 ,, १. ३३८११०
 ,, १. ५३३१८
 कपिला २. २११९
 ,, २. ३३२२७
 ,, २. ३३३९२
 ,, २. ३३३४३
 ,, २. ३३८९५
 कपिलोहक ३. ३३२२७
 कपिवल्ली २. ३३८७८
 कपिश १. ३३९४८
 ,, १. ५३३१८
 कपिशा २. ४१३३६
 कपी २. ३३३५६
 कपीतन १. ३३३३१
 ,, १. ३३३५९
 ,, १. ३३३७२
 कपोत १. २३३२३
 ,, १. ३३८१२९
 ,, १. ५३३१२
 ,, १. ७११२०
 कपोतपाली २. ४३३५३
 कपोताङ्घ्रि २. ३३८१००
 कपोताञ्जन ३. ३३२४२
 कपोल १. ४१४९०
 कपोल २. ३३६६६

कप्याख्य १.	३१८११०
कफ १.	४१४१२१
कफणि १. २.	४१४७२
कफहरी २.	३१८४८
कफिल १.	३१९११३
कफोणि १. २.	४१४७२
कवत १.	४३११०१
कवन्ध १. ३.	३१७२१६
कवरी २.	४१४१००
कवल १.	४३११०१
कवली २.	४३११११
(कपिली)	
कम् ४.	८१७३
कमठ १. २. ३.	७१५२०
कमण्डलु १.	३१६१२४
” १. ३.	८१९३१
कमन १. २. ३.	५३३३४
कमनीय १.	३३३८२
कमल ३.	३१८९२
” ३.	४२३३९
” १. २. ३.	७१५२६
कमलच्छद १.	२३३३१
कमित् १. २. ३.	५३३३५
कमुजा २.	४१४१०२
कम्प २.	३१९८९
कम्पिल १ व.	३३३९५
कम्प १. २. ३.	५३३७९
कम्बर १. २. ३.	५३३७८
कम्बल १.	४३३२९
कम्बु १.	३१७६२
” १. २. ३.	४११५५
” १. २.	६१५९
कम्बुग्रीवा २.	४१४८४
कम्बोज १.	३३३७०
कम् १. २. ३.	५३३३५
कर १.	३१७४५
” १.	३१८३३
” ३.	४३३७६
” १.	४१४७३
” १.	६१११०
” १.	८१९१२

करक १.	२१२७
” १.	३३३२५
” १.	३३३७२
” १.	४३३५७
” १.	४१४१३७
करकवर्तिका २.	४३३६०
करङ्क १.	४३३५८
” १.	४३३१०७
” १.	४१४११४
करज ३.	३१८९९
” १.	४१४७६
करञ्ज १.	३३३६२
करञ्जक १.	३३३१०७
करट १.	२३३१७
” १.	३१७७५
” १.	३१८११६
” १.	७१५२१
करटा २.	३३३४९
करण १.	३१५१७
” १.	३१५५५
” १.	३१५७४
” १.	३१५१०३
” ३.	३३३६०
” ३.	३३३२१०
” १.	३१९२३
” ३.	३१९९८
” ३.	४१४५२
” १.	४१४७१
” ३.	७३३९
करणीपरिवर्तन ३.	
” ३१९१४१	
करण्डी २.	३१९३३
करपत्र ३.	३१९३६
करपोणि १.	४१४७१
करभ १.	३३३६७
” १.	३३३६७
” १.	४१४७५
” १.	७१११९
करमर्द १.	३३३८३
करमर्दिका २.	३३३८४
करम्ब १.	४३३१०६

करम्ब १. २. ३.	५३३७८
करम्भ १.	४३३७१
करवालिका २.	३३३१६०
करवी २.	३३३१३२
करवीरक १.	३३३१९१
करवीरा २.	३३३१२
करवीरिका २.	३३३१८
करशाखा २.	४१४७५
करहाट १.	४३३४२
कराल १.	३३३१२२
” ३.	४३३६२
” १. २. ३.	७३३८
करालिक १.	३३३५
” १.	८१९२०
करालिका २.	१११६१
करालिन् १.	३३३९७
” १.	५३३९
कराली २.	१३३३०
करिणा २.	३३३७०
करिणीचार ३.	२३३७
करिन् १.	३३३६०
करिशोलुक ३.	२३३६
करीर १.	४३३५८
” १.	७१५१९
करीरपृष्ठ ३.	३३३१७६
करीष १. ३.	३३३६१
करीषामि १.	१३३२०
करुण १.	३३३३५
” १.	३३३१५०
” १.	३३३७५
” १. २. ३.	३३३७९
करुणा २.	३३३१९२
करुश १ व.	३३३३६
करेणु २.	३३३७०
” २. १.	७१५१९
करैरक ३.	५३३४
करोटक ३.	४३३६३
करोटि २.	४३३११५
करोटिका २.	४३३७७
करोलक १.	५३३३८
कर्क १.	३३३९९

कर्कट १.	३११४६	कर्णिका २.	३१७७१	कर्मण्यकृत् १. २. ३.	
कर्कटस्कन्ध १.	२३३३१	" २.	३१८६७		५१४७३
कर्कटि १.	३३३१६६	" २.	३१९३०	कर्मण्या २.	२१९६
कर्कटिनी २.	३३३२१३	" २.	३२०४६	कर्मदेव १.	१११६
कर्कट १. २.	७१२७	" २.	३३१३३	कर्मन् ३.	३३३३७
कर्कर १.	३३३१०९	कर्णिकार १.	३३३७२	(कर्मठ)	
कर्कराल १.	३३३१८	कर्णिकारल १.	३३३१८२	" ३.	३३९१८
कर्करी २.	३३३१७	कर्णिरथ १.	३३३१२६	" ३.	५२१९
कर्कश १.	३३३१५	" ३.	३३३१२७	" ३.	६३३४
" १.	३३३१६५	कर्णेजप १. २. ३.	५३३२५	" १. ३.	८१९३१
" १.	५३३३	कर्तन ३.	३३३१११	कर्मन्दिन् १.	३३३१६०
" १. २. ३.	७३३८	" ३.	३३३११०	कर्मफल १.	३३३३७
कर्कशिन् १.	३३३७४	" १.	३३३३६	कर्मभेद १.	५३३९
कर्कशी २.	३३३८९	कर्तनभाण्ड ३.	३३३१९	कर्मरङ्ग १.	३३३३७
कर्कार १.	३३३१६८	कर्तनी २.	३३३२६	कर्मयत् १. २. ३.	५३३७४
" १.	३३३१६९	कर्तरी २.	३३३१८५	कर्मवाटी २.	२३३६९
कर्कोट १.	३३३१६४	" २.	३३३३७	कर्मशाला २.	३३३२३
कर्कोटकी २.	३३३१६१	" २.	३३३१०८	कर्मशील १. २. ३.	
कर्ण १. २. ३.	३३३५९	" २.	७३३३		५३३७२
" ३.	३३३१७	कर्तु १.	३३३३७	कर्मशूर १. २. ३.	५३३७२
" १.	३३३१२	कर्त्रका २.	३३३२६	कर्मसाक्षिन् १.	२३३१३
कर्णजमल १.	३३३१२	कर्दम ३.	२३३८	कर्मार १.	३३३२१४
कर्णजलका २.	३३३३३	कर्दम १.	३३३२५	" १.	२३३१६
कर्णजाह ३.	८३३१६	कर्पट १.	३३३३३०	कर्मारवी २.	२३३३३१
कर्णधार १.	३३३१९	कर्पर १.	३३३१५६	कर्मिन् १. २. ३.	५३३७४
कर्णपूर १.	३३३७०	" १.	३३३१५९	कर्मी २.	६३३७
" १.	५३३३३४	" १.	३३३११५	कर्वेट १. ३.	३३३३
" १. ३.	८३३६	" १.	७३३१९	कर्वेट ३.	३३३३
कर्णपूरक १.	३३३४०	कर्पराल १.	३३३४६	कर्प १. ३.	५३३४९
" १.	३३३१००	कर्परी २.	३३३४३	कर्पक १.	२३३३२
कर्णभूषण ३.	३३३३४	" २.	३३३१००	" १.	३३३१७
" ३.	३३३३३३	कर्पूर १.	३३३१०५	" १. २. ३.	३३३८
कर्णमोटी २.	१३३६४	कर्जुर ३.	३३३२०	कर्पफल १.	३३३१७६
कर्णलतिका २.	३३३९३	" १.	५३३२४	कर्पफला २.	३३३१७७
कर्णविहीन १. २. ३.		कर्मकर १. २. ३.	२३३१५	कर्पायु १.	३३३४५
	३३३५९	" १. २. ३.	५३३७३	कर्पू १. २.	३३३२९
कर्णवेष्टन ३.	३३३८७	कर्मकार १. २. ३.		" १. २.	६३३१८
कर्णशङ्कुली २.	३३३१३		५३३७३	कल १. २. ३.	२३३१३
कर्णाक १.	३३३३३४	कर्मक्षम १. २. ३.		" १.	३३३१२१
कर्णिक ३.	३३३२१		५३३७२	" १. २. ३.	५३३१४
" ३.	३३३४६	कर्मठ १. २. ३.	५३३७२	कलकण्ठ १.	२३३२७

[कलकल]

वैजयन्तीकोषः

[कविका]

कलकल १.	२४१२७	कला २.	३१९८	कल्क १. ३.	६१५१०
कलकण १.	८११२०	" २.	४३३३८	कल्कत्व ३.	३१९८५
कलङ्क १.	७१११७	" २.	४३१५५	कल्किन् १.	१११३१
कलत्र ३.	४४३५	" २.	५११३६	कल्प १.	२११९३
" ३.	४४३६	" २.	५२१७	" १.	३३१६१
" ३.	७३३६	" २.	६२११०	" १.	३६१२८
कलघौत ३. २.	८१५५	कलाद १.	२१११६	" १.	३६११३
कलपाठक १.	३६१२३	कलानिधि १.	२११२६	" १.	६१११६
(कालपाठक)		कलाप १.	७११५५	कल्पन ३.	३१११०
कलभ १.	३७३६६	कलापक १.	२३३३९	" १.	४४१४६
कलम १.	३८३३४	" १.	३७३८३	कल्पना २.	३७३७०
" १.	७१११८	" १.	३८३३४	" २.	७१२४
कलम्ब १.	३७१७९	" १.	३८३७३	कल्पवृत्त १.	१३११४
" १. २. ३.	८१२६	" १.	५३१४१	कल्पाणि १.	३१११४
कलम्बी २.	३३११४९	कलापिन् १.	३३१२८	कल्पान्त १.	२११९४
कलम्बू २.	३३११४९	कलापिनी २.	१११६०	कल्मष ३.	३६११६८
कलम्ब १.	२३११४	कलाय १.	३८३३३	कल्माष १.	५३१२४
कलल ३.	४३३६२	कलावती २.	३९११९	" १. २. ३. ७४११०	
" १. ३.	४४११८	कलाह १.	३७१०३	कल्य १. २. ३. ४४११४३	
" ३.	४४१०८	कलि १.	२२१९२	" १. २. ३. ६४३३	
कलविङ्क १.	२३११८	" १.	३३१७५	कल्या २.	२४११८
" १.	२३११९	" १.	३७२०४	" २.	३९१४५
कलश १.	३५२६	" १.	३९१६२	कल्याण ३.	३६६२
" १.	३५३१	" १.	६१११७	" १. २. ३. ५४११४२	
" १. २. ३. ४३५८		कलिका २.	३३११९	" २. ३. ७५२१	
" १.	५११५५	कलिकारक १.	३३३६२	कल्यापाल १.	२९१४४
" १. २. ३. ८११३७		कलिङ्ग १.	२३१२७	कल्लोल १.	४२११४
कलशि २.	३३१३६	" १ व.	३११४०	कलह १. २. ३. २४११५	
कलशी २.	४३५८	" १.	७५३३	कलहार ३.	४२३५
कलशीनक १.	३३१२४	कलिङ्गक १ व.	३११२६	कव १.	२४११
कलशीपुत्र १.	३६१५१	कलित १. २. ३. ७४१९		कवक १.	३३११५२
कलशीमुख १.	२९१२४	कलिद्रुम १.	३३१७५	कवच १. ३.	३७१५२
कलशोदक १.	३३१८९	कलिल १. २. ३. ७५३१		कवचित १. २. ३.	
कलशोद्धि १.	३११११	कलुष १.	३४१९		३७१४२
कलह १.	७१११७	" १.	३५११४	कवट १.	३५२४
कलहंस १.	२३३८	" ३.	४२१४	कवाट ३.	४३३३
" १.	८११२०	" १.	५३३३४	" १. ३. ३. ४३३६	
कलहप्रिय १.	१३३७	" १.	५३३९	कवि १.	२११३४
कला २.	२११५३	कलुषी २.	३८८८	" १.	३६१५३
" २.	३२११२	कलेवर ३.	४४५२	" १.	६१११२
" २.	३८५५	कलेवरा २.	१११४९	कविका २.	३७११३

[कविय]

शब्दानुक्रमिका

[कानना

कविय १. ३.	३७११३	काककञ्ज २.	३८१५९	काकोली २.	३३११२
कवी २.	३७११३	काकचिञ्चा २.	३३११८०	,, २.	३११५०
कवोष्ण ३.	५३१९	काकजङ्घा २.	३३११११	काकोल्लिका २.	८११७
कव्यवाहन १.	१२१२२	,, २.	३३११८०	काक्षी २.	३२११६
कश १.	२५१२०	काकजम्बू २.	३३११९३	काक्षीव १.	३३१५६
,, १.	४११२७	काकणी २.	७२१६	काङ्क्षा २.	३३११७९
कशप १.	४११५०	काकतित्ता २.	३३११८०	काच १.	३११७
कशा २.	३७११४	काकतिन्दुक १.	३३१५१	,, १.	५३१२२
कशिपु २.	५१११६	काकतुण्ड १.	३८११०८	,, १.	४१११५
,, १. ३.	७५१२०	काकतुण्डिका २.	३३१८७	काचमालिका २.	३११४६
कशेरु ३.	४२१४७	काकदन्ता २.	३३११८०	काचर १.	५३१२२
,, २. ३.	४४११५	काकनखी २.	३३११८०	काचस्थाली २.	३३१९०
कश्मल ३.	३६१२००	काकनासा २.	३३१११२	काचित १. २. ३.	५४११६
कश्य ३.	३७१११०	,, २.	३३११९३	काचिम ३.	४२१४
,, ३.	३१११५	काकपक्ष १.	४४११०२	काञ्चन ३.	३३११९
,, ३.	६५११२	काकपीथी २.	३३११८०	काञ्चनार १.	३३१४८
कप १.	३१११९	काकपीलु १.	३३१५१	काञ्चना १.	३३१७७
कषाय १.	३३१२१७	,, २.	३३११८०	काञ्चनी १.	३२१२७
,, १.	४४११४१	काकपुष्ट १.	२३१२६	,, २.	३३१२११
,, १. ३.	५३१२७	काकमर्दक १.	३३१८०	काञ्चिक ३.	४३१८१
,, १. ३.	७५१२२	काकमाची २.	३३१११२	काञ्ची २.	४३११४६
कषायक १.	५३१४७	काकमाली २.	३३११८४	काञ्चीपद ३.	४४१४४
कषायतिकलवण १.	५३१३६	काकर्द १.	३३१५०	काटिका २.	३३११
		काकली २.	३११११४	काण १. २. ३.	५४११३
कषायिका २.	२३१४६	काकशीर्ष १.	३३११९३	काणमारिष १.	३३११५१
कषिका २.	७२१४	काकाङ्गी २.	३३१११२	काणा २.	३१११७
कष्ट १. २. ३.	१२१३९	काकाणती २.	३३११८०	काण्ड १. ३.	३८१६३
,, १. २. ३.	६४१३	काकाणन्ती २.	३३११८०	,, ३.	४११३१
कस्तम्भिन् १. ३.	३७१३१	काकाण्ड १.	३८१४७	,, १. २. ३.	६५१११
		काकादनी २.	३३११८०	काण्डपट १.	४३११२४
कस्तीर ३.	३२१३२	काकारि १.	२३१२२	काण्डपृष्ठ १. २. ३.	३७१४३
कस्तूरिका २.	३८११०४	काकी २.	३११११२	,, १. २. ३.	८११६
कस्तूरी २.	३४१३५	काकु २.	२४१७	काण्डवीणा २.	२१११२८
,, २.	३४१३६	काकुद ३.	४४१८९	काण्डी २.	३८१७८
कहाला २.	३१११२६	काकुन्दी २.	४३१९	काण्डीर १. २. ३.	३७१४४
कह्ल १.	२३११०	काकेन्दु १.	३३१५१	,, १.	३८१७८
कांस्य ३.	३२१२८	काकोदर १.	४१११२	कण्डेडु १.	३३११०१
कांस्यताली २.	३१११२४	काकोदुम्बरिका २.	३३११११	कातना २. ब.	२१११९
कांस्यपात्रक ३.	४३१६१	काकोल १.	२३११७		
काक १.	२३११५	,, १.	४११२४		

[कातर]

वैजयन्तीकोषः

[कार्पासी

कातर १. २. ३.	५४११८
„ १. २. ३.	७५३२
कातुलक १.	३३३८५
कात्यायन १.	३६१५८
कात्यायनी २.	१११६२
„ २.	४४११४
कादम्ब १.	३३३८
„ १.	७१११९
कादम्बरी २.	३११४६
कादम्बिनी २.	२१२२
कान ३.	२४१२
कानन ३.	३३३१
कानीन १.	४४१४३
कान्त १.	३३३८२
„ १.	३३३८५
„ ३.	३३३१२३
„ १. २. ३.	५४१७०
कान्तनाला २.	३३३१८७
कान्ता २.	४४१५
कन्तार १.	३३३२२६
„ १. ३.	७५१२२
कान्तारवासिनी २.	१११६३
कान्ति २.	६१२८
कान्दविक १. २. ३.	४३३९२
कान्दशीक १. २. ३.	३७१२८
कापटिक १.	३७१२७
„ १. २. ३.	५४१२३
कापथ १.	३११५०
कापिषायन ३.	३११४४
कापिषेय १.	१३३४
कापोत १.	३६१२५
„ ३.	५११६
कापोताञ्जन ३.	३११४२
काम १.	१११२७
„ १.	३३१५४
„ १.	३६१७९
„ १.	६१११७
कामकेलि २.	४३१७०

कामध्वज १.	२१११३७
„ १.	४३१६९
कामन १. २. ३.	५४३३४
कामपद ३.	४४१६१
कामपाल १.	१११२४
कामम् ४.	४३१०४
कामयितु १. २. ३.	५११३५
कामरूप १ व.	३११२९
कामरूपिणी २.	३४१२३
कामरूपिन् १.	३४१५
कामल १. २. ३.	४४१३२
कामविक्रियार.	४३१६९
कामाङ्ग ५.	३३२५
कामारि १.	१११४१
कामिक १.	३६३२
„ १.	३६१९८
कामिकान्त ३.	३११४८
कामिन् १.	२३३६
कामिनी २.	४४१५
कामुक १. २. ३.	५४३३५
कामुका २.	४३३५५
कामुकी २.	४३३११
कामोत्सव १.	४४११६७
कामवल १. २. ३.	३७१२९
कामविक १.	२१११७
काम्वोज १.	३७१५५
काम्वोजी २.	३३३१०७
काम्य ३.	३२१२५
काम्यदान ३.	३६१२०
काम्रा २.	३७११४
काय १.	४४१५३
„ १. २. ३.	६१११७
कायमान ३.	४३३३३
कायस्थ १.	३११२३
कायाङ्ग ३.	३३३२०४
कयिका २.	३८१५
कारक ३.	७३३७
कारकुसीय १ व.	३११३८

कारण ३.	३८११६
„ ३.	७३३७
कारणा २.	११२३९
कारणिक १. २. ३.	५४३३०
कारण्डव १.	२३३११
कारम्भा २.	३३३६६
कारवाही २.	३३३११०
कारवी २.	३८१८५
„ २.	३८११०२
„ २.	३८१३२२
„ २.	३११२२९
कारवेष्ट १.	३३३१६३
कारा २. १.	६५११०
कारावर १.	३५१४२
„ १.	३५१४३
कारि २.	८११५
कारिका २.	१२३२
„ २.	३८१६
„ २.	८११५
कारिष ३.	५४११३
कारु १.	१२३४
„ १.	३५१५८
„ १.	३११७
„ १.	६११५५
कारुज १.	७१११८
कारुण १. २. ३.	५४३३८
कारुणिक १. २. ३.	५४३३८
कारुण्य ३.	३६१९२
कारुबिन्द १.	३५१७
कारोत्तर १.	३११५२
कार्तस्वर ३.	३२१३८
कार्तान्तिक १.	३७१२५
कार्तिक १.	२११६६
कार्तिकिक १.	२११६६
कार्तिकी २.	२११७७
कार्तिकेय १.	१११५६
कार्पास १.	३८११०६
„ १. २. ३.	४३३११७
कार्पासतूल १.	३११९
कार्पासी २.	३३३९९

कर्म]

शब्दानुक्रमणिका

[काष्ठीला

कर्म १. २. ३.	५१७७२	कालभाग १.	३१७७८	काली २.	३१९९१
कर्मण ३.	३१६११७	कालमालक १.	३३१२२२	कालीची २.	१२२३६
कार्मुक ३.	३१७१७२	कालमेपिका २.	३३११८१	कालेय २.	३३११७६
" ३.	७३३६	कालमेपी २.	३३११०८	" २.	३३२१३३
कार्य ४.	३१६२३६	कालरात्री २.	१११६१	" ३.	४३११५४
कार्वट ३.	४३३३	कालवृन्ती २.	३३११७९	कालोच्चिन् १.	२११८९
कार्वटिक ३.	४३३३	कालशीनक १.	३१५२५	कालोदक १.	३१११५
कार्यापण १.	५११३९	कालशेय ३.	३१८१४८	कालिपक १.	३१६७३
" १.	५११४०	कालस्कन्ध १.	३३१५१	काल्य ३.	२११६९
कार्पिक १.	५११३८	" १.	३३१८७	काल्यक १.	३३११७७
" १.	५११३९	काला २.	३२११२	कावचिक ३.	५११११
" १.	५११३९	" २.	३३११३८	कावाट १.	३१७१९९
कार्ण ३.	३१६१०	" २.	३१८१८५	कावातायनिका २.	
(कार्य)		कालागार ३.	३१८१०८		४३३३८
कार्मरी २.	३३१५७	कालाची २.	३३२२०९	कावेर ३.	३१८८०
कार्मर्य १.	३३१५७	कालानुसार्य ३.	३१८१९६	कावेरी २.	४२२२८
कर्त्यक १.	३३३३८	" ३.	४३११५४	कान्य ३.	२१४४२
काल १.	१२३३५	कालायस ३.	३२२३४	काश १. ३.	३३३२३७
" १.	२११५२	कालावलोलक १. २. ३.	३३६१३५	काशशाकट १. २. ३.	३१८२०
" ३.	३२२३३				
" १.	५३१११	कालिक १.	३१७२२	काशशाकिन् १. २. ३.	३१८२०
" १.	६१११५	कालिका २.	२३११६		
कालक १.	४३१९७	" २.	३३६१९	काशि १ व.	३३१४०
कालकण्डक १.	२३३३६	" २.	३१७१११	" १.	३३३२२७
कालका २.	३३३२०	" २.	३१८१५	काशिका ३.	४३३७
(कालिका)		" २.	३१८१८	काश्मीर १ व.	३११२७
कालकिञ्च १.	३१५१८	" २.	३१९१८१	" ३.	३१८१८८
कालकुण्डक १.	३१५२९	कालिङ्ग १.	३३३३२	काश्मीरज ३.	३१८११७
कालकुन्ध १.	११११४	" १.	३३३३६९	काश्मीरी २.	३३३१९८
" १.	११३३५	कालिङ्गी २.	३३३३६९	काश्यप ३.	४३११०६
कालकूट १.	४११२२	कालिनी २.	२११४०	काश्यपसुत १.	१११३७
" १.	४११२३	" २.	४३११९	काश्यपी २.	३११४
" १.	८११३१	कालिन्दी २.	४२२२५	काष्ठ ३.	३३३३३
कालकूणिका २.	३३३१७८	कालिन्दीकर्षण १. १११२३		काष्ठतत् १.	३१९३४
कालखण्ड ३.	४३११३	काली २.	१११४९	काष्ठा २.	२११२३
कालधर्म १.	३३३२०१	" २.	१२३३०	" २.	६२३८
कालनिर्यास १.	३३३५३	" २.	२२२२	काष्ठाभुवाहिनी २.	
कालपर्णी २.	४३३१२२	" २.	३२२१७		४२२१५
कालपुच्छ १.	३३३२९	" २.	३३३१०४	काष्ठी २.	३३३१७५
कालपूर १.	३३३३३	" २.	३३३१२७	काष्ठीला २.	३३३९१
कालपूरक १.	३३३३३	" २.	३३३३७७	" २.	३३३१७३

[काष्ठेन्धन]

वैजयन्तीकोषः

[कुकर

काष्ठेन्धन ३.	३१६१७
काष्मरी २.	३१६१७
कासमुद् १.	३१८१२७
कासमर्दक १.	३१३१५४
कासर १.	३१४१९
कासार १.	४१२१६
कासू २.	३१७१६६
„ २.	६१२१८
काहला २.	३१९१२६
किंवदन्ती २.	२१४३९
किंशार १.	७१११९
किंशुक १.	३१३२९
„ १.	३१३१७८
„ १.	४१११४
किक्कीदिवि १.	२१३२९
किक्कीसाद १.	४१११५
किसि २.	३१४३९
किङ्कर १.	३१९३३
किङ्किणी २.	४१३१४५
किङ्किराट १.	३१३१८९
किङ्किरात १.	३१३१८९
किङ्किर १.	२१९१२९
„ १.	७१३२२
किञ्चन ४.	८१८१२
किञ्चित् ३. ४.	३१६१६
„ ३.	५१४१३६
„ ४.	८१८१२
किञ्चलुक १.	४११५९
किञ्चोल १.	४१२१४६
किञ्ज १ व.	३११२८
किञ्जस्क १.	४१२१४५
„ १. ३.	७१५३१
किट १.	३१५२१
किटि १.	३१४१६
किट्ट १. ३.	४१४१२०
किट्टिम ३.	४१२३
किण १.	३१६१२१
„ १.	३१७१२७
किणिही २.	३१३११५
„ २.	३१३१३३
किण्व ३.	३१९१५०

किण्व ३.	६१३१५
कितव १.	३१३१७६
„ १.	३१९१५८
किदिर १.	३१३१७०
किनाटक ३.	३१३१४
किन्नर १.	११३३३
किन्नरी २.	३१९१२८
किन्नरेश्वर १.	११३१५५
किम् १. २. ३.	८१४१६
„ ४.	८१७३३
„ ४.	८१८१२
किमिला २.	४१४२०
किमु ४.	८१८१२
किमुत ४.	८१८१४
किम्पचान १. २. ३.	५१४१५९
किम्पाक १.	३१३१८०
किम्पुरुष १.	११३३३
„ १.	३१११६
कियदेतिका २.	३१६१६६
(कियदेहिका)	
कियाह १.	३१७१०१
किरण १.	२१३१६
किरात १.	३१५१४६
„ १. २. ३.	५१४१५
किरातज ३.	३१८११४
किरि १.	३१४१६
„ २.	३१७१७८
किरिभ १. २. ३.	५१४१९
किरीट ३.	४१३१३५
किरीटिन् १.	३१७७२
किर्मरि १.	५१३१२३
किल ४.	८१७१९
किलास १. २. ३.	५१४१४४
किलासघ्न १.	३१३१६४
किलासिन् १. २. ३.	४१४१४६
किलिकिञ्चित ३.	३१९१९४
किलिञ्ज १.	४१३१६६
किञ्चिप ३.	८१४१६

किह्वी २.	३१७१८०
किशालिन् १.	११२१५७
किशोर १.	३१७१०७
किष्कु १.	३१११५४
„ १.	३१११५६
„ १. २.	६१५१९
किसल १.	३१३११७
किसलय ३.	३१३११७
किसिट्टक १.	३१७१०९
कीकट १ व.	३११३१
कीकस १.	४११३९
„ ३.	४१४१०८
कीचक १ व.	३१३२१५
कीट १.	४११३९
कीन ३.	४१४१०७
कीनाश १.	११२३५
„ १.	५१३२१
„ १. २. ३.	७१५२३
कीर १.	२१३२५
„ १ व.	३११२७
कीर्ण १.	४१२१७
कीर्णजल १.	४१२१८
कीर्ण २.	६१२१६
कीर्ति २.	२१४३६
„ २.	६१२१६
कीर्षा २.	२१३२४
कील १. २.	११२२९
„ १.	३१७१८५
„ १. ३.	३१७१३१
„ १. २. ३.	६१५१९
कीलक १.	४१४१२३
कीला २.	११२२९
कीलाल ३.	७१३१७
कीलित १. २. ३.	५१४१७७
कीलिनी २.	३१११४
कीलुष १.	३१५१४
कीश १.	३१४३९
कु २.	३११११
„ ४.	८१७३३
कुकर १. २. ३.	५१४१४

कुकुण्ड १. ३१३१५२
 कुकुन्दर ३. ४१४६५
 कुकुल १. ३. ७५२४
 कुनकुट १. २३११३
 „ १. २३१३२
 „ १. २३१४०
 „ १. ३३१४९
 „ १. ३५२३
 „ १. ३५२५
 „ १. ३५२६
 „ १. ३५२६
 „ १. ४४१३४
 कुनकुटध्वज १. १२१५७
 कुनकुटाच १. ३३१६८
 कुनकुटि २. ३३१९६
 कुनकुर १. ३३१६९
 „ ३. ३८१९२
 कुचिक १. ४१४६७
 कुचिकृजित ३. २३१८
 कुचिम्भरि १. २. ३. ५१४५०
 कुचयगि १. १२१२१
 कुङ्कण १. ३५४३
 कुङ्कुम ३. ३८११६
 कुङ्कुणी २. २११२८
 कुच १. ४१४६८
 कुचन्दन ३. ३८११४
 „ ३. ३८११५
 कुचर १. २. ३. ५१४४८
 कुचार १. ३१४७२
 कुज १. २११३१
 „ १. ३. ३११२९
 „ १. ३३१५
 कुञ्जिका २. ४३१४९
 कुञ्जित १. २. ३. ५१४१२३
 कुञ्ज १. ३२११०
 „ १. ३. ६५२३
 कुञ्जना २. २११२७
 कुञ्जर १. ३१४६१
 कुञ्जल ३. ४३१८२
 कुञ्जिका २. ३११३५

कुट १. ३५१३
 „ ३. ३८११९
 „ १. ४३११०८
 कुटच १. ३३१७३
 कुटज १. ३३१७३
 कुटजट १. ३३१६८
 „ ३. ३३१२०१
 कुटपुरि १. २३१३२
 कुटर १. ३१४२
 कुटि २. ३२१३४
 „ १. २. ३. ६५२४
 „ १. २. ३. ८१२६
 कुटिल १. २. ३. ५१४१२
 „ १. २. ३. ८१२४
 कु. टीर ४३१२७
 „ २. ८१२६
 कुटीर १. ४३१२७
 „ १. ७१२०
 कुटुम्ब ३. ४१४११
 कुटुम्बध्यापृत १. २. ३. ५१४५२
 कुटुम्बिका २. ३३११८७
 कुटुम्बिनी २. ४१४२१
 कुटुम्ती २. ३११६४
 कुटुमित ३. ३११५५
 कुट्टार १. ३२११
 कुट्टिनी २. ४१४२५
 कुट्टिम १. २. ४३३३२
 कुट्टीर १. ३२११
 कुट्टमल १. ३. ३३११९
 „ ३. ३३१२५
 कुठ १. ३३१५
 कुठरणा २. ३३११३८
 कुठार १. ३११३२
 „ १. २. ३. ३११३६
 कुठेरक १. ३३१११८
 कुड १. १२१५८
 कुडङ्ग १. ३. ३२११०
 कुडप १. ५११५३
 कुडुम्बिनी २. ४१४२१
 कुड्य १. ३. ४३३३७

कुड्यमास्या २. ४११३१
 कुण १. २३११५
 कुणप १. ३१४२१६
 „ ३. ४१४११८
 कुणि १. ३३१८५
 „ १. २. ३. ५१४१४
 कुण्ट १. २. ३. ५१४७४
 कुण्ड १. ३५१६०
 „ ३. ३३१२०९
 „ ३. ४३१८१
 „ ३. ६३१५
 कुण्डगोलक १. ३५१६१
 कुण्डधान्य १. ३३१४१
 कुण्डनी २. ४३१२५
 कुण्डल १. ३१७१६३
 „ ३. ४३१३५
 कुण्डलिन् १. ४११५
 „ १. २. ३. ७१२५
 कुण्डली २. ३३१३३
 कुण्डिका २. ३३१२४
 कुण्डिन् १. ३३१९०
 कुण्डणाची २. २३१२६
 „ २. ४११३१
 कुतलु १. १२१५५
 कुतप १. ३१११४०
 „ १. ७१२९
 कुतपविन्यास १. ३११४०
 कुतुप १. ४३१६०
 कुतू २. ४३१६०
 कुतूहल ३. ३३१८७
 कुत्रफला २. ३८१६०
 कुत्स १. ३११५५
 कुत्सना २. २११३३
 कुत्सा २. ३३११९३
 कुत्सित १. २. ३. ५१४७५
 कुत्सिता २. ३३१५०
 कुय १. ३३१२२७
 „ १. ३५२३
 „ १. २. ३. ४३१३६
 कुदर १. ३११९१

[कुदानव]

कुदानव ३.	३१३२३२
कुधान्य ३.	३१८६३
कुध १.	३१२२
कुनटी २.	३१२११
” २.	३१२१७
कुनालिका २.	३१३२१
कुनाशक १.	३१३१२६
कुन्त १.	३१७१६५
कुन्तल १ व.	३११३३
” १ व.	३११४०
” १	३१४१९८
कुन्ति २.	३१८८७
कुन्द १.	११३६१
” १.	३३ ९१
” १.	३१९१८
कुन्दाल ३.	३१८२९
कुन्दिल ३.	३३३१
कुन्दोपराल १.	५३१५३
कुन्नान ३.	७३३८
कुपूय १. २. ३.	५३४७६
कुप्य ३.	३१८७४
” ३.	३१८१२२
कुप्यप्रस्थ १.	५११५३
कुप्यमाष १.	५११४४
कुप्यशाला २.	३३३२१
कुबेर १.	११२१५५
” १.	८६३३
कुबेराक्षी २.	३३३९०
कुब्जक १. २. ३.	५३१११
कुब्जा २.	३३३४९
कुमार १.	१११५४
” १.	३१७२०
” १.	३१९१०५
” १. २. ३.	५३४२
” १. २. ३.	७१५२८
” १.	८६११
कुमारी २.	३१११०
” २.	३३३१७८
” २.	३३४२६
” २.	३१८१०
” २.	३३४६

वैजयन्तीकोषः

कुमालक १ व.	३११२८
कुमुल १.	३३४६
कुमुद १.	२११८
” ३.	४२१४१
कुमुदवान्धव १.	२११२५
कुमुदा २.	३३१५८
” २.	३३१५८
कुमुदिनी २.	४२१४४
कुमुद्वत् १. २. ३.	३११४३
कुमुद्वती २.	४२१४४
कुमुद्वतीशत्रु १.	२१११२
कुम्बा २.	३३१०५
कुम्भ १.	४३१५८
” १.	४३३९
” १.	४३१३२
” १.	५११५६
” १.	६१३३८
” १.	८६११५
कुम्भकर्णारि १.	१११२१
कुम्भकार १.	३१५५
” १.	३१५६७
” १.	३१९२७
कुम्भकारी २.	३२१४४
कुम्भधारिका	४३२६
कुम्भफल १.	३३३८२
कुम्भयोनि १.	३३३१५१
कुम्भशाला २.	४३२३
कुम्भ २.	४३१५५
कुम्भन् १.	३१७६०
” १.	४११५३
कुम्भी २.	३३३१५८
” २.	४२१४६
कुम्भीनस १.	४१११२
कुम्भीर १.	४११५३
कुम्भीरमक्षिका २.	२३४४६
कुम्भील १.	७११२०
कुम्भोलखलक ३.	३३३१४
कुरङ्ग १.	३३१४४
” १.	३३४४०
कुरण्ड १.	३३३१९०
” १.	४३१३१

[कुलिक]

कुरण्ड १.	७१११९
कुरण्डक १.	३३३१८८
कुरर १.	२३३३४
कुररी २.	३३४६५
कुरवक १.	३३३६१
” १.	३३३६१
” १.	३३३१८९
” १.	३३३१९०
” १.	३३३१९१
कुरिन् १.	३३३४३
कुरीर ३.	७३३८
कुरु १.	३३३७८
कुरुकुम्भिका २.	२३३२३
कुरुल १.	४३३९९
कुरुवर्ष ३.	३११९
कुरुविन्द १.	३२३४०
” ३.	३२३४५
” १.	८११२१
कुरुविस्त १.	५११५२
कुरुवत्र १.	३३३३३३
कुर्दन ३.	३१९८७
कुल ३.	४३३११५
” ३.	४३३४९
” ३.	५११६
” १.	५३३५४
कुलक १.	३३३५१
कुलकालक १ व.	३१३३४
कुलचर १.	३३३३४
कुलज १. २. ३.	५३३६१
कुलटा २.	४३३९
कुलपालिका २.	४३३७
कुलस्त्री २.	४३३७
कुलस्थक १.	३१८३७
” १.	४१११२
कुलाय १.	२३३४९
” १.	८१५३६
कुलाल १.	२१९२७
कुलालकुक्कुट १.	२३३२१
कुलालिका २.	३२३४४
कुलिक १.	३३३१८५
” १.	२१९७

[कुलिङ्गाटी]

कुलिङ्गाटी २.	३८८३५
कुलिङ्गा १. २.	१२११३
कुली २.	३३११०४
„ २.	४४२८
कुलीन १.	३३७९४
„ १. २. ३.	५४४६१
लीनस ३.	४२११
कुलीमक १.	३८८३८
कुलीर १.	४२१४६
„ १.	८४११४
कुलुत्थिका २.	३२१४४
„ २.	३८८४८
कुलमाप १.	३२१४०
„ १.	२८८५३
„ १.	४३१७२
„ ३.	४३१८२
कुल्य १ व.	३११२८
„ १ व.	३११३४
„ १ व.	३११४०
„ ३.	४४११०९
कुल्यरूपशी २.	३३११०५
कुल्या २.	३३११८५
„ २.	४४२२
„ २.	४२१२९
„ २.	४४१७
„ २.	५३३३०
कुव ३.	४२१३४
कुवक १.	३३३६१
(कुरुवक)	
कुवद १. २. ३.	५४१४८
कुवल ३.	४२१३४
„ १. २. ३.	८११३८
कुवलय ३.	४२१३४
कुवलायिक १.	२३१९
कुवली २.	३३३८७
„ २.	८११३८
कुवाट १. २. ३.	४३१४६
कुवादुष्क १.	३५२५
कुविन्दक १.	१५१९
„ १.	२११८
कुविलीन ३.	४२१३६

शब्दानुक्रमिका

कुवीणा २.	२१११२८
कुवेणी २.	२११४२
कुवेल ३.	४२१३४
„ १.	५३१४२
कुवा १.	३३२२७
„ १. ३.	६५२४
कुवाद्वीप ३.	३१११४
„ ३.	३१११७
कुवाल १. २. ३.	५४१४३
„ १. २. ३.	७५२४
कुवाचट १.	३३१४९
कुवास्थली २.	४३१६
कुवा २.	३३१०८
„ २.	३३११४
कुवाग्रीयधी १. २. ३.	५४२९
कुवापीड १.	३३१४९
कुवारणि १.	३३१५६
कुशिन् १.	३३१५३
कुशी २.	३२१३५
„ २.	४११३९
कुशीलव १.	३५१९८
„ १.	३१११४
कुशेशय ३.	४२१३८
कुषाहु १.	७१२१
कुषिन् १.	३३१६२
कुष्ट ३.	३८१९९
„ १.	४११२५
„ ३.	४४१२४
„ १. २.	६५२३
कुष्ठमुद् २.	३३१९९
कुसट १ व.	३११४०
कुसीद ३.	३८१४
„ १. २. ३.	७५३२
कुसीदिक १. २. ३.	३८११८
(कुसीदक)	
कुसुम ३.	३३११८
कुसुमच्छद १.	४२१४५
कुसुमाञ्जन ३.	३२१४३
कुसुमित १. २. ३.	३३३८

[कूबर]

कुसुम्भ ३.	३८१९१
„ १.	७५२५
कुसूल १.	४३१६४
कुस्तुम्बरी २.	३८१४९
कुस्तुम्बुर ३.	३८१५१
कुहक १.	३३१३३
„ १. २. ३.	५४२३
„ १. २. ३.	७४११०
कुहन १. २. ३.	७५२३
कुहर ३.	४११२
„ ३.	७३३७
कुहलि २.	३३१५९
कुहिठ १. ३.	२२११०
कुहू २.	२११७१
कुहेडि २.	२२११०
कुहेलि २.	२२११०
कुहरी २.	३११४
कुजन ३.	२४१३
कुजित ३.	२४१३
कूट १. ३.	३२१८
„ १. २. ३.	३३१५६
„ १.	३५१९९
„ ३.	३३१९५
„ १. ३.	३३१८४
१, १.	३१२२
„ १. ३.	५११३
„ १. ३.	६५१३
कूटयन्त्रक ३.	३११४०
कूटशास्त्रमलि १. २.	
	३३१९१
कूटसाक्षिन् १. २. ३.	
	३८११०
कूटस्थ १. २. ३.	५४१७९
कूटागार ३.	४३३३१
कूणिका २.	२११२०
कूप १.	४२१७
„ १.	४२११७
„ १.	६११११
कूपक १.	४२१३१
कूपेपिशाचक १.	४२१४९
कूबर १. ३.	३३१२७

[कूबर]

वैजयन्तीकोषः

[कृष्णधूमल

कूबर १.	३।७।१३२
कूर ३.	४।३।७५
कूरदूषक १.	३।८।५४
कूर्च १.	४।४।५७
” १. ३.	६।५।२०
चर्केसर १.	३।३।२२०
कूर्चाल १.	३।६।११२
कूर्चिका २.	३।८।१४८
” २.	७।२।५
कुर्ची २.	३।९।१३
कूर्पर १.	४।४।७२
कूर्पास १.	४।३।१२८
कूर्म १.	३।७।७६
” १.	३।७।७९
” १.	४।१।५०
” १.	८।६।१३
कूल ३.	४।२।३२
” ३.	६।३।५
कूलकृपा २.	४।३।२३
कूलमण्डक १	४।१।४८
(स्थूलमण्डक)	
कूली २.	३।३।८७
कूरमाण्डक १.	१।१।५१
” १.	३।३।१७०
कृकण १.	२।३।१६
कृकणपत्रिका २.	३।३।२३०
कृकर १.	२।३।३६
कृकलास १.	४।१।२८
कृकवाकु १.	२।३।१३
” १.	३।३।७९
कृकाटिका २.	४।४।८४
कृच्छ्र १ २. ३.	१।२।३९
” १. ३.	३।६।१६६
कृच्छ्रक ३.	३।६।१३६
कृच्छ्रातिकृच्छ्र १.	३।६।१३८
कृच्छ्रातिकृच्छ्रक ३.	३।६।१४१
कृत ३.	२।१।९१
” ३.	३।६।९८

कृत ३.	३।९।६२
” १. २. ३.	६।५।२१
कृतकृत्य १. २. ३.	५।४।१९
कृतकोटिकवि १.	३।६।१७९
कृतज्ञ १.	३।४।७०
कृतपुङ्गव १. २. ३.	३।७।१४९
कृतभी २.	४।१।४८
कृतमाल १.	३।३।४८
” १.	३।४।२८
कृतमालक १.	२।३।२३
” १.	४।४।१०६
कृतमुख १. २. ३.	५।४।१९
कृतवेधन १.	३।३।१५९
” १.	३।३।१६०
कृतहस्त १. २. ३.	३।७।१४८
कृताकृत ३.	३।६।९७
कृतान्त १.	१।२।३५
” १.	७।१।१६
कृताह १.	३।४।२७
कृतालक १.	१।१।५७
कृतास्त्र १. २. ३.	३।७।१४९
कृति २.	४।४।३६
कृतिन् १.	३।३।२९
” १. २. ३.	५।४।१९
कृतोद्वाह १.	३।६।८
कृत १. २. ३.	५।४।१०२
कृत्ति २.	३।६।२१
” २.	४।३।६०
” २.	४।४।१०३
कृत्तिका २ ब.	२।१।४३
कृत्तिकापिञ्जर १.	३।६।९८
कृत्तिवासस् १.	१।१।४२
कृत्य ३.	३।६।२३६
” १. २. ३.	६।५।२०
” २. ३.	८।९।३३

कृत्रिम ३.	३।२।२८
” १.	३।८।११०
” १.	३।८।१११
” १.	३।८।१२४
कृत्रिमाचारी २.	२।१।७६
कृत्स्न १. २. ३.	५।४।८६
कृपण १. २. ३.	५।४।५९
कृपा २.	३।६।१९२
कृपाण १.	३।७।१५९
कृपाणी २.	३।९।३७
कृपीट ३.	७।१।८
कृपीटयोनि १.	१।२।१६
कृमि १.	३।५।३३
” १.	४।१।३४
कृमिकोशोत्थ १. २. ३.	४।३।११८
कृमिज ३.	३।८।१०७
कृवी १.	३।९।२६
कृश १ ब.	२।१।३७
” १.	५।३।७
” १. २. ३.	५।४।५
कृशानु १.	१।२।१७
कृशानुरेतम् १.	१।१।४५
कृशाश्विन् १.	२।९।६३
कृपक १.	३।८।२८
” १. २. ३.	७।५।३१
कृषि २.	२।८।३
कृषीवल १.	३।७।२७
” १. २. ३.	३।८।७
कृष्टक १. २. ३.	३।८।२२
कृष्टि २.	६।५।२४
कृष्ण १.	१।१।१५
” १.	१।१।२५
” १.	३।३।८३
” १.	५।३।११
” १.	६।५।१४
कृष्णकाक १.	२।३।१७
कृष्णकोहल १.	३।९।५८
कृष्णद्वैपायन १.	१।१।३२
कृष्णधूमल १.	५।३।१३
” १.	५।३।२२

कृष्णनवाशुद्ध १. २।२।२	केण्डुक १. ४।१।४७	केशिनी २. ३।३।११६
कृष्णपाक १. ३।३।८३	केतक १. २. ३. ३।३।२२३	केशी २. ४।४।१०२
कृष्णपाकफल १. ३।३।८३	केतन ३. ३।७।१७६	केसर १. ३।२।५
कृष्णपिङ्गल १. ५।३।२४	" ३. ४।३।१९	" १. ३।३।२६
कृष्णपीत १. ५।३।२२	" ३. ७।३।१२	" १. ४।२।४५
कृष्णफल १. ३।३।८३	केतर २. ४।३।१९	" १. ४।३।३२
कृष्णफला २. ३।३।१०८	केतु १ व. १।३।३७	" १. ३. ७।५।३०
कृष्णभगिनी २. १।१।६२	" १. ६।१।१६	केसरा २. ३।३।९९
कृष्णभूम १. २. ३. ३।१।४५	" १. ८।१।६०	केसरिन् १. ३।३।३३
कृष्णभेदी २. ३।८।८६	केतुमाल ३. ३।१।७	" १. ७।१।२१
कृष्णरक्तसित १. ५।३।२५	केदर १. ३।८।१७	कैकसेय १. १।२।४१
कृष्णला २. ३।३।१७९	केदार १. ३।८।१७	कैटभारि १. १।१।१५
कृष्णलोहित १. ५।२।१	केनिपात १. ४।२।१६	कैटभी २. १।१।६२
कृष्णवर्ण १. ३।८।४३	केयूर ३. ४।३।१४३	कैडर्य १. ३।३।५०
कृष्णवर्णा २. ४।२।२९	केरल १ व. ३।१।३४	" १. ३।३।५८
कृष्णवर्मन् १. १।२।१४	केलक १. ३।९।६४	कैडर्यद्वेषिन् १. ३।३।७५
कृष्णविपाणा २. ३।६।१०९	केलि १. ३. ३।९।८८	केतव १. ५।१।१२
कृष्णवृन्त १. ३।८।४७	केलिकिल १. १।१।५१	केदारक ३. ५।१।१२
कृष्णवृन्ता २. ३।३।९०	" १. ३।७।१७	केदारिक ३. ५।१।१२
" २. ८।२।१५	" १. ३।९।६७	केदार्य ३. ५।१।१२
कृष्णवृन्तिका २. ३।३।५७	केकिकुञ्जिका २. ४।४।२८	केरव ३. ४।२।४१
कृष्णशालि १. ३।८।३३	केलिसहायक १. ३।७।१७	केराती २. ३।७।९२
कृष्णसिम्बि २. ३।८।४७	केवल १. २. ३. ७।५।२६	कौलास १. ३।२।५
कृष्णशृङ्गक १. ३।४।९	केवलिन् १. १।१।३५	कौलासनाथ १. १।२।५६
कृष्णसर्प १. ४।१।१२	केश १. ४।४।९७	कैवर्त १. ३।५।३२
" १. ४।१।१३	" १. ८।६।११	" १. ३।५।९१
कृष्णसार १. ३।४।१२	केशकार १. ३।७।११७	" १. ३।९।४२
कृष्णस्वसु २. १।१।६२	केशकूट १. ४।४।१००	कैवर्तमुस्तक १. ३।३।१९९
कृष्णाजिन ३. ३।६।२१	केशान्न ३. ४।४।१२६	कैवल्य ३. ३।६।२३८
कृष्णायस ३. ३।२।३३	केशपञ्च १. ५।१।१८	कैशिक ३. ५।१।१२
कृष्णिका २. ३।३।१८१	केशपद्धति २. ४।४।१००	कैशिकी २. १।९।१०१
कृसर १. ३।३।७८	केशपाश १. ५।१।१८	कैश्य ३. ५।१।१२
" ३. ४।२।४७	केशपाशी २. ४।४।१०२	कोक १. २।३।९
" १. २. ३. ४।३।७९	केशव १. १।१।१४	" १. ३।४।८
केकर १. २. ३. ५।४।१३	" १. २. ३. ५।४।८	कोकनद ३. ४।२।४०
केका २. २।३।३९	केशवमिय १. ३।२।५	" ३. ४।२।४२
केकालि १. २।३।३८	केणवायुध ३. ३।७।१३४	कोकहित १. २।१।५६
केकिन् १. २।३।३७	केशहस्त १. ५।१।१८	कोकाह १. ३।७।९९
केणिका २. ४।३।१२५	केशिक १. २. ३. ५।४।८	कोकिल १. २।३।२६
	केशिका २. ३।३।१३७	" १. ७।१।२०
	केशिन् १. २. ३. ५।४।८	

[कोकिलाक्ष]

कोकिलाक्ष १.	३३१०१
कोकुन्द १.	४३३७२
कोकुराह १.	३७१०५
कोटर १. ३.	३३११४
कोटि २.	४३१५२
” २.	५११२९
” २.	५११३१
” २.	६२१११
कोटिका २.	४११४९
कोटिचर्प ३.	४३३१९
कोटिश १.	३६१२९
कोटी २.	३६१७८
कोटीर १.	४३१३५
कोट्टी २.	४४११०
कोठ १.	४४१२४
कोण १.	२११३५
” १. २. ३.	२११२९
” १. २. ३.	२११३६
” १.	४३१५२
” १.	६१११६
कोणप्रतिग्राहिन् ३.	४३१४१
कोणेपिशाचक १.	४११४८
कोण्ठ १.	२३१२२
कोतना २ व.	२१११९
कोदण्ड ३.	३७१७२
” ३.	३७१७३
” ३.	७३११२
कोदङ्ग १.	३४१३४
कोद्रङ्ग १.	४३१३२
कोद्रव १.	३६१५४
कोप १.	३६१८३
कोपन १. २. ३.	५४१३२
कोमल १.	५३१५
कोयष्टि १.	२३१२०
कोरक १.	३३११९
कोरण ३.	२४१२
कोरदूषक १. ३.	३६१५४
कोराङ्गी २.	३६१८८
कोल १.	२११३६
” ३.	३६१८०

वैजयन्तीकोषः

कोल ३.	५११४८
” १.	५३३३४
” १.	५३१०५
” १. २. ३.	५४११४
” १. २. ३.	६१११६
” १.	६१११७
कोलक ३.	३६१०५
” १.	४१११८
कोलदल ३.	३६१०१
कोलम्बक १.	२११२२०
कोलचल्ली २.	३६१७८
कोला २.	३६१८१
” २.	६१११७
कोलाक १. २. ३.	२४१२३
कोलाङ्गक १.	३४१३३
कोलाहल १.	२४१२७
कोलि २.	३३१८७
” १. २.	८११२६
कोलिण्ट १.	३४१६६
कोविद १.	३६१२३४
कोविदार १.	३३१४७
कोश १.	२३१५०
” १.	३७१३
” १.	३७१४४
” १.	३७१६८
” १. ३.	३११७४
” १.	४११६१
” १. ३.	४४१६३
” १. २. २.	६१११५
कोशफल ३.	२६१०५
” १.	३६१०५
कोशफला २.	३३११५८
” २.	३३११६१
” २.	३३११६१
कोशातकी २.	३३११५८
कोशिका २.	३३११७
” २.	४३१५७
कोष्टिका २.	३३११९६
कोष्ठ १. ३.	३५१२२
कोष्ठकारी २.	२३१४७

[कौलटिनेय]

कोष्ण ३.	५३१९
कोसल १ व.	३११३७
” १ व.	३११४०
” ३.	३७१७४
” १.	५३११४
कोसलानन्दिना २.	४३१५
कोहल ३.	३११२७
” १.	३५११८
कोहली २.	३६१४९
कोङ्कट ३.	३६१९२
” १. २. ३.	५४१२४
कौकुटिक १. २. ३.	३६११७
” १. २. ३.	८४१६
कौकुलेयक १.	३७१५९
कौट १.	३६१८०
कौटतच्च १.	३११३४
कौटिक १.	३११३७
कौटिल्य १.	३६१५९
कौतुक ३.	६६१८७
” ३.	७३११०
कौतूल १.	४४१३८
कौतूल ३.	३६१८७
कौद्रवीण १. २. ३.	३६१९९
कौनृतिक १. २. ३.	५४१२२
कौन्तिक १. २. ३.	३७१४४
कौन्ती २.	३६१९५
कौपीन ३.	४३१२२९
” ३.	७३११३
कौबेरी २.	२११५
कौमारी २.	१११६५
कौमुद १.	२११८६
कौमुदी २.	२११२८
कौमोदकी २.	११११८
कौम्भ ३.	३६१३८
कौरक्रिया २.	२४१२८
कौलकुल्य ३.	४३११५
कौलटिनेय १.	४४१४४

[कौलटेय]

कौलटेय १.	४४४४४
" १.	४४४४४
कौलटेर १.	४४४४४
कौलीन ३.	७३११३
कौलेयक १.	३१४७०
" १. २. २.	५४१६१
कौश ३.	४३१६
कौशिक ५.	४४१११०
(कौशिक)	
" १.	७१११७
कौशिकी २.	८१११४
कौशेय १. २. ३.	
	४३१११८
कौपीतकी २.	३६१५३
कौसल्यानन्दवर्धन १.	
	१११२१
कौसीय ३.	३६१७८
कौस्तुभ १.	११११७
कौहोल ३.	३६१८२
क्रकच १.	३११५६
" १. ३.	३११३६
क्रकचिक १.	३११५३
क्रतु १.	५४११४
क्रतुभुज् १.	१११३
क्रत्वमि १.	११२२३
क्रथन ३.	४४१२७
क्रन्दन ३.	२४११०
" ३.	७३१६
क्रन्वित ३.	३११८७
क्रपुक १.	३१८६९
क्रम १.	३६११३
" १.	३६११३
" १.	४११३१
क्रमण १.	३७१९१
" ३.	४४१५६
क्रमुक १.	१२१३२
" १.	३३१२१७
क्रमेलक १.	३४१६७
" १.	३१५४५
क्रथ १.	३१८६९
क्रयविक्रयिक १.	३१८७२

शब्दानुक्रमणिका

क्रयिक १. २. ३.	३१८६८
क्रय्य १. २. ३.	३१८६८
क्रव्य ३.	४४११०६
क्रव्याद् १.	१२१२२
" १.	१२१४०
क्रव्याद् १.	१२१४०
क्राकचिक १.	३११५६
क्राथ १.	४४१२७
क्रान्ति २.	५२११६
क्रामणक १.	३१८१३०
क्रायिक १. २. ३.	३१८१८
क्रासन १.	५३११
क्रिमि १.	४३१५३
क्रिमिज्ञ १.	३१८१७
क्रिमिज ३.	४३११७
क्रिमिपर्वत १.	३११४८
क्रिमिर १.	५३१२५
क्रिमिरा २.	३४१२६
क्रिया २.	३११२३
" २.	५२१९
" २.	६२१९
क्रियावत् १. २. ३.	५४१७४
क्रीडा २.	३११८७
" २.	२११८८
क्रुञ् १.	२३१३४
क्रुध् २.	३६११८३
क्रुधा २.	३६११८३
क्रुष्ट ३.	२११८७
क्रूर १.	३३१२१७
" ३.	४४११०८
" ३.	५३१५
" ३.	५३१७
" १. २. ३.	५४१२४
" १. २. ३.	५४१६०
" १. २. ३.	६४१४
क्रुरा २.	३३१८७
क्रेणी २.	३३१६९
क्रेतव्य १. २. ३.	३१८६८
क्रेतु १. २. ३.	३१८६८
क्रेय १. २. ३.	३१८६८
क्रोड १.	२११३५

[काथन]

क्रोड ३.	५११४९
" १. २. ३.	६५१२३
क्रोडीकरण ३.	४३११७०
क्रोध १.	३६११८३
" १.	३११७६
क्रोधन १.	३४१६९
" १. २. ३.	५४१३२
क्रोधविवशा २.	३६१४७
क्रोश १.	२४१३
" १.	३११६२
क्रोष्टु १.	३४१३२
क्रोष्टुककटि ३.	३३११६९
क्रोष्टुमेखला २.	३३११६७
क्रौञ्च १.	२३११०
" १.	२३१३४
क्रौञ्चारि १.	१११५७
क्लम १.	५२१२८
क्लमथ १.	५२१२८
क्लान्ति २.	५२१२८
क्लिन्न १. २. ३.	५४११३
क्लिष्ट १. २. ३.	५४११३
क्लीतक ३.	३१८१०३
क्लीतकी २.	३३१११०
क्लीव १. २. ३.	३७११७
" १.	४४१३
क्लेदन् १.	६१११६
क्लेदु १.	२११२६
क्लेश १.	३६११९३
क्लेशित १. २. ३.	
	५४१११३
क्लोमन् ३.	४४१११२
क्लण १.	२४१११
क्लणक १.	४४११३५
क्लणन ३.	२४१११
क्लणित ३.	२४१११
क्लथन ३.	५२१४१
क्लथित २.	५४१११५
क्लाण १.	२४१११
क्लाथ १.	४४११४१
क्लाथन ३.	३७१२१५
" ३.	५२१४१

काथसम्भव ३.	३।२।४३
काथि १.	३।६।१५२
कण १.	२।१।५४
” १.	३।६।६२
” ३.	४।४।१२७
” १.	५।२।७
” ३.	५।४।११
कणदा २.	२।१।५६
कणन ३.	३।७।२१४
कणा २.	४।३।२६
(कणा)	
कणांशु २.	२।२।४
कणिका २.	२।२।४
कणितु १.	३।७।२१७
कत ३.	३।७।२१७
कतज ३.	४।४।१८५
कतव्रत १. २. ३.	३।६।१३
कत्त १.	३।५।८५
” १.	३।५।११६
” १.	३।७।२४
” १.	३।७।१३७
कत्त १.	३।७।१
कत्तकुण्ड १.	३।५।६२
कत्त्रिय १.	२।५।२
” १.	३।७।१
कत्त्रियगोलक १.	३।५।६२
कत्त्रिया २.	४।४।२३
कत्त्रियाणी २.	४।४।२३
कत्त्रियी २.	४।४।२२
कपण १. २. ३.	५।४।१५
कपा २.	२।१।५६
कम १. २. ३.	६।४।३
कमा २.	१।१।४७
” २.	३।१।१
” २.	३।६।१८४
कमितृ १. २. ३.	५।४।३३
कमिन् १. २. ३.	५।४।३३
कय १.	३।७।७५
” १.	४।३।१९
” १.	४।४।१२४

कय १.	५।२।३२
” १.	५।४।१४
कयि १.	२।३।९
करि २.	३।१।१
करिन् १.	२।१।८८
कव १.	४।४।१२१
कवधु १.	७।१।१८
काणिन् १.	३।६।२२
काणिनी २.	२।१।५
(कणिनी)	
काणी २.	२।१।१७
कान्त १. २. ३.	५।४।२१५
कान्ति २.	३।१।१
काम १.	१।२।२१
” १. २. ३.	५।४।८४
कार १.	३।८।१२७
” १.	३।८।१२९
” १.	५।३।३०
” १.	५।४।१३
कारक १.	७।१।१६
कारण ३.	२।४।३३
कारपत्रक १.	३।३।१५४
कारमृत्तिका २.	३।८।२५
कालन २.	३।६।१८७
किति २.	६।२।८
कितिसम्भवा २.	३।४।४२
किपण १.	७।१।२१
किपणु १.	७।१।२१
किपा २.	५।२।३३
कित १. २. ३.	५।४।६७
” १. २. ३.	५।४।९७
किप्पु १. २. ३.	५।४।४०
किप्र १.	२।३।१९
” ३.	४।४।१०८
” १. २. ३.	५।४।१२४
किप्रा २.	५।४।८४
कीब १. २. ३.	५।४।३७
कीर ३.	३।८।१४५
” ३.	६।३।४
कीरक १.	४।१।२०
कीरज ३.	३।८।१३९

कीरबीज १.	४।२।४८
कीरविदारी २.	३।३।१९६
कीरक्षर १.	३।६।९८
” १.	३।८।१४७
कीरशुक्ल १.	४।२।४८
कीरशुक्ला २.	३।३।१९६
कीराब्धि १.	३।१।११
कीरादा १.	२।३।७
कीराहार १. २. ३.	३।६।१३४
कीरिका २.	३।७।८०
कीराद १.	३।१।११
कीरोदसुता २.	१।१।३६
कुण १. २. ३.	५।४।४९
कुणक ३.	३।९।१३९
कुत् २.	४।४।१२१
कुत्त १.	४।४।१२१
कुद् १.	३।५।२६
कुद् १.	४।१।३९
” १. २. ३.	५।४।१०९
” १. २. ३.	६।५।१३
कुद्रक ३.	३।८।१२२
” ३.	३।८।१३४
कुद्रघण्टा २.	४।३।१४५
कुद्रनासिक १. २. ३.	५।४।११
कुद्रनीधुत् १ ब.	३।१।४१
कुद्रपचिन् १.	२।३।४१
” १.	२।३।४८
कुद्रहंस १.	२।३।९
कुद्राण्ड १.	४।१।४५
कुद्रोपाय १.	३।७।१२
कुध् २.	३।६।१८२
कुधा २.	३।८।४२
कुधामिजनन १.	३।८।४२
कुधित १. २. ३.	५।४।३६
कुप १.	३।३।६
” १.	३।८।६३
कुमा २.	३।८।४५
कुर १.	३।३।१०१
” १.	३।३।१४१

द्वर १.	३११२६
द्वरक १.	३३१०१
द्वरकर्मन् ३.	३६१४
द्वरप्र १.	३७१८२
द्वरमदिन् १.	३९१२६
द्वरसमुद्र ३.	४३१०८
द्वुरिका २.	३७१६३
द्वुल्लक १. २. ३.	७४१९
द्वुल्लतात १.	३९११०८
” १.	४४३२
द्वुव १.	४४१९९
द्वेत्त्र ३.	३८११७
” ३.	४४३५
” ३.	४२१५२
” ३.	६३३६
द्वेत्त्रज्ञ १.	३६११६१
” १. २. ३.	७५३२
द्वेत्त्रपल्ली २.	४३२२७
द्वेत्त्राजीव १. २. ३.	३८१८४
द्वेत्त्रिक १.	३८१११०
द्वेत्त्रिय १. २. ३.	७५११९
द्वेत्त्रिया २.	३८१६०
द्वेत्थ ३.	३८११२३
द्वेप १.	५२११२
द्वेपण १.	४४१५८
” ३.	५२३३
” ३.	५२१४०
द्वेपणी २.	४२११७
द्वेपणीय १.	३७१६६
द्वेम १.	६५२२
द्वेमङ्कर १. २. ३.	५४१५५
द्वेत्त्र ३.	५१११२
द्वैरेयी २.	४३१७७
द्वोड १.	३३१६२
द्वोणी २.	३१११
” २.	३६११७
द्वोद १.	६१११३
द्वोम्य ३.	३२३३१
द्वौद्र ३.	३८१३५
द्वौम १. ३.	४३३३३
” १. २. ३.	४३११७

द्वौम ३.	४३१२२
द्वौरकार १.	३७११७
द्वणुत १. २. ३.	३७१९७
द्वणू २.	३८१२९
द्वमा २.	३१११
द्वमाभृत् १.	३२११
द्विवङ्क १.	३४१४१
द्ववेड १.	२४११
” १. २. ३.	६५२११
” १. ३.	८१३१
द्ववेल १.	४११२२
” १.	४११२२
द्वख ३.	२१११
” ३.	८३१९९
” ३.	८६१४
द्वखग १.	२१११४
” १.	२३३३
” १.	२३३३२
” १.	३७१७८
” १.	६१११८
द्वखगच्छाय ३.	८१११९
द्वखचित १. २. ३.	५४१७८
द्वखजक १.	३९१३१
द्वखजाका २.	४३१६३
द्वखञ्ज १.	३३२०८
” १.	३५१६
” १. २. ३.	५४११४
द्वखञ्जन १.	२३२३
द्वखञ्जरीट १.	२३२३
द्वखञ्जरीटी २.	२३३४
द्वखट १.	५३१४
द्वखटी २.	३२११६
द्वखट्टास १.	३४३५
द्वखट्टासिका २.	३४३५
द्वखट्वा १.	४३१६४
द्वखट्वाङ्ग १.	१११५९
द्वखट्वाङ्गिन् १.	१११४६
द्वखट्टिका २.	४३१४२
द्वखट्टा १.	३११७
” १.	३७१५८

द्वखट्टगनामान् १.	४११५१
द्वखट्टगपत्र १.	३४२२६
द्वखट्टगपुच्छ १.	४११५१
द्वखट्टगङ्ग १.	१२३१
द्वखट्टगम्बु ३.	३७१६१
द्वखट्टगिन् १.	३४१७
द्वखण्ड ३.	३८११९
” १. ३.	३८१३४
” १. ३.	४४१५६
” १. २. ३.	५४१८६
” १. २. ३.	६५२५
द्वखण्डना २.	६१५३
द्वखण्डपरशु १.	१११४३
द्वखण्डपर्कट ३.	४३१०६
द्वखण्डल १. ३.	४३१३०
द्वखण्डशर्करा २.	३८१३३
द्वखण्डिक १.	३८१४३
द्वखण्डिका २.	३६३२
द्वखण्डित १. २. ३.	२४२०
द्वखण्डिता २.	२११६०
द्वखण्डिन् १.	३८१३८
द्वखण्डीर १.	३८१३६
द्वखतिलक १.	१२११४
द्वखदरी २.	३३१४८
(द्वखद्विरी)	
द्वखदिका २.	४३१६७
द्वखदिर १.	१२३६
” १.	३३३३
द्वखद्योत १.	२३१७७
द्वखनक १.	३५१४०
” १.	४१३१
” १. २. ३.	७५३३
द्वखनि २.	३२११८
द्वखनित्र ३.	३८१२८
द्वखनित्री २.	३६१२३
द्वखपुट १. २. ३.	३६१३२
द्वखपुर १.	३३१११
” १.	३३२२२
” १.	७११२२
द्वखर १.	३३३९

[खर]

वैजयन्तीकोषः

[खोड]

खर ३.	३३३२१८
" १.	३३३२२८
" १.	३३३६५
" १.	५३३३
" १.	५३३५
" १.	५३३७
" १.	५३३४२
" ३.	८६६६
खरक १.	२३३१०
खरकुटी २.	३३३२५
खरकोमल १.	२३३८४
खरकाण १.	२३३३५
खरच्छद १.	३३३२२९
खरट १.	५३३४
खरटी २.	३३३२६
खरणस् १. २. ३.	५३३१२
खरणस १. २. ३.	५३३१२
खरमञ्जरी २.	३३३११५
खरमुख ३.	३३३१२५
खरम्भर १ व.	३३३२३
खरागरी २.	३३३८६
(खरा, गरी)	
खरारि १.	१३३२१
खरारवा २.	३३३१०२
खरु १. २. ३.	३३३१२
" १.	६३३१८
खरुञ्जक १. ३.	३३३१०
खरुहा २.	३३३१३२
खरुल १.	३३३७६
खर्जनी २.	३३३१०९
खर्जू २.	३३३१२४
खर्जूर ३.	३३३१३
" ३.	३३३२४
" १.	३३३२२२
" १.	३३३३३
खर्जूरिका २.	३३३२२२
खर्व ३.	५३३२८
" १. २. ३.	५३३८१

खल १.	३३३३१
" १. २. ३.	३३३१४२
" १.	५३३२५
खलकुल ३.	३३३४७
खलति १. २. ३.	३३३४७
खलधान ३.	३३३३१
खलपू १. २. ३.	३३३६७
खला २.	६३३२५
खलि २.	३३३२७
" २.	३३३८१
खलिनी २.	५३३१२
खलीन १. ३.	३३३१३
खलु ४.	८३३२०
खलुकी २.	३३३८८
खलुष १.	५३३३४
खलूरिका २.	३३३१९४
खलेपाली २. १.	३३३३१
खलया २.	५३३१२
खल्व १.	३३३४६
" ३.	३३३६०
खलवाट १. २. ३.	३३३४७
खलुक १.	५३३५३
खप १.	३३३४९
" १.	३३३५६
" १.	५३३५२
खस १.	३३३१२३
खसुम ३.	३३३४७
खाङ्ग १.	२३३१४
खाटि १.	३३३२१६
खाङ्गिक १. २. ३.	३३३४४
खाण्डवप्रस्थ १. ३.	३३३८
खातक ३.	३३३५
खादन ३.	३३३१०४
" १.	३३३८८
खादित १. २. ३.	५३३१०७
खाद्य ३.	३३३९१

खाध्वनीन १.	२३३१४
खारी २.	५३३५७
" २.	५३३५७
" २.	५३३६३
खारीक १. २. ३.	३३३२२
खाषेय १.	१३३१
खिल ३.	३३३३३
" १. २. ३.	३३३१८
खिलखिल १.	२३३४०
खुडार १.	३३३४४
खुडुक १.	३३३२२१
(खुडुक)	
खुर १.	३३३७४
" १.	३३३१०१
खुरणस् १. २. ३.	५३३११
खुरणस १. २. ३.	५३३११
खुरुराह १.	३३३१०५
खेचर १.	१३३३
" १.	७३३२२
खेट १. ३.	३३३११
" १. २. ३.	५३३७५
" १. २. ३.	६३३२४
खेटक ३.	३३३१९७
" ३.	३३३१३
" १.	३३३८०
" १.	३३३१२१
खेटन ३.	३३३४०
खेटिन् १. २. ३.	३३३४६
खेद १.	५३३३२
खेय ३.	३३३१३
खेल १.	३३३२५
खेला २.	३३३८७
खेलि १.	३३३४४
खेलाह १.	३३३१०३
खोझाह १.	३३३९९
खोड १.	२३३३५
" १. २. ३.	५३३१४

खोरण]

शब्दालुक्रमणिका

[गमन

खोरण १.	पा३३
खोलक १.	७११२३
ख्यातगर्हण १. २. ३.	३१६११
ख्याति २.	२१४३६
” २.	३१६१६३
ग	
गगन ३.	२१११
गङ्गा २.	४१२२४
गङ्गाधर १.	१११४२
गङ्गेष्टि २.	४११५७
गच्छ १.	पा१३७
गज १.	३१७६०
गजचिह्निका	३१३१७२
गजच्छाया २.	२११३१
गजजीवन १.	३१७८८
गजला २.	पा११९
गजमण्डन १.	३१७८६
गजवीथिका २.	२११४८
गजानन १.	१११५३
गजाराति १.	३१४३२
गङ्गा १. २. ३.	६१५२६
गङ्गम ३.	२१४१२
गङ्गा-२.	३१२१०
गङ्गु १.	४१४१३३
” १. २. ३.	६१५२९
गङ्गुल १. २. ३.	पा४१११
गङ्गुची २.	३१८४५
गङ्गोल १.	४१३१०१
गण १.	३१७५८
” १.	पा१११
” १.	६१११९
” १	८१६१३
गणक १.	३१७२५
गणतिथ १. २. ३.	पा१११९
गणन ३.	पा११३६
गणपतिप्रिय १.	१११५१
गणपूरण १. २. ३.	पा१११९
गणरात्र ३.	२११५९

गणाधिप १.	१११५४
गणि १.	३१६१८२
गणिका २.	३१७३३
” २.	४१४२४
” २.	७१२१७
गणिकाराण १.	पा११८
गणिकारी २.	३१३८६
गणोत्साह १.	३१४८
गण्ड १.	३१७७५
” १.	४१४९०
” १.	४१४१२३
” १.	पा१३७
” १.	६११२०
गण्डक १.	३१४७
” १.	३१७११६
” १.	४११४५
गण्डकली २.	३१३१४८
गण्डफली २.	८१२५
गण्डमाल १	४१४१२९
गण्डमालहन् १.	३१३१७७
गण्डरी २.	३१३१९८
गण्डशैल १.	३१२१९
गण्डरी २.	३१८७८
गण्डुक १.	४१३१६२
गण्डूपद १.	४११५९
गण्डूप १.	४१४७८
” १. ३.	७१५३४
गण्डूपक १.	३१७७०
गण्डोर १.	४१३१०१
गण्डोली २.	२१३४६
गति २.	३१६२३६
” २.	४१४१३३
” २.	पा११०
” २.	६१२११
” २.	८१५५
गद १. २.	६१५२९
गदाग्रज १.	१११२५
गदापाणि १.	१११३३
गद्गद १. २. ३.	२१४१५
गद्गदस्वर १.	३१४८
गद्यपद्यमयी २.	२१४४२

गन्त्री २.	३१७१२७
” २.	४१३१०८
गन्ध १.	पा३३२
” १.	पा३१५४
” १.	६११२२
गन्धक १.	३१२१४
(गन्धिक)	
गन्धकुटी २.	३१८१९८
गन्धचेलिका २.	३१४३६
गन्धन ३.	७१३१३
गन्धनाकुला २.	३१८१७७
गन्धमुण्डक १.	३१३५९
गन्धमृगा १.	३१४३५
गन्धरस १.	३१२१५
गन्धर्व १.	११२३८
” १.	११३१२
” १.	३१४३२
” १.	७१३१४
गन्धर्वगण १.	११३१११
गन्धर्वहस्त १.	३१३१६५
गन्धवह १.	११२४७
” १. २.	८१५७
गन्धवाह १.	११२४७
गन्धसार १.	३१८११३
गन्धसारण १.	पा३१४९
गन्धसोम ३.	४१२४१
गन्धाखु २.	४११३२
गन्धाश्मन् १.	३१२१४
गन्धाहिक १.	४१११८
गन्धिक १.	पा३१५१
” १.	पा३१५४
गन्धिघना २. १. ३.	
	११३३९
गन्धिनी २.	३१८१९८
गमस्ति १.	२१११३
” १.	२१११६
” १. २.	८१२२५
गभीरक १. २. ३.	४१२१९
गम १.	पा२१०
गमन ३.	पा२१९
” ३	पा२१०

गमि]

गमि १.	३१६१२०१
(निमि १)	
गम्भारी २.	३३१५८
गम्भीर १. २. ३.	४२१२०
" ३	८३११७
गर १.	४११२२
" १.	४११२३
गरल १.	३३१५०
" १.	४११२२
गरवायु १.	११२१५३
गरह ३.	३३१५७
गरी २.	३३१८६
गरुड १.	१११३७
गरुडध्वज १.	११११४
गरुडा २.	४१११०१
गरुत् १.	२३१४८
गरुत्मत् १.	१११३७
" १.	७११२४
गरुल १.	४२१४७
गरोलिका २.	४२१४८
गर्गर १.	३१५३४
गर्गरी २.	३१५३२
" २.	४३१२७
गर्ज १.	२१४३
" १.	३१७६०
गर्जन ३.	२१४३
" ३.	३३१२०६
गर्जना २.	२१४३
गर्जा २.	२१४३
गर्जितः २.	२२१५
" १.	७१५३४
गर्त २.	४२१३
गर्तकुङ्कुट १.	२३१२१
गर्तिका २.	४३१२२
गर्दनक १.	३१४६६
गर्दभ १.	३१४६५
गर्दभाण्ड १.	३३१५९
गर्दभाह्वय ३.	४२१४१
गर्धन १. २. ३.	५१४३५
गर्धना २.	३३११८०
गर्भ १.	३१८१४१

वैजयन्तीकोषः

गर्भ १	४१४४०
" १.	६११२१
गर्भक ३.	२११५८
(गर्भित)	
" ३.	४३१५५
गर्भपाकिन्	३१८३४
गर्भस्फुट १.	४१११३
गर्भागार १.	४३१५१
गर्भाजि १.	३३१५७
गर्भाधान ३.	३३१६२
गर्भाशय १.	४१११८
गर्भिणी २.	४१११६
गर्भोपघातिनी २.	३१४४७
गर्भुट १.	३१५३०
गर्भुटिका २.	३१८१५
गर्भुत् २.	३१८१५
" २.	६१११८
गर्व १.	३३१६९
गर्वहारिका २.	२१४२८
गर्वि २.	३३१६९
गर्वित १. २. ३.	५१४२०
गर्वण ३.	२१४३३
गर्वणा २.	३३१९३
गर्हा २.	३३१९३
गर्हा १. २. ३.	५१४७५
गर्हावादिन् १. २. ३.	
गल १. २. ३.	४१४४७
गलकम्बल १.	३३१६०
गलगण्ड १.	४११२९
गलन्ती २.	४३१५७
गलस्तनी २.	३३१६२
गलाङ्कुर १.	४११२९
गलित १. २. ३.	५१४१०२
गलेवाल १.	४११४२
गल्या २.	५१११४
गह्व १.	४११९०
गह्वर्त १.	३१९५३
गवय १.	३१४३३
गवल १.	३१४११

[गान्धर्व

गवल ३.	३१८११८
गवसी २.	३३१२३
गवाच १.	४३१५४
गवाचक ३.	४३१५३
गवाक्षी २.	३३१२४
" २.	३३१७३
" २.	३३१८३
गवादिनी २.	३२१४९
गवाधुका २.	३१८१५
गवेधु २.	३१८६१
गवेधुका २.	३१८६१
गवेधणा २.	३३१२१
गवेधित १. २. ३.	५१४९८
गव्य ३.	३१८१४५
गव्या २.	३११६२
" २.	५१११३
" २. ३.	६१५२६
गव्यूत ३.	३११६२
गव्यूति २.	३११६२
गहन ३.	३३११
" ३.	८३११७
गह्वर ३.	७३११५
" ३.	८३११७
गाङ्गी २.	२११७६
गाङ्गेय १.	१११५६
" १. ३.	७१५३५
गाङ्गेरुकी २.	३१८६१
गाढ १. २. ३.	५१४१३२
गाढास्य ३.	३१८१४१
गाणिक्य ३.	५११८
गाण्डव १. ३.	३१७१७४
" १. ३.	७१५३५
गाण्डवी १.	७१५३५
गातु १.	२१४२
गात्र ३.	३१७७५
" ३.	४१४५२
" ३.	४१४५५
गात्रसङ्कोचिन् १.	३१४७२
गान ३.	२१४२
" ३.	३१९१०९
गान्धर्व १.	१३१२

गान्धर्व ३.	३।६।२९	गुच्छ १.	३।३।२०	गुण्डा २.	३।३।९५
” ३.	३।९।११०	” १.	४।३।१४०	गुण्डित १. २. ३.	५।४।११३
गान्धार १ व.	३।१।२४	गुच्छा २.	३।८।३५	गुद ३.	४।४।६०
” १.	३।९।१३२	” २.	३।८।६०	गुदग्रह १.	४।४।१३२
गायत्र १.	३।६।८	गुच्छार्ध १.	४।३।१४०	गुदानिल १.	३।६।२०५
” ३.	३।६।३४	गुजं १.	३।३।२०६	गुध १.	३।८।१३३
गायत्री २.	३।६।३४	गुञ्जन ३.	२।४।२	गुन्दिल १.	२।४।१०
गारुड ३.	३।२।१९	गुञ्जा २.	३।३।१७९	गुन्द्र १.	३।३।२२८
गारुत्मत् ३.	३।२।३८	” २.	५।१।४४	गुन्द्रा २.	३।३।६६
गार्भिण ३.	३।६।३	” २.	६।२।११	” २.	३।३।१९९
” ३.	५।१।८	गुड १.	३।३।२७	” २.	३।८।६०
गार्हपत्य १.	१।२।२४	” १.	४।३।१०१	गुस १. २. ३.	५।४।१००
गालव १.	३।३।४९	” १.	४।३।१६१	गुसराग १.	३।३।२२५
” १.	३।३।५२	” १.	४।४।६२	गुप्ति २.	६।२।११
गालि २.	२।४।३३	” १.	४।४।१३३	गुम्फ १.	५।२।३९
गिर २.	१।१।९	” १. २.	६।५।२७	गुम्फा ३.	५।२।३४
गिरि १.	३।२।१	” ३. २.	८।९।३२	गुरु १.	१।१।३४
” ३.	३।८।९६	गुडक १.	४।३।४७	— ” ३.	३।२।२८
” १.	४।३।१६१	गुडजूष १.	४।३।९६	” १.	३।६।२२
गिरिकर्णिका २.	३।१।१	गुडपुष्प १.	३।३।४४	” १.	३।८।५३
गिरिकर्णी २.	३।३।१३४	गुडफल १.	३।३।४५	” ३.	३।८।१३९
गिरिका २.	४।१।३२	गुडा २.	६।५।२७	” १. २. ३.	६।५।२७
गिरिकोलि २.	३।३।७८	” २.	८।९।३३	गुरुपत्र ३.	३।३।३२
गिरिजा २.	४।२।२२	गुडाका २.	३।६।१९७	गुरुस्वमृत् १. २. ३.	५।४।२५
गिरिप्रिया २.	३।३।१०५	गुह्वरी २.	३।३।१३१	गुलिन् १.	५।३।२५
गिरिमल्लिका २.	३।३।७३	गुडेरक १.	४।३।१०१	गुलुन्ध १.	३।३।२०
गिरिलक्ष्मण १.	३।३।२८	गुण १.	३।६।१६२	गुल्फ १.	४।४।५७
गिरिश १.	१।१।३९	” १.	३।९।३०	गुल्फशीर्ष १.	४।४।५७
गिरिसार १.	३।२।३४	” १. २. ३.	४।३।९३	गुल्म १.	३।३।७
गिरिस्तनी २.	३।१।३	” १.	५।३।१	” १.	५।३।५८
गिरीयक १.	४।३।१६२	” १.	५।४।६४	” १.	४।४।११३
गिरीश १.	१।१।३९	” १.	६।१।२०	” १.	५।४।१३०
गिल १.	३।५।१५	गुणग्राम १.	५।१।६७	” १.	६।१।१९
गीत ३.	३।९।१०९	गुणलयनी २.	४।३।१२५	गुलिमनी २.	३।३।७
गीतिशासन ३.	३।६।२९	गुणवृक्ष १.	८।६।२०	गुवाक १.	३।३।२१७
गीत्युपक्रम १.	३।९।१४०	गुणवृक्षक १.	४।२।१७	गुह १.	१।१।५५
गीर्ण १. २. ३.	५।४।१०६	गुणसामान्य ३.	३।६।१६२	गुहा २.	३।२।६
गीर्वाण १.	१।१।२	गुणावली २.	३।४।३६	” २.	३।३।१३६
गीष्पति १.	२।१।३३	(गुणापणी)		गुहाल्य १.	३।३।८०
गुगुलु १.	३।३।५३	गुणित १. २. ३.	२।४।२२	गुहाशय १.	४।१।५०
गुच १.	२।८।६३	गुणोत्कर्ष १.	५।२।३		

गुहाशय]

गुहाशय १.	८११२१
गुह्य ३.	४४४६२
„ १. २. ३.	५४४१२०
„ १. २. ३.	५४४१२०
गुह्यक १.	११३३
„ १.	८११५६
गुह्यकेश्वर १.	११३५७
गुह्यधारा २.	४४४६३
गुह्यवन्प १.	४३१३३१
गुह्यमध्य १.	४४४६२
गू १. २.	८५३८
गूढकोश १.	१२१६०
गूढपद ३.	३६१७३
गूढपाद १.	४११६
गूढपुरुष १.	३७२६
गूढवृत्त १.	३३५५
गूध १.	४४११९
गून १. २. ३.	५४११३
गुञ्ज १.	३३५७
„ १.	३३२०४
„ १.	३३२०६
„ १.	३३२०७
गुण्डव २.	३३३९
गुप्ति १. २. ३.	५४३५
गुप्ति १.	२३३०
गुप्ति २.	३३५८
„ २.	३४४८
गृह ३.	४३१९
„ १ व.	४४३५
गृहकाण्ड १.	३८७८
गृहकारिका २.	२३४३
गृहगोधिका २.	४१३०
गृहगौलिका २.	४१३०
गृहजालक १. २. ३.	३९१८६
गृहद्रुम १.	३३५४
गृहपति १.	१२२४
„ १.	३७२७
गृहमणि १. २.	४३१६१
गृहसूग १.	३४६९
गृहमेधिन १.	३६४०

वैजयन्तीकोपः

गृहयालु १. २. ३.	५४३८
गृहश्रेणी २.	४३४६
गृहस्थ १.	३६४०
गृहस्थूण ३.	४३३९
„ ३.	८५२२
गृहान्तर ३.	३१५२
गृहावग्रहणी २.	४३४४
गृहिणी २.	२३४६
„ २.	४४२१
„ २.	७२१७
गृहिन् १.	३६४०
गृहीति २.	३६१६५
गृहेडिका २.	४१३६
गृहेश्वर १.	५४४७०
गृहोच्छिष्ट १.	३३२०४
गृहोदक ३.	४३८१
गृह्य १.	२३५
„ १. २. ३.	६४५
गृह्यक १.	५४२८
गैय ३.	११९१०९
गोह १. ३.	४३१९
गोहेनर्दिन् १. २. ३.	५४४७०
गौरिक ३.	३२११
„ ३.	३२२०
गौरुप १.	३५३३
गौरैय ३.	३२१६
गौरैयक ३.	३३२१९
गौ १.	१११२
„ २.	१११९
„ २.	३३४१
„ १.	३४५२
„ २.	३४५२
„ १. २.	८५३७
गोकण्टक १.	३३१४१
गोकरीपेन्धन ३.	३६१७
गोकर्ण १.	३४१५
„ १.	५११८०
गोकर्णी २.	३३११४
गोकुल ३.	३४६१
गोकुल ३.	३६१३९

[गोनस

गोक्षुर १.	३३१४१
गोगण १.	१११३
गोग्रन्थि १.	३४६०
गोगन्धन १.	१२५४
गोचर १.	५३२
गोजिह्वा २.	३३११६
„ २.	३८६०
गोक्षुम्या १.	३३१७३
गोणिका २.	५१५८
गोणी २.	४३१३०
„ २.	५१५६
„ २.	५१६३
गोतम ३.	३७१७४
गोत्र १.	३२११
„ ३. २.	६५२८
गोत्रभिद् १.	१२३
गोत्रा २.	५११३
„ २.	६५२८
गोदर्भ ३.	३३२०१
(गोनर्द)	
गोदा २.	४२२८
गोदारण ३.	३८२७
„ ३.	३८२९
गोदावरी २.	४२२८
गोदुह १.	१३१२
„ १.	३९२८
गोध १.	३५१
„ २. ३.	३७१५५
गोधन ३.	३४६१
गोधा १.	३५१
„ २.	३७१५५
„ २.	४१२६
गोधामाली २.	४११८४
गोधासन ३.	३६२२०
गोधि २.	४४९६
गोधूम १.	३८५३
गोधूमचूर्ण ३.	४३६८
गोनर्द १.	२३३३
गोनर्दीय १.	३६१५७
गोनस १.	४११३
„ १.	४११४

[गोनास]

गोनास १.	४१११४
गोनिपदन ३.	३१६२२५
गोप १.	३१७२२
” १.	३१९२८
गोपघोष्ठा २.	३१३१८८
गोपति १.	३१४५३
” १.	७११२४
गोपभद्रा २.	३१३५७
गोपा २.	३१३१३९
गोपानसी २.	४१३३९
गोपायित १. २. ३.	५१४१००
गोपाल १.	३१९२८
गोपाली २.	३१६५६
गोपुच्छ १.	४३११४१
गोपुर ३.	३१३२०१
” ३.	४३११५
गोप्य १.	३१९३
” १. २. ३.	६१५२९
गोमत् १. २. ३.	३१४५९
गोमत ३.	३१३६२
गोमतखिलका २.	३१४४६
गोमती २.	४१२२९
गोमय १. ३.	३१४६०
गोमायु १.	३१४३८
गोमिन् १. २. ३.	३१४५९
गोमुख १.	४११५३
” १. ३.	७१५३६
गोरक्षजम्बू २.	८१२११
गोरक्षतण्डुल १.	३१८६२
गोरस १.	३१८१३९
” १.	३१८१४९
गोरुत ३.	३११६२
गोर्जाल १.	३१३२३३
(होर्गल)	
गोर्द ३.	४१४११२
गोल १.	३१२१५
” ३.	४३१८२
गोलक १.	३१५६०
” १.	३१५६२
” १.	३१५६३

शब्दानुक्रमणिका

” १.	३१५६३
” १.	७११२३
गोलका २.	७१२७
गोलत्तिका २.	२१३२४
गोलपुस १.	३१४३२
गोला २.	३१२१७
गोलाङ्गूल १.	३१४४०
गोलोक १.	३१६२०७
गोलोमी २.	३१३१९७
” २.	३१३२३३
गोवन्दिनी २.	३१३६६
गोवाहिन् १.	३१४३३
गोविन्द १.	११११५
” १. २. ३.	२१४५९
गोवीथी २.	२११४७
गोवृष १.	३१४५४
गोव्रत ३.	३१६१४८
गोशकृत् ३.	३१४६०
गोशाल १. २. ३.	८१९३४
गोशाला २.	४३२२२
गोशीर्ष ३.	३१८११३
गोष्ठ १.	३१९३१
गोष्ठवातिङ्गन १.	३१३१०३
गोष्ठश्च १. २. ३.	५१४२६
गोष्ठी २.	३१८१३
गोष्पद १. २. ३.	७१५३७
गोसङ्ख्य १.	३१९२८
गोसर्ग १.	२११६८
गोसन्ध ३.	४३११३
गोस्तन १.	४३११४१
गोस्तनी २.	३१३१८१
गोस्वामिन् १. २. ३.	
” ३.	३१४५९
” ३.	३१९१०५
गोहरीतकी २.	३१३३०
गौतम १.	१११३५
” १.	३१६१५६
” ३.	४१४१०८
गौतमी २.	१११५९
गौधार १.	४११२६
गौधेय १.	४११२७

[ग्रहराज]

गौधेर १.	४११२६
गौर १.	३१३१९४
” ३.	३१३२३२
” ३.	५१३१०
” ३.	५१३२०
” १. २. ३.	६१४५
गौरव ३.	३१८११६
” ३.	५१२२०
गौरशाक १.	३१३४४
गौरसर्ज १.	३१३३९
गौरसर्प १.	५११४३
गौरार्द्र १.	४११२३
गौरावस्कन्दिन् १.	११२१७
गौरी २.	११२४६
” २.	३१३१२१
” २.	३१३२११
” २.	८१६३
गौर्य १.	१११५६
गौष्ठीन ३.	३१९३१
ग्मा २.	३११३
ग्रथित १. २. ३.	५१४११०
ग्रन्थ १.	६११२१
ग्रन्थन ३.	५१२३९
ग्रन्थि १.	३१३११
” १.	३१९३१
ग्रन्थिक ३.	३१८११
ग्रन्थिनी २.	३१८७७
ग्रन्थिपर्ण ३.	३१८१२
ग्रन्थिल १.	३१३३८
ग्रस्त १. २. ३.	५१४१०८
ग्रह १.	११२३८
” १.	२११३०
” १.	२११५०
” १.	३१६६३
” १.	३१९५७
” १.	६११२०
ग्रहकल्लोल १.	२११३६
ग्रहण ३.	७१३१४
ग्रहणी २.	४१४१२९
ग्रहभोजन १.	३१७९१
ग्रहराज १.	८११२१

ग्रहि १.	८१११०	ग्लास्तु १. २. ३.	४४११४५	घनश्रेणी २.	३१११
ग्रहीतृ १. २. ३.	३८१९	ग्लौ १.	२११२५	घनसागर १.	३८११०५
" १. २. ३.	५४३३८	घ		घनाघन १.	८११२२
ग्राम १.	३११११०	घङ्गोर १.	३१११६९	घनागम १.	२११८९
" १.	४३३२	घट १.	४३१५८	घनात्यय १.	२११८९
ग्रामणी १. २. ३.	५४१६६	" १.	५११५५	घनाम्ला २.	४३१७८
" १. २. ३.	७५३३६	घटना २.	५२३३४	घनोपल १.	२२१७
ग्रामणीकुल ३.	३११२०	घटा २.	३७१७०	घरिन् १.	३८१३५
ग्रामतच्च १.	३११३४	" २.	३८११४	घर्घर १.	३१११८
ग्रामता २.	५११९	" २.	५२३३४	" १.	३११३०
ग्रामधान्य ३.	४३१३३	घटिका १. ३.	५११६०	" ३.	३६१९४
ग्रामप्रैष्य १.	३११६२	घटिका २.	२११५४	" १. ३.	४३१५०
ग्रामसीमा २.	४३१११	" २.	७२१८	घर्घरक १.	२३१२२
ग्रामसूकर १.	३११७१	घटिकालवण ३.	३८११२४	घर्घरिका २.	३१११३१
ग्रामार्ध १.	४३१५	घटी २.	४३१५९	" २.	८२१५
ग्रामीण १. २. ३.	४३१३३	घटीयन्त्र ३.	४२१२१	घर्घरी २.	३११३३१
ग्रामीणा २.	३३१११०	घट्ट १.	४२१२०	घर्म १.	३११८१
ग्रामेयक १. २. ३.	४३१३२	घण्टा २.	३३११५८	" १.	८११५७
ग्राम्य १.	२३१४१	" २.	४४१८०	घस्मर १. २. ३.	५४१५०
" १. २. ३.	४३१३३	घण्टाताड १.	४३३३०	घस्त्र १.	२११५५
ग्राम्यधर्म १.	४३१३७०	घण्टापथ १.	४३१३६	घाटा २.	४४१८५
ग्राम्या २.	३३१३६०	घण्टारवा २.	३३१९८	घाण्टिक १.	३११३७
ग्रावन् १.	३६११०२	घण्टाला २.	४२११५८	" १.	३७१३०
" १.	६१११९	घण्टास्वन ३.	३२१२९	घात १.	३७२११
" १.	८६१४	घन १.	२२११	घातुक १. २. ३.	५४१४२
ग्रस १.	३६११५	" ३.	३२३३२	घारि २.	२११५७
" १.	४३१०१	" १.	३६११५	घास १.	३११७४
ग्रसग्रह ३.	३६१५०	" १.	३६१०२	घासहार १.	३११६३
ग्राह १.	४११५२	" १.	३७१७१	घासि १.	१२११४
" १.	६१११९	" ३.	३९११५	घासिक १.	३७११७
ग्राहिन् १.	३३३३२	" ३.	३९११६	घिमिण १.	३११२१
ग्रीषा २.	४४१८३	" ३.	३९१२३	घुटिक १.	३७१८६
ग्रीष्म १.	२११८८	" ३.	४४१८६	" १.	४४१५७
ग्रीष्मसुन्दर १.	३३११५७	" १.	५३१५५	घुण १.	४११३६
ग्रीवेयक ३.	४३१३७	" १. २. ३.	५४१२६	" १.	५३१४९
ग्रीष्मिका २.	३३११८६	" १. २. ३.	६५१३०	घुणाभीष्टा २.	३३११९८
ग्लवथु १.	४४१२२	घनगोलक १. ३.	३२१२३	घुलुच्छ १.	३८१५९
ग्लस्त १. २. ३.	५४११०८	घनधातु १.	४४१०४	घुसृण ३.	३८१११६
ग्लह १.	३११६०	घनपद ३.	४२१२	घूर्णन ३.	५२११०
ग्लान १. २. ३.	४४११४५	घनरस १.	४२३३	घूर्णि २.	५२११०
ग्लानि २.	४४११२२	घनवासक १.	३३१३६९	घृणा २.	३६११९२

घृणा २.	३६।१९	घोष १.	२।४।२	चक्रावर्त १.	५।२।१०
(मृणा)		" १.	३।३।१५८	चक्राह्वयाह्वय १.	२।३।९
" २.	६।२।१२	" १.	३।९।३२	चक्रिन् १.	१।१।१२
घृणि १.	२।१।५५	घोषवती २.	३।९।११६	" १.	३।६।४०
" १.	६।१।२२	घोषित १. २. ३.	२।४।२२	" १.	४।१।६
" १.	८।९।२५	घौष १.	४।१।२५	" १.	६।१।२३
६ त ३.	३।८।१३८	घ्राण ३.	४।४।९१	चक्रीवत् १.	३।४।६५
" ३.	६।३।६	" १. २. ३.	६।५।२९	चक्रोष्ट्री २.	३।३।२१०
" १.	८।९।२८	च		चक्षत् १.	२।१।३३
घृतपूर १.	४।३।७४	च ४.	८।७।४	चक्षुष्य १.	३।८।३७
घृतमुञ्ज १. २. ३.		" ४.	८।७।११	" १.	४।३।७०
	३।६।१३५	चकित १. २. ३.	५।४।१८	" १. २. ३.	५।४।७०
घृतलेखनी २.	३।६।१०१	चकोर १.	२।३।३५	" १. २. ३.	५।४।१७
घृताञ्जन ३.	३।६।९२	चक्र ३.	३।३।२१८	चक्षुष्या २.	३।२।४४
घृताशिन १. २. ३.		चक्षण ३.	३।३।२१८	" २.	३।३।१२४
	३।६।१३५	चक्र १.	२।३।९	चक्षुस् ३.	४।४।९४
घृतिन् १.	३।६।१३५	" ३.	३।७।५५	चङ्कर १.	७।१।२५
(व्रतिन्)		" ३.	३।७।१३४	चञ्चटक १.	३।३।१५२
घृषि १.	३।९।१९	" ३.	४।२।३०	चञ्चरीक १.	२।३।४३
घृष्टि १.	२।१।१६	" ३.	४।४।१२५	चञ्चल १.	२।३।२४
" १.	३।४।६	" ३.	६।३।७	" १. २. ३.	५।४।७८
" १.	८।९।२५	चक्रकारक ३.	३।८।९९	चञ्चला २.	२।२।३
घृष्व १.	३।९।१९	चक्रचर १.	३।६।४२	चञ्चु २.	२।३।५०
घोटक १.	३।७।९१	चक्रधारण ३.	३।७।१३१	" १.	३।३।६५
घोण १.	३।४।५४	चक्रपक्ष १.	२।३।५	चटक १.	२।३।१४
घोणस १.	४।१।१४	चक्रपाणि १.	१।१।१०	(पण्डक)	
घोणा २.	२।३।४६	चक्रपाद १.	८।१।२२	" १.	२।३।१८
" २.	४।४।९१	चक्रप्रान्त १.	३।७।१३५	चटिका २.	३।८।९१
" २.	६।२।१२	चक्रभृत् १.	८।९।५०	चटिकाशिर १	३।८।९१
घोणिन् १.	३।४।५	चक्रमर्दन १.	३।३।१५८	चटु १.	६।१।२३
घोण्टा २.	३।३।२१७	चक्रलक्षणा २.	३।३।१३२	चटुल १. २. ३.	५।४।७९
घोर १.	३।४।३८	चक्रवर्तिन् १.	३।७।२	चटक १.	२।२।६
" ३.	३।८।११७	चक्रवर्तिनी २.	३।८।८९	चण १.	३।८।४३
" १. २. ३.	३।९।७९	चक्रवाक १.	२।३।९	चण्ड १.	५।३।९
घोरवाशिन ३.	२।४।४	चक्रवाल ३.	२।१।६	" १. २. ३.	५।४।३२
घोरित ३.	२।४।५	" ३.	३।२।३	चण्डकोलाहला २.	३।९।१२६
घोल १.	३।५।२१	" ३.	५।१।३	चण्डमुण्डा २.	१।१।६३
" ३.	३।८।१४८	चक्रवृत्ति २.	४।८।६	चण्डांशु १.	२।१।१५
" १.	३।८।१४९	चक्रसंज्ञ ३.	३।२।१५	चण्डात १.	३।३।१९२
" ३.	३।८।१५०	चक्राङ्का २.	३।३।१४३	चण्डातक ३.	४।३।१२२
" १.	४।३।५९	चक्राङ्का २.	३।८।८६		

[चण्डाल]

वैजयन्तीकोषः

[चरणाग्रक]

चण्डाल १.	३१५१२२
„ १.	३१५१८३
„ १.	३१५१०७
„ १.	३१५१५४
चण्डालवस्त्रकी २.	३१५१२७
चण्डाल १.	३१५१२६
चण्डा २.	१११६२
चतुर ३.	३१५१९२
„ ३.	४३१२१
„ १. २. ३.	५४४५४
„ ४.	५४४१३७
„ १. २. ३.	७४४१११
चतुरङ्गक ३.	३१७५९
चतुरङ्गल १. २. ३.	३११५२
„ १.	३१३१४८
चतुरा २.	३१४११९
चतुरुष्ण ३.	३१८१८१
चतुर्गति १.	४११५०
चतुर्थ १. २. ३.	५११२१
चतुर्थक १. २. ३.	५११५१
चतुर्थकालिक १. २. ३.	३१६१२६
चतुर्द्व १.	१२११२
चतुर्दशी २.	२११७०
„ २.	३१५११७
चतुर्धा ४.	८१८२०
चतुर्भद्र १.	३१६२३६
चतुर्मुख १.	११११७
चतुर्वर्ग १.	३१६२३५
चतुर्विधा ३.	४३१९१
चतुर्हस्त १.	३११५७
चतुरशाख ३.	४४४५२
चतुरशाल ३.	४३१२६
चतुष्क ३.	५११५५
चतुष्की २.	४३१२४३
चतुष्कृतवः(स्) ४. ८१८१६	

चतुष्पञ्च १. २. ३.	५११२६
चतुष्पथ १.	३११५१
चतुष्पाद् १.	११२४३
„ १.	३११५२
चतुष्प्रस्थ १.	५११५४
चतुष्टोम १.	३१६१८६
चतुस्स्नेह ३.	४३१९९
चत्वर १.	७५३६८
चत्वरि २.	३१६१६६
„ २.	७२१८
चत्वारिंशत् २.	५११२६
चन ४.	८१८१२
चनका २.	३१४२३
चन्दन १. ३.	३१८११२
„ ३.	३१८११३
चन्दनद्रवभाजन ३.	४३११०९
चन्द्र १.	२११२४
„ ३.	३२११९
„ १.	३३१९५
„ १.	३१८१०५
„ ३.	४२१४१
चन्द्रकान्त १.	३२१३७
चन्द्रकिन् १.	२३३३८
„ १.	३१४३
चन्द्रगोलिका २.	२११२८
चन्द्रपाद् १.	२११२८
चन्द्रवाला २.	३१८१८७
चन्द्रभासा २.	४२१२७
चन्द्रभीरु ३.	३२१२३
चन्द्रमणि १.	३२१३७
चन्द्रमस् १.	२११२४
चन्द्रमातृ २.	२११७२
चन्द्रमौलि १.	१११३९
चन्द्रव्रत ३.	३१६१३६
चन्द्रव्रतिक १. २. ३.	३१६१२७
चन्द्रशाला २.	४३३३४
चन्द्रहास १.	१२१४३
„ १.	३१७१६०

चन्द्रा २ व.	२११२०
चन्द्रातप १.	४३१२३
चन्द्रिक १.	५३१५१
चन्द्रिका २.	२११२८
„ २.	४२१२७
चन्द्रिकाप्रिय १.	२३३३५
चन्द्रिमा २.	२११२८
चन्द्रोदय १.	४३१२३
चप १.	३३२१५
चपल १.	३१४३३
„ १.	३१८११०
„ १. २. ३.	५४४७८
„ १. २. ३.	५४४१२५
„ १. २. ३.	७५३६९
चपला २.	२२२३
चपेट १.	४४४७६
चक्रक ३.	४४४८७
चमक ३.	३३३२०२
चमर १.	३१४२९
चमरिक १.	३३३४७
चमरी २.	३१४२९
चमस १. ३.	३१६१०१
चमू २.	३१६१०२
„ २.	३१७५५
„ २.	३१७५८
चमूपाणि १.	३१७५९
चमूरु १.	३१४२३
„ १.	३१४२४
चम्पक १.	३३३८१
चम्पकद्वीप ३.	३१११७
चम्पा २.	२२२४
चम्पुक १.	२३३४
चम्पू २.	२१४४२
चम्पोपलक्षण १ व.	३१३३१
चय १.	५११११
चर १. २. ३.	५४४६१
चरण ३.	३१६११५
„ १. ३.	४४४५६
„ १. ३.	७५३६७
चरणाग्रक ३.	४४४५७

चरम १. २. ३.	पा११७७	चल १. २. ३.	पा११७८	चान्द्री २.	२११२८
„ ४.	पा११४०	चलच्चञ्चु १.	२३३३५	„ २.	२११७२
चराचर १. २. ३.		चलदल १.	३३३२७	चाप १. ३.	३३३१७२
	पा११६२	चलन ३.	७३३१५	चामर ३.	३३३२०२
चराशा २.	२११४	चला २.	२३३६	„ ३.	४३३१५९
चरि १.	३३३७२	„ २.	४३३१०	चामरपुष्प १.	८११५१
चरित्र ३.	३३३११५	चलाचल १. २. ३.		चामीकर ३.	३२३१८
चरी २.	४३३८		पा११७८	चामुण्डा २.	११३६३
चरु १.	६३३२२	चलित ३.	३३३२०१	चाम्पेय १.	३३३८१
चर्कि २.	४३३१४७	„ १. २. ३.	पा११९५	„ १.	३३३८२
चर्च १.	१२३६१	चविक ३.	३३८८१	चार १.	३३३२६
चर्चरी २.	२३३२७	चव्य ३.	३३८८१	„ ३.	४३३३६
चर्चा २.	११३६३	„ ३.	३३८८१	चारटी २.	३३८८९
„ २.	४३३१४७	चपक १. ३.	३३९५३	चारण १.	३३९६४
„ २.	४३३१०	चपाल १. ३.	३३६१०५	चारणी २.	३३३१३४
„ २.	६३३१२	चाक्रगिर ३.	३३११५	चारित्र ३.	३३३११५
चर्चिक्य ३.	४३३१४७	चाक्रिक १.	३३५२३	चारी २.	३३३६७
चर्पट १.	४३३७७	„ १.	३३५७८	चारु १.	२३३३३
चर्मटि २.	२३३२७	„ १.	३३९२७	„ १. २. ३.	पा११३५
चर्मकार १.	३३५४०	„ १.	७३३२५	„ १. २. ३.	६३३६
„ १.	३३५४०	चाङ्गेरी २.	३३३१६३	चारु १.	३३३३०
„ १.	३३५४२	चाट १.	पा३३१४	चारुनाल ३.	४३३४०
„ १.	३३९४३	चाटस १.	पा३३२९	चार्वी २.	३३३११५
चर्मकोश ३.	४३३६२	चाटु १.	६३३२३	चाल १.	३३३६९
चर्मन् ३.	३३३२१	चाटुकार १.	४३३१४२	चालन ३. २.	८३३३२
„ ३.	३३७१९७	चाणक्यमूलक ३.		चलनी २.	४३३६५
चर्मपर्णी २.	३३३१४४		३३३१५५	चाप १.	२३३२९
चर्मप्रसेदिनी २.	३३९४३	चाण्डाल १.	३३९५४	चिकित्सक १. २. ३.	
चर्मप्रसेविका २.	३३९१७	चाण्डालिका २.	३३९१२७		४३३१४३
चर्ममय ३.	३३७१९७	चातक १.	२३३३२	चिकित्सा २.	४३३१३९
चर्मिक १.	३३३४५	चातिक १.	३३७३०	चिकिर १.	७३३२५
चर्मिन् १.	१३३५२	चातुर १. २. ३.	७३३३८	चिकिल १.	३३८२६
„ १.	३३३४५	चातुरीक १. २. ३.		(चिकिच्छुल)	
„ १. २. ३.	३३७१४४		४३३१०९	चिकुर १. २. ३.	पा११७९
चर्या २.	३३३११६	चातुर्जात ३.	४३३१५१	„ १. २. ३.	७३३३९
चवर्ण ३.	४३३५१	चातुर्मास्य १.	३३३१४५	चिक्कण ३.	३३३२१८
चवर्णा २.	२३३४५	चात्वाल १. ३.	३३३१११	„ १.	पा३३४
चल १.	१३३४९	चान्द्रमसायनि १. २३३२		चिक्कस १.	४३३६८
„ ३.	३३७२०७	चान्द्रायण ३.	३३३१३६	चिक्काण ३.	३३८५५
„ १.	३३८११०	चान्द्रायणरत १. २. ३.		चिक्कोड १.	४३३२७
„ १. २. ३.	पा११६८		३३३१२७	चिञ्चा २.	३३३८१

[चिञ्चलिक]

चिञ्चलिक १.	११२५१
चिञ्चोटिका २.	४२१४८
चित् २.	३१११६४
” ४.	८८११२
चितकावेर ३.	३१८११६
चिता २.	३१७२१६
चिति २.	३१६१६४
” २.	३१७२१६
चितकृत ३.	२१४९
चित्त ३.	३१६१७२
चित्तविभ्रम १.	३१६१७७
चित्ताभोग १.	३१६१७४
चित्तोन्मादकरी २.	१११४९
चित्या २.	३१७२१६
चित्र १. २. ३.	३१९१७८
” १.	४११४३
” ३.	४१३१४८
” ३.	६१५३०
चित्रक १.	३१८१८२
” १.	४१११५
” १.	५१३२३
चित्रकूट १.	३१२१२
चित्रकूट १.	३१३१४६
” १.	३१९१२२
चित्रगुप्त १.	११२३६
चित्रतण्डुला २.	३१८१७७
चित्रदण्ड १.	३१३१२०८
चित्रपक्ष १.	२१३१२०
चित्रपट १.	४१३११९
चित्रपत्रक १.	२१३३७
चित्रपर्णिका २.	३१३१३६
चित्रपिङ्गल १.	२१३३७
चित्रपुङ्ख १.	३१७१८०
चित्रफलित् १.	४११४३
चित्रभानु १.	८११२२
चित्ररथ १.	११२१५
चित्रल १.	३१३१६८
चित्रला २.	३१४१६३
चित्रवाज १.	३१३२९
चित्रशाला २.	४१३२३

वैजयन्तीकोषः

चित्रशिखण्डिज १.	२११३३
चित्रशिखण्डिन् १.	२११५०
चित्रा २.	२११६०
” २.	३१३११३
” २.	३१३१३८
” २.	३१३१७३
” २.	४११११७
” २.	६१५३०
चित्राङ्ग १.	३१४१४
चित्राङ्गि २.	३१३१३७
चित्राणुक १.	४११४९
चित्रावनि २.	३१६३५
चित्रोपपन्ना २.	२११६०
चिमिट १.	३१३१७२
चिद्रूप १. २. ३.	५१४२७
चिपाट १.	३१७१३२
चिपिट १.	४१३१६८
” १. २. ३.	५१४८३
चिबुक ३.	४१४८७
चिरक्रिय १. २. ३.	५१४७२
चिरजीविन् १.	१११७
” १.	२१३१५
चिरण्टी २.	४१४९
चिरन्तन १. २. ३.	५१४८७
चिरम् ४.	८८११
चिरमेहिन् १.	३१४६६
चिररात्र ३.	२११५९
चिररात्राय ४.	८८११
चिरसुता २.	३१४१४८
चिरात् ४.	८८११
चिरि १.	११२१८
चिरिबिल्वक १.	३१३१६२
चिरेण ४.	८८११
चिलिचिम १.	४११४५
चिलिमीलिका २.	८१२१२
चिल्ल १.	६१४५
चिल्लाक १.	२१३१४

[चूचुक]

चिल्लिक १.	२१३१२८
चिल्व १.	३१३१५२
चिल्ल १.	५१३१५७
चिल्ल ३.	२११२९
” ३.	६१३८
चीन १ व.	३११२३
” ३.	३१२३३
” १.	३१३१५०
” १.	३१४२१
” १.	३१८३७
” १.	३१८५९
चीनक १.	३१४१३
चीननक १.	४११४४
चीनपट्ट ३.	३१२३०
चीनसी २.	३१४२१
चीना २.	३१६१५०
चीर ३.	४१३१३०
चीरिणी २.	४१४१८
चीरी २.	२१३४८
चीवर ३.	४१३१२८
चुक्र ३.	३१८१३२
” १.	३१८१३३
चुक्रिका २.	३१३१६३
चुचुन्दरी २.	४११३२
चुण्डिन् १.	४१२७
चुन्दी २.	४१४२५
चुप १.	५१३७
चुबुक ३.	४१४८७
चुम्बक १.	३१३३८
चुम्बन ३.	४१३१७१
चुम्न १. २. ३.	६१५३१
चुल १.	४१४७८
चुल्ल १.	३१४३
” १.	४१४७८
चुल्लम्पा २.	३१४६३
चुल्ल १.	६१४५
चुल्लि २.	४१३५४
चूचु १.	३१५५१
” १.	३१५५३
चूचुक १.	३१५५४
” १.	३१५८१

चूचुक]

शब्दानुक्रमणिका

[छाग

चूचुक ३.	४४६८	चैत्री २.	२११७५	छुत्रा २.	३३१२४
चूडक १.	३८४५	चैद्य १ व.	३११३६	" २.	३३१२४
चूडा २.	४४१०२	चोद्य १. २. ३.	६५३१	" २.	३८४९
" २.	८२१५	चोद्य ३.	३३११४	छुत्राक १.	३३१५३
चूडाकरण ३.	३६१४	" ३.	३८१०४	छुत्राकी २.	३८१२४
चूडामणि २.	३३१७९	चोद्यु १.	४४१००	छुत्रिन् १.	३०१२८
" १. २.	४३१३६	चोट १.	४४१०३	छुद १.	२११६२
चूत १.	३३१२५	चोटलिङ्गक १.	३७१८५	" १.	२३१४९
चूतक १.	४२१७	चोदनिका २.	३८१४७	" १.	३३११६
चूर्ण ३.	४३१५७	चोदनी २.	३३११६७	छुदन ३.	२३१४९
चूर्णपूप ३.	४३१७२	चोद्य १. २. ३.	६४१६	" ३.	३३११६
चूर्णि २.	४११५८	चोर १.	३९१५५	छुदावलि ३.	३७१८५
" २.	६२११२	" १. ३.	४३१७६	छुदिस् ३.	३६१९१
चूलि २.	६२११३	चोरपुष्पी २.	३३१११६	" २. ३.	४३३३७
चूलिक १.	२३११३	चोरिक १.	३७१२०	" २.	४४१०३
" १.	३८१३९	चोल १ व.	२३३३३	छुदिस्तृण ३.	३८१६७
चूलिका २.	३६१२२२	" १.	३३३८३	छुद्मन् ३.	३६१९५
" २.	३७१७३	" १. ३.	४३३३७	" ३.	६३३८
चूपण ३.	४३११०३	" १.	४३१२८	छुद्मप्रधारवत् १.	३७१२८
चूपा २.	३७१८४	चोलक १. ३.	३३३१३	छुन्द १.	६११२४
चूप्य ३.	४३१९१	चोलान्त १.	४३३३७	छुन्दना २.	३६१९५
चेटक १.	३९१२	चोली २.	४३१२७	छुन्दस् ३.	३६१२७
चेदा २.	४४१२६	चौत्त १. २. ३.	५४१३५	" ३.	३६१२८
चेटिका २.	४४१२६	चौण्ड १.	४२१७	" ३.	६३१९
चेत् ४.	८८११४	चौरिक १.	३९१५९	छुन्दोभेद १.	३६३३४
चेतकी २.	३३११७८	चौरिका ३.	३९१५८	छुन्न १. २. ३.	५४१२०
चेतना २.	३६१६६	चौर्य २.	३९१५८	छुन्नपथ ३.	३७१५४
चेतस् ३.	३६११७२	चौल २.	३६१४	छुन्ना २.	३३१३३
चेदि १ व.	३११३६	च्यवन १.	३६११५७	(छिन्ना)	
चेन्नाल १.	३६१६९	च्युति २.	४४१६०	छुर्दन १.	३३१५०
चेल ३.	४३१११७	" २.	४४१६१	" १.	३३३७५
" १. २. ३.	५४१७५	च्युप १.	६११२३	" १.	४४१३५
" १. २. ३.	६५३१			छुर्दनी २.	३३१७१
चेस्लाण १.	३३११६८			छुर्दि २.	६२११३
चैत्य ३.	३६१९०			छुल ३.	३६१९५
" ३.	४३१२८			छुलवाच् २.	२४११९
" ३.	६३३८			छुल्ली २.	३३१३३
चैत्यवृक्ष १.	८६१२०			छुवि २.	४३१५०
चैत्र १.	२११८३			छाग १.	३३३३५
चैत्ररथ ३.	१२१५९			(भाग)	
चैत्रिक १.	२११८३			" १.	३३३६२

छागण]

वैजयन्तीकोषः

[जपा

छागण १.	२।१।२०	जगल १	५।४।२७	जड १. २. ३.	५।४।१४
छागक १	३।५।२७	जगध १. २. ३.	५।४।१०७	” १. २. ३.	६।४।६
छात १. २. ३.	५।४।१०२	जगिध २.	४।३।१०२	जडा २.	३।६।४९
छात्र १.	३।६।२५	जघन १.	४।४।६४	जतु ३.	४।३।१५३
” १.	३।७।२७	” ३.	७।३।१५	जतुक ३.	३।८।१३१
” ३.	३।८।१३६	जघनपिण्डिका २.	३।७।७८	जतुका २.	३।३।४४
छादिषेय १. २. ३.		जघनभाग १.	३।७।७६	जतुकाहला २.	३।९।१२६
	३।८।६७	जघनेफल १.	३।३।७४	जतुकृत २.	३।८।८९
छान्दस १.	३।६।८१	जघनेफला २.	३।३।१११	जतूका २.	३।८।८९
छाया २.	२।१।२३	जघन्य ३.	३।८।११५	जत्रु ३.	४।४।६९
” २.	६।२।१३	” १. २. ३.	५।४।७६	जन १.	३।६।२०२
छायाकर १. २. ३.		” १. २. ३.	५।४।७७	जनक १.	४।४।२९
	३।७।१४५	” १. २. ३.	७।४।११	जनकूम १.	३।९।५४
छायापुत्र १.	२।१।३५	जघन्यज १.	३।९।१	जनता २.	५।१।९
छित १. २. ३.	५।४।१०२	” १. २. ३.	५।४।४	जनन ३.	४।४।१८
छिद्र ३.	३।८।१८	जकूम १. २. ३.	५।४।६१	” ३.	४।४।४९
” ३.	४।१।२	जकित १.	३।५।३	जननी २.	४।४।२६
” ३	५।४।१४४	जह्वा २.	४।४।५८	” २.	७।२।८
” ३	६।३।९	जह्वात्राण ३.	३।७।१५४	जनपद १.	३।१।२१
छिद्रित १. २. ३.		जह्वापद १.	३।१।५२	” १.	८।१।२३
	५।४।१११	जह्वाल १. २. ३.		जनयितृ १.	४।४।२९
छिन्न ३.	३।८।१४२		३।७।१५०	जनयित्री २.	४।४।२६
” १. २. ३.	५।४।१०२	जटा २.	३।३।१२	जनवाद १.	२।४।३४
छिन्नपुच्छक १. २. ३.		” २.	३।३।२०२	जनश्रुति २.	२।४।३९
	३।४।५९	” २.	३।८।१००	जनस १. ४.	३।६।२०७
छिन्नरुहा २.	३।३।१३१	” २.	४।४।१०१	जनार्दन १.	१।१।१०
छेक १.	२।३।५	” २.	५।१।३	जनाश्रय १.	४।३।२८
” १. २. ३.	५।४।२०	जटाझाट १.	१।१।४४	जनि २.	३।१।१८
” १. २. ३.	६।५।३२	जटाटीर १.	१।१।४४	” २.	६।२।१४
छोटिका २.	३।६।२२९	जटायु १.	३।३।५४	जनिमन् ३.	७।१।२७
(चोटिका)		जटिन् १.	३।३।२८	जनी २.	३।३।१२८
ज		जटिल ३.	३।३।२०२	” २.	४।४।३६
जहा २.	४।३।१०४	” १. २. ३.	५।४।९	जनुस् ३.	४।४।१८
जहित १. २. ३.		जटिला २.	३।३।१९७	जन्तु ३.	४।४।१
	५।४।१०८	” २.	३।८।१००	जन्तुधर १.	३।४।३४
जगत् १.	१।२।४८	जटी २.	३।३।२०३	जन्तुफला २.	३।८।६१
” १. २. ३.	५।४।६१	” २.	५।१।५८	जन्मन् ३.	४।४।१८
जगती २.	७।२।९	जटुल १.	४।४।९७	जन्य १. २. ३.	६।५।३२
जगत्क्षय १.	२।१।९४	जठर ३.	४।४।६७	जन्या २.	३।८।८९
जगत्प्राण १.	१।२।४७	जठरोत्सव १.	३।६।६२	जन्त्यु १.	४।४।१
जगल १.	३।९।५१	जड १.	५।३।६	जपा २.	३।३।१९५

जपापुष्प ३.	३।८।१६७	जय्य १. २. ३.	३।७।१४८	जलमुच १.	२।२।१
जम्पति १ द्वि.	४।४।४८	जरठ १. २. ३.	७।४।१२	जलमुस्त ३.	३।३।२०१
जम्बाल १.	३।८।२६	जरत् १. २. ३.	५।४।३	जलरङ्ग १.	२।३।११
” १.	७।१।२६	जरत्कार १.	३।६।१५६	जलराशि १.	४।२।१०
जम्बीर १.	३।३।३५	जरदराव १.	३।४।५५	जललम्बिका २.	३।३।१९८
” १.	३।३।१२०	जरन्त १.	३।४।९	जलवालक १.	३।२।३
जम्बु ३.	३।३।२२	जरा २.	४।४।५४	जलन्याल १.	४।१।१९
जम्बुक १.	७।१।२६	जराभीरु १.	१।१।२९	जलशीनक १.	५।४।८
जम्बुल १.	३।३।२२३	जरायु १.	४।४।१८	जलशूर १.	४।२।४९
जम्बू २.	३।३।२२	” १. ३.	७।५।३९	जलसम्भवा २.	३।४।४३
” २.	३।३।९२	जरायुज १. २. ३.	४।४।२	जलाचार १. २. ३.	३।६।१३१
जम्बूगार्त १.	३।७।१६१	जरुर्दद १.	३।७।९७	जलात्मन् १.	३।४।८
जम्बूट १.	३।३।९४	जर्जर १.	३।९।१२९	जलाधार १.	४।२।५
जम्बूद्वीप १.	३।१।१०	” १.	५।३।४१	जलालोका २.	४।१।५८
जम्बूलमालिका २.	३।६।५०	जर्ण १.	२।१।२७	जलाशय १.	३।३।२३१
जम्भ १.	४।४।८९	” १.	३।३।५	” १.	४।२।५
जम्भक १.	३।३।३५	जर्तिल १.	३।८।३९	जलारव १.	४।१।६०
” १.	३।५।८५	जल ३.	४।२।२	जलाहार १. २. ३.	३।६।१३५
जम्भरिपु १.	१।२।४	” १. २. ३.	५।४।१४	जलक १. २. ३.	८।९।२६
जम्भल १.	३।३।३५	जलक १.	३।४।३३	जलका २.	४।१।५८
जम्भीर १.	३।३।३५	जलकण्टक १.	४।२।४८	जलेशय १.	८।५।८
जय १.	१।२।६	जलकरिन् १.	४।१।६०	जलोच्छ्वास १.	४।२।३१
” १.	१।२।८	जलकाक १.	२।३।११	जलोद्गम १.	४।२।८
” १.	३।३।८५	जलकोलि २.	३।३।८९	जलोलक १.	५।३।४१
” १.	३।७।२०९	जलचर १.	२।३।४१	जलौकस् १ व.	४।१।५८
” १.	३।८।३६	जलजन्तु १.	४।१।४०	जल्पक १. २. ३.	५।४।४६
” १.	८।९।१२	जलजम्बुका २.	३।३।१०३	जल १.	३।५।५४
जयदत्त १.	१।२।८	जलजा २.	३।८।५८	जव १.	१।२।५५
जयन्त १.	१।२।८	जलतस्कर १.	२।१।१२	” १. २. ३.	३।७।१५०
” १.	२।१।२६	जलद १.	२।२।१	” १.	५।२।३१
जयन्ती २.	१।२।९	जलदा २.	२।२।४	जवन १. २. ३.	३।७।१५०
” २.	२।१।७८	जलद्रोणि २.	४।३।६१	” ३.	५।२।३१
” २.	३।३।१६	जलनर १.	४।१।६०	जविन् १.	३।४।१६
जयन्तीपुर ३.	४।३।८	जलनिधि १.	४।२।११	” १. २. ३.	३।७।१५०
जयवाहिनी ३.	१।२।११	जलनीली २.	४।२।४९	” १. २. ३.	३।७।१५०
जया २.	३।३।८९	जलपालिका २.	२।२।४	जसु १.	५।३।१
” २.	३।३।१९७	जलपिप्पिक १.	४।१।४१	जसुरि १.	७।१।२५
” २.	३।८।८३	जलप्रिय १.	३।४।५	जागर १. २. ३.	३।६।१९६
जयिन् १. २. ३.	३।७।१४७	जलबृंहण ३.	४।२।३०		
जयोदाहरण ३.	२।४।३६	जलभूषण १.	१।२।४६		
(जनोदाहरण)		जलमार्जसि १.	४।१।५४		

[जागर]

वैजयन्तीकोषः

[जीर्णक]

जागर १.	३१७१५३	जानुभक्षिनी २.	३१७५२	जालिका २.	३१७१५३
जागरण ३.	३१६१९६	जानुमात्र १. २. ३.		जालिन् १.	३१५४२
जागरित ३.	३१६१९६		४१४८२	जालिनी २.	३१८१७७
जागरित् १. २. ३.	५१४४४	जानुमात्री २.	३१७५२	” २.	४१३२३
जागरूक १. २. ३.	५१४४४	जाबाल १. ३.	३१९२९	” २.	४१४१०१
जागर्या २.	३१६१९६	जामदग्न्य १.	१११२०	जाली २.	३१३१५९
जागृवि १.	१२११८	जामात् १.	४१४३८	जाल्म १. २. ३.	६१४६
जाघनी २.	४१४५८	” १.	७१२६	जावक ३.	४१३१५४
जाङ्गल १. २. ३.	२१४२०	जामि २.	६१२१०	जाहक १.	३१४७२
” १ ब.	३११४०	जामेय १.	४१४४१	जाह्वी २.	४१२२४
” १. २. ३.	३११४५	जाम्बव ३.	३१३२२	जिघत्सा २.	३१६१८२
” ३.	३१८१०७	जाम्बूनद ३.	३१२२०	जिघत्सु १. २. ३.	५१४३६
जाङ्गलिक १.	४११२५	जाया २.	४१४३४	जिघांसु १.	३१७४१
जाटलि २.	८१२२६	जायाजीव १.	३१९६२	जिङ्गी २.	३१३१३५
जाट्य १.	३१८१४४	जायापति १ द्वि.	४१४४८	” २.	३१३१६०
जात ३.	५११३	जायु १.	४११४१	जित १. २. ३.	३१७१४८
जातरूप ३.	३२११८	जार ३.	४१४४२	जितकाशिन् १. २. ३.	३१७२१८
जातवेदस् १.	१२११४	” १.	४१४३८	जितरण १. २. ३.	३१७२१८
जातारणि १.	३१६७२	जारण ३.	३१८१२६	जित्तर १. २. ३.	३१७२१८
जाति २.	३१३२३	जारद्व ३.	२११४९	जित्तर १. २. ३.	३१७२१८
” २	३१३१८२	जारद्वी २.	२११४७	जित्तर १. २. ३.	३१७२१८
” २	३१५१११	जारवायु १.	१२१५४	जित्तर १. २. ३.	३१७२१८
” २	६२११४	जारी २.	१११५९	जित्तर १. २. ३.	३१७२१८
जातिकोष ३.	३१८१०६	” २.	३१६४८	जित्तर १. २. ३.	३१७२१८
जातु ४.	८१८७	जाल ३.	३१११३	जित्तर १. २. ३.	३१७२१८
जातोच्च १.	३१४५४	” ३.	३१३१९	जित्तर १. २. ३.	३१७२१८
जात्य १. २. ३.	५१४६१	” १.	३१५३३	जित्तर १. २. ३.	३१७२१८
” १. २. ३.	५१४६४	” ३.	३१९४३	जित्तर १. २. ३.	३१७२१८
” १.	६१४७	” ३.	६१३९	जित्तर १. २. ३.	३१७२१८
जानकीकान्त १.	१११२०	जालक ३.	३१३१९	जित्तर १. २. ३.	३१७२१८
जानु १. २.	४१४५९	” १.	३१८३९	जित्तर १. २. ३.	३१७२१८
जानुक १. २. ३.	३१६१३३	” ३.	५११३	जित्तर १. २. ३.	३१७२१८
जानुदध्न १. २. ३.	४१४८२	जालकिनी २.	३१४६५	जित्तर १. २. ३.	३१७२१८
जानुद्वयस १. २. ३.	४१४८२	जालन १.	५१३३९	जित्तर १. २. ३.	३१७२१८
जानुनिकुञ्चन ३.	३१६२२२	जालन्धर १ ब.	३११२६	जित्तर १. २. ३.	३१७२१८
		जालपाद १.	२१३१२	जित्तर १. २. ३.	३१७२१८
		जालपादक १.	२१३६	जित्तर १. २. ३.	३१७२१८
		जालभूषण १.	३१५३६	जित्तर १. २. ३.	३१७२१८
		जालिक १.	३१९३८	जित्तर १. २. ३.	३१७२१८
		” १.	३१३३४	जित्तर १. २. ३.	३१७२१८
		” १. २. ३.	५१४२३	जित्तर १. २. ३.	३१७२१८

जीर्णि २.	४४५५४	जीवितेश १. २. ३.	८५५८	ज्ञाति २.	४४५५०
जील ३.	६३११०	जुगुप्सन ३.	३१९७६	ज्ञान ३.	१११४७
जीव १.	३६११६१	जुगुप्सा २.	२४३३३	" ३.	३६११६४
" १. २. ३.	३७२२०	" २.	३६११९३	ज्ञानिन् १.	३७५०
" १.	३७२२०	" २.	७२१८	ज्या २.	३७१७८
" १.	४४११	" २.	८१९४	" २	८२११७
" १. २. ३.	६५३३३	जुहुराण १.	१२११९	ज्यानि २.	४४५५४
जीवक १. २. ३.	५४११६	जुहु २.	३६११००	ज्यानिवारण ३.	३७१५५
" १. २. ३.	७५४०	जूति २.	५२३३१	ज्यायस् १. २. ३.	५४१४
जीवल्लीव १.	२३३४०	जूर्णा २.	३३३२३०	" १. २. ३.	६४३७
जीवत् १. २. ३.	३७२२०	जूर्णाङ्ग्य १.	३८५७	ज्येष्ठ १.	२३३६
जीवतोका २.	४४११९	जूर्णि २.	६१२४	" ३.	३२२८
जीवथ १.	४११५०	जृम्भ १. २. ३.	८१९३८	" ३.	३२३३
जीवधन ३.	३४६१	जृम्भण १. २. ३.	३९१८८	" ३.	३३२०२
जीवन ३.	३८११	जृम्भा २.	३९१८८	" ३.	३८१४५
" ३.	४२२	" २.	८१९३८	" १.	४४३१
" ३.	४३७५	जृम्भिका २.	३९१८८	" १. २. ३.	६४३७
जीवनी २.	११११६	जृम्भित १. २. ३.	७५४०	ज्येष्ठमी २.	२११४१
" २.	३३३१४३	जेवृ १. २. ३.	३७१४८	ज्येष्ठतात् १.	४४३२
जीवनीय ३.	३८१४६	जेमन ३.	४३१०२	ज्येष्ठरवश्च २.	४४२८
" ३.	४२२	जेय १. २. ३.	३७१४८	ज्येष्ठा २.	१११४९
जीवनीया २.	३३३१२	जैत्र १. २. ३.	३७१२८	" २.	१२४२
" २.	३३३१४३	" १. २. ३.	३७१४८	" २.	१३४१
जीवन्ती २.	३३३८४	जैत्री २.	३३३१३३	" २.	४१३०
" २.	३३३१३२	जैन १. २. ३.	५४१६	" २.	४४२७
" २.	३३३१४०	जैवातृक १. २. ३.	८५५९	" २.	४४७४
" २.	३३३१४३	जोङ्गक ३.	३७१०७	" २.	६२१५
जीवपति २.	४४११४	जोटिङ्ग १.	१११४५	ज्येष्ठामूलीय १.	२११८४
जीवबोधिनी २.	३३३१४५	जोड ३.	३३३२१८	ज्येष्ठाम्बु ३.	४३३७
जीवलोक १.	३६२०६	जोणाल १.	५३१९	ज्यैष्ठ १.	२११८४
जीववृत्ति २.	३८१४	जोनल १.	३८५६	ज्यैष्ठी २.	२११७५
जीवशाक १.	३३३१५०	जोन्नला २.	३८५७	ज्योक् ४.	८८६
जीवसू २.	४४११९	जोषम् ४.	८७२०	ज्योतिरानृण्य ३.	३६१८७
जीवा २.	३३३१४३	ज्ञ १. २. ३.	८५३९	ज्योतिरिङ्गण १.	२३३४७
" २.	३७१८८	" १.	८१९४७	ज्योतिरशास्त्र ३.	२११५०
जीवातु १.	३७२२१	ज्ञपित १. २. ३.	५४११३	ज्योतिषामयन ३.	२११५०
जीवान्तक १.	३९३७	ज्ञप्त १. २. ३.	५४११३	" ३.	३६३३
जीविका २.	३८११	ज्ञप्ति २.	३६११६४	ज्योतिषाम्पत्ति १.	८११५३
जीवित ३.	३७२२०	" २.	३६११६४	ज्योतिष्मती २.	३११३९
जीवितकाल १.	३७२२१	ज्ञात १. २. ३.	५४११०१	" २.	३८६०
जीवितागद १.	३७२२१				

ज्योतिष्टोम १.	३६१८६	क्षिरिलिका २.	४११९६	हारिका २.	४११३३
ज्योतिस्तू ३.	६३११०	क्षिप्ती २.	४३१७७	दौण्डक १. २. ३.	५४१२३
ज्योत्स्ना २.	२११२८	क्षीरिका २.	२३१४८	त	
ज्योत्स्नी २.	३३११६०	ट		तक्षोल ३.	३१८१०५
ज्यौतिष १.	२११८१	टगर १. २. ३.	७५१४१	तक्र ३.	३१८१४९
ज्यौतिषिक १.	३१७१५	टङ्क १.	३१८१३१	तक्रज ३.	३१८१३६
ज्यौत्स्नी २.	२११५८	” १.	३१९१२२	तक्रपिण्ड ३.	३१८१४४
ज्वल १.	५३१७	” १.	६११२४	तक्रवासन १.	३३३३६
ज्वलन १.	२१११५	टङ्कण ३.	३१८१३०	तच्च १.	७११२८
ज्वलित १. २. ३.	८१११४	टट्टनी २.	४११३०	तच्चन् १.	३५१३९
ज्वाल १.	११२१९	टट्टर १.	२११११	” १.	३५१८६
ज्वाला २.	११२१९	टट्टरी २.	३१९१३५	” १.	३९१३४
म्ह		टर्क १ व.	३११२७	” १	८१११२
क्षप्त्रानिल १.	११२५२	टिट्ठिभ १.	२३१३३	तक्षशिला २.	४३१९
क्षटप्प १.	५१२१९	टिट्ठिभासन ३.	३६११२५	तगर १.	३३३१९४
क्षटा २.	३३३१७७	ड		तङ्क १. ३.	३६११८५
क्षटिति ४.	८१८११	डक्कन ३.	२११८	तट १.	३१२६
क्षण्डाली २.	३३३१५९	डङ्क १.	३११५३	” १. २. ३.	४२१३२
क्षम्प १.	५१२१९	डमर १.	३६११९०	” १. २. ३.	८११३८
क्षम्पटि २.	४११९९	डमरु १.	३९११३५	तटाक १. ३.	४२१६
क्षर १.	३२१७	डयन ३.	२३१५०	तटित् २.	२२१४
क्षरसी २.	३३३१५७	डहु १.	३३३७५	तटित्पति १.	२२१२
क्षरा २.	३३३१५७	डिण्डिक १.	३१५१५	तटित्वत् १.	२२११
क्षरुका २.	३१८१२५	डिण्डिम १.	३९११३५	तटिनी २.	४२१२३
क्षर्क्षर १.	३९११३५	डिण्डीर १.	४२११३	तटी २.	८११३८
क्षर्क्षरक १.	२११९२	डिण्डीश १.	१११४५	तण्डुल १.	३१८१७
क्षलका २.	११२१९	डिम १.	३९११००	” १.	४३१६६
क्षल्वरी २.	४११९९	डिम्ब १.	२३१५०	तण्डुला २.	३१८७७
” २.	७२१९	” १.	३६११९०	तण्डुलीयक १.	३३३१५०
क्षष १.	४११४१	” १.	४१११३	तत ३.	३९१११५
” १.	४११५१	” १.	६११२४	” १. २. ३.	५४१११०
” १. २.	६११३४	डिम्भ १. २. ३.	५४१२	तति २.	८११५
क्षपा २.	३१८६१	” १. २. ३.	६११७	तत्क्रिय १. २. ३.	५४१७३
क्षपापर १.	३१५१४	डुण्डुभ १.	३९११९	तत्त्व ३.	३९११२३
क्षाट १.	३३३१८९	डुण्डुर १.	४३३३२	” ३	५२११
क्षाण्ड १.	१११४६	डोम्ब १.	२५१४९	तत्त्वधी २.	३६११६५
क्षिक्किह १.	३९११२४	ढ		तत्र ४.	३६१२१
क्षिणिका २.	४१११२७	ढक्का २.	२९११३४	तत्रभवत् १. २. ३.	८११४६
क्षिण्डी २.	३३३१९०	ढक्कारी २.	३९११२८		८११२१
क्षिण्डीकान्त १.	१११४४	ढङ्क ३.	२३३६९	तथा ४.	८११२०
क्षिरिलिका २.	२३३४८	ढण्डुक १. २. ३.	५४१२३	” ४.	८११२०

तथागत १.	१११३३	तन्त्री २.	६१२१६	तमोनुद् १.	७११२८
तथार्थवाच् १.	५३३३	तन्दन ३.	२१४५	तमोनुद् १.	८११२३
तथ्य ३.	५३३३	तन्दू २.	६१२१६	तमोपह १.	८११२३
तद् १. २. ३.	५१४२०	तन्द्र १.	४११५२	तमोरिपु १.	२१११४
” ४.	८१७११	तन्द्रा २.	३१६१७८	तम्पा २.	३१४४२
तदा ४.	८१८५	” २.	३१६१९७	तम्बा २.	२१४४२
तदानीम् ४.	८१८५	” २.	६१२१५	तम्बिकी २.	३१९११३
तनय १.	४३३३९	तन्मात्र ३.	३१६२०५	तरक्षु १.	३१४४४
तनु १.	३३३८५	तन्वी २.	३१८७७	तरङ्ग १.	३३३१६२
” २.	४१४५२	तपन १.	२११११	” १.	४१२१४
” २.	४१४१०३	” १.	३१६१५१	तरङ्गिणी २.	३३३२१२
” १. २. ३.	५१४५	” १.	७१२२९	” २.	४१२२३
” १. २. ३.	५१४१२५	तपनीय ३.	३१२१८	तरण ३.	५१२१२
” १. २. ३.	६१५३५	तपस् ३.	१११४७	तरणा २.	४३३८०
तनुकूबर ३.	३१७१३२	” १.	२११८२	तरणि १. २.	७१५४२
तनुत्र ३.	३१७१५२	” ३.	३१६१३६	तरणी २.	४१२१५
तनुस् ३.	६३३१२	” ३.	३१६२०७	तरण्डक १.	४१२१६
तनूकृत १. २. ३.	५१४१११	” ३.	३१६१०९	तरत् १.	८१९११
तनूनपात् १.	११२१४	तपस १.	२११२६	तरत्सम १.	११२२१
तनूरुह ३.	२३३४९	तपस्य १.	२११८३	तरपण्य ३.	४१२१८
” ३.	४१४९७	तपस्विन् १. २. ३.	३१६१२६	तरल ३.	४३३६२
तन्तु १.	३३३८७	” १. २. ३.	८१५२८	” १.	४३३१४३
” १.	३१९११	तपस्विनी २.	३१८१००	” १.	५३३१५
” १.	४१११३	तपिनी २.	४१२२७	” १.	७१५४४
तन्तुक १.	४११५२	तप्त १.	५३३८	तरलित १. २. ३.	५१४१०३
तन्तुनाग १.	४११५२	” १. २. ३.	५१४९८	तरवारि २.	३१७१६२
तन्तुनाभ १.	४११३४	तप्तकृच्छ्र ३.	३१६१३९	तरस् ३.	११२१५
तन्तुवाय १.	३१५९७	तप्तकृच्छ्र १.	४३३३२	” ३.	३१७२१०
” १.	३१९८	तप्त १.	४३३६३	” ३.	६३३१३
” १.	४११३४	तप्तक ३.	३१२३२	तरस ३.	४१४१०६
तन्तुसन्तत १. २. ३.	५१४११२	तप्तस् ३.	२११६२	तरि १.	११२२८
तन्त्र ३.	३१७१४	” ३.	३१६१६२	” २.	४१२१५
” १.	४११५२	” ३.	३१६१६२	” २.	४३३६३
” ३.	४११४१	” १. २.	६१५३५	तरीष १.	३१६१६७
” ३.	६३३११	तप्तस्विनी २.	२११५७	तरु १.	३३३५
तन्त्रक १. २. ३.	४३३१२०	तमाल १. ३.	३३३८७	तरुण १.	३३३६५
तन्त्रशाला २.	४३३२२	तमालपत्र ३.	४३३१४८	” १. २. ३.	५१४३
तन्त्री २.	३१९३०	तमिन्ना २.	२११५७	तरुणी २.	३३३१८८
		” २.	७१५४३	तर्क १. ३.	३३३१७६
		तमी २.	२११५७	” १.	६३३२५

[तर्कविद्या]

वैजयन्तीकोषः

[तालपत्रिका]

तर्कविद्या २.	३।६।३२	तल्लज १.	८।९।४२	ताम्रमूला २.	३।३।१२५
तर्कारी २.	३।३।९६	तविष १.	७।५।४२	ताम्रवृक्ष १.	३।८।४७
(तक्कारी)		तष्ट १. २. ३.	६।१।१११	ताम्रसार ३.	३।८।११३
तर्कु १.	३।९।९	तस्कर १.	३।९।५६	ताम्रा २.	३।३।१७९
तर्जनी २.	४।४।७३	” १.	८।६।७	ताम्राक्ष १.	२।३।२६
तर्ङ्ग २.	४।३।१६३	तस्थिवसू १. २. ३.		तार १. २. ३.	२।४।१३
तर्णक १.	३।४।५१		५।४।६२	” १.	३।६।२३३
तर्पण १.	४।२।३३	ताटिक १.	३।३।१५२	” १.	५।३।२३
” ३.	४।३।६९	ताडङ्क १.	४।३।१३४	” १. २. ३.	६।५।३६
” ३.	७।३।१६	ताडन ३.	५।१।३६	तारक ३.	३।६।२३३
तर्मन् ३.	३।६।५२	ताडी २.	३।३।२२४	” १. २. ३.	४।४।९४
तर्ष १.	८।२।२०	ताण्डव १. ३.	३।९।७३	” १. २. ३.	७।५।४४
तर्पित १. २. ३.	५।४।३७	तात १.	४।४।२९	तारकारि १.	१।१।५४
तर्पु १.	२।१।१३	तातगु १. २. ३.	७।५।४३	तारजीवन ३.	३।२।१९
तर्हि ४.	८।७।२०	तातल १. २. ३.	७।५।४४	तारण १.	२।१।८०
” ४	८।८।५	तान १. ३.	३।९।१११	तारणी २.	३।८।१४
तल १.	३।३।२१६	तानित ३.	७।३।१६	तारा २.	२।१।३८
” १. २. ३.	३।७।१५५	तान्त १.	२।१।८०	तारावट १.	३।३।१९४
” १.	३।९।१२२	तापस १. २.	३।६।१२४	तारावर्त्मन् ३.	२।१।२
” ३.	४।१।१	” १. २. ३.	३।६।१२६	तारुण्य ३.	४।४।५३
” १.	४।४।७३	तापिन्ध्र १.	३।३।८७	तार्क्ष्य १.	१।३।१९
” १.	४।४।७७	तापी २.	४।२।२७	” १.	१।१।३७
” ३.	५।१।५०	तामरस ३.	४।२।३९	” १.	३।७।९१
” ३.	५।१।६३	तामसी २.	२।१।६०	” ३.	३।८।१२५
” १.	५।३।६	” २.	३।६।१९७	तार्क्ष्यशैल ३.	३।२।४१
” १. ३.	६।५।३५	तामिस्र ३.	२।१।६२	तार्क्ष्यासन ३.	३।६।२२८
तलपोट १.	३।३।१०६	ताम्बूल ३.	४।३।१०६	तार्ण १.	१।२।२१
तलप्रोह १.	३।७।७८	ताम्बूलकरङ्गिका २.		” ३.	३।१।२०
तलयन्त्र ३.	३।७।५१		३।७।३८	तार्णसौम ३.	३।१।२०
तलसारक ३.	३।७।११४	ताम्बूलवल्हिका २.	८।५।२८	ताल १.	३।२।१४
तला २.	३।७।१५५	ताम्बूली २.	८।५।२८	” ३.	३।३।२१६
तलिका २.	३।७।११४	ताम्र ३.	३।२।२४	” १.	३।७।१८५
तलिन १. २. ३.		” १. २. ३.	६।५।३७	” १.	३।९।१२३
	५।४।१२५	ताम्रकर्ष १.	५।१।५२	” १.	४।४।७७
” १. २. ३.	७।४।१२	ताम्रकुट्टक १.	३।९।१५	” १.	४।४।८०
तलिनी २.	४।३।३३	ताम्रचूड १.	२।३।१३	तालक १.	४।१।२७
तल्लि ३.	७।३।१६	ताम्रजीव १.	३।५।३९	” ३.	४।३।४९
तल्लुनी २.	४।४।८	ताम्रधारण ३.	५।१।५९	” ३.	४।३।३४
तल्लेखण १.	३।४।५	ताम्रपर्णी २.	२।१।९	” १.	५।३।८
तल्प ३.	६।३।१२	” २.	४।२।२९	तालपत्र ३.	४।३।१३४
तल्पगृह ३.	४।३।२०	ताम्रपाकिन् १.	३।३।५९	तालपत्रिका २.	३।९।१२४

तालपर्णी]

शब्दानुक्रमणिका

[तुङ्गता

तालपर्णी २.	३१८१८	तित्तीक १.	३३१७७	तिलाट १.	३१८१४८
तालमूली २.	३३१२०३	तिथि १. २.	२११६९	(किलाट)	
तालवृन्त ३.	४३११५९	तिन्तुडीक १.	३३१८१	तिलिस्स १.	४१११४
तालाङ्क १.	१११२३	तिन्तुणी २.	३३१८१	तिलिस्सक १.	३४१४
” १ व.	१३११३	तिन्तुणीक ३.	३१८१३२	तिल्य १. २. ३.	३१८१२०
ताली २.	३३१२०३	तिन्त्रिडीक ३.	८३१६	तिप्य १.	३३११७५
” २.	३३१२२४	तिन्दुक १.	३३१५१	” १.	६११२५
” २.	३१११२४	तिमि १.	४११४१	तिप्या २.	३३११७७
” २.	४३१४९	तिमित १. २. ३.		तीक्ष्ण ३.	३२१३४
तालु २.	३३११७१		५४११०७	” १.	३३१११९
” ३.	४४१८९	तिमिर ३.	२११६४	” १.	३३११२१
तालुजिह्व १.	४११५३	तिमिङ्गिल १.	४११५१	” १. २. ३.	३१७२८
तावत् ४.	८७१२८	तिमिला २.	३१११३५	” १.	५३१९
तावतिथ १. २. ३.		तिमिषा १.	३३१४६	” १.	५३१२६
	५११२०	तिमिषात्रु १.	४११५१	” १. २. ३.	६५१३७
तावत्कृति २.	५११३६	तिरश्चीन १. २. ३.		तीक्ष्णगन्ध १.	३३१५६
तावत्कृत्वः (-स्) ४.	५११३६		५४१९१	” १.	३३१११९
ताविष १. २.	७५१४२	तिरस् ४.	८७१२१	तीक्ष्णच १.	५३१२९
तिक्त १.	३३१५३	तिरस्करिणी २.	४३११२४	तीक्ष्णतण्डुला २.	३१८७७
” १.	३३११२८	तिरस्कार १.	३३११७१	तीक्ष्णधूमा २.	३३१९१
” १.	३३११६६	तिरित १. २. ३.	३१८११	तीक्ष्णरस १.	३१८१२७
” १.	५३१२६	तिरीट १.	३३१५२	तीक्ष्णा २.	३३११९७
” १.	५३१४७	तिरीटिका २.	३३१८७	तीक्ष्णाग्र ३.	३१८६५
तिक्तक १.	५३१५५	तिरोधान ३.	२११६४	तीक्ष्णार्जक १.	३१८१२१
तिक्तकापाय १.	५३१३१	तिर्यग्गामिन् १.	२११३४	तीर ३.	४२१३२
तिक्तच्छदन १.	३३११६३	तिर्यच् ४.	५४१९१	तीरतरङ्गिका २.	३१९११
तिक्तपटुस्वादुकपाय १.		तिल १.	३१८३९	तीरभुक्ति २.	३११३०
	५३१४०	तिलक १.	३३१६१	तीरित १. २. ३.	२४११९
तिक्तपटोलिका २.		” १.	३३१६९	तीरी २.	३१७१८३
	३३११६१	” ३.	३१८१२५	तीर्थ १. ३.	४२१२०
तिक्तवल्का २.	३३१११४	” १. ३.	४३११४८	” ३.	४४१७५
तिक्तशाक १.	३३१४१	” १.	४४१९७	” ३.	६३१३३
तिक्तसार १.	३३१६३	” ३.	४४१११२	तीर्थवाह १.	४४१९८
तिक्तिक १.	५३१३०	” १. ३.	८११३०	तीवर १.	३५११२
तिग्म १.	५३१७	तिलककण्टक १.	२३११८	तीव्र १. २. ३.	५४१३२
” १.	६५१३७	तिलकालक १.	४४१९७	तीव्रकोपा २.	४४११०
तित्त १. ३.	४३१६५	तिलखल १ व.	३११३९	तु ४.	८७१४
तितिचा २.	३३११८४	तिलपर्णी २.	३१८११५	” ४.	८७१११
तितिष्ठ १. २. ३.	५४१३३	तिलपिञ्ज १.	३१८३९	तुक १.	३५१७५
तिचिरि १.	२३१३५	तिलपुष्प ३.	३१८४०	तुङ्ग १. २. ३.	५४१८१
” १.	३११५१	तिलपेज १.	३१८३९	तुङ्गता २.	५२१२४

तुङ्गभद्रा]

वैजयन्तीकोषः

[तुस

तुङ्गभद्रा २.	४२१२८	तुङ्ग १.	३१८१११	तुलफला २.	३१३१९१
तुच्छ १. २. ३.	५४८७	तुर्य १. २. ३.	५११२१	तूलिका २.	३१३२३५
” १. २. ३.	६५३६	तुर्यकालभुज् १.	३१६१२५	” २.	३१९१३३
तुटि २.	२११५२	तुलसी २.	३१३११९	तूलिनी २.	३१३१९१
” २	६२११६	तुला २.	५११६०	तूली २.	६२११७
तुण्ड ३.	४४८६	” २.	६२११७	तूष्णीकाम् ४.	८१८१५
तुण्ड १. २. ३.	५४८६	” २.	८६११४	तूष्णीम् ४.	८१८१५
तुण्डिकेरी २.	३१३१९९	तुलाकोटि १.	४३११४५	तुङ्घी २.	३१३११२
” २.	३१३१४७	तुलापुरुष १.	३१६१४३	तृण ३.	३१३१८४
तुण्डिन् १.	२३३४	” १.	३१६१४३	” ३.	३१३२२५
तुण्डिभ १. २. ३.	४४१४६	तुलिका २.	३१९६	” २.	३१३२३३
तुण्डिल १. २. ३.	४४१४६	तुल्य १. २. ३.	५४१२१	” २.	३१३२३५
तुण्डि ३.	३२१४३	तुल्यविक्रम १.	३१४१	तृणकोल १.	३१८५९
तुत्वा २.	३३११०	तुवर १.	३३११५२	तृणजलायुका २.	४११५९
” २.	३१८८७	” १.	५३१२७	तृणता २.	७२११०
तुत्वाञ्जन ३.	३२१४२	” १.	५३१४२	तृणद्रुम १.	३३१२२४
तुन्द ३.	४४१६७	तुवरी २.	३२११७	तृणधान्यक ३.	३१८५८
तुन्दपरिमृज १. २. ३.	५४५५	” २.	३१८४८	तृणध्वज १.	३३१२१४
तुन्दिक १. २. ३.	५४७	तुष १.	३३११७६	तृणपञ्चिका २.	३१८६४
तुन्दिन् १. २. ३.	५४७	” १.	४३१६६	तृणराज १.	३३१२१६
तुन्दिल १. २. ३.	५४७	तुपानल १.	१२१२०	” १.	३३१२२०
तुन्न १. २. ३.	५४११५	तुपाम्बु ३.	४३१८३	तृणशाय्य १. २. ३.	३१६१३१
तुन्नवाय १.	३१९११	तुपार १.	२२१९	तृणशून्यक ३.	३३११८३
तुमुल १. २. ३.	२४१२	” १.	५३१७	तृणशोणक १.	५३१५०
” १. २. ३.	३७२१७	तुषित १ व.	१३१८	तृणसंवर १.	३४११२
तुमुलाक्षक १.	३३११७६	तुष्ट १.	३३१८५	तृणसञ्चय १.	३१८६५
तुम्बा २.	३७१३५	तुष्टि २.	३६१६६	तृणसिंह १.	३५२
तुम्बिका २.	४३१३२	तुहिन ३.	२२१९	तृणस्तम्ब १.	३३१२३५
तुम्बी २.	३३११६७	तूण १.	३७१७८	तृणाटवी २.	३३१२
तुम्बुक १. २. ३.	२४११६	” २. (आण)	३८११०	तृणेन्धन ३.	३६१९६
तुम्बुका २.	३३११६८	तूणी २.	३७१७८	तृण्या २.	५१११४
तुरग १.	३७१९०	तूणीर १.	३७१७८	तृतीय १. २. ३.	५११२१
तुरङ्ग १.	३७१९०	तूपर ३.	३६११०५	तृतीयाकृत १. २. ३.	३८१२२
तुरङ्गम १.	३७१९०	” १. २. ३.	७४१२	तृतीयाप्रकृति १.	४४१३
तुरायण ३.	३६११४४	तूबर १.	३४१७३	तृपत् १.	२११२७
तुराषाह् १.	१२१७	तूर १.	३९११३७	तृपि १.	२११२७
तुरीय १. २. ३.	५११२१	तूर्ण १. २. ३.	५४११२४	तृप्त १. २. ३.	४३११०५
तुरुष्क १ व.	३११२७	तूर्य १. २.	३९११३६	” १. २. ३.	५४१९९
		तूल १. २.	३९१९		
		तूलपुष्प १.	३३११९३		
		(स्थूलपुष्प)			

[वृत्ति]

वृत्ति २.	३१६१८८
” २.	३१६१०५
वृषक १.	३१६१९९
वृष् २.	८१२१९९
वृषि २.	३१६१७९
वृषित १. २. ३.	५१३३७
वृष्णज् १. २. ३.	५१३३५
वृष्णा १.	८१२१९९
ते १. २. ३.	८१५३९
तेजन १.	३१३२१५
” २. ३.	३१७१९९
तेजनक १.	३१३२२८
तेजनी २.	३१३११४
तेजस् ३.	११२१९९
” ३.	६१३१४४
तेजस्विन् १.	४१४११०
तेजित १. २. ३.	३१७१९७
तेम १.	५१२२९
तेमन ३.	४१३८५
” ३.	७१३१७
तेर १.	३१३४२
” ३.	४१४८६
तैतुल १ व.	३११२६
तैल ३.	३१८१३७
तैलपर्णिक ३.	२१८११४
तैलपर्णी २.	८१२१६
तैलपायिका २.	२१३४४
तैलिस् १.	५१३३२
तैलिन् १.	३१९२७
तैलिशाला २.	४१३२४
तैलीन १. २. ३.	३१८२०
तैष १.	२११८२
तोक ३.	४१४४१
तोकम १.	६१५३८
तोच्चार १ व.	३११२५
तोटक १.	३१८११
तोदुभी २.	३१९१२६
तोड ३.	३१६१५
तोत्त्र ३.	३१७८२
” ३.	३१८२९
तोदन ३.	७१३१७

शब्दानुक्रमणिका

तोमर १. ३.	३१७१६६
तोय ३.	४१२११
तोयपर्णिका २.	३१८१५३
तोयपिप्पली २.	३१३१९७
तोयप्रवाह १.	३१२१७
तोयप्रसादन १.	३१३४२
तोरण १. ३.	४१३४२
तोरणस्तम्भ १.	३१६१५८
तोषणी २.	३१३२१२
तौर्यत्रिक ३.	३१९७१
त्यक्त १. २. ३.	५१४१०१
त्यक्तभर्तृका २.	३१६४५
त्यक्तसंवास १. २. ३.	३१६१३
त्यक्तात्मन् १. २. ३.	३१६१३
त्याग १.	३१६११८
” १.	५१२४०
त्रपा २.	३१६१९७
त्रपु ३.	३१२३०
” ३.	३१२३१
” ३.	६१३१३
त्रपुष १. २. ३.	३१३१७१
त्रय ३.	५१११६
त्रयी २.	३१६२६
त्रयीतनु १.	२१११३
त्रयीपुष १.	३१६११
त्रयोदशी २.	३१९११८
त्रस १. २. ३.	५१४६१
त्रसर १.	३१९१९
” १.	४१३१३२
त्रसरेणु २.	२११२३
” १. २.	५११४२
त्रस्त ३.	३१६१६८
” १. २. ३.	५१४१८
त्रस्तु १. २. ३.	५१४१८
त्राण १. २. ३.	५१४१००
त्रात १. २. ३.	५१४१००
त्रापुष ३.	३१२२३
त्रायन्ती २.	३१३१०९
त्रायमाणा २.	३१३१०९

[त्रिधात्मन्]

त्रास १.	६११२५
त्रिंशत् २.	५११२६
त्रिः(-स्) ४.	८१८१३
त्रिक ३.	४१४६६
” १. २.	८१९२७
त्रिककुट्ट १.	११११०
” १.	३१२२२
त्रिकटु ३.	३१८१८०
त्रिकण्टक १.	३१३१९८
” १	३१३१४१
” १.	३१६१६५
” १.	४१२४७
त्रिकल १.	३१२३३
त्रिकालदर्शिन् १.	३१६१५०
त्रिकालदृश् १.	१११३५
त्रिकुट ३.	३१८११९
त्रिकूट १.	३१२२२
” ३.	३१६११०
” ३.	३१८११९
त्रिकेतु १.	२१३२५
त्रिकोणक १.	४१३१३६
त्रिखट्व १. २.	८१९३६
त्रिखर १.	५१३३४
त्रिगन्ध ३.	४१३१५०
त्रिगर्त १ व.	३११२६
त्रिगुणाकृत १. २. ३.	३१८२२
त्रिचतुर १. २. ३.	५११२५
त्रिजातक ३.	४१३१५०
” १. २. ३.	८१९३९
त्रितच्च २. ३.	८१९३६
त्रितय ३.	५१११६
त्रिदश १.	१११४
त्रिदिव १.	१११२
” १.	७११२९
त्रिदिवा २.	३१८८७
त्रिधा ४.	८१८२०
त्रिधात्मन् १.	११११५
” १.	७११२९

[त्रिपक्षी]

वैजयन्तीकोषः

[दक्षिणाशारत]

त्रिपक्षी २.	३१६६६	त्रिसर १. २. ३.	८११२५	त्वरी २.	३१९८९
त्रिपदी २.	३१७८३	त्रिसरा २.	४३१७९	त्वष्ट १. २. ३.	५११११
त्रिपर्णक १.	३१३२९	त्रिसारा २.	३३१९२	त्वष्टृ १.	१३१७
” ३.	८३१९	त्रिसीत्य १. २. ३.	३८१२२	” १.	३१९३४
त्रिपात्र ३.	८१९८	त्रिसुगन्ध ३.	४३१५०	” १.	६११२५
त्रिपाद १.	३११५२	त्रिस्नेह ३.	४३१९९	त्वाष्ट्र १.	३१६१०८
त्रिपुट १.	३१८४४	त्रिस्तोतस २.	४३१२४	त्वाष्ट्रक १.	३१८४२
त्रिपुटा २.	३३११३७	त्रिहस्त्य १. २. ३.	३८१२२	त्वाष्ट्री २.	२११२३
” २.	३१८८७	त्रुटि २.	२११५२	त्विष् २.	४३१५०
त्रिपुटी २.	३३११३७	” २.	३१८८७	” २.	८२११८
त्रिपुर १.	३३१७७	” २.	६२११७	त्विषाम्पति १.	२१११२
त्रिपुरारि १.	१११४३	त्रेता २.	२११९१	त्सरु १.	३१७१६८
त्रिफला २.	३१८८२	” २.	३१९६२	द	
त्रिमार्गागा २.	४२१२४	” २.	६२११७	दंश १.	२१३४५
त्रिमार्गा २.	४२१२५	त्रेधा ४.	८१८२०	” १.	४१४९०
त्रियामा २.	२११५६	त्रैधस् ४.	८१८२०	दंशन ३.	३१७१५२
त्रियुग ३.	२११९२	त्रैपुर १ व.	३११३६	दंशबन्धन ३.	४१४१३९
” ३.	८१९८	त्रैवृत ३.	४३१९९	दंशालालिक १.	३१४१०
त्रियूह १.	३१७१००	त्रैष्टुभ ३.	८१९१६	दंशित १. २. ३.	३१७१४२
त्रिरसा २.	४३१७९	त्रैहोत्र ३.	३१६९१	दंशी २.	२१३४५
त्रिरेख १.	४११५६	त्रोटि २.	२१३५०	दंष्ट्रा २.	४१४८९
त्रिलोकी १.	८१९८	त्र्यश्रा २.	३३११३७	दंष्ट्रिन् १.	६१५४०
त्रिलोचन १.	१११४२	त्र्यूपण ३.	३१८८०	दक ३.	४२१२
त्रिबर्ग १.	३१६२३५	त्वक्क्षीरा २.	३१८९०	दक्ष १.	२१३१३
” १.	७११२८	त्वक्त्र ३.	३१७१५२	” १. २. ३.	५१४१९
त्रिबलीक ३.	४१४६०	त्वक्पत्र ३.	३१८१०४	” १. २. ३.	५१४५४
त्रिविक्रम १.	११११९	त्वक्सार १.	३३१२२५	” १. २. ३.	५१४१३७
त्रिविक्रमासन १.	३१६२२८	त्वग्गन्ध १.	३३१३६	दक्षकन्या २.	८१२१७
त्रिविष्टप ३.	१११११	त्वग्ज ३.	४३१११७	दक्षवाच् १. २. ३.	५१४४५
त्रिवीथिका २.	२११४५	त्वग्बल व १.	३१७१८३	दक्षा २.	३१११
त्रिवृत २.	३३११३७	त्वच् २.	३३११३	दक्षाध्वराराति १.	१११४१
” १. २. ३.	३१९१०	” २.	४१११०३	दक्षिण १. २. ३.	५१४२०
त्रिवृत १. २. ३.	३१९१०	” २.	८१२२०	” १. २. ३.	७१४४५
त्रिसङ्क १.	७११२९	” २.	८१६१२	दक्षिणस्थ १.	३१७१३८
त्रिशिरस् १.	११२४४	त्वच १. २.	३३११३	दक्षिणाधिप १.	१२१३५
” १.	११२५६	” ३.	३१८१०४	दक्षिणानल १.	१२१२३
त्रिष्टुष्ट १. २. ३.	३१८२३	त्वचिसार १.	३३१२१५	दक्षिणापथ १.	३११३२
त्रिष्टुभ १.	३१८४१	त्वरा १.	३१९८९	दक्षिणात्यन ३.	२११८९
त्रिष्टुभा २.	३१८४२	त्वरित १. २. ३.	५१४१२४	दक्षिणाशारत १.	३१६१५२
त्रिसन्ध्य ३.	२११६७				

दक्षिणैर्मन्]

शब्दानुक्रमणिका

[दलकूर्चिका

दक्षिणैर्मन् १.	३।९।४०	दधिमण्डक ३.	३।८।१४४	दम्भ १.	३।६।१९५
दक्षिणैस्थ १.	१।१।१३८	दधिमुख १.	३।४।४०	दम्भोलि १.	१।२।१३
दग्धान्न ३.	४।३।७६	दधिसक्तु १.	४।३।७१	दम्य १.	३।४।५४
दण्ड १.	३।६।१८	दध्यम्ल १.	४।३।९७	दया २.	३।६।१९२
” १.	३।७।४६	दध्याज्य ३.	३।६।९९	दयालु १. २. ३.	५।४।३९
” १.	६।५।३८	दध्याली २.	३।३।१४३	दयित १. २. ३.	५।४।७०
दण्डक ३.	२।४।४२	दन्त १.	४।४।८८	दर १. ३.	६।५।३९
” १ व.	३।१।३३	” १.	६।१।२६	” १. २. ३.	८।९।३७
दण्डधर १.	१।२।३३	दन्तच्छद १.	४।४।८७	दरण १.	२।३।२५
दण्डनीति २.	३।६।३०	” १.	८।९।१३	दरथ १.	७।१।३१
दण्डपद्मासन १.	३।६।२२८	दन्तधावन १.	३।३।६३	दरद २.	६।२।१८
दण्डपाल १.	३।७।२१	दन्तबीज १.	४।२।४७	दरिणि १. २.	३।८।२४
दण्डपाशिक १.	३।७।२०	दन्तभाग १.	३।७।८१	दरित १. २. ३.	५।४।१८
दण्डवत् १. २. ३.		दन्तवस्त्र ३.	४।४।८८	दरिद्र १. २. ३.	५।४।५९
	५।४।११८	दन्तवेष्ट १.	३।७।११०	दरी २.	३।२।६
दण्डाजिन ३.	३।६।१९५	दन्तशठ १.	३।३।३२	” २.	८।९।३४
दण्डासन ३.	३।६।२२६	” १.	३।३।३५	दर्वर १.	३।७।७४
” १.	३।७।१८१	” १.	३।३।३७	” १.	३।९।१२४
दण्डाहत ३.	३।८।१४८	” १. २. ३.	८।५।९	दर्वुरीक १.	८।१।२४
दण्डिक १.	३।७।१८१	दन्तशठा २.	३।३।६३	दर्पक १.	१।१।२७
” १. २. ३.		दन्ताली २.	३।७।११२	दर्पण १.	४।३।१६२
	५।४।११८	दन्तावल १.	३।७।६१	दर्भ १.	३।३।२२७
दण्डिका २.	३।९।१२९	दन्तिका २.	४।३।५३	” १.	३।३।२२७
दण्डिन् १.	२।३।२५	दन्तिन् १.	३।७।६०	” १.	३।३।२२९
” १. २. ३.		दन्तुर १. २. ३.	५।४।९	दर्व १.	१।३।३
	५।४।११८	दन्तोल्लखलक १. २. ३.		दर्वि १.	२।३।१०
” १.	६।१।२६		३।६।१३२	” २.	४।३।१६३
दण्डोत्पल १.	३।३।१०६	दन्त्य १. २. ३.	५।४।११७	दर्वितुण्ड १.	२।३।१०
दत्तात्रेय १.	१।१।३१	दन्दशूक १.	४।१।४	दर्विदा २.	२।३।१०
दद्र २.	४।४।१२५	” १.	४।१।४०	दर्वी २.	३।६।१०१
दद्रु १.	३।३।१५८	दद्र १. २. ३.	५।४।१३६	दर्वीकर १.	४।१।७
दद्रुज ३.	३।८।१३५	दम १.	३।७।४६	” १.	४।१।८
दद्रुण १. २. ३.	४।४।१४५	” १.	५।२।२७	” १.	४।१।१०
दद्रुनाशिनी २.	३।३।१०३	दमण्डक १.	३।५।९	” १.	४।१।११
दद्रुमत् १.	४।४।१४५	दमथ १.	५।२।२७	दर्श १.	२।१।७०
दधि ३.	३।८।१०९	दमनक ३.	३।३।१२३	दर्शक १.	३।७।२४
” ३.	३।८।१३९	दमयन्तिका २.	३।६।१८	दर्शन ३.	३।७।१७
दधिचीर ३.	३।६।९९	दमित १. २. ३.		दर्शनी २.	४।३।१६
दधित्थ १.	३।३।३२		५।४।११४	दल ३.	३।३।१६
दधिफल १.	३।३।३२	दमुनस् १.	१।२।१८	” १.	६।५।३९
दधिबुस ३.	३।८।१४२	दम्पति १ द्वि.	४।४।४८	दलकूर्चिका २.	३।३।२०८

वलत् १.	४११४६	दाक्षिणात्य १.	३१३२२०	दारु ३.	३१३७१
दली २.	८११७	दाक्षी २.	३१४४३	दारुक १.	१११२६
दव १.	११२२१	दाक्षीपुत्र १.	३१६१५४	दारुकण्टक ३.	२१२२७
” १.	६११२७	दाक्षिम १. २. ३.	३१३७२	दारुण १. २. ३.	३११७९
दवथु १.	४११२२	” १. २. ३.	८११३८	” ३.	५१३५
दश १ २. ३. ४.	४३१३१	दाण्डपाता २.	२११७५	दारुतक्षणी २.	३११३६
दशन १.	४११८८	” २.	८११६	दारुफला २.	३३१८१
दशानोच्छिष्ट १.	८११५२	दाण्डाजिनिक १. २. ३.		दारुहरिद्रा २.	३३२१२
दशपुर ३.	३३२०१		५१४२३	दारुहस्तक १.	४३१६३
दशबल १.	१११३३	दात १. २. ३.	५११०२	दार्दर ३.	३१११६
दशबाहु १.	१११४७	दात्यूह १.	२३११२	दार्वण्ड १.	२३३३८
दशम १. २. ३.	५११२०	” १.	२३३३६	दार्वाघाट १.	२३३३३
दशमिन् १. २. ३.	५११४४	दात्र ३.	३१८३०	दार्विका २.	३११४३
दशमीस्थ १. २. ३.		दाधिक १. २. ३.	४३१९५	” २.	३३११६
	८११७	दान ३.	३१६६३	दार्वी २.	३३२१२
दशरथात्मज	१११२२	” ३.	३१६११८	दाल ३.	३१८१३५
दशा १ व.	४३१६१	” ३.	६३१५५	दास्मि १.	११२६
” २.	४११५३	दानव १.	१३१९	दाव १.	६११२७
” २.	५१२१२	दानवाञ्जन ३	३३१२२	दाश १.	३११४२
दशाङ्गुल १. २. ३.		दान्त ३.	३३१२३	दाशरथि १.	१११२०
	३११५३	” १. २. ३.	५१११४	दाशार्ह १.	१११२५
दशानाह १.	३११६१	दान्ति २.	५१२२७	दाशेरक १.	३१४६७
दशार्ण १ व.	३११३७	दामन् २. ३.	३११२९	दास १.	३११२
दशान्यय १.	१११४७	” २. ३.	८११३२	दासमोचित १.	३११४
दशाश्व १.	१२१४२	दामनी २.	३११२९	दाससूनु १.	३११३
दशास्थ १.	१२१४२	दामा २.	३११२९	दासी २.	३३१११
दशोरक १ व.	३११३८	दामाञ्जन ३.	३१७११२	” २.	३३१९०
दस्यु १.	३१५११२	दामोदर १.	१११२५	” २.	४११२६
” १.	३१५२१५	दाय १.	६११२६	दासीसभ ३.	८११२०
” १.	३१७४०	दायाद १.	७११३०	दासेय १.	४११४३
” १.	३१९५६	दार ३.	४११३९	दासेर १.	४११४३
दस्युजाति २.	३१५२०८	” १ व.	४११३५	दिक्करी २.	४११८
दक्ष १ द्वि.	१३१६	दारक १. २. ३.	५११२	दिगन्त १.	२११६
दहन १.	१२११५	दारद १ व.	३११२७	दिगम्बर १. २. ३.	
” १.	५३१८	” १.	३१२४४		५१११५
दहर १. २. ३.	५११३६	दारपत्र १.	४३१७१	दिग्गज १.	२११८
दह १. २. ३.	५११३६	दारसङ्ग्रह १.	३१६५४	दिग्ध १.	६११४१
दा २.	३१७५२	दारित १. २. ३.		दिग्भव १. २. ३.	
दाक्षायण ३.	३२११९		५११११		४१११६
दाक्षायणी २.	८११६	दारिपत् १.	३१८२६	दियुग्म ३.	२११७
दाक्षाय्य १.	२३३३०	दारु ३.	३३१३३	दिग्वासस् १.	१११४६

दिङ्मण्डल ३.	२११६	दिष्टि २.	३११५३	दीर्घपत्री २.	३३११९६
दिङ्मध्य ३.	२११७	” २.	६१२१९	दीर्घपर्णी २.	३३११७४
दिङ्मार्ग १.	४३११७	दिष्टया ४.	८१७२१	दीर्घपाद १.	२३३३१
दिधिषु १. २.	७१५४७	” ४.	८८११७	दीर्घपृष्ठ १.	४११६
दिधिषूपति १.	३३१४३	दिहण्ड १ ब.	३११२४	दीर्घफला २.	३३११६०
दिन ३.	२११५६	दीक्षणीयेष्टि २.	३३१८७	दीर्घरोमक ३.	३३३२०२
दिनत्रयिन् १.	३३३४१	दीक्षा १.	३३१८७	दीर्घरोमन् १.	३३१७
दिनप्रणी १.	२१११०	दीदिवि १.	२११३४	दीर्घवल्ली २.	३३३१३३
दिनम्मन्या २.	२११५८	” १. २.	४३३७६	दीर्घवाच् १.	२३३१३
दिनादि १.	२११६४	दीधिति २.	२११२२	दीर्घवृन्त १.	३३३६८
दिव् २.	११११	दीन १.	३३३७०	” १.	३३३२१८
” २.	८१२१७	” १.	३३३२२३	दीर्घशूक १.	३८६१
दिवस १. ३.	२११५५	” १. २. ३.	५३३६०	दीर्घसूत्र १. २. ३.	५३३७३
दिवस्पति १.	११२१	दीनवादिन् १. २. ३.	५३३७७	दीर्घिका २.	४३३६
दिवा ४.	८८१७	दीनार १.	५११४१	दीर्घाङ्ग १.	२३३२०
दिवाकर १.	२१११०	दीप १.	४३३१६१	दीर्घा २.	२३३२
दिवाकीर्ति १.	८११२४	दीपक १.	३३३४१	दुःख १. २. ३.	१२३९
दिवाचर १.	२१११०	” १. २. ३.	७१५४७	” ३.	३३३१८७
दिवाटन १.	२३३१५	दीपन १.	३३३६०	” १. २. ३.	५३३१४४
दिवाभीत १.	८११२४	दीपवल्ली २.	४३३१६०	दुःखदोषा २.	३३३४९
दिविषद् १.	१११३	दीपवृक्ष १.	४३३१६१	दुःखल ३.	४३३१२२
दिवौकस् १.	१११३	” १.	८३३२०	” ३.	७३३१८
” १.	७१३३०	दीपिका २.	४३३१६०	दुग्ध ३.	३८११४५
दिव्य ३.	२१११	दीस १. २. ३.	८३३१४	दुग्धतालीय ३.	८३३१४
” ३.	३३३२०४	दीसा २.	२३३१४	दुद्रुम १.	३३३२०५
” ३.	३८१२	दीसि २.	२३३२२	दुध्र १.	१३३२१
” ३.	३३३११०	दीप्य १.	३८१८३	दुन्दु १.	१३३२६
” ३.	८३३१८	दीप्यका २.	३८११०२	दुन्दुभ ३.	३३३२००
दिव्यकालिनी २.	४३३१७	दीर्घ १. २. ३.	५३३८१	दुन्दुभि १.	१३३४५
दिव्येलक १.	४३३१५	दीर्घकोशिका २.	४३३१५८	” १.	३३३१३३
दिव्योलर्क १.	४३३१७	दीर्घदण्ड १.	३३३१५९	” १. २.	७३३४८
दिश्व २.	२३३२	(दिव्यदण्ड)		दुर् ४.	८३३४
” २.	४३३१५	दीर्घदक्षिन् १.	३३३२३५	दुर्ध्व १.	३३३१५०
दिशा २.	२३३२	दीर्घदृष्टि १. २. ३.	५३३५३	दुराचार १. २. ३.	३३३१२
दिशान १.	३३३२२	दीर्घनादिन् १.	३३३६९	दुरालभा २.	३३३१२५
दिश्य १. २. ३.	५३३११६	(रत्तिकील)		दुरासद १.	१३३१६
दिष्ट १.	२३३५२	दीर्घनिद्रा २.	३३३२०१	दुरित ३.	३३३१६८
” ३.	२३३२५	दीर्घनिर्वेश १.	३३३१६३	दुरोदर १.	८३३१०
” ३.	३३३१८९	दीर्घपत्र ३.	३३३२०६	दुर्गा ३.	३३३३
” ३.	४३३११५				
दिष्टान्त १.	३३३२०१				

दुर्ग]

वैजयन्तीकोपः

[देवभिन्न

दुर्ग ३.	३७७४९	दुहितृ २.	४४४४०	दृषद् २.	३२२८
„ १. २. ३.	६५४४१	दूत १.	२११३४	„ २.	४३१६३
दुर्गात १. २. ३.	५४४६०	„ १.	३७२९	दृष्ट ३.	३७१४
दुर्गाति २.	१२३३७	दूती २.	४४२४	दृष्टान्त १.	७१३२
„ २.	७२१०	दून १. २. ३.	५४९८	दृष्टि २.	४४९४
दुर्गन्ध ३.	३८१२५	दूर ३.	५४१४२	„ २.	६२१८
„ १.	५३५५	दूरदर्शिन् १.	२३३०	दृष्टिवन्ध १.	४४९२
दुर्गम १.	३२११	„ १.	३६२३५	देव १.	१११२
दुर्गा २.	११६२	दूर्वा २.	३३२३२	„ १.	३७१५८
दुर्जन १.	५४२५	दूपक १.	३७४१	„ १.	३९१०३
दुर्दर्शा २.	३६४९	दूपणारि १.	११२१	„ १. २. ३.	८१४६
दुर्दिन ३.	२२२८	दूपिका २.	३६४७	देवकुसुम ३.	३८१०३
दुर्नामन् २.	४१५८	„ २.	४४९५	देवखात ३.	४२५
„ ३.	४४१३१	दूप्य ३.	४३१२५	देवगिरि १.	१३१२
दुर्वल १. २. ३.	५४५	„ ३.	४४११८	देवच्छन्द १.	४३१३८
दुर्बाल १. २. ३.	५४१५	दूप्याङ्गी २.	३३३४	देवजग्ध ३.	३३२३४
दुर्मग १. २. ३.	५४६९	दृक्छद् १.	४४९५	देवजन १.	१३३
दुर्मनस् १. २. ३.	५४३३	दृक्श्रवस् १.	४१६	देवतरु १.	१३१४
दुर्मुख १. २. ३.	५४४६	दृगाध्यक्ष १.	२११३	देवता २.	११५
दुर्योधनासन ३.	३६२२७	दृगायुध १.	११४३	देवतागण १.	१३८
दुर्वर्ण १. २. ३.	७५४५	दृगलोमन् ३.	४४९५	देवताड १.	३३८६
दुर्वासस् १.	३६१५६	दृढ ३.	३२३३	देवतायतन ३.	४३२८
दुर्विध १. २. ३.	५४६०	„ ३.	३३२३२	देवतार्चनतूर्य १. ३.	३९१३८
„ १. १. ३.	७४१३	„ १.	५३५	देवदारु ३.	३३७१
दुर्विनीतक १. २. ३.	३७१०७	„ १. २. ३.	५४८४	देवदाली २.	३३१६२
दुर्हृद् १.	३७४२	„ १. २. ३.	५४१३२	देवदण्ड १.	३७१७१
दुल १.	५३५३	„ १. २. ३.	६४८	देवदुन्दुभि १.	१२१७
दुली २.	४१५१	दृढच्युत् १.	३६१५७	„ १	३३१२१
दुश्चर्मन् १. २. ३.	५४१५	दृढदला २.	३३२२४	„ २.	३३१९८
दुश्चयवन १.	१२११	„ २.	३३२३०	देवद्रीचीन १. २. ३.	५४९३
दुष्कृत ३.	३३१६८	दृढा २.	३३१७७	देवद्रथच् (ञ्)	१. २. ३.
दुष्टास्त्रिन् १. २. ३.	३८१९	दृष्टि १.	४३५९	„	५४९३
दुष्ट ४.	८८१३	दृढ्य १. २. ३.	५४११०	देवधान्य ३.	३८५७
(दुष्ट)		दृष्ट २.	४४९४	देवधूप १.	३३५३
दुष्प्रघर्षिणी २.	३३१०२	„ २.	८५३७	देवन् १.	४४३३
दुष्पम ४.	८८१३	„ २.	८१२	देवन १.	३९६०
दुस्पर्श १.	३३१२९	दृशान १.	२११४	देवनन्दिन् १.	१२१९
दुस्पर्शा २.	३३१०६	दृशीकु १.	३६८१	देवप्रेष्य १.	३५६२
		दृश्य १. २. ३.	६५४२	देवभिन्न १.	४११४
		दृषत्युन्न १.	४३१६३		

[देवभूय]

देवभूय ३.	३१६१२३७
देवमणि १. ३.	३१७१११०
देवमातृक १. २. ३.	३११४६
देवमारिष १.	३१३१५१
देवमाली २.	३१३१८४
देवयज्ञ १.	३१६१६३
देवयान १.	२११४५
देवयु १.	३१६१७८
देवयोनि १.	११३१५
देवर १.	४१४३३
देवरथ १.	३१७१२६
” १.	३१९१६६
देवल १. २. ३.	३१६१११
देववधू २.	२१११२
देववैद्य १ द्वि.	११३१६
देवसभा २.	११३१११
देवसिन्धु २.	४१२१२४
देवा २.	३१३१०६
देवाग्नि १.	११२१२२
देवाज १.	११११५३
देवाजीव १. २. ३.	३१६१११
देवार्ह ३.	३१२१२२
देवानाम्प्रिय १. २. ३.	५१४१२२
देविका २.	३१३१३४
देवी २.	३१३११४४
” २.	३१३१३२२
” २.	३१७१३१
” २.	३१९१४५
” २.	३१९१०४
देवीकोट्ट १.	४१३१९
देवृ १.	४१४३३
देश १.	३११२१
देशनिक ३.	४१३११५
देशरूप ३.	३१७१४८
(दशरूप)	
देशिक १.	३१८१३३
देह १. ३.	४१४५२
देहमर्दन १.	४१४१३८

शब्दानुक्रमणिका

देहलक्षण ३.	४१४५४
देहलि १.	५१३५६
देहली २.	४१३४४
देहवारि ३.	४१४१२०
दैतेय १.	११३१९
दैत्य १.	११३१९
” १.	३१३१७६
” ३.	३१३१२३२
दैत्यक्षय १.	४११११
दैत्यदेव १.	११२११८
दैत्यमदन १.	३१३१२०८
दैत्या २.	३१८१९८
दैत्यारि १.	१११११०
दैन्य ३.	३१६११८३
दैर्घ्य ३.	५१२१५
दैव ३.	३१६११८९
दैवज्ञ १.	३१७२५
दैवज्ञा २.	४११३०
” २.	४१४११
दैवत ३.	११११५
दैवपर १. २. ३.	५१४३०
दैविक ३.	३१८११२
दैष्ट ३.	३१६१८९
(नैष्ट)	
दोलक ३.	४१२३९
दोला २.	३१७१३६
” २.	३१७१३७
दोलिका २.	३१७१३७
दोशिखर १.	४१४७१
दोष १.	३१६१९३
दोषग्रह १.	३१३१४२
दोषज्ञ १. २. ३.	४१४१४४
” १.	७११३२
दोषदर्शिन् १. २. ३.	५१४३४
दोषप्रणालिका २.	५१४११६
दोषा ४.	८१८१७
दोस् १. ३.	४१४०१
” १. ३.	८१९३१
दोहल ३.	३१४६१

[द्रविण]

दोहल ३.	३१६११८०
दौन्दुभि २.	३१६१९५
दौन्दुभी २.	३१६१५६
दौर्मत्य ३.	५१२१४
दौवारिक १.	३१७२४
दौष्यन्त १.	३१६१७७
” १.	३१६१७२
दौहित्र १.	४१४४५
दौहद ३.	३१६१८०
द्यावापृथिवी २.	३१११५
द्यु १.	२११५६
” १.	८११६०
द्युचर १.	११३१४
द्युमणि १.	२११११
द्युमत् १.	२१११२
द्युमयी २.	२११२३
द्युम्न ३.	३१८१७३
” ३.	८१३१५
द्युचत् १.	६११२७
द्युवर्धकि १.	११३१६
द्युत १. ३.	३१९५९
द्युतकारक १.	३१९५९
द्युतकृत् १.	३११५८
द्यो २.	१११११
” २.	८१२१७
द्योत १.	११२३१
द्योतन ३.	७१३१८
द्योता २.	३१६५१
द्रक्षण ३.	५११४८
द्रङ्ग ३.	४१३१४
द्रप्स १.	२१२१८
” ३.	३१८१४२
द्रमिड १.	३१५१५६
द्रमिल १.	३१५१०२
(द्रविड)	
द्रव १.	३१६१२६
द्रवक्षेप १.	५१२१४०
द्रवण ३.	५१३११
द्रवन्ती २.	३१३११३
द्रविण ३.	३१८१७३
” ३.	८१३१५

द्रव्य ३.	६३१५	द्रोणिका २.	३३१२४	द्विजायनी २.	३६२०
द्रव्यपद १.	५३११	द्रोणी २.	४२११५	द्विजालय ३.	४४१८६
द्राक् ४.	८८११	” २.	६१ २१८	द्विजिह्व १. २. ३.	७५१४५
द्राक्षा २.	३३१८१	द्रोह १.	३५१९	द्वितय ३.	५१११५
द्राक्षाफल १.	३३२७	द्रौणिक १. २. ३.	३८१२१	द्वितीय १. २. ३.	५११२०
द्रागमृत ३.	४२१४	द्रन्ध्र ३.	५१११५	द्वितीया २.	२११७०
द्रावण १.	३३१४२	” ३.	६३११६	” २.	४४३४
” १.	३८१२४	द्रय ३.	५१११५	द्वितीयाकृत १. २. ३.	३८१२३
द्राविडक १.	३३११६७	द्वादश १. २. ३.	५११२१	द्वित्र १. २. ३.	५११२५
द्राविल १.	३६१५९	द्वादशात्मन् १.	२१११०	द्विधा ४.	८८१२०
द्रु १.	३३१४	द्वादशाह १.	३६१४४	द्विधागति १.	४११४७
द्रुक्लिप्त ३.	३३१७१	द्रापर १.	२११९२	द्विगननक १. २. ३.	५४११५
द्रुघण १.	१११९	” ३.	३९१६२	द्विप १.	३७१६०
” १.	३७१७१	” १.	७११३०	” १.	८६११५
” १.	७११३०	द्वार २.	४३१४२	द्विपद १.	११११९
द्रुण ३.	३७१७२	” २.	८२११६	द्विपाद् १.	३५११
द्रुणा २.	३७७८	द्वार ३.	४३१४२	द्विसुखी २.	४११२०
द्रुणी २.	४११५१	द्वारका २.	४३१६	द्विसुष्टिक १.	५११५२
द्रुत ३.	३९१२३	द्वारपटल ३.	४३१५०	द्विरद १.	३७१६०
” १. २. ३.	४३१५५	द्वारपाल १.	३७१२४	द्विरसन १.	४११४
” १. २. ३.	५४१२४	द्वारबन्ध १.	४३१४३	द्विरेफ १.	२३१४२
” १. २. ३.	६३१८	द्वारयन्त्र ३.	४४१४९	द्विवेदिनी २.	२११७६
द्रुति २.	५३११	द्वारवती २.	४३१६	द्विष् १.	३७१४१
द्रुम १.	३३१४	द्वारवतीपद ३.	३१११९	द्विषत् १.	३७१४०
” १.	३३१८५	द्वारस्थ १.	३७१२४	द्विषन्तप १. २. ३.	५४१६९
द्रुमश १.	४३१४७	द्विः(-स्) ४.	८८१६	द्विष्कृष्ट १. २. ३.	३८१२३
द्रुमामय १.	४३११५३	द्विक १.	२३११५	द्विसीत्य १. २. ३.	३८१२३
द्रुचय ३.	५११६४	” ३.	३७११०	द्विहल्य १. २. ३.	३८१२३
द्रुह १.	३५१२६	द्विकालिक १. २. ३.	३६१२८	द्विहायनी २.	३४१४५
द्रुहिण १.	१११७	द्विखण्डक १.	४३१२७	द्वीप १. ३.	४२१३३
” १.	७११३२	द्विगुणाकृत १. २. ३.	३८१२३	द्वीपवत् १. २.	८५१२९
द्रुण १	४११३२	द्विज १.	३३१३	द्वीपिन् १.	३४१३
द्रेकाण १.	२११५१	” १.	४४१७८	द्वेषा ४.	८८१२०
द्रोण १.	२३११७	द्विजकुत्सित १.	३३१५५	द्वेषण १.	३७१४१
” १. ३.	५११५५	द्विजन्मन् ३.	३५१५७	द्वेषिन् १.	३७१४१
” १.	५११६३	(विजन्मन्)	” १.	द्वेष्य १. २. ३.	५४१६९
” १. ३.	६५१४०	” १.	७११३१	द्वैगुणिक १. २. ३.	३८१८
द्रोणक्षीरा २.	३४१५०	द्विजपोत १.	३९११		
द्रोणदुग्धा २.	३४१५०	द्विजाति १.	७११३१		
द्रोणपुष्पिका २.	३३१२४				
द्रोणमुख ३.	४३३३				

[द्वत]

शब्दानुक्रमणिका

[धारण]

द्वैत ३.	५१११५	धन्या २.	३१८१४९	धर्षणी २.	३१६१४६
द्वैध ३.	३१७१६	धन्याक ३.	३१८१५०	” २.	७१५१४८
द्वैधम् ४.	५१८१२०	धन्येय ३.	३१८१५०	धव १.	३१३१९७
द्वैप १. २. ३.	३१७१२८	धन्वन् १.	३१२१४२	” १.	४१४३३७
द्वैपायन १.	१११३२	” ३.	३१७१७२	” १.	६११२७
द्वैमातुर १.	१११५४	धन्वन्तर ३.	३११५७	धवल ३.	५१३१०
द्वयाचित ३.	५११६२	धन्वन्तरसहस्र ३.	३११६२	” १. २. ३.	७१५४९
द्वयाढक १. ३.	५११५५	धन्वन्तरि १.	८११२५	धवला २.	३१४३३
द्वयायोग ३.	२११९२	धन्वयास १.	३१३१२६	धवित्र ३.	४१३१५९
ध		धन्ववन १.	३१५३३	धातकि २.	३१३१९७
धटिक १. ३.	५११६०	धन्विन् १. २. ३.	३१७१४३	धातु १.	४१४१११
धटिनी २.	३१६१८	धमन १.	३१३१२२८	” १.	६११२८
धन ३.	३१८१७३	” १.	४१४९१	धातु १.	१११६
धनञ्जय १.	८११२४	धमनी २.	३१८१०१	” १.	८१६१
धनद १.	११२१५६	” २.	४१४११६	धातुपुष्पिका २	३१३१९७
धनवत् १. २. ३.	५१४१५७	धम्मिल्ल १.	४१४१००	धान्री २.	३११२
धनाध्यक्ष १.	११२१५६	धयन ३.	४३१०४	” २.	३१२१७७
धनाया २.	३१६१८०	धर १.	३१९१९	” २.	६१११९
धनिन् १.	११२१५६	धरण ३.	५११४४	धानका २.	५११४०
” १. २. ३.	५१४१५७	धरणी २.	३११२	धाना २.	३१८१४९
धनिष्ठा २ व.	२११४१	धरणीधर १.	११११३	” १ व.	४३१७१
धनीयिका २.	३१८१४९	धरा २.	३११२	” २.	६१२१९
धनु (धनुःपट) १.	३१३१५७	” २.	३१३१३१	धानी २.	३१६१६०
” १. २.	३१७१७२	धरासुत १.	२११३१	धानुष्क १. २. ३.	
” २.	६१२१९	धरित्री २.	३११२	धान्य ३.	३१७१४३
धनुर्मह १.	३११५३	धरीक १.	४११२८	” ३.	३१८१५१
धनुर्दण्ड १.	३११५७	धरुण १.	७११३२	धान्यकोष्ठ १.	४३१६४
धनुर्धर १. २. ३.		” ३.	८३११८	धान्यमञ्जरी २.	३१८१६४
	३१७१४३	धर्म १. ३.	३१६१६८	धान्यराशि १.	३१८१६५
धनुर्वेद १.	३१६१३०	” १.	३१७१५८	धान्यवृद्धि २.	३१८१५
धनुश्श्रेणी २.	३१३११४	” १.	५१२११	धान्या २.	३१८१४९
धनुष्पाणि १.	१११२२	” १. २. ३.	६१५४२	धान्याम्ल ३.	४३१८३
धनुष्मत् १. २. ३.		धर्मद्रवी २.	४१२२५	धान्योत्क्षेपण ३.	५१२१६१
	३१७१४३	धर्मपत्तन ३.	३१८१७९	धामन ३.	४३११७
धनुस् ३.	३११५५	धर्मपाल १.	३१७१५८	” ३.	६३११६
” ३.	३११५७	धर्मभ्रातृ १.	३१६१२४	धामार्गव १.	३३१११५
” १. ३.	३१७१७२	धर्ममाणव १.	३१६१२३	” १.	३३११६२
” १.	८१६१५५	धर्मराज १.	१११३३	धारकदारु ३.	४३१४०
धनोत्पत्ति २.	३१७४४	” १.	११२३५	धारका २.	४१४६३
धन्य १. २. ३.	५१४१५६	धर्षण ३. २.	७१५४८	धारण ३.	५११५९
धन्या २.	३१३१०४				

धारणा]

धारणा २.	३१६२३१
" २.	३१८१५
" २.	३१८१५
धारणी २.	३१८१७८
धारभार ३.	५११६१
धारा २.	३१७११८
" २.	३१७१८६
" २.	३१८१३०
" २.	३१८१२०
धाराग्र ३.	७१३१८
धाराट १.	७१३३३
धाराधर १.	२१२११
धारिका २.	२११५४
धारोष्ण ३.	३१८१४६
धार्तराष्ट्र १.	२१३१७
धार्मिक १.	३१६२३
" १.	३१७२०
धावन २. ३.	७१५४९
धावनी २.	३१३१३६
धिक् ४.	८१७५
धिकृत्त १. २. ३.	५१४७१
" १. २. ३.	५१४११०
धिक्रिया २.	५१२२१
धिग्वन १.	३१५१७
धिग्वनक १.	३१५६
(धिश्चनक)	
धिषण १. २.	७१५५०
धिष्ण्य ३.	२११३८
" १. ३.	६१५४३
धी २.	३१६१६३
धीकर १.	३१९१६
(अधीङ्कर)	
धीकर्मिक १.	३१७२०
धीता २.	६१२२०
धीति २.	३१३१०४
धीमक ३.	३१२३३
धीमत् १.	३१६२३४
धीमती २.	३१४२१
धीर १. २. ३.	३१७१५०
" १. २. ३.	५१४२०

वैजयन्तीकोषः

धीर १. २. ३.	५१४५२
" १. २. ३.	६१५४४
धीरा २.	३१३१३१
धीवर ३.	३१२३३
" १.	३१५२६
" १.	३१५८२
" १.	३१९४२
धुत्तिम ३.	३१८१४५
धुत १. २. ३.	५१४९५
धुत्तर १.	३१३७६
धुनी २.	३१२२३
धुर् २.	३१७१३०
" २.	८१२१७
धुरण १.	५११४३
धुरन्धर १.	३१३९४
" १. २. ३.	३१४६७
धुरीण १. २. ३.	३१४६७
धुर्धर १.	३१३७७
धुर्य १. २. ३.	३१४६७
धुर्यावकर्तिक १. २. ३.	३१६१३३
धुर्वी २.	३१७१३०
धुस्तूर १.	३१३७६
(धुत्तर)	
धुङ्क्णा २.	२१३१८
धूत १. २. ३.	५१४१०१
" १. २. ३.	६१४८
धूप १.	११२२८
धूपायित १. २. ३.	५१४९८
धूपित १. २. ३.	५१४९८
धूम १.	११२२८
" १.	८१६५
धूमक १. २. ३.	२१२१०
धूमकेतु १.	११२१६
" १.	८१२२५
धूमज १ व.	२११३७
धूमयोनि १.	२१२११
धूमल १. ३.	३१९१३८
" १.	५१३२१
धूमवर्णा २.	११२३०

[धैवत

धूमिका २.	२१२११०
धूमोर्णा २.	११२३६
धूम्या २.	५१११४
धूम्र १.	५१३८
" १.	५१३२१
धूम्रकर्ण १.	३१४६६
धूम्राट १.	२१३२७
धूर्जटि १.	१११४०
धूर्त ३.	३१२३६
" १.	३१३६०
" १.	३१३६१
" १.	३१३७६
" ३.	३१८११५
" १.	३१९५८
" १. २. ३.	५१४२४
धूर्तार १.	३१३६०
धूलि २.	३१८२५
" २.	८१६१७
" १. २.	८१९२६
धूलिजङ्घ १.	२१३१६
धूलिध्वज १.	११२४९
धूलिभक्त ३.	३१६५६
धूलिलुटित ३.	३१७१११
धूलिकदम्ब १.	८११५३
धूसर १.	३१९२७
" १.	५१३१४
धृति २.	१११४७
" २.	३१६१६६
" २.	३१७२०८
" २.	६१२२०
धृष्ट १. २. ३.	५१४१७
धृष्टा २.	३१६५०
धृष्ट्यु १. २. ३.	५१४१७
" १. २. ३.	६१४१९
धेनु २.	३१४५०
" २.	३१७७०
धेनुप्या २.	३१४५०
धेनुक ३.	५१११०
धेनुकी २.	२११७७
धैर्य ३.	३१७२०८
धैवत १.	३१९१३२

धोरण १.	२३३६	नकुटक ३.	४३१९१	नटभूषण ३.	३१२१३
„ ३.	३१७१२३	नकुल १.	४११२७	नटिति २.	३१९७८
धोरी २.	३१६५७	नक्तक १.	२३३२३	नटी २.	३१८१००
धौत १. २. ३.	३१७१९७	„ १.	५३१३३०	नटोत्साहन ३.	३१९१३९
धौतकौशेय ३.	४३१११८	नक्तश्चर १.	२३३२२	नट्या २.	५१११४
धौतयुग्म ३.	४३११२०	नक्तम् ४.	८१८७	नटवत् १. २. ३.	३११४४
धोरण १. २. ३.	३१७१२१	नक्तमाल १.	३१६६२	नटवल १. २. ३.	३११४४
धोरित १. २. ३.	३१७१२१	नक्र १.	४११५३	नण्ड १.	३१९६३
धोरितक १. २. ३.	३१७११८	नक्षत्र ३.	२११३८	नत १. २. ३.	५१४८३
„ १. २. ३.	३१७१२१	नक्षत्रकालिक १. २. ३.	३१६१२७	„ १. २. ३.	५१४१२३
धोर्य १. २. ३.	३१४५७	नक्षत्रनेमि १. २.	८१५२६	„ १. २. ३.	६१४९
धौर्य १. २. ३.	३१७१२१	नक्षत्रमाला २.	८१७८७	नतजानु २.	३१६४७
ध्यान ३.	३१६२३२	„ २.	४३११४२	नतनास १. २. ३.	५१४१२
ध्यामक ३.	३१३२३४	नख ३.	३१८१०१	नद १.	४१२२९
ध्रुव १.	३१७१३१	„ १. ३.	४१४७५	नदनु १.	२१२१२
„ १. २. ३.	६१५४४	नखर १. ३.	४१४७५	नदी २.	२१२१२
ध्रुवा २.	३३१९६	नखरायुध १.	४१४७२	„ २.	८१९३
„ २.	३३११००	नखशस्त्र १.	८१६२३	नदीभव ३.	३१८१२०
„ २.	३३११००	नखायुध १.	४१४७२	नदीमातृक १. २. ३.	३११४७
ध्रुणा २.	२१४२	नखारुस ३.	४१४११७	नद्ध १. २. ३.	५१४९७
ध्वज १. ३.	३१७१३३	नग १.	३३३५	नद्धी २.	३१९४४
„ १. ३.	६१५४३	„ १.	३१८१०४	ननन्द २.	४१४२७
„ १. ३.	८१६५	„ १.	८११५८	ननान्द २.	४१४२७
ध्वजप्रहरण ३.	१२१४८	नगर ३.	४३११	ननु ४.	८१७२२
ध्वजिन् १.	३१९४४	नगरद्वारकुट्टक १.	४३११५	„ ४.	८१८२
ध्वजिनी २.	३१७५५	नगरी २.	४३११	नन्दक १.	११११७
ध्वनि १.	२१४१	नगाधारा २.	३११३	नन्दथु १.	३१६१८८
ध्वस्त १. २. ३.	३१७२१९	नग्न १.	३१६७३	नन्दन ३.	१२११०
„ १. २. ३.	५१४१०२	„ १. २. ३.	५१४१५	„ १.	३१६१०२
ध्वाङ्क १.	२३११७	„ १.	६११३१	„ १.	४१४३९
„ १.	६११२७	नग्नहृ १.	३१९५०	„ १.	८१९१४
ध्वाङ्गी २.	२१४४	नग्न २.	४१४१०	नन्दनीनन्दन १.	३१६१५८
ध्वान १.	२१४१	नग्ननाट १. २. ३.	५१४१५	नन्दयन्ती २.	१११६०
ध्वानका २.	५११४९	नचक्र १.	३१६१९९	नन्दा २.	१११६०
ध्वान्त ३.	२११६४	नट १.	३१६१९	„ २.	३३१९७
ध्वान्तमणि १.	२३१४७	„ १.	३१५५५	नन्दि २.	३१६१८८
न		„ १.	३१५१०३	नन्दिक १.	३१६१५८
न ४.	८१७५	„ १.	३१९६२	नन्दिका २.	१२१११
नःकुट्ट १. २. ३.	५१४११	नटन ३.	३१९७८	नन्दिकेश्वर १.	१११५१

नन्दिन् १.	१११५१	नयनोदक ३.	३१९८७	नवांशुक ३.	४३१२०
” १.	३८८३५	नर १.	३१५१	नवीन १. २. ३.	५४८८
नन्दिनी २.	१११६०	” १.	६११२९	नव्य १. २. ३.	५४८८
” २.	३३११७८	नरक १.	११२३७	नसिक १.	४४३८
” २.	३८८८८	नरकाराति १.	१११२५	नश्यत्प्रसृति ४.	४४२०
” २.	४३१११	नरकीलक १. २. ३.	३१६१२	नश्वर १. २. ३.	२१४१९
” २.	४४१२७	नरकोलि २.	३३१८९	नष्टा २.	३६४८
नन्दिवर्धन १.	१११४४	नरदेव १.	३१७२	नस २.	३१५२३
” १.	२११७३	नरनारायण १.	१११३०	नस्त ३.	४४१४०
नन्दिसरस् ३.	२११११	नरवाहन १.	११२५७	नस्तित १. २. ३.	३१४५७
नन्दीचारी २.	३१९१४२	नरेन्द्र १.	३१७२	नस्य ३.	४४१४०
नन्दीमुखी २.	३१६१२००	” १.	७११३७	नस्योत् १. २. ३.	३१४५७
नन्द्यावर्त १.	३३११९४	नर्तक १.	३१९६३	नहुष १.	३१५१
” १.	४३३३०	नर्तन ३.	३१९७३	नाक १.	११११
ननुंसक ३.	४४३३	नर्तनप्रिय १.	२३३३८	” १.	६११२९
नप्तृ १.	४४४४५	नर्मदा २.	४२१२६	नाकु १.	३११४८
नप्र १.	३१९६३	नर्मन् ३.	३१९८८	नाकुल ३.	३६२१८
नभःप्राण १.	११२४८	नल १.	३३३२२८	नाकुली २.	३८१९८
नभस् ३.	२१११	नलक ३.	४३१२५	नाकुसुदमन् १.	४११६
” ३.	२११८४	” ३.	४४११६	नाग ३.	३२३०
नभस १.	७११३३	नलकृवर १.	११२५९	” ३.	३२३२
नभसङ्गम १.	२३३२	नलतीर ३.	४४१५९	” १.	४११४
नभस्य १.	२११८५	नलद ३.	३३३२३१	” १.	६११३०
नभस्वत् १.	११२५०	नलमीन १.	४११४५	नागकेसर १.	३३३८२
नभोज्ञ १.	३३३१९४	नलान्तर १.	३११६१	नागजिह्वा २.	३२१२२
नभोजात १.	११२५०	नलिक ३.	४३१२५	” २.	३३३१३९
नभ्राज् १.	२१२१	नलिन ३.	४२३८	नागजीवन ३.	३२३१
नमः (-स्) ४.	८८१४	नलिनी २.	४२१४३	नागदन्त १.	४३१५३
नमत ३.	४३१६६	” २.	७२१०	नागदन्तक ३.	३६२१४
” १.	७११३५	नलिवाह १.	३७११७	नागदन्ती २.	३३१०९
नमसित १. २. ३.	५४१०५	नली २.	३८१००	नागपाश १.	३७१९६
नमस्कार १.	३६३३९	नल्व १.	३११६०	नागबला २.	३८६१
नमस्कारी २.	३३१४८	नल्वल ३.	५११५६	नागमातृ २.	३२१२२
नमस्या २.	३६३३९	नल्विक १.	३११६०	नागर १.	३३३६१
” २.	३६३३९	नव १. २. ३.	५४८८	” १. २. ३.	७१५०
नमस्थित १. २. ३.	५४१०५	नवति २.	५११२७	नागरङ्ग १.	३३३३६
नम्र १. २. ३.	५४८३	नवनीत ३.	३८१३८	नागराज १.	४१३३
नय १.	५१३२	नवम १. २. ३.	५१२०	नागरी २.	३३१३७
नयन ३.	४४९४	नवमालिका २.	३३३१८६	नागलोक १.	४१११
		नवश्री १. २. ३.	४३११९	नागवह्नी २.	३३१४०
				नागवारिक १.	८११५३

[नागवीथिका]

नागवीथिका २.	२११४६
नागवृन्तिका २.	३३१२६
नागाङ्क ३.	४३१८
नागी २.	२११६
नागोदरी २.	३७१५४
नागोद्भव ३.	३८११८
नाटक ३.	३९१००
नाटकी २.	३९१७३
नाटिका २.	३९१००
नाट्य ३.	३२१२८
” ३.	३९१७१
” ३.	६३१७७
नाट्यधर्मिका २.	३९१७२
नाट्योक्त ३.	३९१७२
नाडिजङ्घ १.	२३११६
नाडिन्धम १.	३९११६
नाडी २.	२११५४
नाडीव्रण १.	३८१३३
नाथ १. २.	६५१४५
नाद १.	२१११
नादेय ३.	३८१२८
नादेयी २.	३३१९६
” २.	३३१९९
नाना ४.	८७१२२
” ४.	८८१४
नानीकर १. २. ३.	५४१४८
नानीकवाच् १. २. ३.	५४१४८
नानीपात १.	४११२०
नान्दी २.	३९१६९
” २.	३९१३३
नापित १.	३९१२६
नापितकोलिका २.	४४१९६
नाभि २.	४४१६६
” १.	६११३०
नाभिका २.	३७१३५
नाभिज १.	१११९
नाभिनाला २.	४४१९
नाभी २.	४४१६६

शब्दानुक्रमणिका

नाभीद ३.	३११५
नाभील ३.	७३१९
नाम ४.	८७१२३
नामकर्मन् ३.	३६१३
नामधेय ३.	३११३१
नामन् ३.	३११३१
नामवर्जित १. २. ३.	५४१२१
नामशास्त्र ३.	३६१३१
नाय १.	३२१३२
नायक १.	४३१४३
” १. २. ३.	५४१५७
नार ३.	३११३३
नारक १.	१२१३७
” १.	१२१३८
नारकी २.	२११६
नारङ्ग १.	३३१३६
नारद १.	३३१३७
नारसिंही २.	१११६४
नाराच १.	३७१८०
नाराची २.	३९१९९
नारायण १.	११११०
” १. २.	८५११०
नारी २.	३३१८१
” २.	४४१४
नार्यङ्ग १.	३३१३६
नाल १. २. ३.	३८११८
” १. २. ३.	३८१६३
” १. २. ३.	४२१४२
” ३.	६३११७
” १. २. ३.	८९१३८
नालक ३.	४३१२५
नाला २.	४२१४२
नालिका २.	३११५८
” २.	३११५८
” २.	३६१५५
” २.	३७११०
” २.	३७११७
” २.	३९११७२
” २.	७२१११
नालिकेर १.	३३१२२०

[निकाय्य]

नाली २.	३८१६३
” २.	४४११६
” २.	८९१३८
नालीकर १. २. ३.	५४१४८
नालीकवाच् १. २. ३.	५४१४८
नावन ३.	४४१४०
नावारोह १. २. ३.	४२१९९
नाविक १.	३५१३८
” १.	३५१००
” १. २. ३.	४२१९९
नाव्य १. २. ३.	४२१२०
नाश १.	३७१२१०
” १.	६११३१
नासत्य १ द्वि.	१३१५
नासत्यदत्त १ द्वि.	१३१५
नासा २.	४३१४०
” २.	४३१४५
” २.	४४१९१
नासाग्र ३.	४४१९२
नासारज्जु २.	३७११२२
नासिका २.	४४१९१
नासिकापुट १.	४४१९१
नासिकामल १.	४४१९२
नासिक्य १ द्वि.	१३१६
नासिर १. ३.	३७१२०३
नासू २.	३९११३३
नास्तिक १. २. ३.	५४१३८
नि ४.	८७१५
निंसन ३.	४३११७१
निकट ३.	५४१४०
निकर १.	५११२
निकर्षण ३.	४३१३१
निकष १.	३९११९
निकषा ४.	८८१५५
निकामस् ४.	४३११०४
निकाय १.	५११४
निकाय्य १.	४३११८

[निकार]

निकार १.	७११३७
निकारण ३.	३७२१२
निकार्थ १.	४३११८
निकाश १ २. ३.	५४१२२
निकुञ्चिन् ३.	३६१५१
निकुञ्ज १. ३.	३२१२०
निकुरुम्ब ३.	५११२
निकृष्ट १. २. ३.	५४१७५
निकेतन ३.	४३११७
निकण १.	२४१११
निकाण १.	२४१११
निक्षेप १.	३८११२
निखर्व ३.	५११२८
” ३.	५११३०
निखिल १. २. ३.	५४१८५
निगण १.	३६१९५
निगम १.	७११३५
निगारण १. २. ३.	४४१८३
निगल १.	३७१८३
निगाल १.	३७१९०९
निगूढक १.	३८१३८
निगूढचरण ३.	३६१२१२
निग्रह १.	७११३४
निघ १.	३९११८
निघण्टु १.	३६१३१
निघस १.	४३११०२
निघानका २.	३९१२०
निघृष्टा २.	३६१५०
निघ्न १. २. ३.	५४१२८
निघ्नित १. २. ३.	५४११५५
निचुल १.	३३१६७
निचोट १.	३७१८४
निचोल १.	३३१४१
” १.	४३११२६
” १.	४३११२८
निज १. २. ३.	३७१४३
” ३.	५२११

वैजयन्तीकोषः

निज १. २. ३.	६४१९
नितम्ब १.	३२१८
” १.	४४१६४
” १.	७११३६
नितम्बिनी २.	४४१४
नितान्त १. २. ३.	५४१३२
नित्य १. २. ३.	५४१८८
” १. २. ३.	५४१३०
नित्यशक्किन् १.	३४११२
नित्यहोम १.	३६१७०
निदाघ १.	३९१८१
” १.	८११५७
निदान ३.	७३१२०
निदानञ्ज १.	४४११४४
निदिग्ध १. २. ३.	५४११०८
निदिग्धिका २.	३३११०५
” २.	३३११०६
निदेश १.	३७१४७
” १.	७११३४
निदेशक १.	३११५९
निद्रा २.	३६१९७
निद्राण १. २. ३.	५४१३९
निद्रालु १.	३३११५०
” १. २. ३.	५४१३९
निधन १. ३.	७५१५१
निधान ३.	१२१६०
” ३.	५२१४०
निधि १.	१२१६०
निधिपाल १.	१२१५७
निधुवन ३.	३११३४
(विधुवन)	
” १.	४३११७०
निन्दा २.	३११३३
” २.	६२१२१
निप १.	४११५८
निपक्षति २.	२११७०
निपात १.	३६१२०१
निपान ३.	४२१९
निपीतिन् १.	३८११२७

[निरञ्जना]

निर्वहण ३.	३७२१२
निर्वह १. २. ३.	५४१२६
निर्वीर १. २. ३.	५४१२६
निम्न ३.	३६१९५
” १. २. ३.	३९१२१
” १. २. ३.	५४१२२
निम्नत १. २. ३.	५४१३२
निमय १.	३८१७१
निमित्त ३.	७३११८
” १.	८३११६
निमित्तग्रहण ३.	३७१९०
निमिष ३.	३९१९०
निमीलन ३.	३३१२०१
” १.	३९१९०
निमेष १.	२११५३
निम्नक १.	३३१३६
निम्नगा २.	४२१२२
निम्ना २.	३३११७८
निम्ब १.	३३१७५
नियति २.	७२११२
नियन्तु १.	२७१३८
नियम १.	३६११४
” १.	३६१२०९
” १.	५२१३७
” १.	७११४०
नियमोच्चिन्ति २.	५२१६
नियामक १.	४२११८
नियुत ३.	३३१२३२
” ३.	५११२८
” ३.	५११३०
” ३.	५११३२
नियुद्ध ३.	३७२०७
नियोग १.	५२१२५
नियोज्य १.	३९१२
निर् (निस्) ४.	८७१५
निरञ्जन १.	३३११२
निरञ्जना २.	११११६
” २.	२११७२

निरन्तर १. २. ३.	५४१२६	निर्भर १. २. ३. ५४१३१	निवर्तना २.	५४११७	
निरय १.	१२१३७	निर्भर्त्सन ३.	८३१८	निवसथ १.	४३१२
निरर्थक ३.	५२१६	निर्मद १.	३७१६८	निवसन ३.	४३११८
निरवग्रह १. २. ३.	५४१२७	निर्माल्य ३.	४३११५६	” ३.	४३१११६
निरसन ३.	३४१२१३	निर्मुक्त १.	४११२०	निवह १.	५११२
निरस्त १. २. ३. ७४११३		निर्मोक १.	४११२१	” १.	७११३४
निराकरिष्णु १. २. ३.	५४१४०	निर्याण ३.	५२११३	निवहा २.	३३११८६
निराकार १.	५२१२३	” ३.	७३११९	निवात १. २. ३. ७४११४	
निराकृति २.	३४१९	निर्यातन ३.	८३१७	निवाप १.	३३१६४
निरामय १. २. ३.	४४११४३	निर्याम १.	४२११९	निवीत ३.	३३१२१
निरायस १.	३४१६३	निर्यास १.	३३१११	” १. २. ३. ४३१२२०	
निरास १.	५२१२३	निर्यूह १.	४३१३१	निवृत्त १. २. ३. ५४११०८	
निरिणा २.	३४१४६	” १.	४४११४१	निवृत्ति २.	७२१११
निरीष १.	३८१२८	” १.	७११३८	निवेश १.	५२११४
निरुक्त ३.	३४१२८	निर्लज्जा २.	३४१४६	” १.	७११३३
” ३.	३४१३१	निर्लिङ्ग ३.	८७११	निशरण ३.	३७१२१२
निरूपण १. २. ३.	८५११२	निर्लेप ३.	४२१३८	निशा २.	२११५७
निरोध १.	७११३३	निर्वपण ३.	३४१११८	निशाकर १.	२११२४
निर्झति २.	१२१४२	निर्वहण ३.	३९११०९	निशाकेतु १.	२११२५
निर्गमन ३.	५२११३	निर्वाण ३.	७३१२०	निशाचर १. २. ८५११२	
निर्गीत ३.	३९१११०	निर्वाद १.	२४१३३	निशात १. २. ३.	३७११९७
निर्गण्डी २.	३३१११८	निर्वापण ३.	३७१२१३	निशादक्षिन् १.	२३१२२
” २.	३३११८६	निर्वार्य १. २. ३. ५४१७३		निशानाथ १.	२११२४
निर्ग्रन्थ १. २. ३. ५४११६		निर्वासन ३.	३७१२१२	निशान्त १. २. ३.	७५१५१
” १. २. ३. ७४११३		निर्विष १.	४११११	निशामणि १.	२३१४७
निर्ग्रन्थन ३.	३७१२१३	निर्विषा २.	४१११७	निशार १.	४३११२७
निर्घात १.	२२१६	निर्वीरा २.	४३१२८	निशित १. २. ३.	३७११९७
निर्जर १.	१११३	निर्वृति २.	७२११०	निशीथ १.	२११६६
निर्झर १.	३२१७	निर्वृत्त १. २. ३. ५४१११		तिथिथिनी २११५८	
निर्णय १.	३४११७६	निर्वेद १.	३४११६७	निशिथ्या २.	२११५८
निर्णिक १. २. ३.	५४१६६	” १.	५२१३४	निशुम्भन ३.	३७१२१२
निर्णेतृ १.	३५१४५	निर्वेश १.	७११३९	निश्रय १.	३४११७६
निर्दय १. २. ३. ७४११५		निर्व्यथन ३.	४११२	निश्रारक १. २. ३.	८५१११
निर्देश १.	३७१४७	निर्हरण २.	३७११९२	निश्रेणि २.	४३१५१
निर्बन्ध १.	५२११४	निर्हार १.	५२११७	निश्वास १.	३४१२०४
		निर्हाद १.	२४११	निरालाक १. २. ३.	५४११२०
		निलय १.	४३११८		
		निलम्प १.	१११२		
		निलम्पिका २.	३४१४२		
		निलवयनी २.	४११२१		
		निवर्तन ३.	३११६०		

निशेष १. २. ३.	५४८६	निष्ठा २.	६२१२१	निस्पृहा २.	३६१५०
निशेष्य १. २. ३.	५४६६	निष्ठान ३.	४३१८५	निस्त्राव १.	४३१७९
निश्रेयस ३.	८३१८	” ३.	४३११०	निस्त्राध्याय १. २. ३.	३६१९
निश्वास १.	३६१२०४	निष्ठीव १. ३.	५२१३६	निहत १. २. ३.	३६३३७
निपङ्ग १.	३१७१७८	निष्ठीवन ३.	५२१३६	” १. २. ३.	७४१३३
” १.	७११३४	निष्ठुर १. २. ३.	२१४२१	निह्नन ३.	३१७२१२
निपङ्गिन् १. २. ३.	३१७१४३	” ३.	३२१२७	निहित १. २. ३.	५४१०४
निपद्या २.	४३३३४	” १.	५३१५	निह्व १.	७१३९
निपट्ट १.	३१८२६	निष्ठेवन ३.	५२१३६	नीच १. २. ३.	३६३३७
” १. २.	८१५११	निष्ठया २.	२११४०	” १. २. ३.	५४१२२
निपथ ७१३८		निष्ठयूत १. २. ३.	७४११४	” १. २. ३.	५४६०
निषाद १.	३१५४	निष्ठचूति २.	५२१३६	” १. २. ३.	५४८१
” १.	३१५६९	निष्णात १. २. ३.	५४११९	” १. २. ३.	६४२०
” १.	३१५७०	निष्पक्क १. २. ३.	५४११५	नीचुदार १.	३३१५४
” १.	३१५७२	निष्पत्तिसुता २.	४३१२०	नीचैः (-स्) ४.	८१८१९
” १.	३१५८४	निष्पन्नाकृति २.	५२१३८	नीड १. ३.	२३१४९
” १.	३१५१३२	निष्पन्न १. २. ३.	५४१४६	” १. ३.	८१५३६
निषादिन् १.	३१७१८७	निष्पाव १.	४२१४६	नीडज १.	२३१४
निषिद्धैकरुचि १. २. ३.	३६१२२	” १.	४२१४६	नीडिन् १.	२३१२
निषूदन ३.	३१७२१२	निष्प्रवाणि १. २. ३.	४३१२०	नीडोद्भव १.	२३१२
निष्क १.	५११४१	निष्प्रम ४.	८१८१३	नीप १.	३३१६०
” १. ३.	५११४६	निसर्ग १.	५२११	नीर ३.	४२११
” १. ३.	६१५२०	” १.	८१५३५	नील १.	१२१६१
निष्कला २.	४३११६	निसृष्ट १. २. ३.	५४११६	” १.	३३११७
निष्कासित १. २. ३.	५४१७१	निस्तर्हण ३.	५११२१२	” १.	५३१११
निष्कुट १.	३३३३	निस्तल १. २. ३.	५४१८२	नीलक १.	१२१२९
” १.	३३३१४	निष्पिंश १.	३१७१६०	नीलकण्ठ १.	३३११५५
निष्कुटी २.	३१८१८७	” १. २. ३.	७१५५१	” १.	८१६२२
निष्कोटित १. ३.	३१५१२२	निस्वन १.	२३११	नीलकेशी २.	३३१११०
निष्कोश १.	३१७७७	निस्वान १.	२३११	नीलग्रीव १.	१११४२
निष्क्रम १.	७१३३६	निरसङ्ग १. २. ३.	३३१२०	” १.	८१६२२
निष्ठङ्क १.	३३३६२	निस्सङ्गजा २.	३३११८७	नीलजम्बूर १.	३३१९४
निष्ठथ १.	३१५४६	निस्सारण ३.	३१५४१	नीलवृष १.	३३११५७
निष्ठयान्ता २.	३३३१३५			नीलपीतल १.	५३३२१
निष्ठा २.	३१५१०९			नीलपुष्प १.	३१८५८
				नीललोहित १.	१११४०
				” १.	५३१९९
				नीलवासस् २.	२१३३६
				नीलवृष १.	३३११२३

नीलशीर्ष]

नीलशीर्ष १.	३१४४१
नीलसितश्याम १.	५३१३३
नीलाक्ष १.	२३३५
नीलाङ्गा २.	४११३९
नीलाब्ज ३.	४२३३५
नीलाम्बर १.	१११२४
नीलिक १.	३५५९९
नीलिका २.	३३११८६
नीलिङ्गी २.	३११४२
नीलिनी २.	३३१११०
नीली २.	३३३११०
नीलीराग १. २. ३.	४२३३४
नीलोत्पल ३.	४२३३४
नीवलक १.	३५२२४
नीवाक १.	३८८६६
नीवार १.	३८८५७
नीवि २.	४३१३३०
नीवी २.	३८८७०
नीष्ट १.	३११२१
नीम ३.	४३३३७
नीहार १.	२२२९
नु ४.	८७७६
नुत १. २. ३.	५४११०६
नुति २.	३११३५
नुत्त १. २. ३.	५४१९७
नुन्न १. २. ३.	५४१९७
नूतन १. २. ३.	५३१८६
नूतना २ व.	२१११८
नून १. २. ३.	५४१८६
नूनम् ४.	८७२२
नूपुर १. ३.	४३११४५
नृ १.	३५५१
” १.	४१४३
नृगालिक १ व.	३११२८
नृङ्ग ३.	४३३३
” ३.	४३३४
नृत्तु १.	३१९६३
नृत्त ३.	३१९७३
नृप १.	३७११

शब्दानुक्रमिका

नृपति १.	३७११
नृपलक्ष्मन् ३.	३७११६
नृपात्मज १.	३३११७०
नृपात्मजा २.	३३११६७
नृपार्हक ३.	३८१५६
नृलिङ्गक १.	३९१११२
नृशंस १. २. ३.	५४२४
नृसिंह १.	११११८
नृसेन २. ३.	८९३३
” २. ३.	८९३५
नेच १.	३३३३७
” १. २. ३.	५४५७
नेत्र ३.	६३३७
नेत्रपिण्ड १.	४४९५
नेत्ररुज् २.	४४१३२
नेम १. २. ३.	५४८६
” १. २. ३.	६५४७
नेमि १.	३४६६
” २.	३७१३५
” २.	४२८
” २.	६२२१
नेनिन् १.	३३३७
नेमीय १.	३३३७
नेरिन् १.	१२५२
नैकृत १. २. ३.	५४२२
नैकृतिक १. २. ३.	५४२२
नैगम २.	३८७२
” १.	७१३७
नैगमेय १.	६१५७
नैचिकी २.	३४३६
” २.	३४३६
नैपथ्य ३.	४३१३२
नैपाली २.	३२१७
नैयग्रोध १.	३३२२
नैर्ऋत १.	१२४०
नैर्ऋती २.	२११४
नैल ३.	३११८
नैषध ३.	३११६
नैषिक १.	३७२१
नैष्ठिक १.	३७२१

[पञ्चक

नौ २.	४२१५
” २.	८२१७
नौजीविन् १.	३९१४२
नौतार्थ १. २. ३.	४२२०
नौशिरस् ३.	४२१७
नौस १. २. ३.	३६१२७
न्यक्ष १. २. ३.	६४१९
न्यग्रोध १.	३३३२७
” १.	४४८२
न्यग्रोधी २.	३३११३
न्यङ्क १.	३४१५
” १.	६१३३
न्यच् १. २. ३.	५४८५
” १. २. ३.	५४९३
न्यर्बुद ३.	५१२८
न्यस्त १. २. ३.	५४१०४
न्यस्तक १. ३.	३८१२
न्याद १.	४३१०२
न्याय १.	३७४८
” १.	३८१५
न्यायगण १.	३३२९
न्याय्य १. २. ३.	५४१०३
न्यास १.	३८१२
न्युक् १. २. ३.	५४१३५
न्युज्ज १.	३३३७
” १. २. ३.	५४११
” १. २. ३.	५४१०
” १. २. ३.	६५४६
प	
पक्ति २.	६२२२
पक्तिका २.	३८४२
पक्ष ३.	३८१४३
” १. २. ३.	४३१९३
” १. २. ३.	४३१५
पक्षण १. ३.	३९३२
पञ्च १.	२११७९
” १.	२३१७९
” १.	६१३५
पञ्चक १.	४३२४

[पञ्चक]

वैजयन्तीकोषः

[पणव]

पञ्चक ३.	४३१४२	पचि २.	१२११८	पटकुटी २.	४३१२५
पञ्चचर १. २. ३.	८१५१३	” २.	२३११८२	पटच्चर १ व.	३११४१
पञ्चति २.	२११७०	पञ्ज १.	३१९११	” १.	३१९५७
” २.	७१२१३	पञ्चक ३.	३१७१०	” ३.	४३१२७
पञ्चद्वार ३.	४३१४२	पञ्चकृत्वः (-सू) ४.	८१८१६	पटच्चोर १.	३१९५७
पञ्चभाग १.	३१७८१	पञ्चकोल ३.	३१८१३	पटल ४.	४३१३७
पञ्चरचना २.	३१७१८६	पञ्चखार १. २. ३.		” १.	७१५५२
पञ्चशाला २.	४३१२४		८१९५४	पटली २. ३.	५१११६
पञ्चाङ्ग ३.	२११५५	पञ्चगूढ १.	४१११६	पटवासक १.	४३१५७
पञ्चान्त १.	३११७३	पञ्चचीरोद्धित ३.	३१६१५	पटह १. ३.	३१९१३४
पञ्चिका २.	८११३	पञ्चचूड १. २. ३.	३१६१२	” १.	३१९१३८
पञ्चिणी २.	२११५९	पञ्चजन १.	३१५११	पटी २.	८१९३७
पञ्चिन् १.	२३११	पञ्चजनीन १.	३१७१२३	पट्ट १.	३३११६५
पञ्चिपोत १.	२३१४	(पञ्चजनिनः)		” १. २. ३.	३१७१४७
पञ्चिवन्धन ३.	३१९४२	पञ्चख ३.	३१६१२०२	” ३.	३१८१२०
पञ्चिल १.	३१४१५९	पञ्चदशी २.	२११७३	” ३.	३१८१२३
पञ्चिशाला २.	४३१२१	पञ्चभद्र १.	३१७९३	” १. २. ३.	४४११४३
पञ्चमन् ३.	४२१४५	पञ्चम १.	३१९१३२	” १.	५१३२६
” ३.	४४१९५	” १. २. ३.	५११२०	” १. २. ३.	५१४५४
” ३.	६३११९	पञ्चलक्षण ३.	३१४३८	पटुच्छद १.	३३११६४
पङ्क १.	३१८२६	पञ्चलोह ३.	३१२१८	पटुञ्चिका २.	३१४१४९
” १.	६१५४८	पञ्चवक्त्र ३.	८१६१२	पटोलक १.	३३११६५
पङ्कक्रीडनक १.	३१४६	पञ्चवायु १. २. ३.		पटोली २.	३३११५९
पङ्कज ३.	४२१३७		३१६१२०३	पट्ट १.	३१७१५४
” ३.	८१९४०	पञ्चशाख १.	४१४७३	” १.	४१४१४०
पङ्करस १.	३१९४७	पञ्चष १. २. ३.	५११२६	” १.	६११३४
पङ्किल १. २. ३.		पञ्चसुगन्ध ३.	४३११५२	पट्टन ३.	४३१३
	३११४३	पञ्चहस्त १.	३११५८	” ३.	४३१३
पङ्क्रेह ३.	४२१३९	पञ्चाङ्गी २.	३१७२१३	पटवन्ध १.	३१५६२
पङ्क्ति २.	५११२४	पञ्चाङ्गुल १.	३३१६५	पट्टस १.	३१७१६४
” २.	५११२६	पञ्चाभृत ३.	४३१९१	पठि १.	३१६१३
” २.	५११३३	पञ्चाशत् ५११२६		पट्टीश १.	३१७८६
” २.	६१२२२	पञ्चास्य १.	३१४११	पण १.	३१८१६९
पङ्कु १. २. ३.	५१४१४	पञ्चिका २.	३१९५९	” १.	३१९१६०
पङ्कुल १.	३१७१०४	पञ्चेषु १.	१११२८	” १.	५११३८
पञ्चन ३.	३१९२७	पञ्चोषण ३.	३१८८१	” १.	५११३८
” ३.	५१२३२	पञ्चर ३.	२३१४९	” १.	५११३९
पञ्चम्पच १.	३३१८२	पञ्चिका २.	११२३६	” १.	५११४५
पञ्चम्पचा २.	३३१२१३	पट १.	३३१५७	” १.	६११३४
पञ्चा २.	५१२३२	” १. ३.	४३१११६	पणव १.	३१९१३४
” २.	८१९४	” १. २. ३.	८१९३७	” १.	७११५२

[पणिक]

पणिक ३.	३१६८८
„ १.	४३३३४
पणित १. २. ३.	५४१०६
पणितव्य १. २. ३.	३८६९
पणायित १. २. ३.	५४१०६
पण्ड १. २. ३.	३४५९
„ १.	४४३
पण्डा २.	३६१६४
„ २.	३६१६५
पण्डित १.	३६१३४
पण्य १. २. ३.	३८६९
पण्यभू २.	४३३५
पण्यदीथी २.	४३३५
पण्यस्त्री २.	४४२४
पण्याजीव १.	३८७२
पतग १.	२३१
पतङ्ग १.	२३१
„ १.	२३३४३
„ १.	४११४०
„ १.	७११४०
पतङ्गना २.	३८४९
पतङ्गी २.	२३३४८
पतञ्जलि १.	३६१५७
पतत् १.	२३३१
पतत्र ३.	२३३४९
„ ३.	३३३१७
„ ३.	७३३२२
पतत्रि १.	२३३१
पतत्रिन् १.	२३३१
पतद्ग्रह १.	४३३१६०
पतन ३.	३३३१६
„ ३.	३६११६
पतयालु १. २. ३.	५४३८
पताक १.	४४७९
पताका २.	३७१३३
„ २.	३७१९३
पताकिन् १. २. ३.	३७१४५

शब्दानुक्रमणिका

पताकिनी २.	३७५५
पति १.	४४३७
„ १.	५४५८
पतिवरा २.	४४७
पतिघ्नी २.	३६५३
पतित १. २. ३.	३७२१९
पतितोत्पन्ना २.	३६४९
पतिवर्त्नी २.	४४१४
पतिघ्नता २.	४४७
पतेर १.	४१३
पत्तन ३.	४३४
पत्ति २.	३७५७
„ १.	३७१३९
„ २.	४३१४९
पत्तिच्छेद १.	४३१४८
पत्तर १.	३३१५६
पत्नी २.	४४३५
पत्नीसन्नहन ३.	३६८९
पत्र १.	३३१६
„ १.	४३२०
„ १. २. ३.	८१३२
पत्रक ३.	३८१२८
„ ३.	४३१४९
पत्रकूट १.	३८१८४
पत्रणा २.	३७१८६
पत्रताली २.	३३२२४
पत्रपरशु १.	३५३५
पत्रपाश्या २.	४३१३६
पत्रफला २.	३७१६४
पत्रमध्यसिरा २.	३३३३
पत्ररथ १.	२३१
पत्ररेखा २.	४३१४९
पत्रल ३.	३८१४३
पत्रला २.	३३२२४
पत्रसारक १.	३८१२८
पत्राङ्गुलि २.	३८११५
पत्राङ्गुलि २.	४३१४९
पत्रिणी २.	४४२८
पत्रिन् १.	२३१
„ १.	३७१७९
„ १.	४१३२

[पञ्चास्त्र]

पञ्ची २.	८१३२
पञ्चोर्ण १.	३३३६८
„ १.	४३११८
पथिकृत् १.	१२२५
पथिन् १.	३१४९
पथ्या २.	३३१७८
पद् १.	४४५६
पद् ३.	२११७
„ ३.	४४५६
„ ३.	६३१८
पदपर्णिका २.	३३१३६
पदमञ्जना २.	३६३१
पदवल्मीक १.	४४१३३
पदवी २.	३६४९
पदाजि १.	३७१३९
„ १.	७१५४
पदाति १.	३७१३९
पदातिक १.	३७१३९
पदिक १.	३१५१
पद्म १.	३७१४०
पद्धति २.	५१२४
„ २.	७२१५
पद्म १.	१२६०
„ १. ३.	३३१९५
„ ३.	३७८२
„ १. ३.	४२३६
„ ३.	५१३२
„ ३.	५३१२
„ १. २. ३.	६५४८
„ १.	८६१२
पद्मकर्कटी २.	४२४६
पद्मासनिन् १.	३६२११
पद्मचारिणी २.	३८८९
पद्मनाभ १.	१११५
पद्मपत्र ३.	३८८८
पद्मबन्धु १.	२१११
„ १.	२१५६
पद्मा २.	३३१००
„ २.	३८८१
„ २.	३८८९
पद्माक्ष ३.	४२४६

[पञ्चालया]

वैजयन्तीकोषः

[परिचित]

पञ्चालया २.	१२३६	परजात १	३१२	पराचल १.	३२३
पञ्चात्मन ३.	१११७	” १. १. ३.	५४४९	पराचीन १. २. ३.	५४५१
” ३.	३६२०५	परतन्त्रक १. २. ३.	५४२८	पराजक १.	३१५६
पद्मासनिन् १. २. ३.	३६२३४	परन्तप १. २. ३.	५३६९	पराजित १. २. ३.	३१७२१९
पद्मिन् १.	४२४३	परपिण्डाद १. २. ३.	५४४९	पराञ्जन १.	५३४४
पद्मोत्तर ३.	३८९१	परभाग १.	५२३	पराधीन १. २. ३.	५४२८
पद्य १. २. ३.	३१४७	परभृत १.	२३१६	परान्न १. २. ३.	५४४९
” १.	३९११	परमन्यु १.	१२५	पराभव १.	८१२६
पद्यमात्रिका २.	२४४२	परमम् ४.	८८१७	पराभूत १. २. ३.	३१७२१९
पद्या २.	३१४९	परमात्मन् १.	३६१६१	परायण ३.	३६१४५
पनस १.	३३३७४	परमान्न ३.	४३३७७	” ३.	८५१३
पनायित १. २. ३.	५४१०६	परमेश्वर १.	११४१	परारि ४.	८८१०
पनित १. २. ३.	५४१०६	परमेष्ठिन् १.	१११८	परारिका २.	३३२०७
पन्न १. २. ३.	५४१०२	परमेष्ठिनी १.	११६०	परार्थोक्ति २.	३१३७
” १. २. ३.	५४११५	परम्पर १.	३४१५	परार्थ १. २. ३.	५४६४
पन्नग १.	४१६	” १.	४४४६	परार्थ १. २. ३.	५४१२९
पन्नगारि १.	११३८	” १.	४४४६	परालिनी २.	४३४४
पपा २.	४४१३६	परम्परा २.	५२३९	परावसु ३.	३६१४५
पय १.	३९१२४	परम्पराक २.	३६१४४	पराविद्ध १.	१२५७
पयस् ३.	३८१४५	परम्परावाहन ३.	३७१३७	” १.	३५१८
” ३.	४२२	परवत् १. २. ३.	५४२८	” १.	४३३६
” ३.	६३२०	परशु १.	३८१३१	पराशक १.	३३२३०
पयस्या २.	३६१९८	” १.	३९१३५	पराशर १.	३६१५५
पयस्विनी २.	४२२२	परशुभृत् १.	११५४	परास ३.	३२३१
पयोगर्म १.	२२२	परश्वः (-स्) ४.	८८१९	परासन ३.	३७२१४
पयोण्ड १.	३३३७४	परश्वध १.	३९१३५	परासु १. २. ३.	३७२२०
पयोधर १.	८१२७	परस्पर १. २. ३.	५४१२३	परास्कन्दिन् १.	३९१५६
पयोवहा २.	४२२०	परस्वत् १.	३४११	परि ४.	८७२५
पयोव्रत ३.	३६१४७	परा २.	३३१३४	परिकर १.	८१३३
पर १.	३६१६१	” २.	३३२२१	परिकर्मन् ३.	४३११२
” १.	३७४१	” ४.	८७२६	परिकर्मिन् १.	३९३
” ३.	३८१०५	पराक १.	३६१४४	परिकर्ष १.	३७७२
” ३.	५१२९	पराकार १.	५२२१	परिकल्पना २.	३६१९६
” १. २. ३.	५४१४२	पराक्रम १.	३७२०९	परिक्रम १.	५२२८
” १. २. ३.	६५४९	” १.	८१५०	परिक्रूरा २.	३३१०५
परकुल १.	४१५४	पराग १.	७१४२	परिक्रोणा २.	३३२२१
परच्छन्द १. २. ३.	५४२७	पराच् ४.	५४१९१	परिचित १. २. ३.	५४१०८

परिचेष १.	८११३०	परिपेलव ३.	३३३२०१	परिव्याण ३.	३३३१०५
परिखा २.	४३११३	परिप्लव १.	२३३१२	परिव्याध १.	३३३३०
परिगत १. २. ३.	८१४७	" १. २. ३.	५४४७६	" १.	३३३७२
परिग्रह १.	२११३०	परिप्लाविन् १.	२३३६	परिव्राज् १.	३३३१६०
" १.	४४४५१	परिर्वह १.	४३३१५८	परिशाय १.	४३३१६८
" १.	८११३०	" १.	८११२८	परिशुष्क ३.	४३३८८
परिघ १.	३३७१७१	परिवृढ १. २. ३.	५४४५८	परिषद् २.	३८१३३
" १.	७११४१	परिभव १.	३३३१७१	परिष्कार १.	४३३१३३
परिघातन १.	३३७१७१	परिभाषण ३.	८३३१५	परिष्वङ्ग १.	४३३१६९
परिचय १.	३३७१९५	परिभोक्तृ १. २. ३.	५४४२५	परिसर १.	४३३१२
" १.	५२३३१	परिमण्डल १.	३३७१९९	परिसर्प १.	५२३२८
परिचर १. २. ३.	३३७१४१	" १. २. ३.	५४४८२	परिसर्पा २.	५२३२८
परिचर्या २.	३३६३८	परिमल १.	५३३५२	परिस्कन्द १.	३३३१२
परिचारक २.	३३९१२	" १.	८११२८	परिस्कन्ध ३.	४३३१५८
परिचारिका २.	३३७३६	परिमोषिन् १.	३३९५५	परिस्तोम ३.	४३३१६६
परिच्छद् १.	३३५८	परियष्ट १.	३३६७४	परिस्पन्द १.	४४४५१
" १.	४३३१५८	परिरम्भ १.	४३३१९४	परिस्नावी २.	४४४३३१
परिजन १.	४४४५१	परिवत्सर १.	२११९०	परिस्त्रुत २.	३३३४५
परिज्मन् १.	२११२४	परिवर्जन ३.	३३७११४	परिहार १.	५२३१७
परिणत १.	३३७७८	परिवर्त १.	३३८७१	परीचक १. २. ३.	५४४३०
परिणय १.	३३६५४	" १.	८११२९	परीच्छा १.	३३६१२२
परिणाम १.	५२३२४	परिवसथ १.	४३३२	परीतत् १. ३.	४४४१३३
परिणाय १.	३३९६१	परिवसित १. २. ३.	५४४१०५	" १. ३.	८१३३१
परिणाह १.	५२३५	परिवाच् २.	२३३३५	परीचाप १.	८११२९
परितः (-स्) ४.	८१७३२	परिवाद १.	२३३३२	परीवार १.	३३७१६८
" ४.	८८३	" १.	३३९१२१	परीवाह १.	४३३३१
परिताप १.	४४४१२२	परिवादिनी २.	३३९११७	परीष्ट १.	३३६७४
परित्राण ३.	४३३१०५	परिवापण ३.	३३६४	परीष्टि २.	७२३१५
परित्राणी २.	३३३१०९	परिवार १.	४४४५१	परीसार १.	५२३२८
परिदेवन ३.	२३३२९	" १.	८११२८	परीहास १.	३३९८८
परिधान ३.	४३३१२१	परिवारक १.	४३३६८	परु १.	३३३२९
परिधि १.	३३३१९	परिवित्त १.	३३६४३	परुका २.	३३३१०३
" १.	७११४१	परिवित्ति १.	३३६४३	परुत् ४.	८८११०
परिधिस्थ १. २. ३.	३३७१४१	परिवी २.	३३९६०	परुल १.	३३७९१
परिपण ३.	३८१००	परिवृक्ति २.	३३७३१	परुष १. २. ३.	२३३२१
परिपत् १.	३८१२६	परिवेत्तृ १.	३३१४२	" १.	३३३२२२
परिपन्न ३.	४३३१०३	परिवेष १.	३३१५९	" १.	५३३३
परिपन्थिन् १.	३३७४२	परिवेषक १.	२३३३१	" १. २. ३.	७३३२०
परिपाटी २.	३३६११४	परिवेषण ३.	४३३१००	परुस् १.	३३३११
				परेत १.	३३२३८

परेत]

परेत १. २. ३.	३।५।५२
परेतराज १.	१।२।३४
परेद्यवि ४.	८।८।९
परेष्टुका २.	३।५।४९
परैधित १.	३।९।२
" १. २. ३.	५।४।४९
परोक्ष १. २. ३.	५।४।१३३
परोक्षण्ट १.	३।७।१९८
परोक्षणी २.	२।३।४४
पर्कट १.	२।३।३१
" ३.	३।३।२१७
पर्कटिन् १.	३।३।२८
पर्जनी २.	३।३।२१२
पर्जन्य १.	७।१।४२
पर्ण ३.	३।३।१७
" १.	३।३।२९
" १.	८।३।१२
पर्णश १. २. ३.	३।३।१३१
पर्णशवर १.	३।५।४७
पर्णशाला २.	४।३।२६
पर्णादा २.	३।४।६३
पर्णास १.	३।३।११९
पर्णिका २.	३।३।१२४
पर्दन ३.	२।४।८
पर्पट १.	२।४।१२८
पर्पटी २.	३।२।४१
" २.	३।३।२१३
पर्पण १.	३।३।१०७
पर्परा २.	३।३।२१३
पर्परी २.	४।४।९९
पर्परीक १.	८।१।२५
पर्यङ्क १.	३।६।२१३
" १.	४।३।१६५
" १.	७।१।५२
पर्यटन ३.	५।२।११
पर्यनुयोग १.	२।४।३७
पर्यन्तपर्वत १	३।१।७
पर्यन्तम् २.	४।३।१२
पर्यव १.	३।६।११४

वजयन्तीकोषः

पर्यवस्था २.	५।२।३०
पर्यवस्थात् १.	३।७।४२
पर्यस्ति २.	३।६।१५०
पर्याण ३.	३।७।११४
पर्याधात् १.	३।६।७४
पर्यास ३.	४।३।१०५
" १. २. ३.	७।५।५३
पर्यासिन् ४.	४।३।१०४
पर्याय १.	३।६।११३
" १.	७।१।५५
पर्याहार १.	३।७।४५
पर्याहित १.	३।६।७४
पर्युदञ्चन ३.	३।८।४
पर्येषणा २.	३।६।१२१
पर्वत १.	३।२।१
पर्वन् ३.	२।१।७३
" ३.	३।३।११
" ३.	३।६।६२
" ३.	६।३।१९
" १. ३.	८।९।३१
पर्यु १. ३.	४।४।११५
पल ३.	४।४।१०६
" ३.	५।१।४५
" ३.	५।१।४६
" ३.	५।१।५१
पलगण्ड १.	३।९।१४
पलगण्डक १.	३।५।४८
पलङ्कष १.	३।८।११२
पलङ्कषा २.	३।३।१४१
पलतेजस् ३.	४।४।१०७
पल्ल १.	३।३।६९
" ३.	४।४।१०६
" ३.	७।३।२१
पल्लव ३.	५।३।१०
पल्लवीनक १.	५।३।५०
पलाण्डु १.	३।३।२०५
" १.	३।३।२०७
पलाण्डुक १.	३।३।१५३
पलायन ३.	३।७।२१०
पलाळ १. ३.	३।८।६४

[पवित्र

पलाश ३.	३।३।१६
" १.	३।३।२९
" १.	३।३।२०३
पलाशिका २.	३।३।१९५
पलाशिन् १.	७।१।५४
पलिकिनी २.	३।४।६३
पलिकिनी २.	३।४।४६
" २.	४।४।२१
पलित ३.	३।८।७९
" ३.	५।४।१४४
" १. ३.	७।५।५२
पलिन १.	३।५।१९
पलिपादक ३.	३।७।७५
पल्लव १.	५।३।४२
पलोद्भव ३.	४।४।१०७
पल्यङ्क १.	४।३।१६५
पल्ययन ३.	३।७।११४
" १.	४।४।४६
पल्ल १.	३।५।१४
पल्लव १. ३.	३।३।१७
" १.	४।४।३९
" १. ३.	७।५।५८
पल्लवाङ्कुर १.	३।३।१५
पल्ली २.	४।१।३०
" २.	४।३।२७
" २.	६।२।२३
पव १.	३।८।४६
(पल)	
" १.	५।२।३१
पवन १.	१।२।४९
" १.	१।२।५३
" ३.	४।३।६६
" ३.	५।२।३१
पवमान १.	१।२।२४
" १.	१।२।४८
" १.	८।१।२७
पवि १.	१।२।१३
" १.	६।१।३३
पवित्र ३.	३।२।२२
" ३.	३।६।२०
" १.	३।८।५२

पवित्र ३.	४२१४०	पाकनासन १.	१२१३	पाण्ड्य १ ब.	२११३३
„ १. २. ३.	५४४५५	पाकशुक्ला २.	३२११३	पाण्डु १.	३३१२२२
„ १. २. ३.	७५५५८	पाकु २.	८११३	„ १.	५३११२
पशु १.	३१४३०	पाक्य ३.	३१८१२२	पाण्डुक १.	३५१२७
„ १.	३१४६२	„ ३.	३१८१२४	पाण्डुकम्बलिन् १. २. ३.	३७१२२९
„ १.	३१४७२	पागल १.	३५१५५	पाण्डुभूम १. २. ३.	३११४५
„ १.	३१६१८४	पाचन १.	५३१२६	पाण्डुल १.	५३११४
„ १.	३१६११२	पाज १.	४३१७६	षाण्डुचर्क १.	४४१३३७
„ ४.	८८१२१	पाञ्चजन्य १.	११११७	पाण्डुसोपाक १.	३५१४३
पशुगोयुग १.	५१११८	पाञ्चमिक १.	५११५९	„ १.	३५११०६
पशुपति १.	१११३८	पाञ्चालिका २	३१११४	पाण्ड्य १ ब.	३११३३
„ १.	८११२६	पाट ४.	८८१२	पात् २.	४४१५४
पशुबन्ध १.	३१६१८४	पाटल १.	५३११७	पातक ३.	३६११६८
पशुसंस्कार १.	३१६१९३	„ १. २. ३.	७५१५६	पातन ३.	३७११७४
पश्चात्ताप १.	३१६१८५	पाटला १. २. ३.	३३१२३	पाताल ३.	४१११
पश्चात्सुन्दर १.	३३११५७	पाटलि १. २.	३३१९०	„ ३.	७४१२२
पश्चिम १. २. ३.	५४४७७	पाटलिङ्गिका २.	३१८४९	„ ३.	८३११८
पश्चिमाङ्ग ३.	४४४६९	पाटली २.	३६१६२	पातालमूलिक १. २. ३.	३६१२२९
पश्यतोहर १.	३१९५७	पाटव ३.	४४११४२	पाताली २.	७२११७
पद्मौही २.	३१४४७	पादूर १.	२११७०	पातिक १.	३७११४०
पांसु १.	३१८२५	पाठक १.	३३१२३	पातुक १. २. ३.	५४१३८
पांसुचन्दन १.	१११३८	पाठा २.	३३११३१	पात्म १.	२११८८
पांसुज ३.	३१८१२३	पाठीन १.	४११४२	पात्र ३.	२३१२६
पांसुलवण ३.	३१८१२५	पाणि १.	४४१७३	„ ३.	३६११४६
पांसुला २.	४४११०	„ १.	५११४९	„ ३.	३११६८
पाक १.	३३१८३	„ १.	८६१९	„ ३.	४२१३२
„ १.	३१८४५	पाणिक १.	५११३८	„ ३.	५११५५
„ ३.	५२१४१	पाणिगृहीती २.	४४१३५	„ ३.	६३१२१
„ १.	६११३३	पाणिग्रह १.	३६१५५	„ १. २. ३.	८११३८
„ १.	८१११४	पाणिघ १.	३७११	पाथस् ३.	४२१२१
पाककृष्ण १.	३३१८३	पाणिनि १.	३६११५४	„ ३.	६३१२०
पाककृष्णफल १.	३३१८३	पाणिन्युपज्ञ ३.	३११२१	पाथि १.	२१११३
पाकपुटी २.	४३१२३	पाणिपात्र १. २. ३.	३६१३२	पाथिस ३.	६३१२१
पाकफल १.	३३१८३	पाणिमुक्त ३.	३७११५५	पाथेय ३.	३११७
पाकफलकृष्ण १.	३३१८३	पाणिमूल ३.	४४१७३	पाथोचक्रा २.	३३१२१९
पाकमण्डल ३.	३११२७	पाणिरुह १.	८५१७६	पाद १.	२१११६
पाकयज्ञ १.	३६१८३	पाणिवाद १.	३११७१	„ १.	३२१७
पाकयज्ञिक १.	१२१२७	पाणिहा १.	३५१२०	„ १.	४४१५६
पाकल १.	३७१९१	पाण्डर १.	५३११०		
„ ३.	३१८१९९	„ १.	५३११२		
पाकवर्तन ३.	५२१४१				

पाद १.	५२१७	पाप्मन् १.	३१६१७८	पारि २.	६१२२४
पाददण्ड १.	३१७१८३	पाप्मन् १.	४१४१२३	पारिकर्मिक १. २. ३.	
पादप १.	७११४५	पाप्मन् १. २. ३.			३१७१९
पादपच्छाय १. २. ३.			४१४१४५	पारिकाङ्क्षिक १. २. ३.	
	८११३४	पाप्मन् १.	३१५५०		३१६१२६
पादपाश १.	३१७११२	" १. २. ३.	५१४२२	पारिजातक १.	१३११४
पादपुटी २.	३१७११५	" १. २. ३.	७१४२०	" १.	३३३४४
पादप्रसार १.	३१६२१७	पाप्मन् २.	४१४१२३	पारितथ्या २.	४३११३६
पादफली २.	३१७११५	पाप्मन् १.	३१२१४	पारिन् १.	४११५४
पादरक्षणी २.	३१७१५५	पाप्मन् ३.	३१८१०९	पारिपन्थिक १.	३१९५६
पादरक्षिणी २.	४३११६२	" ३.	४३३७७	पारिपार्श्विक १.	३१९६७
पादवाहिक १.	४१११८	पाप्मन् १.	४११६०	पारिप्लव १. २. ३.	५१४७९
पादस्फोट १.	४१११२२	पाप्मन् १.	५११३४	पारिभद्र १.	३३३५४
(पादः, स्फोटः)		पाप्मन् १.	४२१३२	" १.	३१६७१
पादात १.	३१७१३९	पाप्मन् १.	३१२४४	पारिभाष्य ३.	३१८९९
" ३.	५११११	पाप्मन् १. २.	३११२८	पारियाणिक १. २. ३.	
पादायुध १.	२३११४	पाप्मन् १.	३१५२२		३१७१२८
पादावर्त १.	४२१२१	" १.	३१५८४	पारियात्रक १.	३१२३३
पादिक ३.	३१७१४०	पाप्मन् १.	३१६१६०	पारिषद १.	१११५१
" १.	५११३८	पाप्मन् १.	३१२३४	परिहार्य ३.	४१४१४४
" ३.	५११५२	" १.	३१५४	परिहास्य १.	५१३५०
पादिका २.	४३३३९	" १.	३१५६८	पारी २.	४३१५९
(पालिका)		" १.	३१५७३	पारीन्द्र १.	३१४११
पादिकाशीर्ष ३.	४३३४०	" १.	३१५७६	पारे ४.	८१८२१
(पालिकाशीर्ष)		" १.	८११३२	पार्थिव १.	३१७११
पादुका २.	३१७५०	पारम्भिक १. २. ३.		पार्थिवेन्द्र १.	१११२२
" २.	४३३१६२		३१७१४४	पार्वण ३.	३१६८३
पादू २.	६१२२४	पारसीक १.	३१७१९४	पार्वत १.	३३३७५
पादूकृत् १.	३१९१४३	" १.	३१७१९४	पार्वती २.	१११५८
पादोपवेश १.	३१६२१२	पारसीककुल ३.	३१११९	" २.	३२२१६
पान १.	३१६२०४	पारायण १.	३१६१४५	पार्श्व १. ३.	४१४६९
" ३.	४३११०	" १.	८३१९	" ३.	५१११४
पानगोष्ठिका २.	३१९५०	पारावत १.	२३११४	" १. ३.	६१५५१
पानीय ३.	४३२१२	" १.	३१५१०	पार्श्वस्थ १.	३१९६९
पानीयशालिकार. ४३३२३		" १. २. ३.		पार्श्वोदरप्रिय १.	४११४६
पानीयसम्भव ३.			८१५१५	पार्णि १.	३१७७९
	३१८१२२	पारावतपदी २.	३३३१४०	" १. २.	६१५४०
पाप १.	३३३१७७	पारावर १.	३१५१९४	पार्णिग्राह १.	३१७४०
" १.	३३३१६८	पारावार १.	४२१२२	" १. २. ३.	३१७१४१
" १. २. ३.	६१५५०	पाराशरिन् १.	३३३१६०	पालघ्न १.	३३३२३४
पापचेली २.	३३३१३०	पाराशर्य १.	१११३२	(बालघ्न)	

[पालन]

पालन १.	४११४६
पालाश १.	५३१२२
पालि १.	३६१५०
” २.	३८१२६
” २.	४४१९३
” २.	६२१२२
पालिकाष्ठ ३.	४३११०
पाली २.	३६१४९
” २.	३९१२६
पालुखञ्जन १.	३५११०
पालुपी २.	४४१३५
पालुक १.	३९१५
पाल्लवा २.	८११६
पावक १.	१२१५
” १.	३३१८६
” १.	३६१९२
पावन १.	३८१११
पावनक १.	३८१३०
पावनी २.	३६१५
पाश ३.	३९१३०
” १.	६११३७
पाशक १.	३९१६०
पाशबन्धन २.	३४१६१
(पादबन्धन)	
पाशिन् १.	१२१४५
पाशुपत १.	३३१९४
पाशुपाख्य ३.	३७१४
पाशुबन्धिक १.	१२१२५
पाश्चात्य १ ब.	३११३
” १. २. ३.	५४१७६
पाश्या २.	५१११४
पाषण्ड १.	३६१२३८
” १.	३६१२३९
पाषाण १.	३२१८
पाषाणदारक १.	३९१२२
पाषाणपुष्प १.	३८१९६
पासि १.	२१११४
पिक १.	२३१२६
पिङ्ग १.	४१११४
” १.	५३११८
पिङ्गल ३.	३३१२०२

शब्दानुक्रमिका

पिङ्गल १.	४११२७
” १.	५३११८
पिङ्गलकेशाक्षी २.	३६१५२
पिङ्गला १.	२११९
” २.	२३१२१
पिङ्गाण १.	५३११३
पिचण्ड १.	७११५७
पिचण्डिल १. २. ३.	५४१७
पिचिण्ड १.	४३१८९
पिचिण्डिका २.	३९१५८
पिचु १.	३९१९
” १.	५११४९
पिचुमन्द १.	३३१७५
पिचुल १.	३३१५०
” १.	३३१७६
पिचूल ३.	५११४७
पिच्छट ३.	३२१३०
पिच्छनद्ध १.	३३१२०६
पिच्छन्दका २.	४३१३१
पिच्छा २.	४३१८०
पिच्छित १. २. ३.	५४१८३
पिच्छिल १. २. ३.	५३१४
पिच्छिला २.	३३१९२
पिच्छीला २.	३९११२६
पिच्छ ३.	२३१३९
” ३.	६३१२१
पिञ्ज १.	५३११३
पिञ्जा २.	३३१२११
पिञ्जपू १.	५३१२४
पिट १.	४३१६४
पिटक १.	४३१६३
” १.	४३१६४
” १. २. ३.	४४१२३
” १. २. ३.	८११३७
पिटका २.	४४१२३
” २.	८११३७
पिठर १.	४३१५५

[पितृव्य]

पिण्ड १.	३२११५
” १.	४३११०१
” १.	६११३१
पिण्डक १.	१३१४
” १.	३८१११०
” १.	४३१४५
पिण्डफला २.	३३१६७
पिण्डा २.	३३१२११
पिण्डारक १.	३३१७८
” १.	३३१४
पिण्डि १.	४३१७०
” १.	६११३४
पिण्डिका २.	४४१५८
” २.	७२११४
पिण्डित १. २. ३.	७४११९
पिण्डिल १. २. ३.	७४११७
पिण्डीक १.	३३१७८
पिण्डीतक १.	३३१४९
पिण्डीशूर १. २. ३.	५४१७०
पिण्डूष १.	४४१९२
पिण्या २.	३३११४०
पिण्याक १.	३९१२७
” १.	७११४६
पितामह १.	४४१२९
” १.	८११२८
पितृ १.	४४१२९
” १.	४४१४७
” १ ब.	४४१४९
पितृकार्य ३.	३६१६६
पितृज्येष्ठ १.	४४१३२
पितृदान ३.	३६१६४
पितृनख १.	३११५९
पितृपति १.	१२१३३
पितृपितृ १.	४४१२९
पितृप्रपा २.	३६१६७
पितृप्रसू २.	२११६९
पितृभोजन ३.	३६१६४
पितृयाण १.	२११४६
पितृवन ३.	३११४८
पितृव्य १.	४४१३१

पितृष्वस्त्रीय १.	४१४४२	पीठर ३.	३३३२००	पीथ ३.	३१८१३८
पित्त ३.	४१४१२१	पीठीव ३.	४१४१६०	" ३.	३१८१४५
पित्तल ३.	३१२१२६	पीडन ३.	३१७२०७	" ३.	६३३२२
पिण्या २.	२११७२	पीडा २.	३१६१८७	पीन १. २. ३.	५४१६
पिस्त १.	२३३१	" २.	६३३२५	पीनकोशी २.	३१८१६५
पिधान ३.	२११६४	पीडित १. २. ३.	५४१११५	पीनस १.	४१११४
" ३.	४३३५५	पीत १.	३३२११४	" १.	४१४१२१
पिनद्ध १. २. ३.	३१७१४२	" १.	५३३११	पीनस्कन्ध १.	३१४५
पिनाक १.	१११५०	पीतकङ्कु २	३१८५६	पीनस्तनी २.	३१४४९
" १. ३.	७१५५७	पीतघोषा २.	३३३१६२	पीनाह १.	४३२८
पिनाकिन् १.	१११३९	पीतचन्दन ३.	३१८११३	पीनोष्णी २.	३१४४९
पिपतिषत् १.	२३३१	पीततण्डुला २.	३१८५५	पीयु १.	६१३२
पिपासा २.	३१६१८१	पीतदारु ३.	३३३७१	पीयूष ३.	३१८१४६
पिपासित १. २. ३.	५४३३७	" १.	३३३१२२	" ३.	७३३२३
पिपासु १. २. ३.	५४३३७	" ३.	३१८११४	पीलु १.	३३३४५
पिपीलिका २.	४११३६	पीतधातु १.	३३२११	" १.	६१३२२
पिप्पल ३.	३३३२०	पीतधूमल १.	५३३२०	पीलुक १.	२३३४
" १.	३३३२७	पीतन ३.	३३२१४	पीलुकुण १.	८१११४
" ३.	४१४६८	" १.	३३३३१	पीलुनी २.	३३३११४
पिप्पलक १.	३१९१२	" ३.	३१८११७	पीलुपर्णिका २.	३३३११४
पिप्पली २.	३१७७३	पीतपुष्प १.	३३३१७०	पीलुपर्णी २.	३३३१४७
" "	३१८७६	पीतमुण्ड १.	२३३१९	पीवन् १. २. ३.	५४१६
पिप्पलीमूल ३.	३१८९१	पीतरक्त १.	५३३१७	पीवर १.	३३३३९
पिप्पिका २.	२३३२४	पीतरसा १.	३३३१३९	" १.	५४१६
पिप्पु १.	४१४९७	पीतल ३.	५३३११	पीवरी २	३३३१४२
पिलाट १.	३१७७३	पीतलिका २.	३१७७३	पुञ्जली २.	४१४९
पिल्ल १.	६१४५	पीतलोह ३.	३३३२५	पुंस् १.	४१४२
पिशाङ्ग १.	५३३१८	पीतलोहित १.	५३३२०	" १.	८११६१
पिशाच १.	१३३४	पीतश्यामल १.	५३३२०	पुंसवन ३.	३३३३
" १.	७११५७	पीतसागर १.	३३३१५१	" ३.	३१८१४५
पिशित ३.	४१४१०७	पीतशाल १.	३३३३९	पुंहल १.	४१४१२५
पिथुन १. २. ३.	५४३२५	पीतसितासित १.	५३३१२	पुङ्ख १.	३१७१८५
पिष्ट १.	५११५५	पीतहरित १.	५३३२१	" १.	६१३३३
पिष्टक १.	४३३७२	पीता २.	३३३२११	पुङ्गर्भः १.	४१४३९
पिष्टपचन ३.	४३३५७	पीताम्बर ३.	१११११	पुङ्गव १.	७११५७
पिष्टपिण्डका २.	४३३७२	पीताम्लान १.	३३३१८८	पुङ्गाह १.	३१७१००
पिष्टात १.	४३३१५७	पीति १.	३१७९१	पुच्छ १. ३.	३१४७४
पीठ ३.	४१४१६४	" १. २.	६१५५१	पुच्छभाग १.	३१७८१
पीठबन्धन १.	४१४८०	पीतु १.	२३३३	पुञ्ज १.	५१३३
पीठमर्द १.	३१९७०	पीथ १.	१३३१९	पुञ्जिका २.	२३३७
				पुञ्जील १.	३३३३३

पुट २.	३५२८	पुनरुद्धा २.	३६१४५	पुरीप ३.	४१११८
" १. २. ३.	३९१३३	पुनर्नव १.	४११४७	पुरु १. २. ३.	५११८५
" १.	४३११	पुनर्नवा २.	३३११४६	पुरुष १.	१११८
" १.	४३१६४	पुनर्भव १.	४११४७	" १.	४११२
" १. २. ३.	८९१३७	पुनर्भू २.	३६१४५	" १.	७११४६
पुटकिनी २.	४२१४४	पुनर्भूज १.	४११४५	पुरुषव्याघ्र १.	२३१३०
पुटभेद १.	४२१३०	पुनर्भुवन् १.	२११२५	पुरुषाव १.	१२१४१
पुटभेदन ३.	४३१३	पुनर्वसु १.	२११३९	पुरुषोत्तम १.	११११२
पुटानिल १.	१२१५३	" १.	३६१५८	पुरुह १. २. ३.	५११८५
पुटी २.	३९१३३	पुज्जाग १.	३३१७०	प्ररुद्ध १.	१२१२
" २.	८९१३७	पुष्पिका २.	४११६३	पुरोग १. २. ३.	३११४५
पुण्ड्र १.	६११३२	पुर् २.	३६१६३	पुरोगम १. २. ३.	३११४६
पुण्ड्रक १.	५३११०	" २.	४३११	पुरोगामिन् १.	३११७०
पुण्डरीक १.	२११८	" २.	८२११६	" १. २. ३.	३११४६
" ३.	३३१२३	पुर १.	३३१५४	पुरोद्देश १.	३६१९९
" १.	४१११५	" ३.	३३१२३४	पुरोधस् १.	३११२४
" १.	४१११९	" १.	३५१२७	पुरोनुवाक्या २.	३६११२
" ३.	४११२३	" ३. २.	४३११	पुरोभागिन् १. २. ३.	५११३४
" ३.	४२१४०	पुरः(-स्) ४.	८८१११	पुरोवचस् ३.	२११४१
" १.	८५११६	पुरक्षक १ व.	३११३०	पुरोवात १.	१२१५४
पुण्डरीकाक्ष १.	११११०	पुरतः(-स्) ४.	८८१११	पुरोहित १.	३११२४
पुण्ड्र १ व.	३११३०	पुरद्वार ३.	४३११५	पुरोहिन् १.	३११३४
" १.	३३१२२६	पुरन्दर १.	१२१२	पुलक १.	३२१४१
पुण्ड्रलक्षण २.	३११३०	पुरन्ध्री २.	४११२१	" १.	३११३३
पुण्ड्रा २.	३५१४३	पुरमद १.	३८११०८	" १.	७११४७
पुण्य ३.	३६११६८	पुररक्षिन् १.	३१११८	पुलकिन् १.	३३१६०
" १. २. ३.	६५१५०	पुरस्कृत १. २. ३.	८११९	पुलाक १.	७११४७
पुण्यगान्धिक ३.	४२१४०	पुरस्तात् ४.	८११३३	पुलाकिन् १.	३३१५
पुण्यजन १.	८११२६	पुरस्सर १. २. ३.	३११४५	पुलिन ३.	४२१३३
पुण्यजनेश्वर	१२१५८	पुरा ४.	८११२३	पुलिन्द १.	३५१४७
पुण्याह ३.	२११६७	पुराज १.	१२१८	" १.	३५१४७
" ३.	८९१२२	पुराण ३.	३११३८	" १.	३५१८३
पुत्तिका २.	२३१४८	" ३.	३३१२९	पुलिन्दक १.	४२११६
पुत्र १.	४११३९	" १. २. ३.	५११८७	पुलोमजा २.	१२१११
" १.	४११४८	पुराणान्त १.	१२१३५	पुलोमशत्रु १.	१२१३
" १.	८९१३३	पुरातन १. २. ३.	५११८७	पुत्कस १.	३५१४८
पुत्रजीव १.	३३१७९	पुरावृत्त ३.	२११३८	" १.	३५१८२
पुत्रल १.	८११४३	पुरी २.	४२१७	" १.	३५१८५
पुनःपुनः (र्) ४.	८८१११	" २.	४३११	" १.	३५१८८
पुनर् ४.	८११२४	पुरीष ३.	३८१२४		

पुष्कस १.	३१५८९	पुष्पाभिकीर्णक १.	४१११६	पूरक १.	३१५६४
" १.	३१५९१	पुष्पिका २.	३१५१२७	पूरणा २.	३३११४५
पुष १.	४१४६१	पुष्पित १. २. ३.	३३३८	पूरणी २.	३३३९०
पुषित १. २. ३.	५४१११४	पुष्य १.	२११३९	" २.	३३३१४७
पुष्कर १.	३१८१८८	" १.	२११९१	पूरित १. २. ३.	५४१८६
" ३.	७३३२४	पुष्यफल १.	३३३१७०	पूरी २.	३३३१४५
पुष्करसार १.	४१११६	पुष्यरथ १.	३३७१२६	" २.	३१८१२५
पुष्कराह्वय १.	२३३३३	पुष्यल १.	३३७८५	पूरुष १.	४१४३
पुष्करिणी २.	४२१५	पुस्त ३.	३१५१६	पूर्ण ३.	३३७१९१
पुष्कल १.	३३६१५	पुस्तक ३.	४३१०९	" १. २. ३.	५४१८६
" ३.	३३६१६	पू २.	३३६१६३	" १. २. ३.	५४१८६
" १.	४३३१२	पूरा १.	३३३२१७	पूर्णकलश १. ३.	३३६१८
" १. २. ३.	७४११९	" १.	५१११	पूर्णकुम्भ १.	४३३६१
पुष्ट १. २. ३.	५४१११४	पूगतिथि १. २. ३.	५१११९	पूर्णकूट १.	२११३२
पुष्टि २.	११११६	पूरापट्ट १.	३३३२२२	पूर्णकूटक १.	२११३२
पुष्टिवर्धन १.	२३३२८	पूरापुष्पिका २.	३३६५९	पूर्णपात्र ३.	३३६६१
पुष्प १.	३३३१८	पूरावपनी २.	४३३१०८	पूर्णपात्रक ३.	३३६१७
" ३.	४१४१६	पूजा २.	३३६३९	पूर्णमासी २.	२११७२
" ३.	८१९१५	पूजित १. २. ३.	५४११३	पूर्णा २.	२११७२
पुष्पक १. ३.	३१५५४	पूज्य १. २. ३.	६१५५१	पूर्णानिक ३.	३३६६१
" १.	४१११८	पूज्यपाद १. २. ३.	८१९१४६	पूर्ण २.	४२११३
पुष्पकाल १.	२११८८	पूत १. २. ३.	३३८६७	पूर्णिका २.	२११७२
पुष्पकेतु १.	३३२४३	" १. २. ३.	५४१६५	पूर्णिमा ३.	२११७२
पुष्पदन्त १.	२११८	पूतना २.	२१११८	पूर्त ३.	३३६११५
पुष्पधन्वन् १.	१११२८	पूति १. २.	३३५३५	पूर्व १. २. ३.	५४११४०
पुष्पफल १.	३३३३२	" १.	५३३५७	" १. २. ३.	६१५४७
पुष्पफलन् १.	३३३३६	पूतिक १.	३३३६२	पूर्वगन्धिक १.	३३१८
पुष्परजस् ३.	३३८११७	पूतिकरज १.	३३३६२	पूर्वज १.	४१४३१
पुष्पलोलुप १.	२३३४२	पूतिकाष्ठ ३.	३३३७१	" १. २. ३.	५४१४
पुष्पव १.	३३५५४	पूतिकाष्ठक ३.	३३३७४	पूर्वदिवपाल १.	१२१२
" १.	३३५१०१	पूतिपुष्पी २.	३३३३४	पूर्वदेव १.	१३३१०
पुष्पवत् १.	२११२९	पूतिफली २.	३३३१०८	पूर्वरङ्ग १.	३३१३९
पुष्पवती २.	४१४१५	पूत्यण्ड १.	२३३४८	पूर्वाह्न १.	२११६४
पुष्पवाटी २.	३३३४	पूष १.	४३३७२	पूर्वेद्युः (-स्) ४.	८१७३२
पुष्पवीर्या २.	३३३१२८	पूष ३.	४१११८	" ४.	८१९१८
(पुष्पी, वीर्या)		पूर १.	४२३३०	पूल १. ३.	३३६६४
पुष्पसारण १.	२११८७	पूरक १.	३३३३३	पूलक १.	४१११५
पुष्पाब्ज १. २. ३.	३३६१२८	" १.	३३६४४	पूषन् १.	२१११०
पुष्पाभिकीर्णक १.	४११११			पृक्थ ३.	३३८७३
				पृच्छा २.	२११३७
				पृत्तना २.	३३७५५

[वृत्तना]

शब्दानुक्रमणिका

[पौष]

वृत्तना २.	३।७।५८
वृत्तनासाह १.	१।२।२
वृथक् ४.	८।८।४
वृथक्क्रिया २.	२।४।४०
वृथक्पर्णी २.	३।३।१३६
वृथग्जन १.	८।१।२६
वृथव १ व.	३।१।४०
वृथिर्वा २.	३।१।३
वृथिवीपति १.	८।१।५३
वृथु १.	३।४।४०
” २.	३।८।८५
” २.	३।८।१३२
” १. २. ३.	५।४।८०
वृथुक १.	४।३।६८
” १.	७।१।५८
वृथुचित्र १.	३।६।४१
वृथुच्छद १.	३।३।७६
वृथुरोमन् १.	४।१।४१
वृथुल १. २. ३.	५।४।८०
वृथुशालिका २.	३।८।८५
वृथुसूच्य १.	३।८।४०
वृथुहस्त १.	३।७।५१
वृथ्विका २.	३।८।८५
” २.	३।८।१३२
वृथ्वी २.	३।१।३
” २.	३।८।८५
वृथ्वीका २.	३।८।८७
वृदाकु १.	७।१।५८
वृक्षि १. २. ३.	४।५।५
वृक्षिपर्णी २.	३।३।१३६
वृषत् २. ३.	२।२।८
वृषत १.	२।२।८
” १.	३।४।१३
” १.	३।६।१९
वृषता २.	३।६।४७
वृषत्क १.	३।७।१७९
वृषदंशक १.	३।४।७१
वृषदश्व १.	१।२।५०
वृषदाज्य ३.	३।६।१९
वृष्ट ३.	४।४।६९
वृष्टग्रन्थि १.	४।४।१३३

वृष्टचक्षुस् १.	४।१।४६
वृष्टमध्यास्थि ३.	४।४।९१
वृष्टमांसादन ३.	५।२।८
वृष्टवाह्य १. २. ३.	३।४।५६
वृष्टस्थ १. २. ३.	३।७।१४१
वृष्ट्य १. २. ३.	३।४।५६
” ३.	५।१।१४
वेचक १.	२।३।२२
” १.	७।१।५३
वेचिका २.	२।३।३१
पेट १. २. ३.	८।९।३७
पेटक १.	४।३।६३
” ३.	५।१।३
पेटा २.	४।३।६३
पेटी २.	८।९।३७
पेत्व १.	३।४।६४
पेय ३.	४।३।९१
पेरा २.	३।१।४
पेराल १.	५।३।२०
पेरु १.	२।१।१३
” १.	५।३।१२
पेलव १.	३।५।८५
” ३.	३।८।७९
” १. २. ३.	५।४।१३६
पेशल १. २. ३.	५।४।५४
” १. २. ३.	५।४।१३७
” १. २. ३.	७।४।१९
पेशि २.	४।३।८९
” २.	४।४।१२
पेशी १.	२।३।५०
पैङ्गराज १.	४।१।१७
पैठर १. २. ३.	४।३।९४
पैण्डूष १. ३.	४।४।९३
पैतृष्वसेय १.	४।४।४२
पैष्ठिकी २.	३।९।५०
पोगण्ड १. २. ३.	५।४।११
पोटकी २.	४।३।२४
पोटगल १.	४।१।१६
” १.	८।१।२७
पोटना २.	२।४।२६
पोटरूप १.	३।४।१५

पोटा २.	४।४।३
पोत १.	३।७।६६
” १.	४।३।४०
” १.	४।४।१३५
” १.	६।१।३३
पोतकी २.	२।३।१९
पोतवणिज् १.	४।२।१८
पोतवाह १.	४।२।१८
पोताधान ३.	४।१।४५
पोत्र ३.	६।३।२२
पोत्रिन् १.	३।४।६
” १.	३।४।९
पोथ १.	४।२।१५
पोलिक १.	४।३।७१
पोलिन्द १.	४।२।१६
पोधी २ व.	२।१।१२
पोहित्य ३.	४।२।१५
पौश्चलेय १.	४।४।४३
पौस्न ३.	३।६।३
” १. २. ३.	५।४।११८
पौण्ड्र १.	३।५।५०
पौतव १.	५।१।६४
पौत्तिक ३.	३।८।१३५
पौत्र १.	४।४।४५
पौनर्भव १.	४।३।४५
पौपिक १. २. ३.	४।३।९२
पौर १.	१।१।२२
पौरस्त्य १. २. ३.	५।४।६
पौरुष १. २. ३.	४।४।८३
” ३.	४।४।१११
” ३.	७।५।५८
पोरुपेय १. २. ३.	८।४।१०
पौरैन्द्र १.	२।३।३२
पौरोगव १.	३।७।२१
पौरोहित ३.	३।६।२७
पौर्णमासी २.	२।३।७२
पौर्वापर्य ३.	३।६।११३
पौलस्त्य १.	१।२।५६
” १.	७।५।५९
पौलोमी २.	१।२।११
पौष १.	२।१।८२

पौषी]

पौषी २.	२११७४
पौष्टिक ३.	३१६११९
पौष्पक ३.	३२१४३
पौष्यक ३.	३२१४१
सा २.	४४११०१
प्याट् ४.	८१८१२
प्र ४.	८१७६
प्रकट १.	३१९१३७
” १. २. ३.	५४११३४
प्रकम्पन १.	११२१५०
प्रकर ३.	३१८११०७
” १.	५११११
प्रकरण ३.	३१९११००
प्रकाण्ड ३.	८१९१४२
प्रकाण्डकम् ३.	३३३११२
प्रकामम् ४.	४३३१०४
प्रकार १.	५१२१२३
” १. २. ३.	५४११२२
” १.	७११५६
प्रकाश १.	११२३१
” १. २. ३.	५३३१३४
” १. २. ३.	७१५५४
प्रकीर्णक १.	३१७९०
” ३.	४३३१५९
प्रकीर्य १.	३३३१६२
प्रकुञ्च ३.	५११५१
प्रकृति २.	३३३१६१
” २.	३१७३
” २.	५१२१२
” २.	७१२१२
प्रकोटी २.	३३३११३
प्रकोष्ठ १.	४१४७२
” १.	७११५२
प्रक्रम १.	५१२१५
प्रक्रम १.	३१८१६९
प्रक्रिया २.	७१२१४
प्रकण १.	२१४१२
प्रकाण १.	२४११२
प्रक्षर १.	३१७११५
प्रक्षराङ्गी २.	३१४१४४
प्रक्ष्वेलन १.	३१७१८०

वैजयन्तीकोषः

प्रखर १. ३.	३१७११५
प्रख्य १. २. ३.	५४११२२
प्रयणिका २.	४३३३३
(प्रगणिता)	
प्रगण्ड १.	४४१०२
प्रगतजानुक १. २. ३.	५४११०
प्रगल्भ १. २. ३.	५४११७
प्रगाढ १. २. ३.	७४१२०
प्रगुण १. २. ३.	५४११२४
प्रगो ४.	८१८११०
प्रग्रह १.	२११४८
” १.	३१९१५७
” १.	७११४९
प्रग्राह १.	७११४९
प्रग्रीव १. ३.	७१५५६
प्रघण १.	४३३४५
” १.	७११५२
प्रघाण १.	३३३१५
” १.	४३३४५
प्रघात १.	३१७२०५
प्रघार १.	५१२३४
प्रचक्र ३.	३१७२०१
प्रचक्षस् १.	२११३४
प्रचल १. २. ३.	५४१७८
प्रचालक १.	२३३३९
प्रचार १.	३१७१५८
प्रचुर १. २. ३.	५४१८४
प्रचूडक १.	३१८१४८
प्रचेतस् १.	११२१४६
” १.	७११५६
प्रच्छदपट १.	४३३१६६
प्रच्छन्नद्वार ३.	४३३१२६
प्रच्छर्दिका २.	४३३४२
” २.	८१९५
प्रजनन ३.	४४१६२
प्रजनिष्णु १. २. ३.	
	५४११४
प्रजल्पन ३.	२१४३९
प्रजा २.	४४१४१
” २.	६१२३३

[.प्रति

प्रजागम १.	३३६८६
प्रजागर १.	३१७१५८
प्रजाता २.	४४१४२
प्रजानुक १.	४४१५३
प्रजापति १.	१११६
” १.	८११३४
प्रजापतिहस्तक १.	
	३११५५
प्रजावती २.	४४३६६
प्रज्ञा २.	४४३२१
” २.	६१२३३
प्रज्ञान ३.	७३३२२
प्रज्ञु १. २. ३.	५४११०
प्रज्वलित १. २. ३.	
	८४११४
प्रणय १.	३१८७०
” १.	७११४४
प्रणव १.	३३३२३३
प्रणष्ट १. २. ३.	३१७२१९
प्रणाद् १.	२४१९
प्रणाम १.	५१२३४
प्रणाय १. २. ३.	
	७४११५
प्रणाल १. २. ३.	४३२२०
प्रणिधि १.	७११५५
प्रणिपात १.	५१२४८
प्रणिहित १. २. ३.	
	५४११०९
” १. २. ३.	८४१९
प्रणीत ३.	४३३९४
प्रणीति २.	४३३३८
प्रणय १. २. ३.	५४३३२
प्रतति २.	७११५
प्रतल १.	४४१७७
प्रतानिनी २.	३३३३७
प्रताप १.	७११५४
प्रतापन ३.	५३३८
प्रतापस १.	३४११४
प्रतारण ३.	५१२३५
प्रतारिका २.	४४१६६
प्रति ४.	८१७२५

प्रतिकर्मन्]

प्रतिकर्मन् ३.	४३१३२
प्रतिकूल १. २. ३.	५४१२७
प्रतिकृति २.	३१२२०
प्रतिकृष्ट १. २. ३.	५४१७५
प्रतिक्षिप्त १. २. ३.	८१४८
प्रतिख्याति २.	५२२२९
प्रतिग्रह १.	८११३९
प्रतिग्राह १.	४३१६०
प्रतिघ १.	७११५४
प्रतिघातन ३.	३७२१४
प्रतिच्छन्द १.	५११२१
प्रतिच्छाया २.	५१२२०
प्रतिजागर १.	५२२२९
प्रतिज्ञा २.	५२३३७
प्रतिज्ञात १. २. ३.	५४१०६
प्रतितर्जन ३.	२१३३९
प्रतिताली २.	४३१४९
प्रतिदान ३.	८३१९
प्रतिध्वान १.	२१३१२
प्रतिध्वानदन्तुर १. २. ३.	२१३१४
प्रतिनष्ट १.	४१३४५
प्रतिनिधि १.	३१२२१
प्रतिपक्ष १.	३७१४२
प्रतिपत्ति २.	८२१७
प्रतिपद् २.	२११६९
” २.	७२११६
प्रतिपादन ३.	३१६११८
प्रतिबन्ध १.	५२११३
प्रतिबिम्ब ३.	३१२२१
प्रतिभ १.	३१२६९
प्रतिभय १. २. ३.	३१२७८
” १. २. ३.	८१५१७
प्रतिभा २.	३१६१७६
प्रतिभातवाच् १. २. ३.	५४१४७

(प्रतिभासवाच्)

शब्दानुक्रमणिका

प्रतिभायुक्त १. २. ३.	५४११७
प्रतिभास १.	३१६१७६
प्रतिभू १. २. ३.	३८११०
प्रतिम १. २. ३.	५४१२१
प्रतिमा २.	३१२२०
प्रतिमुक्त १. २. ३.	३७११४२
प्रतियल १.	८११३१
प्रतियातना २.	३१२२०
प्रतिरवि १.	४११२८
प्रतिरूपक ३.	३१२२१
प्रतिरोधक १.	३१२५६
प्रतिरोधिन् १.	३१२५६
प्रतिलम्भ १.	५२२२०
प्रतिलोम १.	३१५११८
” १.	३१५११९
” १. २. ३.	५४१२७
प्रतिलोमज १.	३१५८९
” १.	३१५१०९
प्रतिवसथ १.	४३१२
प्रतिवाक्य ३.	२१३३७
प्रतिविषा २.	३८१९०
प्रतिशासन ३.	५२३३५
प्रतिशिष्ट १. २. ३.	८१४८
प्रतिश्याय १.	४११२१
प्रतिश्रय १.	८११३१
प्रतिश्रव १.	५२२२९
” १.	५२३३७
प्रतिश्रुत् २.	२१३१२
प्रतिष्कन्ध १. २. ३.	८१५१४
प्रतिष्टम्भ १.	५२११३
प्रतिष्ठा २.	७२११५
प्रतिसञ्चर १.	२११९५
प्रतिसर १.	३१६१५९
” १. २. ३.	८१५१४
प्रतिसर्ग १.	२११९५
प्रतिसारण ३.	४१३१४०
प्रतिसारा २.	४३१२२४

[प्रत्यादेश

प्रतिहत १. २. ३.	८१४८
प्रतिहारी २.	३७३८
प्रतिहास १.	३३१९२
प्रतीक १.	४१५५
” १. २. ३.	७१५४
प्रतीकार १.	३७२०९
प्रतीचय १. २. ३.	७११७
प्रतीच १.	३८१५७
प्रतीची २.	२११५
प्रतीचीन १. २. ३.	५४१९१
प्रतीच्छा २.	४३१००
प्रतीत १. २. ३.	७११६
प्रतीप १. २. ३.	५४१२७
प्रतीपदर्शिनी २.	४१५
प्रतीवाप १.	३८११४४
प्रतीहार १.	८११२७
प्रतोद् १.	३८२२९
प्रतोली २.	४३११६
प्रत्न १. २. ३.	५४१८७
प्रत्यक्छेणी २.	३३११३
” २.	३३१३३
प्रत्यक्पर्णी २.	३३११५
प्रत्यक्ष १. २. ३.	५४१३३
प्रत्यगाशापति १.	१२१४६
प्रत्यगृष्टि २.	३१६१७५
प्रत्यग्र १. २. ३.	५४१८९
प्रत्यग्रथ १ व.	३१२२६
प्रत्यच् १. २. ३.	५४१९१
प्रत्यनीक १.	३७१४१
प्रत्यय १.	७११५१
प्रत्ययित १. २. ३.	३८१९
(प्रत्ययिक)	
प्रत्ययिन् १.	३७१४२
प्रत्यवसान ३.	४३१०२
प्रत्यवसित १. २. ३.	५४१०७
प्रत्यवस्कन्द १.	३८११६
प्रत्याकार १.	३७१६८
प्रत्याख्यान ३.	५२२२३
प्रत्यादेश १.	५२२२३

प्रत्यालीढ ३.	३।७।१८८	प्रपद ३.	४।४।५७	प्रमदा २.	४।४।५
प्रत्यासार १.	३।७।५९	प्रपदव्यापिन् १. २. ३.	४।३।१२१	प्रमदावन ३.	३।३।३
प्रत्याहार १.	३।६।२३१	प्रपा २.	४।३।२३	प्रमनस् १. २. ३.	५।४।३३
" १.	३।९।१४०	प्रपाठक १.	३।६।३२	प्रमा २.	५।२।३३
" १.	५।२।१८	प्रपात १.	३।२।६	प्रमाण ३.	७।३।२३
प्रत्युत्क्रम १.	५।२।१५	" १.	४।२।३२	प्रमातामह १.	४।४।३०
प्रत्युत्पन्नमति १. २. ३.	५।४।३१	" १.	७।१।५३	प्रमाथ १.	३।७।१८९
प्रत्युष १.	२।१।६८	प्रपातिन् १.	३।२।२	प्रमाथित ३.	३।८।१४३
प्रत्यूष ३.	२।१।६८	प्रपितामह १.	४।४।२९	प्रमाद १.	३।६।१७८
प्रत्यूपडम्बर १.	२।१।१५	प्रपुच्छाट १.	३।३।१५८	प्रमापण ३.	३।७।२१३
प्रत्यूह १.	५।२।४	प्रपौत्रक १.	४।४।४५	प्रमिति २.	५।२।३३
प्रथन ३.	३।७।२०४	प्रफुल्ल १. २. ३.	३।३।९	प्रमीत १. २. ३.	३।७।२२०
" १.	३।८।३६	प्रबर्ह १. २. ३.	५।४।६२	प्रमीला २.	३।६।१९७
" ३.	५।२।३४	प्रवल १. २. ३.	३।७।१५१	प्रमुख १. २. ३.	५।४।६२
प्रथम १. २. ३.	५।१।२१	" १. २. ३.	५।४।६	" १. २. ३.	५।४।७६
" १. २. ३.	५।४।७६	प्रबोधन ३.	४।३।१४७	प्रभृत ३.	३।८।३
" १. २. ३.	५।४।१४०	प्रभ १. २. ३.	५।४।१२१	प्रमेह १.	४।४।१२८
" १. २. ३.	७।४।१७	प्रभञ्जन १.	१।२।४९	प्रमेहनुद् १.	३।३।१०६
प्रथा २.	५।२।३४	प्रभव १.	७।१।५०	प्रमोद १.	३।६।१८८
प्रथिक ३.	३।६।८८	प्रभवन्ती २.	५।२।२	प्रयत १. २. ३.	५।४।६५
प्रथिमन् १.	८।९।१४	प्रभविष्णुता २.	५।२।२	" १. २. ३.	७।४।१८
प्रदर १.	४।२।९	प्रभा २.	२।१।२२	प्रयत्त १. २. ३.	५।४।९९
" १.	७।१।५७	" २.	२।१।२३	प्रयत्नवत् १. २. ३.	
प्रदीप्त १. २. ३.	८।४।१४	" २.	६।२।२३		५।४।११४
प्रदेशन ३.	३।७।४६	प्रभाकर १.	२।१।१४	प्रयम १.	३।६।१४
(प्रदर्शन)		प्रभात ३.	२।१।६९	प्रयस्त १. २. ३.	४।३।९४
प्रदेशिनी २.	४।४।७३	प्रभाव १.	५।२।२	प्रयाण ३.	७।३।२१
प्रदेष्टृ १.	३।७।२३	" १.	७।१।५६	प्रयाम १.	३।८।६६
प्रदोष १. ३.	२।१।६५	प्रभावती २.	३।९।१२०	प्रयुत ३.	५।१।२८
" १.	७।१।५५	प्रभास ३.	३।२।२८	" ३.	५।१।२९
प्रथुम्न १.	१।१।२७	प्रभिन्न १.	३।७।६८	प्रयोक्तृ १. २. ३.	३।८।८
प्रद्योतन १. ३.	८।५।१७	प्रभु १. २. ३.	५।४।५७	प्रयोग १.	५।२।१५
प्रद्राव १.	३।७।२११	" १. २. ३.	६।४।१०	" १.	७।१।४४
प्रधान १. ३.	५।४।६२	प्रभुता २.	५।२।२	प्रयोजन ३.	३।६।२३६
प्रधानधातु १.	४।४।१११	प्रभूत १. २. ३.	५।४।८४	" ३.	८।३।८
प्रधि १.	३।७।१३५	प्रभृष्टक ३.	४।३।१५५	प्ररूढ १.	३।८।५२
" १.	८।९।१३	प्रमथ १.	१।१।५१	प्ररोचना २.	३।९।१४२
प्रपञ्च १.	७।१।५६	" १.	३।७।२११	प्ररोह १.	३।३।११
प्रपतित १. २. ३.		प्रमथन ३.	३।७।२१३	प्ररोहक १.	३।७।११५
	५।४।११५	प्रमथाधिपति १.	१।१।४१	प्रलम्बाण्ड १. २. ३.	
					५।४।८

प्रलम्बारि]

प्रलम्बारि १.	१११२३
प्रलय १.	२११९५
” १.	३११८९
” १.	७११४३
प्रलाप १.	२१४३०
प्रलोभिन् १.	३३११८९
प्रलोभ्य ३.	४४११०१
प्रवक १.	३११६४
प्रवण १. २. ३.	७१५५३
प्रवयस् १. २. ३.	५४३३
प्रवर १.	३१८३४
” १.	३१८३७
” ३.	३१८११९
” १. २. ३.	५४३६२
” १. २. ३.	८१५५३
प्रवर्ग्य १.	११२२९
प्रवसिहका २.	२४३३९
प्रवह १.	७११४३
प्रवहण ३.	३१७१२७
” ३.	४१२१५
प्रवापण ३.	३१६१२०
प्रवाल १. ३.	३१२३९
” १.	३३१५५
” १.	३३१५४
” १. ३.	७१५५५
प्रवासन ३.	३१७२१३
प्रवाह १.	४१२३०
” १.	५२३३९
” १.	७११४५
प्रवाहि १.	३१७१२५
प्रवाहिक १.	११२४१
प्रवाहिका २.	४४११२९
प्रविदारण ३.	३१७२०४
प्रविसर १.	२११६८
प्रविसारण ३.	३१७२१५
प्रवीण १. २. ३.	५४११९
प्रवीरा २.	४३१११
प्रवृत्ति २.	३१७८२
” २.	३१८४८
” २.	७२११६
प्रवृद्ध १. २. ३.	७४११८

शब्दानुक्रमणिका

प्रवेक १. २. ३.	५४३६३
प्रवेणी २.	७२११६
प्रवेण १.	३१८३६
प्रवेश १.	५२११४
प्रवेष्ट १.	३१७७२
” १.	४४३७२
प्रव्याल १.	२११३२
प्रवृजित १.	३१६१६०
प्रवृत्ता २.	२४३३५
प्रवृत्तन ३.	३१७२१४
प्रवृत्तसृष्ट २.	३१८२४
प्रवृत्तार्चिस् १.	११२३२
प्रवृत्तान्तिक ३.	३१६१८२
प्रवृत्त १.	२४३३७
” १.	८१५१४
प्रवृत्तदिनी २.	४४१११
प्रवृत्त १.	५२३३८
प्रवृत्त १. २. ३.	५४३३२
प्रवृत्त १. २. ३.	३१७१४५
प्रवृत्तवाह १. २. ३.	३१४५६
प्रवृत्त २.	३१९४५
प्रवृत्त १.	११२५५
” १. ३.	३१७२०९
प्रवृत्त २.	३१६४६
प्रवृत्तणी २.	३१७२०१
प्रवृत्तक १.	३१६८१
प्रवृत्त १.	२११८७
” १.	३३३२०
” १.	४४३४०
” १.	७११४८
प्रवृत्त १. २. ३.	५४३२८
” १. २. ३.	७४११८
प्रवृत्तनी २.	३३३१०४
प्रवृत्त २.	३३३१०४
प्रवृत्त ४.	८१८१८
प्रवृत्त १.	७११५५
प्रवृत्त १.	३३३३८
(प्रसाधन)	
” १.	४३३२९
” ३.	४३३७५
प्रसाधन १.	४३३११२

[प्रज्ञाव

प्रसाधन ३.	४३३११२
” ३.	४३३१३२
प्रसित १. २. ३.	५४३३०
प्रसिति २.	५२२२८
प्रसिद्ध १. २. ३.	७४११९
प्रसू २.	६२२२४
प्रसूता २.	४४११७
प्रसूतात १ द्वि.	४४३४७
प्रसूति २.	४४३४१
” २.	७२११६
प्रसूतिका २.	४४११७
प्रसूतिज ३.	११२३९
प्रसून ३.	३३३१८
” ३.	७३३२४
” १. २. ३.	७१५५५
प्रसूत १.	४४३७७
” १. ३.	५११५२
प्रसूता २.	४४३५८
प्रसूत्वन् १. २.	८१५२९
प्रसेवक १.	३१९१२०
” १.	४३३६४
प्रस्कन्न १. २. ३.	३१७२१९
प्रस्तर १.	३२१८
” १.	३३३११
” १.	४३३१६५
” १.	७११५१
प्रस्तार १.	३३३२
प्रस्ताव १.	२४३४१
प्रस्तुता २.	३३३४९
प्रस्थ १.	५११५३
” १.	५११६३
” १.	६१५४६
प्रस्थान ३.	५२११०
प्रस्फोटन ३.	४३३६५
” ३.	४३३६६
प्रस्मरण ३.	३३३१७७
प्रस्मरण १.	३३३४३
” ३.	३३३७७
प्रस्माव १.	४३३७८

प्रस्ताव]

वैजयन्तीकोषः

[प्रासाद

प्रस्ताव १.	४४११२०	प्राच्छ १.	३१६२४	प्रान्तर ३.	३११५०
प्रहत १. २. ३.	३१८११८	प्राच्य १.	३११२२	" ३.	४३११२
" १. २. ३.	५४१४९	प्राजन ३.	३१८२९	प्रापणिक १.	३१८७२
" १. २. ३.	७४११८	प्राजापत्य ३.	३१६१२	प्रापणिका २.	३१६५०
प्रहर १.	२११६७	" १.	३१६१८	प्राप्त १. २. ३.	५४१९९
प्रहरण ३.	८३१८	" ३.	३१६१३६	" १. २. ३.	५४११०३
प्रहसन ३.	३१९१००	" १.	३१६२०७	" १. २. ३.	५४११०९
प्रहसन्ती २.	३३११८७	प्राजित् १.	३१७१३८	" १. २. ३.	६४११०
(प्रसहन्ती)		प्राज्ञ १.	३१६२३४	प्रासरूप १. २. ३.	
प्रहस्त १.	११२१४४	प्राज्ञा २.	४४१२१		८१५१५
" १.	४४१७७	प्राज्ञी २.	४४१२१	प्रासर्तु २.	४४१८
प्रहार १.	५१२१९	प्राज्य १. २. ३.	५४१८४	१।सार्थ १. २. ३.	३१९५३
प्रहासिन् १.	३१९६९	प्राङ्विपाक १.	३१८१४	प्राप्ति २.	५१२१३
प्रहि १.	४१२७	प्राण १.	११२४८	" २.	६१२२४
" १.	८१९१०	" १.	३१२१५	प्राभृत ३.	३१७४६
प्रहित ३.	४३१८६	" १.	३१६२०३	प्राय १.	४४१५३
" १. २. ३.	५४१९७	" १ ब.	३१६२०३	" १.	६११३६
प्रहृष्ट १. २. ३.	८४११३	" १. २. ३.	५४१६१	प्रायः (-स्) ४.	८१८१६
प्रहेलिका २.	२४१३९	" १.	६११३८	प्रायण ३.	७३१३४
प्रांशु १. २. ३.	५४१८१	प्राणद् १.	१११९	प्रायणीय १. २. ३.	
प्राकार १.	४३११४	" ३.	४४११०६		३१६१८८
प्राकारमूलिक १.	४३११३	प्राणदा २.	३१८१३	प्रार्थित १. २. ३.	
प्राक्तन १. २. ३.	५४१८७	प्राणनाथ १. २. ३.			५४१११२
प्राक्पादरज्जु २.	३१७११३		८१५१६	" १. २. ३.	७४११६
प्राग्जालिक १ ब.	३११२९	प्राणयम १.	३१६२२९	प्रालम्ब ३.	४३११५५
प्राग्योतिष १ ब.	३११२९	प्राणायाम १.	३१६२२९	प्रालम्बिका २.	४३११३७
प्राग्भार १.	५१२३	प्राणिक ३.	३१६९२	प्रालेय ३.	२१२१९
प्राग्र १. २. ३.	५४१६३	प्राणिद्युत ३.	८३११०	प्राचार १.	४३११२३
प्राग्रहर १. २. ३.	५४१६३	प्राणिन् १.	४४११	प्रावृत १. २. ३.	
प्रागाढ ३.	३१८१४४	प्राणिफल १.	३३१२८		४३११२०
प्राग्वंश १.	३११५१	प्राणिस्वन १.	२४१३	प्रावृष् २.	२११८९
प्राच् १. २. ३.	५४१९१	प्रातः (-र) ४.	८१८१०	प्रावृपोयणी २.	३३११२९
प्राचिका २.	२३१२०	प्रातिहारिक १.	३१९३३	" २.	८१२१३
प्राची २.	२११५	" १. २. ३.	५४१२४	प्रावृषेण्य १.	३३१६०
प्राचीन १. २. ३.	५४१९१	प्राथमकल्पिक १.	३१६२४	प्रावेशनिक १.	३११५९
प्राचीनतिलक १.	२११२७	प्राहु (-स्) ४.	८१८१८	प्राश्निक १. २. ३.	३१८१९
प्राचीनवर्हिष् १.	८११५४	प्रादेश १.	४४१८०	प्रास १.	३१७१६५
प्राचीना २.	३३११३१	प्रादेशन ३.	३३११९९	प्रासङ्ग १.	३१७१३३
प्राचीनावीत ३.	३३१२१	प्राध्व १. २. ३.	६१५४७	प्रासङ्ग्य १. २. ३.	
प्राचीर ३.	४३११४	प्राध्वम् ४.	८१८१६		३१५५८
प्राचेतस १.	३३११५३	प्रान्त १.	४३११३२	प्रासाद १.	४३१२९

प्रास्थित १.	२३३६	प्रेम्य ४.	८८११५	प्लुन १. २. ३.	
प्राहुण १.	३१६६८	प्रेमन् १. ३.	३१६१८६		३१७१२३
प्राह्ण १.	२११६४	" १. २.	५१५५१	प्लुषि १.	२१३४८
प्रिय १.	३३३३१	प्रेष्य १.	३१९१२	प्लात १. २. ३.	५१४१०७
" १. २. ३.	३१७४३	प्रेष १.	६११३३		फ
" १.	४१४३७	प्रोक्षण ३.	३१६९४	फक्किका १.	३१६३३
" १. २. ३.	५१४७०	प्रोक्षण्यासादन ३.		(पक्षिका)	
" १. २. ३.	५११३५		३१६८४	फण १. २.	४११२१
प्रियंवद १. २. ३.	५१४४४	प्रोत १. २. ३.	३१९१२	फणिन् १.	३१३४९
प्रियक १.	३३३३९	प्रोथ १. ३.	३१७१०९	" १.	४११५
" १.	३३३४३	प्रोथिन् २.	३१७९०	फणिर्जक १.	३३३१२०
" १.	३३३६६	प्रोन्ध १.	५३३९	फलण्ड १.	३३३२०५
" १.	३३४१७	प्रोष्टपद १. २. ३.	२११४१	" १.	३३३२०७
" १.	७१५३	प्रोष्टपदा २. ४.	८१९५७	फलः ३.	३३३२०
प्रियङ्गु २.	३१८५५	प्रोष्टी २.	४११४४	" १.	३३३८३
" ३.	३१८११७	प्रोह १.	३१७७६	" ३.	३१७१८६
प्रियङ्गुवाक्या २.	३३३६६	प्रौढ १. २. ३.	५१४१७	" १.	३१७१९२
प्रियनादिका २.	३१९१३८	प्रौढि २.	३१६१६६	" १.	३१८७०
प्रियापत्य १.	२३३३१	प्रौष्टपद १.	२११८५	" ३. २.	६१५५२
प्रियाला २.	३३३१८१	प्रौष्टपदी २.	२११७६	" ३. २.	६१५५३
प्रियालु १.	३३३५७	प्लक्ष १.	३३३२७	फलक ३. २.	३१७१९७
प्रियैलिका २.	३१८४६	" १.	३३३२८	" १.	३१८४५
प्रीत १. २. ३.	५१४९९	प्लक्षक १.	३३३५९	" १. २.	७१५६०
प्रीति २.	६१२२५	प्लक्षद्वीप १.	३११११	" १. २.	८१२२७
प्रुष्व १.	५३३८	प्लव १.	२३३१३	फलकिन् १.	४११४३
प्रेक्षा २.	६१२२५	" ३.	३३३२०१	फलकी २.	८१२२७
प्रेक्ष १.	३१७१३६	" १.	३१९५४	फलकृष्ण १.	३३३८३
" १.	३१९३	" १.	४११४७	फलपाककृष्ण १.	३३३८३
" १.	४३३१६०	" १.	४१२१६	फलपाकान्ता २.	३३३२२४
प्रेक्षित १. २. ३.	५१४९५	" १.	४१४७१	फलस १.	५३३४०
" १. २. ३.	५१४१०३	" १.	५१२१२	फला २.	३३३२६
प्रेक्षोल ३.	३१७१३६	" १.	६१२३७	" २.	३३३१६१
प्रेक्षालन ३.	३१७१३६	प्लवगा १.	८११३२	फलाङ्कुरा २.	३१८३५
प्रेक्षोलि २.	८१२२७	प्लवङ्ग १.	८११३२	फलाप्यक्ष १.	३३३४३
प्रेक्षोलित १.	५१४१०३	प्लवङ्गम १.	८११३२	फलाशन १.	२३३२५
प्रेजन ३.	५१२३२	प्लवन ३.	३३३२०१	फलिक १.	३३३२
प्रेत १.	११२३८	प्लाक्ष ३.	३३३२२	फलित १. २. ३.	३३३८
" १.	११२३८	प्लाविन् १.	२३३१	फलिन् १. २. ३.	३३३८
" १. २. ३.	६१५५२	" १.	३३३११	फलिन १. २. ३.	३३३८
प्रेतदाहमि १.	११२३२	प्लीहन् १.	४१११३	फलिनी २.	३३३६६
प्रेतालय १.	३३३७७	प्लुत १. १. ३.	३१७११८		

फलिनी २.	३३३१५८	फेरुण्ड १.	३३३३८	बन्धुता २.	५११९
" २.	३३३२०३	फेरुविज्ञा २.	३३३१३७	बन्धुर १. २. ३.	५३८३
फली २.	३३३१६६	फेला २.	३३३१०६	" १. २. ३.	७३३२१
" २.	३३३१५८	फेलुक १.	३३३१६३	बन्धुरा २.	३३३१३२
" २.	३३३१९८			बन्धुल १.	३३३१४४
" २.	६५५३	ब		बन्धूक १.	३३३१८५
फलीकृत १.	३३३१६६	बक १.	२३३१०	बन्धु १.	११११०
फलीहस्त १.	३३३३७१	" १.	३३३१३	" १.	३३३१२८
फलेग्राहि १. २. ३.	३३३३८	" १. २. ३.	३३३११३	" १. २. ३.	३३३१४७
फलेपाकिन् १.	३३३१५९	बकपुष्प १.	३३३१९३	" १.	५३३१८
फलेरुह १.	३३३२१६	बकोट १.	२३३१०	बकर १.	३३३३३
फलेरुहा २.	३३३१९०	बडवा २.	३३३१३७	बबर १.	३३३५०
फलोदय २.	११११	बडबागण १.	५३३१९	" १.	३३३१८
फल्गु २.	३३३१११	बडबापति १.	३३३१६६	" १. २. ३.	५३३२२
" १. २. ३.	५३३३७६	बडबामुख १.	८३३१५५	बह १.	२३३३९
फल्गुनाल १.	२३३३३	बत ४.	८८३२६	" ३.	३३३१७
फल्गुनी २.	२३३३३	बदर १.	३३३१९९	" ३.	६३३२२
फाणित ३.	३३३३३३	बदरी १.	३३३३८७	बहचन्द्रक १.	२३३३९
फाण्ट १.	३३३३३३	" २.	३३३३४८	बहिण १.	२३३३६
" ३.	५३३३३	बद्ध ३.	५३३३३	" ३.	३३३१९
फारी ३.	३३३३५	" १. २. ३.	५३३३७	बहिध्वजा २.	११३३०
फाल १.	३३३३८	" १. २. ३.	५३३३७	बहिन् १.	२३३३६
" ३.	३३३३०६	बद्धदर्भ १.	३३३३२४	बहिपुष्प ३.	३३३३२
" १. २. ३.	३३३३३७	बद्धभूमि २.	३३३३३२	बहिमुख १.	१३३३३
" १.	६३३३९	बद्धखु ३.	३३३३९	बहिष्ठ ३.	३३३३०२
फालगालेप १.	३३३३७	बन्दी २.	३३३३५७	बहिस १.	६३३५३
फालाकली २.	३३३३३२	बन्ध १.	३३३३७०	बल १.	१३३३४
फाल्गुन १.	२३३३८२	" १.	३३३३३१	" ३.	३३३३३
फाल्गुनिक १.	२३३३८२	" १.	३३३३५३	" ३.	३३३३५
फाल्गुनी २.	२३३३७५	" १.	५३३३८	" ३.	३३३३३०
फुल्ल १. २. ३.	३३३३९	" १.	६३३३९	" १.	३३३३३३
" १. २. ३.	३३३३७८	बन्धकी २.	३३३३५	" ३.	३३३३३३
" १.	३३३३३३	" २.	३३३३३०	" ३.	३३३३३३
फुल्लक १.	३३३३३९	" २.	७३३३३	" १. २. ३.	६३३५४
फुल्लरीक १.	३३३३३	बन्धन ३.	३३३३३०	बलक १.	३३३३९९
फेन १.	३३३३३३	" ३.	३३३३२१	" ३.	३३३३९९
फेनक १.	३३३३७४	बन्धनी २.	३३३३३०	बलकाली २.	३३३३८२
फेनिल १.	३३३३३२	बन्धाकि १.	३३३३३	बलदेव १.	१३३३२
" १. २. ३.	७३३३०	बन्धु १.	१३३३२९	बलभद्र १.	१३३३३
फेरव १.	३३३३३८	" १.	३३३३५१	बलभद्रिका २.	३३३३०९
फेह १.	३३३३३८	बन्धुजीव १.	३३३३८५	बलयु २.	३३३३३३

बलरिपु १.	११२२	बहिर्गीत ३.	३१११०	बाढव ३.	५११९
बलवत् ४.	८८८४	बहिर्द्वार ३.	४३१४२	बाढवेय १.	३१४५३
बला २.	३३३६६	बहिर्द्वारप्रकोष्ठ १.		बाढव्य ३.	५११७
” २.	३३१२७		४३१४६	बाढ १. २. ३.	५११३२
” २.	३३८७६	बहिर्कर्ष १.	३३७७०	” १. २. ३.	६५५५५
” २.	३३८११४	” १.	३३७७८	बाढम् ४.	८७२६
” २.	३३९१०७	बहु १.	११२२७	बाण १.	१११५२
बलाका २.	२३३१०	” १. २. ३.	५११८०	” १.	३३३३९
बलाङ्ग १.	३३८३६	” १. २. ३.	५११८४	” १.	३३७१७९
बलात्कार १.	३३७२०९	” १. २. ३.	६१११०	” १.	३३७१८३
बलारोहा २.	३३८८२	बहुकर १. २. ३.	३३८६७	बाणाभ्यास १.	३३७१९५
बलास १.	४११२१	बहुचीरा २.	३३४४५	बादर १.	४३११७
बलि १.	३३७४५	बहुगह्वर्वाच १. २. ३.		बाधा ३.	६१२२५
” १. २.	३३९१३८		५११४६	बान्धकिनेय १.	४११४४
” १.	६११३९	बहुजाली २.	३३३१६१	बान्धव	४११५१
बलिक १. २. ३.		बहुतिथ १. २. ३.	५१११९	बाधवी २.	१११५९
	३३३१२७	बहुपाद् १.	३३३२७	बाहृत ३.	३३३२२
बलिकण्टक १.	११११९	बहुप्रज १.	३३४६	बाल ३.	३३३२०२
बलिन् १.	१११२२	बहुरूप १.	१११४७	” १.	३३७६६
” १.	१११२३	” १.	३३८१११	” १.	५३३७
” १.	३३३१६५	बहुल ३.	३३८१२४	” १. २. ३.	५११२
” १.	३३३१८९	” १. २. ३.	५११८०	” १. २. ३.	६११११
” १.	३३३२२१	” १. २. ३.	५११८४	” १. २. ३.	६१५५७
” १. २. ३.		” १. २. ३.	७११६१	बालक १.	३३८३३
	३३७१५१	बहुला २.	३३५४२	” ३.	३३८१४०
” १.	३३८३५	बहुलीकृत १. २. ३.		बालगर्मिणी २.	३३४४६
” १.	४१११०		३३८६७	बालचूतक १.	५३३३५
बलिपुष्ट १.	२३३१६	बहुवक्र १.	३३८५४	बालजात ३.	३३८१४०
बलिमुञ्ज १.	२३३१८	बहुवार १.	३३३५५	बालतृण ३.	३३३२३५
बलिषा ३.	३३१६०	बहुव्यय १. २. ३.		बालनायिका २.	३३८६०
” ३.	३३९४२		५११५८	बालपत्र १.	३३३६३
बलिसद्मन् ३.	४१११	बहुसारक १.	३३८१२८	बालपुष्कल १.	३३७८०
बलीवर्द १.	३३४५३	बहुसुता २.	३३३१२४	बालभीरु १.	३३३३०
बलबज १ न.	३३३२३०	बहुसूति २.	३३४५०	बालमूषिका २.	४११३२
बलक्यणी २.	३३४४८	बहुसूतिका २.	४१४२०	बालवत्स १.	२३३२३
बस्त १.	३३४६२	बहुसूदन ३.	३३८१२४	बालशाकट १. २. ३.	
बहुल १. २. ३.	५११८४	बहुस्वन १.	२३३२२		३३८२१
” १. २. ३.	५११८४	बहुदित ३.	२३३३९	बालशाकिन १. २. ३.	
” १. २. ३.	७११२१	बहेटक १.	३३३१७६		३३८२१
बहिः (स्) ४.	८८८१४	बाढव १.	११२२१	बालहस्त १.	३३४७४
बहिर्गर् १.	३३५४	” १.	३३६११	बाला २.	३३३१८५

[बाला]

वैजयन्तीकोषः

[बृहन्नाम्न]

बाला २.	३३३२१२	विम्बसारक १. ३३३३७१८५	बुध १.	३३३२३२
बालाम्ल १.	५३३३५	(विम्बसारक)	बुधा २.	३३३१२५
बालिश १. २. ३.		विम्बोष्ठी २. ३३३१४७	" २.	३३३१६३
	७४३२०	विल ३.	" २.	३३३१९४
बालेय १.	३३३३६५	विलेशय १.	बुधित १. २. ३.	५३३१०१
बाल्य ३.	४३३५४	विलेशया २.	बुधन १.	३३३१२२
बाप्प १.	६३३३४०	विलौकस् १.	बुन्दिर ३.	४३३११८
बाप्पी १.	३३३१३२	विस्व १.	बुभुक्षा २.	३३३१८२
बाह १. २. ३.	५३३२०	" १.	बुभुक्ष १. २. ३.	५३३३६
बाहा २.	४३३७१	विस्वक १.	बुम्बिका २.	४३३३७०
बाहु १. २.	४३३७१	विस ३.	बुम्बी २.	४३३३७०
बाहुज १.	३३३७१	विसकण्टिका २.	बुखल १.	३३३३३०
बाहुदन्तेय १.	१३३३७	विसखण्ड ३.	बुलि २.	४३३३६०
बाहुदा २.	४३३२६	विसनाभिज ३.	" २.	४३३३६१
बाहुमूल ३.	४३३३६९	विसप्रसून ३.	बुलकी २.	४३३३५५
बाहुयुद्ध ३.	३३३२०७	विसिनी २.	बुशाली २.	४३३२६
बाहुरक्षा २.	३३३३५५	विसिर ३.	(बुशाली)	
बाहुल १.	२३३३६	बीज ३.	बुषा २.	३३३३१७
" ३.	३३३३५५	" ३.	बुस १.	३३३३६४
बाहुलेय १.	८३३३५	" ३.	" ३.	३३३३४२
बाहधनुत्त ३.	३३३३७३	बीजकोश १.	बुसा २.	३३३३९७
बाह्यलिङ्गिन् १.	३३३३३८	बीजपुष्पिका २.	" २.	३३३३०७
बाह्यिक १ व.	३३३३२७	बीजपूर १.	बुस्तक १. २. ३.	
बाह्यिक १ व.	३३३३२७	बीजवर १.		३३३३५५
" १.	३३३३५५	बीजसू २.	बृंहित ३.	२३३३७
" ३.	३३३३१३	बीजाकृत १. २. ३.	बृन्द ३.	५३३३३
" ३.	७३३३६		" ३.	५३३३२८
बिडाल १.	३३३३७१	बीजिन् १.	" ३.	५३३३३०
बिडालक १.	४३३३५	बीज्य १.	" ३.	५३३३३१
बिडौजस् १.	१३३३४	बीभस्त १.	बृन्दाक १.	१३३३३३
बिन्दु १.	२३३३८	" १.	बृन्दारक १. २. ३.	
" २.	४३३३२०	" १. २. ३.		८३३३३८
" १.	८३३३१०	" १. २. ३.	बृहच्छुद्ध १.	३३३३०९
बिन्दुक १.	५३३३३८	बुक्कन ३.	बृहत् १. २. ३.	५३३३८०
" ३.	५३३३४९	बुद्ध १.	बृहत्तिका २.	४३३३२३
बिन्दुमेद १.	३३३३२३	" १.	बृहती २.	३३३३०४
बिम्बोक १.	३३३३९४	" १. २. ३.	" २.	३३३३१९
बिम्बेण १.	३३३३४९	बुद्धि २.	" २.	७३३३३७
बिम्ब १.	४३३३२९	बुद्धिमत् १.	बृहत्कर्कोटक १.	३३३३६५
" १. ३.	६३३३५५	बुद्धिद १.	बृहद्गृह १ व.	३३३३३६
बिम्बसारक ३.	३३३३७५	बुध १.	बृहन्नाम्न १.	१३३३३४

बृहस्पति १.	२११३३	ब्रह्मपुत्र १ व.	२३३३७	ब्राह्मी २.	१११९
बृहण्णक १.	५११५४	” १.	४११२४	” २.	१११६४
वेन १.	४१५३४	” १.	८११३५	” २.	२११६
वेर ३.	३१९२१	ब्रह्मवन्धु १. २. ३.		” २.	३३३१४४
बोक्कण १.	३७११५		८१११०	म	
बोध १. २. ३.	५४११०१	ब्रह्मविन्दु ३.	३६१२६	म ३.	२११३८
बोधकर १.	३७३३०	ब्रह्मभाव १.	३६१२३७	भक्त ३.	४३३७५
बोधन ३.	३६११६४	ब्रह्मभूय ३.	३६१२३७	” १. २. ३.	६५६०
बोधनीया २.	३८१९४	ब्रह्ममेखल १.	३३१२२९	भक्तमण्डक १. ३.	४३३७८
बोधान १.	३६१२२	ब्रह्मरात्रिक १.	३६११५५	भक्ति २.	३६३३८
बोधि १.	६५५५७	ब्रह्मरीति २.	३१२२६	” २.	६१२२६
” २.	८११५	ब्रह्मलोक १.	३६१२०८	भक्तक १. २. ३.	५४१५०
बोधिसत्त्व १.	१११३२	ब्रह्मवर्चस ३.	३६१११६	भक्तकार १. २. ३.	
बोधी २.	५११३७	ब्रह्मवालुक ३.	४११२३		४३३९२
बोल १.	३२१९५	ब्रह्मविष्णुमहेश्वर १ व.		भक्तन ३.	३११५२
” १.	५३३१६		१११५	” ३.	४३३१०४
” १. २. ३.	६५५५६	ब्रह्मवृत्त १.	३३३२९	भक्तणी ३.	३८३६०
बोसर १.	५३३३४	” १.	८६११९	भक्तित १. २. ३.	
ब्रसी २.	३६११४९	ब्रह्मवेदि २.	३११२३		५४३१०८
ब्रह्मगर्भ ९.	१११५६	ब्रह्मसंज्ञ १.	३३३८०	भग ३.	४३३६१
ब्रह्मघोष १.	४११२३	ब्रह्मसू १.	१११२९	” १. ३.	६५५५८
ब्रह्मचर्य ३.	३६११४	ब्रह्मसूत्र ३.	३६१२०	भगनेत्रान्तक १.	१११४३
” ३.	३६१२०९	ब्रह्मस्थली २.	४३३१०	भगन्दर १.	४३३३०
ब्रह्मचारिणी २.	८५३३०	ब्रह्महत्या २.	८११७	भगवत् १. २. ३.	८५३३१
ब्रह्मचारिन् १.	१११५६	ब्रह्माञ्जलि १.	३६१२६	” १. २. ३.	८११४६
” १.	३६३७	ब्रह्मी २.	३३३१४४	भगिनी २.	४३३२६
” १.	८५३३०	ब्रह्मोद्य ३.	८१११६	भगिनीपति १.	४३३३८
ब्रह्मजटा २.	३३३१२२	ब्रह्मौदनाभि १.	१२१२६	भगिनीभ्रातृ १.	४३३४७
ब्रह्मदण्ड ३.	३७१७५	ब्राह्म १.	२११६७	भग्न १. २. ३.	३७१४८
ब्रह्मदण्डी २.	३३३१००	ब्राह्मण १.	३६११	भग्नस्थिवन्ध १.	
ब्रह्मदर्भा २.	३८११०२	” १.	३६३३३		४३३३९
ब्रह्मधारा २.	४३३१०	” १. २. ३.	७५३६०	भङ्ग १.	४२३४४
ब्रह्मन् १.	१११६	ब्राह्मणब्रव १. २. ३.		भङ्गि २.	५२३३४
” १.	३५३३		३६३१०	भङ्गुर १. २. ३.	७३३२१
” ३.	३६३२७	ब्राह्मणयष्टिका २.		भङ्गुथ १. २. ३.	३८३२०
” १.	३६३७९		३३३१००	भजमान १. २. ३.	
” ३.	३६३१६१	ब्राह्मणी २.	३२३२७		३३३१०३
” १.	३६३१६३	” २.	४११२९	भञ्जना २.	२३३२६
” १.	६५३१०३	” २.	४१३३६	भञ्जिका ३.	३३३१००
” १.	८११३०	ब्राह्मण्य ३.	७३३२५	भट १.	३५३९
ब्रह्मनाभ १.	११११५	ब्राह्मिक १.	३६३२२	(नट)	

[भट]

वैजयन्तीकोषः

[भाण]

भट १.	३१७१३९	भन्दना २.	२१११९	भव १.	६११४१
भटिन्न १. २. ३.	४१३१९४	भम्भराली २.	२१३१४४	भवत् १. २. ३.	८१९१४६
भटोद्योग १.	३१७१२०२	भम्भा २.	३१९१३३	भवन १.	३१४७०
भट्ट १. २. ३.	८१९१४६	भय ३.	३१६१८५	" ३.	४१३१७
भट्टारक १. २. ३.	८१९१४६	भयङ्कर १. २. ३.	३१९१७८	भविक १. २. ३.	५१४१४२
भट्टारक १.	३१९१०३	भयद्रुत १. २. ३.	३१७१२१८	भवितव्यता २.	३१६१८९
" १. २. ३.	८१९१४६	भयन ३.	३१६१८५	भवितृ १. २. ३.	५१४१४१
भट्टारिका २.	३१९१०४	भयानक १.	३१९१७५	भविल १. २. ३.	७१५१६२
भट्टिनी २.	३१९१०४	" १.	३१९१७७	भविष्णु १. २. ३.	५१४१४१
भण्डन ३.	७१३१२६	" १. २. ३.	३१९१७८	भव्य १.	३१३१३७
भण्डाकी ३.	३१३१०२	भर १.	५१२१३	" १. २. ३.	५१४१४२
भण्डिल १.	३१३१७२	" १.	६१११४१	" १. २. ३.	६१४१११
भण्डीरी २.	३१३१४५	" १.	६१११४२	भषण ३.	२१४१६
भदन्त १.	३१९१०७	भरण ३.	३१९१५	" १.	३१४१६८
भद्र १.	३१७१६२	भरणी २.	२१११४१	भषित ३.	२१४१६
" १. २. ३.	५१४१८०	भरण्य ३.	३१९१५	भसत् १.	२१३१२
" १. २. ३.	५१४१४३	भरत १.	११२१२६	भसद् २.	६१२१२६
" १. २. ३.	६१५१६०	" १.	३१६१७८	भसल १.	२१३१४२
" ३.	८१९१२४	" १.	३१९१६२	भसित ३.	११२१३३
भद्रकाली २.	११११६१	भरथ १.	११२११९	भस्त्रा २.	३१९११७
भद्रकुम्भ १.	४१३१६१	भरद्वाज १.	२१३११९	भस्मगन्धिनी २.	३१८१९५
भद्रदारु ३.	३१३१७१	भरित १. २. ३.	५१४१८६	भस्मगर्भा २.	३१३१९२
भद्रपदा १. २. ३.	२१११४१	भरुज १.	३१४१३७	भस्मन् ३.	११२१३३
गद्रपर्णिका २.	३१३१५८	भरुटा २.	४१३१८६	भा २.	२१११२२
भद्रमन्त्र १.	३१७१५४	भर्ग १.	११११४०	भाग १.	४१४१५५
भद्रमन्त्रसृग १.	३१७१६४	भर्तृ १.	४१४१३७	" १.	५१२१७
भद्रमुख १.	३१३१२२८	भर्तृदारक १.	३१९१०५	" १.	६१११४१
भद्रमुखस्तक १.	३१३१९९९	भर्तृदारिका २.	३१९१०४	भागधेय १.	३१७१४५
भद्रसृग १.	३१७१६४	भर्त्सन ३.	२१४१३४	" १. २. ३.	८१५११९
भद्रयव १. ३.	३१३१७३	भर्मन् ३.	३१९१५	भागवत १.	३१६१०५
भद्रलक्षण ३.	३१७१६३	" ३.	६१३१२३	" १.	३१६१०५
भद्रवदन १.	११११२४	भर्मिन् १.	३१५१११	भागिनेय १.	४१४१४१
भद्रश्री १.	३१८१११२	भल्लह १.	३१४१००	मागीरथी २.	४१२१२४
भद्रसुत १.	३१७१५५९	भल्ल १.	३१७१८२	भाग्य ३.	३१६१८९
भद्रा २.	३१३१३९	भल्लाट १.	३१४१७	" ३.	६१३१२४
भद्राकरण ३.	३१६१४	भल्लातक १. २. ३.	३१३१९५	भाङ्गीन १. २. ३.	३१८१२०
भद्राङ्ग १.	११११२४	भल्लुक १.	३१४१४०	भाजन ३.	४१३१६२
भद्राश्व ३.	३१११७	भल्लुक १.	३१३१६८	भाङ्गी २.	३१३१००
भद्रासन ३.	३१७११५	" १.	३१४१७	भाण १.	३१९११००
भद्रेश्वर १.	१११३९				

भाण्ड ३.	३।७।४४	भावज्ञा २.	३।३।६७	भिन्नकूट ३.	३।७।५६
" ३.	४।३।६२	भावना २.	४।३।१५८	भिया २.	३।६।१८५
" ३.	६।३।२३	" २.	८।१।४	मिह १.	३।५।४६
भाण्डागारिक १.	३।७।२३	भावित १. २. ३.	५।४।९९	मिषज् १. २. ३.	४।४।१४३
भाण्डी २.	३।३।१४५	" १. २. ३.	८।१।२२	मिस्ता २.	४।३।७६
भातु १.	२।१।१०	भातुक १. २. ३.	५।४।४१	मिस्तिटा २.	४।३।७७
भातु १.	२।१।१०	भाषणी २.	२।४।३५	मी २.	३।६।१८५
" १.	२।१।५५	भाषा २.	१।१।९	मीत १. २. ३.	५।४।१८
" १.	६।१।४०	" २.	३।८।१६	मीति २.	३।६।१८५
भाद्र १.	२।१।८५	" २.	३।९।१०२	" २.	३।९।७६
भाद्रपद १.	२।१।८५	भास १.	२।३।३२	मीम १.	१।१।४३
भामिनी २.	४।४।५	भासन्त १.	७।१।५८	" १. २. ३.	३।९।७८
" २.	४।४।१०	भासुर १. २. ३.	५।४।१४२	मीमर १.	३।७।२६
भार १.	५।१।६१	भास्कर १.	२।१।१२	मीह १.	३।३।७८
" १.	६।१।४१	" १.	७।१।५८	" २.	३।३।१६६
भारत ३.	३।१।५	भास्वत् १.	२।१।१२	" २.	४।४।५
भारती २.	१।१।९	" १. २. ३.	६।५।५९	" १. २. ३.	५।४।१८
" २.	३।३।११९	भास्वर १ व.	१।३।८	मीरुक १. २. ३.	५।४।१८
" २.	३।९।१०१	मिह २.	३।३।१५	मीरुचेतस् १.	३।४।११
" २.	३।९।१०२	" २.	३।३।१२१	मीरुपर्णी २.	३।३।१४२
भारद्वाज ३.	४।४।१०९	" २.	६।२।२६	मीरुवाल १.	३।३।३०
भारद्वाजी २.	३।३।९९	मिह १. २. ३.	३।३।१७	मीरुक १. २. ३.	५।४।१८
भारयष्टि २.	३।९।६	मिह १. २. ३.	३।३।१२६	मीषण १. २. ३.	३।९।०९
भारवह १. २. ३.	३।७।२२२	" १.	३।३।१६०	मीष्म १. २. ३.	३।९।७८
	३।९।६	" १.	३।४।२७	मुक्त १. २. ३.	५।४।१०८
भारवाह १.	३।९।६	मिह १. २. ३.	३।३।१२६	मुम १. २. ३.	५।४।१२४
भारसह १.	३।४।६६	मिह १. २. ३.	३।३।१६०	मुज १.	३।३।४५
भारिक १.	३।९।६	मिह १. २. ३.	३।३।१६०	" १.	३।३।१९३
भारित ३.	५।१।६२	मिह १. २. ३.	३।३।१६०	" १. २.	४।४।७१
भारुष १.	३।५।५८	मिह १. २. ३.	३।३।१६०	मुजग १.	४।१।५
" १.	३।६।१०३	मिह १. २. ३.	३।३।१६०	मुजगाह्वय ३.	३।३।२९
भार्गव १.	२।१।३४	मिह १. २. ३.	३।३।१६०	मुजग १.	४।१।५
भार्गवी २.	१।१।३६	मिह १. २. ३.	३।३।१६०	" १.	४।४।३९
" २.	३।३।२३३	मिह १. २. ३.	३।३।१६०	मुजग्न १.	४।१।५
भार्गी २.	३।८।८१	मिह १. २. ३.	३।३।१६०	मुजग्नारि १.	२।३।३७
भार्या २.	४।४।३४	मिह १. २. ३.	३।३।१६०	मुजि १.	१।२।१८
भालुक १.	३।४।३३	मिह १. २. ३.	३।३।१६०	मुजिप्य १.	३।९।२
भाव १.	३।६।१७४	मिह १. २. ३.	३।३।१६०	" १.	३।९।४
" १.	३।९।८०	मिह १. २. ३.	३।३।१६०	" १. २. ३.	७।४।२२
" १.	३।९।९७	मिह १. २. ३.	३।३।१६०	मुजयु १.	७।१।५९
" १.	६।१।४३	मिह १. २. ३.	३।३।१६०	मुवन ३.	३।६।२०६

[भुवन]

वैजयन्तीकोषः

[मेल]

भुवन ३.	३११२	भूपदी २.	३३११८३	भृङ्ग १.	२३३४२
" ३.	३२१२	भूपूग १.	३३२१९	" ३.	३८१०४
भुवन्य १.	७११५९	भूमुज्ज १.	३७११	" ३.	३८१०७
भुवस् १. ४.	३६१२०६	भूमृत्सभ ३.	८१९२०	भृङ्गराज ३.	३३११०७
भुसुण्ठी १.	३७११७०	भूमि २.	३१११	" १.	८११३६
(भुसुण्ठी)		" २.	६२१२७	भृङ्गरीट १.	१११५२
भू २.	३११४	भूमिकन्दर ३.	३३११५३	भृङ्गा २.	३८१५१
" २.	८२११६	(भूमिकन्दक)		भृङ्गाण १.	२३१४२
" २.	८६१४	भूमिका २.	३१९६८	भृङ्गार १.	४३१०८
भूघन १.	४४१५३	भूमिकागत १.	३१९६८	भृङ्गारी २.	२३१४७
भूत १. ३.	१३१२	भूमिकूरमाण्ड १.		भृङ्गिन् १.	१११५२
" ३.	३६१२०६		३३११९५	भृङ्गिरिटि १.	१११५२
" ३.	४४११	भूमिमयी २.	२११२३	भृङ्गकण्ठ १.	३१५५३
" १. २. ३.	५४१९९	भूमिलाभ १.	३३१२०१	" १.	३१५६६
" १. २. ३.	६५१५९	भूमिस्पृष्ट १	३८११	भृङ्गकण्ठक १.	३१५१००
" १. ३.	८११३०	" १.	७११५९	भृत्तक १. २. ३.	३१९५
भूतग्राम १.	५१११७	भूथिष्ठ १. २. ३.	५४१८५	भृत्ति १.	३१९५
भूतघ्नी ३.	३३११२१	भूरद १.	३३११३३	भृत्तिभुज्ज १. २. ३.	३१९५
भूतदमनी २.	१११४९	भूरि १. ३.	३२१२०	भृत्त्य १.	३१९२
भूतघात्री २.	३११२	" १. २. ३.	५४१८५	भृत्त्या २.	३१९६
भूतपुष्प १.	३३१६९	भूरिमाय १.	३४१३८	भृथ १.	४११५०
भूतफल १.	३३१६६	भूरिलोह ३.	३२१२९	भृश १. २. ३.	५४१३१
भूतलोहव ३.	३२१३०	भूरिश्रवस् १.	१२१५	भृशकोपन १. २. ३.	
भूतवास १.	३३११७६	भूरुह १.	३३१४		५४१३२
भूतसम्भव १.	२११९४	भूरुह १.	३३१४	भृशङ्गत १. २. ३.	
भूतसारी २.	३८१८२	भूर्ज १.	३३१४५		३७१४९
भूतात्मन् १.	७११६०	भूर्जषत्र १.	३३१४५	भृष्ट १. २. ३.	४३१९३
भूतापुत्र १.	१३१२	भूलता २.	४११५९	भृष्टयव १.	४३१७१
भृति २.	१२१३३	भूलवण २.	३८१२२	मेक १.	३१५२९
" २.	४३१८७	भूवल्लर ३.	३३११५३	" १.	४११४७
" २.	६२१२७	भूशक्र १.	३४११	" १. २. ३.	६५१५९
" २.	८५१३४	भूशन्न ३.	४११३	मेटक १.	३८१६९
भृतिक ३.	७३१२६	भूषण ३.	४३११३३	मेद १.	३७१३३
भूतेश १.	१११४३	भूष्णु १. २. ३.	५४१४१	" १.	६११४२
भूतेष्टा २.	२११७०	भूस्तृण ३.	३३१२३४	मेदितं १. २. ३.	५४१११
" २.	२११८०	भूस्तृष्ट १.	६११४२	मेन १.	६११४२
भूदार १.	३४१६	भूस्फोट ३.	३३११५३	मेय १.	५२१२२
भूदेश १.	३६११	भृकुंस १.	३१९६७	मेरी २.	३१९१३३
भूधर १.	३२११	भृकुटि २.	३१९९१	मेरीनाद १.	२४१११
भूनामन् २.	३२११७	भृगु १.	३२१६	मेल १.	३४१३
भूप १.	३७११	भृङ्ग १.	२३१२७	" १.	४२११६

भेल १. २. ३.	६५५५७	अमरेष्ट १.	८११५९	मख १.	३१६८२
भेलन ३.	५१२१२	अमि २.	५१२१०	मगध १ ब.	३११३१
भेलुक १.	१११५२	अप १.	५११०२	मघवत् १.	११२२
भेषज ३.	४१११४१	अष्ट १. २. ३.	५११०२	मघा १ ब.	२११४३
भैक्ष ३.	३१८१२	आज् १.	११३११	मङ्गु १.	४११२६
" ३.	५१११३	आणञ्जक	३१५२५	मङ्गुश १.	३१५७०
भैमरथी २.	२११६१	आतृ १.	४११३१	मङ्गु ४.	८१८११
भैरव १. २. ३.	३१९७९	" १.	४११४७	मङ्ग १. ३.	३१२१७
" १.	८११६०	आतृव्य १.	७११५९	मङ्गल १.	२११३१
भैषज्य ३.	४१११४१	आत्र १.	३१८११	" १.	५१३४८
भोः (-त्) ४.	८१८१२	आत्रीय १.	४११४२	मङ्गलध्वनि १.	३१६५७
भोग १.	४११२१	आन्ति २.	५१२१०	मङ्गलमालिका २.	३१६५७
" १.	६११४४	आमकादि १.	३१२३८	मङ्गलादिक ३.	३१६५८
भोगभूमि २.	१११११	आमर ३.	३१८१३५	मङ्गल्य १.	३१३३०
भोगवती २.	४१११४	आमरी २.	१११५९	" ३.	३१८१४०
" २.	४१२२५	आप् १.	५१२५६	" ३.	३१८१४९
भोगिन् १. २. ३.	७१५३१	अकुं १.	३१९१६७	" ३.	४१३११४
भीगिनी २.	७१५३२	अकुट १.	३१९१६७	मङ्गल्या २.	३१३१९८
भोज १ ब.	३११३७	अकुटि २.	३१९१९१	" ३.	३१८१०८
" १.	३१५६२	अ २.	४११९६	" २.	५१३५८
भोजन ३.	४१३१०२	" २.	८१९१२	मङ्गिनी २.	४१२१५
भोजनीय ३.	३१८११९	अकुंस १.	३१९१६७	मचर्चिका २.	८१९४२
भोज्य ३.	३१३६२	अकुटि २.	३१९१९१	मज्ज १.	४१११०
भोल १.	३१२२१	अण १.	६११४०	मज्जा २.	३१३१४
भौम १.	११२३२	अणि २.	४१२२१	" २.	४१११०
भौरिक १ ब.	३११३१	अण १.	३१५१५	मज्जाकर ३.	४११०९
" १.	३१७२१	अणक १.	३१५३१	मञ्च १.	४१३३२
अकुंस १.	३१९१६७			मञ्चक १.	४१३१६४
अकुञ्च १.	३१५१५	म		मञ्जन ३.	३१५२४
अकुटि २.	३१९१९१	मक १.	३१५२९	मञ्जरी २.	३१३२०
अम १.	३१६१७७	मकर १.	११२६०	मञ्जरी २.	३१३११९
" १.	३१९११८	" १.	४११५१	मञ्जरीक १.	३१३१२०
" १.	४१२११	" १.	८१६१३	मञ्जिष्ठा २.	३१३१३५
" १.	५१२१०	" १.	८१६१५	मञ्जी २.	३१३२०
अमन्त १.	५१२११	मकरध्वज १.	१११२७	" २.	३१४६२
(गृहकोल्हक)		मकरन्द १.	३१३१९	मञ्जी १. ३.	४१३१४५
अमर १.	२१३४२	मकरवाहन १.	११२४५	मञ्जु १. २. ३.	५११३३४
" १. २. ३.	७१५६२	मकरालय १.	४१२११	मञ्जुल १. २. ३.	५११३३४
अमरक १.	३१८१३५	मकुट १. ३.	४१३१३५	मञ्जूषा २.	४१३१६३
" १.	४११९९	मङ्गण १.	३१७१६७		
अमरालक १.	४११९९	मत्तिका २.	२१३४४		
		मङ्गुण ३.	५११४८		

मञ्जूषा]

वैजयन्तीकोषः

[मधु

मञ्जूषा २.	७१२१	मण्डलिन् १.	४११७	मत्स्याही २.	३३११४४
मट १.	३१५१८	" १.	४११८	" २.	३३११५६
मटची २.	२१२७	" १.	४१११०	मथित ३.	३८११००
मठ १.	४३२७	" १.	४१११३	मथिन् १.	३१९३१
" १. २. ३.	८१९३९	" १.	७११६०	मथुरा २.	४३३६
मठर १.	५३३३	मण्डलेश्वर १.	३७१२	मद १.	३३११८८
मठी २.	८१९३९	मण्डहारक १.	३१५४४	" १.	३७७८२
मट्टिका २.	३६५५१	मण्डिका २.	४३३७८	" १.	५२३३२
(मट्टिका, मट्टिका)		मण्डकी २.	३७७९	" १.	८१५३६
मट्ट १.	३१९१३५	मण्डूक १.	३७५५१	मदकल १.	३७७८
मट्टकैरिक १.	३१५३१	" १.	४११४८	मदकोहल १.	३७५४
मणि १. २.	३२३३६	मण्डूकपर्ण १.	३३३६८	मदन १.	२३३३
" १. २.	४३३६२	मण्डूकपर्णी २.	३३३१४४	" १.	३३३४९
" १. २.	४३३७३	मण्डूर ३.	३२३३६	" १.	३३३६१
" १. २.	६५६२	मत ३.	३६१७४	" १.	३८५५
मणिक १.	४३१५६	" ३.	३८१०७	" १.	३८१३७
मणिकण्ठ १.	२३३२९	मतङ्गज १.	३७६०	" १.	७११६१
मणिकार १.	३१५६३	मतल्लिका २.	८१९४२	मदनध्वजा २.	२११७५
" १.	३१९१५	मति २.	३६२३३	मदना २.	३१९४६
मणित ३.	२३३७	" २.	६२२७	मदनी २.	३३३३६
मणिवन्ध १.	४३७३	मत्कुण ३.	३७१५४	मदवृन्द १.	३७६२
मणिल १. २. ३.	५३८	" १.	४११३५	मदमत्तक १.	३३३७७
मणिसालु १.	१३३२	मत्त ३.	३७६७	मदयन्ती २.	३३३१८३
मणिसोपान ३.	४३३१४२	" १. २. ३.	५३३७	मदस्थान ३.	३१९७३
मणीच ३.	७३२७	मत्तकाशिनी २.	४३१२	मदिरा २.	३१९४५
मणीचक ३.	३३३१८	मत्तवारण ३.	४३३१	मदिष्ठा २.	३१९४६
मण्टप १. ३.	४३३२८	" ३.	४३३१६४	मदुर १.	३३३३
मण्डजात ३.	३८११४०	मत्त्य ३.	३८३०	मदोत्कट १.	२३३१४
मण्ड १. ३.	४३३७७	मत्सर १. २. ३.	७५६३	" ३.	३१९४८
" १.	५११४७	मत्स्य १.	११११८	मदोदका २.	३८८२
मण्डन ३.	४३३३३	" १.	४११४१	मद्गु १.	२३३११
" १. २. ३.	५३३४१	मत्स्यगु १.	३६१५७	" १.	३५५२
मण्डपीठिका २.	२११७	यत्स्यण्डी २.	३८१३३	" १.	३५७१
मण्डल १.	३३३६९	मत्स्यधानी २.	२१९४२	" १.	३५८४
" ३.	३७७९	मत्स्यनाशन १.	२३३३४	" १.	३५९३
" ३.	३७१८७	मत्स्यपित्ता २.	३८६८	" १.	३५९३
" ३.	४३३२४	मत्स्यराज १.	४११५१	मदलध्वनि १.	२३३१०
" १. २. ३.	७५६५	मत्स्यवेधन ३.	३९४२	मद्य ३.	३९४४
मण्डलपत्रिका २.	३३३९२	मत्स्यव्रतिन् १. २. ३.	३६१३३	मद्यबीज ३.	३९५०
मण्डलाग्र १.	३७१६०	मत्स्यसङ्घात १.	४११४५	मद्यलालस १.	३३३३६
मण्डलिन् १.	३३३७२			मद्यसन्धान ३.	३९५५१
				मधु १.	२११८३

मधु १.	२।१।८७	मधुराङ्गक १.	५।३।२७	मध्वालुक १.	३।३।२१०
" १.	३।३।६१	मधुराम्लक ३.	३।८।१३६	मध्वासव १.	३।९।४९
" २.	३।३।१४३	मधुलिह् १.	२।३।४२	मनरिशला २.	३।२।११
" १. ३.	३।८।१३४	मधुवाच् १.	२।३।२७	" २.	३।३।२११
" ३.	३।८।१४५	मधुवार १.	३।९।५२	मनस् ३.	३।३।१७२
" १.	५।३।३३	मधुव्रत १.	२।३।४३	मनसिज १.	१।१।२७
" १.	६।५।६१	मधुशिग्रु १.	३।३।५६	मनस्कार १.	३।६।१७४
मधुक १.	३।५।३७	मधुश्रेणि १.	३।५।४४	मनाक् ४.	८।८।१२
" १.	३।७।३०	मधुष्ठील १.	३।३।४३	मनाका २.	७।२।१९
" ३.	३।८।१३४	मधुसख १.	१।१।२८	मनित १. २. ३.	५।४।१०१
" १.	५।३।३२	मधुसारथि १.	१।१।२९	मनीषा २.	३।६।१६३
मधुकर १.	२।३।४३	मधुसूदन १.	१।१।१५	मनीषिन् १.	३।६।२३५
मधुका २.	३।८।५६	मधुसूत्र १.	३।३।४३	मनुज १.	३।५।१
मधुकुक्कुटी २.	३।३।३४	मधुस्रवा २.	३।३।१८०	मनुज्येष्ठ १.	३।७।१५८
मधुक्रम १.	३।९।५२	मधूक १.	३।३।४३	मनुज्य १.	३।५।१
मधुकीर १.	३।३।२२२	मधूच्छिष्ट ३.	३।८।१३७	मनुज्यधर्मन् १.	१।२।५६
मधुच्छद १. २.	३।३।३८	मधूपप्ला २.	४।३।६	मनोजव १.	३।५।५
मधुतृण १.	३।३।२२५	मधूल ३.	३।८।१३७	मनोजवा २.	१।२।३०
मधुप १.	२।३।४२	" १.	५।३।३३	मनोज्ञ १. २. ३.	५।४।१३४
मधुपर्क १.	३।६।६२	मधूलक १.	३।३।४४	मनोज्वला २.	३।४।१८२
मधुपर्णी २.	८।२।८	" १.	५।३।२५	मनोमिधा २.	३।२।१२
मधुपुष्प १.	३।३।४३	" १. २. ३.	८।९।३३	मनोरथ २.	३।३।१७९
मधुबीज १.	३।३।७४	मधूलिक १.	५।३।३३	मनोरम १. २. ३.	५।४।१३५
मधुबोल १.	५।३।३८	मधूषिका २.	४।३।६	मनोविकार १.	३।९।८०
मधुमक्षिका २.	२।३।४५	मध्य ३.	३।९।१२३	मनोहर १. २. ३.	५।४।१३५
मधुमद्य ३.	३।९।४८	" १. ३.	४।४।६७	मनोहरी २.	३।८।७७
मधुमालक १.	५।३।३७	" १. २. ३.	५।१।२९	मन्तु १.	३।७।४७
मधुयष्टिका २.	३।८।१०३	" १. २. ३.	६।५।६३	मन्त्र १.	३।६।३३
मधुर ३.	३।८।१०३	मध्यदन्त १.	४।३।८९	" १.	६।१।४५
" ३.	३।९।११२	मध्यदेश १.	३।१।२२	मन्त्रजिह्व १.	१।२।१७
" १. २. ३.	४।३।८२	मध्यन्दिन १.	२।१।६५	मन्त्रज्ञ १.	३।७।२६
" १.	५।४।२५	मध्यम १.	३।९।१३२	मन्त्रिन् १.	३।७।१८
" १.	५।४।२७	" १.	४।४।६७	" १.	३।७।१९
" १. २. ३.	७।३।२२	" १. २. ३.	५।४।७७	" १.	८।१।४५
मधुरवाच् १. २. ३.	५।४।४४	मध्यमा २.	४।४।७४	मन्थ १.	३।९।३१
मधुरस १.	३।३।२१०	मध्यमीय १. २. ३.	५।४।७७	" १.	४।३।७१
मधुरसा २.	८।२।८	मध्यमास्त्रात १.	३।६।२३०	मन्थपात्र ३.	३।९।३२
मधुरस्वन १.	४।१।५५	मध्यरात्र १.	२।१।६६	मन्थर १. २. ३.	३।७।१५०
मधुरा २.	३।१।२५	मध्यस्थ १. २. ३.	३।८।९		
" २.	४।३।६	मध्याह्न १.	२।१।६५		

मन्थर]

मन्थर १. २. ३.	७५५६४
मन्थविष्कम्भ १.	३१९३२
मन्थान १.	३१९३१
मन्थोदधि १.	३११११
मन्द १.	११२३४
” १.	२११३५
” ३.	३१८१४०
” १. २. ३.	५१४५५
” १. २. ३.	६५५६०
मन्दगामिन् १. २. ३.	
	३१७१५०
मन्दर १.	४३१४०
मन्दरमणि १.	१११४६
मन्दरवासिनी २.	
	१११६३
मन्दाकिनी २.	११११३
मन्दाक्ष ३.	३१६१९४
मन्दागा २ व.	२११४१
मन्दार १.	१३११४
” १.	३३१४४
मन्दिर ३.	४३११८
” ३.	७३१२७
मन्दुपाल २.	३१५३१
मन्दुरा २.	४३१२१
मन्दोत्खात १.	३१६१३०
मन्दोष्ण ३.	५३१९
मन्द्र १. २. ३.	२१४१३
” १.	३१७६२
मन्द्रभद्रसृग १.	३१७६५
मन्द्रलक्षण ३.	३१७६३
मन्मथ १.	१११२७
” १.	३३३३२
मन्मथसख १.	२११८३
मन्या	३१७८५
” २.	४१११७
मन्यु १.	३१६१८३
” १.	६११४५
मन्वन्तर ३.	२११९३
मय १.	१३१७
” १.	३१४६७
मयष्टक १.	३१८३८

वैजयन्तीकोषः

मयु १.	११३३
मयूक १.	२१३३७
मयूख १.	२१११६
” १. २. ३.	८१९२५
मयूर १.	२१३१४
” १.	२१३३६
मयूरक ३.	३१२४२
” १.	३३११५
” १.	३३१२०
मरकत ३.	३१२३८
मरण ३.	३१२०२
मरणालस ३.	३१२१७
मरन्द १.	३३११९
मराल १.	२३१५
” १.	३३१९२
” १. ३.	५३११७
मरिच ३.	३१८७९
मरिष्टक १.	३१२३८
मरीच ३.	३१८७९
मरीचि १. २.	२१११६
मरीचिका २.	२११२२
” २.	५११४२
मरु १ व.	३११३८
” १.	३११४२
मरुक १.	३१४११
मरुजा २.	३१४२२
मरुत् १.	१११२
” १.	११२३९
” २.	३३११७
मरुवत् १.	११२४
मरुद्गण १ व.	१३१८
” १ व.	१३११०
मरुधव १.	३३१६३
मरुन्माला २.	३३११७
मरुल १.	३१४७३
” ३.	४२११
मरुवक ६.	३३१४९
मरुक १.	७११६२
मरुद्धव १.	३३१६४
मर्क १.	११२४९
” १.	६११४७

[मलय

मर्कट १.	३१४३९
” ३.	४३१४८
मर्कटक १.	३१८६२
” १.	४११३४
मर्कटास्य ३.	२१२२४
मर्कटी २.	४३१४८
मर्कस १.	३१९५१
मर्कोटपिपीलिका २.	
	४११३७
मर्त १.	३१६२०६
मर्त्य १.	३१५१
मर्त्यलोक १.	३१६२०६
मर्द १.	३१६१६७
मर्दन ३.	५१२३०
मर्दनी २.	३१७१५५
मर्दल १.	३१९१३४
मर्दलध्वनि १.	२१४१०
मर्मभेदन १.	३१७१७९
मर्मर २.	२१४८
” १.	५१४१४४
मर्मरा २.	४३१७०
मर्मस्पृश १. २. ३.	
	५१४११२
मर्यादा २.	३१९१५
” २.	४१२१३
” २.	४३१११
” २.	७१२१९
मर्ष १.	३१६१८४
मल ३.	३१२२९
” १.	३१५२४
” १.	४११३२
(अल)	
” १. ३.	४१११९
” १. ३.	४११२०
” १.	५११४४
” १. ३.	६१५६५
मलद १ व.	३११३६
” १.	३१८३५
मलना २.	३३११६०
मलय १.	३३१३
” १.	७१५६३

मलयजं १.	३१८११२	मयिघटी २.	३१९२५	महाग्राम १.	३१९२
मलयद्वीप ३.	३१११४	मसुर १.	३१८४०	महाग्रीव १.	३१९६७
” ३.	३१११६	मसुरक १.	३१८४०	महाघोष्ठा २.	३१९७८
मलयवासिनी २.	१११६३	मसुरिका २.	३१८४०	महाचण्डी २.	११९६४
मलयद्वाशास् २.	३१११५	मसूरी २.	३१९१३७	महाचारी २.	३१९१४२
मलवारिन् १. २. ३.	५१११६	मसृण १.	५१३४	महाजम्बू २.	३१३९२
मलयविष्टम्भ १.	३१११२८	मसृणत्व ३.	५१३१	महाजाली २.	३१३१६२
मलस्रुति २.	३१११२८	मसृणी २.	३१८४५	” २.	३१८१२३
मलहारक १.	३१७८७	मस्कर १.	३१३२१५	महाज्वाला २.	११२२९
मलिन ३.	३१२११	मस्करिन् १.	३१६१६०	महाक्षप १.	३११५५
” १. २. ३.	५११६६	मस्तक १. ३.	३१७८६	महाटवी २.	३१३१२
मलिना २.	३१११५	मस्तिक १.	३१७८५	महातेजस् १.	१११५५
मलिनाम्बु ३.	३१९२५	मस्तिष्क १.	३१११२	महात्मन् १. २. ३.	५११५६
मलिम्बुच १.	३१३४४	मस्तु ३.	३१८१४४	महादंष्ट्र १.	३११४
” १.	३१६७७	मस्तुलङ्ग १. ३.	८१५१९	महादेव १.	१११४१
” १.	३१९१५	मस्तुलङ्गक १.	३१११२	महादेवी २.	१११५८
मलीमस १. २. ३.	५११६६	मह १.	३१६६१	” २.	३१७३१
मल्ल १.	३११७२	महः ३.	३१३२०७	महाधन १. २. ३.	३१३११८
” १.	३१६६७	महत् १.	३१६१६३	महाधातु १.	३११०४
मल्लक १.	२१३१२	” ३.	३१६२०७	महानट १.	१११४४
मल्ल १.	३१५१५	” १. २. ३.	६१५६३	महानर्मन् १.	३१७७१
” १.	३१३६७	” ३.	८१३१८	महानस ३.	३१३५४
” १.	३१७८८	महती २.	३१३१३८	महानाद १.	३१३११
मल्लक १.	२१३३१	” २.	३१९११९	महानील ३.	३१२४०
मल्लनाग १.	३१६१५९	महत्तरी २.	३१७३७	महानेमि १.	२१३१५
मल्लि २.	६१२२७	महर् ३. ४.	३१६२०७	महापक्ष १.	२१३११
” १. २.	८१९२६	महर्त्विज् १.	३१६७९	महापक्षिन् १.	२१३२३
मल्लिका २.	३१३१८३	महस् ३.	६१३२४	महापत्र १.	३१३२१६
मल्लिकाकुसुमप्रिय १.	३१३३५	महाकदम्बक १.	३१३६०	महापद्म १.	११२६०
मल्लिकाच १.	२१३७	महाकन्द ३.	३१३२०४	” १.	३१३२०९
” १.	३१७९२	” ३.	३१८७६	” १.	३१११२
मल्ली २.	३१३५७	महाकाय १.	३१७६१	” ३.	३१२४०
” २.	८१९२६	महाकार १ ब.	३१३३९	महाप्रलय १.	२११९४
मशक १.	२१३४४	महाकाल १.	८१३३७	महाफला २.	३१३८८
मशकहरी २.	३१३१२४	महाकाली २.	१११६१	” २.	३१३९२
मशकिन् १.	३१३२८	महाकीर्तन ३.	३१३१९	” २.	३१३१७०
मशन ३.	२१३१२	महाकोशातकी २.	३१३१५९	महाबल २.	११२५०
मशाक १.	२१३३३	महागण १.	५११३१	” २.	३१८१३१
		महागन्धा २.	१११६४	महाबुस २.	३१८३३
		महाग्रहायणी २.	२११७८		

[मन्थर]

वैजयन्तीकोषः

[मलय]

मन्थर १. २. ३.	७५५६४	मयु १.	१३३३	मर्कट १.	३१३३९
मन्थविष्कम्भ १.	३१९३२	मयूक १.	२३३३७	„ ३.	४३३४८
मन्थान १.	३१९३१	मयूख १.	२१११६	मर्कटक १.	३१८६२
मन्थोदधि १.	३११११	„ १. २. ३.	८९१२५	„ १.	४१३३४
मन्द १.	११२३४	मयूर १.	२३३१४	मर्कटास्य ३.	२१२२४
„ १.	२१३३५	„ १.	२३३३६	मर्कटी २.	४३३४८
„ ३.	३१८१४०	मयूरक ३.	३१२४२	मर्कस १.	३१९५१
„ १. २. ३.	५१४५५	„ १.	३३३११५	मर्कोटपिपीलिका २.	
„ १. २. ३.	६१५६०	„ १.	३३३१२०		४१३३७
मन्दगामिन् १. २. ३.		मरकत ३.	३१२३८	मर्त १.	३१६२०६
	३१७१५०	मरण ३.	३१६१०२	मर्त्य १.	३१५११
मन्दर १.	४३३१४०	मरणालस ३.	३१६११७	मर्त्यलोक १.	३१६२०६
मन्दरमणि १.	१११४६	मरन्द १.	३३३१९	मर्द १.	३१६१६७
मन्दरवासिनी २.		मराल १.	२३३५	मर्दन ३.	५१२३०
	१११६३	„ १.	३३३१९२	मर्दनी २.	३१७१५५
मन्दाकिनी २.	११११३	„ १. ३.	५३३१७	मर्दल १.	३१९१३४
मन्दाक्ष ३.	३१६१९४	मरिच ३.	३१८७९	मर्दलध्वनि १.	२१४१०
मन्दागा २ व.	२११४१	मरिष्टक १.	३१२३८	मर्मभेदन १.	३१७१७९
मन्दार १.	११३१४	मरीच ३.	३१८७९	मर्मर २.	२१४८
„ १.	३३३४४	मरीचि १. २.	२१११६	„ १.	५१४१४४
मन्दिर ३.	४३३१८	मरीचिका २.	२११२२	मर्मरा २.	४३३७०
„ ३.	७३३२७	„ २.	५११४२	मर्मस्पृश १. २. ३.	
मन्दुपाल २.	३१५३१	मरु १ व.	३१३३८		५१४११२
मन्दुरा २.	४३३२१	„ १.	३११४२	मर्यादा २.	३१९१५
मन्दोत्प्लाव १.	३१६२३०	मरुक १.	३१४११	„ २.	४१२१३
मन्दोष्ण ३.	५३३९	मरुजा २.	३१४२२	„ २.	४३३११
मन्द्र १. २. ३.	२१४१३	मरुत् १.	१११२	„ २.	७२११९
„ १.	३१७६२	„ १.	११२३९	मर्ष १.	३१६१८४
मन्द्रमद्रसृग १.	३१७६५	„ २.	३३३११७	मल ३.	३१२२९
मन्द्रलक्ष्ण ३.	३१७६३	मरुवत् १.	१२१४	„ १.	३१५२४
मन्मथ १.	१११२७	मरुद्गण १ व.	१३३८	„ १.	४१३३२
„ १.	३३३३२	„ १ व.	१३३१०	(अल)	
मन्मथसख १.	२११८३	मरुध्व १.	३३३६३	„ १. ३.	४१४११९
मन्या	३१७८५	मरुन्माला २.	३३३११७	„ १. ३.	४१४१२०
„ २.	४१४११७	मरुल १.	३१४७३	„ १.	५१४१४४
मन्यु १.	३१६१८३	„ ३.	४२११	„ १. ३.	६१५६५
„ १.	६११४५	मरुवक. ६.	३३३४९	मलद १ व.	३१३३६
मन्वन्तर ३.	२११९३	मरुक १.	७११६२	„ १.	३१८३५
मय १.	१३३७	मरुद्धव १.	३३३६४	मलना २.	३३३१६०
„ १.	३१४६७	मर्क १.	१२१४९	मलय १.	३२३३
मयष्टक १.	३१८३८	„ १.	६११४७	„ १.	७१५६३

[मलयज]

मलयजं १.	३१८११२
मलयद्वीप ३.	३१११४
„ ३.	३१११६
मलयवासिनी २.	१११६३
मलयद्वाशस् २.	४४११५
मलवारिन् १. २. ३.	५४११६
मलयविष्टम्भ १.	४४११२८
मलस्रुति २.	४४११२८
मलहारक १.	३७८८७
मलिन ३.	४२११
„ १. २. ३.	५४१६६
मलिना २.	४४११५
मलिनाम्बु ३.	३१९२५
मलिगुल्लुच १.	२३३४४
„ १.	३१६७७
„ १.	३१९५५
मलीमस १. २. ३.	५४१६६
मल्लक १.	३१४७२
„ १.	४६६७
मल्लक १.	२३३२
मल्ल १.	३१५५५
„ १.	४३३६७
„ १.	४४१८८
मल्लक १.	२३३३१
मल्लनाग १.	३६११५९
मल्लि २.	६२२२७
„ १. २.	८१९२६
मल्लिका २.	३३३१८३
मल्लिकाकुसुमप्रिय १.	३३३३५
मल्लिकाञ्च १.	२३३७
„ १.	३७७९२
मल्ली २.	४३१५७
„ २.	८१९२६
मल्लक १.	२३३४४
मल्लकहरी २.	४३३१२४
मल्लकिन् १.	३३३२८
मल्लन ३.	२४३२
मल्लक १.	२३३३

शब्दानुक्रमिका

मषिघटी २.	३१९२५
मसुर १.	३१८४०
मसूरक १.	३१८४०
मसूरिका २.	३१८४०
मसूरी २.	४४१३७
मसृण १.	५३३४
मसृणत्व ३.	५३३१
मसृणी २.	३१८४५
मस्कर १.	३३३२१५
मस्करिन् १.	३३३१६०
मस्तक १. ३.	४४१८६
मस्तिक १.	४४१८५
मस्तिक १.	४४११२
मस्तु ३.	३१८१४४
मस्तुलङ्क १. ३.	८५११९
मस्तुलङ्क १.	४४११२
मह १.	३३३६१
महः ३.	३३३२०७
महत १.	३३३१६३
„ ३.	३३३२०७
„ १. २. ३.	६५६३
„ ३.	८३३१८
महती २.	३३३१३८
„ २.	३१९११९
महत्तरी २.	३७३३७
महर् ३. ४.	३३३२०७
महत्विज् १.	३३३७९
महसू ३.	६३३२४
महाकदम्बक १.	३३३६०
महाकन्द ३.	३३३२०४
„ ३.	३१८७६
महाकाय १.	३७३६१
महाकार १ ब.	३३३३९
महाकाल १.	८१३३७
महाकाली २.	११३६१
महाकीर्तन ३.	४३३१९
महाक्रीडातकी २.	३३३१५९
महागण १.	५१३३१
महागन्धा २.	११३६४
महाग्रहायणी २.	२१३७८

[महाबुस]

महाग्राम १.	४३३२
महाग्रीव १.	३३३६७
महाघोण्टा २.	३३३७८
महाचण्डी २.	११३६४
महाचारी २.	३१९१४२
महाजम्बू २.	३३३९२
महाजाली २.	३३३१६२
„ २.	३१८१२३
महाज्वाला २.	१२२२९
महाक्षप १.	४३३५५
महाटवी २.	३३३२
महातेजस् १.	११३५५
महात्मन् १. २. ३.	५४१५६
महादंष्ट्र १.	३३३४
महादेव १.	११३४१
महादेवी २.	११३५८
„ २.	३७३३१
महाधन १. २. ३.	४३३११८
महाधातु १.	४३३१०४
महानट १.	११३४४
महानर्मन् १.	३१५७१
महानस ३.	४३३५४
महानाद १.	३३३१
महानील ३.	३३३४०
महानेमि १.	२३३१५
महापक्ष १.	२३३११
महापक्षिन् १.	२३३२३
महापत्र १.	३३३२१६
महापद्म १.	१२३६०
„ १.	३३३२०९
„ १.	४३३१२
„ ३.	४२३४०
महाप्रलय १.	२३३१९४
महाफला २.	३३३८८
„ २.	३३३९२
„ २.	३३३१७०
महाबल २.	१२३५०
„ २.	३१८१३१
महाबुस २.	३१८३३

महाभुस]

महाभुस २.	३१८५१
महाभूत ३.	३१६२०६
महामात्र १.	३१७८८
” १. २. ३.	५१४५६
महामुख १.	४११५३
महामुनि १.	३१३७९
महामूल्य १. २. ३.	४३११८
महामृग १.	३१७६१
महामेरु १.	१३१२
महामुख ३.	५११३२
महायज्ञ १.	३१६६३
महायव १.	३१८५२
महारजत ३.	३१२१८
” ३.	३१८९१
महारण ३.	३१७२०६
महारस १.	३१३२२२
” १.	३१३२२५
महारसा २.	३१३११०
” २.	३१३१२३
महाराज १.	३१९१०३
” १.	४१४७६
” १.	८११२६
महारात्र १.	२११६६
महारात्री २.	१११६१
महाराष्ट्र १ ब.	३११३३
महालय १.	८११३६
महालोभ्र १.	३१३५२
महावस १.	४११५४
महाविड ३.	३१८१२३
महाविष्णु १.	१११३१
महावीर १. २. ३.	८१५२०
महावृष १.	३१८३५
महावेग १.	३१५४०
महाप्यसनसप्तक ३.	३१७११
महाव्रत १.	१११४५
महाशय १. २. ३.	५१४१६
महाशक्त १.	४११४४

वैजयन्तीकोषः

महाशक्त २.	३१३३४
महाशालि १.	३१८३२
महाशिला २.	३१७१६९
महाशूद्र १.	३१९२८
महाश्रावणिका २.	३१९१४
महाश्वेता २.	३१३१३५
” २.	३१३१९६
महासना २.	३१२११
महासन्धा २.	३१३१०५
महासर्प १.	४११११
महासहा २.	३१३१०७
” २.	३१३१८८
” २.	८१२१५
महासुति २.	२११९४
महासेन १.	१११५५
महास्नायु २.	४१४११७
महाहस १.	३१९८४
महित १.	३१२१५
(महिक)	
महिमत् १.	११२२७
महिमन् १. ३.	८१९३१
महिला २.	४१४४
महिष १.	३१४८
” १.	३१५१३
महिषवाहन, १.	११२३३
महिषाक्ष १.	३१८११२
महिषी २.	२११७४
” २.	३१७३१
” २.	७२१९
मही २.	३११३
महीपति १.	३१३३७
महेच्छ १. २. ३.	५१४१६
महेन्द्र १.	१२१७
महेन्द्रजित् १.	१११३७
महेश्वर १.	१११३८
” १.	३१३५३
महेश्वरी २.	३१२२६
महोक्ष १.	३१४५५
महोत्पल ३.	४२१३७
महोदधि १.	४२११२
महोदय १.	४३१७

[माणव्य

महोदया २.	४१४६
महोदरी २.	३१३१९९
महोद्रेक १.	५११५४
महोजसू १.	१११५६
महौषध १.	३१३२०६
” ३.	८३११०
मा २.	१११३६
” २.	८१७१०
” २.	८१९२
मांस ३.	४१४१०६
मांसकर ३.	४१४१०५
मांसकील १.	४१४१३३
मांसनिष्काथ १.	४३१८७
मांसल १. २. ३.	५१४६
मांसलता २.	४१४११२
मांसविक्रयिन् १.	३१९३७
मांसि १.	५१३५६
मांसिक १.	३१९३७
मांसी २.	३१८१००
माकन्द १.	३१३२५
माक्षिक ३.	३१२१५
” ३.	३१८१३५
मागध १.	३१५१६
” १.	३१५७९
” १.	३१५८०
” १.	३१५८७
” १.	३१७३०
” १.	३१८८४
मागधी २.	३१३१६०
” २.	३१८७६
मागवी २.	३१८५६
माघ १.	२११८२
माघी २.	२११७४
माघ्य १.	३१३१९१
माटङ्क १.	४३३३४
माठि २.	३१७१५३
माडि २.	३१३१८
माण १.	३१३२०९
माणव १.	४३१४०
माणवक १. २. ३.	५१४३
माणव्य ३.	५११७

[माणिक्य]

शब्दानुक्रमणिका

[मार्षक]

माणिक्य ३.	३१२४१	माथिक १.	३१३७५	मारि २.	४१११३७
माणिक्या २.	४११३०	माद १.	५१२३२	मारिष १.	३१३१५०
माणिचरि १.	११३३	माधव १. ३.	३१९४९	" १.	३१९१०६
माणिमन्थ ३.	३१८१२०	" १.	७११६१	मारुङ्ग १.	५१३१
मातङ्ग १.	३१७५४	माधवी २.	३१३१८७	मारुत १.	११२५०
मातङ्गी २.	८१२१४	" २.	३१९४५	मारुती २.	२११५
मातरपितर १ द्वि.		माधुर १.	३१६१०८	मार्कव १.	३१३१०७
	४१४४७	" १.	५१३३२	मार्ग १.	३११४९
मातरिश्चन १.	११२४७	माध्वी २ व.	२११२१	" १.	६११४६
मातलि १.	११२९	माध्वीक ३.	३१९४८	मार्गण ३.	३१७१७४
मातापितृ १ द्वि.	४१४४७	मानमन्दिर १.	११२४२	" १. २. ३.	५१४६०
मातामह १.	४११३०	(मानमन्दर)		" १.	७१५६४
" १ व.	४१४४९	मानव १.	३१५१	मार्गणा २.	३१६१२१
मातुल १.	४१४३३	मानवी २.	३१३१८२	मार्गनिवेश १.	४१३५
" १.	७११६१	मानस ३.	३१६१७२	मार्गर १.	३१५३२
मातुलपुत्र १.	८११५४	मानसौकस् १.	२१३६	" १.	३१५१००
मातुलानिका २.	३१८५१	मानिन् १.	३१३१५०	" १.	३१५४२
मातुलानी २.	४१४३६	मानी २.	५११५३	मार्गशीर्ष १.	२११८१
मातुलाहि १.	४१११९	मातुष १.	३१५१	मार्गायणी २.	२११३८
मातुली २.	४१४३६	मातुष्यक ३.	५११८	मार्गित १. २. ३.	५१४९८
मातुलङ्ग १.	३१३३३	मान्दा २ व.	२१११९	मार्ज १.	५१३१
" १.	३१३३३	मान्य ३.	४१४३८	मार्जन १.	३१३५२
मातुलङ्गी २.	३१३३४	मान्धीर १.	२१३२८	" १.	५१३१
मातृ २.	२११७४	मान्धीलव १.	२१३२८	मार्जना २.	२१४१०
" २.	४१३१६३	माभीद १.	३१३७९	" २.	३१९१३०
" २.	४१४२६	माया २.	११११४	मार्जा ३.	४१३९९
" २.	६१२२८	" २.	३१३१३८	मार्जार् १.	३१३७८
" २.	८१६१८	" २.	३१६१६१	" १.	३१३१५६
" २.	८१९४४	" २.	३१७१२	" १.	३१४७१
मातृका २.	४१४२१	मायाविन् १. २. ३.		मार्जारकण्ठ १.	२१३३८
मातृमुख १. २. ३.			५१४२४	मार्जारकर्णिका २.	
	५१४४६	मायिक १. २. ३.	५१४२४		१११६३
मातृशिष्ट १. २. ३.		मायिन् १. २. ३.	५१४२४	मार्जारिका २.	३१४३६
	५१४२१	मायु १.	४१४२१	मार्जारी २.	३१४३४
मातृष्वसेय १.	४१४४२	मायूरी २.	३१९१३१	मार्जालीय १. २. ३.	
मातृष्वक्षीय १.	४१४४२	मार १.	१११२७		८१५२०
मात्र १. २. ३.	५१४१३६	मारक १. ३.	३१६२०२	मार्जिता २.	४१३९८
मात्रा २. ३.	६१५६२	(मरक)		मार्तण्ड १.	२१११३
" २. ३.	६१५६३	मारजित् १.	१११३३	मार्तण्ड १.	२१११०
मात्सर्य ३.	३१६१८४	मारण ३.	३१७२१४	मार्दङ्गिक १.	३१९७०
माथ १.	४१४१३८	मारि २.	३१६२०२	मार्षक १.	३१९१०६

माष्टि]

माष्टि २.	४३११४७
माल ३.	३१११३
" १.	३३११२२
" १.	३५१२५
मालती २.	३३११८२
मालतीतीरसम्भव १.	३८११३०
मालव ३.	३१११६
" १ ब.	३११३७
" १.	३६११०६
मालवक १.	३५६३
माला २.	४३११५४
मालाकार १.	३९३३
मालावृणक ३.	३३३२३४
मालिक १.	३९३३
मालिका २.	३३११८६
" २.	४३१२९
" २.	५११२४
मालुक १. २. ३.	२४१२०
" १.	३५११९
मालुधान १.	४१११९
मालुवा २.	३३१२१०
मालूर १.	३३३३०
मालोर्जर् १.	३३११२०
माल्य ३.	६३१२५
माल्यजीविन् १.	३९३३३
माल्यवत् १.	३१२४
माष १.	३८३५
" १.	५११४३
" १.	५११४४
" १.	५११४५
" १.	५११६३
माषपर्णी २.	३३११०७
माषाक्षिन् १.	३७१११
माषीण १. २. ३.	३८१२०
माष्य १. २. ३.	३८१२०
मास १.	८११६१
मास १.	२११८०
मासतम १. २. ३.	५१११९
मासर १.	३९५५१

वैजयन्तीकोषः

मासर १.	४३१७८
मासिक ३.	३६६५
माहामलय ३.	३१११६
माहिर १.	१२१६
माहिष १. २. ३.	३१११४
माहिषाङ्गु १.	३५१४८
माहिष्मती २.	४३१९
माहिष्य १.	३५११२
" १.	३५६९
माहेन्द्री २.	३३११७५
माहेषी २.	३४१४२
माहेश्वरी २.	१११६४
मित १. २. ३.	५४१३६
मितद्रु १.	४२११२
मितम्पच १. २. ३.	५४१५९
मित्र १.	२१११५
" ३.	३७३९
" ३.	३७४३
" ३.	३८१९२
" ३.	८११४७
मिथस् ४.	८७१२७
मिथिला २.	४३३७
मिथुन ३.	४३११००
" ३.	४४१४८
" ३.	५१११५
" १. २. ३.	५१११६
" ३.	५१११६
" ३.	८६११४
मिथुनत्व ३.	४३११७१
मिथुनिन् १.	२३१२४
मिथ्या ४.	८८१३३
मिथ्याचार्या २.	३६११९६
मिथ्याभियोग १.	३११३२
मिर्मिर १. २. ३.	५१११९
मिश्र १. २. ३.	५११७८
मिश्रक ३.	३६१९२
मिष १.	३५११४
" ३.	३६११९५
मिषत् १. २. ३.	५४१६१
मिहिका २.	२२१९

[मुखरा

मिहिर १.	२१११५
" १.	७११६२
मीढ १.	३४१६४
" १. २. ३.	५४११३
मीढा २.	३६१४६
मीन १.	४११४१
" १.	८६११४
मीना २.	३६१२३
मीनाङ्क १.	१११२७
मीमांसा २.	३६२९
" २.	३६११७५
मीलिका २.	३२१२७
(नीलिका)	
मुक १.	५४१५६
मुकुन्द १.	११११३
" १.	१२१६१
मुकुन्दक १.	३३१२०५
मुकुर १.	४३११६२
मुकुल १. ३.	३३११९
मुक्तकम्बुक १.	४११२०
मुक्तबन्धना २.	३३११८३
मुक्ता २.	४११५६
" २.	६१२२९
मुक्ताफल ३.	४११५७
मुक्तामुक्त ३.	३७११९६
मुक्तावली २.	४३१३३८
मुक्तास्फोट १.	४११५६
मुक्ति २.	३६१२३८
मुख ३.	३८१२२१
" ३.	४३११५
" ३.	४४१८६
" ३.	६३१२५
मुखज १.	३६११
मुखबन्धन ३.	३८११४१
मुखभूषण ३.	३२१३१
" ३.	३३११०६
मुखमेव १.	३९१८८
मुखमण्डन १.	३३१६९
मुखर १. २. ३.	५४१४६
मुखरज्जु २.	३७११२
मुखरा २.	२३१२०

मुखावास]

शब्दालुक्रमणिका

[मूल

मुखावास १.	३७१४८	मुनि १.	३६१५२	मुस्त १.	४११२५
मुखवासन १.	५३१५३	मुनिपिष्टकिन् १. २. ३.		" १. २. ३.	८११३८
मुखशाला २.	४३१२४		३६११३४	मुस्तक १. ३.	३३१२००
मुखशोभा २.	३६१३५	मुनिप्रिय १.	३८१५८	मुस्ता २.	३३१२००
मुख्य १. २. ३.	५४१६३	मुनिवृत्त १.	८६११९	" २.	८११३८
मुख्योपाय १.	३७११२	मुतिव्रतिन् १. २. ३.		मुस्तु १. २.	४४१७९
मुख्य १. २. ३.	६४११२		३६११३३	मुहुः (-र्) ४.	८१७२७
मुचिर १. २. ३.	७५१६६	मुनिसेवित १.	३८१५७	" ४.	८८१११
मुचुटि १. २.	४४१७९	मुनीन्द्र १.	१११३४	मुहुःप्रोक्त १. २. ३.	
मुचुटी २.	३७११९३	मुर ३.	३८१९८		२४१२२
मुचुलिन्द १.	३३१३६	मुरज १.	३९१२२९	मुहूर्त १. ३.	२११५४
मुञ्ज १.	३३१२२८	मुरजध्वनि १.	२४११०	मूक १.	३७१०८
" १.	३३१२२९	मुररिपु १.	११११३	" १. २. ३.	५४११४
मुञ्जकेशिन् १.	११११३	मुरली २.	३९११२५	मूका २.	३९११७
मुञ्जन ३.	२४१२	" २.	३९११२७	मूढ १. २. ३.	३७१२१९
मुण्ड १. २. ३.	३६१६	मुख्नी २.	३३१५६	" १. २. ३.	५४१२१
" १. ३.	४४१८६	(मरुङ्गी)		" १. २. ३.	६४११२
मुण्डन ३.	३६१४	मुखण्ड १ व.	३९१२५	मूत १.	६११४६
मुण्डा २.	३३११२५	मुर्मुर् १.	१२१२०	मूतक ३.	३८११४४
" २.	४४११०	" १.	५३१६	मूत्र ३.	४४१२०
मुण्डित १. २. ३.	३६१६	मुषित १. २. ३.	५४११३६	मूत्रकृच्छ्र ३.	४४१२८
मुण्डितिका २.	३३११२५	मुष्क १. ३.	४४१६३	मूत्राशय १.	४४१६६
मुण्डी २.	३३११२५	मुष्कर १. २. ३.	५४१८	मूत्रित १. २. ३.	५४११३
मुण्डीर १.	२१११३	मुष्टि १.	३७११६८	मूर्ख १. २. ३.	५४१२१
मुद् २.	३६११८८	" १. २.	४४१७९	मूर्च्छन १. २. ३.	३९११३१
मुदित १. २. ३.	५४१३३	" १. २.	५११५१	मूर्च्छना २.	३६१२००
" १. २. ३.	५४१९९	" १. २.	५११६३	" २.	३९१११०
मुदिर १.	२११२	मुष्टिक १.	३११५४	मूर्च्छा २.	३६१२००
मुद्ग १.	३८१३६	मुष्टिमान्द्य ३.	३७११९२	मूर्च्छाल १. २. ३.	
मुद्गर १.	३६११०२	मुष्ट्याष्टक ३.	३६११६		३७१२१९
" १.	३७११७१	मुष्ट्यायोजन ३.	३७११८९	मूर्च्छित १. २. ३.	
मुद्गरक १ व.	३११२९	मुसल १. ३.	४३१६५		३७१२१९
मुद्रित १. २. ३.	५३१९७	मुसलयष्टिक १.	३७११७१	" १. २. ३.	७४१२२
" १. २. ३.	५४१११०	मुसलिन् १.	१११२३	मूर्ति २.	६११२८
मुधा ४.	८८११२	" १.	३७१९७	मूर्धन् १.	४४१८५
मुनय १. ३.	३६११६८	मुसली २.	३३१२०३	मूर्धाभिषिक्त १. २. ३.	
मुनि १.	१११३४	" २.	३८१५०		८५१२७
" १.	३३११२३	" २.	४११२६	मूर्धावसिक्त १.	३५१६५
" १.	३३११५८	" २.	४११३०	मूर्धावसिक्त १.	३५१३
" १.	३३१२२७	मुसल्य १. २. ३.	५४१७१	मूर्बा २.	३३१११४
" १.	३६११५०	मुसुटी ३.	३८१५६	मूल ३.	२११४०

मूल ३.	३३३१३	मृगया २.	३११३८	मृदङ्ग १.	३३३१६०
" ३.	६३३२६	मृगयु १.	३११३८	" १.	३११२९
मूलक १. ३.	३३३१५५	मृगरिपु १.	३३३२	मृदाह्वया २.	३३३१७
मूलकर्मन् ३.	३३३११७	मृगरोमज १. २. ३.	३३३११८	मृदु १.	५३३५
मूलकशाकट १. २. ३.	३३३२१	मृगलक्ष्मन् १.	२११२५	" १. २. ३.	६३३१२
मूलकशाकिन १. २. ३.	३३३२१	मृगवीथी २.	२११३८	मृदुकण्टक १.	३३३१४३
मूलकादिसुत १. २. ३.	३३३८३	मृगव्य ३.	३११३८	मृदुत्वच् १.	३३३१४५
मूलकारण ३.	३३३१६१	मृगशिरस् ३.	२११३८	" १.	३३३२२९
मूलकृच्छ्र ३.	३३३१४०	मृगशीर्ष ३.	२११३८	मृदुरोमन् १.	३३३३१
मूलधातु १.	३३३१०४	मृगसिंहक १.	३३३२	मृदुल ३.	३३३१०७
मूलपुष्पिका २.	३३३१२४	मृगजीव १.	३३३४	" १.	५३३५
मूलवर्हणी २.	२११४०	मृगाद् १.	३३३३	मृदुवात १.	१३३५१
मूलरस १.	५३३२८	मृगादन १.	३३३४	मृद्वङ्ग ३.	३३३३१
मूलसस्य ३.	३३३९०	मृगादी २.	३३३१७२	मृद्वीका २.	३३३१८१
मूलिक १. २. ३.	३३३१२९	मृगारि १.	३३३३	मृध ३.	३३३२०३
मूलिन् १. २. ३.	३३३१९	मृगित १. २. ३.	५३३९८	मृषा ४.	८३३१३
मूल्य ३.	३३३७०	मृगेन्द्र १.	३३३१	मृषार्थक १. २. ३.	२३३१७
" ३.	६३३२५	" १.	८३३५	मृषासाक्षिन् १. २. ३.	३३३१०
मूषिक १.	३३३३१	मृड १.	१३३४०	मृष्ट १. २. ३.	५३३९१
मूषिकपर्णी २.	३३३११३	मृणाल १. २. ३.	३३३४३	मेकल १ ब.	३३३३७
मूषिका २.	३३३३३	" १. २. ३.	८३३३८	" १ ब.	३३३४०
मृग १.	३३३११	मृणाली २.	३३३४३	" १.	५३३३६
" १.	३३३३०	" २.	८३३३८	मेखलकन्यका २.	३३३२६
" १.	३३३१२१	मृत १. २. ३.	३३३२०	मेखला २.	३३३१७
" १.	३३३६२	" ३.	३३३८२	" २.	३३३१४६
" १.	३३३६४	" ३.	५३३१६	" २.	३३३१८
" १.	६३३४७	मृतस्नान ३.	३३३६४	मेघ १.	२३३१
मृगणा २.	३३३१२१	मृतस्नन ३.	३३३१११	" १.	८३३३
मृगतृष्णा २.	२३३२२	मृत्तिका २.	३३३२४	मेघज ३.	३३३१
मृगवृक्षक १.	३३३६८	मृत्तिकाचूर्ण ३.	३३३२४	मेघनाद १.	१३३४४
मृगधूर्त १.	३३३३८	मृत्यु १. २.	३३३२०२	" १.	३३३१५१
मृगनाभि १.	३३३१०४	मृत्युक्षय १.	१३३४०	मेघनादानुलसिन् १.	२३३३८
मृगपालिका २.	३३३३५	मृत्युपुष्प १.	३३३२१४	मेघपुष्प ३.	३३३१
मृगबन्धनी २.	३३३३९	" १.	३३३२२५	मेघमाला २.	२३३२
मृगमत्तक १.	३३३३७	मृत्युसंयमन १.	३३३२३	मेघवर्त्मन् ३.	२३३२
मृगमद् १.	३३३१०४	" ३.	३३३२७	मेघवाहि १.	१३३२०
मृगमात्रिका २.	३३३२६	मृत्सा २.	३३३२४	मेघवाहन १.	८३३५४
		मृत्सना २.	३३३२४	मेघवाहिन् १.	१३३२८
		मृद् २.	३३३२४		
		मृदङ्ग १.	३३३१५९		

मेघाख्य ३.	३१२१५	मेघशृङ्ग ३.	४११२५	मोरट १.	३१८१४९
मेघाभ १.	३३१९३	मेघाण्ड १.	१२१६	" १.	७५५६५
मेघक १.	२३३३९	मेघी २ व.	२१११९	मोरटा २.	३३११२४
" ३.	४१४६८	" २.	४१४६५	मोषक १.	३१५५६
" १.	५३१११	मेहन ३.	४३११७१	मोह १.	३३१२०९
मेघटिक १.	५३१५७	(मोहन)		" १.	३३११८१
मेट १.	४३१२९	" २.	४१४६१	" १.	६११४५
मेढी २.	४३१४०	मेहल १.	५३१५७	मोहकालिका २.	३१५४६
मेढू १.	४१४६१	मेहिन् १.	३१४३	मोहनी २.	११११६
मेणक १.	३१५१९	मैत्र ३.	३१५५७	मौकलि १.	२३११५
मेथि १. ३.	३८१३१	" १.	३३११	मौकल्य १.	३१५७९
मेथिक १.	३३११०६	मैत्रक १.	३१५१०४	मौक्तिक ३.	३१२४०
मेद १.	३१५३५	मैत्रावरुणि १.	३३११५२	" ३.	४११५६
" १.	३१५९२	मैत्री २.	८११३५	मौञ्जी २.	३३१४२
" १.	३१५९३	मैत्रेय १.	३१५३४	मौडी २.	४३१७०
" १.	३१५११७	मैत्रेयक १.	३१५९४	मौढय ३.	३३१२००
मेदक १.	३१५५०	मैथ्य ३.	८११३५	मौण्डिक २.	३३१४
मेदस् ३.	४१११०७	मैथिल १.	२११६५	मौद्रीन १. २. ३.	३८११९
मेदस्कर ३.	४१११०७	मैथुन ३.	७३१२७	मौनिन् १.	३३११५०
मेदस्तेजस् ३.	४१११०९	मैथुनिन् १.	२३३३३	मौरजिक १.	३१५७०
मेदिनी २.	३११३	मैन १.	३१११३	मौर्विका २.	३१७१७८
मेदुर १. २. ३.	५१४४३	मैनाक १.	३१२४	मौर्वी २.	३३११७
मेदोभव १.	४१११०९	मैनाकभगिनी २.	१११६२	मौलि १. २.	४३१३५
मेघजित् १.	३३११५८	मैनाकस्त्वस् २.	१११६२	" १. २.	६१५६४
मेघा २.	३३११६५	मैरेय ३.	३१५४९	मौलिक ३.	३३१२
मेघाविन् १.	२३३२५	मोक १.	३१७७२	मौष्टिक १.	३१११६
" १.	३३१२३४	" १.	३३१२५	मौहिनिक १.	२११८३
मेघ्य १.	३३३२२९	मोक्ष १.	३३१२३८	मौहूर्त १.	३१७१५
" १. २. ३.	५१४६५	" १.	६११४७	मौहूर्तिक १.	३१७२५
मेघ्या २ व.	२१११८	मोक्षण ३.	३१७१९२	म्लान १.	४११४८
" २ व.	२११२०	मोक्षायलम्बिन् १.	३३१२३८	म्लिष्ट १. २. ३.	३११११
मेनास्मजा २.	१११५८	मोघ १. २. ३.	५११२९	म्लेच्छ ३.	३१२२५
मेरु १.	११३१२	मोच १. २. ३.	६१५६४	" १.	३१५११५
मेरुण्ड १ व.	१३११३	मोचक १.	३३१५६	" १.	३१५११६
मेलन ३.	५१२२७	मोचा २.	३३११७५	म्लेच्छभोज्य १.	३८१५३
(मेलक)		मोहयित ३.	३११९५	म्लेच्छास्य ३.	११२२५
मेलामणि १. २.	३११२५	मोद १.	३३११८८	य	
मेलामन्द १.	३११२५	मोदक १. २. ३.	८१५६६	यकृत ३.	४१११३
मेलाम्बु ३.	३११२५	मोरक ३.	३८१४६	यत् १.	११२५५
मेष १.	३३१६४	मोरट ३.	३८१४६	" १.	१३११
" १.	८३११४			" १.	३३१६९

यत्]

वैजयन्तीकोषः

[यव्य

यत् १.	८११५८
यत्कर्दम १.	४३१५३
यत्तूप १.	३८११११
यत्तराज् १.	११२५५
यत्तम १.	४४११२४
यत्तमन् १.	४४११२४
यज् १.	३६६८३
यजत्र ३.	३६६९४
यजन ३.	३६६९४
यजमान १.	३६६७६
यजुरादेष्टृ १.	३६६७६
यजुस् ३.	३६६२६
यज्ज १.	३६६६३
” १.	३६६८२
” १.	६११४७
यज्ञकर्माहं १. २. ३.	५४१११७
यज्ञकृत् १.	३६६८६
यज्ञजागर १.	३३३२२७
यज्ञत्यागिन् १.	३६६७७
यज्ञपुरुष १.	११११२
यज्ञलिह् १.	३६६७८
यज्ञवराह १.	३१११८
यज्ञवह १.	१३३६
यज्ञाग्नि १.	१२३२३
यज्ञाङ्ग १.	३४११२
यज्ञाढ्य १.	३६६१५५
यज्ञिय १.	२११९२
” १.	३३३२२९
” १. २. ३.	५४१११७
यज्ञोपकरण ३.	३६६९४
यज्ञोपवीत ३.	८३३१७
यज्ञोपवीतक ३.	३६६२०
यज्वन् १.	३६६७६
यज्वर १.	७११६२
यत ३.	३३७८९
” १. २. ३.	५४३३२
” १. २. ३.	६४११२
यतः (-स्) ४.	८८२२१
यतस्तुच १.	३६६७८
यति १.	३६६१६०

यति २.	६४२२९
यतिन् १.	३६६१६०
यत् १. २. ३.	५४१११४
यत्न १.	३६६१६७
यत्र ४.	८८२२१
यथा ४.	८७२२७
” ४.	८८२२०
यथातथम् ४.	८८११३
यथायथम् ४.	८८११४
यथार्थम् ४.	८८११३
यथार्हवर्ण १.	३३७२६
यथासुख १.	२११२६
यथास्वम् ४.	८८११४
यथेप्सित १. २. ३.	४३११०४
यथोद्गत १. २. ३.	५४१२१
यद् १. २. ३.	५४१२१
” १. २. ३.	८७१११
यदा ४.	८८१५
यदि ४.	८८११४
यदृच्छा २.	५२३६
यद्विष्य १. २. ३.	५४३३०
यद्वद् १. २. ३.	५४३३०
यन्तृ १.	३३७१३८
” १.	६११४७
यन्त्र ३.	३३७५०
यन्त्रक ३.	३९११८
यन्त्रगृह ३.	४३३२४
यन्त्रमुक्त ३.	३३७१९५
यम १.	१२३३३
” १.	३६६२०९
” १.	३३७९७
” १. २. ३.	३३७१२२
” ३.	५४११५
” १.	५२३३०
” १. २. ३.	६५६६५
यमक ३.	४३३९९
यमभगिनी २.	१११६२
यमरथ १.	३३३१०
यमराज् १.	११२३३
यमल ३.	५४११५

यमस्वस् २.	१११६२
” २.	४२३२५
यमी २.	४२३२५
यमुना ३.	४२३२५
यमुनाभ्रातृ १.	१२३३४
ययु १.	६११४८
” १. २. ३.	६५६६५
यर्हि ४.	८८१५
यव १.	३८१५१
” १.	५४१४३
” १ व.	८९१५६
यवक १.	३८१५३
यवक्य १. २. ३.	३८११९
यवक्रीत १.	३६६१५६
यवचार १.	३८१२७
यवचूर्णक १.	४३३६८
यवद्वीप ३.	३१११४
” ३.	३१११५
यवन १ व.	३११२४
” १.	३५१२२
” १.	३५७२२
” ३.	३८१२३
यवनि का २.	४३३२४
यवनेष्ट ३.	३२३३०
” १.	३३३२०७
यवपिष्टक १.	४३३७२
यवफल १.	३३३२१५
यवफलक १.	८११५५
यवमत् १. २. ३.	५४११९
यवस १.	४३३७४
यवागू २.	४३३८०
यवाग्र १.	५४१४३
यवाग्रज १.	३८१२८
यवानिका २.	३८११०२
यवान्वित १. २. ३.	५४११९
यवास १.	३३३१२६
यविष्ठ १.	१२३२६
यवीयस् १. २. ३.	५४३४
यवीयस ३.	३२३२३
यव्य १. २. ३.	३८११९

यशःपटह १.	३१९१३४	यान ३.	३१७१२३	युगमध्य ३.	३१७१३१
यशस् ३.	२१४३६	” ३.	६३१२६	युगल ३.	५१११५
यष्टि १. २.	३१६१२३	यानमुख १.	३१७१३०	युगवर्तक १.	२११३५
” २.	३१७१६२	यापन १.	७३१२८	युगान्त १.	२११९४
” १. २.	८१९२५	याप्य १. २. ३.	५१४७५	युगालिक १ व.	३११२५
यष्टिमधुका २.	३१८१०३	” १. २. ३.	६१४१३	युगवर्त १.	११११४
यष्टृ १.	३१६१७६	याप्ययान ३.	३१७१३६	युगासार ३.	२११९२
यस्त १. २. ३.	५१४११६	याम १.	२११६७	युगाह्वया २.	३१८१९४
याग १.	३१६१८२	” १.	५१२३०	युगिन् १.	३१६१८२
यागकण्टक १.	३१६१८०	यामक १.	२११३९	युग्म ३.	५१११५
याचक १. २. ३.	५१४६०	यामिनी २.	२११५६	” १. २. ३.	५११२३
याचनक १. २. ३.	५१४६०	यामुन ३.	३१२४२	युग्य १.	१११५०
याचना २.	३१६१२०	याम्या २.	२११५६	” १. २. ३.	३१४५८
याचित ३.	३१८१२	यायजूक १.	३१६१७५	” ३.	३१७१२३
याच्ञा २.	३१३१२०	यायावर १.	३१६१४२	युग्याशनप्रसेव १.	३१७११५
याजक १.	३१६१७८	” १.	३१६१५६	युज् १. २. ३.	५११२३
याजन ३.	३१६१६३	याव १.	४३११५३	युजिन १.	११२४८
” ३.	३१८१७	यावक ४.	३१८१५३	युजान १.	७११६३
याज्ञवल्क्य १.	३१६१५५	यावत् ४.	८१७२८	युत १. २. ३.	६१४१३
याज्ञिक १.	३१८१५२	यावतिय १. २. ३.	५११२०	युतक ३.	५१११५
याज्य १.	८१९४४	यावनाल १.	३१८१५६	” १. २. ३.	७१५६७
याज्या २.	३१६११२	यावशादन १.	३१५१८	युद्ध ३.	३१७२०३
याज्यापुट १.	३१६११२	यावशूक १.	३१८१२८	युद्धव्यान १.	२१४१०
यात ३.	३१७१८९	याष्टीक १. २. ३.	३१७१४४	युध् २.	३१७१५६
यातना २.	११२३९	यास १.	३१३१२६	युधिष्ठिर १.	११२१५
यातयाम १. २. ३.	८१४११	युक्त १. २. ३.	५१४१०३	युवति २.	४१४१८
यातु ३.	११२४०	” १. २. ३.	६१४१३	युवन् १. २. ३.	५१४३
यातुक १.	२११६७	युग १.	३११५७	युष्मद् १. २. ३.	८१९४९
यातुधान १.	११२४१	” ३.	३१७१३०	यू १.	४३११००
यातुगति १.	११२४३	” १.	५१११५	यूक १.	४११३८
यातृ २.	४१४३७	” १. ३.	६१५६६	यूथ १. ३.	५११४
यास्य १.	११२३८	युगाकीलक ३.	३१८२८	यूथनाथ १.	३१७६७
यान्ना २.	५१२१०	युगच्छद १.	३१३१४७	यूथप १.	३१७६७
” २.	६१२२९	युगद्वय ३.	२११९२	यूथिका २.	३१३१८२
यादस् ३.	४११४०	युगान्धर १ व.	३११७९	यूप १. ३.	३१६१०३
यादसाह्वय १.	११२४६	” १.	३१७१३२	यूपमध्य ३.	३१६१०४
यादसाम्पत्ति १.	८११५७	युगपत् ४.	८१८१६	यूपाम्र ३.	३१६१०४
यादस्पति १.	८११५८	युगपार्वर्ग १. २. ३.	३१४५६	यूष १. ३.	४३११००
यान ३.	३१७१६			योक्त्र ३.	३१८२८
				योग १.	३१६२०८

[योग]

योग १.	६११४८
योगपट्ट १.	३१६१५०
योगवाही २.	३१८१२९
योगाग्नि १.	३१६१५५
योगावाप १.	३१७१८८
योगिन् १.	३१३३६
” १.	३१८१२८
योगिनी २.	१११६०
योगियान १.	२११४५
योगेश १.	३१६१५५
योगेष्ट ३.	३१२२९
योग्य १.	२११३९
” ३.	३१७१२४
” ३.	३१८१४५
” १. २. ३.	६१५६७
” १. २. ३.	३१५६७
योग्या २ व.	२११४१
” २.	३१६१४६
” २.	३१७१९५
” २.	३१८१९४
” २.	६१५६७
योग्यारथ १.	३१७१३०
योजन ३.	३११६३
” १.	३१३२१८
योजनगन्धा २.	८१२१२
योजनवल्ली २.	३१३१४५
योजना २.	३११६३
योत्र ३.	३१८१८
योधन ३.	२१४१०
योन १. २.	४१४६१
” १. २.	६१५६६
योषा २.	४१४१४
योषित् २.	४१४१४
यौतक ३.	३१६१५५
” १. २. ३.	७१५६७
यौतुक ३.	३१६१५५
यौध १.	३१७१३९
यौधक १.	३१७१३९
यौधेय १ व.	३११२८
यौन ३.	३१६१२
यौनिक १.	११२५२

वैजयन्तीकोषः

यौवन ३.	४१४५३
” ३.	५११८
य्वागुली २.	४१३७८
य्वागुल्या २.	४१३७८
र	
रंहस् ३.	११२५५
रक्त ३.	३१२२४
” १.	३१३४०
” ३.	३१८११५
” ३.	३१८११६
” ३.	४१४१६
” ३.	४१४१०५
” १.	५१३११
” १. २. ३.	६१४१४
रक्तक १.	३१३१८५
रक्तकुण्डल ३.	४१२४४
रक्तग्रह १.	११२४१
रक्तचन्दन ३.	८१६२३
रक्ततेजस् ३.	४१४१०७
रक्तदन्ती २.	१११६१
रक्तदृष्टि १.	२१३१४
रक्तपाणिक ३.	४१२३५
रक्तपीतासितश्चेत् १.	
” ५१३१६	
रक्तपुच्छिका २.	४११२९
रक्तपुष्प १.	३१३३९
” १.	३१३४७
रक्तफला २.	३१३१४७
रक्तभव ३.	४११०७
रक्तशालि १.	३१८३२
रक्तशीर्षक १.	३१८१०९
रक्ता २.	३१३१५३
रक्ताक्ष १.	७१२६३
रक्ताङ्ग १.	३१३१५५
रक्तिका २.	३१३१७९
रक्षस् ३.	११२४०
रक्षस्सभ ३.	८१२२०
रक्षित १. २. ३.	५१४१००
रक्षोघ्न १.	३१८४१
” ३.	४१३८२

[रक्षास]

रङ्कुटी २.	३१८४४
रङ्ग ३.	३१२३०
” ३.	३१२३१
” १.	६११५१
रङ्गाजीव १.	३१५१२
” १.	३१५६३
रङ्गावतारिन् १.	३१५६३
” १.	३१५६५
रङ्गोपमर्दिन् १.	३१५६६
रचना २.	४१३१५८
” २.	५१२१४
” २.	५१२३९
रजःपुष्प १.	३१३२२३
रजःपूता २.	३१४४२
रजक १.	३१५३८
” १.	३१५४५
रजत ३.	३१२२३
” १. २. ३.	७१५७०
रजताद्रि १.	३१२१५
रजनी २.	२११५६
” २.	३१८८९
” २.	७१२२०
रजस् ३.	३१२३२
” ३.	३१३१६२
” ३.	३१८२५
” ३.	६१२२८
” ३.	८१५३६
रजसातु १.	८११३७
रजस्वल १.	३१४१९
रजस्वला २.	४१४१५
रज्जु २.	३११५८
” २.	३१२३०
” २.	८१२३३
रज्जुदाल १.	३१३५४
रञ्जन ३.	३१८११५
” ३.	३१२६०
रञ्जनवल्ली २.	३१३१६४
रञ्जनी २.	३१२११
” २.	३१३११०
” २.	३१३२११
रक्षास १.	३१५१३

रण ३.	३।७।२०४	रथवारक १.	३।५।२५	रघ १.	२।४।४
„ १. ३.	६।५।६८	(रथकारक)		रघण १.	२।४।१
रणरणक १.	३।६।१७९	रथाङ्ग ३.	३।७।१३४	„ ३.	३।२।२९
रणसङ्कुल ३.	३।७।२१७	„ ३.	३।७।१३५	„ १.	३।३।१६५
रण्डा २.	३।३।११३	रथायुधक १.	३।७।१७४	(द्रवण)	
„ २.	६।२।३१	रथाश्मन् १.	३।५।२०	„ १.	३।४।६७
रत ३.	४।३।१७०	रथिक १. २. ३.	३।७।१४०	„ १. २. ३.	५।४।४८
रतद्धिक ३.	८।३।११	रथिन् १. २. ३.	३।७।१४०	„ १. २. ३.	७।५।७०
रताथिनी २.	४।४।११	रथिन १. २. ३.	३।७।१४०	रवा २.	३।३।९९
रति २.	३।३।१७८	रथ्य १. २. ३.	६।४।१४	रवि १.	२।१।४०
„ २.	३।९।७६	रथ्या २.	४।३।१६	रविआचन् १.	३।२।३७
„ २.	४।३।१७०	„ २.	५।१।१३	रविध्वज १.	२।१।५५
रतिपति १.	१।१।२८	रथ्यावाद १.	२।४।२७	रक्षना २.	४।३।१४६
रतेमदा २.	१।३।१	रद १.	४।४।७८	रसि १. २.	२।१।१६
रत्न ३.	३।२।३६	„ १.	६।१।५०	„ १. २.	६।१।५०
„ ३.	६।३।२६	रद्वन १.	४।४।७८	„ १. २.	८।९।२५
„ ३.	८।३।१७	रदिन् १.	३।७।६०	रश्मिकलाप १.	४।३।१३९
रत्नगर्भ १.	१।२।५८	रन्तिदेव १.	१।१।१४	रश्मिमालिन् १.	२।१।१३
रत्नगर्भा २.	३।१।४	रन्धक १. २. ३.	४।३।१०८	रस १.	४।४।२
रत्नवर ३.	३।२।२०	रन्धन ३.	५।२।३२	„ १.	३।२।१५
रत्नसू २.	३।१।४	रन्धित १. २. ३.	४।३।९३	„ १.	३।२।४४
रत्नहस्त १.	१।२।५८	रन्ध्र १.	३।५।७	„ १.	३।३।४९
रत्नाकर १.	४।१।११	„ ३.	४।१।२	„ १.	३।३।५५
रत्नि १.	३।१।५४	„ ३.	८।६।९	„ १.	३।३।२०५
रथ १.	२।३।९	रभस १.	५।४।१४४	„ १.	३।४।३०
„ १.	३।३।३१	„ १.	७।१।६३	„ १.	३।८।१११
„ १.	३।७।१२४	रभू १.	३।७।२९	„ १.	३।९।७४
रथकट्या २.	५।१।१३	(रत्)		„ १.	३।९।७५
रथकार १.	३।५।४८	रमणी २.	४।४।६	„ १.	४।३।१००
„ १.	३।५।७५	रमति १.	८।१।६३	„ १.	४।४।१०४
„ १.	३।५।७५	रमा २.	१।१।३१	„ १.	४।४।११४
„ १.	३।५।९०	रम्भण ३.	२।४।५	„ १.	५।३।२
„ १.	३।९।३४	रम्भा २.	२।४।५	„ १.	५।३।४५
रथकारक १.	३।५।३३	„ २.	३।३।१७३	„ १.	६।१।४९
रथगरुत १.	३।६।१०७	„ २.	३।३।१७४	रसक १.	३।२।३५
रथगर्भक १.	३।७।१२७	„ २.	३।६।१८	„ १.	३।६।१९८
रथगुप्ति २.	३।७।१३२	रम्भित ३.	२।४।५	„ १.	३।८।१२८
रथनीह १.	३।७।१३२	रम्यक ३.	३।१।८	„ १.	४।३।८७
रथपद ३.	३।७।१३४	रय १.	१।२।५५	रसकोप १.	५।३।४०
रथरेणु १. २.	५।१।४२	रयि १. २.	८।९।२७	रसक्रिया २.	४।४।४२
		रङ्गक १.	४।३।१२९	रसगर्भक ३.	३।२।४१

[रसज्ञ]

वैजयन्तीकोषः

[राब्दान्त]

रसज्ञ १.	३।२।३५	रागशालव १.	५।३।३१	राजहंस १.	२।३।७
रसज्ञा २.	४।४।९०	रागसूत्रक ३.	५।१।६४	राजादन १.	३।३।४३
रसज्येष्ठ १.	५।३।२५	राघव १.	१।१।२०	" १.	८।५।२१
रसतेजस ३.	४।४।१०५	राङ्गव १. २. ३.		राजावर्त १.	४।३।११९
रसन ३.	७।५।६८		४।३।११८	राजि २.	४।३।१४८
रसना २.	४।४।९०	राज् १.	३।७।१	" २.	४।४।९०
रसनेत्री २.	३।२।११	राजक ३.	५।१।८	" २.	६।२।३०
रसयोगि १.	३।८।१३०	राजकर्कटि २.	३।३।१६७	राजिका २.	३।८।४२
रसवती २.	४।३।५४	राजकोशातकी २.		राजिमत् १.	४।१।७
रसवर १.	३।२।३५		३।३।१६१	" १.	४।१।९
रसविद्ध ३.	३।२।२२	राजजम्बू २.	२।३।९३	राजिल १.	४।१।९
रसा २.	३।१।२	राजदन्त १.	४।४।८९	" १.	४।१।१५
" २.	३।३।१३१	राजधानी २.	४।३।४३	" १.	४।१।२०
" २.	३।३।१८१	राजन् १.	३।७।१	" १. २. ३.	५।४।७
" २.	४।१।२	" १.	६।१।५०	राजीफल १.	३।३।१६६
रसागेह १.	१।३।१०	" १.	८।९।१२	राजील १.	४।१।९
रसाग्र १.	४।३।७७	राजन्य १.	३।७।१	" १.	४।१।१०
रसाक्षन ३.	३।२।४१	राजन्यक ३.	५।१।८	राजीव १.	३।४।१३
रसाख्य १.	३।८।१२८	राजन्वत् १. २. ३.		" ३.	४।२।३८
रसातल ३.	४।१।१		४।१।४६	राजीवक १.	४।१।४६
" १.	४।३।११०	राजपटोल १.	३।३।१६६	राजीवत् १.	३।३।१६५
रसादान ३.	४।३।१०३	राजपुत्री २.	८।२।८	राज्ञी २.	३।२।२७
रसायन ३.	३।८।१४८	राजफल १.	३।३।१६६	राज्यलौक्य ३.	३।६।१८२
रसाल १.	३।३।४१	राजवीजिन् १.	४।४।५०	राज्याङ्ग ३.	३।७।३
" १.	४।३।९८	राजभृङ्ग १.	२।३।२७	राढ १.	३।३।५०
रसिक १.	३।९।४७	राजमार्ग १.	४।३।१६	राढा २.	३।१।२१
रसोद्धव ३.	४।४।१०५	राजमाष १.	३।८।४६	" २.	३।१।३०
रसोन १.	३।३।२०४	राजमुद्र १.	३।८।३८	" २.	४।३।१५०
रहस् ३.	५।४।१२०	राजराज १.	१।२।५७	राण १. ३.	२।४।७
" ३.	६।३।२७	राजरीति २.	३।२।२६	रातप ३.	५।३।३१
रहस्य १. २. ३.		राजर्वश्य १.	४।४।५०	राता २.	३।६।५२
	५।४।१२०	राजवत् १. २. ३.	३।१।४६	रात्रि २.	२।१।५७
राक १.	६।१।५१	राजवर्त १.	४।३।११९	रात्रिचर १.	१।२।४०
राका २.	२।१।७३	राजवल्ली २.	३।३।१६४	" १.	३।९।५६
" २.	४।४।८	राजवाह्य १.	३।७।३९	रात्रिज ३.	२।१।३८
राक्षस १.	१।२।४०	राजविहङ्गम १.	२।३।२९	रात्रिजागर १.	३।४।७०
राक्षसप्र १.	१।१।२१	राजवृक्ष १.	८।६।२०	रात्रिञ्चर १.	१।२।४०
राग १.	३।६।१८१	राजवेश्मन् ३.	४।३।३०	रात्रिद्विष् १.	२।१।१४
" १.	३।९।११४	राजसर्षप १.	३।८।४२	रात्र्याख्या २.	३।३।२११
" १.	६।१।५१	" १.	५।१।४२	राथन्तरि १.	१।२।१२
रागवत् १.	३।३।२१७	राजसी २.	२।१।६०	राब्दान्त १.	३।६।२५

राध १.	२११८३	रिष्टि २.	३१७१५९	रुद्रपुष्प ३.	३३१९५
राधा २.	२११४०	रीढा २.	३१६१७२	(ओढूपुष्प)	
राम १.	१११२०	रीण १. २. ३.	५१४१०९	रुद्रव्रतित्त १. २. ३.	
" १.	१११२०	रीति २.	३१२२५		३१६१३१
" १.	१११२२	" २.	५१२२	रुद्रसख १.	१२१५८
" १.	३१४३२	" २.	६१२३०	रुद्रा २ व.	२११२१
" १. २. ३.	६१४१४	रीतिपुष्प ३.	३१२४३	रुद्राक्ष १.	३३३७९
रामक १.	३१५७९	रुक्म ३.	३१२१८	रुद्राणी २.	१११५८
" १.	३१५८२	" ३.	६१२२७	रुधिर १.	२११३२
रामठ ३.	३१८१३१	" १.	८१६१०	" ३.	४१४१०५
रामदूती २.	३३११०९	रुमेद १.	४१४१३७	रुमा २.	३२११०
रामपूग १.	३३३२१८	रुच् २.	२११२२	रुमाभव ३.	३१८१२१
रामभगिनी २.	१११६२	" २.	४३११५०	रुह १.	३१४१४
रामस्वस्त्य २.	१११६२	" २.	८१२१९	रुवथ १.	७११६४
रामा २.	४१४६	रुचक १.	३३३३३	रुवु १.	३३३६५
राम्म १.	३१६१८	" ३.	३१८१२५	रुवुक १.	३३३६५
रालि १.	८१९१०	" १.	८११६४	रुवती १. २. ३.	२१४१८
रावण १.	११२४२	रुचि २.	२११२२	रुव २.	३१६१८३
रावणसूदन १.	१११२०	" २.	३१८१३२	रुपा २.	३१६१८३
राशि १.	२११५०	" २.	३१९८३	रुक्म ३.	३२१३४
" १.	५११३	" २.	६१२१४	" १.	३३३५
" १.	५१२५४	रुचित १.	३१४१४	" ३.	३१८१४२
राष्ट्र ३.	३१७३	रुचित १. २. ३.	५१४९६	" १.	५३३३
" ३.	३१७४८	रुचिर १. २. ३.	५१४१३४	" १.	५३३५६
" ३.	६१५६९	रुचिष्य ३.	३१८१२५	" १. २. ३.	५१४४४
राष्ट्रिका २.	३३३१०६	रुचु १.	३१४२८	" १. २. ३.	६१४१३
राष्ट्रिय १.	३१९१०५	रुच्य १.	४१४३७	रुचणीय १.	३१९४७
रास १.	३१९७३	" १.	५१३३८	रुचणीया २.	३१८६१
रासभ १.	३१४६५	" १. २. ३.	५१४१३४	रुचवालुक ३.	३१८१३५
" १.	८१६५	रुज् २.	४३३१३८	रुचस्वर १.	३१४६६
रास्ना २.	३१८१८	रुजा २.	३१४६५	रुठ १. २. ३.	३१७२१७
राहु ३.	२११३७	" २.	४१४१३८	" १.	३१८५१
रिक्त १.	२११७९	" २.	६१२२९	रूप ३.	३१९१०१
रिक्तक १. २. ३.	५१४८७	रुण्ड १.	३१७१०८	" ३.	५१२१
रिवथ ३.	३१८७३	" १.	३१७२१६	" ३.	५३३२
रिङ्ग १.	३१७१३६	रुण्डक १.	३१५२८	" ३.	६३३२८
रिङ्गोल ३.	३१७१३६	रुत ३.	२१४१४	रूपजीवना २.	४१४२४
रिङ्गोलन ३.	३१७१३६	रुदित ३.	३१९८७	रूप्य ३.	३१२२३
रिपु १.	३१७४१	रुद्ध १. २. ३.	५१४९६	" ३.	३१८७४
रिरी २.	३१२२५	रुद्र १.	११३३९	" १. २. ३.	६१५६८
रिष्ट ३.	६३३२७	" १ व.	१३३८	" ३.	८१६११

[रूप्यमास]

रूप्यमास १.	पा११४४
रूप्यशतमान ३.	पा११६०
रूप १.	पा३१२९
रूपित १ २. ३.	पा४१११३
रेक १.	पा११४६
रेखा २.	३१९२४
” २.	६२३३२
रेचक ३.	८१९१५
रेचनी २.	३३११३८
रेचित १. २. ३.	३७११८
” १. २. ३.	३७११२२
” ३.	३९१९२
रेटि २.	६२३३२
रेणु १.	३८१२५
” १. २.	पा११४२
” १. २.	८१९२६
रेणुका २.	३८१९५
रेतस् ३.	पा४११११
” ३.	६३३२७
रेफ १. २. ३.	पा४१७५
रेमटि २.	३३६१९६
रेमण ३.	२४१२
रेरिहाण १.	१११४४
रेवट १. ३.	७१५६९
रेवती २.	१११५९
” २.	३३३१०९
” २.	३३३१८२
” २.	७२१२०
रेवतीकान्त १.	१११२३
रेवा २.	४२१२६
रेशी २ ख.	२११२०
रेषण ३.	२४१६
रेषा २.	२४१६
रै १. २.	८१५३८
रोक ३.	पा११२
” १. ३.	६१५६७
रोक्य ३.	पा४११०५
रोग १.	पा४११३८
रोगहारिन् १.	पा४११४३
रोगाख्य ३.	३८१९९
रोचक १.	पा३१२९

वैजयन्तीकोषः

रोचन १.	३३१९१
” १. २. ३.	पा४१४२
रोचना २.	७२१२०
रोचनी २.	३२१११
” २.	३३१९५
” २.	३३११३८
” २.	३३१२११
रोचिष्णु १. २. ३.	पा४१४२
रोचिस् ३.	२१११६
रोदन ३.	३९१८७
रोदनी २.	३३१२२५
रोदस २ द्वि.	३११५
रोदसी २ द्वि.	३११५
रोध १.	३७११८०
रोधस् ३.	पा२३१
रोधोवक्त्रा २.	पा२३२२
रोपण १.	३७११७९
रोमकर्ण १.	३३१३१
रोमज ३.	पा३११७
रोमन् ३.	३३१७५
” ३.	पा४१९७
रोमन्थ १.	३३१७५
रोमन्थन ३.	३३१७५
रोमश १.	३३१७५
” १.	३३१६४
” १. २. ३.	पा४१८
रोमशपुच्छक १.	पा११२७
रोमशी २.	पा११२७
रोमहर्ष १.	३९१८२
रोमहृत् ३.	३२११४
रोमाङ्क १.	३९१८२
रोमाञ्ज १.	३९१८२
रोमोद्गम १.	३९१८२
रोष १.	३३११८३
” १.	पा२१४
रोषाण १.	३९११९
” १. २. ३.	पा३७१
रोहणद्रुम १.	३८११२२
रोहणी २.	पा४१२९
रोहिणी २.	३३१४४
” २.	३८१८६

[लक्ष्मणा

रोहिणी २.	पा२१२१
रोहिणीकान्त १.	२११२४
रोहित १.	३३११४
” १.	८१९११
रोहित ३.	२२१३
” १.	३३१३०
” १.	३३११६
” १.	३३११५६
” १.	पा३११
रोहिताश्व १.	१२११५
रोहिन् १.	३३१३०
रौच्य १.	३३११६
रौद्र ३.	२११२२
” ३.	३९१७५
” १. २. ३.	३९१७९
रौद्री २.	१११४९
” २.	१११५८
” २.	३३११९२
” २.	८२११४
रौमक ३.	३८११२१
रौरव १.	१२१३७
रौहिणेय १.	८११३७
रौहितक १.	३३१३०
रौहिष १.	३३१३०
” १.	३३११६
” १. ३.	पा४१७१
ल	
लकुच १.	३३१७५
लक्ष १.	३३१३५
” ३.	३७११९४
” ३.	पा१३३२
” १. २. ३.	पा१५६९
लक्षण ३.	२११२९
” ३.	३७११९४
” ३.	पा२११
” ३.	७३१२८
लक्षा २.	पा१३३२
लक्ष्मण १. २. ३.	पा४१५६
लक्ष्मणा २.	२३१३३

लक्ष्मन् ३.	२।१।२९	लङ्घन ३.	५।२।१२	ललनाच १.	३।४।३४
” ३.	६।३।२९	लज्जा २.	३।६।१९४	ललन्तिका २.	४।३।१३६
लक्ष्मी २.	१।१।१६	लज्जालु २.	३।३।१४८	लकाट ३.	४।४।९६
” २.	१।१।३६	” २.	३।३।१४८	ललाटिका २.	४।३।१३६
” २.	३।६।१९१	लज्जाशील १. २. ३.	५।४।४०	” २.	४।३।१४९
” २.	३।८।९३	लज्जित १. २. ३.	५।४।५१	ललाम १. २. ३.	७।५।७२
” २.	३।८।१९	लट्ठ १.	४।३।५६	ललामक ३.	४।३।१५५
” २.	८।२।१९	लडह १. २. ३.	५।४।१३५	ललामन् १. ३.	७।५।७२
लक्ष्मीनिकेतन ३.	४।३।११४	लण्ड १. ३.	४।४।११९	ललित ३.	३।९।९६
लक्ष्मीपति १.	८।१।३८	लता २.	३।३।७	लल्लर १. २. ३.	२।४।१५
लक्ष्मीपुत्र १.	८।१।३८	” २.	३।३।६६	लव १.	२।१।५३
लक्ष्मीवत् १.	३।३।४२	” २.	३।३।१०४	” १.	५।२।२९
” १. २. ३.	५।४।५६	” २.	३।३।११७	लवङ्ग ३.	३।८।१०३
लक्ष्य ३.	३।७।१९४	” २.	३।३।१८७	लवण ३.	३।८।१२६
लक्ष्यग्रह १.	३।७।१९०	” २.	८।९।३	” १. २. ३.	४।३।९३
लगणा २.	३।३।१३९	लताकुश १.	३।३।२२८	” १.	५।३।२६
लगुड १.	३।९।२९	लताकोलि २.	३।३।७८	” १.	५।३।२७
लगुडवर्शिका २.	३।३।२१६	लताङ्कुर १.	३।३।२१९	लवणक्रीतक १.	३।५।८८
लग्न १.	३।७।६८	लतापूरा ३.	३।३।२१८	लवणलायिका २.	३।७।११६
लग्नक १. २. ३.	३।८।१०	लतामारिष १.	३।३।१५२	लवणाकर १.	३।२।१०
लघु १.	३।३।५३	लतार्क १.	३।३।२०५	लवणापण १.	४।३।३४
” २.	३।३।११६	” १.	३।३।२०७	लवणोत्कट १. २. ३.	४।३।९३
” ३.	३।८।१०७	लताबृहती २.	३।३।१०४	लवणोद १.	३।१।१०
” १. २. ३.	५।४।७६	लब्ध १. २. ३.	५।४।६४	लवन १.	५।२।२९
’ १. २. ३.	५।४।१२४	लब्धवर्ण ४.	३।६।२३५	लवली २.	३।३।२६
” १. २. ३.	६।४।१५	लभ्य १. २. ३.	६।४।१५	लवित्र ३.	३।८।३०
लघुक १.	३।३।२१९	लम्पट १. २. ३.	५।४।३६	लवेटिका २.	३।८।३१
लघुकाष्ठ १.	३।७।१९९	लम्पा २.	३।७।४६	लश १.	३।३।११
लघुग १.	१।२।४८	लम्पाक १ ब.	३।१।२५	लशुन ३.	३।३।२०४
लघुहस्त १. २. ३.	३।३।१४९	लम्बकर्ण १.	३।४।६२	” ३.	३।३।२०६
लघ्वक्षरक १.	२।१।५२	लम्बन ३.	४।३।१३७	लषित १. २. ३.	५।४।९६
लङ्का २.	६।२।३२	लम्बा २.	३।७।४६	लस ३.	३।८।११५
लङ्कायिका २.	३।३।११७	लम्बोदर १.	१।१।५३	” १.	४।४।१३५
लङ्केरवर १.	१।२।४३	लम्भन ३.	५।२।२०	” १.	५।३।५४
लङ्गन ३.	५।२।१२	लय १.	३।६।२००	लसिका २.	४।४।११८
लङ्गनी २.	४।३।५३	” १.	३।७।१९२	लसीका २.	४।४।११८
लङ्घन ३.	३।७।१२३	” १.	३।९।१२२	लस्तक १.	३।७।१७७
” ३.	४।४।१३९	लयनालिक १.	४।३।२८	(लस्तुक)	
		लल ३.	६।३।२९	लस्तकग्रह १.	३।७।१८९
		ललना २.	४।४।४		

लहरी २.	४१११४	लिच्छिवि १.	३५५५४	लेखक १.	३९१२३
लाक्षा २.	४३१५३	लिपि	३९१२४	लेखनी २.	३९११३
लाङ्गल ३.	३८१२७	लिपिकर १.	३९१२३	लेखा २.	३९१२४
लाङ्गलपद्धति २.	३८१३०	लिपिसन्नाह १.	३७१५४	" २.	४३११४९
लाङ्गलिन् १.	३३१२२०	लिप्त १. २. ३.	६४११५	" २.	५११२४
लाङ्गली २.	३३११९७	लिसिका २.	२११५३	लेख्य ३.	३८११२
लाङ्गूल ३.	३११७४	लिप्सा २.	३६१८०	लेह १.	११२५१
" ३.	७३१२९	लिप्सु १. २. ३.	५४१३५	लेप १.	४३११०२
लाङ्गूली २.	३३११३६	लिवि २.	३९१२३	" १.	६११५२
लाज १ व.	४३१६८	लिष्ट १. २. ३.	५४११५	लेपकार १.	३९११४
लाजमण्ड १.	४३१७९	लिह् १.	१११५१	लेप्य ३.	३९११३
लाजि २.	३९१२४	लीला २.	३९१८८	लेलिहान १.	४१२५
लान्छन ३.	२११२९	" २.	३९१९२	लेहा १.	२११५४
लाङ्गीक १.	३९१३	" २.	३९१९३	लेष्टु १.	३८१२४
लातक १.	३३११८९	" २.	३९१९७	लेहन ३.	४३११०३
लाभ १.	३८१७०	" २.	६२१३३	लेह्य ३.	४३१९१
लामज ३.	३३१२३१	लीमुष १.	५३१३८	लैङ्गिक १.	३६११६३
लाल १.	३११३६	लुङ्ग १.	३३१३३	लैङ्गधूम १.	३६१८०
" ३.	६३१२९	लुङ्गना २.	२४१२६	लोक १.	३६१२०६
लालक १. २. ३.	२४११५	लुठित १. २. ३.	३७१०७	" १.	६११५२
लालन १.	३८११११	लुठित १. २. ३.	५४११६	लोकजित् १.	१११३३
लालस २. ३.	५४१३६	लुब्ध १. २. ३.	५४१३५	लोकपाल १.	२११४
लालसा १. २. ३.	७५१७२	लुब्धक १.	३९१३८	" १.	८११३८
लाला २.	३३१२६	लुम्बिका २.	३९१३५	लोकान्ताद्रि १.	३२१३
" २.	४४१२०	लुलाय १.	३४१९	लोकालोक १.	३२१३
लालाटिक १. २. ३.	८४१११	लुलित १. २. ३.	५४११०३	लोचक १. २. ३.	३६१३३
लालिका २.	३७११२	लुष १.	३५१३१	" १. २. ३.	७५१७३
लाव १.	२३१४०	(युष)		लोचन ३.	४४१९४
लावण १.	३१११०	लुस्त ३.	३७१७७	लोचना २.	२४१२८
लावली २.	३३१२६	लृत् १. २. ३.	५४१४४	लोचमस्तक १.	३८११०२
लास्य ३.	३९१७३	लृता २.	४११३४	लोचमालक १.	३३११९९
लिकुच १.	३३१७५	लृतात १.	४११३६	लोटन ३.	५२१४२
लिङ्गा २.	४४१४२	लृतापट्ट १.	४११३५	लोटना २.	२४१२८
लिङ्गु १.	३४१११	लृतिका २.	४११३४	लोठमू २.	३७११२
" १.	६५१५१	लृन १. २. ३.	४१११०२	लोत १.	३९१८७
लिङ्ग ३.	५१११७	लृनदोस् १.	१११५२	लोघ्र १.	२११८७
" ३.	६३१३०	लृमन् ३.	३४१७४	" १.	३३१५२
लिङ्गज्येष्ठ ३.	३६१६३	लेख १.	१११३	" १.	३३१५२
लिङ्गवृत्ति १. २. ३.	३६१९	" १.	३८१२	लोपा २.	२३१२५
लिङ्गवोफ १.	४४१३२			लोपासुद्धा २.	३६१५३

[लोपायिका]

शब्दानुक्रमिका

[वञ्चक]

लोपायिका २.	२।३।२५	लोहितचन्दन ३.		वक्रपद ३.	४।३।११९
लोपास १.	३।४।३९		३।८।११६	वक्राख्य ३.	३।२।३१
लोप्त्र ३.	३।९।५८	लोहिता २.	१।२।३०	वक्राङ्ग १.	२।३।६
लोभन ३.	३।२।१९	लोहिताक्षक १.	४।१।१५	वक्रोष्ठक १. २. ३.	३।९।८३
" १.	३।८।३६	लोहिताङ्ग १.	३।१।३१	वक्त्रश्छद १.	३।७।१५३
लोमन् ३.	४।४।९७	लोहिताहि १.	४।१।१२	वक्षस् ३.	४।४।६८
" १. ३.	८।९।३१	लोहितीक ३.	५।१।४७	वक्षसिज १.	४।४।६८
लोमश १. २. ३.	५।४।८	लोहित्य १.	३।१।१७	वङ्गि १.	४।४।११५
लोमशी २.	३।८।१००	लोह्य ३.	३।२।२६	वङ्गण १.	४।४।५९
लोल १.	३।७।२०६	(लोभ्य)		वङ्ग १ व.	३।१।३१
" १. २. ३.	५।४।३६	लौह ३.	३।२।३३	" ३.	३।२।३१
" १. २. ३.	६।४।१६	व		वङ्गजीवन २.	३।२।२४
लोलम्ब १.	२।३।४२	व ४.	८।८।१५	वङ्गसेनक १.	३।३।१५६
लोलिका २.	३।८।५८	वंश १.	३।३।११	वचन ३.	२।४।२१
लोलुप १. २. ३.	५।४।३६	" १.	३।३।२१४	" ३.	२।४।३४
लोलुभ १. २. ३.	५।४।३६	" १.	३।३।२२६	वचनेस्थित १. २. ३.	५।४।४९
लोष्ट १. ३.	३।८।२४	" १.	३।९।१२५	वचस् ३.	२।४।२१
लोष्टभक्षण १.	३।८।२९	" १.	४।४।४९	वचा २.	३।३।१९७
लोह ३.	३।२।३३	" १.	४।४।६६	वचाच्छद १.	३।३।१२१
" ३.	३।२।३६	" १.	६।१।५२	वज्र १. ३.	१।२।१३
" १. ३.	६।५।६९	वंशक ३.	३।८।१०७	" १. ३.	२।२।६
लोहकारक १.	३।९।१६	वंशज १.	४।४।५०	" १. ३.	३।२।३९
लोहकार्पाण १.	५।१।३९	वंशपत्र ३.	३।२।१४	" ३.	३।३।२०२
लोहज ३.	३।२।२९	वंशरोचना २.	३।८।९०	" १. ३.	३।६।१४६
लोहदण्ड १.	३।७।१६७	वंशवर्ण १.	३।८।४३	" १. ३.	३।५।६८
लोहपृष्ठ १.	२।३।३१	वंशिक १.	३।१।६१	" १. ३.	८।६।३
लोहमात्र १.	३।८।१५६	" १.	३।५।२३	वज्रदक्षिण १.	१।२।७
लोहमारक १.	३।३।१५६	" ३.	३।८।१०७	वज्रधारण ३.	३।२।२२
लोहमालक १.	३।५।३६	वंशिका २.	३।९।१२५	वज्रनिष्पेष १.	२।२।६
लोहल १. २. ३.	५।४।४७	वंश्य १.	४।४।५०	वज्रपाणि १.	१।२।५
लोहशृङ्खल १.	३।७।८५	वंश्या २.	३।८।५०	वज्रपुष्प ३.	३।८।४०
लोहसंश्लेषक १.	३।८।१३०	वकुल १.	३।३।२६	वज्रा २.	३।३।९७
लोहाख्य ३.	३।८।८०	वक्तव्य १. २. ३.	८।४।१५	वज्रांशुक ३.	४।३।११९
" १.	३।८।१०७	वक्तृ १. २. ३.	५।४।४५	वज्राभिषवण ३.	३।६।१४७
लोहामिसार १.	३।७।२००	वक्त्र ३.	४।४।८६	वज्रासन ३.	३।६।२१८
लोहित १. २.	३।८।१२६	वक्त्रपट्ट १.	३।७।११४	वज्रिन् १.	१।२।१
" १.	४।१।४३	वक्र १.	२।१।३६	वज्री २.	३।३।९८
" ३.	४।४।१०५	" १.	४।४।९१	वञ्चक १. २. ३.	५।४।२४
" १.	५।३।११	" १. २. ३.	५।४।१२३		
लोहितक ३.	३।२।३९	वक्रकील १.	३।७।८५		
		वक्रवृष्ट १.	३।४।५		

वक्षक]

वैजयन्तीकोषः

[वमति

वक्षक १. २. ३.	७५५७४	वत्सनाम १.	१४१२४	वनस्पति १.	३३३६
वक्षति १.	१२११८	वत्सर १.	२११९०	" १.	८११४२
वक्षथ १.	७११६४	वत्सरान्ता ३.	२११७७	वनायुज १.	३७१८५
वक्षन ३.	५२१३५	वत्सल १. २. ३.	५४११८	वनालु १.	३३११५०
वञ्जुल १.	२३१११	वत्सला २.	३४१४७	वनाश १.	३८१५२
" १.	२३१२६	वत्सादनी ३.	३३११३२	वनिता २.	४४१४
" १.	३३३३१	वत्सीय १. २. ३.	३११२८	" २.	७२१२५
" १.	३३३४०	वद १. २. ३.	५४१४५	वनी २.	३३११
" १.	३३३४६	वदन ३.	४४१८६	वनीपक १. २. ३.	५४१६०
वञ्जुला २.	३४१४५	वदान्य १. २. ३.	७४१२६	वनेवासिन् १.	३६१२४
वट १.	३३१२७	वदाल १.	४११४३	वनोद्भवा २.	३३११८४
" १.	३५११७	वदावद १. २. ३.	५४१४५	वनौकस् १.	३४१४०
" १. २. ३.	३९१३०	वघ १.	३७१२११	वन्दन ३.	३६३३९
" १. २. ३.	८९१३७	" १. २. ३.	६५१७५	वन्दनमाला २.	३६१५९
वटक ३.	५११४८	वधरत १. २. ३.	३६१११	वन्दा २.	३३३८४
वटाश्रय १.	१२१५६	वधस्थान ३.	३९१३७	वन्दाक १.	३३३८४
वटी २.	३९१३०	वघा २.	३३११४९	वन्दारु १. २. ३.	५४१४३
" २.	८९१३७	वधिर. १. २. ३.	५४११३	वन्दिन् १.	३५१७८
वट्ट १. २. ३.	५४१३	वधू २.	४४१४	" १.	३५१८१
वट्टकृति २.	३६१९	" २.	४४१७	" १.	३७३३०
वडबा २.	३७१०७	" २.	४४३३५	वन्दीक १.	१२१७
" २.	४४१२६	" २.	४४३३६	वन्ध्य १. २. ३.	३३३८
" २.	७२१२२	" २.	४४३३६	वन्ध्या २.	३४१४७
वडबामुख. ३.	४११११	वधूटी २.	४४१९	वन्थ १.	३३११३३
" १.	८११५५	वधोद्यत १. २. ३.	५४१६८	" ३.	४२१३६
वणिग्गृह ३.	४३३३४	वन ३.	३३३१	वन्था २.	३३३१६१
वणिज् १.	३८१७२	" ३.	४२१२	" २.	५१११४
वणिजा २.	३८१३	" ३.	६३३३१	वपन ३.	३६१४
वणिज्य ३. २.	८९१३२	वनकोद्रव १.	३८१५५	" ३.	३९१२६
वणिज्या २.	३८१३	वनगव १.	३४३३३	वपनी २.	४३१२५
वण्ट १.	५२१७	वनच्छाग १.	३४३३३	वपा २.	४११२
वण्टफ १.	३८३३०	वनज १.	२३३४१	" २.	६२३३३
वतंस १.	४३१५४	" ३.	४२३३६	वपुस् ३.	६३३३०
" १.	८११५९	वनतिक्रिका २.	३३३३३०	" ३.	८३३१७
वत्स १.	२११९१	वनद्रुम १.	३८११०८	वप् १.	४४३२९
" १.	३३३७३	वनन १.	३४१११	वप्र १. ३.	३२१७
" १.	३४५५१	वनप्रिय १.	२३३२७	" १. ३.	३८३२६
" १. २. ३.	५४१२	वनमाय १.	३८११०८	" १. ३.	४३३१३
" १. २. ३.	६५७३	वनमालिन् १.	१११२५	" १. ३.	६५७९
वत्सकामा २.	३४१४७	वनमुद्ग १.	३८३३८	वमति १.	८९११०
वत्सतर १.	३४१५४				

[वमथु]

वमथु १.	३।७।८२
" १.	४।४।१२६
" १.	८।९।१३
वमि १.	१।२।१८
" २.	४।४।१२६
वम्र १. २. ३.	४।१।३८
वयस् ३.	४।४।५३
" ३.	४।४।५३
" ३.	६।३।३०
वयस्य १. २. ३.	३।७।४३
वयस्या २.	३।३।११२
" २.	४।४।२५
वयस्स्थ १. २. ३.	५।४।३
वयस्स्था २.	७।५।७८
वर १.	२।३।१८
" ३.	३।२।१४
" ३.	३।३।५४
" १.	३।३।५५२
" ३.	३।३।१९९
" १.	३।८।११०
" ३.	३।८।११७
" १.	३।८।१२७
" ३.	४।४।१११
" १. २. ३.	५।४।६४
" १. २. ३.	६।५।७२
वरक १.	३।८।३८
" १.	३।८।५४
" १.	४।३।१२७
वरट १. २.	८।९।२६
वरटा २.	२।३।८
" २.	२।३।४६
वरण ३.	२।१।६३
" १.	३।३।४१
" १.	४।३।१४
वरण्ड १.	४।३।६५
" १.	४।४।१२५
वरत्रा २.	३।७।८४
" २.	३।९।४४
वरनिमन्त्रण ३.	३।६।५६
वरप्रदा २.	३।६।१५३
वरयात्रा २.	३।६।५६

शब्दानुक्रमणिका

वरयितृ १.	४।४।३७
वररुचि १.	३।६।१५८
वरला २.	२।३।८
वरवर्णिनी २.	८।२।१३
वरवाहन १ द्वि.	१।३।५
वरा २.	३।३।१०५
" २.	३।३।१७९
" २.	३।३।२१३
" २.	३।३।२३३
वराङ्ग ३.	३।८।१०४
" ३.	७।३।२९
वराङ्गना २.	३।३।२२४
वराङ्गा २.	३।४।४५
वराट १.	३।९।३०
वराटक १.	४।१।५७
" १.	४।२।४५
वराणक १.	३।५।५०
" १.	३।६।१५९
वराधि १.	३।९।३९
वरान्तक १.	१।३।६
वराभ १.	३।४।६१
वराम्ल १.	३।३।३३
वरारोहा २.	३।३।१८४
" २.	३।३।१९९
" २.	४।४।१२
वरार्गल १.	३।३।७९
वराल १.	५।३।१४
वरालक ३.	३।८।१०३
वराला २.	१।३।८
वराश्रि १.	५।३।२८
वरासि २.	४।३।१२६
वराह १.	३।४।५
वराहकन्द १.	३।३।२१०
वराहकर्णक १.	३।७।१६७
वराहद्वीप ३.	३।१।१४
" ३.	३।१।१८
वरिवसित १. २. ३.	५।४।१०५
वरिवस्या २.	३।६।३८
वरिष्ठ १.	२।३।३५
" ३.	३।२।२५

[वर्णिनी]

वरिष्ठ १. २. ३.	७।४।२५
वरीयस् १. २. ३.	७।४।२६
वरुट १.	३।५।५५
वरुण १.	१।२।४५
वरुणकाष्ठिका २.	३।६।१०८
वरुणकृच्छ्रक ३.	३।६।१४१
वरुणग्रह १.	४।४।१३४
वरुणप्रिया २.	१।२।४६
वरुणावास १.	४।२।११
वरुथ १.	३।७।१३२
वरुथिनी २.	३।७।५५
वरेणुक १.	३।८।३१
वरेण्य १. २. ३.	५।४।६३
वरेन्द्री २.	३।१।२१
" २.	३।१।३०
वरोत्कट १.	३।४।४
वरोत्पल ३.	४।२।३५
वर्ग १.	५।१।४
" १.	५।१।३६
वर्चस् ३.	६।३।३१
वर्चस्क १.	४।४।११९
वर्जन ३.	५।२।४०
" ३.	७।३।२९
वर्ण १. ३.	२।४।२१
" १.	३।५।२
" १.	४।३।१५६
" १. २. ३.	६।५।७०
वर्णक ३.	३।६।५६
" ३.	४।३।१४७
" १. २. ३.	७।५।७९
वर्णतर्णक १. २. ३.	८।९।३२
वर्णन ३.	५।२।३९
वर्णा २.	३।८।४९
वर्णि १.	८।९।१०
वर्णित १. २. ३.	५।४।१०६
वर्णिन् १.	३।६।७
वर्णिनी २.	३।३।२१२

वर्णिलिङ्गिन्]

वैजयन्तीकोषः

[वशीकार

वर्णिलिङ्गिन् १. २. ३.	३१६९
वर्ण्य ३.	३१८११६
वर्तक ३.	२३३४०
” ३.	३३३२०१
” १.	७११६४
वर्तन ३.	२४३२२
” ३.	३३७१११
” ३.	३१८१
” ३.	५२३४१
” १. २. ३.	५४४४०
वर्तनी २.	७२३२१
वर्ति २.	४३३१६१
” २.	४३३१६१
वर्तिष्णु १. २. ३.	५४३९०
वर्तुल १. २. ३.	५४३८२
वर्तुलाक्ष १.	२३३३०
वर्त्म ३.	४४४९५
वर्त्मन् ३.	४४४९५
वर्द्धी २.	३१९४४
(वध्री)	
वर्धकि १.	३१९३४
वर्धकिहस्त १.	३१९५६
वर्धन ३.	४३३१००
” १. २. ३.	५४४४०
” ३.	७३३२९
वर्धनी २.	४३३५७
वर्धमान १.	४३३५९
” १.	८१३४४
वर्धिष्णु १. २. ३.	५४४४०
वर्धी २.	६२३३४
वर्मन् ३.	३३७१५२
वर्मि १.	८१९१०
वर्मित १. २. ३.	३३७१४२
वर्य १. २. ३.	५४४६३
वर्या २.	४३३७
वर्ष १. ३.	२११९१
” १. ३.	२२२१७
” १. ३. २. ब.	६५७९
वर्षकारी २.	३६५५२
वर्षण ३.	२२२७

वर्षमुख १.	२११८१
वर्षवर १.	३३२३
वर्षा २. ब.	२११८९
” २.	३३३११७
वर्षाभी १.	४३३१८
वर्षाभू १. २.	७५७७
वर्षाभ्वी २.	३३३१४५
वर्षामद १.	२३३३७
वर्षायस् १. २. ३.	५४४४
वर्षमन् १. ३.	६५८१
वल १.	६११५३
वलक्ष १.	५३३१५
वलम्न १.	४४३६७
वलज १.	५३३४०
” ३.	७५७७
वलजा २.	३३३६५
” २. ३.	७५७७
वलन ३.	३१९११
” १.	५३३५२
वलना २.	२३३२५
वलभी २.	४३३३१
” २.	४३३३९
वलय १.	१२३५१
” १.	३३३२५
” १.	३३३९९
” ३.	४३३१४४
वलथित १. २. ३.	५४४९६
वलरिपु १.	१२३२
वलाङ्ग १.	२११८७
वलाहक १.	२२३१
” १.	३३३७८
” १.	४१११२
” १.	४१११७
वलाहका २.	३३३९८
वलि २.	३२३३३
वलिन १. २. ३.	५४४७
वलिभ १. २. ३.	५४४७
वलिर १. २. ३.	५४४१३
वलीक ३.	४३३३७
वलीनक १.	३३३२३

वलीमुख १.	३३४४०
” ३.	३३८१४१
वल्क ३.	३३३१४
वल्कल १. ३.	३३३१३
वल्गन ३.	३३७१२२
वल्गा २.	३३७११४
वल्गित १. २. ३.	३३७११८
” १. २. ३.	३३७१२२
वल्गु ३.	४४४९५
” १. २. ३.	६४४१६
वल्मीक १. ३.	३३१४८
वल्की २.	३३९११६
वल्म १. २. ३.	५४४७०
” १. २. ३.	७४४२५
वल्गरि २.	३३३२०
वल्गरीका २.	४४४९९
वल्गव १.	३३९२८
” १. २. ३.	४३३९२
वल्गा २.	३३८४८
वल्गार १.	३३५५२
वल्गी २.	३३३७
वल्गीपद ३.	४३३११९
वल्गूर ३.	४२३३
” १. २. ३.	४३३८९
वल्ग १.	३३३८३
” १.	३३५५९
” १. २. ३.	५४४२८
” १. २. ३.	५४४१३२
” १. २. २.	६५७७
” १. २. ३.	६५७७
वल्गा २.	३३३८६
” २.	३३४४७
” २.	४४४४
” २.	६५७७
वल्गाकु १.	२३३३
वल्गामख १.	३३५२७
वल्गिक १. २. ३.	५४४८७
वल्गिन् १.	४३३५४
वल्गीकार १.	३३३११७

वश्य १. २. ३.	५४३२	वस्त्रान्त १.	४३१३१	वाच्य १. २. ३.	८४१५
वषट् ४.	८८३	वस्त्र १.	३८८७०	वाज १.	२३३४९
वसति २.	७२२३	” ३.	३८१२२	” १.	३७१८५
वसन ३.	४३११६	वस्त्रौकसार २.	१२१५९	” १.	४३१७६
वसन्त १.	२११८७	वह १.	१२१४८	वाजिदन्तक १.	३३१०१
वसन्तघोष १.	२३२७	” १.	६११५३	वाजिन् १.	६११५५
वसा २.	४४११४	वहन ३.	३७१२४	वाजिन ३.	३६१९८
वसिक १. २. ३.	३३१३४	वहा २.	४२१२३	वाजिशाला २.	४३१२१
वसित ३.	४३११६	वहि १.	६११५३	वान्छा २.	३६१७९
वसिष्ठ १.	३६१५५	वहिन ३.	३७१२४	वाञ्छित १. २. ३.	५४१९९
वसीर १.	३८१७८	वहिनकर्म १.	३६१२१	वाट १.	३५२१
वसु १ व.	१३१८	वहिन १.	३४१५२	” १. ३.	४३११४
” १.	३११५४	वह्नि १.	१२११४	” १. २. ३.	८११३७
” ३.	३२१३६	वह्निक १.	५३१८	वाटक १. ३.	४३१५
” १.	३३१५	वह्निक्षिख ३.	३८१९१	वाटधान १.	३५५३
” १.	३३१९४	वह्निसुत १.	४४१०४	” १.	३५१०१
” १. २. ३.	३८१११	वा ४.	८८१६	वाटिका २.	३३१२७
” १.	३८१३६	” ४.	८८१५	वाटी २.	३३१४
” ३.	३८१७३	वाक्पति १.	५४१४५	” २.	३३१३०
” १.	६१५७८	वाक्य ३.	२४१२१	” २.	८११३७
वसुदेव १.	१११२६	वाचट् ४.	८८१३	वाटयपुष्पी २.	३३१२७
वसुधा २.	३११२	वागीश १. २. ३.	५४१४५	वाटयमण्ड १.	४३१७९
वसुन १.	३६१८३	वागुर १.	३५११७	वाटया २.	३३१२७
वसुन्धरा २.	३११२	वागुरा २.	३९१३९	वाटयाल १.	३३१२८
वसुमह १.	३३१९४	वागुरिक १.	३९१३८	” १.	३८१५४
वसुमती २.	३११२	वागूजी २.	३३१०८	वाडबैय १.	८११३९
वसुरेतस्	१२११६	वागुद १.	२३१२८	वाण ३.	२४१११
वसुवह्नि २.	३३११०८	वागिमन् १.	२३१२५	वाणि २.	३९१८
वसुवत ३.	३६११४९	” १. २. ३.	५४१४५	वाणिज १.	३८१७२
वस्त ३.	४३११७	वाघत् १.	३६१७८	वाणिज्य ३.	३८१३
(वस्त्र)		वाच् २.	११११	वाणिनी २.	७२१२३
वस्ति १. २.	४३११३१	वाच्यम १.	३६१५०	वाणी २.	१११९
” १. २.	४४१६६	वाचस्पति १.	२११३३	वात १.	१२१४७
वस्तिशुण्डक ३.	३६१२१७	वाचाट १. २. ३.	५४१४६	वातगामिन् १.	२३१४
वस्य ३.	४३११७	वाचाल १. २. ३.	५४१४६	वातम १.	३३१६५
वस्त्र ३.	४३११६	वाचाला २.	२३१२०	वातपात १.	२२१६
वस्त्रकोश	४३१६३	वाचिक ३.	२४१२५	वातपोथ १.	३३१२९
वस्त्रग्रन्थ १. ३.	४३११३०	” ३.	२४१३६	वातप्रमी १.	३४११६
वस्त्रधारणी २.	४३१५३	” १. २. ३.	३९१९९	” १.	८११३८
		वाचोयुक्तिपट्ट १. २. ३.	५४१४५	वातमृग १.	३३११६

वातल]

वातल १. २. ३.	४४११४५
वातसख १.	१२११७
वातसञ्चार १.	४४१२७
वातसारथि १.	१२११७
वातसुत १.	३१९७०
वातापिसूदन १.	३६१५२
वातायन ३.	४३१५४
वातायु १.	३४११६
वाताहार १. २. ३.	३६१३१
वाति २.	१२१४८
वातिक १.	४११२५
वातिङ्गन १.	३३११०२
वातुल १.	३६१४३
वातूल १. २. ३.	७५६८०
वात्या २.	२११५१
” २.	५१११४
वात्सक ३.	५१११०
वात्स्यायन १.	३६१५५९
वादन ३.	३९१११४
” ३.	३९११२१
” ३.	३९११३१
” ३.	३९११३६
वादर १. २. ३.	४३१११७
वादित्र ३.	३९१११४
” ३.	३९११३६
वादित्रलगुड १.	३९११३६
वाघ ३.	३९१११४
वाघनिर्घोष १.	३९११३६
वाघवादकसामग्री २.	३९११४०
वान १. २. ३.	३३११०
” ३.	३९१८
” १. २. ३.	६५६८०
वानक ३.	३६११४
वानदण्डक १.	३९१८
वानप्रस्थ १.	३३१४३
” १.	३६११२४
” १.	८११४०

वैजयन्तीकोषः

वानर १.	३४१३९
” १.	८६१७
वानवासिक १.	३५१२०
वानस्पत्य १.	३३१६
वानीर १.	३३१३१
वान्ताशिन् १. २. ३.	३६१९
वान्ति २.	४४११२६
वापिम १.	३६१६४
वापी २.	४२१६
वाप्य ३.	३६१९९
वाम १.	१११२९
” १.	१२१५५
” १. २. ३.	६४११६
वामदेव १.	१११४२
वामन १.	११११९
” १.	१२१८
” १. २. ३.	५४१८१
वामल्लर १.	३११४८
वामलोचना २.	४४१५
वामा २.	१११४८
” २.	४४१५
वामी ३.	३७११०७
वायव्य १.	२११९१
” १. २. ३.	३६११०१
वायस १.	२३११६
” १.	८६१६
वायसाली २.	३३१२२६
वायसी २.	३३१११२
” २.	३३११४९
वायु १.	१२१४७
वायुन १.	१११२
(वयुन)	
वायुवर्त्मन् ३.	२१११
वायुसम्भवा २.	३४१४४
वार् २. ३.	४२१३
वार १.	५१११
” १.	५२१७
वारक ३.	३७१५०
वारट १.	५११५१

[वार्ताहर

वारण १.	१२१७
” १.	३७१६१
” १.	४२११०
वारणावत ३.	४३१९
वारणासी २.	४३१७
वारबुसा २.	३३११७३
वारमुल्या २.	४४१४२
वारवाण १. ३.	८५१२२
वारवाणि १.	८११४२
वारच्छी २.	४४१२४
वाराणसी २.	४३१७
वाराह ३.	३१११८
वाराही २.	१११६४
” २.	३३१२१०
वारि ३.	४२११
” २.	६५१८२
वारिकूट १.	४३११५
वारिज ३.	३६१११९
वारिधर १.	२२११
वारिपर्णी २.	४२१४६
वारिपिण्ड १.	४११४८
वारु १.	३७१९०
” २.	६२१३७
वारुणपाशक १.	४११५२
वारुणी २.	१११५९
” २.	३३११०९
” २.	३९१४६
वार्च ३.	३३११
वार्त ३.	४४१४२
” १. २. ३.	४४१४३
वार्ता २.	२४१३९
” २.	३६११
” २. १. ३.	६५१२५
वार्ताकशाकट १. २. ३.	३६१२१
वार्ताकशाकिन १. २. ३.	३६१२१
वार्ताकी २.	३३११०२
” २.	३३११०४
वार्ताकु २.	३३११०२
वार्ताहर १.	३९१६

[वार्तिक]

शब्दानुक्रमणिका

[विकराल]

वार्तिक ३.	३१६५६	वाक्षा २.	३१३१०२	वास्तोष्पति १.	११२१२
„ १.	३१७२९	वाशित ३.	२१४४	वास्त्र १. २. ३.	३१७१२९
वार्द्धक ४.	७३३३०	वाशिता २.	७२१२२	वाह १.	३१४५२
„ ३.	८१९१७	वाशी २.	२११२०	„ १.	३१४६५
वार्थुष ३.	३१९५	वास १.	३३१९१	„ १.	५११५६
वार्थुषिक १. २. ३.	३१९८	„ १.	३१७१८	„ १.	५११५८
वार्थुषिन् १. २. ३.	३१९८	वासक १.	३३१०१	„ १.	५११५८
वार्थुष्य ३.	३१९५	वास्तयेयी २.	२११५७	वाहन ३.	३१७१२३
वार्ध्वाणस १.	३१४८	वासन १.	४३३४५	वाहनी २.	४३३१७
(वार्ध्वाणस)		„ ३.	४३३१६७	वाहवारण १.	३१४३३
वार्मण ३.	५१११३	„ ३.	५१४४९	वाहस १.	४१११९
वार्मिक १.	३१५४०	वासना २.	४३३१५८	„ १.	७११६५
वार्पी २.	२११८९	वासनी २.	३३३१६८	वाहि १.	८१९१०
वाल १. ३.	४३३१६०	वासनीयक ३.	३८१११६	वाहिक १.	५११५३
„ १.	४४१९८	वासन्त १.	३३३६१	वाहित १.	३१७८७
„ १.	६११५४	„ १.	३८३३७	„ ३.	५११६४
वालक ३.	७३३३१	वासन्ती २.	३३३१८२	वाहित्य ३.	३१७७३
वालकूर्चा १.	४४१००	„ २.	३३३१८७	वाहिनी २.	३१७५५
वालकेशी २.	३३३१२३०	वासयोग १.	४३३१५७	„ २.	३१७५८
वालधि १.	३१४७४	वासर १. ३.	२११५५	„ २.	४३२२३
वालनाटक १.	३१८५४	„ १.	७११७२	वाहिनीपति १. २. ३.	३१७१४१
वालपाशक १.	३१७८१	वासव १.	११२११	वाहीक १ व.	३११२७
वालपाश्या २.	५३३१३६	„ १.	३३३१०८	वाह्य १.	३१४५२
वालमृग १.	३१४२९	वासस् ३.	४३३११६	„ ३.	३१७१२३
वालवायज १.	३१२४०	„ १.	८१६१६	वि १.	३१२१२
वालवीज्य १.	३१४६३	वासागार ३.	४३३२०	„ १.	८११६०
वालहस्त १.	३१४७४	वासिक ३.	४३३४१	„ ४.	८१७६
वालिका २.	४३३१३५	वासिष्ठ ३.	४४३१०६	विंश १. २. ३.	५११२२
वालिनी २.	२११४२	वासी २.	३१९३६	विंशति २.	५११२६
वालुक ३.	३१८९६	वासुकि १.	४११३	विंशतितम १. २. ३.	५११२२
„ ३.	४११२३	वासुदेव १.	११११२	विंशतिमुज १.	११२४२
वालुका १ व.	४१२३३	„ १.	८११३९	विकङ्कत १.	३३३३८
„ २.	७२२४	वासू २.	३१९१०७	विकच १ व.	११२३७
वालुकी २.	३३३१६७	वास्तु १. ३.	४३३१०	„ १. २. ३.	३३३९
वालक १. २. ३.	४३३११७	„ १. ३.	६१५८०	विकट १. २. ३.	५१४८२
वालमीक १.	३३३१५३	वास्तुक १.	३३३१५४	„ १. २. ३.	५१४१२६
वालमीकि १.	३३३१५३	वास्तुकशाकट १. २. ३.	३८१२१	„ १. २. ३.	७१२६
वावदूक १. २. ३.	५१४४५	वास्तुकशाकिन १. २. ३.	३८१२१	त्रिकटा २.	३१७४७
वावाता २.	३१७३२	वास्तुमध्य ३.	४३३१०	विकराल १.	३१४७
वाशन ३.	२१४४				

[विकराल]

वैजयन्तीकोषः

[विताली]

विकराल १. २. ३. ५१४८२
विकरालिन् १. ५१३९
विकर्णि १. ३१७१८२
विकर्तन १. २११११
विकर्मन् ३. ३१६११७
विकल १. २. ३. ५१४८६
विकला २. ३१६५०
विकलाङ्ग १. २. ३. ५१४११
विकल्पना २. २१४४०
विकसा २. ३१३१३५
विकार १. ५१२२२
” १. ७११६६
विकालक १. २११६५
विकिर १. २१३३
” १. ४१२१८
” १. ७११७०
विकिञ्चु १. ३११५६
विकुण्ठना २. ३१६१७५
विकुर्वाण १. २. ३. ५१४३३
विहृत १. २. ३. ३१९७८
” ३. ३१९९५
” १. २. ३. ४१४१४४
” १. २. ३. ७१४२५
विक्र १. ३१७६६
विक्रम १. ५१२१६
” १. ५१२१७
विक्रय १. ३१८६९
विक्रयिक १. २. ३. ३१८६८
विक्रान्त १. २. ३. ३१७१४७
” ३. ३१९४८
विक्रायिक १. २. ३. ३१८६८
विक्रेतृ १. २. ३. ३१८६८
विक्रेय १. २. ३. ३१८६९
विकलच १. २. ३. ५१४६७

विद्युभा २. २११२३
विद्योभ १. ३१७७४
विगण्डीर ३. ३१३१५१
विगत १. २. ३. ७१४२४
विगतनासिक १. २. ३. ५१४१२
विगता २. ३१६४८
विगन्धिका २. ३१२१२
विगन्धिन ३. ४१२३६
विगम १. ५१२२७
विगर्वा २. २१४२८
विगीत १. २. ३. ३१६११
विग्रक १. ३१३८४
विग्र १. २. ३. ५१४१२
विग्रह १. ३१७६
” १. ५१२३
” १. ७११६८
विघन १. ३१६१०२
विघस १. ३१६६७
विघसासिन् १. ३१६४१
विघूणिका २. ४१४९१
विघ्न १. ५१२४
विघ्नेश १. १११५३
विचकिल १. ३१३१८३
विचक्षण १. ३१६२३४
विचक्षणा २. ३१८४७
विचयन ३. ५१२४२
विचर्चिका २. ४१४१२३
विचारिका २. ३१७३७
विचारोक्ति २. २१८२८
विचिकित्सा २. ३१६१७७
विचुल १. ३१३५०
विचोलक १. ११२४३
विच्छित्ति २. ३१९९३
विच्युत १. २. ३. ५१४१०२
विजन १. २. ३. ५१४११९
विजन्मन् १. ३१५१०४
(द्विजन्मन्)
विजय १. ३१७१५९
” १. ३१७२०९

विजयच्छन्द १. ४१३१३९
विजविल १. २. ३. ५१३४
विजाता २. ४१४१७
विजाति २. ३१४२६
विजिज्ञासा २. ४१६१७५
विज्ञ १. २. ३. ५१४१९
विट १. २१९७०
” १. ४१४३९
विटका २. ४१३३८
विटकान्ता २. ३१३२१२
विटङ्क १. ३१३१७२
” १. ३. ४१३५४
विटप १. ३१३१६
” १. ३१८७३
” १. ३. ७१५१६२
विटपिन् १. ३१३४
विटाटिका २. ३१३१४६
” २. ४१३३८
विटाश्रय १. ४१३२७
विट्खदिर १. ३१३६४
विट्चार १. ३१४७१
विट्पति १. १११४
विह १. ३१८१२४
विहङ्ग १. ३. ३१८९७
” १. २. ३. ८१९३८
विह्व ३. ४१४१०८
वितंस १. ३१९४१
वितत ३. ३१९११५
” ३. ३१९११६
वितथ १. २. ३. २१४१७
वितरण ३. ३१६११८
वितर्क १. ३१६१७६
वितर्दिका २. ४१३३६
वितस्ति २. ३११५३
” २. ४१४८०
” १. २. ८१९२७
वितान ३. ३१७१९०
” १. ३. ४१३१२३
” १. २. ३. ७१५७६
विताली २. ३१९१२४

[वितुल्लक]

वितुन्नक ३.	३।२।४२
वित्त ३.	३।८।७३
” १. २. ३.	६।५।७४
वित्तेश १.	१।२।५७
विदग्ध १.	५।३।१८
” १. २. ३.	५।४।२०
विदण्ड १.	४।३।५०
विदर १.	५।२।४१
विदल १. २. ३.	३।३।१४
विदा २.	६।६।१६३
विदारक १.	४।२।३१
विदारण ३.	८।३।१२
विदारी २.	३।३।२३
” २.	३।३।१९५
विदित १. २. ३.	५।४।१०१
” १. २. ३.	७।४।२३
विदिशू २.	२।१।३
विदुर १. २. ३.	५।४।४३
विदुल १.	३।३।३१
(अम्बुप्रिय)	
विदूषक १.	३।९।६९
विदूषिका २.	३।६।५३
विदेह १ व.	३।१।३०
विद्ध १. २. ३.	५।४।९७
” १. २. ३.	५।४।१११
” १. २. ३.	६।४।१७
विद्धकर्णौ २.	३।३।१३१
विद्धायुध ३.	३।७।१७३
विद्या २.	३।६।२७
” २.	३।६।३०
विद्याधर १.	१।३।४
विद्युत् २.	२।२।३
” २.	३।२।१२
विद्रधि १. २.	४।४।१३७
विद्रव १.	३।७।२११
विद्रुत १. २. ३.	४।३।९५
विद्रुम १.	३।२।३९
” १.	७।१।६५
विद्रुमलता २.	३।८।९५
विद्रुस् १.	३।६।२३४

शब्दानुक्रमणिका

विद्वेष १.	३।६।१८४
विधवा २.	४।४।१४
विधा २.	३।६।३५
” २.	६।२।३४
विधातृ १.	१।१।६
विधान ३.	७।३।३३
विधि १.	१।१।९
” १.	३।६।३३
” १.	३।६।११३
” १.	३।६।१८९
” १.	५।२।२५
” १.	६।१।५५
विधु १.	२।१।२४
” १.	६।१।५५
विद्युत् १. २. ३.	५।४।१०१
” १. २. ३.	७।४।२३
विद्युन्तुद १.	२।१।३६
विधुर १.	१।२।४१
” १. २. ३.	७।४।२७
विधुवन ३.	५।२।४०
विधूनन ३.	५।२।४०
विधेय १. २. ३.	५।४।२८
” १. २. ३.	५।४।३२
विनय १.	७।१।७०
विनयग्राहिन् १.	३।७।६७
विना ४.	८।८।४
विनायक १.	१।१।३२
” १.	१।१।५३
विनिमय १.	३।८।७१
विनियोग १.	५।२।२५
विनीत १. २. ३.	७।५।७४
विनोद १.	३।६।१८७
विन्दु १. २. ३.	५।४।४३
विन्ध्य १.	३।२।३
विन्ध्यकूटक १.	३।६।१५१
विन्ध्यवासिन् १.	२।६।१५८
विन्ध्यवासिनी २.	१।१।६३
विन्न १. २. ३.	५।४।९९
” १. २. ३.	६।४।१७

[विप्रव]

विपक्षक १.	३।७।४२
विपक्षी २.	३।९।११६
” २.	७।२।२४
विपण १.	३।८।६९
विपणि २.	४।३।३५
” २.	७।२।२४
विपत्ति २.	३।६।१९१
विपथ १.	३।१।५०
विपद् २.	३।६।१९१
” २.	३।७।४
विपर्यय १.	५।२।३
विपर्यास १.	५।२।५
विपश्चित् १.	३।६।२३४
विपाक १.	३।६।१८९
” १.	७।१।६७
विपाकिन् १.	२।३।१२७
विपादिका १.	४।४।१२२
(विपाटिका)	
विपाशू २.	४।२।२७
विपाशा २.	४।२।२७
विपिन ३.	३।३।१
विपुल १. २. ३.	५।४।८०
विपुला २.	३।१।२
विप्र १.	३।६।१
विप्रकार १.	५।२।२२
विप्रकुण्ड १.	३।६।६२
विप्रकृष्ट ३.	५।४।१४२
विप्रतिसार १.	३।६।१८५
विप्रप्रिय ३.	३।८।१३९
विप्रयाण ३.	३।७।२१०
विप्रयोग १.	५।२।१६
विप्रलम्भ १.	५।२।२०
विप्रलाप १.	२।४।२९
” १.	८।१।४१
विप्रशेषित ३.	३।६।६७
विप्रशिक्षा २.	४।४।११
विप्रिय ३.	३।७।४७
” १. २. ३.	५।४।६९
विप्रुष् २.	२।२।८
विप्रुष १.	२।३।२
विप्रुव १.	३।६।१९०

विष्णु १.	३१५२०
विष्णुध १.	७११६६
विभण्ड १.	३१५२६
विभञ्जन ३.	५२१३९
विभाकर १.	२१११४
विभाग १.	५२१७
विभाजन ३.	३१३१५१
विभात ४.	२११६८
विभाव १.	३१९१८०
विभावनी २.	३१३१८५
विभावरी २.	२११६७
विभावसु १.	८११३९
विभाषण ३.	२११२४
विभीतक १. २. ३.	३१३१७५
विभीदक १.	३१३१७६
विभीषण १.	१२१५
विभु १. २. ३.	६१५८१
विभूति २.	८१५३४
विभूषण ३.	५१३१३३
विभ्रम १.	३२१९६
" १.	७११६९
विमनस १. २. ३.	५११३४
विमल १.	३२१४१
" १. २. ३.	५११६६
विमानुज १.	४११३३
विमान १. ३.	७१५८१
वियत् ३.	२१११
वियद्गङ्गा २.	११३१३
वियम १.	५२१३०
वियात १. २. ३.	५१११७
वियाम १.	५२१३०
वियुन १.	१२१६
वियोग १.	५२१२६
विरजा २.	३१३१९२
विरत ३.	३१७२०२
विरति २.	५२१३६
विरल १. २. ३.	५१११२५
विरह १.	५२१२६
विराग १.	३१६१६७

विरागाह १. २. ३.	५११५४
विराज् १.	३१७१
विराज् १.	२११३३
विराज् ३.	३१८७९
विरिञ्च १.	१११७
विरुक्तकोद्व १.	३१८५५
विरुक्तण ३.	२११३३
विरूप १. २. ३.	५११२६
विरूपाक्ष १.	१११४२
विरोचन १.	८११४२
विरोध १.	३१६१८४
विरोधन ३.	५२१३०
विरोधिन् १.	३१७४२
विरोधोक्ति २.	२११२९
विलक्ष् १. २. ३.	५११२९
विलम्बित ३.	३१९१२३
" १. २. ३.	८११२२
विलम्ब १.	५२११९
विलाप १.	२११२९
विलाव १.	५२१२९
विलास १.	३१९१३
विलिष्ट १. २. ३.	५११८४
विलीन १. २. ३.	४१३१५
" १. २. ३.	७११२३
विलेपी २.	४१३१०
विलेप्या २.	४१३१०
विलोमिका २.	३१३१११
विल्वगन्ध १.	३१३१२१
विविध १. १.	७११७१
विवरण ३.	२११२६
विवर्ण १.	३१५२
" १. २. ३.	७११२४
विवर्णता २.	३१९१८१
विवश १. २. ३.	७११२७
विवस्वत् १.	१११३
" १.	२१११२
विवाद १.	२११२४
विवाह १.	३१६१४
विवाहाग्नि १.	११२१७
विचिक्त् १. २. ३.	५१११९

विचिक्त् १. २. ३.	७११२४
विचृताक्ष १.	२१३१३
विवेशिका २.	४१३१४
विवेष्टन ३.	५२१४२
विश १.	३१५२
" १.	३१८१
" २. ३.	४१११९
" १. २.	८१५३९
विशङ्कट १. २. ३.	५११८२
विशद १.	५१३१०
" १. २. ३.	५११३४
" १. २. ३.	७१२५
विशय १.	३१६१७७
विशर १.	३१७२११
विशल्या २.	३१३१३१
विशस् १.	३१७२११
विशसन १.	३१७१५८
" ३.	३१७२१४
विशाख १.	१११५७
" १.	७१५८३
विशाखा २.	२११४०
" २.	८१५७७
विशाखिका २.	३१६१२३
विशारद १. २. ३.	८११२२
विशाल १.	४१३१२९
" १. २. ३.	५११८०
" १. २. ३.	५११८२
विशालता २.	५२१५
विशालत्वच् १.	३१३१७
विशाला २.	३१३१०३
" २.	३१३१७२
विशिख १.	३१७१७९
" १. २. ३.	७१५८१
विशिखा २.	४१३१६
विशिखाश्रय १.	३१७१७८
विशीर्णपाद् १.	११२३५
विशीर्णाङ्गी २.	३१६११
विशुन्धलवण २.	३१८१२१

[विशेष]

विशेष १.	३१६२०५
विशेषक १. ३.	४३११४८
„ १. ३.	८१९३०
विशेषभाग १.	३१७०६६
विशोक १.	२१३२९
विश्राणन ३.	३१६११८
विश्लिष्ट १. २. ३.	५१४१२५
विश्लेष १.	५१२२६
विश्व १ व.	१३१८
१ १. २. ३.	५१४८६
„ १. २. ३.	६१५७८
विश्वकद्रु १.	३१९३९
विश्वकर्म्मन् १.	१३१६
„ १.	८११४१
विश्वगोप्त् १.	८१३३९
विश्वभृत् २ व.	२११२१
विश्वभेषज ३.	३१८७५
विश्वभर १.	८१५२२
विश्वरुचि २.	१२१३०
विश्वरूप १.	११११५
विश्वरेतस् १.	१११८
विश्वविस्ता २.	२११७५
विश्वस्ता २.	४१४१४
विश्वहयंक १.	३१६८३
(विश्वहयर्त)	
विश्वा २.	३११३
विश्वात्मन् १.	१११६
„ १.	७११६७
विश्वावसु १. २.	८१५२३
विष ३.	३१२३३
„ ३.	३११२४
„ ३.	४१२१
विषम १.	३१३५५
विषम २.	३१३१००
„ २.	३१३१२७
„ २.	३१३१३२
विषजित् ३.	३१८१६६
विषधर १.	४११६
विषपुष्पक १.	३१३५०
विषम १.	३१३२१६

शब्दालुक्रमणिका

विषमच्छद १.	३१३४७
विषमस्पृहा २.	३१६१७९
विषमायुध १.	१११२८
विषमोन्नत १. २. ३.	५१४८३
विषय १.	३१७४८
„ १.	५१३२
„ १.	७११२२
विषयग्राम १.	५१११७
विषयिन् १. २. ३.	७१५७५
विषवृक्ष १.	८१६१९
विषवैद्य १.	४११२५
विषा २.	३१८१९०
विषाण १. २. ३.	७१५८२
विषाणिका २.	४१३२२
विषाणिन् १.	३१४५२
„ १. २. ३.	७१५७७
„ १.	८१६१४
विषाणी २.	३१३११६
विषाद १.	३१६१९१
विषुव १. ३.	२११९०
विषुवत् १. ३.	२११९०
विषूचीन १. २. ३.	५१४९१
विष्कम्भ १.	७११६७
विष्किर १.	२१३३८
„ १.	७११६६
विष्टप ३.	३१६२०६
विष्टर १.	३१३४
„ ३.	४१३१६४
„ १.	७११६९
विष्टरभ्रवस् ११११०	
विष्टि १.	३१९५५
विष्टा २.	३१३१००
„ २.	४१४११९
विष्टाख्य ३.	३१२३६
विष्टिका २.	३१८८१
विष्णु १.	११११०
„ १.	१११२०
विष्णुकान्ता २.	३१३१२३

[विस्मय]

विष्णुकान्ता २.	३१३१३४
विष्णुगुप्त १.	३१६१५९
विष्णुपद ३.	२११५
विष्णुपदी २.	४१२२४
विष्णुरथ १.	१११३८
विष्णुशक्ति २.	११११६
विष्कार १.	२१४९
विष्फुलिङ्गिनी २.	११२३०
विष्य १. २. ३.	५१४७१
विष्वक् ४.	८१८३
विष्वक्सेन १.	१११११
विष्वक्सेना २.	३१३६६
विष्वच् १. २. ३.	५१४९१
विष्वद्वीचीन १. २. ३.	५१४९३
विष्वद्यच् १. २. ३.	५१४९३
विसंवाद १.	५१२२०
विसर १.	५१११
„ १.	५१३२६
विसर्ग १.	११८९
„ १.	३१६३७
„ १.	७११७०
विसर्जन ३.	३१६११८
विसर्जिका २.	२११९१
विसार १.	४११४२
विसृत १. २. ३.	५१११०
„ १. २. ३.	७१४२६
विस्त १.	५११५१
विस्तर १.	५१२३
विस्तार १.	३१३१६
„ १.	५१२३
विस्तीर्ण १. २. ३.	५१४८०
विस्तीर्णजालु २.	३१६४७
विस्तृत १. २. ३.	५१११०
विस्फोट १.	४१४१२३
विस्मय १.	३१६१८१
„ १.	३१९७६
„ १.	७११६५

विस्मरण]

वैजयन्तीकोषः

[वृद्ध

विस्मरण ३.	३१६१७७	वीथि २.	३१९१००	वृकधूप १.	३१८११०
विस्मृत १. २. ३.	५४११०९	वीथिका २.	५१२१४६	" १.	३१८११२
विस्त ३.	४१४१०६	वीथी २.	२१११४४	वृकधूर्तक १.	३१४१७
" ३.	४१४१०८	" २.	६१२३५	" १.	३१४३८
विस्तसजा २.	४१४१५४	वीथ १. २. ३.	५१४१६६	वृकधोरण १.	३१४३२
विस्तव्य १. २. ३.	५१४१५२	वीनाह १.	३१३१२२७	वृकवाला २.	४३१४४
विस्तम्भ १.	७११६६	वीर १. २. ३.	३१७१४७	वृकस्थली २.	४३१९
विहग १.	२३३२	" १.	३१९१७५	वृकाम्लिका २.	३३३३४
विहगाधिप १.	१११३८	" १. २. ३.	६१५८२	वृकण १. २. ३.	५१४१०२
विहङ्ग १.	२३३२	वीरजयन्तिका २.		वृक्तवर्हिस् १.	३३३७८
विहङ्गम १.	२३३२		३१७१२०८	वृक्त्य १.	४१४११२
विहङ्गिका २.	३१९१६	वीरण ३.	३३३१२३१	वृक्ष १.	३३३४
विहनन ३.	३१९११०	वीरचण ३.	३३३१२३१	" १.	८१९१११
विहसित ३.	३१९१८३	वीरपत्नी २.	४१४१३३	वृक्षक १.	३३३८३
विहस्त १. २. ३.	५१४१६८	वीरपाण ३.	३१७१०२	वृक्षगृह १.	८१६११८
विहान १. ३.	२११६८	वीरभद्र १.	१११५३	वृक्षमूलिन् १. २. ३.	
विहापन ३.	३१६११८	वीरभार्या २.	४१४१३३		३१६१२२९
विहायस् १. ३.	७१५८०	वीरमातृ २.	४१४१३३	वृक्षरुहा २.	३३३८५
विहायस ३.	२११११	वीरल १.	४११५५	वृक्षादनी २.	३३३८५
विहार १.	४३३२८	वीरविप्लावक १.		वृक्षाम्ल ३.	३१८१३२
" १.	७११६८		३१६१७२	वृक्षोत्पल १.	३३३७२
विहारिणी २.	३१६१५२	वीरवृक्ष १.	८१६११८	वृजिन १. २. ३.	५१४१२३
विहास १. २. ३.	७१५८३	वीरशङ्कु १.	३१७१८०	" १.	७१५८४
विह्वल १. २. ३.	५१४१६७	वीरशाक १.	३३३१५४	वृत्तिद्रुम १.	४३३१४
वीकाश १.	७११६७	वीरसू २.	४१४१३३	वृत्तिमार्ग १.	३११५१
वीक्षा २.	३१६१८१	वीरस्कन्ध १.	३१४१९	वृत्त ३.	३१६११५
वीचि २.	४१२१४	वीरस्नाका २.	४३३१११	" १. २. ३.	५१४८३
" २.	६१२३५	वीरहन् १.	३१६१७१	" १. २. ३.	६१५७६
वीज्य १.	३१८३१	वीराशंसन ३.	३१७१०६	वृत्ताङ्गी २.	३३३६७
" १.	३१८१२८	वीरासन ३.	३१६१२२७	वृत्तान्त १.	२१४३९
वीणा २.	३१९११६	वीरधू २.	६१२३५	" १.	७११७१
वीणावंशशलाका २.		वीरोज्ज १.	३१६१७०	वृत्ति २.	३१८११
	३१९१२०	वीरोपजीवक १.	३१६१७१	" २.	३१८१७
वीणावाद १.	३१९१००	वीर्य ३.	३१७१२१०	" ३.	३१९१०२
वीत ३.	३१७१८९	" ३.	४१४१११	" २.	६१२३६
(पीत)		" ३.	६१३३२	वृत्र १.	६११५६
" १. २. ३.	६१५७५	वीर्यकर १.	४१४११०	वृत्रारि १.	१२११
वीतक ३.	४३३११०	वीलक १.	३१५१२८	वृथा ४.	८१७१२८
वीतराग १.	१११३५	वीवध १.	७११७१	वृथाजात १.	३१६१७७
वीतिदोत्र १.	१२११४	वृक १ व.	३११४०	वृद्ध ३.	३१८१९६
		" १.	३१४८	" १. २. ३.	५१४११६

[वृद्ध]

शब्दानुक्रमिका

[वेन]

वृद्ध १. २. ३.	६१५८०	वृषपर्णी २.	३१३१४३	वेणु १.	३१३२१४
वृद्धकाक १.	२३११७	वृषपूतन १.	३१६१२२	” १.	६११५४
वृद्धगोनस १.	४१११३	वृषभ १.	३१२१५	वेणुक १.	३१५१३
वृद्धनाभि १. २. ३.	४१४१४६	” १.	३१४५२	” ३.	३१७८२
वृद्धप्रपितामह १. ४१४३०		वृषल १.	३१४५२	वेणुका २.	३१९१२५
वृद्धप्रमातामह १. ४१४३०		” ३.	३१८७६	वेणुध्मा १.	३१९७१
वृद्धवयस् १. २. ३.	५१४३	” १.	३१९११	वेणु ३.	४१३२७
		वृषलक्षणा २.	३१६५२	वेतन ३.	३१९५
वृद्धश्रवस् १.	११२११	वृषली २.	७१२२४	वेतस १.	३१३३१
वृद्धा २.	४१४२१	वृषवाहन १.	१११४६	वेतस्वत् १. २. ३.	३११४३
वृद्धि २.	३१८५	वृषसानु १.	८११४०		
” २.	३१८९४	वृषस्यन्ती २.	४१४११	वेताल १.	११२३८
” २.	४१४१३१	वृषा २.	३१३११३	वेतालासन ३.	३१६२२१
” २.	५१२३३	” २.	३१३१७३	वेज १.	३१३१३३
” २.	६१२३७	” २.	३१८९४	वेजधर १.	३१७२४
वृद्धोत् १.	३१४५५	वृषाकपायी २.	८१२१३	वेजवती २.	४११२८
वृद्धथार्जाव १. २. ३.	३१८८	वृषाकपि १.	८११४०	वेद १.	३१६२७
		वृषाक्रान्ता २.	३१४५१	वेदगर्भ १.	३१६१
वृन्त ३.	३१३२०	वृषाण १.	१११५२	वेदन १. २. ३.	७१५८३
” १.	३१३१६८	वृषावाह १.	३१८५७	वेदपठित् १.	२१६२३
” ३.	३१४५१	वृषिण १.	३१४६४	वेदयष्टि २.	३१६१२४
” ३.	४१४६८	वृष्टि २.	२१२७	(देवयष्टि)	
वृन्ततुम्बी २.	३१३१६८	वृष्य १.	३१३२२५	वेदाङ्ग ३.	३१६२८
(वृत्ततुम्बी)		” १.	३१८३५	वेदि २.	३१६१०९
वृन्ता २.	३१३६६	वृष्यकन्द ३.	४१४७७	” २.	३१६११०
वृश्चिक १.	३१३१४६	वृष्या २.	३१८९४	वेदिका २.	४१३६६
” १.	४११३२	वेग १.	११२५५	” २.	७१२२५
” १. २.	४११३३	” १.	६११५६	वेदित् १. २. ३.	५१४४३
” १.	४११३३	वेगसर १.	३१७१०८	वेदिपर १ व.	३११३७
वृश्चिकच्छदा २.	३१३१२७	वेगिन् १.	११२५०	वेद्यास्तरण ३.	२१६९१
वृश्चिकाली २.	३१३१२६	वेङ्कट १.	३१२५	वेधक १.	३१८१२०
वृष ३.	४१३३६	वेङ्कर १.	३१६१६९	वेधनिका २.	३१९१८
” १.	४१४२	वेजन १.	३१६१०८	वेधमुख्यक १.	३१३११७
” १. २. ३.	६१५७७	वेटी २.	४१२१५	वेधमुख्या २.	३१४३६
वृषण १.	४१४६३	वेण १.	३१६९८	वेधस् १.	१११९
वृषणश्च १.	११२१०	” १.	३१६९८	” १.	६११५७
वृषण्वसु १.	११२८	वेणि २.	४१२३०	वेधित १. २. ३.	५१४१११
वृषध्वज १.	१११४२	वेणिनी २.	४१४६	वेध्य ३.	३१७१९४
वृषन् १.	११२११	वेणी २.	३१३८६	वेध्या २.	३१९१३५
” १.	६११५६	” २.	३१४६५	वेन १.	३१५८४
		” २.	६१२३६	” १.	३१५९७

वेन]

वैजयन्तीकोषः

[वैश्वदेवासि

वेन १.	३१५९९	येहत् २.	३१४४७	वैदेहक १.	३१५७८
वेपथु १.	३१९८५	वै ४.	८१७७	" १.	३१८७२
" १.	३१९८९	" ४.	८१७११	वैदेही २.	३१८७७
वेमन् १.	३१९८	वैकच्य ३.	४३१२३	वैद्य १. २. ३.	४४१४३
वेल १.	३१३२५	" ३.	४३१५६	वैद्यमातृ २.	३३१०२
वेलज १.	५३३३६	वैकरञ्ज १.	४११९	यैद्यशास्त्र ३.	३६२९
वेलव १.	३१५२२	" १.	४१११०	वद्युत ३.	३१११९
(पेलव)		" १.	४१११६	वैद्युत्स्वत १.	३११२२
वेला २.	४२११३	वैकुण्ठ १.	१११२	वैद्योत १. २. ३.	३२११९
" २.	४२१३३	" १.	३३१२१	वैधन्यलक्षणोपेता २.	३६५३
" २.	६२१३६	" १.	७११७२	वैधान्न १.	१३१७
वेलान १.	५३३३६	वैकृन्त १.	३२१३५	वैधेय १. २. ३.	५४२१
वेल्ल ३.	३१८९७	वैखानस १.	३६१३४	वैनतेय १.	११३७
वेल्लन ३.	३१८७९	वैखारक १.	५३३०	वैनयिक १. २. ३.	३७१३०
वेह्लित १. २. ३.	५४१५५	वैघटिक १.	३९१५५	वैनीतक १. ३.	३७१३७
" १. २. ३.	७४२३	वेचित्य ३.	३६२००	वैपरीत्य ३.	५३१५
वेश १.	३१५१८	वैजनन १.	४४१९	वैमात्रेय १.	४४३३
(उग्रवेश)		वैजयन्त १.	१११५५	वैमेय १.	३१८७१
" १.	४३३३५	" १.	१२१९	वैयथित १.	३६१०७
वेशनी २.	४३३२४	" १.	१२१९	वैयाघ्र १. २. ३.	३७१२८
वेशन्त १.	४२१६	वैजयन्तिक १. २. ३.	३७१४५	वैर ३.	३६१८४
वेशवार १.	४३३८७	वैजयन्ती २.	३३१९६	वैरङ्गिक १. २. ३.	५४५४
" १.	४३३९०	" २.	८२१९	वैरशुद्धि २.	३१२०९
वेरमन् ३.	४३३१८	वैज्ञानिक १. २. ३.	५४१९	वैराग्य ३.	१११४७
वेरमस्थूणा २.	४३३३९	वैदूर्य ३.	३२१४०	" १.	३६१६७
वेरय ३.	३३३१८४	वैणव ३.	३२२२१	वैरिन् १.	३१७४१
वेरया २.	४४२२४	" १.	३३३२२	वैवधिक १.	३१९६
वेरयागृह ३.	४३३३३	" १.	३५३८	वैवस्वत १.	१२३४
वेरयाचार्य १.	३१९७०	वैणविक १.	३९१७१	वैशाख १.	२११८३
वेरयाजनाश्रय १.	४३३३५	वैणिक १.	३९१७०	" १. ३.	३७१८६
वेरयापति १.	४४३३९	" १.	५३१५७	" १.	३९३१
वेप १.	३९१६८	चेतंसिक १.	३९१४०	वैशाखिन् १.	३७७६
" १.	४३३३२	चेतनिक १. २. ३.	३९१५	वैशाखी २.	२१७५
वेष्ट १.	३८१०९	चेतालिक १.	३५८१	वैशिख ३.	३७१७५
" ३.	६३३३२	" १.	३७३०	वेरय १.	३८११
वेष्टन ३.	३६१०५	चैदिक १.	३६८	वेरयकुण्ड १.	३५३३
" ३.	४४१९३	चैदेह १.	३५८७	वैश्रवण १.	१२१५७
" ३.	७३३३४	" १.	३५११६	वैश्वदेवासि १.	१२३७
वेष्टाचार ३.	३८१२३	चैदेहक १.	३५१६		
वेष्टित १. २. ३.	५४१९६				
वेसर १.	३७१०८				

चैश्वानर]

शब्दानुक्रमणिका

[अत

चैश्वानर १.	११११४	व्यवहार १.	८११४३	व्यालालुध ३.	३१८१९९
” ३.	२११४९	व्यवहित ३.	५११४२	व्यालि १.	३१६१५८
चैश्वानरी २.	२११४८	व्यवाय १.	७११६५	व्यावहारी २.	८११४
वैषयिकी २.	३१७३५	व्यष्ट ३.	३११२४	व्यास १.	१११३०
वैष्णव १.	३१६१०८	व्यसन ३.	७३३३२	” १.	१११३१
वैष्णवी २.	११११६	व्यसनार्त १. २. ३.	५१४६८	” ३.	३१६१७६
” २.	१११६५	व्याकरण ३.	३१६२८	” १.	५१२३
वैष्णुत ३.	३१६१५	” ३.	८३१११	व्युत्क्रम १.	५१२३
वैसारिण १.	४११४१	व्याकुल १. २. ३.	५१४६८	व्युत्थान ३.	५१२२०
वैहायस ३.	३१७१८८	व्याकृति २.	५१२३४	” ३.	७३३३१
वैहासिक २.	३१७१७	व्याकोच १. २. ३.	३३३९	व्युत्पन्न १. २. ३.	५१४४२
वोरुल्लान १.	३१७१०२	व्याघात १.	३३३४८	व्युप १. २. ३.	३१६१३२
वोषाट् ४.	८१८३	व्याघ्र १.	३३३३	व्युष्ट ३.	२११६८
वौचट् ४.	८१८३	व्याघ्रक १. ३.	४३३४३	व्युष्टि १. २. ३.	३१६१२६
वौषट् ४.	८१८३	व्याघ्रनख ३.	३१८१९	” १. २. ३.	६१२३५
व्यंसक १. २. ३.	५१४२४	व्याघ्रपाद् १.	३३३३८	व्यूढ १. २. ३.	५१४८०
व्यक्त १.	५३३८	व्याघ्रपुच्छक १.	३३३६५	” १. २. ३.	५१४८३
” १. २. ३.	६१५७२	व्याघ्राट् १.	२३३१९	व्यूति २.	३१९२
व्यङ्गा २.	३१६१५०	व्याज १.	३१६१९५	व्यूह १.	५११२
व्यजन ३.	४३३१५९	” १.	६११५४	” १.	६११५६
व्यञ्जक १.	३१९९८	व्यादीर्णस्य १.	३३३१	व्योकार १.	३१९१६
व्यञ्जन १.	३३३२२३	व्याध १.	३१९३८	व्योमकेश १.	१११४१
” १. ३.	३१६३६	व्याधाम १.	१२१३३	व्योमगुण १.	१३३१
” १. २. ३.	३१६९३	व्याधि १.	४३३१३८	व्योमधारण १.	३३३३५
” ३.	४३३८५	” १.	८३३८	व्योमन् ३.	२१११
” ३.	४३३१०३	व्याधित १. २. ३.		” ३.	५१३३१
” ३.	७३३३०		४३३१४४	व्योमसम्भवा २.	३३३४४
व्यतिकर १.	८११४१	व्यापन १.	५१२४१	व्योमाख्य ३.	३३२१५
व्यतिहार १.	५१२६	व्यापलण्डिका २.	४३३८४	” ३.	३१६१६१
व्यत्यय १.	५१२५	व्यापादन ३.	३३३२१५	व्योष ३.	३१८८०
व्यत्यास १.	५१२६	व्याप्य १.	४३३१३८	व्रज १.	३१९३१
व्यथा २.	३१६१८७	व्यप्व १.	२११२७	” १.	५१११
व्यध्व १.	३११५०	व्याम १.	४३३८२	” १.	६११५४
व्यन्तर १.	४११९	व्यायत्त १. २. ३.	७३३२४	व्रण १. ३.	३३३२१७
व्यय १.	३३३४४	व्यायाम १.	४३३८२	व्रणन्ती २.	३३३१५७
व्यर्थ १. २. ३.	५३३२२९	” १.	७३३६८	व्रणबन्ध १.	४३३१४०
व्यलीक ३.	५१२३५	व्यायोग १.	३३३१०१	व्रत ३.	३३३१३३
” १. २. ३.	७३३७९	व्याल १.	३३३७३	” १ ब.	३३३३२
व्यवच्छेद १.	३३३१९२	” १.	४३३१४	” १. ३.	३३३१४
व्यवधि १.	१३३६३	” १. २. ३.	६३३७४	” १. ३.	३३३३३६
व्यवहार १.	३३३१५	व्यालप्राहिन् १.	४३३२५	” १.	६३३३१

व्रतति]

वैजयन्तीकोषः

[शतभिषज्

व्रतति २.	३।३।७	शकुन ३.	८।३।१६	शङ्ख ३.	५।१।२८
व्रतती ३.	३।३।७	शकुनि १.	२।३।३	" १. ३.	६।५।८३
व्रतसङ्ग्रह १.	३।६।८७	शकुन्त १.	२।३।३	" १.	८।६।१४
व्रतिन् १.	३।६।७	" १.	२।३।३२	शङ्खक १.	४।४।९६
" १.	३।७।९०	" १.	७।१।७४	शङ्खकार १.	३।५।६३
व्रश्चन १.	३।९।३५	शकुन्ति १.	२।३।३	शङ्खद्वीप ३.	३।१।१४
व्राजिक ३.	३।६।१४८	शकुलाक्ष १.	३।३।२००	शङ्खनख १.	४।१।५६
व्रात १.	३।५।१	शकुलादनी २.	३।३।१९७	शङ्खपात्र ३.	३।६।६२
" १.	३।५।५९	" २.	३।८।८६	शङ्खपाल १.	४।१।१२
" १.	५।१।१	शकुलार्मक १.	४।१।४५	शङ्खमुख १.	४।१।५३
व्रात्य १.	३।५।५९	शकुलिन् १.	४।१।४१	शङ्खिनी २.	३।३।११६
" १.	३।५।१०२	शकुत् ३.	४।४।११८	शची २.	१।२।११
" १.	३।१।११९	शक्ति २.	१।१।३६	शचीपति १.	१।२।३
व्रीड १. २.	८।९।२७	" २.	३।६।१६१	शचीबल १.	३।९।६६
व्रीला १.	३।६।१९४	" २.	३।७।५	शठ ३.	३।२।३२
व्रीहि १ व.	३।३।२३	" २.	६।२।३८	" १.	३।३।३३
" १.	३।८।३१	शक्तिपाणि १.	१।१।५५	" १.	३।३।३७
" १.	३।८।३२	शक्र १.	६।१।५७	" १.	३।३।७६
" १.	३।८।६३	शक्रचूच १.	८।६।१८	" १.	३।८।४१
" १.	८।९।५७	शक्राख्य १.	३।३।७३	" १. २. ३.	५।४।२२
व्रीहिकृ १.	३।८।४०	शकल १. २. ३.	५।४।४४	शण्ड १.	३।३।९८
व्रीहिन् १. २. ३.	५।४।११९	शकरी २.	२।१।२१	शण्ड १.	३।८।१३९
व्रीहिमत् १. २. ३.	५।४।११९	" २.	७।२।२५	शण्डिली २.	१।१।५९
व्रीह्य १. २. ३.	३।८।१९	शङ्कर १.	१।१।३९	शत ३.	५।१।२८
श		शङ्का २.	६।२।३८	" ३.	५।१।३१
शंसा २.	२।४।३५	शङ्किल १.	३।७।८७	शतकोटि १.	१।२।१३
" २.	६।२।४१	शङ्कु १.	१।२।४१	शतघ्नी २.	३।७।१६९
शंस्य १.	१।२।२४	" १.	२।३।६	शततम १. २. ३.	५।१।२३
शक १.	३।४।७४	" १.	३।७।८५	शतद्रु २.	४।२।२७
" १.	३।५।७४	" १.	३।७।१६७	शतधारक ३.	१।२।१३
" १.	६।५।९१	" १.	४।४।६१	शतधृति १.	१।१।८
शकट १.	३।३।२०९	" १.	५।१।३१	शतपत्र ९.	२।३।३३
" १. ३.	३।७।१२५	" १.	६।१।५९	" ३.	४।२।३८
शकटाविल १.	२।३।१२	" १. ३.	८।९।३०	शतपदी २.	४।१।३३
शकल १. ३.	४।४।५६	शङ्कुकर्ण १.	८।१।४४	शतपर्व ३.	३।८।९२
" ३.	७।३।३४	शङ्कुमूली २.	२।१।७३	शतपर्वन् २.	३।३।१४९
शकलज्योतिस् १.	४।१।१८	शङ्कुला २.	३।३।१७०	" १.	३।८।५४
शकुटा २.	३।७।७९	शङ्कु १.	१।२।६०	" ३.	४।२।४३
शकुन १.	२।३।३	" १.	३।२।४१	" १. २. ३.	८।५।२३
		" १.	३।८।१०१	शतप्रास १.	३।३।१९२
		" १. ३.	४।१।५५	शतभिषज् १.	२।१।४६

शतभीरु]

शतभीरु १.	३३१८३
(शीतभीरु)	
शतमन्यु १.	११२५
शतमान ३.	५११४५
” ३.	५११५०
शतमुखी २.	१११६०
शतमूर्धन् १.	३११४८
शतमूली २.	३३१४२
शतवीर्या	३३१२३३
शतवेधिन् १.	३८१३३३
शतहृदा २.	२२२४
शताङ्ग १.	३१७१२४
शतानन्द १.	१११८
” १.	११११४
” १.	३१६१५६
शतावरी २.	३३१४२
शतावर्त १.	११११४
शतावर्ता २.	२२२४
शत्रु १.	३१७३९
” १.	३१७४०
” १. २.	८११४७
शत्रुघ्न ३.	३१७१५७
शनक १.	३१५३०
शनकैः(-स्) ४.	८१८१६
शनि १.	२११३६
शनैः (-स्) ४.	८१८१६
शनैश्चर १.	२११३५
शपथ १.	७११७३
शफ १.	३१४९९
शफरी २.	३३३९४
” १. २.	४११४४
शबर १ व.	३११३४
” १.	३१५२३
शबल १.	५३३३३
शबली २.	३१४४४
शब्द १.	२४११
” १.	५३११७
” १.	६११५९
शब्दकार १. २. ३.	
	५३४४८
शब्दग्रह १.	४११९२

शब्दानुक्रमिका

शब्दन १. २. ३.	५३४४८
शम् ४.	८१८१७
शम १.	३११७६
” १.	५३२२७
शमथ १.	५३२२७
शमन १.	११२३५
” ३.	३६१९४
” १.	७५५८७
शमल ३.	४१११८
” ३.	७३३३४
शमित १. २. ३.	
	५३११४
शमिता २.	४३३६८
शमी २.	३३३८९
” २.	३८१६५
शमीधान्य ३.	३८१६२
शमीफला २.	३३१४८
शम्फली २.	४१४२५
शम्ब १.	६११५८
शम्बर १.	३३१३३
” १.	४११४२
” १. ३.	७५५८४
शम्बरारि १.	१११२८
शम्बरी २.	३३११३
शम्बल १. ३.	३१९७
शम्बाकृत १. २. ३.	
	३८१२३
शम्बूक १.	४११५७
” १.	४३३६७
” १.	४३३६७
शम्बूकावर्त १.	४११३०
शम्बर १.	३३११८८
शम्भल १.	३१७९६
शम्भु १.	६११५७
” १.	८६११
शम्या २.	३८१२८
शम्याक १.	३३३४८
शय १.	४११२८
” १.	४३१२८
” १.	४११२३
शयणक १.	४११२६

[शरि

शयथ १.	७५५८५
शयन ३.	४३११६५
” ३.	४३११६७
” १. ३.	७५५८५
शयनीय ३.	४३११६५
शयान १.	४११२८
शयालु १.	३३३३८
” १. २. ३.	५३३३९
शयित १. २. ३.	५३३३९
शयीचि १.	१२३६
शयु १.	४३११९
शय्य ३.	४३११८
शय्या २.	४३११६५
” २.	६२३४१
शर १.	१२३५४
” १.	३३३२२८
” १.	३१७१८०
” १.	३८११४७
” १.	६११५८
” १.	८६१३६
शरज १.	१११५४
शरजालक	३१७१८३
शरण ३.	८३३१७
शरद् २.	२११८९
” २.	२११९१
” २.	६२३३८
शरदण्ड १ व.	३११३९
शरभ १.	३३३३२
शरभा १.	३३३५१
” २.	३१७५२
शरण्य १. २. ३.	
	३१७१९४
” १. २. ३.	८१९३२
शराटिका २.	२३३११
शरादान ३.	३१७१८९
शरायुध ३.	३१७१७३
शरारु १. २. ३.	५३३४२
शराव १.	४३३५९
शरावती २.	४३३३०
शरासन ३.	३१७१७२
शरि १.	३३३७३

शरि १.	३१४७४	शशादन १.	२१३३०	शाक्य १.	१११३४
(चरि)		शशिन् १.	२११२४	शाक्यसिंह १.	१११६४
शरीर ३.	४१४५२	शशिमूषण १.	१११३९	शक्र १.	३१४५३
शरु १.	२१३२०	शशिशेखर १.	१११३९	शाख १.	१११५७
शर्करा २.	३१८१३४	शशोर्ण ३.	३१८११८	शाखा २.	३१३१५
” २.	७१२२६	” ३.	८१९२२	” २.	६१२३९
शर्करिल १. २. ३.		शशवत् ४.	८१७२८	शाखापुरी २.	४३११
	३११४४	” ४.	८१८६	शाखामृग १.	३१४३९
शर्मन् ३.	३१६१८९	” ४.	८१८११	शाखारण्ड १. २. ३.	
शर्च १.	१११४०	” ४.	८१८१२		३१६१३
शर्वर १. २.	७१५८४	शङ्कुली २.	४१३७५	शाखास्थि ३.	४१४११६
शर्वरी २.	२११५७	” २.	७१२२६	शाखि १ ब.	३११२७
” २.	८१६५	शङ्प ३.	३१३२३५	शाखिन् १.	३१३५
शर्वाणी २.	१११५८	शस्त १. २. ३.	५१४१०६	शाखोट १.	३१३७७
शाल १.	१११५४	शस्त्र ३.	३१६१११	शाङ्गिक १.	३१९१७
” ३.	३१४३७	” ३.	३१७१५७	शाट १.	४१३२७
” १.	३१४६६	” ३.	३१७१९६	” १. २.	८१९२६
शालक १.	२१३४	” ३.	३१८२६	शाटिका २.	४१३१२७
शालम १.	२१३४३	” ३.	६१३१३	शाटी २.	८१९२६
शालल ३.	३१४३७	शस्त्रक १.	३१८१३१	शाडव १.	५१३२८
” २. ३.	३१४३७	शस्त्रहार १.	३१८१३१	शाडविक १.	५१३४०
शालाका २.	३१७१९९	शस्त्रमार्ज १.	३१८१५	शाण १.	३१९१९
” २.	३१९४१	शस्त्रमुख ३.	३१७१८६	” १.	५११४७
शालाट १.	५११६१	शस्त्राख्य ३.	३१२३३	” १.	५११६३
शालाट्ट १. २. ३.	३१३१०	शस्त्रिका २.	३१७१६३	शाणी २.	४१३१३०
शालक ३.	६१३३२	शाक १.	३१३७६	शात ३.	३१६१८९
शालमलि १. २.	३१३१०	” १.	३१८६२	शातकुम्भ ३.	३१२२०
शाल्य १.	३१४३७	” १. ३.	४१३९०	शातर १.	२११८२
” १. ३.	३१७१६७	शाकट १. २. ३.	३१४५८	शात्रव १.	३१७४१
” १. ३.	३१९४१	” १.	५११६१	शाद १.	३१३२३५
शाल्यक १.	३१३६३	” ३.	५११६१	” १.	३१८२६
शालक १. २.	८१९२६	शाकटीन १.	५११६१	” १.	६१५५७
शाल १. ३.	३१७२१६	शाकफला २.	३१३१७०	शाङ्गल १. २. ३.	३१३४३
शालयान ३.	३१७२१६	शाकशाकट १. २. ३.		शानक १.	२११८२
शालर १.	३१३५२		३१८२०	शान्त १.	३१३१४९
शालशीर्षक १.	३१६१०७	शाकसाकिन १. २. ३.		” १.	३१८७५
शाला १.	३१२१५		३१८२०	” १. २. ३.	५१३११४
” १.	३१४३१	शाङ्गनिक १.	३१९४०	शान्ति २	५१२२७
शाशमृत् १.	२११२४	शाकोल १.	३१३१५२	” २.	६१२३९
शाशलोमन् ३.	३१८११८	शाक्ती १. २. ३.		शान्तिक ३.	३१६१२०
शाशाङ्ग १.	२११२७		३१७१४४	शान्तिगृह ३.	४१३२०

शान्तियात्रा २.	३१६५६	शालाजिर १.	५३१५९	शिखर ३.	३१२८
शाप १.	२१४३२	शालि १.	३१८३२	” ३.	३३११५
शापटिक १.	२३३३७	शालिजात १.	३१४३५	शिखरिणी ३.	४३१९८
शाव ३.	५११६	शालियष्टिक १.	३१८३४	शिखरिन् १.	२३३५
” १. २. ३.	५४१२	शालिहोत्रिन् १.	३१७९०	” १.	८११५८
शाम्बरी २.	३७१२	शालीन १.	३३१५६	शिखरी २.	३३११५
शार १.	३१९६१	” १.	३१६४१	शिखा २.	१२२९
” १.	५३१९९	” १. २. ३.	५४१७	” २.	३३११५
” १.	५३१२५	शालु १.	४११४७	” २.	४४१६८
” १. २. ३.	६१५९१	शालुक ३.	४२४४	” २.	४४१०४
शारद १.	३३३४७	” ३.	७३३४	” २.	६२४०
” १.	३१८३६	शालूर १.	४११४७	” २.	८११५
” १. २. ३.	५४१८९	शालेय १. २. ३.	३१८१९	शिखावत् १. २. ३.	३१६६
” १.	७१५८६	शाश्वत १. २. ३.	५४१८८	शिखावल १.	३३३६
शारदी २.	३३१९७	शाकुलिक ३.	५११११	शिखिग्रीव १.	३२४२
शारि २.	२३३२०	शासन ३.	३७४७	शिखिन् १ व.	२१३७
” १.	३१९६०	” ३.	७३३५	” १.	२३३३
” १. २.	६१५८८	शासि १.	८१११२	” १.	२३३७
शारिका २.	३१९३६	शास्ति १.	८१११२	” १.	६१६०
शारिवा २.	३३३३९	शास्तृ १.	११३२	शिखिवाहन १.	११५५
शार्कर १. २. ३.	३११४४	” १.	३७१५९	शिखीन्द्र १.	३३१४
” १.	३१९४९	शास्त्र ३.	६३३३	शिमु १.	३३१५६
शार्ङ्ग ३.	११११७	शास्त्रचिद् १. २. ३.	४४१४४	” १.	४३१९०
” १.	२३३२४	” १. २. ३.	५४३१	शिमुज ३.	३१८१०
” ३.	६३३३३	शिक्षापा २.	३३१९१	शिक्किन् ३.	४४१०३
शार्ङ्गवत ३.	३११९	शिशुमार १.	४११५४	शिक्काण १.	४४१२२
शार्ङ्गाष्टा २.	३३३११	शिक्य ३.	३१९७	” ३.	४४१०३
” २.	३३३४४	शिकियत १. २. ३.	५४११६	शिक्काणिन् १. २. ३.	४४१९१
” २.	३३३७९	शिचा २.	३३३२८	शिक्षित ३.	२४१९
शार्ङ्गिन् १.	१११११	शिक्षित १. २. ३.	३७१४८	शिक्षिनी २.	४३१४५
शार्दूल १.	३४११	” १. २. ३.	५४११९	” २.	७३२६
” १.	३४३३	शिक्षण्ड १.	२३३३९	शिण्डाकी २.	४३१८४
शार्वर ३.	२११६२	” १.	४४१०२	शित १. २. ३.	६१५८३
” १. २. ३.	७१५८७	शिक्षण्डक १.	४४१०२	शितशिव ३.	३१८९६
शार्वी २.	२११५	शिक्षण्डक १.	२३३३३	” ३.	३१८१२०
शाल १.	३३३५६	शिक्षण्डिन् १.	२३३३७	शितशूक १.	३१८५१
शाला २.	३३३५५	शिक्षण्डिनी २.	८११९	शित्ति १. २. ३.	६४११७
” २.	३१८८८	शिक्षण्डी २.	४४१०२	शितिकुम्भ १.	३३३१९५
” २.	६२३३७			शित्तिचन्दन ३.	३४३३६
शालाक ३.	३१८३६				
शालावा २.	२११५				

[शितिसारक]

शितिसारक १.	३३१५१
शित्युट १.	२३१४३
शितिल १. २. ३.	३४११६
शितिली २.	४११३८
शितिविष्ट १. २. ३.	४४११४७
” १. २. ३.	५४११५
” १. २. ३.	८५१४८
शिफा २.	३३११२
” २.	४२११०
” २.	३८१६५
शिषिका २.	३७१३६
शिविर ३.	४३११०
शिव्वा २.	३८१६५
(विम्बा)	
शिविक १.	३८१३७
शिर १.	३८१७८
” १.	३८१९१
शिरःपीठ १.	४४१८४
शिरस् ३.	३३११५
” ३.	४४१८५
” ३.	८६१११
शिरसिज १.	४४१९७
शिरसिसिच् २.	४३१२४
शिरस्थ १. २. ३.	३८११७
(शिरस्थ)	
शिरस्थ ३.	४४१०१
शिरीष १.	३३१७२
शिरोगेह ३.	४३१३४
शिरोधरा २.	४४१८४
शिरोधि २.	४४१८४
शिरोरत्न ३.	४३१३६
शिरोरुह २.	४४१९८
शिरोरुहा २.	३३११२
शिरोवर्तिन् १. २. ३.	३८११०
शिरोऽस्थि ३.	४४११५
शिल ३.	३८१९२
शिला २.	३२१८
” २.	३२११२

वैजयन्तीकोषः

शिला २.	४३१४०
” २.	४३१४५
” २.	४३१६३
शिलाजतु ३.	३२११६
शिलाह्वय ३.	३८१९६
शिली २.	४११५१
” २.	४३१४०
शिलीमुख १.	३८११८१
” १.	८११४४
शिलोच्चय १.	३२११७
शिलोद्भव ३.	३२११८
शिल्प ३.	३९१८
शिल्पा २.	४३१२५
शिल्पिन् १.	३९१७
” १.	८११४७
शिल्पिशाला २.	४३१२२
शिव १.	१११११
” १.	३३११४९
” ३.	३३११५५
” १.	३४११६
” ३.	३८१९६
” १.	३९१४७
” ३.	५४११४३
” १. २. ३.	६५१८४
शिवङ्कर १.	३७११५८
” १. २. ३.	५४१५५
शिवताति १. २. ३.	५४१५५
शिवपार्श्वग १.	१३१२
शिवपुरी २.	४३१७
शिवप्रिय १.	३३११९३
शिवमल्लिका २.	३३११९३
शिवव्रतिन् १. २. ३.	३६११३०
शिवा २.	१११४९
” २.	१११५८
” २.	३३१११९
” २.	३३११७७
” २.	३८१६०
” २.	६५१८४

[शीरा]

शिवेष्ट १.	३३१८३
शिशिर १.	२११८७
” १.	५३१७
शिशु १. २. ३.	५४१२
शिशुक १.	७११७३
शिशुकृच्छ्र ३.	३६११३७
शिशुकृच्छ्रातिकृच्छ्र ३.	३६११३८
शिशुत्व ३.	४४१४
शिशुप्रिय ३.	४२१३५
शिशुवर्जिता २.	४४१२०
शिश्र ३.	४४१६१
दि श्विदान १. २. ३.	३६११२
शिष्टि २.	३७१४८
शिष्य १.	३६१२५
” १. २. ३.	८११४४
शीकर १. ३.	२२१७
” १.	५३१६
शीघ्र १.	१२१५०
” १. २. ३.	५४११२५
शीघ्रगमन ३.	५२१११
शीत १.	३३१३१
” १.	५३१६
” १. २. ३.	६५१९३
शीतक १. २. ३.	५४१५५
शीतकङ्कु २.	३८१५६
शीतकृच्छ्रक ३.	३६११४०
शीतपङ्क १.	३९१४७
शीतपङ्कव १.	३३१९३
शीतल १.	१२१४५
” १.	३३१८२
” ३.	४२१४
” १.	५३१६
शीतला २.	३२११३४
” २.	३४१४४
शीथु ३.	३९१४५
” १.	३९१४७
शीन १. २. ३.	४३१९५
शीरा २.	३३१९९

श्रीरी २.	३३३२२८	शुक्रसृष्टा २.	३३३१७८	शुनी २.	३३३१७१
श्रीर्णक १. २. ३.		शुक्रा २ व.	२११२१	शुभ १.	३३३१७३
	३३३१२९	शुक्ल १.	२११७९	" १. २. ३.	३३३१७७
श्रीर्णपर्णाशिन १. २. ३.		" ३.	३३३१११	" १.	३३३१७६
	३३३१२९	" १.	३३३११०	शुभंयु १. २. ३.	३३३२९
श्रीर्णवृन्त १.	३३३१७१	शुक्लकार ३.	३३३१७७	शुभक १.	३३३१७१
श्रीर्ष ३.	३३३१७७	शुक्लधातु १.	३३३१३३	शुभदती २.	२१११९
" ३.	३३३१८५	शुक्लपुष्प १.	३३३१६१	शुभा २.	३३३१७१
श्रीर्षक ३.	३३३१५६	" १.	३३३१९१	शुभान्वित १. २. ३.	
श्रीर्षण्य ३.	३३३१५६	शुक्लहरित १.	३३३१२४		३३३२९
" ३.	३३३१०१	शुक्लापाङ्ग १.	२३३३६	शुभ ३.	३३३२४
श्रीर्षत्राण ३.	३३३१५६	शुक्ल १. २. ३.	३३३११७	" १.	३३३११०
श्रील ३.	३३३३३३	शुक्ला २. १. ३.	३३३३३७	" १. २. ३.	३३३१८
श्रीवाल ३.	३३३१४९	शुक्ल २.	३३३१८३	शुभि १.	३३३१९२
शुक १.	२३३३२	शुक्लि १.	२३३१८४	शुक्ल १. ३.	३३३१८९
" १.	२३३३२५	" १.	२३३१८८	शुक्ल ३.	३३३२४
" ३.	३३३१९२	" १.	३३३१३५	" ३.	३३३३३४
शुककूट १.	३३३१५८	" १.	३३३११०	शुक्ल २. ३.	३३३३३०
शुकनास १.	३३३१५७	" १. २. ३.	३३३१६५	(शुक्ल)	
शुकनासक १.	३३३१६८	" १. २. ३.	३३३१८५	शुभूपा २.	३३३३३८
शुकपोत्र १.	३३३११७	शुक्लिर्णिक ३.	३३३१४०	शुभूषित १. २. ३.	
शुक्त ३.	३३३१८२	शुक्ल १.	३३३१८९		३३३१०५
" ३.	३३३१८५	शुक्लि २.	३३३१७५	शुभ १.	३३३१५०
" १.	३३३२३६	शुक्ला २.	३३३१४०	शुभिका २.	३३३१८१
" १.	३३३२२९	" २.	३३३१५३	शुभिल १.	३३३१४७
" १. २. ३.	३३३११८	शुक्लापान ३.	३३३१६२	शुभकगोमय १.	३३३१६०
शुक्लिर्णिकषायक १.		शुक्ला १.	३३३१८७	शुभकमांस ३.	३३३१८९
	३३३३५	शुक्ली २.	३३३१८५	शुभन् १.	३३३११५
शुक्लि २.	३३३१८१	शुक्ल ३.	३३३१८५	" ३.	३३३११०
" २.	३३३१०१	" १. २. ३.	३३३१६५	शुभि १.	३३३१५०
" २.	३३३१३२	" १. २. ३.	३३३१६१	शुभ १.	३३३१५८
" २.	३३३१५६	" ३.	३३३१८८	" १.	३३३१६५
" २.	३३३१५८	शुक्लजड १.	३३३१७२	शुभकीट १.	३३३१३३
" २.	३३३१५०	(शुक्ल, जड)		शुभधान्य ३.	३३३१६२
" २.	३३३१३७	शुक्लान्त १.	३३३१३६	शुभशिखि २.	३३३१२९
शुक्र १.	३३३१२३	" १.	३३३१७७	शुभ १.	३३३११७
" १.	२३३१३४	शुक्लि २.	३३३१८९	" १.	३३३१११
" १.	२३३१८४	शुक्ल १.	३३३१६९	" १.	३३३१११
" १.	३३३११९	शुक्लक १.	३३३१६८	शुभकुण्ड १.	३३३१६३
" १. २. ३.	३३३१८६	शुक्लासीर १.	३३३१११	शुभ २.	३३३१२३
शुक्रशिख्य १.	३३३११०	शुक्लि १.	३३३१६९	शुभ २.	३३३१२२

[शून्य]

वैजयन्तीकोषः

[शौण्ड]

शून्य १. २. ३.	२५१२०
" १. २. ३.	३११४५
" १. २. ३.	५४१८७
शूर १. २. ३.	३७१२८
" १. २. ३.	३७१४७
" १.	३८१३३
" १. २. ३.	६५१९२
शूरसेन १ व.	३११२४
शूरसेनि १ व.	३११२४
शूर्प १. ३.	४३१६५
" १. ३.	५११५६
शूर्पकर्ण १.	३७१६१
शूर्पकारि १.	१११२८
शूर्पावर ३.	५११५५
शूल १.	४४१३७
" १. ३.	६५१९२
शूलनाशक ३.	३८११२५
शूलाकृत १. २. ३.	४३१९४
शूलिक १.	३४१३१
" १.	३५१५
" १.	३५११२
" १.	३५१६९
" १.	३५१७३
शूलिका २.	३८११२३
शूलिन् १.	१११४१
शून्य १. २. ३.	४३१९४
शृङ्गल १. २. ३.	३७१८३
" १. २. ३.	४३१४६
शृङ्गलक १.	३४१६८
शृङ्ग ३.	३२१८
" १. ३.	६५१८७
शृङ्गवर्जित १.	३४१७३
शृङ्गवाद्य ३.	३९१२२५
शृङ्गाट १.	३११५१
" १.	३७१५१
शृङ्गाटक १.	४२१४७
शृङ्गार १.	३७१८६
" १.	३९१७५
" १.	४३११६९
शृङ्गारगर्व १.	३६११६९

शृङ्गिण १.	३४१६४
शृङ्गिणी २.	३४१४१
शृङ्गिन् १.	३४१९
" १.	३४१५२
" १.	३७१९६
" १.	४११४४
" १.	८११६०
शृङ्गिवेर ३.	३३१२१४
" ३.	३८१७६
शृङ्गी २.	३८१९०
" २.	४११४४
शृङ्गीकनक ३.	३२१२२
शृत १. २. ३.	४३१९५
शेखर १.	४३१५३
शेफ १.	४४१६१
शेफस् ३.	४४१६१
शेफालिका २.	३३११८६
शेमुषी २.	३६११६३
शेवधि १. ३.	१२१६०
शेवाल ३.	४२१४९
शेष १.	१११३०
" १.	४११३
" १. २. ३.	६५१८७
शैच १.	३६१२४
शैख १.	१२१८७
" १.	३५१५३
" १.	३५११००
शैखरिक १.	३३१११५
शैखालीक १.	३६११०७
शैग्रव ३.	३६१२२
शैनि १.	१११२६
शैव्या २.	४२१२७
शैल १.	२११८६
" १.	३२११
" १.	८६१४
" १.	८९१११
शैलमूल ३.	३३१२०३
शैलालिन् १.	३९१६२
शैल्य १.	३९१६२
शैल्य ३.	३२१४१
" ३.	३८१९६

शैवल १.	४२१४९
शैवलिनी २.	४२१२३
शैवाल ३.	४२१४९
शैशव ३.	४४१५४
शोक १.	३६११८३
" १.	३९१७६
शोचिष्केष १.	१२११५
शोचिस् ३.	६३१३४
शोण १.	३३१६८
" १.	३७११००
" १.	५३११७
" १.	५३१५१
शोणरत्न ३.	३२१३९
शोणिक १.	५३१३१
शोणित ३.	४४११०६
" ३.	५३१५१
" ३.	८६१८
शोथ १.	४४११२२
शोथशत्रु १.	३३१२०९
शोधन १.	३३१४१
शोधनी २.	४३१५२
शोधित १. २. ३.	५४१६६
शोध्य ३.	४४११०५
शोक १. ३.	४४११२२
शोकघ्नी २.	३३११४५
शोभ १.	३६१२३९
शोभन ३.	३२१३२
" १. २. ३.	५४११३५
शोभा २.	४३११४९
शोभाजन १.	३३१५६
शोष १.	४४११२४
शोषु १.	३६११८१
शौक ३.	५११३
शौकिकेय ३.	४११५७
शौकिलकेय १.	४११२४
शौच ३.	३६१२०९
शौदीर्य ३.	३६११६९
शौण्ड १.	२३११४
" १. २. ३.	५४१३७

शौण्ड १. २. ३.	६५५०	अद्धा २.	३६१८०	श्रीपर्णी २.	३३१५८
शौण्डिक १.	३५५४	" २.	६२३८	" २.	३३१५८
" १.	३५५४	अद्धालु १. २. ३.	५५३७	" २.	७५८६
शौण्डी २.	३८७६	अन्थन ३.	५२३९	श्रीपुष्प ३.	४२४१
" २.	६५५०	अपणी २.	३६१००	श्रीफल १.	३३३३०
शौण्डोदनि १.	११३४	(अयणी)		श्रीफली २.	३३११०
शौभिक १.	३६१०३	अपाय्य १.	७१७४	श्रीवेर ३.	३३२०२
शौरि १.	११२६	अमण १. २. ३.	५५१५	श्रीमकुट ३.	३२११९
शौर्य ३.	५१५६	अमणी २.	३३१२५	श्रीमत् १ व.	२१३७
शौर्य ३.	३७२१०	" २.	३४१०	" १.	२३२५
शौर्यकरण ३.	५२१६	अमस्थान ३.	३७१९४	" १.	३३५३
शौक्तिक १. २. ३.		अयण ३.	४२३३	" १.	३३६०
	५५५०	अवण ३.	२१४०	" १.	३३६९
शौखिक १.	३५५५	" ३.	४४९३	" १.	३४५३
श्च्योति २.	५२३४	अवस् ३.	४४९२	श्रील १. २. ३.	५५५६
श्मशान ३.	३१४८	अविष्टा २ व.	२१४०	श्रीवत्स १.	११११
श्मश्रु ३.	४४१०३	आणा २.	४३८०	" १.	१११७
श्मश्रु १. २. ३.	५४९	आद्ध ३.	३६६४	श्रीवत्सपिण्याक १.	
श्याम १.	३३४५	" १. २. ३.	५५३७		३८१०९
" ३.	३८७९	आद्धदेव १.	१२३४	श्रीवत्साङ्ग १.	११११
" १.	५३११	आन्त १. २. ३.	५५३६	" १.	८१४५
" १.	५३१४	आमणी २.	३३१२५	श्रीवास १.	३८१०९
श्यामकङ्क २.	३८५६	आय १.	५२३३	श्रीवृत्त १.	३३२७
श्यामल १.	५३११	आवक १.	३९१११	" १.	८६१९
श्यामलक १.	३३२६	आवण १.	२१८५	श्रीवृत्तकिन् १.	३७९२
श्यामवल्ली २.	३८८०	आवणिक १.	२१८४	श्रीवेष्ट १.	३८१०९
श्यामा २.	२३१९	आवणी २.	२१७६	श्रीसंज्ञ ३.	३८१०३
" २.	३३१३८	" २.	३८९३	श्रुत १. २. ३.	६५८९
" २.	३८७७	श्री २.	३६१९१	श्रुतकर्मन् १.	२१३६
" २.	४४८	" २.	८२१९	श्रुति २.	३६२७
" २.	६२३९	" २.	८९२	" २.	४४९३
श्यामाक १.	३८५६	श्रीकण्ठ १.	११३८	" २.	६२४०
श्यामाङ्ग १.	२१३२	श्रीकर्णयिक १.	२३४०	श्रूषा २.	३३१५४
श्यामाङ्गी २.	४२२६	श्रीकृच्छ्र ३.	३६१४०	श्रेणि २.	६५५०
श्यामिका २.	३४१९	श्रीखण्ड १.	३८११३	श्रेयस् १. २. ३.	५५३४३
श्याव १.	५३१८	श्रीगर्भ १.	३७१५९	" १. २. ३.	८५३२
" १.	५३३१	श्रीघन १.	११३२	श्रेयसी २.	३३१३१
श्येत १.	५३१०	" १.	३८१३९	" २.	८५३३
श्येन १.	२३१९	श्रीधर १.	१११२	श्रेष्ठ ३.	३२२५
" १.	२३३०	श्रीपति १.	११११	" १. २. ३.	५५३६
श्येना २.	२३२०	श्रीपथ १.	४३१६	श्रेष्ठिन् १.	३५७९

श्रौण १. २. ३.	५१११४
श्रौणा २.	२११४०
श्रौणि २.	४१४६४
श्रौत्र ३.	४१४९३
श्रौत्रकान्ता २.	३१८९३
श्रौत्रिय १.	३१६८१
" १.	८१४४५
श्रौषट् ४.	८१८३
श्रौषि २.	३१६१६६
श्रयाख्य ३.	३१८१०९
श्रयूष १.	५३२८
श्रवण १.	५३१४
" १. २. ३.	५१४१३६
श्रवणपत्रक १.	३१४९४
श्रवणवाच् १. २. ३.	५३१४४
श्राघा २.	२१४३५
श्रिकु २. ३.	३१६१९१
श्रीपद १.	४१४१३३
श्रेष्मन् १.	४१४१२१
श्रेष्मफल १.	३३१५५
श्रेष्मल १.	३१८५३
" १. २. ३.	४१४१४६
श्रेष्मसू १. २. ३.	४१४१४६
श्रेष्मातक १. २.	३३१५५
श्रेष्मिन् १.	३३१५३
श्लोक १.	६११६०
श्वः (-स्) ४.	८१८९
श्वकण्टक १.	३१५५८
" १.	३१५१०६
श्वचण्डाल १.	३१५८
श्वदंष्ट्रा २.	३३११४२
" २.	३१७५१
श्वदयित ३.	४१४१०९
श्वन् १.	३१४८६
" १.	८१६५
श्वनिष्ठा ३. २.	३१५३४
श्वपच १.	३१५३९
" १.	३१५४७
श्वपाक १.	३१५३८

श्वपाक १.	३१५५१
श्वपामन १.	३३११०७
श्वभीरु १.	३१४३७
श्वभ्र १. ३.	४११२
श्वयथु १.	४१४१२२
श्ववृत्ति २.	३१८१७
श्वशुर १.	४१४३०
" १ द्वि.	४१४४८
श्वशुर्य १.	७११७४
श्वश्रू २.	४१४३०
श्वश्रूश्वशुर १ द्वि.	४१४४८
श्वश्रेयस १. २. ३.	५१४१४३
श्वसन १.	११२४७
श्वसित ३.	३१६२०४
श्वस्तन १. २. ३.	५१४८९
श्वापद १.	३१४७३
श्वाली १.	३१४७१
श्वविष् १.	३१४३७
श्वस १.	३१६२०४
श्वसहेति २.	३१६२००
श्वसा २.	३३११३८
श्वित्र ३.	४१४१२५
" १. २. ३.	५१४१४४
श्वेत ३.	३१८१३९
" १.	५३११०
" १. २. ३.	६१५९२
श्वेतकन्द १.	३३१२०५
श्वेतकाक १.	२३११८
श्वेतचार १.	३१८१२७
श्वेतच्छाण ३.	३१८१४९
श्वेततण्डुल १.	३१८३२
श्वेतपिङ्गल १.	३१४११
श्वेतबिन्दुका २.	५३१५५
श्वेतमध्य १.	३३१२००
श्वेतमरिच ३.	३१८१०
श्वेतरक्त १.	५३११७
श्वेतशाल १.	३१८३३
श्वेतसिम्बिका २.	३१८३६
श्वेतसुरसा २.	३३१११९
" २.	३३११८७

श्वेता २.	३१९५०
श्वेत ३.	३११९
श्वोचवीयस ३.	५१४१४२
ष	
षट्क ३.	३१७१०
षट्कर्मन् ३.	३१६६३
षट्पद १.	२३१४३
षट्सप्त १. २. ३.	५११२६
षडभिज्ञ १.	१११३२
षडश्रा २.	३३११११
" २.	३३११७७
षडानन १.	१११५६
षडूषण ३.	३१८८१
षडगुण १.	३१७६
षडग्रन्थ १. २.	७१५८७
षडग्रन्था २.	३३११९८
षड्ज १.	३१९१३२
षड्द १. २. ३.	३१४५७
षड्स १.	५३१४५
षड्सासव १.	४१४१०४
(षड्सावस)	
षण्ड १.	३१४५३
" १.	३१६१२२
" १.	३१७१३
" १.	४१४३
" १. ३.	५११५
" १.	६११६०
षण्डतायोग्य १.	३१४५५
षण्माससङ्ग्रहिन् १.	३३११२५
षष्टि २.	५११२७
षष्टिक १.	३१८३४
षष्टिक्य १. २. ३.	३१८१९
षष्टितम १. २. ३.	५११२२
षष्टिहायन १.	३१७६४
षष्ठ १. २. ३.	५११२१
षष्ठकालिन् १. २. ३.	३३११२७
षष्ठी २.	१११५९
षाण्ड १.	१११४६
षाण्मातुर १.	१११५६

षाण्मासी २.	३१६६	संचाल १.	२११२८	संस्तव १.	५१२३१
षाष्टिक ३.	३१६१४६	" १.	३१७८०	संस्ताव १.	३१६११०
षिद्ध १.	३११७०	संचास १.	४३१४	संस्त्याय १.	७११७८
" १.	४१४३९	" १.	४३३३५	संस्था २.	३१६८७
षोडत् १. २. ३.	३१४५७	" १.	४३१६७	" २.	३१८१५
षोडशाक्ष १. २. ३.	८१५२४	संचासन ३.	४३१२३	" २.	६१२४३
षोडशाङ्घ्रि १.	४११४७	संचाहक १.	३१९१५	संस्थाचर १.	३१७२७
षोडशावर्त १.	४११५६	संचाहन ३.	५१२३०	संस्थान ३.	५१२२१
षोडशाह १.	३१६१४४	संवित्ति २.	३१६१६४	" ३.	७३३३७
ष्यम १.	६११६१	" २.	७१२२९	संस्थित १. २. ३.	३१७२२०
स		संविद् २.	५१२३७	संस्पृष्टमैथुना २.	३१६४८
संयत् २.	३१८२०६	" २.	६१२४१	संस्फोट १.	३१७२०४
संयत १. २. ३.	५१४६७	संवीक्षण ३.	५१२४२	संहतजालु १. २. ३.	५१११०
संयता २.	३१८१६८	संवीत १. २. ३.	५१४९६	संहतल १.	४१४७८
संयम १.	३१६१३३	संवृत १.	२११४५	संहनन ३.	४१४५२
" १.	५१२३०	संवृतता २.	३१६३५	संहार १.	२११९५
संयाज्य १.	३१६११२	संवेश १.	४३११६८	संहारी २.	४३३३८
संयाम १.	५१२३०	(सवोस)		संहिता २.	७१२२८
संयाव १.	४३१७३	संनयान ३.	४३११२२	संहृति २.	२१४३१
संयुग १.	३१८१०४	संससक १.	३१७१५२	सकल १. २. ३.	५१४८५
संयोग १.	५१२२६	संशय १.	३१६१७७	सकाश १. २. ३.	५१४१३३
संरम्भ १.	३१९८९	" १.	३१६१९७	सकृत् ४.	८१७२९
संराव १.	२१४४	(संश्रय)		" ४.	८१८६
संरोध १.	७११७६	संशयालु १. २. ३.	५१४३८	सकृत्प्रज १.	२३११७
संवत् ४.	८१८१०	संशित १. २. ३.	५१४९४	" १.	८११४५
संवत्सर १.	११२१०	संश्रव १.	५१२३७	सकृप १. २. ३.	३१९७९
संवत्सरतम १. २. ३.	५११९९	संश्लेष १.	५१२२६	सक्तु १.	४३१७०
संवदन ३.	२१४२५	संसद् २.	३१८१३	" १. ३.	८१९३१
संवदन ३.	३१६११७	संसरण ३.	४३११६	सक्तुफला २.	३३३८९
संवर १.	४१२१०	" ३.	८३११२	सक्थि ३.	३१७८९
" १.	४१२१२	संसिद्धि २.	७१२२९	" ३.	४१४५९
संवर्त १.	३३३१७७	संसृष्ट १. २. ३.	७१२२८	सखि १. २. ३.	३१७४३
" १.	३१८४३	संसृष्टिन् १.	५१४५	" १. २. ३.	६१५९८
" १.	३१९७६	संस्कार १.	३१६१२	सखी २.	४१४२५
संवर्तक ३.	१११२४	संस्कृत १. २. ३.	७१२२८	सख्य ३.	३१६१८७
" १.	११२२१	संस्कृतस्तम्भ १.	३१६१०३	सगर ३. २.	८१९३३
संवर्तिका २.	४१४५५	संस्कृति १. २.	७१५८८	सगर्म १.	४१४३४
संवसथ १.	४३१२	संस्तर १.	४३११६५	सगोत्र १.	४१४५०
संवादन ३.	२१४२५	" १.	७११७६		
संवाप १.	४३११६७				

[सन्धि]

वैजयन्तीकोषः

[सदागति]

सन्धि २.	४३१०३
सङ्कट १. २. ३.	पा३१२६
सङ्कर १.	४३१५२
सङ्करज १. २. ३.	३७६२
„ १. २. ३.	३७६५
„ १. ३.	३९११
सङ्कर्षण १.	१११२२
सङ्कलित १. २. ३.	पा३१०९
सङ्करप १.	३६१७३
सङ्कीर्ण १.	३५१२
„ १. २. ३.	पा३११०
सङ्कुचित १.	२३१६
सङ्कुल १. २. ३.	२४११७
„ १. २. ३.	पा३११०
सङ्कुसुक् १. २. ३.	पा३१६८
सङ्कीच ३.	३८११७
सङ्क्रन्दन १.	१२३३
सङ्क्रम १.	३११५२
सङ्क्रा २.	१२१५१
सङ्क्षेप १.	२४१४०
सङ्क्षय ३.	३८१२०४
सङ्क्षयान ३.	पा३१३६
सङ्क्षयावत् १.	३६१२३४
सङ्ग ३.	३८१२२१
„ ३.	पा३१६१
„ १.	पा३१२७
सङ्गत १.	२११६४
„ १.	३६११४७
„ ३.	३६११८६
सङ्गति २.	पा३१२१
सङ्गम १.	३६११४७
„ १.	पा३१२७
सङ्गर १.	३७१२०५
„ १.	७५१९२
सङ्गव १.	२११६४
सङ्गाली २.	३३१८९
सङ्गीतक ३.	३९१७२
सङ्गीर्ण १. २. ३.	पा३१०६
सङ्गूढ १. २. ३.	पा३१०९

सङ्गय ३.	४४११४२
सङ्ग्रह १.	७११७८
सङ्ग्राम १.	३७१२०६
सङ्ग्राह १.	३७१२००
„ १.	४४१७९
सङ्ग १.	पा३१४
सङ्गचारिन् १.	४११४२
सङ्गतिथि १. २. ३.	पा३११९
सङ्गर्ष १.	७११७७
सङ्गात १.	४४११०९
„ १.	पा३११
सङ्गातिका २.	३६११०८
सचिव १.	७११७५
सङ्गः (-प्) ४.	८८११७
सङ्ग १. २. ३.	३७११४२
सङ्गन ३.	३७१५९
सङ्गना २.	३७१७०
सङ्गय १.	पा३११
सङ्गार १.	४४१५३
सङ्गार १.	३७१२८
सङ्गारिका २.	३७१३६
सङ्गारिणी २.	४४१२४
सङ्गारित १.	३९१३
सङ्गारिन् १.	३९१८१
सङ्गादनी २.	४४११०३
सङ्गद्य ३.	४२१३१
सङ्गवन ३.	४३१२६
सङ्गावन ३.	३८११४४
सङ्गपन ३.	३७१२५
सङ्गा २.	२११२३
„ २.	६२१४३
सङ्गु १. २. ३.	पा३११०
सङ्गवर १.	१२१३१
सट १.	३५१७
सट्ट ३.	४३१४४
सट्टक ३.	४३१९८
सणि १.	पा३१५५
सण्डीन ३.	२३१५०
सत् ३.	१२१३८
„ ३.	३६१२३४
„ १. २. ३.	८४११६

सतत १. २. ३.	पा३१३०
सतश्च ३.	पा३११
सती २.	१११५९
„ २.	३२११६
„ २.	४४१७
सतीनक १.	३८१४४
सतीर्थ १.	३६१२४
सत्पृ १. २. ३.	पा३१३७
सतिरक ३.	२११८६
सत्किङ्कु १.	३११५७
सत्त्व ३.	३६११६२
„ ३.	३९१९७
„ १. ३.	६५१९३
सत्त्वक १.	१२१३८
सत्पथ १.	३११४९
सत्य ३.	१११४७
„ ३.	३६१२०९
„ ३.	पा३१३
„ १. २. ३.	६५१९५
सत्यङ्कार १.	३८१७१
सत्ययुग १.	२११९१
सत्ययौवन १.	१३१३
सत्यलोक १.	३६१२०८
सत्यवती २.	३३११४४
सत्यवतीसुत १.	१११३१
सत्याकृति २.	३८१७१
सत्याग्नि १.	३६११५२
सत्यानुत ३.	३८१३
सत्यापन ३.	३८१७१
सत्र ३.	३६१८५
„ ३.	३६१८५
„ ३.	६३१३५
सत्रशाला २.	४३१२६
सत्रा ४.	८८११७
सत्वर १. २. ३.	पा३१२४
सदस् २. ३.	३८११४
सदसदात्मक ३.	३६११६४
सदस्य १.	२६१८१
„ १.	३८११३
सदा ४.	८८१५
सदागति १.	१२१५०

[सदागति]

सदागति १.	२।१।१५
सदातन १. २. ३.	५।४।८८
सदाफल १.	३।३।२२१
सद्वत् १. २. ३.	५।४।१२१
सदृश १. २. ३.	५।४।१२१
सदृश १. २. ३.	५।४।१२१
सद्वेश १. २. ३.	५।४।१४१
सद्भि १.	१।०।१८
(सद्भि)	
सद्भन् ३.	४।३।१८
सद्यः (-स्) ४.	८।८।७
सद्यःपाक १.	३।६।१९९
सद्यःप्रचालितान्नक १.	३।६।४२
सद्यस्तन १. २. ३.	५।४।८९
सद्गुचि १. २. ३.	३।७।४३
सधर्मचारिणी २.	४।४।३५
सध्रीचीन १. २. ३.	५।४।९३
सध्वय १. २. ३.	५।४।९३
सनत्कुमार १.	१।३।७
सनल १. २. ३.	३।१।४४
रुना ४.	८।८।६
सनात् ४.	८।८।६
सनातन १.	१।३।७
” १. २. ३.	५।४।८८
” १. २. ३.	८।५।२५
सनाभि १.	४।४।५०
सनालिङ्ग १.	३।५।२०
सनि १. २.	३।६।१२१
” १.	८।९।१०
सनिष्ठीव १. २. ३.	२।४।१८
सनीडक १. २. ३.	५।४।१४१
सन्तत १. २. ३.	५।४।१३०
सन्तति २.	४।४।४१
” २.	७।२।२८
सन्तमस ३.	२।१।६२

शब्दानुक्रमणिका

सन्तान १.	१।३।१४
” १.	४।४।४०
” १.	४।४।४९
सन्तानिनी २.	३।८।१४७
सन्ताप १.	१।२।३१
” १.	४।४।१३८
सन्तापित १. २. ३.	५।४।९८
सन्तोष १.	३।६।१६६
” १.	३।६।२०९
सन्दंश १.	३।९।१७
” १.	४।३।१०
सन्दंशित १. २. ३.	३।८।११
सन्दर्भ १.	५।२।३९
सन्दष्ट १.	३।९।१३३
सन्दान ३.	३।९।२९
सन्दानिनी २.	४।३।२२
सन्दानभाग १.	३।७।७६
” १.	३।७।७९
सन्दाल १.	२।१।५१
सन्दिता १. २. ३.	५।४।९७
सन्देष्ट १. २. ३.	५।४।३८
सन्देश १.	२।४।२५
सन्देशगिर २.	२।४।३६
सन्देशहर १.	३।७।२९
सन्देह १.	३।६।१७७
सन्दोह १.	५।१।२
सन्द्वव १.	३।७।२११
सन्द्राव १.	३।७।२११
सन्धा २.	२।१।६९
” २.	६।२।४४
सन्धान ३.	४।३।८२
सन्धानी २.	३।३।१०५
” २.	४।३।२१
सन्धि १.	३।७।६
” १.	६।१।६३
सन्धिकाष्ठ ३.	४।३।४१
सन्धित १.	४।४।१०१
सन्धिनी २.	३।४।५१

[ससला]

सन्धिबन्धन ३.	४।४।१७
सन्ध्या २.	२।१।६९
सन्न १. २. ३.	५।४।१५
” १. २. ३.	६।४।१९
सन्नद्ध १. २. ३.	३।७।१४२
सन्नय १.	७।१।८२
सन्नाम १.	५।२।२४
सन्नाह १.	३।७।१५३
सन्नाहित १. २. ३.	५।४।९७
सन्नाहय १.	३।७।६९
सन्निकृष्ट १. २. ३.	५।४।१४१
सन्निधि १.	७।१।८०
सन्निपात १.	५।२।२६
सन्निभ १. २. ३.	३।९।२१
” १. २. ३.	५।४।१२२
सन्निवेश १.	४।३।३१
” ३.	५।२।२१
सन्निहित १. २. ३.	५।४।१३३
सन्न्यास १.	३।६।१४४
सन्न्यासपत्नी २.	४।३।२८
सपट्टी २.	४।३।४४
सपत्न १.	३।७।४१
सपत्राकृति २.	५।२।३८
सपदि ४.	८।७।२३
” ४.	८।८।१
सपर्या २.	३।६।३९
सपिण्ड १.	४।४।५०
सपीति २.	३।९।५३
ससकी २.	४।३।१४६
ससजिद्ध १.	१।२।१७
ससतन्तु १.	३।६।८२
ससति २.	५।१।२७
ससपर्ण १.	३।३।४७
ससम १. २. ३.	५।१।२०
ससमावृ २.	१।१।६५
ससर्षि १ ब.	२।१।५०
ससला २.	३।३।१८५

[सप्तसप्ति]

वैजयन्तीकोषः

[समुद्रनवनीतक]

सप्तसप्ति १.	२११११
सप्तार्चिस् १.	१२११६
सप्ति १.	३१७९०
सप्तह्यचारिन् १.	३१६२४
सप्ता २.	३१८१३
” २.	५११५
” २.	६२१४२
सप्ताजन ३.	३१६१८६
सप्तासद् १.	३१८१३
सप्तास्तार १.	३१८१३
सप्ति १.	३१९५९
सप्त्य १.	१२१२५
” १.	३१८१३
” १. २. ३.	६१४१८
सप्त्य ४.	८१७८
सप्त १.	३११५२
” ३.	५११६१
” ३.	५११६२
” १. २. ३.	५११८६
” १. २. ३.	५११२१
” १. २. ३.	६१५९५
सप्तक ३.	५११६२
सप्तकम् ४.	८१८१७
सप्तच १. २. ३.	५११३३
सप्तग्र १. २. ३.	५११८५
सप्तङ्ग १.	३१९६०
सप्तङ्गा २.	३१३१३५
सप्तज १.	५११५
सप्तज्ञा २.	२११३६
सप्तज्या २.	३१८१४
सप्तजस ३.	३१७४८
सप्ततट १ व.	३११३१
सप्तधिक १. २. ३.	५११३७
सप्तनीपद १.	१२१४४
सप्तन्त १. २. ३.	५११३३
सप्तन्ततः (-स्) ४.	८१८१३
सप्तन्तदुग्धा २.	३१३१७
सप्तन्तभद्र १.	१११३३
सप्तन्तभुज् १.	१२११४

समन्तात् ४.	८१८१३
समन्तिक १. २. ३.	५११३३
समपद ३.	३१७१८७
समम् ४.	८१८१७
समय १.	७११८२
समया ४.	८१७३३
” ४.	८१८१५
समर १. ३.	३१७२०६
” १. ३.	८१६१७
” १. ३.	८१६१८
समर्थ १. २. ३.	७११३०
समर्थन ३.	३१८१५
समर्याद् १. २. ३.	५११४१
समलेपनी २.	३१९१४
समवकारक १.	३१९१००
समवर्तिन् १.	१२१३४
समवाय १.	५१११
समज्ञान १.	५१३५४
समष्टि २.	५१३४८
समसुप्ति २.	२११९४
समस्त १. २. ३.	५११८५
समस्थान ३.	३१६२२४
समस्या २.	२१४४०
समा २ व.	२११९१
” २.	६१५९५
समांसमीना २.	३१४४८
समाघात १.	३१७२०४
समाज १.	५११५
समादान ३.	३१६१०४
समाधि १.	३१६२३२
” १.	३१९६०
” १.	७११८१
समान १. २. ३.	५११२१
” १. २. ३.	७१५८८
समानोदर्य १.	४१४३४
समापन ३.	८१३१३
समालम्भन ३.	४१३१४७
समास १.	२१४४०
” १.	५१२१८

समाहार १.	५२११८
” १.	८११४७
समाहित १. २. ३.	२१४१३
” १. २. ३.	२१४१४
समाह्वय १.	८११४७
समिक ३.	३१७२०३
” १.	७११७७
समिति २.	७२२२७
समिदाधान ३.	३१६११
समिध् २.	३१६९६
” २.	३१७२०६
समीक १.	५१३६
” १.	७११७५
समीकरण ३.	३१८३०
समीचीन ३.	५१३३
समीप १. २. ३.	५११४०
समीर १.	१२१४९
समीरण १.	१२१४७
” १.	३१३१२०
समुच्चय १.	५२११८
समुच्छय १.	८१६४६
समुन्धित १. २. ३.	५११०१
समुत्थान ३.	५२१२५
समुत्पिञ्ज १. २. ३.	५११९४
समुद् १. २. ३.	५१३३३
समुदय १.	३१७२०५
” १.	५११२
समुदस्त १. २. ३.	५१११२
समुदाय १.	३१७२०५
” १.	५११२
समुद्ग १.	४१३६४
समुद्धत १. २. ३.	५१३३१
समुद्ग ४.	४२१११
” १. २. ३.	५११२९
समुद्रनवनीतक ३.	२११२७

समुद्रान्ता]

शब्दालुक्रमणिका

[सर्वज्ञ

समुद्रान्ता २.	८।२।१०	सम्भोग १.	३।७।७०	सरस्वती २.	१।१।९
समुन्दन ३.	५।२।२९	” १.	७।१।८०	” २.	४।२।२८
समुन्नति २.	३।३।१६	सम्भ्रम १.	३।९।८९	” २.	८।५।३०
समुन्नद्ध १. २. ३.	८।४।१२	” १.	७।१।७९	सरि २.	२।१।२
समूह १.	३।४।२०	सम्मति २.	७।२।२९	सरित् २.	४।२।२२
समूह १.	५।१।२	सम्मद १.	३।६।१८८	सरिताम्पति १.	४।२।११
समूहन ३.	३।७।१८९	सम्मर्द १.	३।७।२०५	सरित्पति १.	४।२।१२
समृद्ध १. २. ३.	५।४।५७	सम्मार्जनी २.	४।३।५२	सरी २.	३।७।९८
समृद्धि २.	३।८।९३	सम्मासा २.	३।३।१२७	सरीष्टप १.	४।१।४
समोलक १.	५।३।४५	(समांसा)		” १.	४।१।४०
समोलुक ३.	३।२।३०	सम्मुख १. २. ३.	५।४।४७	सरुज् २.	३।६।५०
सम्पत्ति २.	३।६।१९१	सम्मूर्च्छन ३.	५।२।४१	सरुहाह १.	३।७।१०६
” २.	३।७।४	सम्यक् ३.	५।३।३	सरोज २.	४।२।३७
सम्पद् २.	३।६।१९१	सम्राज् १.	६।१।६१	सरोरुह ३.	४।२।३६
” २.	८।९।५	सर १.	१।२।४८	सर्ग १.	३।६।३२
सम्पात १.	५।२।२६	” १.	३।३।४२	” १.	५।२।१
सम्पातपाटव ३.	५।२।९	” ३.	३।८।१४५	” १.	६।१।६२
सम्पुट १.	४।३।६४	” १.	५।३।२६	सर्ज १.	३।३।३८
सम्पूर्ण १. २. ३.	५।४।८७	सरक ३.	३।९।५३	सर्जक १.	३।८।१४०
सम्पृक्त १. २. ३.	५।४।७८	” ३.	७।३।३८	सर्जन १.	३।८।१११
सम्प्रति ४.	८।८।५	सरघा २.	२।३।४५	सर्प १.	४।१।४
सम्प्रधारण ३.	३।८।१५	सरट् १.	६।१।६४	” १.	८।६।१५
सम्प्रयोग १.	५।२।२६	सरट् १.	४।१।२८	सर्पजाति २.	४।१।११
” १.	८।१।४५	सरटी २.	३।२।२७	सर्पदंष्ट्री २.	३।३।१२७
सम्प्रभ १.	३।८।१५	सरणी २.	४।२।२१	सर्पमुज् १.	४।१।१६
सम्प्रहार १.	३।७।२०४	सरण्यु १.	७।१।७६	” १.	८।६।२१
सम्प्रेष १.	५।२।२५	सरमा २.	३।४।७१	सर्पभृता २.	३।१।१
सम्प्रेषणी २.	३।६।६५	सरल १.	३।३।७४	सर्पराज १.	४।१।३
सम्फाल १.	३।४।६४	” १. २. ३.	५।४।२०	” १.	४।१।१५
सम्फुल्ल १. २. ३.	३।३।९	सरलद्रव १.	३।८।१०९	” १.	४।१।१६
सम्बन्ध १.	५।२।१३	सरलशोणिक १.	५।३।५१	सर्पशफरी २.	४।१।४४
सम्बाध १. २. ३.		सरलिक १.	५।३।५२	सर्पाञ्चर १.	४।१।२१
” १. २. ३.	५।४।१२६	सरस् ३.	४।२।६	सर्पारि १.	८।६।२१
” १. २. ३.	७।५।९२	” ३.	६।३।३४	सर्पिस् ३.	३।८।१३८
सम्भरी २.	३।८।१२१	सरसिज ३.	४।२।३७	” ३.	६।३।३५
सम्भव १.	७।१।७९	सरसी २.	४।२।६	सर्व १.	५।१।३१
सम्भाल १ व.	३।१।२४	सरसीज ३.	४।२।३७	” १.	५।४।८५
सम्भावना २.	३।६।१७६	सरसीरुह ३.	४।२।३७	सर्वसहा २.	३।१।३
सम्भाषण ३.	२।४।२३	सरस्वत् १.	४।२।२९	सर्वगन्ध ३.	४।३।१५१
सम्भेद १.	४।२।३१	” १.	८।५।३३	सर्वजनप्रिया २.	३।८।९३
” १.	५।२।२६	” १.	८।५।३४	सर्वज्ञ १.	१।१।३३

सर्वज्ञ]

वैजयन्तीकोषः

[साज्य

सर्वज्ञ १.	१११४४
सर्वतः(-सू) ४.	८८८३
सर्वतोभद्र १.	४३३३०
सर्वतोमुख १.	१११८
" ३.	८३३१८
सर्वदा ४.	८३३५
सर्वधुरीण १. २. ३.	३३३५८
सर्वभक्त १. २. ३.	५३३५०
सर्वभक्ता २.	३३३६२
सर्वमङ्गला २.	१११५८
सर्वला २.	३३३१६६
सर्वलोचना २.	३३८९८
सर्वविद् २.	३३३२३३
सर्वविद्या २.	३३३३१
सर्ववेदस् १.	३३६१७
सर्ववेशिन् १.	३३३६३
(सर्वकेशिन्)	
सर्वसन्नहन ३.	३३३१५७
सर्वसस्यभू २.	३३८१७
सर्वसह १.	३३३५३
सर्वाङ्गीन १. २. ३.	५३३५०
सर्वाभिसार १.	३३३१५७
सर्वार्थसिद्ध १.	११३३४
सर्वोच्च १.	३३३१५७
" ३.	३३८१३६
सर्वप १.	३३८४१
सर्वपी २.	३३३६७
सलज्ज १.	३३३१२२
सलवण ३.	३३३३२
सलिल ३.	४३३१
सल्लकी २.	३३३९६
सल्लाप १.	३३३२९
सव ३.	३३६८२
सवन १.	३३६६९
सवर्ण १.	३३५३
" १.	३३५७०
" १. २. ३.	५३३१२१
सविक्रम १.	३३३९१

सवितृ १.	२३३१०
" १.	७३३७८
सविध १. २. ३.	५३३१२१
" १. २. ३.	५३३१४१
सविस्मय १. २. ३.	४३३२९
सवेध १. २. ३.	५३३१४१
सवेश १. २. ३.	५३३१४१
सव्य १.	१३३२८
" १. २. ३.	६३३१८
सव्येष्ट १.	३३३१३८
सस्य ३.	३३३२०
" ३.	३३८३१
सस्यसंवर १.	३३३३८
सह ४.	८३३१७
सहकारक १.	३३३२५
सहचर १. २. ३.	३३३१९१
सहचरी २.	४३३३४
सहज १.	४३३३१
" ३.	५३३१
सहधर्मिणी २.	४३३३४
सहन १. २. ३.	५३३३३
सहपानक ३.	३३९५३
सहभोजन ३.	४३३१०३
सहरक्षस् १.	१३३२१
" १.	१३३२२
सहस् १.	२३३८१
" ३.	३३३२१०
सहसा ४.	८३३३४
सहसातु १.	३३६८३
" १.	७३३४५
सहस्य १.	२३३८२
सहस्र ३.	५३३२८
सहस्रतम १. २. ३.	५३३२३
सहस्रवृष्ट २.	४३३४२
सहस्रपत्र ३.	४३३३८
सहस्रवीर्या २.	३३३२३३
सहस्रवेधिन् ३.	३३८१३१

सहस्रवेधिन् १.	३३८१३३
सहस्रांशु १.	२३३१५
सहस्राक्ष १.	१३३१
सहस्रिन् १. २. ३.	३३३१४१
सहा २.	३३३१०६
" २.	३३३१२८
" २.	३३३१८८
" २.	३३३१९०
" २.	३३३१९१
सहाध्यायिन् १.	३३३२४
सहाय १.	३३३१६
" १. २. ३.	३३३४३
सहायता २.	५३३१९
सहित ३.	३३३१७६
सहितोदर ३.	३३३१७७
सहिष्णु १. २. ३.	५३३३३
सहुरि १.	१३३१८
" १.	७३३७५
सांयात्रिक ३.	१३३६८
" ३.	३३३१२३
" १.	४३३१८
सांयुगीन १. २. ३.	३३३१४९
साराविण ३.	८३३१७
सांवत्सर १.	१३३८०
" १.	३३३२५
" १.	३३८३३
आवत्सरी २.	३३३६६
साकम् ४.	८३३१७
साक्रेत ३.	४३३५
साक्षात् ४.	८३३३०
साक्षिन् १. २. ३.	३३८१९
सागर १.	४३३१०
साङ्कारिका २.	३३३५२
साङ्ग्रामिकगुण १.	३३३४
" १.	३३३५
साचि १.	१३३१८
" ४.	८३३१९
साज्य ३.	३३३६५

साति]

साति २.	६।२।४४
सातिसार १. २. ३.	४।४।१४६
साध्वत १.	१।१।२३
” १. २. ३.	३।५।५७
” १. २. ३.	३।५।१०५
साध्वती २.	३।९।१०१
साध्विक ३.	३।६।११९
” १. २. ३.	३।९।९९
साध्विकी २.	२।१।६०
साद १.	३।६।१९१
सादिन् १.	६।१।६५
साद्यस्क १. २. ३.	५।४।८९
साधन ३.	७।३।३६
साधारण १. २. ३.	५।४।१२९
साधिका २.	३।३।१७८
साधीयस् १. २. ३.	७।४।२९
साधु १. २. ३.	५।४।१३५
” १. २. ३.	६।५।९६
साधुवाद १.	२।४।३६
साध्य १ ब.	१।३।८
साध्वस ३.	३।६।१८५
साध्वी २.	४।४।७
साधु १. ३.	३।२।७
” १.	३।६।८३
सानुनासिक १. २. ३.	२।४।१६
सानुमत् १.	३।२।१
सान्त्व १. २. ३.	२।४।१६
” ३.	३।७।१३
” ३.	६।३।३५
सान्त्वन ३.	३।७।१३
” ३.	५।२।३८
सान्दष्टिक ३.	३।६।२३६
सान्देशिक १.	३।७।२९
सान्द्र १. २. ३.	५।४।१२६
सान्द्रस्निग्ध १. २. ३.	५।४।४३

शब्दानुक्रमणिका

सान्ध्य १.	२।१।१६
सान्ध्य ३.	३।६।९९
सासपदीन ३.	३।६।१८७
सामज १.	३।७।६१
सामन् ३.	२।४।२३
” ३.	३।६।२६
” ३.	३।६।१११
” ३.	३।७।१३
सामन्त १.	३।७।१८
सामर्थ्य ३.	७।३।३८
सामाजिक १.	३।८।१३
सामान्य १. २. ३.	५।४।१२९
सामि ४.	८।७।२९
सामिक ३.	३।६।९३
सामुद्र १.	३।५।४२
” ३.	४।४।५४
सामुना ३.	३।४।२०
साम्पराय १.	८।१।४८
साम्परायिक १.	३।७।१२६
” १.	३।७।२०३
साम्प्रतम् ४.	८।७।३४
” ३.	८।८।५
साम्बाधिक १.	२।१।६६
सायक १.	७।१।७७
सायन्तूर्य ३.	३।९।१३७
सायम् ४.	८।८।१०
सायाह्न १.	२।१।६५
सायुज्य ३.	३।६।२३७
सार १.	३।३।१४
” १.	४।४।१०९
” १. २. ३.	६।५।९७
सारघ ३.	३।८।१३५
सारङ्ग १. २. ३.	७।५।८९
सारण १.	१।२।५४
” १. २. ३.	३।१।४६
” १. २. ३.	३।६।६
” ३.	३।८।१४९
” ३.	५।२।११
सारणी २.	२।४।४२
सारथि १.	३।७।१३८

[सिंह

सारपर्णी २.	३।३।१००
सारमेय १.	३।४।६८
सारस १.	२।३।३३
” ३.	४।३।३७
” १.	७।१।८३
सारसन ३.	३।७।१५६
” ३.	४।२।१४६
सारसप्रिया २.	२।३।३३
सारस्वत १.	३।६।१९
सारिका २.	३।९।१२८
सारी २.	३।९।९१
सार्थ १.	५।१।१४
सार्थवाह १.	३।८।७२
सार्द्र १. २. ३.	५।४।१०७
सार्धम्	८।८।१७
सार्पिष्क १. २. ३.	४।३।९५
सार्धभौम १.	२।१।८
” १.	३।७।२
सार्ष्टि २.	३।६।२३७
साल १.	३।३।३८
” २.	४।३।१४
” २.	६।१।६५
सालभक्षिका २.	३।९।१४
सालातुरीयक १.	३।६।१५४
सालावृक १.	८।१।४६
साहव १ ब.	३।१।३२
” १ ब.	३।१।३८
सावन १.	२।१।८१
सावित्र १.	३।६।४१
सावित्री २.	४।४।७४
सावित्रेय २.	१।२।३४
साष्टी २.	३।३।१७५
सास्ना २.	३।४।६०
साहस १. ३.	३।७।४६
साहस्र १. २. ३.	३।७।१४१
” ३.	५।१।१३
साहायक १. २.	८।९।३५
सिंह १.	३।२।५
” १.	३।४।१

सिंह]

वैजयन्तीकोषः

[सुगन्धि

सिंह १.	८१६१४	सिता २.	३१८१३४	सीम १.	५३१७
सिंहकर्णी २.	३१७१९३	सिताङ्ग १.	३१८१८५	सीमन् २.	४३१११
सिंहकेसर १.	३३३२६	सितायुध १.	४११४४	" २.	६३३४४
सिंहपुच्छी २.	३३३१३७	सितासित १.	१११२४	सीमन्त १.	४३१००
" १.	८१२१५	सितोदर १.	११२५८	सीमन्तिनी २.	४३४४
सिंहमल ३.	३१२२८	सिद्गुण्ड १.	३३३९८	सीमन्तोन्नयन ३.	३६३३
सिंहल ३.	३१११९	" १.	३१५९	सीमा २.	४३१११
" ३.	३३३३१	सिद्ध १.	१३३२	" २.	६३३४४
" ३.	३१८७५	" १. २. ३.	४३१९३	सीर ३.	३१८२७
सिंहवाहना २.	१११६२	" १. २. ३.	५३१११	सीवन ३.	३१९१२
सिंहसंहनन १. २. ३.	५३४६	सिद्धसेन १.	१११५५	सीवनी २.	३१९११
सिंहाण ३.	३३३३६	सिद्धान्त १.	३६३२५	" २.	४३४६२
सिंहासन ३.	३१७१५	सिद्धार्थ १.	३१८४१	सीस १. ३.	३३३२९
सिंहास्य ३.	३३३१०१	सिद्धि २.	३१८९३	सु ४.	८१७८
सिंहिका २.	३६३४७	सिध्म ३.	४३१२६	" ४.	८१८४
सिंही २.	३३३१०२	सिध्मन् १.	५३१४४	" ४.	८१८१३
" २.	३३३१०६	सिध्मल १. २. ३.	४३१४४	सुकर १. २. ३.	३१७१०७
सिकता २ ब.	४३३३३	सिध्म १.	२११३९	सुकुमार १.	५३३५
सिकताप्राय ३.	४३३३३	सिन ३.	४३१५२	सुकृत ३.	३३३१६८
सिकतावत् १. २. ३.	३११४४	सिनीवाली २.	२११७१	" ३.	७३५९४
सिकतिल १. २. ३.	३११४४	" २.	८१२१०	सुकृतिन् १. २. ३.	५३५५६
सिक्थ १.	६११६६	सिन्दुक १.	३३३११८	सुख ३.	३३३१८९
सिच् २.	४३३११६	सिन्दुवार १.	३३३११८	" ३.	५३३१४४
सिच्य १.	४३३११६	सिन्दूर ३.	३१८११८	" ३.	६३३३५
सित १.	५३११०	सिन्धि ३.	३१८१२१	सुखकर १.	१११२१
" १. २. ३.	५३१९७	सिन्धु १ ब.	३११२७	सुखङ्घुण १.	१११५०
सितकाच १.	५३३१३	" १.	३३३१८	सुखदोष्टा १.	३३३४९
सितकाचर १.	५३३१३	" २.	४३३२३	सुखवर्चक १.	३३३१२९
" १.	५३३२४	" १.	६३५९७	सुखवास १.	३३३१७१
सितकुञ्जर १.	१३३४	सिन्धुर १.	३१७६१	सुखसुसिका २.	३३३२००
सितकृष्ण १.	५३३२४	सिन्धुसर्ज १.	३३३३९	सुखा २.	१११४९
सितच्छद १.	२३३५	सिन्धुझव ३.	३१८१२१	सुखोदय १.	३३३४८
सितपिङ्गाण १.	५३३१४	सिरा २.	४३३११६	सुगत १.	११३३४
सितपीतहरित्रील १.	५३३१५	सिराल १. २. ३.	५३३८	सुगन्ध १.	३३३६९
सितलोहित १.	५३३२५	सिल ३.	३१८२	" १.	३३३२००
सितश्याम १.	५३३१२	सिलिन्ध्र १.	३३३१५३	" १.	४३३१५३
" १.	५३३१५	सिह १.	३१८११०	सुगन्धक १.	३३३१६४
		सीता २.	३१८३०	सुगन्धा २.	३३३१८६
		" २.	६३३४५	" २.	३१८९७
		सीत्य १. २. ३.	३१८२२	सुगन्धि २.	३३३११९

सुरान्धि १.	३।४।२	सुन्दरी २.	४।४।६	सुरभि २.	३।४।४३
" १.	३।९।८४	सुपथिन् १.	३।१।४९	" १.	५।३।४७
सुरान्धिक १.	३।८।३२	सुपर्ण १.	१।१।३८	" १.	५।३।४९
सुरान्धिका २.	३।३।१३९	" १.	३।३।४९	" १. २. ३.	७।५।९३
सुरान्धिन् ३.	३।८।९५	सुपर्णक १.	२।३।१९	सुरभिच्छद १.	३।३।९३
सुरान्धी २.	३।३।१७५	सुपर्णाण्ड १.	३।५।२५	सुख १.	५।३।५४
सुग्रीव १.	४।१।५५	सुपर्णातिनय १.	१।१।३७	सुरवत्सर्ग ३.	२।१।१
सुचरित्रा २.	३।८।५०	सुपर्वन १.	१।१।४	सुरवत्सल १.	३।३।७०
सुत १.	१।३।३	सुपार्श्व १.	३।३।५९	सुरस्वेता २.	४।१।३१
" १.	४।४।४०	सुस १.	२।३।२४	सुरसा २.	३।३।९३
" १.	६।१।६६	" ३.	३।६।१९७	" २.	२।८।९७
सुतङ्ग १.	३।३।२२०	" १.	४।४।१३४	सुरा २.	३।९।४५
सुतश्रेणी २.	३।३।११३	सुप्रतीक १.	२।१।८	सुराचार्य १.	२।१।३३
सुतापुत्र १ द्वि.	४।४।४८	सुफल १.	३।३।३३	सुराजन् १. २. ३.	३।१।४६
सुताह्वा २.	३।३।१४४	" १.	३।३।९३	सुराजिका २.	४।१।३१
सुतेजित १. २. ३.	५।४।९४	सुब्रह्मण्य १.	१।१।५७	सुराधिप १.	१।२।२
सुत्रामन् १.	१।२।४	सुभग १. २. ३.	५।४।७०	सुरामण्ड १.	३।९।५२
सुत्वन् १.	३।६।७५	सुभजन १.	३।३।५६	सुरालय १.	१।३।१२
सुदर्शन ३.	१।१।१७	सुभद्रा २.	३।३।१७०	सुरावास १.	१।१।१
" ३.	१।२।१०	सुभिच्छा २.	३।३।९७	सुराष्ट्र १.	३।८।३७
" १.	२।३।३०	सुभीरुक ३.	३।२।२४	सुराष्ट्रजा २.	३।२।१७
सुदर्शना २.	३।३।१४३	सुम ३.	३।३।१८	सुराह्वय ३.	३।३।७१
सुदार १.	३।२।४	सुमदा २.	१।३।१	सुरूपा २.	३।३।८४
सुदिनाह ३.	८।९।२२	सुमन १.	३।८।५३	सुरूहक १.	३।७।१०२
सुदुष्प्रभ १.	४।१।२९	सुमनस् २ ब.	३।३।१८	सुरोत्तम १.	१।१।१४
सुधन्व १.	३।६।१०७	" १. २.	७।५।९०	सुलभ १.	१।२।२७
(युन्धान)		सुमना २.	३।४।४४	सुल्लिक १.	३।५।२७
सुधन्वन् १.	३।५।५६	सुमानस १. २. ३.	५।४।५७	सुलवणा २.	३।८।६०
सुधन्वाचार्य १.	३।५।५७	सुमुखी २.	३।३।१२३	सुलोह ३.	३।२।३४
" १.	३।५।१०४	सुमेरु १.	१।३।१२	सुलोहक ३.	३।२।२५
सुधर्मन् २.	१।३।११	सुयमा २.	३।३।६७	सुवर्चला २.	२।१।२३
सुधा २.	४।३।१०५	सुर १.	१।१।२	" २.	३।८।४५
" २.	६।२।४५	सुरगायन १.	✓ १।३।२	सुवर्धिका २.	३।८।१२९
सुधी १.	३।६।२३४	सुरज्येष्ठ १.	१।१।७	सुवर्ण १.	३।२।१९
सुनन्दा २.	१।१।६०	सुरदीर्घिका २.	१।३।१३	" १. ३.	५।१।४१
" २.	३।४।४३	सुरपर्णिका २.	३।३।७०	" १.	५।१।४९
सुनाल ३.	४।२।४२	सुरभि १.	१।२।२६	सुवहा २.	३।८।९८
सुनासीर १.	१।२।५	" १.	२।१।८७	सुवासक १.	३।३।१७१
सुनिषण्णक १.	३।३।१५०	" २.	३।३।९६	सुवासिनी २.	४।४।८
सुन्दर १. २. ३.	५।४।१३४	" १.	३।३।१२२	सुवृत्त १. २. ३.	५।४।८२

सुवेल]

सुवेल १.	३१२२
सुवता २.	३१४४९
सुषम १. २. ३.	५४११३५
सुषमा २.	४३१५२
सुषवी २.	३३१६३
" २.	३१८८५
सुषि १. २.	४११२
सुषिक १.	५३१६
सुषिम १.	५३१६
सुषिर १.	३३१२२८
" ३.	३१९११५
" ३.	४११२
" १. ३.	७५१९०
सुषिरच्छेद १.	३१९१२७
सुषिरा २.	३१८१००
सुषुति २.	३३१२००
सुषुम्ना २. १.	८१९२५
सुषेण १.	३३३८४
सुषेणी २.	३३११३८
सुष्ठु ४.	८१८४
" ४.	८१८१३
सुसंस्कृत १. २. ३.	४३१९४
सुसाम १.	३३३३७
सुस्निग्धा २.	३३३१०४
सुहस्त १. २. ३.	३३७१४८
सुहित १. २. ३.	४३११०५
" १. २. ३.	५३१९९
सुहृद् १.	३३७३
" १. २. ३.	३३७४३
" २.	४३१२५
" १. २. ३.	६३१२०
सुहृदय १. २. ३.	५३११६
सुहृ १ ब.	३१११५
सूकर १.	३३१५
" १.	३१८३३
सूकरी २.	४३३४१
सूक्ष्म ३.	४३३१२२
" ३.	४३१११०
" १. २. ३.	५३११३६

वैजयन्तीकोषः

सूक्ष्म १. २. ३.	६५१९८
"	८११११०
सूक्ष्मदर्शिन १. २. ३.	५३१२९
सूक्ष्मा २.	११११६
सूचक १.	३३१३८
" १.	३५१४०
" १.	३१९६८
" १. २. ३.	५३१२५
सूचना २.	८१२१४
सूचा २.	३१९११
" २.	८१२१४
सूचि १.	३५१२९
" १.	३५१९१
" २.	३१९११
" २.	४३१४८
सूचिसूत्र ३.	३१९१२
सूची २.	४३१४८
सूचीमुख ३.	३३१२१४
सूत १.	३३१४४
" १.	३५११२
" १.	३५१७७
" १.	३५१७७
" १.	३३७१३८
सूता २.	३३१७३
सूति १.	२३३१६
सूतिकार्यह ३.	४३३२०
सूतिकामास १.	४३११९
सूत्रान १. २. ३.	५३१५४
सूत्र ३.	३३३२०
" ३.	३१९११
" ३.	३१९१४२
" ३.	६३३३६
सूत्रक ३.	३३७१५३
सूत्रधार १.	३१९६८
सूत्रवेष्टन १.	५३११९
सूत्रसङ्ग्रह १.	३३७११७
सूद १.	४३३८६
" १. २. ३.	४३३९२
सून ३.	३३३१८
" ३. २.	६५१९९

[सुप्र

सूना २.	३३७८४
" २.	४३१९०
सूनातटि २.	३३९३७
सूनु १. २.	४३३३९
सूनुत ३.	५३१४३
" १. २. ३.	७३१२९
सूप १. ३.	४३३८६
" १. २. ३.	४३३९३
सूपकार १. २. ३.	४३३९२
सूर १.	२१११०
सूरण १.	३३३२०८
सूरि १.	३३३२३४
सूर्मि १. २.	३३३२२
" १. २.	८१९२५
सूर्य १.	२१११०
सूर्यकान्त १.	३३३३७
सूर्यभ्रातृ १.	१३३१२
सूर्या २.	३३३१३४
सूर्याचन्द्रमस १ द्वि.	२११२९
सूर्यारक १ ब.	३३३३५
सूर्यावर्त १.	३३३१२४
सूर्योद १.	३३३६८
सूक्था २.	४३१५८
सूक्नु ३.	४३३८८
सृग १.	३३७१६६
सृगाल १.	३३३३७
" १.	८१५७
सृगालकोलि २.	३३३८९
सृगालवास्तुक १.	३३३१५४
सृजया २.	३३३१०
" २.	४३३३०
सृणि १. २.	३३७८४
सृणिका २.	४३३१२०
सृति २.	३३३४९
सृदाकु १.	१३३१९
" १.	७३१७७
सृपाट १. २.	८१९२५
सृपाटिका २.	२३३५७
सृप्र १.	२३३२७

[सुमर]

शब्दानुक्रमणिका

[सौमिक]

सुमर १.	३।४२९	सेव्य ३.	८।३।१८	सोम १.	३।३।१६९
सुष्टा २.	३।८।९४	सेव्या २.	३।३।८५	" १.	३।३।८४
" २.	३।९।१२९	" २.	३।३।१७७	" १.	३।३।६६
सुष्टि २.	८।५।३५	" २.	३।८।५८	सोमप १.	३।३।७५
से १. २. ३.	८।५।४०	सेहिका २.	५।१।५४	सोमपान ३.	३।३।९२
सेकपात्र ३.	४।२।१८	सैहिकेय १.	२।१।३६	(सोममान)	
सेकमिश्रान्न ३.	४।३।१०६	सैकत १. २. ३.	३।१।४४	सोमपीथिन् १.	३।३।७५
सेकिम ३.	३।२।१५५	" ३.	४।२।३३	सोमभवा २.	४।२।२६
सेवत् १.	४।४।३७	सैतवाहिनी २.	४।२।२६	सोमयोनि १.	८।१।४९
सेचन ३.	४।२।१८	सैता २.	४।२।२६	सोमरसोद्भव ३.	
सेतु १.	३।३।४१	सैध १.	२।१।८२		३।८।१४५
" १.	४।२।१०	सैनिक १. २. ३.		सोमराजि २.	३।३।१०८
सेतुज १ ब.	३।१।३४		३।७।१४०	सोमल १.	५।३।८
सेना २.	३।७।५५	" १. २. ३.	३।७।१४०	सोमवत्सली २.	३।३।१४४
सेनानी १.	१।१।५५	सैन्धव ३.	३।८।१२०	सोमवल्ली २.	३।३।१०८
" १. २. ३.	३।७।१४१	" ३.	३।९।७२	" २.	३।३।१३२
सेनामुख ३.	३।७।५८	" १.	७।५।९१	सोमाल १.	५।३।४
सेनारक्ष १. २. ३.		सैन्य ३.	३।७।५५	सोमिन् २.	३।३।८३
	३।७।१४०	" १. २. ३.	३।७।१४०	सोर १.	५।२।१२
सेनास्थ १. २. ३.		सैर १ ब.	३।१।४०	सोरण १.	५।३।३८
	३।७।१४०	सैरन्धी २.	४।४।२५	सोरावास १.	४।३।८८
सेभ्य १.	५।३।७	सैराभ १.	५।३।१५	सोल १.	५।३।६
सेराल ३.	५।३।२०	सैरिक १. २. ३.	३।४।५८	" १.	५।३।३५
सेराह १.	३।७।१०४	सैरिन्ध्र १.	३।३।११२	सोलिक १.	५।३।६
सेरराह १.	३।७।१०६	" १.	३।३।११५	सोवाल १.	५।३।१३
सेलिस १.	३।४।२४	सैरिन्ध्रजाति २.		सौख्य ३.	३।३।१८९
सेलु १.	३।३।५५		३।३।११३	सौगन्धिक १.	३।२।१४
सेवक १.	३।७।१७	सैरिम १.	४।३।८	" ३.	३।३।२३४
" १. २. ३.	७।५।९३	सैरेयक १.	३।३।१९०	" ३.	४।२।३५
सेवन ३.	३।३।३८	सोढ १. २. ३.		सौचिक १.	३।९।११
" ३.	३।९।१२		५।४।११५	सौदामनी २.	२।२।५
" ३.	७।३।३७	सोट्ट १. २. ३.	५।४।३३	सौध ३.	३।२।३४
सेवनी २.	३।३।१८४	सोत्पात ३.	४।३।११२	" १. ३.	४।३।२९
सेवा २.	३।३।३८	सोत्व १.	३।३।७६	सौधात १.	३।५।७
" २.	३।८।७	सोदर १.	४।४।३४	सौनन्द ३.	१।१।२५
सेव्य १.	२।३।१८	सोदर्य १.	४।४।३४	सौसिक १.	३।७।२०३
" ३.	३।३।२३१	सोम्माद १. २. ३.		सौभागिनेय १.	४।३।४३
" ३.	३।८।११५		५।४।४१	सौमनस १.	५।३।४९
" ३.	३।८।१२०	सोपाक १.	३।५।४५	सौमिक ३.	३।३।१०१
" ३.	३।८।१४२	" १.	३।५।१०६	(सोमक)	
" १.	३।९।४९	सोपान ३.	४।३।५१	" १. २. ३.	३।३।१२७

[सौमिकी]

सौमिकी २.	३१६८७
सौमेरव ३.	३११७
सौम्य १.	२११३२
” ३.	२११९१
” १.	३१६८४
” १.	३१६१०८
” ३.	३१६१४५
” १. २. ३.	६१५९८
सौम्यकृच्छ्र ३.	३१६१३२
सौम्या २.	८१२१५
सौरत १.	११२१५१
सौरमेय १.	३१४५३
सौरमेयी २.	३१४४१
सौरसा २.	३१३८८
सौराष्ट्र ३.	३१२२९
सौराष्ट्रिक १.	४११२४
(सारोष्ट्रिक)	
सौराष्ट्री २.	३१२१६
” २.	३१८४८
सौरि १.	२११३५
सौरिक १.	१११११
सौर्य १.	२११९१
सौवर्चल ३.	३१८१२५
” ३.	३१८१२६
सौवस्तिक १.	३१७२४
सौवास १.	३१३१२०
सौविद १.	३१७२२
सौविद्वह १.	३१७२२
सौविष्ट ३.	३१६११२
सौवीर १ व.	३११२८
” ३.	३१२४२
” ३.	४१३८१
” १. ३.	७१५९१
सौशमिकन्य ३.	८१९१९
सौष्ठव ३.	३१७२०८
सौहार्द ३.	३१६१८६
सौहित्य ३.	४१३१०५
सौहृद ३.	३१६१८६
स्कन्ध १.	१११५४
” १.	६१९६५
स्कन्धोल १.	५१३१६

वैजयन्तीकोषः

स्कन्ध १.	३१३१५
” १.	४१३७१
” १.	५११११
” १.	५११५
स्कन्धवह १.	३१४५२
स्कन्धवाहक १. २. ३.	३१४५६
स्कन्धशाखा २.	३१३१५
स्कन्धशृङ्ग १.	३१४१०
स्कन्धाग्नि १.	११२२०
स्कन्धावार १.	४१३१४
स्कन्धिक १. २. ३.	३१४५६
स्कल १. २. ३.	५११०२
स्खलित ३.	३१७२०७
स्वन १.	३१४५१
” १.	४१४६८
स्तनन्धय १. २. ३.	५१४२
स्तनप १. २. ३.	५१४२
स्तनयितु १.	८११४६
स्तनाग्र ३.	४१४६८
स्तनित ३.	२१२५
स्तन्य ३.	३१८१४५
स्तवक १.	३१३२०
स्तब्ध १. २. ३.	५१४२०
स्तब्धरोमन् १.	३१४५
स्तब्धलोचन १. २. ३.	५१४९
स्तभ १.	३१४६२
स्तभि २.	८१९१०
स्तम्ब १.	३१३७
” १.	३१३१६
” १.	३१८६३
स्तम्बकरि १.	३१८३२
स्तम्बज ३.	३१३२३२
स्तम्बेरम १.	३१७६०
स्तम्भ १.	३११६४
स्तम्भि १.	४१२१२
स्तम्भिन् १.	४१२१२
स्तरण ३.	३१६९१

[स्थल]

स्तव १.	२१४३५
स्तिमित १. २. ३.	४१७३०
स्तुत १. २. ३.	५१४१०६
स्तुति २.	२१४३५
” २.	३१६१११
स्तुतिपाठक १.	३१७३०
स्तूप १.	६११६७
स्तूपपृष्ठ १.	४११५०
स्तेन १.	३१९५६
स्तेम १.	५१२२९
स्तेय ३.	३१९५८
स्तैन्य ३.	३१९५८
स्तोक १.	२१२८
” १. २. ३.	५१४१३६
स्तोकक १.	२१३३२
स्तोकपाण्डु १.	५१३१४
स्तोत्र ३.	२१४३५
” ३.	३१६१११
स्तोम १.	३११६१
” १.	३१४८२
” १.	५१११
स्थान १. २. ३.	४१३९५
स्त्री २.	४१४४
” २.	८१२१६
” २.	८१६५
स्त्रीधर्मिणी २.	४१४१५
स्त्रीपुंसलक्षणा २.	४१४३
स्त्रीप्रिय १.	३१३४०
स्त्रीभूषण १.	३१३२३३
स्त्रीवास १.	३११४८
स्त्रीव्यञ्जनाकृता २.	४१४८
स्त्रैण १. २. ३.	५१४११८
स्थाय्या १.	३१३६७
स्थगणा २.	३१११
स्थण्डिल १. २. ३.	३१६१३२
स्थपति १.	३१५८६
” १.	७११८०
” १.	८१९४५
स्थपुट १. २. ३.	५१४८३
स्थल ३.	३११४२

स्थल १. २.	८१९३२	स्थिति २.	५२११४	स्नाव १.	४१४११७
स्थलशृङ्गाट १.	३३११४१	" २.	६२१४४	स्निग्ध १.	३३१५३
स्थली २.	३११४२	स्थिर १.	२११३६	" १. २. ३.	३७१४३
" २.	८१९३२	स्थिरगति १.	२११३५	" १. २. ३.	५३११८
स्थविर १. २. ३.	५४१३	स्थिरजिह्व १.	४११४२	स्तु १.	३२१७
स्थाणु १.	१११४३	स्थिरप्रेमन् १. २. ३.	५४१२६	स्तुमिका २.	३८११२९
" १. ३.	३३११३	स्थिरा २.	३११२	स्तुत १. २. ३.	५४१०९
स्थान ३.	३७११८६	" १.	३३११००	स्तुषा २.	४१४३६
" ३.	३१११११	स्थूल ३.	४३११२५	स्तुह् २.	३३१९७
" ३.	६३३३६	स्थूणा २.	३११२२	स्तुही २.	३३१९७
स्थानिक १. २. ३.	३१११९	" २.	६२१४६	स्नेह १. ३.	३६११८६
स्थानीय ३.	४३११	स्थूणाशीर्ष ३.	४३१४०	" १. ३.	३८११३७
" ३.	४३१२	स्थूरिन् १. २. ३.	३१४५६	" १.	५३११
स्थाने ४.	८८११४	स्थूल ३.	३८११३९	" १. ३.	६५१९९
स्थापत्य १.	३७१२३	" १. २. ३.	५४१८४	" ३.	८३११८
" १.	८१९४५	" १. २. ३.	६४११९	स्नेहपात्र ३.	४३१६०
स्थापनी २.	३३११३०	स्थूलकाष्ठानि १.	१२१२०	स्नेहपूर १.	३८१४५
स्थाप्य १.	३८११२	स्थूलनास १.	३१४६	स्नेहचर ३.	४४१०८
स्थापन ३.	३७१२१०	स्थूलपुष्पिका २.	३३१३५	स्नेहु ३.	४४११३
स्थापित् १.	३११८१	स्थूललक्ष १. २. ३.	५४१५८	स्पन्द १.	२११२६
" १. २. ३.	५४१४२	स्थूलशाटिका २.	४३१२६	स्पन्दित ३.	३११९१
स्थापिभाव १.	३११७६	स्थूलहस्त १.	३७१७१	स्पर्ध १. २. ३.	५४१६४
स्थायुक १.	३७१२१	स्थूलोच्चय १.	८११४८	स्पर्श १.	१२१४९
" १. २. ३.	५४१४२	स्थेय १.	३८११३	" १.	३६३३६
स्थाल १.	१११४५	स्थेयस् १. २. ३.	५४१७९	" १.	५३१२
" ३.	४३३६१	स्थेष्ट १. ३.	५४१७९	" १. २. ३.	६५१९६
स्थाला २.	३८१२७	स्थौणेय ३.	३८१९२	स्पर्शन ३.	३६१११८
स्थालिक १.	५३१५७	स्थौर १ व.	३११३६	" १. ३.	७५१८९
स्थाली २.	४३१५५	सनपित १. २. ३.	५४१०७	स्पर्शानन्दा २.	१३११
स्थावर १. २. ३.	५४१६२	सनव १.	५२१३२	स्पश १.	३७१२०५
स्थाविर ३.	४४१५४	सनसा २.	४४११७	" १.	६११६४
स्थासक १.	३७१८७	सनातक १.	३६१४०	स्पशा २.	३६१८९
" १.	४२११३	सनान ३.	४३११३	स्पष्ट १. २. ३.	५४११३४
" १.	४३११४८	" ३.	६३३३६	स्पृक्ता २.	३३१११७
स्थास्तु १. २. ३.	५४१४२	स्नायु २. ३.	३४११७	स्पृष्टता २.	३६३३५
" १. २. ३.	५४१७९	स्नाव १.	३३११४	स्पृष्टा २.	३६११७९
स्थित १. २. ३.	६४१२०	" १.	३११३३	स्फटा २.	४११२१
स्थितासन ३.	३६१२२६	" १.	३११३३	स्फटिक १.	३२३३७
स्थिति २.	३८११५	" १.	३११३३	स्फाति २.	५२३३३
" २.	५२१२			स्फार १. २. ३.	५४१८०
				स्फिच् २.	४४१६५

[स्फीत]

वैजयन्तीकोषः

[स्वनदी]

स्फीत १.	पा३१७	अंसिन् १.	३३३४५	स्वधिति १.	३१९३६
स्फुट १. २. ३.	३३३९	अक्ति २.	४३३५२	स्वन १.	२३३१
” १. २. ३.	पा३१३४	अज् २.	४३३५४	” १. २. ३.	पा३३८
” १. २. ३.	६३३९९	अव १.	४३३५३	स्वम १.	३३३९९७
स्फुटन ३.	पा३३१	” १.	पा३३२	” १.	३३३९९७
स्फुटवल्ली २.	३३३१४०	अवण १.	३३३४२	स्वमज् १. २. ३.	पा३३९
स्फुटित १. २. ३.	३३३४६	अवपाणिपादा २.	३३३५२	स्वप्रतिष्ठ १.	पा३२७
स्फुरण ३.	पा३३३	अवद्भर्मा २.	३३३४७	स्वभाव १.	पा३२
स्फुरित ३.	३३९९१	अवन्ती २.	४३२२२	स्वभू १.	१११२२
स्फुलन ३.	पा३३३	अष्ट १.	१११६	स्वमनीषिका २.	३३३१७४
स्फुलिङ्ग १. २. ३.		अष्टस्व ३.	१११४८	स्वयंवरा २.	४३३७
	१३३३१	अस्त १. २. ३.	पा३१०२	स्वयम् ४.	८८११८
स्फूर्जक १.	३३३५१	आक् ४.	८८११	स्वयम्भू १.	१११८
स्फूर्जधु १.	२३३६	आवस्ती २.	३३३२१	स्वर १.	३३३११०
स्फोटक १.	४३३१२३	” २.	३३३३०	” १.	३३३१३२
स्फ्य १.	३३३१०२	स्रगासादन ३.	३३३८९	” १.	६३३६३
स्म ४.	८३३७	स्रगिह्न १.	१३३१७	स्वरकम्प १.	३३३८५
” ४.	८३३११	स्रुच २.	३३३१००	स्वरमेद १.	३३३८५
स्मय १.	३३३१६९	” २.	८३३१८	स्वराष्ट्रचिन्ता २.	
स्मयाक १.	३३८५८	स्रुत १. २. ३.	पा३१०९		३३३१४
स्मर १.	१३३२७	स्रुव ३.	३३३१००	स्वरिङ्गण १.	१३३५२
स्मराङ्गुष्ठा १.	४३३७६	स्रुवा २.	३३३११४	स्वरित १. २. ३.	३३३३७
स्मित १. २. ३.	३३३९	स्रोतस् ३.	४३३९३	स्वरु १.	६३३६४
” ३.	३३९८३	” ३.	६३३३७	स्वरुमोचन १.	३३३१०६
” ३.	८३३१६	स्रोतस्विनी १.	४३३२२	स्वरूप ३.	पा३१
स्मृति २.	३३३२९	स्रोतोञ्जन ३.	३३३४२	स्वरेणु २.	२३३२३
स्यद १.	१३३५५	स्व १. २. ३.	८३३३८	स्वर्ग १.	१३३१
स्यन्द १.	२३३२६	स्वः (-र) ४.	१३३२	स्वर्जि २.	३३८३२९
स्यन्दन १.	३३३१२४	” (-र) ४.	३३३२०७	स्वर्जिका २.	३३८३२९
स्यन्दनध्वनि १.	२३३९	” (-र) ४.	८३३७	स्वर्ण ३.	३३३१८
स्यन्दिनी २.	४३३१२०	स्वकुलजय १.	४३३४१	” १.	३३३२२१
स्यञ्ज १. २. ३.	पा३१०९	स्वङ्ग १. २. ३.	पा३३६	स्वर्णकार १.	३३३१६
स्यमीक १.	७३३७५	स्वच्छन्द १. २. ३.		स्वर्णचूड १.	२३३२९
स्याल १.	४३३३२		पा३२७	स्वर्णद्वीप ३.	३३३१९
स्यालिका २.	४३३२८	स्वज १.	४३३२०	स्वर्णराज ३.	४३३४१
स्यूत १.	४३३६४	” १.	४३३४५	(स्वर्णराग)	
” १. २. ३.	पा३११२	स्वजन १.	४३३५१	स्वर्णरीति २.	३३३२६
स्यूति २.	३३३१२	स्वतन्त्र १. २. ३.	पा३२७	स्वर्णशुद्धिका २.	३३३२१
स्यूना २.	६३३४५	स्वतन्त्रवृत्ति २.	पा३२०	स्वर्णाग्नि १.	१३३१२
स्युम १.	६३३६१	स्वदन ३.	पा३१०३	स्वनदी २.	१३३१३
स्योनाक १	३३३६८	स्वधिति १.	३३३३६	(स्वनदी)	

स्वर्भानु १.	२।१।३६	स्वामिन् १.	३।६।१५९	हठ १.	६।१।६८
स्वर्वापी २.	४।२।२४	" १.	३।७।३	हड्डिक १.	३।५।४८
स्वर्वेश्या १.	१।३।१	" १.	३।९।१०५	हड्डक १. ३.	३।९।१३४
स्वल्पदेहा २.	३।६।५१	" १. २. ३.	५।४।५८	हण्डा २.	३।९।१०८
स्वल्पफला २.	३।३।१६०	" १. २. ३.	६।५।९४	हतक १. २. ३.	३।७।१४७
स्वप्तर १.	४।४।३१	स्वामिनी २.	३।७।३२	" १. २. ३.	५।४।६७
स्वप्सू २.	३।१।४	" २.	३।९।१०३	हता २.	३।६।५०
स्वप्सू २.	४।४।२६	स्वाराज् १.	१।२।४	हनन ३.	५।१।३६
स्वस्कन्ध १.	३।९।४	स्वास्थ्य ३.	४।४।१४२	हनु १.	३।५।३४
(स्वस्कन्ध)		स्वाहा २.	१।२।१९	" २.	३।८।१०१
स्वस्तर १.	३।८।६६	स्वित् ४.	८।७।६	" १. २.	४।४।९०
स्वति ४.	८।७।२९	स्वेद १.	३।९।८१	हन्त ४.	८।७।३०
स्वस्तिक १.	२।३।२८	स्वेदचूषक १.	१।२।५२	" ४.	८।८।२
" १.	३।३।१४९	स्वेदज १. २. ३.	४।४।२	हन्तकार १.	३।६।१५
" १.	३।६।२२४	स्वेदनी २.	४।३।५६	हन् १. २. ३.	५।४।११३
" १.	४।३।३०	स्वैर १. २. ३.	६।४।२०	हय १.	३।७।९०
" १.	४।३।१३६	स्वैरिणी २.	४।४।९	हयन ३.	६।७।१२७
स्वस्त्ययन ३.	३।६।५८	स्वैरिन् १. २. ३.	५।४।२७	हयपुच्छी २.	३।३।१०७
स्वस्त्रीय १.	४।४।४१	ह		हयशिरस् १.	१।१।३०
स्वाती २.	२।१।४०	ह ४.	८।७।८	हर १.	६।१।६७
स्वादु १.	५।३।२५	" ४.	८।७।११	हरक १.	३।७।१६२
" १. २. ३.	६।४।१९	हंस १.	२।३।५	हरण १.	३।३।८२
" ३.	८।३।१८	" १.	३।३।२००	" ३.	३।७।१९३
स्वादुकण्ठक १.	८।१।५५	" १.	६।१।६८	" ३.	३।९।९८
स्वादुगन्धा २.	३।३।५७	" १.	८।६।६	" १.	४।४।७१
स्वादुतिक्तकषाय १.	५।३।३३	हंसक १.	४।३।१४४	" ३.	७।३।३९
स्वादुमुस्ता २.	४।२।४८	हंसकान्ता २.	२।३।८	हरणि २.	४।२।२१
स्वादुरसा ३.	८।२।९	हंसकालीसुत १.	३।४।१०	हरशेखरा २.	४।२।२४
स्वाद्य १.	५।३।३०	हंसच्छत्र ३.	३।८।७६	हरात्रि १.	३।२।५
स्वाङ्गमलतिक्तनुवर १.	५।३।३९	हंसपद ३.	५।१।५०	हरानत १.	१।२।४२
स्वाङ्गी २.	३।३।१८१	हंसपाद ३.	३।२।४५	हराह्वय १.	३।३।८०
स्वाध्याय १.	७।१।८३	हंसबाहन १.	१।१।८	हरि १.	१।१।१५
स्वान १.	१।३।११	हंससावि १.	२।३।९	" १.	३।४।२
" १.	२।४।१	हकार १.	२।४।३१	" १.	३।४।३९
स्वान्त ३.	३।६।१७३	हक्षा २.	३।९।१०८	" १.	३।५।२९
स्वाप १.	३।६।१९७	हृष्ट १.	४।३।३५	" १.	३।५।८९
" १.	४।३।१६७	हृष्टविलासिनी २.	३।८।१०१	" १.	३।७।१०४
स्वापतेय ३.	३।८।७३	हृष्टवेशमाली २.	४।३।३५	" १.	३।८।३६
स्वामिन् १.	१।१।५६	हठ १.	३।७।२०९	" १.	४।१।६
		" १.	४।२।४६	" १. २. ३.	६।५।१००

हरिचन्दन]

हरिचन्दन १. ३.	१।३।१४
” ३.	३।८।१३
” १. ३.	८।५।२७
हरिण १.	३।४।१२
” १.	५।३।१२
हरिणी २.	३।९।२२
” २.	७।२।३०
हरित् २.	२।१।२
” १.	५।३।२२
” २.	६।५।१०१
हरित १.	३।४।२
” १.	३।८।३६
” १.	४।३।९०
” १.	५।३।२१
” १.	५।३।२२
हरिताल ३.	३।२।१३
हरितालिका २.	३।३।२३२
हरिदम्ब १.	२।१।११
हरिद्रा २.	३।३।२११
हरिद्रारागक १. २. ३.	५।४।२६
हरिद्विष् १.	१।३।१०
हरिर्मर्मा १. २.	३।२।३८
हरिर्पर्ण १.	३।३।१५५
हरिप्रिया २.	८।२।१०
हरिमन् २.	७।१।८४
हरिमन्थ १.	३।८।३७
हरिमन्थज १.	३।८।३७
हरिया १.	३।७।१०४
हरिरोमन् १.	८।१।४९
हरिलोचन १.	२।३।२२
हरिवत् १.	१।२।३
हरिवर्ण ३.	३।१।६
हरिवालुक ३.	३।८।९५
हरिवाहन १.	१।२।४
हरिहय १.	१।२।३
हरीतक १. २. ३.	८।९।३८
हरीतकी २.	३।३।२१
” २.	३।३।१७८
” २.	८।९।३८

वैजयन्तीकोषः

हरेणु २.	३।८।९५
” १. २.	८।९।२६
हरेणुक १.	३।८।५४
हर्तु १.	६।१।६७
हर्म्य ३.	४।३।१९
हर्ष १.	७।१।८४
हर्ष १.	३।३।१८७
हर्षज ३.	४।४।१११
हर्षमाण १. २. ३.	५।४।३३
हर्षवेणुक १.	३।६।६१
हर्षुल १.	२।१।३२
” १. २. ३.	७।५।९४
हर्षुला २.	३।६।५०
हल ३.	६।८।२७
हलभूति १.	३।६।१५४
हला २.	३।९।१०८
हलाम १.	३।७।१०२
हलायुध १.	१।१।२२
हलाहल १.	२।१।२४
हलिन् १.	१।१।२३
हलीषण १.	३।४।२
हलीम १.	३।३।२२३
हलीमक १.	३।३।६०
” १.	३।३।७६
हलुराह १.	३।७।१०५
हल्य १. २. ३.	३।८।२३
हल्या २.	५।१।१४
हव १.	१।२।१८
” १.	२।४।३०
” १.	६।१।६७
हवन १.	१।२।१८
” ३.	३।६।६९
हवनी २.	३।६।१००
” २.	३।६।१०९
हवित्री २.	३।६।१०९
हविर्मन्थ १.	३।३।८६
हविर्यज्ञ १.	२।६।८३
हविश्शाला २.	४।३।२२
हविस् ३.	३।८।१३८
” ३.	६।३।३७

[हस्तिमल्ल

हव्ययोनि १.	१।१।४
हव्यवाहन १.	१।२।१७
” १.	१।२।२२
” १.	१।२।२४
हस १.	३।६।१९४
हसन ३.	३।६।१९४
हसनी २.	४।३।५५
हसन्ती २.	४।३।५५
हसित ३.	३।९।८३
हस्त १.	१।२।४३
” १.	३।१।५४
” १.	४।४।७३
हस्तकोहलि २.	३।६।५९
हस्तघ्न १.	३।७।१५५
हस्तत्रय ३.	३।१।५७
हस्तद्वय ३.	३।१।५७
हस्तपर्ण १.	३।३।६४
हस्तबिम्ब १.	४।२।१४८
हस्तलेपन ३.	३।६।६०
हस्तवारण ३.	४।३।१०५
हस्तसूत्र ३.	३।६।५९
हस्तावाप १.	३।७।१८९
हस्तिकर्कोटक ३.	३।३।१६५
हस्तिकर्ण १.	३।७।१९८
” १.	४।३।१२९
हस्तिकर्णदल १.	३।३।२९
हस्तिकोलि २.	३।३।८८
हस्तिघोष १.	३।३।१६२
हस्तिचार १.	३।७।१७०
हस्तिन् १.	३।७।६०
” १.	८।६।५
हस्तिनापुर ३.	४।३।८
हस्तिनी २.	४।३।८
हस्तिपक १.	३।७।८८
हस्तिपर्णिनी २.	३।३।१७१
हस्तिपादिका २.	३।८।९३
हस्तिपिप्पली २.	३।८।७८
हस्तिपूरणी २.	३।६।१४७
हस्तिप्रिया २.	३।३।९६
हस्तिमकर १.	४।१।५२
हस्तिमल्ल १.	८।१।४९

हस्तिमुख]

हस्तिमुख १.	४३१५
हस्तिराज १.	१११५३
हस्तिवातिङ्गन १.	३३१०३
हस्त्य १. २. ३.	५४११७
हस्त्यभना २.	३३१९६
हस्त्यारोह १.	३७१८८
हहाल १ व.	३११३६
हा ४.	८७१८
हाटक १. ३.	३२१२०
" १.	३७१६५
हाकृत ३.	२४१८
हान ३.	५२१४०
हायन १.	३८१३४
" १.	७११८४
हार १.	४२१३८
" १.	४२१३९
हारफल ३.	४२१४०
हारभूरा २.	३३१८१
हारित १.	१२१५२
हारिता २.	३६१४९
हारिद्र १.	४४१३६
" ३.	५३१११
हारिन् १. २. ३.	५४१३५
हारी २.	३६१४८
हारीत १.	२३१४०
हार्द ३.	३६१८६
हार्या २.	३८११४
हालक १.	३७१०३
हाला. २.	३९१४५
हालाहल १.	४११२९
हालिक १. २. ३.	३५१५८
हाली २.	४४१२८
हाव १.	३९१९२
" १.	३९१९७
हास १.	३६१९४
" १.	३९१७६
" १.	३९१८३
हासनिक १.	३७११७
हासिका २.	३६१९३
हास्तिक ३.	५३११०

शब्दाशुक्रमणिका

हास्तिनपुर ३.	४३१८
हास्य ३.	३६१९४
" १.	३९१७५
" १.	३९१७७
हि ४.	८७१९
" ४.	८७११
हिंसन ३.	३७१४१
हिंसा २.	३७२१५
" २.	६२१४६
हिंसाकर्मन् ३.	३६११२
हिंसार १.	३४१३
हिंन् १.	३४१७३
" १. २. ३.	५४१४२
हिंन्ना २.	३३१८९
हिंका २.	२३१२१
" २.	४४१२७
हिक्किका २.	४४१३१
हिङ्गु ३.	३८१३१
हिङ्गुदी २.	३३१०४
हिङ्गुनिर्यास १.	८११५६
हिङ्गुल १.	३२१४४
" ३.	३२१४५
हिङ्गुल २.	३३१०२
हिङ्गीर १.	३७१८५
हिण्डीकान्त १.	१११४४
(चण्डीकान्त)	
हित १. २. ३.	३७१४३
" १. २. ३.	५४१०४
हिन्ताल १.	३३१२२०
हिम् ४.	८७१९
हिम ३.	२२१९
" १.	५३१७
हिमजा २.	३३१२०३
हिमप्रति १.	२११२४
हिमवत् १.	३२१४
हिमबालुका २.	३८१०५
हिमसंहति २.	२२१९
हिमा २.	१११५९
हिमाचल १.	३२१४
हिमानिल १.	१२१५४
हिमानी २.	२२१९

[ह्य

हिमारि १.	७११८३
हिरण्य ३.	३११९
हिरण्य १.	३८१७४
" ३.	७३१३९
हिरण्यकशिपुद्विपत् १.	११११८
हिरण्यगर्भ १.	१११७
हिरण्यनाभ १.	३२१४
हिरण्यबाहु १.	१३१५६
हिरण्यरेतस् १.	१२११६
हिरण्यवर्णा २.	४२१२२
हिस्क् ४.	८७१३०
" ४.	८८१४
" ४.	८८१५५
ही ४.	८८१६
हीन १.	३३१८२
" १. २. ३.	५४१२२
" १. २. ३.	५४१०१
" १. २. ३.	६४१२०
हीनवर्ण १.	३५१३
हीर १.	६४१६९
हीरक १.	३२१३९
हुङ्क १.	३९११३४
हुङ्कहिंका २.	२४१११
हुण १.	१११११
हुण्ड १.	३४१३
हुताशन १.	१२११६
हुति २.	३६१६९
" २.	३६१९०
हुम् ४.	८७१९
हुरिजक १.	३५१४४
हुष्टक १.	३७१८५
हुरुकर १ व.	३११२४
हुल ३.	३७१६८
हुलमात्रिका २.	३७१६४
हुलिङ्ग १ व.	३११३९
हुलिङ्गुली २.	३६१५७
हुल १.	३४१६४
हुष्टत १.	३७१६२
हुति २.	२४१३०
हुम् ४.	८७१९

हृच्छ्रय]

हृच्छ्रय १.	१११२९
” १.	११२२१
हृणिया २.	३१६१९३
(हृणिया)	
हृणीया २.	३१६१९३
हृद् ३.	३१६१७३
” ३.	४१४६८
” ३.	४१४११४
हृदय ३.	४१४६८
” ३.	४१४११४
” ३.	७१३३८
हृदयालु १. २. ३.	५१४१६
हृष १.	३१३३२
” ३.	३१८१३९
” ३.	३१९४८
” १. २. ३.	५१४९६
” १. २. ३.	५१४१३५
” १. २. ३.	६१५१००
हृद्यगन्ध १.	३१८८४
हृद्या २.	३१२११
” २.	३१४६३
” २.	३१८९४
हृद्यांशु १.	२११२६
हृदलेख १.	३१६१७९
हृषित १. २. ३.	८१४१३
हृषीक ३.	३१६२०३
हृषीकेश १.	१११११
हृष्ट १. २. ३.	५१४९९
” १. २. ३.	८१४१३
हृष्टि २.	३१६१८८
हे ४.	८१८१२
हेक्का २.	४१४१२७
हेति १. २.	३१७१५७

वैजयन्तीकोषः

हेति २.	६१२४६
हेतु १.	५१३३७
” १.	६११६९
हेमकरक १.	४१३५८
हेमकुश ३.	३१११९
हेमम ३.	३१२३०
हेमम्री २.	३१३२११
हेमज ३.	३१२३२
हेमदुग्धक १.	३१३२८
हेमधारण ३.	५११५९
हेमन् ३.	३१२२०
” ३.	६१३३७
हेमन्त १.	२११८७
हेमपुष्प १.	३१३४१
” १.	३१३८१
हेमपुष्पिका २.	३१३१८२
हेमप्रतिमा २.	३१९२२
हेममाष १.	५११५
हेमा २.	३११३
हेरग्व १.	३१४९
” १.	७११८४
हेरुक १.	३१६२३९
हेरुक ३.	५११६२
हेला २.	६१२४६
हेलि २.	३१६५७
” १.	६११६९
हेषा २.	२१४६
है ४.	८१८१२
हैमकूट ३.	३११६
हैमवत ३.	३११३
हैमवती २.	८१२११
हैयङ्गवीन ३.	३१८१३८
हीठ ३.	५११६२

[ह्लादीनि

होत् १.	३१६७९
होत्र १.	३१६६९
होत्वन् १.	३१६७६
होम १.	३१६६९
होमकाष्टी २.	६१६९५
होमधूम १.	३१६९५
होमधेनु २.	३१६९५
होमभस्मन् ३.	३१६९५
होमयूप १.	३१६१०३
होमेन्धन ३.	३१६९६
होरा २.	२११५१
होल १ व.	३११२६
हयः (-स) ४.	८१८१९
हयस्तन १. २. ३.	
	५१४८९
हृद् १.	३१४६४
” १.	४११५
हृस्व १. २. ३.	५१४८१
” १. २. ३.	६१५१०१
हृस्वगवेधुका २.	३१८६१
हृस्वनिर्वृणक १.	
	३१७१५९
हृद् १.	२१४१२
ह्लादिनी २.	४१२२३
” २.	७१२२९
ह्लादिनि २.	२१२५
ही २.	३१६१९४
हीक १. २. ३.	६१५१०१
हीण १. २. ३.	५१४५१
हीत १. २. ३.	५१४५१
हेषा २.	२१४६
ह्लाद् १.	३१६१८८
ह्लादिनी २ व.	२११५९

समाप्तश्चाऽयं ग्रन्थः

जयकृष्णदास-कृष्णदास प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला

(स्थापित सन् १९७१)

१. रासपञ्चाध्यायी-श्रीसुबोधिनी। सचित्र (वेदान्त-शुद्धाद्वैत) महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य विरचिता श्रीमद्भागवत-दशमस्कन्ध-रासपञ्चाध्यायी की हिन्दी व्याख्या। व्याख्याकार जगन्नाथ (मुनमुन जी) चतुर्वेदी। शुभाशंसक गोस्वामी श्री दीक्षित जी महाराज।
२. वैजयन्तीकोषः (कोश)। यादव प्रकाशाचार्य विरचित। सम्पादक-हरगोविन्दशास्त्री
३. नाटकलक्षणरत्नकोशः (कोश)। सागर नन्दी प्रणीत। 'प्रभा' हिन्दी व्याख्या। व्याख्याकार-बाबूलाल शुक्ल शास्त्री
४. राजतरङ्गिणी जोनराजकृत। हिन्दी अनुवाद। व्याख्याकार-रघुनाथ सिंह
५. कालिकापुराणम् (पुराण)। संपादक-श्रीविश्वनारायण शास्त्री। प्रस्तावना-बलदेव उपाध्याय
6. **New Light on the Sun Temple of Konarka.**
Four unpublished Manuscripts relating to Construction, History and Ritual of this Temple. Translated into English and annotated by Alice Boner and Sadāśiva Rath Sharma with Rajendra Prasad Das. Introduction by Alice Boner. Technical Drawings by Sadāśiva Rath Sharma. With many Plates and Illustrations.
7. **Kāvya-prakāśa of Mammata-bhaṭṭa** - काव्यप्रकाश मम्मट-भट्ट (Kāvya). An Introduction to Indian Literary criticism. By S. N. Ghoshāl - Śāstri
Part I Principle, Technique and History of Literary Criticism.
Part II The Kāvya-Prakāśa the central work of Indian Literary Criticism, with its Commentaries Rasa-Prakāśa and the critical explanation of the Texts.
८. भास्करोदया। तर्कसंग्रहदीपिका-प्रकाशस्य (नीलकण्ठ्याः) व्याख्या पदवाक्य-प्रमाणपारावारीणनीलकण्ठभट्टसूनुपण्डितेन्द्र श्रीमल्लक्ष्मी-नृसिंशर्मकृता। म. म.झोपाख्यपण्डित श्रीमुकुन्दशर्मणा संस्कृता-परिष्कृता-संशोधिता च।
९. तिलकमञ्जरी। श्रीधनपालविरचिता। म. म. पण्डितशिवदत्तशर्मतनूज पण्डितभवदत्तशास्त्रिणा, मुम्बापुरवासिपरबोपाहव पाण्डुरङ्गात्मज काशिनाथशर्मणा च संशोधिता।
१०. काव्यमाला। सम्पादक-पं. दुर्गा प्रसाद तथा काशीनाथ पाण्डुरङ्गपर्व तथा केदारनाथ वासुदेव शास्त्री पणशीकर। (सम्पूर्ण सेट १-१४ भाग)
११. संस्कृत साहित्य का इतिहास। डॉ० उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'
१२. सेतुबन्धम् महाकवि प्रवरसेन विरचिता। हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद सहित। डॉ. आशाकुमारी

Mahākavi Pravarsena's

सेतुबन्धम्

Setubandham

Text with Hindi & English Translation

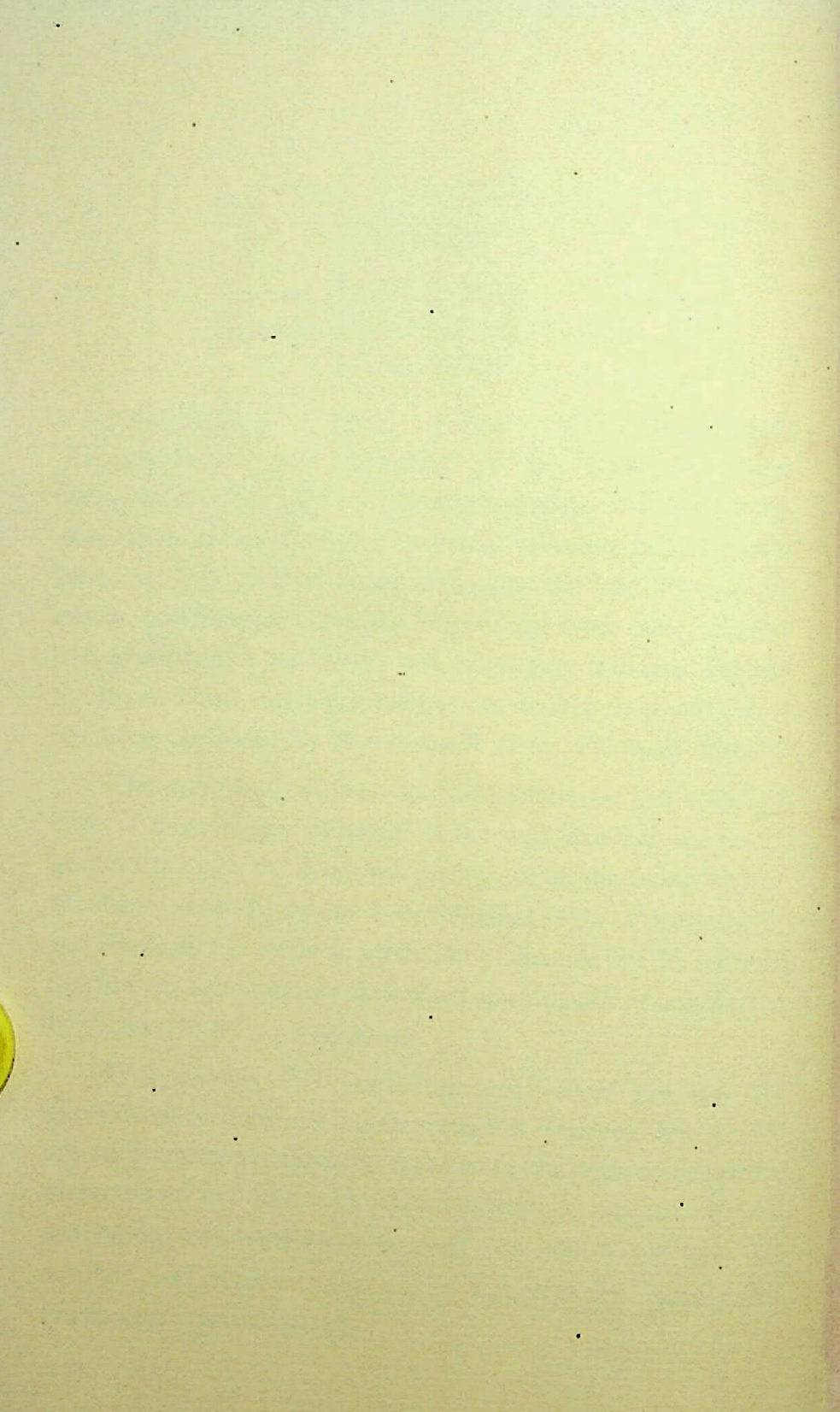
Dr. Asha Kumar

'Setubandham' also named as 'Rāvaṇavaho', 'Dahamuhavaho' and 'Rāmasetu' is the oldest and 'most monumental court epic' of Mahārāṣṭrī Prakrit. It is one of the most beautiful works of not only Prakrit but entire ancient Indian literature. It is only its poetic perfection that lead not only its erudite commentator Rāmdāsa Bhūpati but some other scholars also to attribute its authorship to kavikulaguru Kālidāsa. Though the internal and external evidences are enough to prove that it has been composed by Pravarsena II of the Vākāṭaka dynasty.

The perspicuity of language, the picturesque and colourful style of descriptions, portrayal of not only external actions or gestures but also the innermost feelings of all the living beings, excellent uses of figures of speech, highest flight of poetic fancy and above all the aesthetic perfection of the epic are the features that are enough to attract astonished appreciation of aesthete be he Ācārya Daṇḍī or Vāṇabhaṭṭa.

Unfortunately this marvellous epic could not get the attention of modern day scholars which it deserves. Absence of any fully annotated bilingual translation was the main force behind presentation of this work. The meticulous translation and annotations will particularly be useful for non Prakrit knowing scholars and students who intend to relish the beauties of Pravarsena's superb poesy.







जयकृष्णदास-कृष्णदास प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला

(स्थापित सन् १९७१)

रासपञ्चाध्यायी-श्रीसुबोधिनी। सचित्र (वेदान्त-शुद्धाद्वैत) महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य विरचिता श्रीमद्भागवत-दशमस्कन्ध-रासपञ्चाध्यायी की हिन्दी व्याख्या। व्याख्याकार जगन्नाथ (मुन्मुन जी) चतुर्वेदी। शुभाशंसक गोस्वामी श्री दीक्षित जी महाराज

वैजयन्तीकोषः (कोश)। यादव प्रकाशाचार्य विरचिता। सम्पादक-हरगोविन्दशास्त्री

नाटकलक्षणरत्नकोशः (कोश)। सागर नन्दी प्रणीता। 'प्रभा' हिन्दी व्याख्या।

व्याख्याकार-बाबूलाल शुक्ल शास्त्री

राजतरङ्गिणी जोनराजकृता। हिन्दी अनुवाद। व्याख्याकार-रघुनाथ सिंह

कालिकापुराणम् (पुराण)। संपादक-श्रीविश्वनारायण शास्त्री। प्रस्तावना-बलदेव उपाध्याय

New Light on the Sun Temple of Konarka. Four unpublished Manuscripts relating to Construction, History and Ritual of this Temple. Translated into English and annotated by Alice Boner and Sadāśiva Rath Sharma with Rajendra Prasad Das. Introduction by Alice Boner. Technical Drawings by Sadāśiva Rath Sharma. With many Plates and Illustrations.

Kāvya-prakāśa of Mammata-bhaṭṭa - काव्यप्रकाश मम्मट-भट्ट (Kāvya).

An Introduction to Indian Literary criticism. By S. N. Ghoshāl - Śāstrī
Part I Principle, Technique and History of Literary Criticism.

Part II The Kāvya-Prakāśa the central work of Indian Literary Criticism, with its Commentaries Rasa-Prakāśa and the critical explanation of the Texts.

भास्करोदया। तर्कसंग्रहदीपिका-प्रकाशस्य (नीलकण्ठ्याः) व्याख्या पदवाक्यप्रमाणपारावारीण-नीलकण्ठभट्टसूनुपण्डितेन्द्र श्रीमल्लक्ष्मीनृसिंशर्मकृता। म. म.झोपाख्यपण्डित श्रीमुकुन्दशर्मणा संस्कृता-परिष्कृता-संशोधिता च।

तिलकमञ्जरी-श्रीधनपालविरचिता। म. म. पण्डितशिवदत्तशर्मतनूज पण्डितभवदत्तशास्त्रिणा, मुम्बापुरवासिपरबोपाहव पाण्डुरङ्गात्मज काशिनाथशर्मणा च संशोधिता।

काव्यमाला। सम्पादक-पं. दुर्गा प्रसाद तथा काशीनाथ पाण्डुरङ्गपर्व तथा केदारनाथ वासुदेव शास्त्री पणशीकर। (सम्पूर्ण सेट १-१४ भाग)

संस्कृत साहित्य का इतिहास। डॉ० उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'

सेतुबन्धम्। महाकवि प्रवरसेन विरचिता। हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद सहित। डॉ. आशाकुमारी

शाखा :

चौखम्भा बुक्स

Chaukhambha Books

5 UA, Jawahar Nagar (Behind Jawahar Nagar Post Office)

Malkaganj Chowk, Delhi-110007 (India)